ज्योतिष

यज्ञ यागादि

प्रवचन

धर्मप्रचार



वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।

प्रज्ञानंब्रह्म | अहं ब्रह्मास्मि | तत्त्वमसि | अयमात्मा ब्रह्म





पं. श्री जयन्तीलालजी ओझा



पं. श्री भरतलालजी ओझा

सिरोहीनगरीयाक्षवृतीयं चित्रापक्षीयं सार्वदैशिकं धर्मशास्त्र सम्मत्

अर्बुद श्री पंचांग

रौद्र संवत्सर, विक्रम संवत् २०८३
शक संवत् १९४८, सन् २०२६-२७ ई.

स्वस्ति श्री जावाल (सिरोही)
अक्षांश २४.५३ उ. रेखांश ७२.५४ पू. गणितानुसार

जैन संवत् २५५२-५३, भा. गणराज्य सं. ७८-७९
गतकलियुग ५१२७, भोग्यकलियुग ४२६८७३

पंचांगकर्ता एवं सम्पादक

पं. जनार्दन ओझा

राज ज्योतिषी, प्रतिष्ठाचार्य, भागवत कथा व्यास, जावाल (सिरोही) राज.



श, ष, स, ह
मेष-श्वान वैर



य, र, ल, व
मृग सिंह वैर



प, फ, ब, भ, म
मूषक बिलाव वैर



त, थ, द, ध, न
सर्प गरूड़ वैर



ट, ठ, ड, ढ, ण
श्वान मेष वैर



च, छ, ज, झ, ञ
सिंह मृग वैर



क, ख, ग, घ, ङ
बिलाव मूषक वैर



अ, इ, उ, ए
गरूड़ सर्प वैर

GET IT ON Google Play

Arbud Shree Panchang
गुगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध

पृष्ठ संख्या : १५१

प्रकाशक : अकादमी ऑफ वैदिक साईन्स (रजि.) जावाल (अर्बुदारण्य) राज. ३०७८०१

मूल्य : १२५



गुरू परम्परा



नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ।
श्री शंकराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् संततमानतोऽस्मि ।।

शंकरं शंकराचार्य केशवं बादरायणम् । सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ।।

श्री गोवर्धन मठ
जगन्नाथ पूरी (उडीसा)

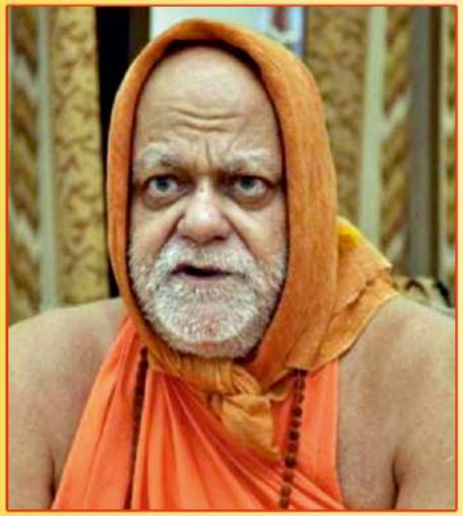
ऋगवेद

प्रज्ञानं ब्रह्म

प्रथम आचार्य : श्री पद्मपादाचार्य जी

वर्तमान आचार्य

श्री निश्चलानन्द सरस्वती जी



श्री श्रीमठ
श्रृंगेरी (कर्नाटक)

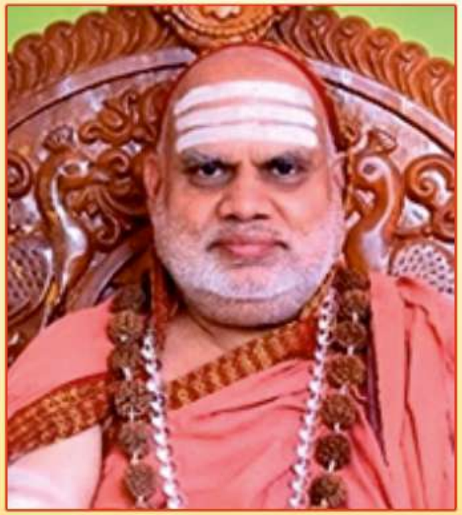
युजर्वेद

अहं ब्रह्मास्मि

प्रथम आचार्य : श्री सुरेश्वराचार्य जी

वर्तमान आचार्य

श्री भारती तीर्थ जी



श्री शारदा मठ
द्वारिका (गुजरात)

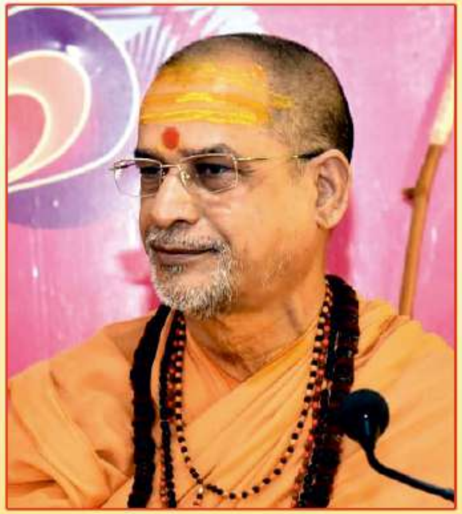
सामवेद

तत्वमसि

प्रथम आचार्य : श्री हस्तामलकाचार्य जी

वर्तमान आचार्य

श्री सदानन्द सरस्वती जी



श्री ज्योर्ति मठ
जोशीमठ (उत्तराखंड)

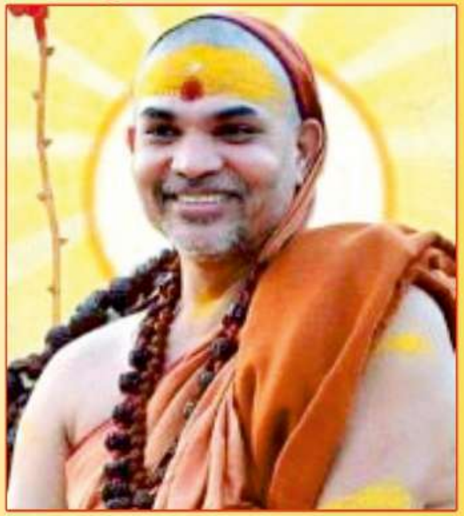
अथर्ववेद

अयं आत्म ब्रह्म

प्रथम आचार्य : श्री त्रोटकाचार्य जी

वर्तमान आचार्य

श्री अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती जी



: : अनुक्रमणिका : :

पंचांग देखने के लिये आवश्यक निर्देशन

१- अर्बुद श्री पंचाग चित्रापक्षीय शुद्ध, सूक्ष्म केतकी गणित से सिरोही (राज.) के अक्षांश २४/५३ उ. रेखाशं ७२/५४ पू. पर निर्माण किया है। तिथि, नक्षत्रादि के घटी-पल जोधपुर के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के है। तिथि, नक्षत्रादि के घण्टा-मिनिट भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम से समाप्तिकाल के है जो सम्पूर्ण भारत में उसी समय से होंगे।

२- पंचाग में सूर्योदय-सूर्यास्त भा.स्टे.टा. सिरोही के है। सूर्योदय-सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है।प्रत्यक्ष देखने के लिये सूर्योदय में दो मिनट घटावें तथा सूर्यास्त में दो मिनिट जोड़े।

३- पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये है। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्द्धभाग तक जाने।

४- पंचांगो में सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक समय अर्थात् ६० घटी या २४ घण्टा को घटी-पल में दिया जाता है। जिसमें २ १/२ का भाग देकर प्राप्त घंटा-मिनिट को सूर्योदय में जोड़ने पर सम्बन्धित तिथि नक्षत्रादि का समय भारतीय स्टे.टा. में ज्ञात हो जाता है। जो सम्पूर्ण भारत में एक समान है। पंचांगकर्त्ताओं ने घटी-पल में २ १/२ का भाग देकर घंटा-मिनिट बनाने की प्रक्रिया में समय खर्च होने से रोकने के लिये पाठकों की सुविधार्थ तिथि, नक्षत्रादि में घटी-पल के साथ घंटा-मिनिट लगाने प्रारंभ किये है किन्तु कुछ लोग भ्रांति का शिकार हो जाते है।उनकी भ्रांति निम्न विश्लेषण से दूर हो जायेगी, ऐसी आशा है-

अ. सूर्योदय से दोपहर १२ तक घंटा-मिनिट सामान्य रूप से घड़ी में समय देखते है इसी अनुसार देखें।

ब. दोपहर १ बजे को १३ घं., २ बजे को १४ घं., ३ बजे को १५ घं., ४ बजे को १६ घं., ५ बजे को १७ घं., ६ बजे को १८ घं., ७ बजे को १९ घं., ८ बजे को २० घं., ९ बजे को २१ घं., १० बजे को २२ घं., ११ बजे को २३ घं., १२ बजे को २४ घं., अर्द्धरात्रोत्तर १ बजे को २५ घं., २ बजे को २६ घं., ३ बजे को २७ घं., ४ बजे को २८ घं., ५ बजे को २९ घंटा यदि अगला सूर्योदय नही हुआ तो ६ बजे को ३० घं., 7 बजे को 31 घं. से पंचांग में घंटा-मिनिट में तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्ति काल, चन्द्र संचार व अन्य ग्रहचार आदि सभी प्रकरणों का समय दिया गया है।पंचांग में दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी भी इसी अनुसार तैयार की गई है। अर्बुद श्री पंचांग की यह विशेषता है कि पंचांग में सर्वत्र घंटा मिनिट उपयुर्क्तानुसार ही दिये गये है।

५- पंचांग में दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः ५ घं. ३० मि. के दैनिक गति सहित दिये गये है।

६- पंचांग में लग्न सारिणीयां २४ अयनांश पर, खगोलिक अक्षांश संस्कार कर सूक्ष्म, पलभा एवं स्वोदय मान से तैयार की गई है क्योंकि पृथ्वी पूर्ण गोल न होकर मौसमी या नारंगी जैसी है। अतः भौगोलिक अक्षांश में खगोलिक संस्कार किया जाना आवश्यक है।

घटी पल घंटा-मिनिट समीकरण

1 घटी = 24 मिनिट = 60 पल

1 पल = 60 विपल = 24 सेकण्ड

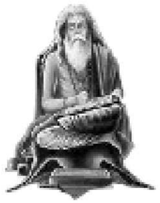
1 घंटा = 2.5 घटी = 150 पल

1 मिनिट = 2.5 पल = 60 सेकण्ड



वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।

प्रज्ञानंब्रह्म | अहं ब्रह्मास्मि | तत्त्वमसि | अयमात्मा ब्रह्म



सिरोहीनगरीयाक्षवृतीयं चित्रापक्षीयं सार्वदैशिकं धर्मशास्त्र सम्मत्

अर्बुद श्री पंचांग

।। श्री गणेशाम्बिकाभ्याम् नमः ।।

।।प्राक्कथन।।

ज्योतिषं वेदानां चक्षुः

ज्योतिष शास्त्र को वेदपुरूष का नेत्र कहा गया है। शरीर संचालन में नेत्रों की जो भूमिका रहती है वही ब्रह्माण्ड रूपी विराट भगवद् विग्रहों में ज्योतिष की भूमिका है। भगवान कालचक्रस्वरूप परम पुरूष परमात्मा का अप्रत्यक्ष साक्षात्कार जिस शास्त्र से होता है वह ज्योतिष शास्त्र ही है। सूर्य चन्द्रादि ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के रूप में भगवान श्रीहरि का अधिवैदिक रूप ही प्रकाशित हो रहा है। वेदोपनिषत्सूत्र-तंत्र-पुराणेतिहासादि समस्त वाङ्मय में ज्योतिर्विज्ञान का सविस्तार वर्णन हुआ है। ज्योतिष शास्त्र भारतीय धर्म, दर्शन से जुड़ा हुआ है। इसके बिना धार्मिक कृत्यों का सम्पादन असंभव हो जाता है। समग्र श्रोत-स्मार्त्त यज्ञादि कार्यो की सिद्धि के लिए कर्मकाल का निर्णय ज्योतिष पर आधारित है। ज्योतिष शास्त्र से ही शुभाशुभ काल का ज्ञान होता है।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं साक्षिणौ।।

ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष है, इसके सूर्य चन्द्र साक्षी हैं जिनकी प्रत्यक्ष गति से ग्रहण, नियमित ऋतु परिवर्तन आदि प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध हैं इसलिए वेदांगशास्त्रों में ज्योतिष को आदिकाल से शिरसस्थ स्थान प्राप्त है। ज्योतिषशास्त्र को प्रकाश शास्त्र भी कहा गया है। सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों की किरणों गति के आधार पर तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि पंचाग की रचना की तथा नक्षत्र राशि द्वारा खगोल के भाग निश्चित कर उनमें ग्रहों के गोचर भ्रमण में प्रत्यक्ष फल अनुभव किये।

वराहमिहिराचार्य कहते है कि सूर्य कालपुरूष की आत्मा है। चन्द्रमा मन है। मंगल शक्ति है। बुध वाणी है। बृहस्पति ज्ञान और सुख है। शुक्र कामवासना कारक है और शनि दुःख है।

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च। ग्रहैस्तु व्यापितं सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम्।।
ग्रहाधीनं जगत्सर्व ग्रहाधीना नरा वराः। कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहा कर्मफलप्रदाः।।

ग्रह राज्यदायक व विनाशक होते है। समस्त चराचर ग्रहों से ही व्याप्त है। समस्त संसार और मनुष्य ग्रहों के अधीन है। समय का ज्ञान भी ग्रहाधीन है इसलीए कर्मफल को देने वाले ग्रह होते है।

वास्तव में ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष फलदायक है इसमें सन्देह नहीं किन्तु इस शास्त्र में सूक्ष्म अध्ययन, अनुशीलन की आवश्यकता है। फलित ज्योतिष की सत्ता में सहायक वैज्ञानिकों के रश्मि, शब्द, अणु, तरंग गति, भौतिक चिकित्सा, धातु और वर्ण विषयक अभिनव अनुसंधान है। भौतिकविदो ने भूकम्प, ज्वारभाटा, वर्षा, बाढ़, हिमपात आदि में कारण ग्रहों की विशिष्ट स्थितियों को माना है।

भारतवर्ष ज्योतिष विद्या का उद्गम स्थान है। जितना वैविध्यपूर्ण विस्तृत ज्योतिष शास्त्र यहां निर्मित हुआ है उतना अभी तक विश्व में किसी देश में नहीं हुआ। वैदिक काल से आज तक भारतवर्ष विद्या में अपना जगत गुरूत्व अक्षुण्ण रखे हुये है। ज्योतिष शास्त्र के मुख्य अठारह प्रवर्तक भारत में ही उत्पन्न हुये है। उनके द्वारा ज्योतिर्विज्ञान की प्रत्यक्ष सिद्ध पंचांग परम्परा आज तक हमारे जीवन को आलोकित कर रही है। सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमुख आचार्यो ने पंचांग निर्माण पद्धतियों में परिवर्तन, परिवर्द्धन कर शुद्ध दृक प्रत्यय से तुल्यता दिखाने वाले गणित का आधार लिया है। श्री वेंकटेश बापू केतकर ने वेधसिद्ध नवीन संशोधित समिति केतकी चित्रापक्षीय दृश्य गणित की रचना की है। भारत सरकार ने भी सन् 1655 में शोधन समिति का गठन किया जिसमें केतकी चित्रापक्षीय दृश्य गणित को मान्यता प्रदान की है। नवम्बर 1867 में खगोलविदों की पंचांग गोष्ठी में इसी दृश्य गणित को स्वीकृति दी गयी है। शास्त्रों ने भी दृश्य तुल्यता को आवश्यकता माना है।

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम्।। (वशिष्ठः)

अर्बुद श्री पंचांग का यह अंक परम पूजय दादाजी श्री जयन्तीलालजी ओझा, पूज्य पिताजी श्री भरतलालजी ओझा, पूज्य चाचाजी श्री जगदीशजी ओझा एवं मेरे पंचांग एवं ज्योतिषीय शिक्षा के गुरु, मार्गदर्शक पं.श्री हीरालालजी शास्त्री, जालौर को समर्पित करता हूँ, जिनके दिव्य आशीर्वाद से यह पंचांग आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पंचांग निर्माण में सहयोगी श्री रुद्र पाराशर, श्री हेमन्त ओझा एवं दीपिका सुथार का सहयोग रहा एवं पंचांग निर्माण में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जिनका सहयोग प्राप्त हुआ, उनका मैं आभारी हूँ। इति शुभम् कल्याणमस्तु।



विद्वज्जनकृपाभिलाषी

पं. जनार्दन ओझा (राज ज्योतिषी)

ज्योतिर्विद, प्रतिष्ठाचार्य, भागवतकथा व्यास
अध्यक्ष, अकादमी ऑफ वैदिक साईन्स, जावाल
जावाल (सिरोही) राज., मोबाइल नं. 9001141150

ग्रहाः PLANET 	सूर्य  SUN	चन्द्र  MOON	मंगल  MARS	बुध  MERCURY
१. परिचय/दान पदार्थाः	मध्येवर्तुलमण्डल अंगुल 12 कलिंग देशोभ्द्रव काश्यप गोत्र, रक्तवर्ण/माणिक्य, गेहुं, सवत्साधेनु, रक्तवस्त्र, केसर, गुड़, स्वर्ण, ताम्र, रक्तचन्दन, रक्तकमल, ताम्बूल	आग्नेयां चतुरस्त्रमण्डल अंगुल 24, यमुना तीर देशोद्भव आत्रेय सगोत्र, श्वेत वर्ण/वंशपात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेतवस्त्र, मिश्रि, श्वेत वृषभ, श्वेत चंदन, श्वेतपुष्प, दधि, कपूर, शंख	दक्षिणे त्रिकोण मण्डल अंगुल 3 अवंति देशोद्भव भारद्वाजगोत्र, रक्तवर्ण/मूंगा, मसूर, गेहूँ, रक्त कनेर पुष्प, गुड़, स्वर्ण, रक्तवस्त्र, रक्त चन्दन, ताम्र, केसर, रक्त वृषभ, कस्तूरी, भूमिदान	ईशान्यां बाणाकार मण्डल अंगुल 4 मगध देशोद्भव, आत्रेय गोत्र, हरित वर्ण/कांस्य पात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त, घी, पन्ना, स्वर्ण, सर्वपुष्प, कपूर, शस्त्र, मूंग, हरा फल, केसर, कस्तूरी, पंचरत्न
२. जपनीय एकाक्षरी मंत्राः	ऊँ घृणिः सूर्याय नमः	ऊँ सों सोमाय नमः	ऊँ अं भौमाय नमः	ऊँ बुं बुधाय नमः
३. जपनीय बीज मंत्राः	ऊँ ह्रीं हौं सूर्याय नमः	ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः	ऊँ हूं श्रीं भौमाय नमः	ऊँ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः
४. जपनीय तंत्रोक्त मंत्राः	ऊँ ह्रां ह्रीं हौं सः सूर्याय नमः	ऊँ श्रां श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः	ऊँ फ्रां क्रीं क्रौं सं: भौमाय नमः	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौ. सः बुधाय नमः
५. जपनीय वैदिक मंत्राः	ऊँ आकृष्णेनरजसा वर्तनामो निवेशयन्नमृत मर्त्यच्जा। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्।।	ऊँ इमन्देवा इसपत्नं सुवध्वं महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान् राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य-पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एषवोमी राजा सोमोस्मांक ब्राह्मणानां राजा।। ('असपत्न' का असपत्नम्वं तथा 'ब्राह्मणाना' का ब्राह्मणाग्वं उच्चारण करें)	ऊँ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतां सि जिन्वति।। (अपां रेतां सिं' का उच्चारण अपा ग्वं रेता ग्वं सि करें)	ऊँ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथा मयच्ज। अस्मिनत्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानच्ज सीदत।। ('पूर्ते सं' का उच्चारण पूर्ते सं ग्वं करें)
६. गायत्री मंत्राः	ऊँ आदित्याय विद्यम्हे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।	ऊँ अमृतांज्याय विद्यहे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात।	ऊँ अमृतांज्याय विद्यहे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात।	ऊँ सौम्यरूपाय विद्यहे वाणेशाय धीमहि तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।
७. जप संख्या/समय	७०००/सूर्योदय काल	११,०००/संध्याकाल	१०,०००/सूर्योदय से २ घटी तक	१०००/सूर्योदय से ४ घटी तक
८. समिधः/औषधयः	अर्क/बिल्वमूलं	पलाश/क्षीरिका (खिरनी) मूलं	खदिर/अनन्तमूलं	अपामार्ग/विधारा मूलं
९. अन्य उपायाः	हरिवंश श्रवण	रूद्रार्चन	रूद्रजप	कांस्य दान
१०. रत्न/उपरत्न	माणिक्य/लालडी, सूर्यमणि	मोती/चन्द्रमणि, श्वेत पुखराज	मूंगा/विद्रुममणि, लाल अफीक	पन्न/हरित मणि
११. धातु/न्यूनतम वजन	स्वर्ण या ताम्र/३। रत्ती	रजत, प्लेटीनम/४। या ६। रत्ती	स्वर्ण या तांबा/६। रत्ती	स्वर्ण या कांसी/६। रत्ती
१२. रत्न धारण की उंगली	अनामिका	कनिष्ठिका/अनामिका	अनामिका/तर्जनी	कनिष्ठिका/अनामिका
१३. रत्न धारण करने के नक्षत्र	पुष्य, हस्त	रोहिणी	अनुराधा	उ.फा.
१४. रत्न धारण का वार/समय	रविवार/प्रथम प्रहर	सोमवार/चन्द्रोदय काल	मंगलवार/पूर्वान्ह	बुधवार/प्रथम प्रहर
१५. पुराणोक्त स्तवन	जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। नमोरिं सर्वपापघ्नं ग्रणमोडस्मि दिवाकरम्।।	दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्।।	धरणीगर्भसंभूतं विद्युतकान्ति समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्।।	प्रियंगु-कलिका-श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्।।

विशेष :- सभी प्रकार के रत्न/उपरत्न शुक्ल पक्ष में कच्चा दूध, गंगाजल या शुद्धजल में स्नान कराकर पंचोपचार (गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य) के पश्चात् धारण करने चाहिये।

	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	 JUPITER	 VENUS	 SATURN	 RAHU	 KETU
१	उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमण्डल अंगुल 6 सिन्धु, देशोद्भव आंगिरस गोत्र, पीतवर्ण/शर्करा, मधु, घी, हल्दी, पीतअश्व, पीतवस्त्र, पीतधान्य शास्त्र पुस्तक, पुखराज, लवण स्वर्ण, पीत पुष्प, भूमि तथा छत्र दान	पूर्वे पंचकोणमण्डल अंगुल 9 भोजकट देशोद्भव भार्गव सगोत्र, श्वेतवर्ण/श्वेत चित्र वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चांदी, हीरा, घी, स्वर्ण, दधि-श्वेताश्व, गन्ध द्रव्य, कपूर, शर्करा, श्वेत गाय, भूखण्ड दान	पश्चिमे धनुषाकार मण्डल अंगुल 2 सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण/ उडद, तिल, तेल, महिषी, लौहा, छतरी, श्यामधेनु, श्यामवस्त्र, नीलम, कुलथी, जूता, स्वर्ण, कम्बल, लवंग, कृष्ण पुष्प	नैऋत्यांशूर्पाकारमंडल अंगुल 12 राठिना देशोद्भव पेठीनसगोत्र, धूम्रवर्ण/गोमेद, कृष्णाश्व, खड्ग, नीलवस्त्र, कम्बल, तिल, तेल, लौहा, सप्तधान्य, अभ्रक, स्वर्ण, उड़द, स्र्वणनाग, कृष्ण पुष्प, झाड़ू	वायव्येध्वजाकार मण्डल अंगुल 6 अवन्ति देशोद्भव, जैमिनिगोत्र, धूम्रवर्ण/लहसुनिया, तिल, कम्बल, कस्तूरी, शस्त्र, कृष्णवस्त्र, कृष्णपुष्प, तेल, उड़द, काली मीर्च, सप्तधान्य, बकरा, लौहा, छतरी, सीसा, रांगा
२	ऊँ बृं बृहस्पतये नमः	ऊँ शुं शुक्राय नमः	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	ऊँ रां राहवे नमः	ऊँ कें केतवे नमः
३	ऊँ ह्रीं क्लीं बृहस्पतये नमः	ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः	ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः	ऊँ ऐं ह्रीं राहवे नमः	ऊँ ह्रीं ऐं केतवे नमः
४	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौ. सः गुरूवे नमः	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	ऊँ प्रां प्रीं प्रों सः शनये नमः	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः	ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः
५	ऊँ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीयच्छवसऋत प्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।	ऊँ अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रंपयः सोमं प्रजापति। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधुः।। (‘विपांन’ का उच्चारण विपाग्वं करें)	ऊँ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तुनः।।	ऊँ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया सचिष्ठया वृता।।	ऊँ केतुं कृण्वन्नकेवते पेशोमर्या अपेशये। समुषभ्दिः रजायथा।
६	ऊँ आंडिगरसाय विद्मते दिव्यदेहाय धीमहि तन्नौ जीवः प्रचोदयात्।	ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नौ शुक्रः प्रचोदयात्।	ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नौ शनिः प्रचोदयात्।	ऊँ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौ राहुः प्रचोदयात्।	ऊँ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौ केतुः प्रचोदयात्।
७	१९,०००/संध्याकाल	१६,०००/सूर्योदय काल	२३,०००/संध्याकाल	१८,०००/रात्रिकाल	१७,०००/रात्रिकाल
८	अश्वत्थ/भृंग्डराज मूलं	उदुम्बर/मंजिष्ठा मूलं	शमी/बिच्छू मूलं	दूर्वा/श्वेत चन्दन	कुशा/असगन्ध मूलं
९	अमावस्या वृत	गौ प्रतिपालन	मृत्युंजय जप	भुजंगदान	ध्वजा दान
१०	पुखराज/पीत जरकन	हीरा/श्वेत जरकर	नीलम/नीलमणि	गोमेद/फिरोजा	लहसुनिया
११	स्वर्ण या पीतल/४। रत्ती	स्वर्ण या चांदी/१। रत्ती	पंचधातु या स्टील/४। रत्ती	पंचधातु या चांदि/६। रत्ती	त्रिधातु या चांदि/३। रत्ती
१२	तर्जनी/अनामिका	कनिष्ठिका/मध्यमा	मध्यमा/कनिष्ठिका	मध्यमा/कनिष्ठिका	कनिष्ठिका
१३	पुष्य	मृगशिरा	श्रवण	उ.फा.	उ.फा.
१४	गुरूवार/प्रथम प्रहर	शुक्रवार/प्रथम प्रहर	शनिवार/सूर्यास्त बाद	बुधवार/सूर्यास्त बाद	गुरूवार/पूर्वान्ह
१५	देवानां च ऋषीणांज्व गुरूं काज्चन सन्निभम। बुद्धि-भूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।	हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूभ। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।	नीलाज्जन समाभासं रविपुत्र यमाग्रज्म्। छाया मार्त्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।	अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम्। सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहु प्रणमाम्यहम्।।	पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रोद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

दान के लिये संक्रान्ति काल, ग्रहणकाल अमावस्या एवं द्वादशी शुभ होते हैं। सप्तधान्य - उड़द, मूंग, गेहुं, चना, जौ, चावल, मोठ

● अथ संवत्सर वर्ष राजादि फलम् ●

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयतिं विघ्नानाम् ॥
श्रियं सरस्वतीं गौरीं गणेशं स्कन्दमीश्वरम् ।
ब्रह्माणं ब्राह्मणं द्रष्टुं वायुदेवं नमाम्यहम् ॥
पंचांगशुद्धया कृतप्रयत्नं प्रचक्रतु मोहा विनाशशक्तम् ।
तिथिवारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च ।
पंचांगस्य फलं श्रुत्वा स्नानदानफलं लभेत् ॥

नमोऽस्तु विद्यावितताय चक्रिणे। समस्तथी स्थानकृते सदा नमः ॥ अथाऽस्मिन् संवत्सरे सृष्टितो सौर गताब्दः १९५५८८५१२७, एवं चतुर्युगमानेषु सत्ययुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गत कलिः ५१२७, भोग्यकलिः ४२६८७३ कलालांगेषु कलौयुगे तीर्थबौद्धावताराभवत् तथा च कल्किर्भविता। कलियुगे ५१२८ वर्षाभ्यतिक्रान्ते कालेऽस्मिन् । अथास्मिन संवत्सरे श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्यराज्येऽतो गताब्दाः २०८३ शालीवाहन शाकः १९४८, ईस्वी सन् २०२६-२७, भारतीय गणराज्य संवत् ७६-७७, श्री महावीर निर्वाण जैन संवत् २५५३-५४, श्री बुद्ध संवत् २५६९-७०, श्रीकृष्ण संवत् ५२५२-५३, हिजरी सन् १४४७-४८, फसली सन् १९३२-३३ । वर्षारम्भे गुरुमानेन सूर्यसिद्धान्तमतं विजयादिथर्यथोक्तम्। मध्यस्थे रौद्र नाम संवत्सरः प्रवर्तते । तस्य मेषा राशौ समये गत मासादिः १।२२।५३।४६।३६ भोग्य मासादिः १०।७।६।१३।२४ नासत्यदैवतं युगम। वर्षेऽस्मिन सोमवती अमावस्या ०३, भौमवती अमावस्या ०२, शनिश्चरी अमावस्या ०३, सोमवती पंचमी ३, अंगारकी चतुर्थी २, भानु सप्तमी २, बुधाष्टमी ०, रविदशमी १, समय मुहूर्त्ता ३४५, तिथि क्षयः १८, तिथि वृद्धिः ११, समयदिनानि ३८३, संवत्सर ब्रार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट यब्दानां मध्ये रुद्र विंशतिकाया १४ रौद्र नाम संवत्सरः प्रवर्तते । रोहिणी निवासः समुद्रे, समय निवासः मालाकारगृहे, समय विश्वा १८ समयवाहनम् दर्दुरः। संवत्सर मासाः – पौष, मेघ नाम पुष्कर, उत्पत्ति विषयाः ९९, खपति विषयाः १२६, वर्षा विश्वा १७, धान्यं ११, तृणम् ५, शीतम् १३, तेजः १७, वायुः १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विघ्न ११, एक्यम् ११७, धर्म १, पाप १८, शनि–दृष्टिउत्तरे, कार्तिक मासे बुधोदये, ग्रहणाभावेऽपि भावतः ॥

अथ राजादिफलम् – राजा गुरु, मंत्री मंगल, सस्येश गुरु, धनेश गुरु, दुर्गेश चन्द्र, धान्याधिपः बुध, रसेश शनि, निरसेश गुरु, फलेश चन्द्र । वर्षफलम् – आदौ किंचित् कलहः, मध्ये सुखलाभः, अन्ते शान्तिः । वृष्टिः मध्यमाधिकाः धान्यसमृद्धिः, व्यापारोन्नतिः, जनानां श्रमे सिद्धयः ॥

॥ इति विक्रमसंवत् २०८३ रौद्र वर्षराजादिफलम् ॥

✻ रौद्र संवत्सरस्य फलम् ✻

रौद्रऽब्दे नृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विते ।
सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥

इस वर्ष रौद्र नामक वर्ष होने से राजाओं में क्षोभ हो तथा क्लेशसंयुक्त हो और अन्न जल मध्यम हों।

● राजा गुरू का फल –

गुरौ नृपे वर्षेति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्चधेनवः ।
यजन्तिविप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते ॥

इस वर्ष का बृहस्पति होने से उपयोगी जल वर्षे, गायें अच्छा दूध दें, ब्राह्मण लोग होम यज्ञादि में निरत रहें और सब लोगों में बड़े–बड़े उत्सव होते रहें।

● मंत्री मंगल का फल –

अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिजवेदना।
जनपदेषु जयसुखसंचयंनबहुगोषुपयोग द्विजकर्म च ॥

इस वर्ष का मंत्री मंगल होने से लोग बीमारियों से दुःखी हों, किन्तु गायों के दूध अधिक होने से लोग सुखी भी रहें।

● सस्येश गुरू का फल –

कणपतौसुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः ।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहुनि वसूनि वै ॥

इस वर्ष के सस्येश बृहस्पति होने से वेद विहित मार्ग के प्रचार से सौख्य हों। वर्षा बहुत हों, अन्न तथा रस गोरस दूध आदि भी बहुत हों।

● धान्येश बुध का फल –

बुधधान्याधिपेमेघजलंमव्वंतिवैभृशम् ।
सैन्धवेलाटदेशेचमाधवोल्पंचवर्षति ॥

इस वर्ष के धान्येश बुध होने से जल बहुत वर्षे और सिन्धु तथा लाट देश में वर्षा कम हो।

● मेघेश चन्द्र का फल –

शशिनितोयदपेयदिगोमहिष्यजखरादिषुदग्धरसंतदा।
फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोगवतीननुभामिनी॥

इस वर्ष के मेघेश चन्द्र होने से गौ, भैंस, छेरी, गधी आदि के दूध अधिक हो । पृथ्वी पर खेतियों में अन्न भी अधिक हो और वृक्षों में फल भी अधिक लगे और सब सुख भोग मिले।

● रसेश शनि का फल –

रविसुते रसपेरससंक्षयोनजलदागददाश्वपयोधराः ।
अजगवांगजवाजिखरोष्ट्रहाजनपदेषुनरा न रसैर्युताः ॥

इस वर्ष के रसेश शनि होने से रसों का नाश हो, बादलों से पानी के बदले रोग वर्षे । छेरी–गाय–हाथी–घोड़े, गधे और उंट इनका नाश हो और मनुष्यों में निरसता रहे।

● नीरसेश गुरू का फल –

हरिद्रापीतवस्तूनिपीतवस्त्रादिकंचयत् ।
नीरसेशोयदाजीवः सर्वेषांप्रीतिरूतमा ॥

इस वर्ष के नीरसेश गुरु होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीले रंग की वस्तु यह सब सस्ते हों और मनुष्यों में प्रीति बढ़े।

● फलेश चन्द्र का फल –

यदिविधुः फलपोद्भुमराशयः फलयुतावलिभि कुसुमैर्युताः ।
द्विजमुखावरभोगसमन्वितानृपतयोनयनाटनतत्पराः ॥

इस वर्ष का फलेश चन्द्र होने से वृक्षों में फल तथा बैलों में फूल बहुत लगें। ब्राह्मणों को अच्छे भोजन मिलें और राजा लोग न्यायी तथा भ्रमणशील हों।

● धनेश गुरू का फल –

सुमनसांचगुरूर्द्रविणाधिपोवणिजवृतिपराः सुखभाजनाः ।
फलितपुष्पितभूमिरूहाः सदाविविधद्रव्ययुताभुविमानवाः ॥

इस वर्ष के धनेश गुरू होने से लोग निष्पापी हों, वणिज वृत्ति करने वाले सुखी रहें। वृक्षों में फल–पुष्प लगें और मनुष्य कई भांति के धन द्रव्य से युक्त हों।

● दुर्गेश चन्द्र का फल –

गढपतिः शशलाञ्छनकोयदा नृपसुराज्यविलासितपौरजाः ।
बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नखरा वरवर्णितविग्रहाः ॥

इस वर्ष के दुर्गेश चन्द्र होने से राजा सुराज्य करें, प्रजा आनंद करें, ईख तथा गोरस भोगियों को धनलाभ हो और श्रेष्ठ लोगों में विग्रह हो।

● काल नामक मेघ का फल –

इस वर्ष नवमेघों में से काल नामक मेघ होगा इससे अच्छे आदमी रोग–पीड़ा से व्याकुल हों राजाओं में परस्पर कलह हो और वर्षा भी कम वर्षे।

● पुष्कर नामक मेघ का फल –

इस वर्ष चतुर्मेघों में से पुष्कर नामक मेघ वर्षा करेगा, इससे कन्द, मूल, फल इनकी वृद्धि नहीं हो कई भांति पापों की वृद्धि हो रोग पीड़ा से लोग दुबले हों और वर्षा कम वर्षे।

● तक्षक नाग का फल –

इस वर्ष नव नागों में से तक्षक नामक नाग होने से वर्षा मध्यम हो और राजाओं में विग्रह हो।

● रोहिणी सागर में वास का फल –

इस वर्ष रोहिणी का निवास सागर में होगा इससे बहुत ही अच्छी वर्षा होगी तथा फसलों की पैदावार भी उत्तम होगी।

● पौष संज्ञक वर्ष का फल –

पौषेब्देसुखिनः सर्वेगुरुपूजारताजनाः।
क्षेत्रंसुभिक्षमारोग्यंवृष्टिः कृषकसम्मता॥

पौष नामक वर्ष हो तो सब लोग सुखी रहें, बड़ों की तथा गुरु की पूजा में रत रहें। खेती अच्छी होने से सुभिक्ष और आरोग्य हो तथा कृषकों की इच्छानुसार वर्षा हो।

● शनि की दृष्टि उत्तर –

समय वास माली के घर
समय वाहन चातक

● स्तंभ –

चैत्र शुक्ल पक्ष ९ रेवती नक्षत्र का भोग ३.६४% जल स्तम्भ
वैशाख शुक्ल पक्ष १ भरणी नक्षत्र का भोग २१.४७% तृण स्तम्भ
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १ मृगशिरा का भोग ५३.३८% वायु स्तम्भ
आषाढ शुक्ल पक्ष १ पुनर्वसु नक्षत्र का भोग ४३.३१% अन्न स्तम्भ

● वर्ष के चार आर्षमान –

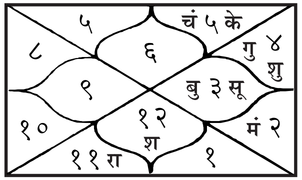
वैशाख शुक्ल पक्ष ३ रोहिणी नक्षत्र का भोग १४.०१% प्रथम आर्षमान
श्रावण शुक्ल पक्ष १५ श्रवण नक्षत्र का भोग ०% द्वितीय आर्षमान
कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ कृतिका नक्षत्र का भोग ८८.७७% तृतीय आर्षमान
पौष कृष्ण पक्ष ३० मूल नक्षत्र का भोग २५.८६% चतुर्थ आर्षमान

● लाभ खर्च चक्र

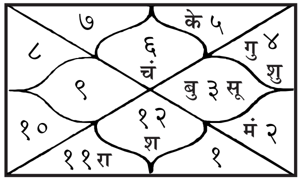
मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

卐 वर्षा विचार 卐

वर्षा प्रवेश
२१ जून प्रातः ८:०७



आर्द्रा प्रवेश
२२ जून प्रातः ६:१५



इस वर्ष रोहिणी वास समुद्र में है, आर्द्रा प्रवेश के समय चंद्रमा लग्न में होने से उत्तम वर्षा का योग है, परन्तु चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि होने से विषम वर्षा का योग भी विद्यमान है।

नक्षत्र	दिनांक से	वर्षा के वाहन
आर्द्रा	२१/२२ जून से	गर्दभ वाहनं अल्प वृष्टि। पु.स्त्री.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी
पुनर्वसु	५/६ जुलाई से	अश्व वाहनं पर्वते वृष्टि। स्त्री.पु.योग सुवृष्टि, सौम्यनाड़ी।
पुष्य	१९/२० जुलाई से	मूषक वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री.स्त्री.योग अनावृष्टि। नीरानाड़ी।
आश्ले.	२/३ अगस्त से	गज वाहनं सुवृष्टि। स्त्री.पु.योग सुवृष्टि। जलनाड़ी।
मघा	१६/१७ अग.से	चातक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री.स्त्री.योग अनावृष्टि। अमृतनाड़ी
पूफा.	३०/३१ अग.से	गर्दभ वाहनं अल्पवृष्टि। स्त्री.पु.योग सुवृष्टि। चण्डनाड़ी।
उफा.	१२/१३ सितं.से	मण्डूक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री.स्त्री.योग अनावृष्टि। वायुनाड़ी
हस्त	२६/२७ सितं.से	मूषक वाहनं अल्पवृष्टि। स्त्री.पु.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी।

✻ वर्षा ज्ञानार्थे सप्त नाड़ी चक्रम् ✻

नाड़ी	चण्डा	वायु	अग्नि	सौम्य	नीरा	जल	अमृत
नाड़ी स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्र	कृति.मघा अनु.धनि.	रोहि.पूफा. ज्ये.शत.	मृग.उफा. मूल.पूभा.	आर्द्रा.हस्त पूषा.उभा	पुनर्व.चित्र उषा.रेव	पुष्य.स्वा. अभि.अश्वि	आश्ले.विशा. श्रव.भरणी
नाड़ी फल	आंधी तूफान	तेज हवा	बिजली या उमस	गर्मी एवं वर्षा	बादल	सामान्य वर्षा	अति वर्षा

✻ नाड़ी चक्र से वर्षा देखने की विधि ✻

वर्षा का विचार मुख्य रूप से सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र तक करना चाहिये। जिस समय एक नाड़ी में दो से अधिक ग्रह हों या नाड़ी स्वामी बैठा हो तो उपरोक्त चण्डादि नाड़ी के नीचे लिखे अनुसार आंधी, हवा या वर्षा का योग होता है।

✻ वर्षा जानने के अन्य योग ✻

– यदि सूर्य मंगल की युति हो अल्प वर्ष होती है।
– यदि गोचर में मंगल सूर्य से आगे चल रहे हों तो सूखे की स्थिति होती है
– मंगल के राशि परिवर्तन के समय, गुरू उदय के समय, शुक्र अस्त के समय, शनि के उदय, अस्त, वक्री–मार्गी तथा राशि परिवर्तन के समय वर्षा योग होता है।

✻ नाम राशि से ग्राम वास विचार ✻

व्यक्ति को अपनी राशि के सम्मुख लिखी राशियों वाले ग्राम में निवास शुभ होता है। परन्तु शुभ राशि वाले ग्राम या शहर में भी सम्मुख लिखी दिशा में निवास नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति राशि	शुभ ग्राम–शहर की राशि	अशुभ दिशा
मेष	वृषभ, सिंह, धनु, मकर, कुंभ	उत्तर
वृष	मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ, मीन	ग्राम मध्य
मिथुन	कर्क, तुला, कुंभ, मीन, मेष	ग्राम मध्य
कर्क	सिंह, वृश्चि., मीन, मेष, वृष	नैऋत्य
सिंह	कन्या, धनु, मेष, वृषभ, मिथुन	ग्राम मध्य
कन्या	तुला, मकर, वृषभ, मिथुन, कर्क	दक्षिण
तुला	वृश्चि.कुंभ, मिथुन, कर्क, सिंह	वायव्य
वृश्चिक	धनु, मीन, कर्क, सिंह, कन्या	पूर्व
धनु	मकर, मेष, सिंह, कन्या, तुला	पश्चिक
मकर	कुंभ, वृषभ, कन्या, तुला, वृश्चिक	ग्राम मध्य
कुंभ	मीन, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु	ईशान
मीन	मेष, कर्क, वृश्चिक, धनु, मकर	अग्नि

✻ ग्राम वास में काकिणी विचार ✻

निम्नलिखित सारणी से अपने नाम तथा ग्राम के नाम के प्रथम अक्षर से वर्ग संख्या के अनुसार मिलान कर ग्राम वास में लाभ–हानि जानें।

प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या	प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या
अ ई उ ए	१	त थ द ध न	५
क ख ग घ ङ	२	प फ ब भ म	६
च छ ज झ	३	य र ल व	७
ट ठ ड ढ ण	४	श ष स ह	८

✻ ग्राम या नगर की वर्ग संख्या ✻

	काकिणी	१	२	३	४	५	६	७	८
जातक के नाम की वर्ग संख्या	१	सम	लाभ	लाभ	हानि	हानि	लाभ	लाभ	हानि
	२	हानि	सम	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
	३	हानि	लाभ	सम	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
	४	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ	हानि	हानि	लाभ
	५	लाभ	हानि	हानि	हानि	सम	लाभ	लाभ	लाभ
	६	हानि	हानि	हानि	लाभ	हानि	सम	लाभ	लाभ
	७	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ
	८	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	हानि	हानि	सम

❊ अथ मकर संक्रान्ति फलम् ❊

ईस्वी सन् २०२७, विक्रम संवत् २०८३ रौद्रनामके संवत्सरे, पौषमासस्य शुक्लपक्षे द्वितीयायां तिथौ, गुरुवासरे, पुनर्वसुनक्षत्रे, सिद्धयोगे, तुलालग्ने रात्रौ २०:५९:०१ वेलायां संक्रान्तिः संजाताऽस्ति।

❊ वार फलम् ❊ गुरुवासरे संक्रान्तौ – संस्कृतमः गवां वृद्धिः, ब्राह्मणपूजाः, धर्मसंवर्धनम्, प्रजासौख्यम्। गुरुवार को संक्रान्ति पड़ने से गायों की वृद्धि, ब्राह्मणों का सम्मान, धर्म का पोषण और प्रजा में सुख होता है।

❊ तिथि फलम् ❊ द्वितीयायां संक्रान्तौ – धान्यसमृद्धिः, रत्नलाभः, रोगशमनम्, प्रजाः आरोग्यसम्पन्नाः – द्वितीया तिथि में संक्रान्ति होने से अन्न–धान्य की वृद्धि, रत्नों की प्राप्ति, रोगों का नाश और जन समुदाय में स्वास्थ्य वृद्धि होती है।

❊ नक्षत्र फलम् ❊ पुनर्वसुनक्षत्रे संक्रान्तौ – जलवृद्धिः, वृक्षसंपदः, व्यापारवृद्धिः, जनसौख्यं – पुनर्वसु नक्षत्र में संक्रान्ति होने से जल की वृद्धि, वनस्पतियों की सम्पन्नता, व्यापार में लाभ और प्रजाओं का सुख होता है

❊ योग फलम् ❊ सिद्धयोगे संक्रान्तौ – संस्कृतम् सर्वकार्यसिद्धिः, राजसुखं, अन्नधान्यसमृद्धिः, प्रजाशान्तिः – सिद्धयोग में संक्रान्ति होने से सब कार्य सफल होते हैं, राजा को सुख, अन्न–धान्य की प्रचुरता और प्रजा में शांति मिलती है

❊ लग्न फलम् ❊ तुलालग्ने संक्रान्तौ – न्यायप्रवृत्तिः, शस्त्रविजयः, राज्ये स्थैर्यम्, प्रजासौख्यम्–तुला लग्न में संक्रान्ति होने से न्याय की वृद्धि, शस्त्र–बल में विजय, राज्य में स्थिरता और जनसामान्य को सुख मिलता है

❊ मास फलम् ❊ पौषमासे संक्रान्तौ – धन्यलाभः, कृषकानां लाभः, अन्नसमृद्धिः, शस्यशुभं – पौष मास में संक्रान्ति होने से किसानों को लाभ, धान्य की प्राप्ति और फसलों में शुभ फल होता है।

❊ करणफलम् ❊ बवकरणे संक्रान्तौ – राज्ये स्थैर्यम्, शस्त्रविजयः, व्यापारलाभः – बवकरण में संक्रान्ति होने से राज्य स्थिर रहता है, युद्ध में विजय और व्यापार में लाभ होता है।

❊ वाहनफलम् ❊ गजे वाहनयुक्ते संक्रान्तौ – धान्यवृद्धिः, राज्यसम्पन्नता, धर्मवृद्धिः – यदि सूर्य गजवाहन से जाते हैं तो अन्न–धान्य की वृद्धि, राज्य की सम्पन्नता और धर्म की वृद्धि होती है।

❊ उपवाहनफलम् ❊ अश्वौपवाहनयुक्ते संक्रान्तौ – सैन्यबलवृद्धिः, शत्रुपराभवः, पराक्रमलाभः यदि उपवाहन घोड़ा हो तो सेना की वृद्धि, शत्रुओं की हार और पराक्रम में वृद्धि होती है।

❊ वस्त्रफलम् ❊ पीतवस्त्रयुक्ते संक्रान्तौ – धनधान्यवृद्धिः, गवां वृद्धिः, प्रजासौख्यम् – यदि पीतवस्त्र हों तो धन–धान्य और गौ–वृद्धि होती है, प्रजा सुखी होती है।

❊ दृष्टिफलम् ❊ पश्चिमदृष्टियुक्ते संक्रान्तौ – म्लेच्छक्षयः, शत्रुविजयः, धर्मसंवृद्धिः, प्रजाशान्तिः – पश्चिम दिशा की दृष्टि होने पर म्लेच्छों का नाश, शत्रुओं की हार, धर्म की वृद्धि और प्रजा में शांति होती है।

❊ पुष्पफलम् ❊ पद्मपुष्पयुते सूर्ये – जलसमृद्धिः, सौभाग्यवृद्धिः, धर्मपुष्टिः, प्रजाः आनन्दसम्पन्नाः – यदि कमल पुष्प के योग से संक्रान्ति हो तो जल समृद्धि, सौभाग्य की वृद्धि, धर्म की पुष्टता और जनता में आनंद होता है।

❊ भोजनफलम् ❊ क्षीरान्नयुतं संक्रान्तौ – गवां वृद्धिः, अन्नधान्यवृद्धिः, पुष्टिः, सर्वजनसन्तोषः – क्षीर–भोजन के योग से संक्रान्ति होने पर गोधन की वृद्धि, अन्न–धान्य की अधिकता और जनता का संतोष होता है

❊ जलफलम् ❊ स्वच्छजलयुक्ते संक्रान्तौ – सिंधूनां वृद्धिः, नदीप्रवाहः, वर्षावृष्टिः, जलसम्पन्नता – यदि स्वच्छ जल के योग से संक्रान्ति हो तो नदियों की वृद्धि, जल की प्रचुरता और वर्षा की प्राप्ति होती है।

❊ धातुफलम ❊ हिरण्यधातुसम्पन्ने संक्रान्तौ – धनलाभः, सुवर्णवृद्धिः, व्यापारसमृद्धिः। यदि – धातु रूप में स्वर्ण के योग में हो तो धनलाभ, सुवर्ण की वृद्धि और व्यापार में सफलता होती है।

❊ अलंकार फलम् ❊ रत्नमाणिक्य संक्रान्तौ – स्त्रीषु सौभाग्यवृद्धिः, रत्नप्राप्तिः, शोभावृद्धिः – यदि रत्न और आभूषण का योग हो तो स्त्रियों में सौभाग्यवृद्धि, रत्नाभरण की प्राप्ति और शोभा में वृद्धि होती है।

❊ दिक्फलम् ❊ सूर्यस्य पश्चिमभागे संक्रान्तिः – शत्रुपराभवः, म्लेच्छक्षयः, धर्मवृद्धिः, राज्ये स्थैर्यम् – पश्चिम दिशा की संक्रान्ति होने से शत्रुओं की हार, म्लेच्छों का नाश, धर्म की वृद्धि और राज्य की स्थिरता होती है

❊ पुण्यकालः ❊ प्रातः ०७:१५:१३ आरभ्य पर्यन्तं १२:३०:०० पर्यन्तं पुण्यकालः। इस समय किया गया स्नान, दान, जप, होम महान पुण्यदायक है।

❊ महापुण्यकालः ❊ प्रातः ०७:१५:१३ आरभ्य ०९:१५:१३ पर्यन्तं महापुण्यकालः। यह विशेष पुण्यकाल है, जिसमें सम्पूर्ण कर्म परम शुभफल देने वाले होते हैं।

❊ संक्षेपफलम् ❊ एषा मकरसंक्रान्तिः संवत्सरे रौद्रे, गुरुवासरे, पौषशुक्लद्वितीयायां, पुनर्वसुनक्षत्रे, सिद्धयोगे, तुलालग्ने च संजाताऽस्ति। फलतः – धान्यसमृद्धिः, गवां वृद्धिः, जलसंपन्नता, वृक्षसंपदः, सुवर्णवृद्धिः, व्यापारलाभः, सैन्यबलवृद्धिः, शत्रुपराभवः, धर्मसंवृद्धिः, प्रजासौख्यम्, सर्वजनानामानन्दः। यह संक्रान्ति रौद्र संवत्सर, पौष शुक्ल द्वितीया, गुरुवार, पुनर्वसु नक्षत्र, सिद्धयोग और तुला लग्न में हुई है। इसके फलस्वरूप अन्न–धान्य की समृद्धि, गौ–समृद्धि, जल की प्रचुरता, वृक्षों की वृद्धि, सुवर्ण की वृद्धि, व्यापार में लाभ, सैन्य बल की वृद्धि, शत्रुओं की पराजय, धर्म की वृद्धि, प्रजाओं का सुख और सर्वजन का आनंद होगा।

❊ शास्त्रीयप्रमाणाः –

1. बृहद्संहितायां वराहमिहिरकृते – वारतिथिनक्षत्रयोगलग्नैः संक्रान्तिजं फलम्। पश्यन्ति मुनयः सर्वे नृणां वर्षफलं तथा॥ संक्रान्तौ यद्भवेद्वस्त्रं चवाहनं चोपवाहनम्। तदनुसारेण ज्ञेयं लोकानां वर्षफलं शुभम्॥

शनि की पनौती (साढ़ेसाती/ढैय्या का प्रभाव) जनवरी 2026 से मार्च 2027 तक किन राशियों पर रहेगा और उसका असर क्या होगा –

शनि गोचर (जनवरी 2026 – मार्च 2027)

जनवरी 2026 में शनि मीन राशि में गोचर करेंगे और मार्च 2027 तक वहीं रहेंगे। शनि लगभग 2.5 वर्ष एक राशि में रहते हैं। पनौती (साढ़ेसाती व ढैय्या) तक मानी जाती है जब शनि जन्मराशि से 12 वें, प्रथम व द्वितीय भाव में होते हैं। ढैय्या (अर्धसाढ़ेसाती) तब मानी जाती है जब शनि चतुर्थ या अष्टम भाव में आते हैं।

❊ जनवरी 2026–मार्च 2027 में शनि की पनौती किसे लगेगी ? ❊

1. **कुंभ राशि –** साढ़ेसाती का अन्तिम चरण रहेगा।
   प्रभाव : मानसिक दबाव, कार्यक्षेत्र में विलंब, पारिवारिक तनाव, स्वास्थ्य पर असर।
   उपाय : हनुमान चालीसा का पाठ, शनि अमावस्या को तेल का दान, शनिवार को काले तिल का दान।
2. **मीन राशि –** साढ़ेसाती का मध्य चरण (सबसे कठिन) रहेगा।
   प्रभाव : करियर में कठिन निर्णय, धन हानि की आशंका, शत्रु वृद्धि, रिश्तों में दरार।
   उपाय : शनिवार को पीपल की पूजा, शनि स्त्रोत पाठ, गरीबों को काले वस्त्र/अनाज दान।
3. **मेष राशि –** साढ़ेसाती का प्रारंभिक चरण (जनवरी 2026 से शुरू) रहेगा।
   प्रभाव : नौकरी में परिवर्तन, घर–परिवार में कलह, स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव।
   उपाय : हनुमानजी की उपासना, शनिवार को सरसों तेल का दीपक, काले कुत्ते/गाय को रोटी।

❊ ढैय्या (अर्धसाढ़ेसाती) प्रभाव ❊

4. **सिंह राशि –** शनि का अष्टम गोचर (अष्टम ढैय्या)।
   प्रभाव : अनचाहे खर्च, यात्रा कष्ट, स्वास्थ्य पर प्रभाव।
   उपाय : ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप, शनिवार को उड़द दान।
5. **धनु राशि –** शनि का चतुर्थ गोचर (चौथी ढैय्या)।
   प्रभाव : घर–परिवार में कलह, स्थायी सम्पत्ति में रूकावट, मानसिक बैचेनी।
   उपाय : काले घोड़े की नाल धारण, नीला कपड़ा दान, हनुमान मंदिर दर्शन।

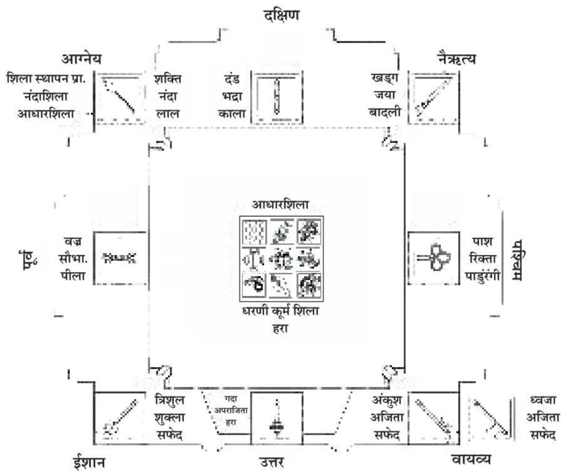
❊ शनि से बचाव के सामान्य उपाय ❊

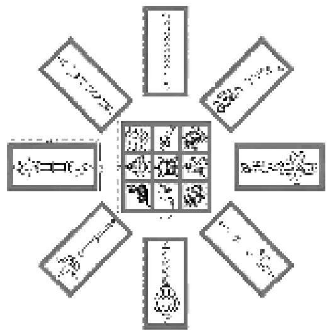
1. शनिवार को शनिदेव का पूजन, तेल, तिल, लोहा, काली वस्तुएं दान करें।
2. हनुमानजी का स्मरण और सुन्दरकाण्ड/हनुमान चालीसा का पाठ करें।
3. गरीबों, असहाय, मजदूरों की सेवा करें।
4. न्यायप्रिय, संयमी और परिश्रमी जीवनशैली अपनाएं।
5. पीपल के पेड़ की सेवा और शनिवार को दीपक जलाना।

संक्षेप में – साढ़ेसाती प्रभावी राशियाँ (जन 2026–मार्च 2027) : कुंभ, मीन, मेष।
ढैय्या प्रभावी राशियाँ : सिंह, धनु।
अन्य राशियों पर शनि का सामान्य फल रहेगा।

कूर्म शिला स्थापना चक्र

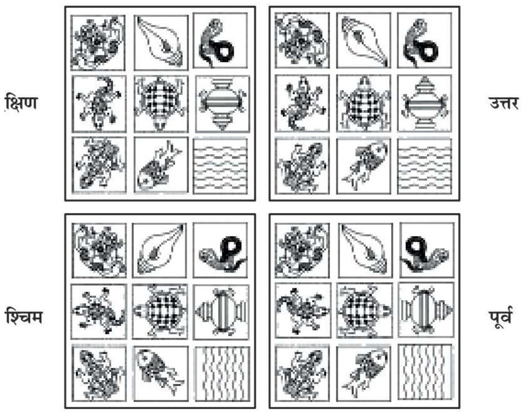
शिला स्थापन में कूर्म चक्र शुद्धी का होना आवश्यक है, अतः कूर्म चक्र शुद्धी मिलने पर ही मन्दिर आदि का शिलान्यास करना चाहिए।





शिल्प रत्नाकर के श्लोक के अनुसार पांचवीं अजिता शिला में वायुदेव का अंकुश चिह्न अंकित है और यही सर्व मान्य है। लेकिन कुछ समय से जैन मंदिरों के शिलान्यास में ध्वजा का चिह्न अंकुश की जगह प्रयोग में लिया जा रहा है

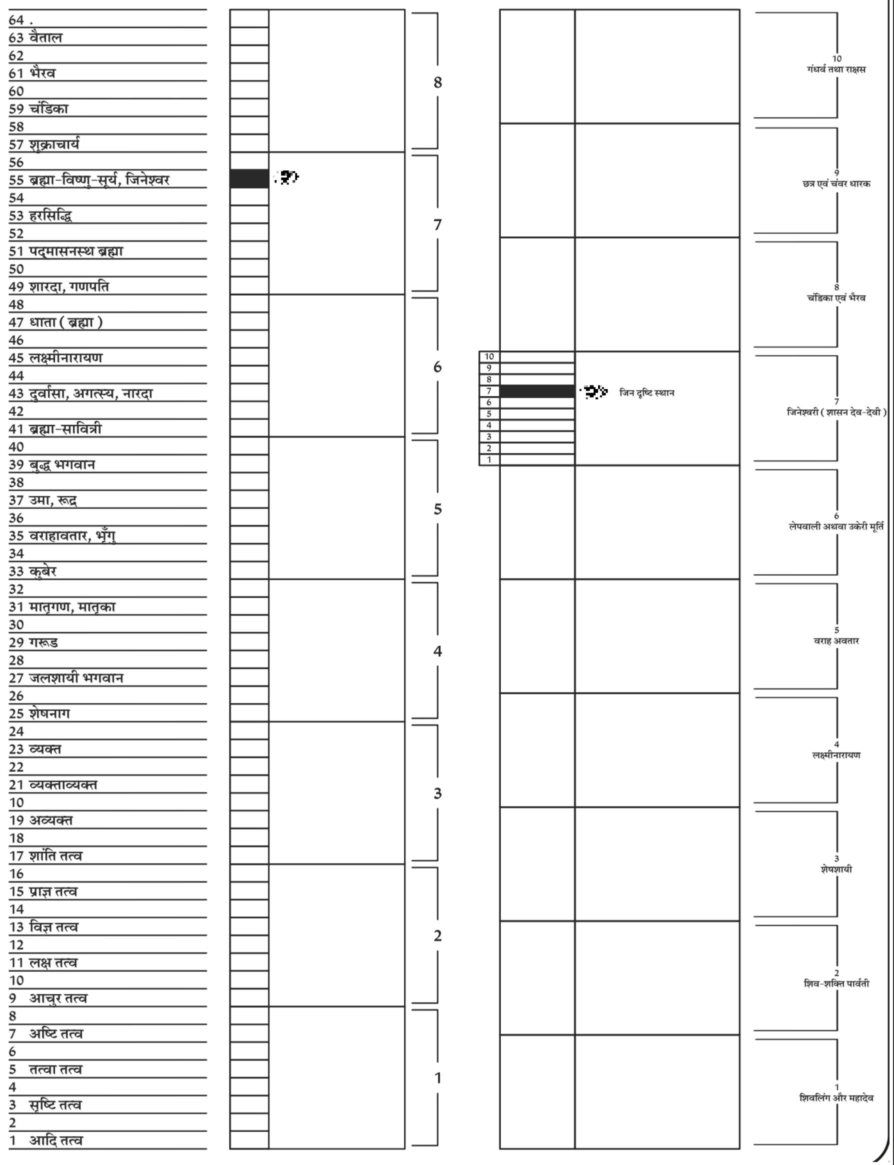
चारों दिशा के मन्दिरों के लिए भिन्न भिन्न कूर्म शिला की स्थिति



शिला स्थापना का कोष्ठक

	कूर्मशिला के नवचिह्न	दिशा	नव शिला स्थापनक्रम नाम	आयुध	वस्त्र	निधि	कुंभ
१	जलप्रवाह	अग्नि	नंदा	शक्ति	लाल	पद्म	सुभद्र
२	मत्स्य	दक्षिण	भद्रा	दंड	काला	महापद्म	विभद्र
३	मंडुक	नैऋत्य	जया	खड्ग	बादली	शंख	सुनंद
४	मकर	पश्चिम	रिक्ता	पाश	पांडुरंगी	मकर	पुष्पदन्तक
५	ग्रास	वायव्य	अक्षिता	ध्वज	सफेद	कच्छप	जय
६	शंख	उत्तर	अपराजिता	गदा	हरा	मुकुंद	विजय
७	सर्प	ईशान	शुक्ला	त्रिशुल	सफेद	कुन्द	कुंभ
८	घट	पूर्व	सौभागिनी	वज्र	पीला	नील	पूर्णा
९	कूर्म	मध्यमा	धरणी	नवचिह्न	हरा	खर्व	उत्तम

देवदृष्टि एवं गर्भग्रह द्वार शाखा मिलान चक्र



।। श्री गणेशाम्बिकाभ्याम् नमः ।।

।। पंचाग काल अयनादि प्रकरणम् ।।

भारतीय ज्योतिष परम्परा में समय (काल) को छः प्रकार से जाना जाता है कालः षोढ़ा-अब्दो अयनमृतुर्मासः पक्षों दिवस इति ।

(१) वर्ष (२) अयन (३) ऋतु (४) मास (५) पक्ष एवं (६) दिन इसी प्रकार वर्ष के भी पांच भेद है।

तत्राब्धों माधवमते पंचधा सावनः
सौर चान्द्रो नाक्षत्रों बार्हस्पत्य इति ।

(१) सावन (२) सौर (३) चान्द्र (४) नक्षत्र (५) बार्हस्पत्य

इन वर्ष पांच भेदों में व्यवहारिक दृष्टि से चान्द्र वर्ष को शास्त्रोक्त सर्वकर्म में सदैव मानना चाहिए क्योंकि इसी से '' वत्सर आदि में प्रवृति कही गई है । बार्हस्पत्य वर्ष को नर्मदा के उत्तर में मानना चाहिए।

संवत्सर

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्यतुः ।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ।।

विक्रम का संवत्सर जो चलता हो उसमें ९ जोड़कर उसे साठ का भाग देने से जो अंक शेष रहता है उस आधार पर विद्वान पंडितो द्वारा प्रभवादि संवत्सर के नाम को क्रमशः समझा जाना चाहिए।

।। ब्रह्मविंशतिः ।।		।। विष्णु विंशतिः ।।		।। रूद्रविंशतिः ।।	
१. प्रभव	११. ईश्वर	२१. सर्वजित	३१. हेमलम्बी	४१. प्लवंग	५१. पिंगल
२. विभव	१२. बहुधान्य	२२. सर्वधारी	३२. विलम्बी	४२. कीलक	५२. कालयुक्त
३. शुक्ल	१३. प्रमाथी	२३. विरोधी	३३. विकारी	४३. सौम्य	५३. सिद्धार्थि
४. प्रमोद	१४. विक्रम	२४. विकृति	३४. शार्वरी	४४. साधारण	५४. रौद्र
५. प्रजापति	१५. वृष	२५. खर	३५. प्लव	४५. विरोधकृत	५५. दुर्मति
६. अंगिरा	१६. चित्रभानु	२६. नन्दन	३६. शुभकृत	४६. परिधावी	५६. दुंदुभि
७. श्रीमुख	१७. सुभानु	२७. विजय	३७. शोभन	४७. प्रमादि	५७. रूधिरोद्वारी
८. भाव	१८. तारण	२८. जय	३८. क्रोधी	४८. आनन्द	५८. रक्ताक्षी
९. युवा	१९. पार्थिव	२९. मन्मथ	३९. विश्वास्तु	४९. राक्षस	५९. क्रोधन
१०. धाता	२०. व्यय	३०. दुर्मुख	४०. पराभव	५०. नल	६०. क्षय

अयन :-

।। कर्काद्धक्षिणमायनं मकरादुत्तरायणम् ।।

कर्क राशि के सूर्य से धन राशि के सूर्य तक का समय दक्षिणायन और मकर राशि के सूर्य से मिथुन राशि के सूर्य तक का समय उत्तरायण कहलाता है।

गोल :-

।। मेषादावुत्तरों गोलस्तुलादौ दक्षिणः समृतः ।।

मेष राशि के सूर्य से कन्या राशि के सूर्य तक का समय उत्तर गोल और तुला राशि के सूर्य से मीन राशि के सूर्य तक का समय दक्षिण गोल समझना चाहिए।

ऋतु :-

मृगदिशदिद्वय भानु भोगात्षड ऋतवः स्युः शिशिरो बसंतः
ग्रीष्मश्च वर्षाचश्रच तद्धद्वेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ।

मकर और कुंभ राशि के सूर्य में शिशिर ऋतु मीन और मेष राशि के सूर्य में वसंत ऋतु, वृषभ और मिथुन राशि के सूर्य में ग्रीष्मऋतु, कर्क और सिंह राशि के सूर्य में वर्षा ऋतु, कन्या और तुला राशि के सूर्य में शरद् ऋतु तथा वृश्चिक और धन राशि के सूर्य में हेमन्त ऋतु को समझना चाहिए। (सायन संक्रान्ति)

मास :-

दर्शावधि मासमुशान्ति चान्द्रं सौर तथा भास्कर राशि भोगात्।
त्रिशंदिन सावन संज्ञमार्या नक्षत्रमिन्दो र्भगणाश्रयाच्च ।।

अमान्त से अमान्त तक चान्द्रमास, सूर्य संक्रान्ति से सूर्य संक्रान्ति तक सौर मास, तीस सूर्योदय का ३० दिन का सावन मास, २७ नक्षत्रों में चन्द्र भ्रमण करने पर नाक्षत्र मास कहलाता है।

कार्यभेद मास ज्ञान :-

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनो मतः ।
पितृकोर्येषु चान्द्रं च ऋक्षंदान व्रतेएवपि ।।

विवाह आदि कार्यों में सौर मास, यज्ञादि कार्यों में सावन मास, पितृकार्य में चन्द्रमास और दानवृत्तों में नक्षत्र मास ग्रहण करना चाहिए।

तिथि :-

तिथि अर्थात् सूर्य और चन्द्र में 12 अंश के अन्तर को एक तिथि का मान होता है।

सूर्य चन्द्र की गति भेद से एक तिथि का मान न्यूनतम ५० कंला तथा अधिकतम् ६७/३० कलादि तक होता है।

तिथि के पांच प्रकार	फल	सिद्धियोगचार	तिथि
नंदा १,६,११	अशुभ	शुक्रवार	नन्दा
भद्रा २,७,१२	मध्यम	बुधवार	भद्रा
जया ३,७,१३	शुभ	मंगलवार	जया
रिक्ता ४,८,१४	अशुभ	शनिवार	रिक्ता
पूर्णा १०,१५	मध्यम	गुरूवार	पूर्णा

चन्दा :- इन तिथियों में चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु, भूमि पूजन तन्त्रकार्य, खेती, नाच, विवाह, वाहन आदि शुभ है।

भद्रा :- उपरोक्त वर्णित सभी कार्य शुभ है।

जया :- संग्राम एवं विजय प्राप्त करने हेतु शुभ है।

पूर्णा :- विवाह, दीक्षा, यात्रा एवं शांति पौष्टिक कार्य शुभ सामान्य रूप से अमावस्या एवं रिक्ता तिथि शुभ कार्यो में वर्जित है।

वार :- एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय (अहोरात्र) एक वार कहलाता है। वार सात है रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि।

सोम, बुध, गुरू, शुक्र यह चार वार शुभ कार्यो के लिए श्रेष्ठ है। मंगल,, सूर्य एवं शनि वार क्रूर वार है इनमें क्रूर कार्य श्रेष्ठ रहते है।

वारदोषज्ञानम् :-

न वार दोषाः प्रभवन्ति रात्रौ, देवेज्यदैत्ये ज्यादिवाकरणाम्।
दिवा शशांकार्क जन्मूसूतानां सर्वत्र निन्धो बुधवार दोवः।।

गुरू, शुक्र और रविवार को जो दोष दिन में रहते है वे रात्रि में नहीं रहते। सोम, शनि एवं मंगलवार को जो दोष रात्रि में है वे दिन में नहीं और बुधवार को दोष दिन रात दोनों समय है इसलिए बुधवार के दिन शुभ कार्य को निन्दित माना गया है।विवाहित कन्या को बुधवार को विदा नहीं करना चाहिए।

नक्षत्र :- सूर्य के क्रांतिवृत (मार्ग) के प्रारम्भ स्थान से प्रत्येक १३ अंश २० कला विभाग को "नक्षत्र" कहते है। आकाश में २७ नक्षत्र है। आकाश में परिभ्रमण करते चन्द्र को एक विभाग में जितना समय लगता है वह नक्षत्र भोगकाल कहलाता है।

जिस दिन चन्द्र पृथ्वी से जिस नक्षत्र पुंज में दिखाई दे उस दिन पंचांग में वह नक्षत्र होता है। एक नक्षत्र चन्द्र का भोगकाल ६७ घड़ी ३० पल अर्थात् २७ घण्टे होता है।

नक्षत्रों का नाम

१. अश्विनी	१०. मघा	१९. मूल
२. भरणी	११. पू.फा.	२०. पु.षा.
३. कृतिका	१२. उ.फा.	२१. उ.षा.
४. रोहिणी	१३. हस्त	२२. श्रवण
५. मृगशिरा	१४. चित्रा	२३. धनिष्ठा
६. आर्द्रा	१५. स्वाति	२४. शततारका
७. पुनर्वसु	१६. विशाखा	२५. पू.भा.
८. पुष्य	१७. अनुराधा	२६. उ.भा.
९. आश्लेषा	१८. ज्येष्ठा	२७. रेवती

अभिजित नक्षत्र।

वैश्य देवान्त्य पादः, स्याच्छूतेराधाब्धि नाडिकाः।
अभिजिद्धमिति ग्राह्य, अष्टा विशंति भेषु सा।।

उत्तराषाढा नक्षत्र के चौथे चरण और श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटिकाएं अभिजित नक्षत्र का भोगकाल है अतः अभिजित को अठाईसवा नक्षत्र गिना जाता है।

पंचक नक्षत्र :-

धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवती पर्यन्त पांच नक्षत्र पंचक नक्षत्र कहलाते है। पंचक में काष्ठ संग्रह, श्य्या निर्माण, छत डालना एवं दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है। अत्यावश्यकता में शतभिषा के मध्य की पू.भा के आदि की तथा उ.भा. के अन्त की ५-५ घटी त्याज्य कर के कार्य करना चाहिए। रेवती सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है।

पाया विचार :- (नक्षत्र अनुसार)

आर्द्रादश रूपाणां विशाखा नव ताम्रका।
रेवतीषट् हेम्रश्च शेषाः लोहाः प्रकीर्तिता।।

आर्द्रा से दश नक्षत्र में जन्म चांदी का पाया। विशाखा से नौ तक तांबे का पाया। रेवती से छः नक्षत्र ते सोने का पाया शेष नक्षत्रों में लोहे का पाया जानना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र

गंडमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख प्राप्ति	उच्च पद	राज्य सुख
आश्वलेषा	राज्य प्रा.	धन नाश	माता को कष्ट	पिता को कष्ट
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुख प्राप्ति	विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	बड़े भाई को त्रास	छोटे भाई को कष्ट	माता को कष्ट	स्वयं को कष्ट
मूल	पिता को दुःख	माता को दुःख	धन का नाश	स्वास्थ्य हानि
रेवती	राज्य प्राप्ति	उच्च पद	धन की प्राप्ति	शरीर पीड़ा

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, रेवती आदि नक्षत्रों में बालक जन्म हो तो माता-पिता और स्वयं जातक के लिए कष्ट कारक होता है अत: इन नक्षत्र में जन्म होने पर नक्षत्र शांति विधान करवाना चाहिए।

अभूक्त मूल :- ज्येष्ठा के अंत की पांच घड़ी एवं मूल की आठ घड़ी अभूक्त मूल है इससें छः मास तक जातक का मुख नहीं देखना चाहिए अन्यथा पिता का नाश होता है।

वृष्टि विज्ञान (नक्षत्र आधार) :- सूर्य नक्षत्र दैनिक नक्षत्र की गणना करने पर जो संख्या प्राप्त हो उसमें का भाग देने का शेष १ रहे तो अश्व, २ रहे तो जम्बूक, ३ रहे तो मेन्ढक, ४ रहे तो आज, ५ रहे तो चालक, ६ रहे तो मूषक, ७ रहे तो महिष, ८ रहे तो खर और शून्य रहे तो गज वाहन जानना चाहिए

नक्षत्र वाहन वर्षा फल :- गज, महिष, चातक, मेढ़क वाहन में श्रेष्ठ वर्षा योग अश्व, खर, मूषक, वाहन हो मो माध्यम वर्षा योग अज और जम्बुक हो तो अनावृष्टि योग

योग प्रकरण :- सूर्य तथा चन्द्र की गति में १३ अंश २० कला का अन्तर होने से एक योग कहलाता है योग भी २७ होते है। सूर्य चन्द्र की गति भेद से एक योग का भोगफल न्यूनतम ५० घटी तथा अधिकतम् ६२/३० घटी पल हो सकता है यह कम से कम २० घण्टा और अधिकतम् २५ घण्टे होती है।

१. विष्कुंभ	१०. गंड	१९. परिध
२. प्रीति	११. वृद्धि	२०. शिव
३. आयुष्मान	१२. ध्रुव	२१. सिद्ध
४. सोभाग्य	१३. व्याघात	२२. साध्य
५. शोभन	१४. हर्षण	२३. शुभ
६. अतिगंड	१५. वज्र	२४. शुक्ल
७. सुकर्मा	१६. सिद्धि	२५. ब्रह्म
८. घृति	१७. व्यतिपात	२६. ऐन्द्र
९. शूल	१८. वरियान	२७. वैधृति

योग शुभा शुभ विचार :-

समस्त शुभ कार्यो में वैधृति व व्यतिपात के पूर्ण अंश ब्रज तथा विष्कुंभ योग के प्रारम्भ की तीन घटी परिध का पूर्वाद्ध, शूल योग के प्रारम्भ की ५ घटी, व्याघात के प्रारम्भ की ९ घटी एवं गंड एवं अतिगंड के प्रारम्भ में ६ घटीयां समस्त शुभ कार्य में वर्जित है।

करण :- तिथ्यर्थ करणम् स्यात तिथि के अर्थ भाग को करण कहते है। करण ११ होते है।

१ बव २ बालव ३ कौलव ४ तैत्तिल ५ गर ६ वणिज ७ विष्ट(भद्रा)यह सात करण ''चर संज्ञक''है १ शकुनि २ चतुष्पाद ३ नाग ४ किंस्तुहन ये चार करण स्थिर संज्ञक है।

विष्टि करण याने भद्रा रविवार को आवे तो ''पूण्यवती'' मंगलवार को ''भद्रा'', बुधवार को '' कल्याणी'' और शनिवार को हो तो ''विष्टि''कहलाती है।

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
तिथि	पूर्वाद्ध	उत्तराद्ध	तिथि	पूर्वाद्ध	उत्तराद्ध
१	किंस्तुहन	बव	१	बालव	कौलव
२	बालव	कौलव	२	तैत्तिल	गर
३	तैत्तिल	गर	३	वणिज	विष्टि
४	वणिज	विष्टि	४	बव	बालव
५	बव	बालव	५	कौलव	तैत्तिल
६	कौलव	तैत्तिल	६	गर	वणिज
७	गर	वणिज	७	विष्टि	बव
८	विष्टि	बव	८	बालव	कौलव
९	बालव	कौलव	९	तैत्तिल	गर
१०	तैत्तिल	गर	१०	वणिज	विष्टि
११	वणिज	विष्टि	११	बव	बालव
१२	बव	बालव	१२	कौलव	तैत्तिल
१३	कौलव	तैत्तिल	१३	गर	वणिज
१४	गर	वणिज	१४	विष्टि	शकुनि.
१५	विष्टि	बव	३०	चतुष्पाद	नाग

भद्रा वास

मेष, वृषभ, मिथुन, वृश्चिक राशि में चन्द्र होने पर भद्रा का निवास स्वर्गलोक में, कन्या, तुला, धनु, मकर राशि में भद्रा का निवास पाताल में कुंभ, मीन, कर्क, सिंह राशि में चन्द्र होने पर भद्रा का निवास भूमि पर होता है।

भद्रा विभाग फलम् :-

जिस दिन भद्रा हो, उस दिन भद्रा के प्रारम्भ से ५ घटी मुख, १ घटी कण्ठ, हृदय में ११ घटी, नाभी ४ घटी कमर में ६ घटी और पुच्छ में ३ घटी जानना।

।।पुच्छे ध्रुवों जयः।।

पुच्छ की भद्रा सदा जय देती है।

तिथि वार नक्षत्र से बनने वाले शुभ योग एवं फल

रवि योग :- सूर्य नक्षत्र से दैनिक नक्षत्र ४,६,९,१०,१३ एवं २० वां नक्षत्र हो तो रवि योग है। यह योग अनेक प्रकार से शुभ होता है।

रवि योग का फल :- चौथे नक्षत्र से रवि योग में किया गया है कार्य अति सुखदायी, छठे रवियोग में शत्रु पर विजय नव में रवियोग में धन लाभ, दशवें रवियोग में कार्य सिद्धि तेरवे रवियोग में पुत्र प्राप्ति, राज सुख जैसा सुख देता है। २० वें रवियोग में किया गया कार्य राज प्राप्ति राज सुख जैसा सुख देता है।

लग्नशुद्धि जितना रवियोग का बल होता है।

राजयोग :- मंगल, बुध, शुक्रवार में से कोई भी वार के दिन २,३,९,१२,१५, कोई भी तिथि हो और भरणी मृगशिरा, पुष्य, पु.फा., चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, कोई भी नक्षत्र हो तिथिवार नक्षत्र के सूयोग मिलने पर राजयोग घटित होता है। यह योग मांगलिक, धार्मिक एवं पौष्टिक कार्यो के लिए शुभ होता है।

कुमार योग :- सोम, मंगल, बुध और शुक्रवार के दिन १,५,६,१०,११ तिथि एवं अश्विनी, रोहिणी, पूनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद इनमें से तिथि वार नक्षत्र का सुयोग के कुमार योग घटित होता है यह मैत्री, विद्या, दीक्षा के लिए शुभ होता है।

स्थिर योग :- गुरूवार अथवा शनिवार को ४,९,१३,१४ को कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, उ.फा. स्वाति, ज्येष्ठा, उ.षा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र में से कोई भी नक्षत्र संयोग वार एवं तिथि के साथ होने पर स्थिर योग बनता है। यह रोग निवारण के उपचार के लिए शुभ माना जाता है।

सिद्धि योग :- रविवार को मूल नक्षत्र, सोमवार को श्रवण नक्षत्र, मंगलवार को उ.भा., बुधवार को कृतिका, गुरूवार को पुनर्वसु, शुक्रवार को पू.फा. एवं शनिवार को स्वाति नक्षत्र हो तो सिद्धि योग कहलाता है। सर्व कार्य की सिद्धि एवं सफलता देने वाला योग है।

अमृत सिद्धि योग :- रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशीरा, मंगल अश्विन, बुध धनु, गुरूवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती, शनिवार को रोहिणी हो तो अमृत सिद्धि योग बनता है। यह योग परम् शुभ होता है। परन्तु रविवार आदि अनुक्रम में ५,६,७,८,९,१०,११ तिथि हो तो विषम योग बनता है। इसी प्रकार गुरूपुष्य विवाह में, शनिरोहिणी, मंगल अश्विनी से बनने वाला अमृत सिद्धि योग वास्तु में त्याज्य है।

स्वयं सिद्ध साढे तीन मुहूर्त्त :-

प्रतिपद्वत्सरा दिर्या तृतीयाक्षाय्यसंज्ञिका।
दशमी विजयाख्या च मुहूतीस्त्रय ईरिताः।।
प्रतिपत्कार्तिके शुक्ला स मुहूर्त्ताऽर्थ संज्ञकः।
स्वयं सिद्धा इमे ज्ञेयाः सर्व कार्य प्रसाधकाः।।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, वैशाख शुक्ला तृतीया (आखातीज) आश्विनी शुक्ला दशमी (विजय दशमी) यह तीन मुहूर्त्त पूर्ण बली एवं कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा अर्धबली होने से इन्हे साढ़े तीन मुहूर्त्त कहते है। यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त है इसमें पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। सर्वकार्य के लिए प्रशस्त है।

मुहूर्त्त में तिथ्यादि के गुण :-

तिथि रेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्र च चतुर्गुणम्।
वारश्चाष्ट गुणा प्रोवत्ता करर्ण षोडशान्वितम्।।
द्वात्रिशल्लक्षणों योगस्ताराः पष्टिगुणाः स्मृता।
चन्द्रः शतगुण प्रोक्तो लग्नं कोटियुण स्मृतमः।।

मुहूर्त्त में तिथि को १ गुणा नक्षत्र को ४ गुणा, वार को ७ गुणा करण को १६ गुणा, योग को ३२ गुणा, तारा को ६० गुणा, चन्द्रमा को १०० गुण एवं लग्न को करोड़ गुणा माना जाता है।

बारह चन्द्र राशि एवं उनके स्वामि

मेष (अ,ल,चु,चे)	मंगल	तुला (र, त)	शुक्र
वृषभ (व, इ, उ)	शुक्र	वृश्चिक (न, य)	मंगल
मिथुन (क, छ)	बुध	धन (भ, ध, फ, ढ)	गुरू
कर्क (ड, ही, हे, हो)	चन्द्र	मकर (ज, ख, क्ष)	शनि
सिंह (म, ट)	सूर्य	कुंभ (ग, श, स, ष, श्र)	शनि
कन्या (प, ठ, ण)	बुध	मीन (द, च, झ, थ)	गुरू

जन्म राशि एवं प्रचलित राशि विचार

जन्म चन्द्र विश्लेषण :- कृषि, मकान, विवाह, अग्नप्रशन, यज्ञोपवति, स्त्री संगम, कृपादि निर्माण तथा अभिषेक में जन्म चन्द्र प्रशस्त है।क्षौर क्रिया, यात्रा में जन्म चन्द्र का त्याग करना चाहिए।

कृषि, भवन, विवाहेन्नप्रशने मोंजी बंधे।
प्रथम युवति संगम, राम कृपादि कृत्ये।
षटविधि, अभिषेके जन्म चन्द्रप्रशस्तः
इतिवदति वराह क्षौर यात्रा विहायः।।

चतुर्थ चन्द्र विशेष :- (चतुर्थ चन्द्र ग्राहयः)

विवाह चुडा व्रत बंध, दीक्षा, सीमान्त कर्माणि वधु प्रवेश।
नवांन्न भौजे च गृह प्रवेशे, चतुर्थ चन्द्रे शुभ कांतिदास्यात।।

सगाई, विवाह, चुडा धारण, मंत्र ग्रहण, दीक्षा सीमंत, वधू प्रवेश चतुर्थ चन्द्र सुख देने वाला होता है।

द्वादश चन्द्र विशेष (ग्राहय चन्द्र विचार)

गर्भाधाने जनमकालेऽभिषेके मोंजीबन्धने।
पाणिग्रहण प्रयागे च, चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

गर्भाधान, अभिषेक, यज्ञोपवित, पाणिग्रहण (पुरूष) यात्रा आदि में १२ वां शुभ है।

घात चन्द्र विशेष :-

तीर्थ यात्रा विवाहान्न प्राश्नो पनयनादिषु,
मंगल्ये सर्व कार्येषु धात चन्द्रं न चिन्तेयत।
युद्वे चैव विवोद च कुमारी पुजने तथा,
राजसेवा वाहनादौ धात चन्द्रं विवर्जयेत।।

तीर्थ यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि मांगलिक कार्यो में घात चन्द्र का विचार न करें परन्तु युद्ध में कोर्ट केस, विवाद, कुमारी पूजन, राजकीय सेवा, वाहनक्रय आदि में घात चन्द्र का त्याग करना चाहिए।

।।अथ मुहूर्त्त शास्त्र प्रमाण प्रकरण।।

गर्भाधान मुहूर्त्त :- ऋतु काल की प्रथम सात रात्रि को छोडकर यह संस्कार किया जाता है। पुत्र कामना से ८,१०,१२,१४,१६ वीं रात्रि का चयन करना चाहिए। तिथि १,२,३,५,७,८,१०,११,१२,१३

वार :- रवि, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र १ नक्षत्र ज्येष्ठा, मूल, मघा, रेवती नक्षत्रों को छोडकर सभी नक्षत्र शुभ है।

पुंसवन सीमान्त मुहूर्त्त :- गर्भ के द्वितीय, तृतीय मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिए। छहे और आठवें मास में अधिपति बलवान होने पर सीमान्त कराना चाहिए। पुंसवन और सीमान्त में गुरू, शुक्र अस्त का दोष नहीं लगता है। रवि, मंगल, गुरू मतान्तर से सोम, बुध, शुक्रवार को दम्पति का चन्द्र बल, तारा बल शुद्धि देखकर रो, मृ, पुष्य, पुन, हस्त, मूल, श्रवण, उत्तरा ३, रेवती जन्म नक्षत्र के बिना इन नक्षत्रों में शुक्ल पक्ष की १,२,३,५,७,१०,११,१३ तिथि एवं कृष्ण पक्ष में १० पर्यन्त शुभ है। पुरूष संज्ञक लग्न तथा नंवाश में लग्न से १,४,,५,७,९,१० में शुभ ग्रह ३,६,११ में पाप ग्रह चन्द्र १,६,८,१२ में वर्ज्यकर अन्य स्थानों में हो एसे मुहूर्त्त में पुंसवन और सीमान्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

दसमासों के अधिपति :- प्रथम मास का शुक्र, द्वितीय का मंगल, तृतीय का गुरू, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ट्म का शनि, सप्तम का बुध, अष्टम का गर्भ, लग्नपति, नवम का चन्द्र, दशम का स्वामी सूर्य है।

गर्भवती को प्रसूति के लिए भेजने का मुहूर्त्त :- रिक्ता अमावस्या को छोडकर शेष सभी वार रवि, मंगल त्याज्य। शुभ नक्षत्र :- अश्विनी, रो, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा, स्वा, ह, चि, अनु, ध, शत, रेवति आदि।

सूतिका का स्नान मुहूर्त्त :- सूतिका स्नान शिशु के जन्म के एक सप्ताह बाद ७ से १० वें दिन तक में होता है। रिक्ता तिथि तथा ६,८,१२ तिथि को छोडकर शुभ तिथि में शुभ वार रवि, मंगल और गुरू। शुभ नक्षत्र हस्त, मूल, रोहिणी, विशाखा, श्रवण, स्वाति, उत्तरा 3, मृगशिरा।

त्याज्य/वर्जित :- शनिवार, बुधवार, त्याज्य/वर्जित नक्षत्र आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, माघ, भरणी, कृतिका, मूल, चित्रा। शतभिषा नक्षत्र विशेषतः वर्जित।

जातकर्म नाम करण मुहूर्त्त :- सूतक की निवृत होने पर ११ वें दिन ब्राह्मण के १३ वें दिन क्षत्रिय के १६ वें दिन वैश्य २१ वें दिन शुद्र के पूर्व कूलाचार के अनुसार जातकर्म नामकरण करें। इन दिनों में कोई कुयोग हो तो अन्य दिन ले सकते है।

शुभ तिथि :- भद्रा, व्यतिपात, वैधृति एवं संक्राति रहित १,२,३,५,७,१०,११,१२१३ शुभवार चन्द्र, बुध, शुक्र शुभ नक्षत्र अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा स्वाति, अनु, उत्तरा 3, अभिजित, श्रवण धनि, शत, रेवती। लग्न नंवाश बल का विचार अवश्य करें।

जलवा पूजन (कूप पूजन) मुहूर्त्त :- प्रसूता द्वारा जलपूजन मास समाप्त होने पर (किन्ही आचार्यो के अनुसार २१ दिन पश्चात्) चन्द्र, बुध, गुरूवार के दिन रिक्ता, अमावस्या को छोडकर श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। गुरू, शुक्रादि अस्त में एवं चैत्र पोष मास में निषिद्ध है।

चूडा पहनने का मुहूर्त्त :- कुयोग रहित गुरू शुक्रोदय काल में पंचांग शुद्धि देखकर स्त्री व पुरूष दोनो का चन्द्रबल देखें। रवि, बुध, गुरू, शुक्र वारों में अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती नक्षत्रों में चूडी चक्र शुद्धि देखकर चूडा पहनना शुभ है। चूडीचक्र : सूर्य नक्षत्र में दिन नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने पर १ से ८ अशुभ, ९ से १५ शुभ, १६ से २४ अशुभ, २५ से २७ वां अशुभ।

दोलारोपण (पालने में सुलाने का) मुहूर्त्त :-
जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२ वें दिन बालक का सिर पूर्व की ओर करके झूले में सुलाना चाहिए। शुभ तिथि १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३। शुभ वार : चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र। शुभ नक्षत्र : अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य उत्तरा ३, ह. चि., अभ, अनु, रेवती । सूर्य नक्षत्र से आगे ५ नक्षत्र एवं अन्तिम ७ नक्षत्र शुभ है ।

भूम्युपवेशन मुहूर्त्त :- जातक के जन्म से पांचवे माह में यह संस्कार किया जाता है। भगवान वाराह का पूजन कर कमर पर करथनी बांधकर भूमि पर बिठावें। तिथि 2, ३, ५, ७, १०, ११, कृ १, शु. १३, १५। शुभवार : चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र। नक्षत्र : अश्विनी, रो. मृ. अनु. पु. ह. ज्ये. उत्तरा ३, अभि। चर लग्न शुभ दिन में बालक के करथनी का त्रिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्रः

'रक्षैणं वसुधे देवि सदा सर्वागतं शुभें।आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।।'इति।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, तुला आदि वस्तु रखें, जिसको बालक ग्रहण करें उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त :- जन्ममास के ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि-दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरू और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुनः, श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोडकर ऐसे लग्न में जिसमें १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह दृष्टि हो ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हो, दशम स्तीन पापग्रह रहित हो १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है । किसी-किसी के मत से जन्म नक्षत्र अनु. शतभिषा और स्वाति अशुभ है।

कर्णवेध मुहूर्त्त :- चैत्र, पौष, देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म नक्षत्र ४, ८, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षय तिथि और सम वर्षो को छोडकर जन्म के १२ वें दिन या १६ वें दिन, ६ वें, ७ वें, ८ वें मास या विषम वर्षो में सोम, बुध, गुरू, शुक्रवार को श्र. ध. पुन. मृग. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. नक्षत्रों मे जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो १, ४, ५, ७, ८, १० स्थानों में शुभ ग्रह हो ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हो तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पितवार हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड ही कट जाती है ।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त्त :- कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत, स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्ल पक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त्त :- गर्भाधान काल से जया जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ वें, ५ वें, ७ वें वर्ष में (मनुजी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में, चन्द्र, बुध, गुरू व शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्म राशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में , संक्रान्ति के दिन को छोडकर जब लग्न से आठवों स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हो ज्ये, मृग, रे. विच. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लडके की माता को ५ मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लडके का मुण्डन ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष : स्व. कुल शिष्टाचारनुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है। सो 'यथोकुलधर्म वः' इस स्मृति में स्मरण से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त :- मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये है वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ है। - वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल ४, ८, ९,१४, १५, ३ तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्रामें, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ।

विशेष फल : यह विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त है वे तथा रूपजीवी जैसे नट-भांड आदि किसी भी दिन हजामत बनवा सकते है ।

कर्णवेध और क्षौर का वार :- ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शुद्र शनिवार को क्षौरोक्ततिथ्यादि में हजामत बनवा सकते है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त :- जन्म से ५ वें या ७ वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरू और शुक्रवार को हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, श्रवण, स्वाति, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों व भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्ल पक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क, तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिये।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त :- उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरू और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मघा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, आश्लेषा, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से २, ४, ५, ७, ८, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेजी विद्यारम्भ मुहूर्त्त - सूर्य, भौम, शनिवार हों ४, ८, १४ तिथि हों, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा तीनों पूर्वा, भरणी, कृतिका, विशाखा, आर्द्रा, उ.षा., शतभिषा नक्षत्र शुभ है ।

उपनयन (व्रत बंध) मुहूर्त्त :- बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११ वें वर्ष यज्ञोपवती धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६ वें, क्षत्रिय २२ वें और वैश्य २४ वें वर्ष तक यज्ञोपवतीत संस्कार करा सकते है। उत्तरायण में मघादि पांच मासों में देशशयन से पूर्व शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ इन तिथियों में (किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठा शुक्ल २, पौष

शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को छोड़कर) अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजित, तीनों उत्तरा, रोहिणी, आश्लेषा स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, मूल मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों पूर्वा ये नक्षत्र क्रूर ग्रहयुक्ता नहीं हो, वेधरहित हों। सू. चं., गुरू, बुधवारों में (बुधास्त हो तो बुधवार ज्याज्य करें) उपनयन संस्कार शुभ हैं। बालक का सूर्यबल, गुरूबल तथा चन्द्रबल, देखें। सामवेदियों को भोम बल भी आवश्यक है। उपनयन संस्कार संक्रान्ति दिन, रोगबाण (८, १७, २६, सूर्य के गतांशाः) गुरू, शुक्र के अस्तकाल, कुयोग दिन में वर्जित करें। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवती संस्कार श्रेष्ठ हैं।

समयः पूर्वान्ह में तथा अभिजित मुहूर्त्त में (मध्यान्ह से एक घटी पूर्व व पश्चात् क्योंकि मुहूर्त्त का प्रमाण २ घटी का है।) शुभ लग्न में किन्तु लग्नेश और चं. गु. शु. ६, ८ वें और चं. शु. १२ वें, पापग्रह १, ५, ७ वें नहीं हो। वृष, कर्क का पूर्ण चन्द्र लग्न में शुभ होता है।

विशेष : तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, आश्लेषा, आर्द्रा, श्रवण नक्षत्र, धनु, मीन लग्न गुरूवार ऋगवेदियों का शुभ हैं। रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, चित्रा, रेवती नात्र, वृष, तुला लग्न और शुक्रवार यजुवेदियों को शुभ हैं। अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा, श्रवण, नक्षत्र, मेष, धनिष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र, मिथुन कन्या लग्न और बुधवार अथवेदयों को शुभ है।

नोट : यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिये समय शुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरू हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है।

दीक्षा मुहूर्त्त प्रकरण :-

दीक्षा (प्रवज्या) योग :-

मोक्षार्थिनां च दीक्षा स्थिरोदये कर्मगे त्रिदश पूज्ये।

पापैधर्मप्राप्स्तैर्बलहीनैः प्रवजित योगे (आ.सि.)

स्थिर लग्न में उदय गुरू दशम स्थान में हो, पापग्रह नवम स्थान में हो और निर्बल हो प्रवज्या योग हो तब दीक्षार्थी को दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

चार, पांच ग्रह अथवा इससे भी ज्यादा ग्रह एक ही स्थान में हो तब प्रवज्या योग बनता है।

इसी प्रकार जन्म समया जिस राशि में चन्द्र हो उस राशि का स्वामि अन्य ग्रहों की दृष्टि न हो लेकिन राशि स्वामि की दृष्टि शनि पर हो तब प्रवज्या योग बनता है अथवा तो केवल शनि की दृष्टि भी राशि स्वामि पर हो तब भी प्रवज्या योग बनता है।

जैनदीक्षा :- प्रवज्या की कुण्डली में ग्रहों का उत्तम स्थान

विशेष : गुरू एवं चन्द्र अस्त में दीक्षा वर्जित है। शुक्रास्त में ग्राह

शुभ मास : मार्गशीष, माघ, फाल्गुन, वैशाखा, ज्येष्ठ, अत्यावश्यक हो तो आषाढ़ मास भी ग्राह है।

शुभ तिथि : २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३.

शुभ नक्षत्र : अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वाति, अनु. उ.षाढा, श्रवण शतभिषा, पू.भा., उ.भा., रेवती।

विशेष : शुभ नक्षत्र हो परन्तु संध्यागत हो, सूर्यागत हो वीडवर, विलंवित, राहु से ग्रसित आदि स्थिति में नक्षत्र हो तो दीक्षा में त्याज्य है।

शुभवार :- रविवार, बुधवार, गुरू और शनिवार शुभ सोमवार, मंगलवार व शुक्रवार त्याज्य है।

शुभ लग्न :- मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन मकर, कुंभ और मीन। दीक्षा में वृषभ और तुला लग्न त्याज्य हैं। तथा इसके नवमांश तो सर्वथा वर्जित है।

ग्रह	भाव	
सूर्य	२, ५, ६, ११	शुभ
चन्द्र	२, ३, ६, १०, ११	शुभ
मंगल	३, ६, १०, ११	शुभ
बुध	२, ५, ६, १०, ११	शुभ
गुरू	१, ४, ५, ६, ७, १०, ११	शुभ
शुक्र	३, ६, ९, १२	शुभ
शनि	२, ५, ६, ८, ११	शुभ
राहु	३, ६, ११	शुभ

विशेष : कृष्ण पक्ष की सप्तमी के बाद दीक्षा देना शुभ नहीं हैं। परन्तु संयोग वश मुहूर्त्त शुद्धि एवं श्रेष्ठ हो। तो सप्तमी के बाद के मुहूर्त्त मे चन्द्र क्षीण हो तो ताराबल देखना। जन्म के समय चन्द्र जिस नक्षत्र में हो वह जन्म नक्षत्र तारा कहलाता है जन्म नक्षत्र से इष्ट दिन ३, ५, ७, १०, १४, १६, २१, २३, २४ नक्षत्र अशुभ।

शुक्र लग्न अथवा सप्तम स्थान में हो, शुक्रवार हो, लग्न शुक्र नवमांश को हो उस समय मे दीक्षा मुहूर्त्त अशुभ है। इसी प्रकार चन्द्र लग्न में हो, सोमवार हो, लग्न में चन्द्र नवमांश हो अथवा चन्द्र लग्न अथवा चन्द्र लग्न अथवा सप्तम स्थान में हो अथवा पूर्ण दृष्टि हो तो उस समय में भी दीक्षा का मुहूर्त्त वर्जित है।

दीक्षा में शुभ योग : अमृत सिद्धि योग, रवियोग, राजयोग व कुमार योग में अधिकतम २ योग ग्रहण करने चाहिए।

दीक्षा मुहूर्त्त में त्याज्य : चतुर्मास, अधिक मास, गुरू चन्द्र का अस्तकाल, गुरू चन्द्र की बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था, क्रांति समय के व्यतिपात, वैधृति महापातक योग, मृत्युयोग, ज्वालामुखी योग, संक्रान्ति के दिन एवं आगे व पिछे के

दिन (कुल ३ दिन), ग्रहण युक्त ३ दिन आदि दीक्षा में वर्जित है।

विशेष : जिस जन्म कुण्डली में चन्द्र से केन्द्र में शुक्र-मंगल हो अथवा चन्द्र शुक्र मंगल का कोई योग बन रहा हो तो इन ग्रहों की दृष्टि लग्न अथवा सप्तम पर हो तो ऐसी कुण्डली का जातक दीक्षा के योग्य नहीं हैं।

नाडीवेध : एक ही नाडी में नक्षत्र हो तो गुरू शिष्या को शुभ रहता है।

गृहारम्भ एवं खात मुहूर्त्त प्रकरण :-

वैशाखे श्रावणे मार्गे, पौषे फाल्गुन एवं च।

कुर्वीत वास्तु प्रारम्भं, नतु, शेषेषु सप्तसु।। (आ. सि.)

वैशाख, श्रावण, मार्गशीष, पौष और फाल्गुन आदि मास में गृहारम्भ करना शुभ है। मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार मेष राशि के सूर्य में चैत्र मास, वृषभ राशि के सूर्य में ज्येष्ठ मास, कर्क राशि के सूर्य में आषाढ मास एवं सिंह राशि के सूर्य में भाद्रपद, तुला के सूर्य में अश्विन में गृहारम्भ को शुभ माना गया हैं।

शुभ वार : सोमवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार (खात मुहूर्त्त में रविवार-मंगलवार सर्वथा त्याज्य है)

शुभ तिथि : २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तथा कृष्ण पक्ष को प्रतिपदा शुभ है।

वर्जित : शुक्ल पक्ष प्रतिपदा एवं रिक्ता अमावस्या आदि तिथि वर्जित है।

शुभ नक्षत्र : रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, चित्रा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, तीनो उत्तरा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती यहा १३ नक्षत्र गृहारम्भ में शुभ है।

वृषभ चक्र : सूर्य नक्षत्र से अभिजित सहित दैनिक नक्षत्र में ८ से १८ तक के ११ नक्षत्र शुभ ''वृषभ वास्तु चक्र'' शुभ रहता है।

भूमिशयन : सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र ५ वां, ७ वां, ९ वां, १२ वां, १९ वां, २६ वां नक्षत्र होता भूमिशयनकाल रहता है। इन नक्षत्रों में भी क्रमशः ४, ८, ५, ३, ६, ७ घटी मात्र भूशयन विद्वानों ने माना है।

सूर्य संक्रान्ति के दिन से ५, ७, ९, १५, २१, २४ वां दिन भूशयन काल माना जाता है।

खाता-चक्र

संक्रांति	विवाह में सूर्य	देवालय में सूर्य	गृहारम्भ में सूर्य	खाता दिशा
सूर्य	वृषभ, मिथुन, कर्क	मीन, मेष, वृषभ	सिंह, कन्या, तुला	आग्नेय
सूर्य	कुंभ, मीन, मेष	धनु, मकर, कुंभ	वृष, मिथुन, कर्क	नैऋत्य
सूर्य	वृश्चिक, धनु, मकर	कन्या, तुला, वृश्चिक	कु. मी., मेष	वायव्य
सूर्य	सिंह, कन्या, तुला	मिथुन, कर्क, सिंह	वृश्चिक, धनु, मकर	ईशान.

शिलान्यास मुहूर्त्त प्रकरण :-

गृहारम्भ मुहूर्त्त में ग्राहय मास, पक्ष, वार, तिथि, नक्षत्र शिलास्थापन में शुभ माने जाते है।

''धर्म सिन्धू ग्रन्थोक्त'' अश्विनी, भरणी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफा, उ.फा., हस्त, अनु, मूल, पू.षा., उ.षा, श्रवण, पू.भा. एवं रेवती आदि नक्षत्रों में शिलान्यास शुभ है।

प्रथम शिला अग्निकोण में फिर दक्षिण आदि क्रम में शिलास्थापन करना शुभ है।

कूर्म चक्र :

शिलान्यास कूर्म चक्र देखना आवश्यक है।

तिथि					नक्षत्र								
१	४	७	१०	१३	अश्विनी	रोहिणी	पुनर्वसु	मघा	हस्त	विशाखा	मूल	श्रवण	पू.भा.
२	५	८	११	१४	भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनुराधा	पु.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.
३	६	९	१२	१५	कृतिका	आर्द्रा	आश्लेषा	उ.फा.	स्वाति	ज्येष्ठा	उ.षा.	शततारका	रेवती

द्वार मुहूर्त्त प्रकरण :-

द्वार रोपण मुहूर्त्त में पंचांग शुद्धि अवश्य देखें गुरू-शुक्रादि अस्त दोष को वर्जित माना गया है। द्वारस्थापन में वत्स, राहू और द्वार चक्र अवश्य देखना।

द्वार शाखा रोपण नक्षत्र : अश्विनी, रोहिणी, मृग, पुष्य, उ.फा. हस्त, स्वाति, उ.षा, श्रवण, उ.मा. रेवती आदि नक्षत्रों में द्वार व्यापन शुभ।

द्वार स्थापन में तिथि फलम्: प्रतिपदा को दुःख, द्वितीया को धन हानि, तृतीया को रोग, चतुर्थी को भंग, षष्ठी को कुलक्ष्य दशमी को हानि, अमावस्या-पूर्णिमा को विरोध इनके अलावा अन्य सभी तिथियों में द्वार स्थापना शुभ है।

द्वार चक्रः सूर्य नक्षत्र के बिना अभिजित के दैनिक नक्षत्र तक गणना करने पर १ से ४ तक लक्ष्मी प्राप्ति, ५ से १२ उद्धवसवम् १३ से २० तक सुखम्, २१ से २३ तक गृहपति की मृत्यु २४ से २७ तक सौख्यम्।

स्थान	शिरसी	कोण	शाखा	देहल्या	मध्ये
नक्षत्र	१-४	५-१२	१३-२०	२१-२३	२४-२७
फल	नक्षत्र	उहवसन	सुख	मृत्यु	सौख्य

द्वार स्थापन में पीछे का वत्स व सन्मुख राहु का त्याग करना चाहिए

गृह प्रवेश प्रकरण एवं मुहूर्त्त :-

गुह प्रवेश के शुभ मास

श्रावणाश्चाथ वैशाखः पौषश्च फाल्गुनस्तथा।

मासेषु मार्गशीर्षस्थ वास्तुकर्मणि शस्यते।।

श्रावण, वैशाख, पौष, फाल्गुन और मार्गशीर्ष इन महीनों में गृह प्रवेश, वास्तु कर्म शुभ माना गया है।

ज्येष्ठ कार्तिकमाघाश्च शुभदान्प्राह नारदः

नारद के मत के अनुसार ज्येष्ठ कार्तिक एवं माघ आदि महिनों में भी वास्तु पूजन करना श्रेष्ठ है।

गृह प्रवेश में वार :

आदित्य भौम वर्ज्यास्तु सर्ववाराः शुभावहाः

रविवार और मंगलवार को छोड़कर अन्य सभी वार गृह प्रवेश वास्तु पूजन में शुभ है।

तिथि : २, ४, ७, १२, १५, ३० के अलावा सभी तिथि ग्राहय उपर दी गई तिथि वर्जित है।

नक्षत्र : चित्रा, शतभिषा, स्वाति, हस्त, पुष्य,पुनर्वसु, रोहिणी, रेवती, मूल, श्रवण, उ.फा., उ.षा, उ.भा, धनिष्ठा अश्विनी, मृगशीरा, अनुराधा इन नक्षत्रों में गृह प्रवेश वास्तु पूजन करने वाला लक्ष्मी को प्राप्त करता है। ऐसा पाराशर मूकन का मत है।

वास्तुपूजनमेतेषु नक्षत्रेषु करोतियः

स प्राप्नोति नरो लक्ष्मी मित्ति प्राह पाराशर

गृह प्रवेश वत्स दोषः

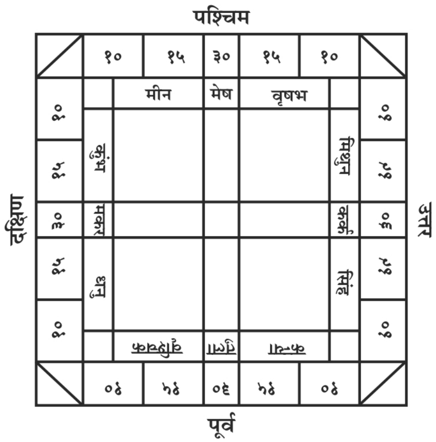
प्रवेश में, द्वार स्थापना में, मंदिर में, देव प्रवेश प्रतिष्ठा में वत्स अवश्य देखना चाहिए। सन्मुख और पिछे का वत्स वर्जित है।

सिंहे चैव तथा कुम्भे वृश्चिके वृषभे तथा।

न वत्स दोषो कर्तव्य द्वार-चतुर्दिशा सुखम्।।

वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ संक्रान्ति में चारों दिशाओं में स्थापना हो सकती है।

वात्स, प्राच्या दिषुदेति कन्यादि त्रित्रिये रवै।प्रवास वास्तु, द्वारार्चा प्रवेशः सन्मुखेऽत्रन संमुखोऽयं हरैदायुः पृष्ठे स्याद् धन नाशनः।वाम दक्षिणयोः किंतु वत्सों वांछित दायकः



गृह प्रवेश में वत्स सन्मुख हो तो मृत्यु, पीछे वत्स हो तो धन नाश तथा दाया व बायां वत्स हो तो वांछित फल देने वाला होता है। वत्स दिशाः कन्या, तुला और वृश्चिक संक्रांति सूर्य में वत्स का मुख पूर्व दिशा में होता है। धन मकर और कुंभ के सूर्य में वत्स मुख दक्षिण दिशा में होता है। मीन, मेष और वृषभ राशि के सूर्य में वत्स का मुख पश्चिम दिशा में होता है। मिथुन, कर्क और सिंह राशि के सूर्य में वत्समुख उत्तर दिशा में होता है।

प्रवेश में कलश चक्रः

प्रवेश मात्रे कलश चक्र चिनत्येत

सभी प्रकार के प्रवेश में कलश चक्र का चिन्तन विचार करके ही प्रवेश करना चाहिए।

संग्रामा खिल दुर्ग शैल नगर प्रासाद देवालये।

क्षैत्रा राम गृहप्रवेश, समये ज्ञेयं चक्रं इद्म।

गृह प्रवेश, दुर्ग प्रवेश, गांव या नगर प्रवेश, राजमहल प्रवेश, देवालय मंदिर में भगवान का प्रवेश प्रतिष्ठा आदि में कलश चक्र अवश्य देखना। कलश चक्र सर्वोपरी शुभ सुकुन है।

गृह प्रवेश में कलश चक्रम

मुखे	पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे	गर्भे	गुदे	कण्ठें
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वसनन	लाभः	श्रीपतिः	कलहः	नाश	चिराय	स्थिरता

कलश चक्रम्: सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गणना करने पर ५ नक्षत्र तक अशुभ ६ से १३ तक शुभ १४ से २१ तक अशुभ, २२ से २७ तक शुभ जानना चाहिए।

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

यस्मामरस्य क्रियते प्रतिष्ठा वारे तिथौ भे च भवेतदीये।

सुयोग लग्ने शुभ राशि लग्ने सुशुद्ध योदित मास कालके।।

जिस देवता की प्रतिमा स्थापित करनी हो उस देवता के दिन, तिथि, नक्षत्र एवं शुभ योगो में शुभ लग्न, पंचाग शुद्धि आदि से युक्त मास में ही करनी चाहिए। सूर्य उत्तरायण में माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आदि मास सभी देवताओं की प्रतिष्ठा के लिए शुभ माने गये है।

विष्णु भगवान की प्रतिष्ठा में माघ मास त्याज्य है।

दक्षिणायन में उग्र देवताओं की प्रतिष्ठा करना शुभ है।

विष्णु प्रतिष्ठा : चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, फाल्गुन आदि मास में अश्विनि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में । वार : सोम, बुध, गुरू, शुक्रवार। तिथि : **रिक्ता अमावस्या को छोड़कर सभी शुभ तिथि : द्वादशी तिथि को विशेष शुभ माना गया है।**

लग्नः स्थिर लग्न एवं कन्या लग्न शुभ।

शिव प्रतिष्ठा : मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण आदि मासों में । नक्षत्र : विशेष रूप से आर्द्रा नक्षत्र को शुभ-अभिजित, श्रवण, पुष्य नक्षत्र ग्राहय। **वार :** सभी शुभ वार। प्रतिष्ठा में रविवार, मंगलवार ग्राहय है प्रवेश में वर्जित है। **तिथिः** सभी शुभ तिथियां विशेष रूप से चतुर्दशी को शुभ माना है। **शिववास :** शिव प्रतिष्ठा में शिव वास अवश्य देखना चाहिए। तिथि को दूगुना करके ५ और

जोडे।योग में ७ का भाग देवें।

शेष 1 बचे तो कैलाश में सुखकारी,

2 बचे तो गौरी सन्निध में सुख-सम्पन्न,

3 बचे तो वृषभारूढ में अभिष्ट सिद्धि

4 बचे तो सभा में संताप कारक

5 बचे तो भोजन में पीड़ा कारक

6 बचे तो क्रिडा में कष्ट कारक

0 बचे तो शमशान में मृत्यु कारक

शिववास का शुभ तिथि चक्रः

शुक्ल पक्षः २, ५, ६, ९, १२, १३

कृष्ण पक्षः १, ५, ४।१२, ३०

ब्रह्मा प्रतिष्ठा : रोहिणी, मृगशिरा, पृष्य, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, ज्येष्ठा, श्रवण, तिथि, सभी शुभ तिथियों एवं पूर्णिमा विशेष। कुम्भ लग्न विशेष शुभ है।

देवी प्रतिष्ठा : सभी देवों के प्रतिष्ठा मास के अलावा मास और अश्विन और मूल नक्षत्र विशेष शुभ देवी प्रतिष्ठा में नवमी तिथि ग्राहय।

गणेश प्रतिष्ठा : सर्वसामान्य देव प्रतिष्ठा के शुभ मुहूर्त्त में विशेष चतुर्थी तिथि ग्राहय।

हनुमान प्रतिष्ठा : आर्द्रा, हस्त, पू.फा., स्वाति, श्रवण, नक्षत्र रवि, सोम, मंगल, गुरूवार व स्थिर लग्न शुभ है।

विशेष नोट : विष्णु प्रतिष्ठा में कन्या लग्न, शिव प्रतिष्ठा में मिथुन लग्न, ग्रहों की स्थापना में पूष्य नक्षत्र ब्रह्मा की कुंभ लग्न, देवी की द्विस्वभाव लग्न, योगिन की चर लग्न में प्रतिष्ठा विशेष शुभ मानी गयी है।

पितृगणों की प्रतिष्ठा : मघा, रोहिणी, मृगशिरा, रवि, चन्द्र, गुरूवार, रिक्ता तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में शुभ।

श्री जिन बिम्ब (जैन मंदिर) अंजन श्लाका, प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त

शुभ मास : मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मेष संक्रान्ति युक्त चैत्र और मकर संक्रान्ति युक्त पौष मास ग्राहय है।

शुभ तिथि : शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५

कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ अधिक शुभ हो तो १० भी ग्राहय

वशिष्ठ के मत के आधार पर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदास के अलावा सभी तिथि ग्राहय

नारद के मत के अनुसार सम्पूर्ण शुक्ल पक्ष ग्राहय एवं कृष्णपक्ष की अष्टमी तक ग्राहय

शुभ वार : रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र और शनि

शुभ नक्षत्र : अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उ.फा., हस्त, स्वाति, अनु., मूल उ.षा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ऊ. भा व रेवती।

वर्जित नक्षत्र : जैन प्रतिष्ठा जिन बिम्ब अंजन श्लाका में जिन देवों के जन्म नक्षत्र से दैनिक नक्षत्र की गणना करने पर १, १०, १६, १८, २३ और २५ वां नक्षत्र एवं ग्रहण एवं क्रुर ग्रहों में संग्रहित नक्षत्र वर्जित है।

शुभ योग : प्रिति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोमन, सुकर्मा, धृति, वृद्धि, ध्रुव, हर्षण, सिद्ध, बरियान, शिव साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र आदि।

शुभकरण : बव, बालक, कौलव, तैत्तिल, गर और वणिज।(विष्टि, वणिज, चतुष्पाद व नाग त्याज्य)

शुभ लग्न : मिथुन, कन्या, धनु और मीन श्रेष्ठ।वृषभ व सिंह लग्न मध्यम।

शुभ नवमांश : मिथुन, कन्या, धनु व मीन इन चारों का पूर्वार्ध भाग श्रेष्ठ। तदुपरान्त शुभ षडवर्ग युक्त शुभ समय।बलवान हो तो स्थिर नवमांश भी लीया जा सकता है।

शुभ योग : रवियोग, राजयोग, कुमार योग, सिद्धियोग, स्थिर योग।

विशेष नोट : वास्तु, प्रतिष्ठा आदि में स्थिर एवं द्विस्भाव लग्न का ही महत्व है लेकिन यदि लग्न शुद्ध नहि हो तो और ग्रह शुद्धि श्रेष्ठ हो तो चर लग्न में भी प्रतिष्ठा के लिए लिया जा सकता है ऐसा शास्त्र का मत है।

लग्नं श्रेष्ठ प्रतिष्ठायां क्रमान्मध्य मथावरम्।

द्वयंग स्थिरसंच भूयोमिर्गुणं शद्व्यं चरं तथा।। (आ.सि.)

मुहूर्त्त शास्त्र के विशिष्ट प्रमाण-परिहार

गुरू शुक्र अस्त दोष परिहार : वैसे तो सभी शास्त्रों का स्पष्ट मत है कि गुरू और शुक्र अस्त में शुभ कार्यो का निषेध है फिर भी अत्यावश्यक में कार्य सम्पन्न करने का मत मुनियों का मिलता है।

उत्सवेतु च सर्वेषु सीमन्त ऋतुकर्म च।सुरासुरे जयो श्चैव चातुर्मास्य व्रतेषु च।।

सभी के उत्सव में, सिमन्त मुहूर्त्त, चातुर्मास आदि वर्ष पर्वो में गुरू शुक्र अस्त दोष नहीं लगता हैं।

आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्म कारिणाम्।विवाहादीनि कुर्वीत मोढयेपि गुरू शुक्रयोः।।

शान्ति कृत्वा तयोस्तु द्धच्दुक देवेन्द्र मंत्रिण।होमेदीनै जपैर्वापि तयोरूवत्तवश्च मन्त्रकेः।।

बृहस्पति का मत है कि अत्यावश्यक हो तो गुरू शुक्र का दान, जप, होम एवं मंत्र जप करके शांति विधान करके

विवाहादि शुभ कार्य कर सकते है।

अस्तं गतं भृगुसूते भवेद्यदि बुधोदयः।पुत्राष्टकस्य जननी तदोढ़ा कन्यकाभवेत्।। (आ.सि.)

सारंश : शुक्र अस्त हो और बुध का उदय हो तो उस समय विवाहित कन्या आठ पुत्रों की माता होती है अर्थात् लग्न शुभ रहता है।

शशांकजो यदो देति गुरोरस्तमनं यदि।पुत्रोष्टकस्य जननी तदोदा कन्यका भवेत।। (आ.सि.)

बुध उदय हो और गुरू-शुक्र अस्त काल में विवाह शुभ है।

✻ वार्षिक राशिफल ✻

मेष राशिफल – ११ मार्च से गुरु मिथुन में मार्गी होकर आपके साहस, सम्पर्क और यात्राओं को बढाएंगे। २ जून से गुरु कर्क में प्रवेश करते ही घर–परिवार, वाहन और भूमि, सम्पत्ति से जुड़ी खुशियाँ मिलेंगी तथा संचार, भाई–बहन और नेटवर्किंग के क्षेत्र में प्रगति होगी। ३० दिसम्बर से गुरु पंचम भाव सिंह में आएंगे, जिससे संतान, प्रेम और रचनात्मकता में लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से जून तक तनाव और थकान हो सकती है, किन्तु बाद में सुधार होगा। आध्यात्मिक यात्राएँ और ध्यान से मानसिक शांति बढेगी। २४ जनवरी २०२७ से गुरु वक्री होने पर प्रेम–जीवन और संतान से जुड़े मामलों में थोड़ी देरी होगी। शनि और राहु का प्रभाव विदेश यात्राओं और खर्च में वृद्धि दिखाता है।

वृषभ राशिफल – ११ मार्च २०२६ से गुरु मिथुन में मार्गी होकर आपके धन–द्वितीय भाव में रहेंगे। यह समय नए निवेश और आय की वृद्धि करने वाला और वित्तीय पक्ष को मजबूत करने वाला रहेगा। २ जून से कर्क में गुरू चौथे भाव में जाकर घर–परिवार में सुख और सम्पत्ति वृद्धि का योग देंगे। साथ ही वाहन या प्रॉपर्टी खरीद की संभावना रहेगी। ३० दिसम्बर से पंचम भाव सिंह में आकर संतान और शिक्षा से लाभ दिलाएंगे तथा प्रेम सम्बंधों में स्थिरता आएगी। स्वास्थ्य बेहतर रहेगा, लेकिन अनावश्यक खर्च से बचना होगा। जनवरी–जून २०२७ तक वक्री गुरू प्रेम जीवन में हल्की रूकावट दे सकते हैं। शनि 11 वें भाव मीन में पूरे वर्ष शुभफल देंगे।

मिथुन राशिफल – ११ मार्च से गुरु मिथुन राशि में मार्गी होकर आपके लग्न में प्रवेश करेंगे। आत्मविश्वास और स्वास्थ्य में सुधार होगा। करियर में नई राहें खुलेंगी। २ जून से चतुर्थ भाव (कर्क) में गुरु धनलाभ, सम्पत्ति सुख में वृद्धि और रचनात्मक कार्यों में सफलता देंगे। रिश्तों में सौहार्द्र बना रहेगा, परन्तु वक्री गुरु जनवरी–जून २०२७ के बीच संतान या प्रेम जीवन में थोड़ी चुनौतियाँ आ सकती हैं। शनि और राहु–केतु का प्रभाव कार्यक्षेत्र और वैवाहिक जीवन में उतार–चढ़ाव दिखाता है। शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

कर्क राशिफल – कर्क जातकों के लिए यह समय मानसिक रूप से संतुलन बनाने का होगा। ११ मार्च से गुरु मिथुन राशि में मार्गी होकर बारहवें भाव में रहकर विदेश यात्रा और खर्च बढाएंगे। २ जून से गुरु आपके लग्न में प्रवेश करेंगे, जिससे व्यक्तित्व, करियर और स्वास्थ्य में बड़ा सुधार होगा। ३० दिसम्बर से पंचम भाव सिंह में आकर धन और संतान सुख बढाएंगे और रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। जनवरी २०२७ से वक्री गुरू थोड़ विलम्ब कर सकते हैं। शनि ९ वें भाव में धर्म और भाग्य का विस्तार करेंगे। आध्यात्मिक रूचि बढेगी और ध्यान/योग से लाभ मिलेगा। राहु–केतु स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन पर ध्यान दिलाते हैं।

सिंह राशिफल – ११ मार्च से गुरु मिथुन राशि में मार्गी होकर आपके ११ वें भाव में रहकर लाभ और मित्राता और सामाजिक दायरा व सम्पर्क बढाएंगे। यह समय करियर विस्तार के लिए शुभ रहेगा। २ जून से गुरु कर्क १२ वें भाव में जाकर खर्च और विदेश यात्रा का योग देंगे। मानसिक शांति और पारिवारिक जिम्मेदारियों में वृद्धि होगी। ३० दिसम्बर से गुरु आपके लग्न में प्रवेश करेंगे, जो जीवन के हर क्षेत्र में सुधार लाएंगे। संतान सुख, प्रेम और रचनात्मकता में बड़ी उपलब्धि मिलेगी। जनवरी–जून २०२७ के बीच गुरु वक्री होने से सम्बंधों में थोड़ी उलझन संभव है, योजनाओं में विलम्ब होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शनि सप्तम भाव में रिश्तों की परीक्षा लेंगे। राहु–केतु शिक्षा और संतान पर असर डाल सकते हैं

कन्या राशिफल – ११ मार्च से गुरु मिथुन राशि में मार्गी होकर दशम भाव मिथुन में आकर कार्यक्षेत्र में प्रगति कर करियर को उंचाई देंगे। २ जून से ११ वें भाव कर्क में आकर मित्र और आय बढाएंगे। समाज में मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ३० दिसम्बर से १२ वें भाव सिंह में जाकर विदेश और खर्च का योग बनाएंगे। शोध–अध्ययन में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि और नए सम्पर्क बनने से जीवन सुगम होगा। वक्री गुरु जनवरी २०२७ से खर्च और अनिश्चितता बढ़ा सकते हैं। शनि और राहु–केतु स्वास्थ्य और साझेदारी पर प्रभाव डालेंगे। तनाव से बचना होगा।

तुला राशिफल – ११ मार्च से गुरु नवम भाव मिथुन राशि में मार्गी होकर भाग्य और शिक्षा में वृद्धि कर उच्च अध्ययन और धर्म–अध्यात्म की ओर बढ़ावा देंगे। शुरूआत महीनों में यात्रापाएं और भाग्य वृद्धि के अवसर मिलेंगे। २ जून से दशम भाव कर्क में करियर में तरक्की होगी। ३० दिसम्बर से ११ वें भाव सिंह में बड़े भाई–बहन से सहयोग, लाभ और मित्रों का सहयोग मिलेगा। रिश्तों में मिठास बनी रहेगी। आर्थिक पक्ष सुदृढ रहेगा। जनवरी २०२७ से गुरु वक्री होने पर मित्राता में तनाव संभव है। शनि ६ठे भाव में स्वास्थ्य और कार्यक्षेत्र में अनुशासन देंगे। राहु–केतु परिवार और सम्बंधों में प्रभाव डालेंगे।

वृश्चिक राशिफल – ११ मार्च से गुरु अष्टम भाव मिथुन राशि में मार्गी होकर अचानक लाभ या परिवर्तन देंगे। यह समय गूढ़ ज्ञान, शोध और वित्तीय मामलों में उतार चढ़ाव ला सकता है। वर्ष के आरंभ में धन और निवेश सम्बंधी सावधानी बरतनी होगी। २ जून से नवम भाव कर्क में जाकर भाग्य को प्रबल करेंगे और शिक्षा में सफलता देंगे। यात्राओं से लाभ मिलेगा। ३० दिसम्बर से दशम भाव सिंह में करियर और सामाजिक क्षेत्र में उन्नति और मान–प्रतिष्ठा बढ़ाएंगे। स्वास्थ्य के लिहाज से पाचन और रक्तचाप की समस्या पर ध्यान दें। वक्री गुरु जनवरी २०२७ से काम में थोड़ी देरी ला सकते हैं। शनि पंचम भाव में संतान और प्रेम में स्थिरता देंगे। राहु–केतु आर्थिक और स्वास्थ्य मामलों में सतर्क रहने का संकेत देंगे।

धनु राशिफल – ११ मार्च से गुरु सप्तम भाव में मिथुन में मार्गी होकर वैवाहिक जीवन और साझेदारी व सम्बंधों को सशक्त करेंगे। विवाह और व्यवसायिक साझेदारी से लाभ होगा। २ जून से अष्टम भाव कर्क में निवेश, वित्त, ऋण सम्बंधी मामलों और रहस्यमय ज्ञान से लाभ होगा। ३० दिसम्बर से नवम भाव सिंह में भाग्य का उदय होगा। विदेश यात्रा या उच्च शिक्षा में प्रगति होगी। जनवरी २०२७ से गुरु वक्री होने पर यात्रा और शिक्षा में विलम्ब हो सकता है। सम्बंधों में सुधार की आवश्यकता होगी। शनि चतुर्थ भाव में पारिवारिक जिम्मेदारियां देंगे। राहु–केतु स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और मित्राता पर असर डालेंगे।

मकर राशिफल – ११ मार्च से गुरु षष्ठ भाव मिथुन राशि में मार्गी होकर स्वास्थ्य और कार्यक्षेत्र में सुधार देंगे। शुरूआती महीनों में काम का दबाव रहेगा। २ जून से सप्तम भाव कर्क में विवाह और साझेदारी में स्थिरता और शुभता आएगी। ३० दिसम्बर से अष्टम भाव सिंह में वित्तीय लाभ, निवेश और गूढ़ विद्या में लाभ के अवसर बढ़ेंगे। जनवरी २०२७ से वक्री गुरु वित्तीय निर्णयों में सावधानी की सलाह देंगे। शनि तृतीय भाव में प्रयासों में सफलता देंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा और शत्रु–विरोधी कमजोर होंगे करियर में स्थिर प्रगति होगी। राहु–केतु करियर और परिवार पर असर डाल सकते हैं

कुंभ राशिफल – ११ मार्च से गुरु पंचम भाव में मिथुन में मार्गी होकर शिक्षा, रचनात्मकता, संतान और प्रेम में लाभ देंगे। २ जून से षष्ठ भाव कर्क में स्वास्थ्य और कार्य में सुधार होगा। ३० दिसम्बर से सप्तम भाव सिंह में विवाह और साझेदारी में लाभ देंगे। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। जनवरी २००७ से गुरु वक्री होने पर सम्बंधों में थोड़ी रूकावट आएगी। शनि द्वितीय भाव में आर्थिक अनुशासन देंगे। राहु–केतु धन और शिक्षा पर असर डालेंगे।

मीन राशिफल – ११ मार्च से गुरु चतुर्थ भाव मिथुन राशि में मार्गी होकर परिवार और घर, सम्पत्ति और माता का सुख देंगे। घर और प्रॉपर्टी सम्बंधी कार्य होंगे। २ जून से पंचम भाव कर्क में प्रेम, संतान और शिक्षा में उन्नति होगी। ३० दिसम्बर से षष्ठ भाव सिंह में स्वास्थ्य और कार्य में ध्यान दिलाएंगे। जनवरी २०२७ से वक्री गुरु स्वास्थ्य सम्बंधी थोड़ी समस्या ला सकते हैं। वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की आवश्यकता होगी। आध्यात्मिक दृष्टिकोण मजबूत होगा। शनि आपके लग्न में रहेगा, जिससे आत्म–अनुशासन और जिम्मेदारी बढ़ेगी। राहु–केतु खर्च और सम्बंधों में असंतुलन ला सकते हैं।

✻ शनि गोचरफल सूत्राम् ✻

साढ़े साती शनि – शनि जिस राशि में भ्रमण करते हैं वह राशि एवं उससे आगे व पीछे की दोनों राशियों पर भी अपना प्रभाव रखते हैं। शनि एक राशि पर औसतन ढाई वर्षों तक भ्रमणशील रहते हैं अतः तीनों राशियों पर कुल भ्रमण काल साढ़े सात वर्ष होने से यह अवधि साढ़े साती कहलाती है।

ढैया शनि – यदि किसी की जन्म राशि से शनि का गोचर चौथी–आठवीं राशि में हो रहा हो तो उस जातक पर ढैया शनि का प्रभाव होता है। इसका समय औसतन ढाई वर्ष होता है।

शुभ–अशुभ प्रभाव – यदि शनि अशुभ स्थिति में हो तो पारिवारिक कलह, व्यवसायिक उलझनें, हानि, निकटतम रिश्तेदारों से विरोध, खर्च वृद्धि, बिना गलती के दोषारोपण, विघ्न–बाधाएं, रोग, दुर्घटना, संकट, सुख में कमी इत्यादि फल प्रकट होते हैं। शुभ स्थिति मेकं स र्व सुख, आर्थिक लाभ, यश एवं सम्मान प्राप्त होता है।

शनि पाद – जिस दिन शनि राशि परिवर्तन करते हैं उस दिन जन्म राशि से चन्द्रमा १, ६, ११ वें हो तो स्पर्ण पाद २, ५, ९ वें चन्द्र में रजत पाद, ३, ७, १० में ताम्र पाद एवं ४, ८, १२ में लौह पाद से शनि का गोचर होता है। स्वर्ण पाद में सर्व सुख, चांदी पाद में लाभ कारक, ताम्र पाद में लाभ–हानि मिश्रित व लोह पाद में शनि का विनाशक प्रभाव होता है। जिनकी कुण्डली में शनि बलवान हो, शुभ भावों अर्थात् लग्न, पंचम या नवम भाव का स्वामी हो, ३, ६, ११ वें भाव में स्थित हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, कारक ग्रहों से युक्त हो, नवांश में बली या शुभ दृष्ट हो तो विशेष कुप्रभाव नहीं होता और यदि जन्म का शनि अशुभ हो तो स्वर्ण पाद में भी विशेष लाभ नहीं होता है।

मतान्तर से शनि पाद – शनि जिस नक्षत्र पर हो उस संख्या में जन्म नक्षत्र की संख्या को जोड़कर ४ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो सोने का, २ शेष हो तो लोहे का, ३ शेष हो तो तांबे का और ४ शेष हो तो चांदी का पाद होता है। स्वर्ण पाद में सुख हानि, लोह पाद में धन नाश, तांबा सामान्य एवं चांदी का पाया उत्तम लाभकारी होता है।

शनि वाहन – शनि के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या हो उसमें ९ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो गंधर्व, २ शेष बचे तो अश्व, ३ में गज, ४ में मेष, ५ में सियार, ६ में सिंह, ७ में काग, ८ में मृग, एवं ० या ९ शेष में मयूर वाहन होता है। इसमें अश्व, गज एवं मयूर वाहन शुभ होते हैं।

शनि शान्ति के उपाय – १ हनुमानजी महाराज की आराधना। २ शनि के बीज या वैदिक मंत्र का विधिपूर्वक जाप एवं दशांश हवन। ३ शनिवार के दिन व्रत रखना व तेल, उड़द इत्यादि शनि से सम्बंधित काली वस्तुओं का दान। ४ पीपल की नियमित परिक्रमा कर तेल का दीपक जलाना। ५ व्यसनों से दूर रहना। ६ बुजुर्गों का आदर करने से शनि महाराज शांत होते हैं।

डॉ.लता श्रीमाली
निदेशक –
राजस्थान संस्कृत अकादमी
जयपुर (राज.)
मो.9414543345



कुण्डली मिलान में सप्तम (पति/पत्नी) भाव विचार

पं. जनार्दन ओझा, राजज्योतिषी, जावाल
सम्पादक अर्बुद श्री पंचांग

पत्नी कारक शुक्र

जन्म लग्न से केन्द्र में उच्च राशि में शुक्र पंच महापुरूष योगों में से एक योग 'मालव्य योग' बनाता है किन्तु

जीवे शनि युते दृष्टे मालवी योग भगवान्।।
भृगुरूच्च फलं व्यर्थ ग्रहच्छिद्रेण कर्शितः।। (चन्द्रकला नाड़ी)

शुक्र मीन अर्थात् गुरू की राशि में उच्च का होता है। लेकिन गुरू जन्म लग्न में शनि से युत, दृष्ट हो तो मालव्य योग भंग हो जाता है और मालव्य योग का शुभ फल जीवन में घटित नहीं होता है।

जो ग्रह जिस राशि/नवांश में स्थित है उसका राशि/नवांश पति ग्रह उस ग्रह के फल को प्रभावित करता है। सूर्य, शनि, राहु एवं उनके अधिष्ठित राशि के स्वामी तथा व्ययेश ये सभी ग्रह पृथकताजानक प्रभाव रखते हैं। इनमें से यदि दो या अधिक ग्रहों का किसी भाव, भावेश या कारक पर स्थिति, युति, दृष्टि द्वारा प्रभाव हो तो उस भाव में विचारणीय शुभ फलों से जातक को पृथक कर देते है। जैसे लग्न व लग्नेश पर हो तो स्वास्थ्य व धन हानि, सप्तम भाव-सप्तमेश-शुक्र पर हो तो पति-पत्नी में वियोग हो जाता है। इसी प्रकार अन्यत्र समझना चाहिये। जब शनि की राशि मकर-कुंभ में राहु स्थित हो या शनि के साथ राहु हो तो शनि की पाप क्षमता और अधिक बढ़ जाती है। शुक्र मुख का कारक है यदि शुक्र द्वितीय स्थान में शुभ प्रभाव में हो तो जातक को सुन्दर बनाता है । व्यय स्थान में शुक्र विशेष रूप से हर्षित होता है। हमने कई कुण्डलियों में द्वादश स्थान में शुक्र नीच राशि तथा पापग्रह से युक्त, दृष्टि देखा है लेकिन यदि सप्तमेश बलवान हो तो जातक को व्यय सीान में नीच राशि, पापयुत शुक्र भी स्त्री के सम्बन्ध में शुभ फल देते हुये देखा है।

व्यय भावस्थ शुक्र की प्रशंसा में फलित ग्रन्थों में अनेक शुभफल वर्णित है। मेष राशि में व्यय स्थान में नीच नवांश में शुक्र न हो तथा भाग्येश से दृष्ट हो तो जातक को निधि हाथ लगती है। जातक धनाढ़्य होता हैं सामान्यता धनेश व्यय भाव में हो तो धन के लिये अशुभ होता है किन्तु मेष लग्न में धनेश शुक्र व्यय भाव में उच्च राशि में धनदायक होता है।

उत्तरकालामृत में व्यय भावस्थ शुक्र को शनि की राशि/नवांश के बिना शुभ फलदायक माना है। जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न तथा गुरू से व्यय स्थान में शुक्र धनाढ्य बनाता हैं।

पति कारक शुक्र या गुरू

पति कारक गुरू या शुक्र है। इस विषय पर फलित ज्योतिष में एकमत नहीं है। अधिकांश कन्या विवाह से पूर्व तथा बाद में सौभाग्यवती होने की कामना से गुरूवार का व्रत, केले का पूजन करती है। स्त्रियों की जन्मपत्री में जब कन्या या मिथुन लग्न का जन्म हो तो गुरू सप्तमेश होता है। यदि गुरू पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन या पति के जीवन के लिये हानि की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में स्त्री का विवाह विलम्ब से होता है। विवाह होने पर पति से वैमनस्य या उसके सुख में कमी होती है। गुरू केन्द्राधिपत्य दोष के साथ निर्बल होकर 2, 6, 7, 8, 12 भावों में हो तो अपनी दशा/अन्तर्दशा में स्वयं को तथा पति को कष्ट देता है।

सप्तम स्थान में गुरू, शुक्र सुन्दर स्त्री को देने वाले होते हैं। शुक्र से नवम स्थान में शुभ ग्रह होने पर तथा उसके स्वामी के बलवान होने पर पत्नी धार्मिक स्वाभाव वाली, सुपुत्र जननी और भाग्यवती होती है।

सप्तमेश के पूर्ण बली होने पर तथा अन्य मूल्यप्रद्र ग्रहों द्वारा युक्त या दृष्ट होने पर पुरूष का विवाह धनाढ्य परिवार से होता है। मूल्यप्रद्र ग्रह से आशय शुभ ग्रह से हैं।

सप्तमेश और शुक्र यदि 1, 5, 9, 11 भाव में हो तो ससुराल से अच्छा धन मिलता है।

सप्तम भाव, सप्तमेश व शुक्र समराशि में हो तथा सप्तमेश एवं अष्टमेश शुभ व बलवान हो तो सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है।

सप्तम भाव में, सप्तमेश के साथ, शुक्र के साथ मंगल स्थित हो या इन पर मंगल की दृष्टि हो तो पुरूष में कामवासना अधिक होती है। सप्तमेश-व्ययेश के राशि परिवर्तन योग में भी यह फल होता है।

सप्तमेश तथा पंचमेश का राशि परिवर्तन योग हो तो प्रेम विवाह की संभावना रहती है।

सप्तम भाव में शनि दिग्बली होता है। अतः पुरूष की कुण्डली में शनि सप्तम भाव में हो तो पन्ति का उसके जीवन में अधिक प्रभाव होता है। यदि पुरूष की कुण्डली में लग्न में राशि हो तो पुरूष का पत्नी के जीवन पर अधिक प्रभाव होता है।

कलत्राधिपतौ केन्द्रे शुभ ग्रह समन्विते। शुभांशे शुभ राशौ वा तस्य पत्नी पतिव्रता।। (ज्योतिषार्णव)

सप्तमेश केन्द्र में शुभ राशि, शुभ नवांश में तथा शुभ ग्रह से समन्वित हो तो पत्नी पतिव्रता होती है।

जन्म लग्न से पंचम, सप्तम भाव में शुभ ग्रह या अपने स्वामी से युत, दृष्ट हों और चन्द्र लग्न से भी पंचम, सप्तम स्थान अपने स्वामी या शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो सन्तान, पत्नी सम्बन्धी उत्तम फल प्राप्त होते है।

द्वितीयेश, सप्तमेश और शुक्र प्रथम स्त्री के प्रतिनिधि ग्रह है। यदि ये शुभ प्रभाव में हो तो पत्नि दीर्घायु होती है। इसके विपरीत सप्तम-सप्तमेश, द्वितीय-द्वितीयेश तथा शुक्र निर्बल और पीड़ित हो तो सप्तम भाव को हानि पहुंचती है। और पत्नि की हानि होती है। द्वितीय भाव सप्तम भाव से अष्टम होता है। अतः पत्नि/पति सुख के लिये विशेष विचारणीय है। द्वितीय भाव कुटुम्ब का प्रतिनिधि भाव भी है।

सप्तम भाव सम्बन्धी योग :-

1. शुक्र यदि पाप ग्रहों के मध्य हो या शुक्र से चतुर्थ, अष्टम द्वादश स्थान में पापग्रह हों या शुक्र पाप ग्रहों से युत-दृष्ट हो तो इन तीनों योगों में से जितने अधिक योग पुरूष की कुण्डली में होंगे उतना ही पत्नि पक्ष निर्बल होगा। स्त्री के कारण विपत्तियाँ आयें। तलाक या स्त्री की मृत्यु संभव है।
2. सप्तमेश पंचम में हो तो स्त्री की मृत्यु हो या अपुत्र हो।
3. पंचमेश या अष्टमेश सप्तम में हो तो पत्नी का विनाश हो।
4. यदि क्षीण चंद्र पंचम भाव में हो और पापग्रह लग्न सप्तम, व्यय भाव में हो तो जातक पत्नी, पुत्रहीन हो सकता है।
5. सूर्य और राहु सप्तम भाव में हो तो स्त्री संग से धन हानि होती है।
6. सप्तम भाव में वृश्चिक का शुक्र, वृष का बुध, मकर का गुरू, मीन का शनि या मंगल हो तो पत्नी से तलाक या उसकी मृत्यु संभव है। सप्तमेश के बलवान होने की स्थिति में प्रायः तलाक की संभावना अधिक रहती है।
7. कन्या राशि का सप्तम भाव में गुरू हो और चतुर्थ भाव में कोई पापग्रह (मंगल)हो, स्त्री की हानि हो।
8. सूर्य व शुक्र पंचम, सप्तम, नवम भाव में हो तो पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। स्त्री का कोई अंग विकल हो।
9. यदि सप्तम भाव में कर्क राशि में शनि व मंगल हो तो पत्नी सुंदर और अच्छे चरित्र की होगी। इस योग में विजातीय पत्नी या प्रेम विवाह की अधिक संभावना रहती है।
10. यदि शुक्र पापग्रह के साथ पंचम, सप्तम या नवम भाव में हो तो स्त्री रोगिणी या उसके किसी अंग में विकलता होती है। यदि शुक्र शनि या मंगल के वर्ग में हो तो या शनि, मंगल से दृष्ट हो तो जातक पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री का भोग करता है।
11. यदि चन्द्र व शुक्र से सप्तम मंगल व शनि हो तो जातक स्त्रीहीन हो।

12. यदि सप्तम में नपुंसक ग्रह हों तथा एकादश में दो ग्रह हो तो द्विभार्या योग हो। शुक्र और सप्तमेश द्विस्वभाव राशि-नवांश में हो तो भी द्विभार्या योग हो। सप्तमेश और शुक्र जितने ग्रहों ये युक्त हो उतनी ही स्त्री का भोग हो।

13. यदि चर राशि में स्थित शुक्र दो पापग्रहों के मध्य हो तथा शनि से युत, दृष्ट हो तो स्त्री भ्रष्ट आचरण की होती है।

14. मंगल की राशि या नवांश में शुक्र हो, मंगल से युत, दृष्ट हो तो स्त्री किसी क्रूर व्यक्ति को चाहती है। काम क्रीड़ा में अत्यन्त प्रगल्भ होती है।

15. शनि की राशि या नवांश में शुक्र हो, शनि से युक्त या दृष्ट हो या शुक्र नीच राशि या नीच नवांश में हो तो जातक निकृष्ट आचरण के परिवार की स्त्री में आसक्ति रखता है।

16. मंगल या सूर्य की राशि में शुक्र हो तथा इन दोनों से युक्त या दृष्ट हो तो पत्नि को अग्नि से भय होता है।

17. शुक्र के साथ शनि हो और शुक्र से अष्टम पापग्रह हो तो पत्नी दुर्घटनावश पीड़ित हो।

18. चर राशि में या जल राशि में चन्द्र व शुक्र हो तथा पाप प्रभाव में हो तो पत्नि को जल से भय हो।

पति-पत्नी का स्वरूप

पति या पत्नी को कौन से व्यवसाय या सेवा से सम्बद्ध होना चाहिए और उसका स्वभाव रूप रंग आदि किस प्रकार का होना चाहिए। ज्योतिष मकरन्द सहित महर्षि लोमश, गर्ग, यवनाचार्य आदि ने कुछ और मत भी प्रतिपादित किये है। जिनके आधार पर पत्नी या पति के विशेष गुण-दोषों का विचार किया गया है। विशिष्ट योगों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है -

सुन्दर, सदाचारी, कलाकार

1. तुला या वृष का मंगल सप्तम हो।
2. वृश्चिक या मेष का शुक्र सप्तम हो।
2. धनु या मीन की बुध सप्तम हो।
4. मकर का चन्द्रमा सप्तम हो।
5. कुंभ का सूर्य सप्तम हो।
6. मिथुन का कन्या का वृहस्पति सप्तम हो।
7. कर्क का सिंह का शनि सप्तम में हो।

विद्वान

1. मंगल धनु का कर्क का दशम में हो।
2. बुध कुंभ या वृष का दशम में हो।
3. वृहस्पति सिंह या वृश्चिक का दशम में हो।
4. शुक्र मकर या मिथुन का दशम हो।
5. शनि कन्या या तुला का दशम हो।
6. सूर्य मेष का दशम हो।
7. चन्द्रमा मीन का दशम हो।

नपुंसक का बंध्या

1. मकर का सूर्य सप्तम हो।
2. कन्या मेष का मंगल सप्तम में हो।
3. मिथुन या कर्क का शनि सप्तम में हो।
4. क्षीण चन्द्रमा धनु का सप्तम हो।
5. पापयुक्त बुध वृश्चिक या कुंभ का सप्तम में हो।
6. पूर्ण चन्द्रमा सिंह का सप्तम हो।
7. बुध कर्क या तुला का सप्तम हो।
8. मेष या मकर का वृहस्पति सप्तम हो।
9. मिथुन या वृश्चिक का शुक्र सप्तम हो।

क्रूर स्वभाव

1. सूर्य कन्या का चतुर्थ तुला का पंचम या मीन का दशम हो।
2. चन्द्र सिंह का चतुर्थ कन्या का पंचम या कुंभ का दशम हो।
3. बुध कर्क या तुला का चतुर्थ में, सिंह या वृश्चिक का पंचम अथवा मकर या मेष का दशम हो।
4. वृहस्पति मकर या मेष का चतुर्थ में, कुंभ या वृष का पंचम अथवा कर्क या तुला का दशम हो।
5. शुक्र मिथुन या वृश्चिक का चतुर्थ, कर्क या धनु का पंचम अथवा धनु या वृष का दशम हो।
6. मंगल वृष या धनु का चतुर्थ में, मिथुन या मकर का पंचम अथवा वृश्चिक या मिथुन का दशम हो।
7. शनि कुंभ या मीन का चतुर्थ में, मीन या मेष का पंचम में अथवा सिंह या कन्या का दशम में स्थित हो।
8. क्षीण चन्द्रमा पापयुक्त सिंह का सप्तम हो।
9. मंगल वृष या धनु का सप्तम हो।
10. सूर्य कन्या का सप्तम हो।
11. शनि कुंभ या मीन का सप्तम हो।

निम्न योगों में भी पति (या पत्नी) क्रूर स्वभाव, घमण्डी, आज्ञा का उल्लंघनकारी प्राप्त हो :-

1. सूर्य मीन का द्वितीय हो।
2. कुंभ का चन्द्रमा द्वितीय हो।
3. मंगल मिथुन का द्वितीय हो।
4. बुध मकर या मेष का द्वितीय हो।
5. वृहस्पति कर्क या तुला का द्वितीय हो।
6. शुक्र धनु या वृष का द्वितीय हो।
7. शनि सिंह या कन्या का द्वितीय हो।
8. कन्या का सूर्य अष्टम हो।
9. सिंह का चन्द्र अष्टम हो।
10. मंगल वृष या धनु का अष्टम हो।
11. बुध कर्क या तुला का अष्टम हो।
12. शुक्र मिथुन या वृश्चिक का अष्टम हो।
13. शनि कुंभ या मीन का अष्टम हो।

सुनेत्र, सुन्दर

1. कर्क का सूर्य लग्न में हो।
2. मिथुन का चन्द्रमा लग्न में हो।
3. मीन या तुला का मंगल लग्न में हो।
4. बुध सिंह या वृष का लग्न में हो।
5. वृहस्पति कुंभ या वृश्चिक का लग्न में हो।
6. शुक्र मेष या कन्या का लग्न मे हो।
7. शनि मकर या धनु का लग्न में हो।

सम्बन्ध विच्छेद योग

यदि किसी जातक के निम्नांकित योग हो तो वह पत्नि तथा सन्तान (स्त्री के योग हो तो पति एवं सन्तान का) का त्याग कर सकत हैं और दूसरा सम्बन्ध बना सकते हैं।

1. कुंभ का सूर्य दशम हो।
2. मंगल तुला का वृष का दशम हो।
3. शनि सिंह या कर्क का दशम हो।
4. पापग्रह के साथ बुध धनु या मीन का दशम हो।
5. क्षीण चन्द्रमा मकर का दशम हो।

देवर या साली से सम्बन्ध एवं कामुक योग

जन्म कुण्डली में निम्न योग होने पर जातक पुरूष हो तो साली से और स्त्री हो तो देवर से अनुचित सम्बन्ध होने की सम्भावना गर्ग जी ने व्यक्त की है-

1. धनु का सूर्य सप्तम में हो।
2. सिंह या मीन का मंगल सप्तम हो।
3. वृष या मिथुन का शनि सप्तम हो।
4. पापग्रह युक्त बुध तुला या मकर का सप्तम हो।
5. क्षीण चन्द्रमा वृश्चिक का सप्तम में हो।
6. सूर्य मेष का तृतीय हो।
7. चन्द्रमा मीन का तृतीय हो।
8. धनु या कर्क का मंगल तृतीय हो।
9. वृष या कुंभ का बुध तृतीय हो।
10. सिंह या वृश्चिक का वृहस्पति तीसरे हो।
11. मिथुन या मकर का शुक्र तीसरे हो।
12. शनि कन्या या तुला का वृहस्पति तीसरे हो।

मिष्ट भाषी सदाचारी :- निम्न योगों में पति या पत्नि सदाचारी, सेवा भावी, मिष्ट भाषी प्राप्त हो। आचार्य मंत्रेश्वर के अनुसार लेकिन दाम्पत्य सुख दीर्घकालीन नहीं होता। इस विषय में अन्यान्य योग भी देखने चाहिये-

1. नीच का सूर्य सप्तम हो।
2. कन्या का चन्द्र सप्तम हो।
3. सिंह या वृश्चिक का बुध सप्तम हो।
4. मिथुन या मकर का मंगल सप्तम हो।

5. कुंभ या वृष का गुरू सप्तम हो। 6. कर्क या धनु का शुक्र सप्तम हो।
7. शनि मीन या मेष का सप्तम हो।

अतिकामुक

1. कन्या या सूर्य सप्तम हो। 2. पापयुक्त क्षीण चन्द्रमा सिंह का सप्तम हो।
3. वृष या धनु का मंगल सप्तम हो। 4. पापयुक्त बुध कर्क या तुला का सप्तम हो।
5. पापयुक्त वृहस्पति मकर का मेष का सप्तम हो। 6. पापयुक्त शुक्र मिथुन या वृश्चिक का सप्तम हो।
7. मीन या कुंभ का शनि सप्तम हो।

आज्ञाकारी, पतिव्रता/पत्नीव्रती

1. सूर्य वृष का चतुर्थ या वृश्चिक का दशम हो।
2. चन्द्र मेष का चतुर्थ या तुला का दशम हो।
3. मंगल मकर या सिंह का चतुर्थ अथवा कर्क या कुंभ का दशम।
4. बुध मीन या मिथुन का चतुर्थ अथवा कन्या या धनु का दशम।
5. गुरू धनु या कन्या का चतुर्थ अथवा मिथुन या मीन का दशम।
6. शुक्र कर्क या कुंभ का चतुर्थ अथवा मकर या सिंह का दशम में हो।
7. शनि तुला या वृश्चिक का दशम अथवा मेष या वृष का दशम में हो।

रोगी और क्रोधी

जातक की कुण्डली में निम्न योग होने पर पति या पत्नी रोगी और क्रोधी मिले-

1. शनि धनु या मकर का षष्ठ हो। 2. सूर्य कर्क का षष्ठ हो।
3. चन्द्रमा मिथुन का षष्ठ हो। 4. बुध वृष या सिंह का षष्ठ हो।
5. मंगल मीन या तुला का षष्ठ हो। 6. वृहस्पति वृश्चिक या कुंभ का षष्ठ हो।
7. शुक्र मेष या कन्या का षष्ठ में हो।

यवनाचार्य के मत से जातक स्वयं भी क्षय रोगी हो सकता है।

दुश्चरित्र

महर्षि लोमश जी ने निम्न योग होने पर पति (या पत्नी) का दुश्चरित्र होना कहा है-

अष्टम में सिंह का सूर्य, कर्क का चन्द्रमा, मेष या वृश्चिक का मंगल, मिथुन या कन्या का बुध, धनु या मीन का गुरू, वृष या तुला का शुक्र अथवा मकर का कुंभ का शनि।

सुरूप, अतिसुन्दर

1. सूर्य मेष का सप्तम या वृष का अष्टम हो। 2. चन्द्रमा मीन का सप्तम या मेष का अष्टम हो।
3. मंगल धनु या कर्क का सप्तम में अथवा मकर या सिंह का अष्टम हो।
4. बुध कुंभ या वृष का सप्तम में अथवा मीन या मिथुन का अष्टम हो।
5. वृहस्पति सिंह या वृश्चिक का सप्तम में अथवा कन्या या धनु का अष्टम हो।
6. शुक्र मकर या मिथुन का सप्तम में अथवा कुंभ या कर्क का अष्टम में हो।
7. शनि कन्या या तुला का सप्तम अथवा तुला या वृश्चिक का अष्टम में हो।

महर्षि गर्ग तथा यवनाचार्य ने निम्न योगों में भी सुन्दर, रूपवान पति/पत्नि प्राप्त होने को कहा है।

1. वृष का सूर्य सप्तम हो। 2. मेष का चन्द्र सप्तम हो।
3. मकर या सिंह का मंगल सप्तम हो। 4. मिथुन या मीन का बुध सप्तम हो।
5. धनु या कन्या का गुरू सप्तम हो। 6. कुंभ या कर्क का शुक्र सप्तम हो।
7. तुला या वृश्चिक का शनि सप्तम हो।

एकाधिक विवाह यौन सम्बन्ध योग

सामान्य द्विभार्या योग का अर्थ है एक से अधिक विवाह अथवा एक से अधिक यौन सम्पर्क। अनेक सम्प्रदायों में जहाँ एकाधिक या बहुविवाह की प्रथा प्रचलित है, वहां पर यह योग निश्चय ही शतप्रतिशत घटित होगें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ कि एक से अधिक विवाह शासन द्वारा निषिद्ध ठहरा दिया गया है, यह योग कितने सही उतरते हैं यह परीक्षा एवं अनुसंधान का विषय है। यह योग स्त्री तथा पुरूष दोनों पर समान रूप से मान्य होंगे। अब समाज में विधवा विवाहों को मान्यता मिलने लगी है, कुछ सम्प्रदायों एवं जातियों में तो स्त्रियों के पुनर्विवाह प्रत्यक्ष रूप से प्रचलित है ही। पुरूषों में भी शासन द्वारा स्थापित विधि के अनुसार एक ही विवाह मान्य होते भी, प्रथम पत्नि के निधन पर पुनर्विवाह होते ही हैं। वैवाहिक सम्बन्ध न होते भी समाज में गुप्त रूप से पर-स्त्री या पर-पुरूष से यौन सम्बन्ध होना भी कोई असम्भव नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन मौलिक ग्रंथों मे ऐसे योगों का वर्णन मुख्यत: महर्षि लोमश तथा यवनाचार्य के ग्रंथों में मिलता है। यहाँ पर ऐसे भी योगों की चर्चा कर रहे हैं। महर्षि लोमश जी ने एक से अधिक विवाह लग्नेश, धनेश, तृतीयेश, सप्तमेश, अष्टमेश और व्ययेश को कारण माना है। यवनाचार्य ने तृतीयेश व सप्तमेश को ही कारण माना है।

महर्षि लोमश जी ने द्विभार्या या बहुभार्या सूचक निम्न योग बतलाये है, अर्थात् निम्नांकित किसी एक योग के होने पर या तो एक से अधिक विवाह होते हैं अथवा एक से अधिक यौन सम्बन्ध होते हैं।

इन योगों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं :-

(A) ऐसे योग जिसमें कारण विशेष से एक से अधिक विवाह की सम्भावना होती है, लेकिन चरित्र दोष नहीं होता :-

1. सूर्य तुला का तृतीय हो।	2. सूर्य मकर का षष्ठ में हो।	3. सूर्य सिंह का द्वितीय में हो।
4. सूर्य मकर का लग्न में हो।	5. सूर्य कर्क का सप्तम में हो।	6. सूर्य धनु का चतुर्थ में हो।
7. चन्द्रमा कन्या का तृतीया हो।	8. चन्द्रमा धनु का षष्ठ में हो।	9. चन्द्रमा कर्क का द्वितीय में हो।
10. चन्द्रमा धनु का लग्न में हो।	11. चन्द्रमा मिथुन का सप्तम में हो।	12. चन्द्रमा वृश्चिक का चतुर्थ में हो।
13. मंगल मिथुन का तृतीय हो।	14. मंगल कन्या का षष्ठ में हो।	15. मंगल मेष का द्वितीय हो।
16. मंगल कन्या का लग्न में हो।	17. मंगल मीन का सप्तम में हो।	18. मंगल सिंह का चौथे हो।
19. मंगल मकर का तृतीय में हो।	20. मंगल मेष का षष्ठ में हो।	21. मंगल वृश्चिक का द्वितीय हो।
22. मंगल मेष का लग्न में हो।	23. मंगल तुला का सप्तम में हो।	24. मंगल मीन का चतुर्थ हो।
25. बुध सिंह का तृतीय हो।	26. बुध वृश्चिक का षष्ठ हो।	27. बुध मिथुन का द्वितीय हो।
28. बुध वृश्चिक का लग्न में हो।	29. बुध वृश्चिक का सप्तम में हो।	30. बुध तुला का चतुर्थ में हो।
31. बुध वृश्चिक का तृतीय हो।	32. बुध कुंभ का षष्ठ हो।	33. बुध कन्या का द्वितीय हो।
34. बुध कुंभ का लग्न में हो।	35. बुध सिंह का सप्तम हो।	36. बुध मकर का चतुर्थ हो।
37. वृहस्पति कुंभ का तृतीय हो।	38. वृहस्पति वृष का षष्ठ हो।	39. वृहस्पति धनु का द्वितीय हो।
40. वृहस्पति वृष का लग्न में हो।	41. वृहस्पति वृश्चिक का लग्न में हो।	42. वृहस्पति मेष का चतुर्थ हो।
43. वृहस्पति वृष का तृतीय हो।	44. वृहस्पति सिंह का षष्ठ हो।	45. वृहस्पति मीन का द्वितीय हो।
46. वृहस्पति सिंह का लग्न में हो।	47. वृहस्पति कुंभ का सप्तम में हो।	48. वृहस्पति कर्क का चतुर्थ हो।
49. शुक्र कर्क का द्वितीय हो।	50. शुक्र तुला का षष्ठ हो।	51. शुक्र वृष का द्वितीय हो।
52. शुक्र तुला का लग्न में हो।	53. शुक्र मेष का सप्तम हो।	54. शुक्र कन्या का चतुर्थ हो।
55. शुक्र धनु का तृतीय हो।	56. शुक्र मीन का षष्ठ हो।	57. शुक्र तुला का द्वितीय हो।

58. शुक्र मीन का लग्न में हो। 59. शुक्र कन्या का सप्तम हो। 60. शुक्र कुंभ का चतुर्थ में हो।
61. शनि मीन का तृतीय हो। 62. शनि मिथुन का षष्ठ में हो। 63. शनि मकर का द्वितीय हो।
64. शनि मिथुन का लग्न में हो। 65. शनि धनु का सप्तम हो। 66. शनि वृष का चतुर्थ में हो।
67. शनि मेष का तृतीय हो। 68. शनि कर्क का षष्ठ हो। 69. शनि कुंभ का द्वितीय हो।
70. शनि कर्क का लग्न में हो। 71. शनि मकर का सप्तम हो। 72. शनि मिथुन का चतुर्थ हो।

(B) इस वर्ग में ऐसे योग आते हैं, जिसमें या तो व्यक्ति के एक से अधिक विवाह हों, या एक से अधिक यौन सम्बन्ध हों।ऐये योगों में चरित्र दोष भी संभव है, गुप्त यौन सम्बन्ध हो सकते है :-

1. सूर्य सिंह का लग्न में हो। 2. सूर्य मीन का अष्टम हो। 3. सूर्य कन्या का तृतीय हो।
4. सूर्य तुला का चतुर्थ हो। 5. मकर का सूर्य सप्तम हो। 6. मिथुन का सूर्य लग्न में हो।
7. सूर्य सिंह का सप्तम हो। 8. सूर्य मीन का द्वितीय हो। 9. सूर्य कुंभ का लग्न में हो।
10. कर्क का चन्द्रमा लग्न में हो। 11. चन्द्र कुंभ का अष्टम हो। 12. चन्द्र सिंह का तीसरे हो।
13. चन्द्र कन्या का चतुर्थ हो। 14. चन्द्र धनु का सप्तम हो। 15. चन्द्र वृष का लग्न में हो।
16. कर्क का चन्द्र सप्तम हो। 17. कुंभ का चन्द्र द्वितीय हो। 18. मकर का चन्द्र लग्न में हो।
19. मंगल लग्न में मेष, तुला, वृष, कुंभ, कन्या या वृश्चिक हो।
20. मंगल अष्टम में वृश्चिक या मिथुन का हो।
21. मंगल तीसरे धनु, मेष, वृश्चिक या वृष का हो।
22. मंगल चौथे मिथुन या मकर का हो।
23. मंगल सप्तम में कन्या, वृश्चिक या मेष का हो।
24. मंगल द्वितीय में मिथुन या वृश्चिक का हो।
25. बुध लग्न में कन्या, मिथुन, मेष, कर्क, धनु या मीन का हो।
26. बुध अष्टम में मेष या मकर का हो।
27. बुध द्वितीय में मेष या मकर का हो।
28. बुध तृतीय में कर्क या तुला का हो।
29. बुध चतुर्थ में सिंह या वृश्चिक का हो।
30. बुध सप्तम में मिथुन, कन्या, वृश्चिक या कुंभ का हो।
31. वृहस्पति लग्न में धनु, मीन, मिथुन, कन्या, तुला या मकर का हो।
32. वृहस्पति अष्टम में कर्क या तुला का हो।
33. वृहस्पति द्वितीय में कर्क या तुला का हो।
34. वृहस्पति तृतीय में मकर या मेष का हो।
35. वृहस्पति चतुर्थ में वृष या कुंभ का हो।
36. वृहस्पति सप्तम में वृष, सिंह, धनु या मीन का हो।
37. शुक्र लग्न में वृष, तुला, मेष, वृश्चिक, सिंह या मीन का हो।
38. शुक्र अष्टम में वृष या धनु का हो।
39. शुक्र द्वितीय में वृष या धनु का हो।
40. शुक्र तृतीय में मिथुन या वृश्चिक का हो।
41. शुक्र चतुर्थ में कर्क या धनु का हो।
42. शुक्र सप्तम में तुला, मीन या वृष का हो।
43. शनि लग्न में मकर, कुंभ, वृश्चिक, धनु, कर्क या सिंह का हो।
44. शनि अष्टम में सिंह या कन्या का हो। 45. शनि द्वितीय में सिंह या कन्या का हो।
46. शनि तृतीय में कुंभ या मीन का हो। 47. शनि चतुर्थ में मीन या मेष का हो।
48. शनि सप्तम में मिथुन, कर्क, मकर या कुंभ का हो।

महर्षि लोमश के मत से - नवम में तुला का सूर्य, कन्या का चन्द्र, मिथुन या मकर का मंगल सिंह या वृश्चिक का बुध, कुंभ या वृष का गुरू, कर्क या धनु का शुक्र, मीन या मेष का शनि होने पर भी अन्यत्र यौन सम्बन्ध हो सकते हैं। किन्तु यवनाचार्य के मत से पति/पत्नी में विरोध रहता है।

सावधान :- जन्मपत्री में विद्यमान दूसरे योगों से इन योगों का निष्प्रभावी होना भी सम्भव हैं।

अत: अन्यान्य योगों का विचार भी साथ में होना आवश्यक है।

निम्न योग भी महर्षि लोमश जी के मतानुसार चरित्रहीनता एवं द्विभार्या सूचक है :-

1. कर्क का सूर्य बारहवें हो। 2. मिथुन का चन्द्र बारहवें हो।
3. मीन या तुला का मंगल व्यय में हो। 4. वृष या सिंह का बुध व्ययस्थ हो।
5. गुरू वृश्चिक या कुंभ का व्यय में हो। 6. शुक्र मेष या कन्या का व्यय में हो।
7. शनि मकर या धनु का व्यय में हो।

परस्त्री/परपुरूषगामी योग

महर्षि लोमश ने निम्न योगों को चरित्र सम्बन्धि दुर्बलता का सूचक कहा है। परस्त्री/परपुरूष सम्बन्ध हो सकता है:-

1. तुला का सूर्य अष्टम हो। 2. कन्या का चन्द्र अष्टम हो।
3. कुंभ का सूर्य द्वादश हो। 4. मकर का चन्द्र द्वादश हो।
5. मिथुन का या मकर का मंगल अष्टम हो। 6. सिंह या वृश्चिक का बुध अष्टम हो।
7. तुला या वृष का मंगल व्ययस्थ हो। 8. धनु या मीन का बुध व्ययस्थ हो।
9. कुंभ या वृष का गुरू अष्टम हो। 10. मिथुन या कन्या का गुरू द्वादश हो।
11. कर्क या धनु का शुक्र अष्टम हो। 12. वृश्चिक या मेष का शुक्र द्वादश हो।
13. मेष या मीन का शनि अष्टम हो। 14. कर्क या सिंह का शनि द्वादश हो।

पत्नी/पति हन्ता योग

पुरूष की कुण्डली में निम्न योग होने पर पत्नी को अरिष्टकारक तथा पत्नी की कुण्डली में होने पर पति को अरिष्टकारी योग बनता है:-

1. कुंभ का सूर्य सप्तम हो। 2. मकर का चन्द्र सप्तम हो।
3. वृष या तुला का मंगल सप्तम हो। 4. मीन या धनु का बुध सप्तम हो।
5. मिथुन या कन्या का गुरू सप्तम हो। 6. मेष या वृश्चिक का शुक्र सप्तम हो।
7. कर्क या सिंह का शनि सप्तम हो।

दाम्पत्य सम्बन्ध विच्छेद योग

वैवाहिक जीवन में सुख शान्ति एवं समन्वय के लिए मंगल तथा तत्समान पापग्रहों का विचार तो किया ही जाता है लेकिन इसके साथ ही सप्तम भाव, सप्तमेश की स्थिति और सप्तम भाव पर शुभ पाप-दृष्टियों का तुलनात्मक विचार आवश्यक है।

महिलाओं के जन्म पत्र में ''अष्टमं पति सौभाग्य'' के अनुसार ''अष्टम भाव का'' की विचार वांछनीय है लेकिन पुरूषों के जन्म पत्र में सप्तम भाव ही मुख्य विचारणीय होता है। पति (पुरूष) के जन्मपत्र में सप्तमेश की स्थिति ठीन न होने पर पत्नि तेज स्वभाव तथा गर्वीली मिलती है और दाम्पत्य जीवन संतोषजनक नहीं होता है। ऐसा ही फल

गुण मिलान का आधार

गुण मिलान का आधार प्रीति जसमें जन्म नक्षत्र चन्द्र राशि की प्रधानता है। ज्योतिष में दस प्रकार की 'प्रीति'का वर्णन है।

पुंजी वर्गस्तथा वर्ण वश्यं ताराध योनिजा ।ग्रहमैत्री गणौ राशेर्भ नाड़ी हीति वैदश ।। (मु.गण.)

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्य ग्रहमैत्रकम् ।गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः ।।(मु.सं.)

युंजा, वर्ग, वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकुट और नाड़ी ये दस प्रकार की प्रीति होती है ।जिसमें से युंजा, वर्ग को छोड़कर शेष आठ क्रमशः एक-एक गुध अधिक हैं। अर्थात् वर्ण के ९, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के 5, गण के 6, भकूट के 7, नाड़ी के 8 गुण है। इस प्रकार कुल 36 गुण है। 18 या इससे अधिक गुण मैत्री उत्तरोत्तर शुभ मानी गई है।

गुण मिलान वर-कन्या के विवाह में तथा गुरू-शिष्य, मंत्र-साधक, देवता-पूजक में नाड़ी विचार, साझेदारी व्यवसाय में गण, तारा व भकूट मिलान, स्वामी सेवक में वर्ग तथा नाड़ी विचार आवश्यक समझने चाहिये।

अष्टकूट परिहार

१. वर्ण (परस्पर कार्यक्षमता)
- (क) वर-कन्या के राशिपतियों या नवमांशपतियों की मैत्री या एकता हो।
- (ख) वर के राशिपति का वर्ण कन्या के राशिपति के वर्ण से उत्तम हो।

२. वश्य (परस्पर सम्बन्ध
- (क) वर-कन्या के राशिपतियों या नवांशपतियों की मैत्री या एकता हो।
- (ख)वर-कन्या की योनि मैत्री हो।

३. तारा (एक-दूसरे को समझने की शक्ति)
- (क) वर-कन्या के राशिपतियों या नवांशपतियों की मैत्री या एकता हो।

४. योनि (एक-दूसरे का विवेक संतुलन)
- (क) वर-कन्या के राशिपतियों या नवांशपतियों की मैत्री या एकता हो।
- (ख) वर-कन्या की वश्य वृद्धि हो।
- (ग)वर-कन्या की भकूट शुद्धि हो।

५. राशिपति (परस्पर प्राकृतिक स्वभाव)
- (क)वर-कन्या के राश्पितियों में या नवांशपतियों में मैत्री या एकता हो।
- (ख)भकूट दोष न हो।

६. गण (एक-दूसरे की अभिरूचि)
- (क)वर-कन्या के राशिपतियों या नवांशपतियों की एकता या मैत्री हो।
- (ख)भकूट दोष न हो।
- (ग)वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।

७. भकूट (एक-दूसरे की जीवन शैली, व्यवहार)
- (क)वर-कन्या के राशिपतियों या नवांशपतियों की एकता या मैत्री हो।
- (ख)उक्त परिहार के साथ तारा शुद्धि, वश्य शुद्धि में से कोई एक अवश्य हो।
- (ग)सत्कूट-दुष्टकूट विचार

शुभ नवपंचम राशियां		१-५, २-६, ३-७, ५-९, ७-११, ८-१२, १-९, १०-२
मध्यम नवपंचम राशियां	-	४-८, ६-१०, ११-३, १२-४
प्रीति षड़ाष्टक राशियां	-	१-८, २-७, ३-१०, ४-९, ५-१२, ६-११
मृत्यु षड़ाष्टक राशियां	-	१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२
शुभ द्विर्दादश राशियां	-	१२-१, २-३, ४-५, ६-७, ८-९, १०-१२, (अपवाद ५-६)
अशुभ द्विर्दादश राशियां	-	१-२, ३-४, ७-८, ९-१०, ११-१२
वैरप्रद सम सप्तक	-	४-१०, ५-११ राशियां
वैरप्रद सम सप्तक	- -	४-१०, ५-११ राशियां
अशुभ चतुर्थ-दशम राशियां-		२-४

८. नाड़ी (एक-दूसरे का शारीरिक सम्बन्ध तथा संतति पक्ष)
- (क) वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।
- (ख) वर कन्या का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों।
- (ग) वर-कन्या दोनों का नक्षत्र एक तथा चरण भिन्न-भिन्न हों।

द्वादश-नाड़ी चक्र (पादवेध विचार)

आद्य नाड़ी	अश्विनी १	आर्द्रा १	पुनर्वसु १	उ.फा. १	हस्त १	ज्येष्ठा १	मूल १	शतभिषा १	पू.भा. १
आद्य नाड़ी	अश्विनी २	आर्द्रा २	पुनर्वस २	उ.फा. २	हस्त २	ज्येष्ठा २	मूल २	शतभिषा २	पू.भा. २
आद्य नाड़ी	अश्विनी ३	आर्द्रा ३	पुनर्वसु ३	उ.फा. ३	हस्त ३	ज्येष्ठा ३	मूल ३	शतभिषा ३	पू.भा. ३
आद्य नाड़ी	अश्विनी ४	आर्द्रा ४	पुनर्वसु ४	उ.फा. ४	हस्त ४	ज्येष्ठा ४	मूल ४	शतभिषा ४	पू.भा. ४
मध्य नाड़ी	भरणी १	मृगशिरा १	पुष्य १	पू.फा. १	चित्रा १	अनुराधा १	पू.षा. १	धनिष्ठा १	उ.भा. १
मध्य नाड़ी	भरणी २	मृगशिरा २	पुष्य २	पू.फा. २	चित्रा २	अनुराधा २	पू.षा. २	धनिष्ठा २	उ.भा. २
मध्य नाड़ी	भरणी ३	मृगशिरा ३	पुष्य ३	पू.फा. ३	चित्रा ३	अनुराधा ३	पू.षा. ३	धनिष्ठा ३	उ.भा. ३
मध्य नाड़ी	भरणी ४	मृगशिरा ४	पुष्य ४	पू.फा. ४	चित्रा ४	अनुराधा ४	पू.षा. ४	धनिष्ठा ४	उ.भा. ४
अन्त्य नाड़ी	कृतिका १	रोहिणी १	आश्ले. १	मघा. १	स्वाति १	विशाखा १	उ.षा. १	श्रवण १	रेवती १
अन्त्य नाड़ी	कृतिका २	रोहिणी २	आश्ले. २	मघा. २	स्वाति २	विशाखा २	उ.षा. २	श्रवण २	रेवती २
अन्त्य नाड़ी	कृतिका ३	रोहिणी ३	आश्ले. ३	मघा. ३	स्वाति ३	विशाखा ३	उ.षा. ३	श्रवण ३	रेवती ३
अन्त्य नाड़ी	कृतिका ४	रोहिणी ४	आश्ले. ४	मघा. ४	स्वाति ४	विशाखा ४	उ.षा. ४	श्रवण ४	रेवती ४

जब दोनों इस चक्र में एक नाड़ी में पड़े तथा ऐसा नाड़ीवेध सर्वथा त्जाज्य है। पादवेध प्रथम चरण का चतुर्थ चरण से परस्पर तथा द्वितीय चरण का तृतीय चरण से परस्पर होता है।

सारांश :- मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि में बताये गये नाड़ी दोष परिहार (क) दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु राशियों भिन्न-भिन्न हों (ख) दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों। (ग) दोनों की राशि एक हो किन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों। इन तीनों को मूल रूप से स्वीकार कर लेना चाहिये। जहाँ इन तीनों परिहारों में से कोई एक भी परिहार लागू न हो वहाँ पादवेध उक्त द्वादश नाड़ी चक्र में देखना चाहिये। वर-कन्या का जन्म नक्षत्र व चरण एक ही लाइन (बाये से दायें)में हो तो नाड़ी दोष होगा।

१. वर्ग प्रीति :- अपने नामाक्षर से अपना वर्ग जानकर अपने वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु, चौथा मित्र, तीसरा सम जानें। वर-कन्या का एक वर्ग हो तो पूर्ण प्रीति, मित्र संज्ञक हो तो प्रीति, सम हो तो साधारण प्रीति तथा शत्रु वर्ग हो तो अशुभ जानें।नामाक्षर से वर्ग ज्ञान कोष्ठक पंचांग में अवकहड़ा वाले पृष्ठ पर दिया गया है।

१०. युंजा प्रीति :- पंचांग में अवकहड़ा कोष्टक पृष्ठ पर युंजा प्रत्येक नक्षत्र का दिया गया है। वर-कन्या की एक युंजा प्रीतिदायक होती है। पूर्व भाग की युंजा हो तो पति श्रेष्ठ, मध्य भाग की युंजा हो तो कन्या श्रेष्ठ अन्त्य भाग की युंजा हो तो दोनों श्रेष्ठ, पूर्व भाग की कन्या अन्त्य भाग का वर हो तो कन्या को पति प्रिय इस प्रकार युंजा का फल जानें।

११. नृदूर दोष :- भामिनि जन्म नक्षत्रा द्वितीयं पति जन्मभम् ।न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ।।
कन्या के जन्म नक्षत्र से वर का जन्म नक्षत्र दूसरा हो तो नृदूर दोष होता है। यह महा अशुभ है। वर-कन्या की राशि एक तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक राशियां भिन्न-भिन्न हो तो नृदूर दोष का परिहार हो जाता है। वर-कन्या के राशिपतियों की मैत्री या एकता नवमांश पति की मैत्री या एकता या योनि शुद्धि से भी नृदूर दोष का परिहार हो जाता है।

मांगलिक दोष विचार :- वर-कन्या की जन्म कुण्डली, चन्द्र कुण्डली में तथा शुक्र से १,४,७,८,१२ वें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह (सूर्य,शनि,राहू,केतु) स्थित हो और वह क्रूर ग्रह अस्तगंत, नीच या शत्रुराशिस्थ, निर्बल, पापकर्त्तरी योग में हो मंगलीक दोष प्रबल होता है।मंगलीक दोष दाम्पत्य जीवन के लिये अशुभ होता हैं।

१. वर्णगुणज्ञानचक्र
(परस्पर कार्यक्षमता)

वर	वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र
कन्या	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शुद्र	१	१	१	१

२. वश्यगुणज्ञानचक्र
(परस्पर प्रीति संबंध)

वर	वश्य	चतुष्पद	नर	जलचर	वनचर	कीट
कन्या	चतुष्पद	२	१	१	॥	१
	नर	१	२	१	०	०
	जलचर	१	॥	२	१	२
	वनचर	०	०	२	२	०
	कीट	१	०	१	०	०

३. तारागुणबोधकचक्र
(परस्पर समझने की शक्ति)

वर	तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
कन्या	१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

ताराज्ञानसूत्र-

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गणना करें। अलग-अलग दोनों में १ के भाग से शेष ३, ४, ७ बचते तारा अशुभ। शेष अंक १, २, ४, ६, ८, ० में शुभ अर्थात् ३ गुण की मान्यता।एक तारा शुभ एक अशुभ डेढ़ गुण।

४. योनिगुणज्ञानचक्र (परस्पर बौद्धिक सम्बन्ध)

वर	योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिषी	व्याघ्र	मृग	वानर	नकूल	सिंह
कन्या	अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
	गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
	मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
	सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
	मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
	मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
	गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
	महिषी	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
	व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
	मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
	वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२	३
	नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

गुणैक्य-चिन्तन

वर्णादि अष्टकूटों के प्रतिज्ञाक्रमानुसार गुणों का योग ३६ होता है। सम्पूर्ण कूटों का पृथक-पृथक अथवा गुण-सम्पात कोष्ठक के द्वारा विचार करने पर प्राप्त गुण-योग १६ तक तुच्छ, २० तक मध्यम, ३० तक उत्तम तथा ३१ से ३६ तक सर्वोत्कृष्ट मेलापक समझना चाहिये।उक्तं च-

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमं विंशतिस्तथा।
श्रेष्ठं त्रिंशदगुणं यावत्परतस्तुत्तेमोतम्॥ -ज्योतिर्निबन्ध

परन्तु सामान्यतः 18 गुणों से अधिक की प्राप्ति में मेलापक ग्राह्य समझा गया है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥- मुहूर्त्त गणपति

एक ही वर को दो कन्याएँ प्रदान न करें।प्रदुक्तम्-

प्रत्युद्वाहो नैव कार्योनैकस्मै दुहितृद्वयम्॥

दो सहोदर वरों के साथ दो सहोदर कन्याओं का विवाह कदानि न करें-

नैवेकजन्ययोः पुंसोरेकजन्ये तु कन्यके॥

शुल्क लेकर कन्या-दान सर्वथा वर्ज्य है-

अल्पेनापि हि शुल्केन पिता कन्यां ददाति यः।
रौरवे बहुवषाणि पुरीषं मूत्रमश्नुते॥ -आपस्तमबस्तृति

५. ग्रहमैत्रीगुणचक्र (परस्पर प्रकृति स्वभाव)

	ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
कन्या	सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
	चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
	मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
	बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
	बृहस्पति	५	४	५	॥	५	॥	३
	शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
	शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

६. गणमैत्रीगुणज्ञानचक्र
(परस्पर अभिरूचि)

	गण	देव	नर	राक्षस
कन्या	देव	६	५	१
	नर	५	६	०
	राक्षस	१	०	६

७. नाड़ीगुणज्ञानचक्र
(शारीरिक संबंध तथा संतति)

	नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
कन्या	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

७. राशिकुटगुणज्ञानचक्र (परस्पर दैनिक जीवनचर्या)

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
कन्या	मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
	वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
	मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
	कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
	सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
	कन्या	.०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
	तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
	वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
	धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
	मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
	कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
	मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ॐ वरवधु मेलापक सारिणी ॐ

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वेद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।
संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्व शुभं तत्स्मृति १८ सोऽधिकं यत्।।

भाग १

राशि			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
राशि	वर / कन्या	नक्षत्राचार	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो	क की	कू घ ड. छ	के को हो	ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो	रा री	रू रे रो ता	ती तू ते	तो	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे	भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी	गू गे	गो सा सी सू	से सो दा	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
	नक्षत्राचार		अ४	भ४	कृ१	कृ३	रो४	मृ२	मृ२	आ४	पु३	पु१	पु३	श्ले४	म४	पू४	उ१	उ३	ह४	चि२	चि२	स्वा४	वि३	वि१	अनु४	ज्ये४	मू४	पू४	उ१	उ३	श्र४	ध२	ध२	श४	पू३	पू१	उ४	रे४
मेष	चू चे चो ला	अ ४	२८ ३	३३	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२४ +४	१५॥ ३५	११ ३६	१ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६	१३ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४ ३४	२४- +४	२६ +४
	ली लू ले लो	भ ४	३४	२८ ३	२१ ०१	१९ ०४१	२२॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० -१५	१८ ३४	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ -१	१७॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० -१	२४ -२	२२॥ +२४	१७- ३४	२६॥ +४
	अ	कृ १	२७॥	१९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १२४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३४	२० १५	२० १५	२५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	२५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३ १३	११ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९- १४	११॥ ३४
वृष	इ उ ए	कृ ३	१८॥ ४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० १३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	ओ वा वी वू	रो ४	२३॥ -४	२३॥ ४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० -२५	१९ -१६	१५॥ ३६	९- ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १	१९ ६	११॥ ३२६	१६ ३५२	१७ ३५	२० -१५	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	वे वो	मृ २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६॥ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	३७
मिथुन	क की	मृ २	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	२४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२० +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७- ३	२६॥
	कू घ ड. छ	आ ४	१९ ३	२७	२२ १	१८॥ +१४	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ३०	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२८ १	२८ -१५	२७ +५	२१ +१५	१४॥ १६	१७ २६	३ १३२६	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६-	२६॥
	के को हा	पुन ३	२० ३	२७	२३	२२॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ -३४	२२॥ ४०	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	ही	पुन १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	२५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२० +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	हू हे हो डा	पुष्य ३	३०॥	२९॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१७ +५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ १३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	डी डू डे डो	श्ले ४	२६॥	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० +५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५	२१ १५	१३ ३५
सिंह	मा मी मू मे	मघा ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२९॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ +२४	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ -१६	१९- १६	१३ ३६
	मो टा टी टू	पूफा ४	२६ +५	१८ ३५	२० -२५	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ +२४	१७॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२२ ०४	२२॥ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ +१५	२७ ३५	२४ +५	२७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७- ३६	२५॥ -६
	टे	उफा १	१६ ३५	२६ +५	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	२७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ -१४	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२४ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६- -६	२५॥ -६
कन्या	टो पा पी	उफा ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ +१५	२६ +५	२४ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ +१२	१६॥ १२४	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ +१५	१६॥ -१६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८-	२७॥
	पू ष ण ठ	हस्त ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ ५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२०॥ ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ -६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६-	२७॥
	पे पो	चित्रा २	१३ ६	५ २३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२७ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२ ४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	१९ ३	२५	२८	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०- १३२	१९॥

सारीणी सप्टता यह कि उपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र तथा वाम (बायीं) खडी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र दिये हैं। गुण संख्या उपरी भाग में तथा नीचे दी गयी संख्या में दोषो का संकेत चिन्ह हैं। दोषों की चिन्ह संख्या में गण दोष के लिये १, नाडी दोष के लिये ३, भकूट दोष (षडाष्टक) के लिये ६, नवपंचम के लिये ५, द्विर्दादश के लिये ४, वैर योनि के लिये २, नृदूर दोष (वर के नक्षत्र से पहले वधु का नक्षत्र होना) के लिये ० अंक हैं। जहां अल्प दोष हैं वहां - का चिन्ह तथा पूर्ण दोष का निर्वाह होने पर + का चिन्ह हैं। जहां कोई दोष नहीं हैं वहां केवल गुण संख्या दी गयी हैं। नाडी दोषस्तु विप्राणां वर्ण दोषस्तु क्षत्रिणः। गण दोषस्तु वैश्यानां योनि दोषस्तु पादजान्।। (शीघ्रबोध)

वरवधु मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पाश्वेद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।
संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्व शुभं तत्स्मृति १८ सोऽधिकं यत्।।

भाग २

राशि	राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
राशि	वर / कन्या	नक्षत्राचार	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो	क की	कू घ ङ छ	के को हो	ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो	रा री	रू रे रो ता	ती तू ते	तो	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे	भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी	गू गे	गो सा सी सू	से सो दा	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
	नक्षत्राचार		अ४	भ४	कृ१	कृ३	रो४	मृ२	मृ२	आ४	पु३	पु१	पु३	श्ले४	म४	पू४	उ१	उ३	ह४	चि२	चि२	स्वा४	वि३	वि१	अनु४	ज्ये४	मू४	पू४	उ१	उ३	श्र४	ध२	ध२	श४	पू३	पू१	उ४	रे४
तुला	रा री	चि२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ ५	२०॥	११॥ ३	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३- ४	२५॥ -६	१४ ३६	२८	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	२१- १६	३॥ ६२१३	१२॥ ६
	रू रे तो ता	स्वा४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	२३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१॥ +४	२८	२८ ३	२० ३०	९ ३४०	१७॥ ३६	१९॥ -१६	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० +५२	२४ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	ती तू ते	वि३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -१६	१९॥ +५	२१ १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	२७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१९॥ -६	२५॥ -६	२८	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	तो	वि१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१३॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२४॥	३०॥	२२॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२४॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	ना नी नू ने	अनु४	२४॥ -६	२५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०	२९॥	२५	२५	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२९॥	२३॥ १	२५॥ +२४	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	नो या यी ये	ज्ये४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१२६	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	२६॥ १३	१२ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१-	२१॥ ३	२४॥	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९- १३४	२१ १५	२१ +५
धनु	ये यो भा भी	मु४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२७	२१	२६	२३- +४	११ ३६	१४ ६	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ २४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	भू धा फा ढा	पु४	२६ +५	१८ ३५	१८ १२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२७॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७- -१४	१७ २६	३ १३२६	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	भे	उ१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२७	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२७॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	२३ २३	९- १३४	२१॥ ६	७ ३६	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	भो जा जी	उ३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ १३५	२२॥ +२५	२० +२६	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ -५	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१३ ३१	१३ ३१	२६ +५	११॥ ३५	१६ १४	२३॥ ४	१८॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ १	१७ +१४	१७ +१४	२३ +४	३०-	३०॥	२२॥ ३
	खी खू खे खो	श्र४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	२८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१४ ३	१४ ३	१८ ३५	२१ -५	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ -०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८-	२९॥	२२॥ ३
	गा गी	ध२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	८॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२६	२६	२० +५	२६ -५	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ ३४	२६- १	२५॥ १३	२२॥ +२
कुंभ	गू गे	ध२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१८ १५	१७॥ +६५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२५	२५	२५॥	३३	२९॥	२५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	११॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	गो सा सी सू	श४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ १३६	२५ ३	२६ +५	१९ +५	२६॥	२६-	२३॥ ३	२५॥ -१	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०१३	८- १३४०	१७ १४	१६ ४
	से सो दा	पु३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४॥ +५	१७ ३५	१७ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	२५॥ +३६	२७॥ १६	१८॥ -१५	२६ +५	२०॥ १	२०- १	३१॥	१७॥ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	२७- ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	दी	पु१	१४॥ ३४	२१॥ +४२	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	२७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१९ -१५	१९ -१५	२७	१३ १३	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२४॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	१८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	दू थ झ ञ	उ४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	२८ ३	२७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	१७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ ३२१६	१९॥ ६	१८ १५२	१८ १५२	२६	१३ ३	२४ -१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	२४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	दे दो चा ची	रे४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	२७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	२०॥ ३५	१०- ३५	१९ ३	२५	२६॥	२९	२१	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९- +२	३४	२८ ३

सारीणी सप्टता यह कि उपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र तथा वाम (बायीं) खडी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र दिये हैं। गुण संख्या उपरी भाग में तथा नीचे दी गयी संख्या में दोषो का संकेत चिन्ह हैं। दोषों की चिन्ह संख्या में गण दोष के लिये १, नाडी दोष के लिये ३, भकूट दोष (षडाष्टक) के लिये ६, नवपंचम के लिये ४, द्विर्दादश के लिये ४, वैर योनि के लिये २, नृदूर दोष (वर के नक्षत्र से पहले वधु का नक्षत्र होना) के लिये ० अंक हैं। जहां अल्प दोष हैं वहां - का चिन्ह तथा पूर्ण दोष का निर्वाह होने पर + का चिन्ह हैं। जहां कोई दोष नहीं हैं वहां केवल गुण संख्या दी गयी हैं। नाडी दोषस्तु विप्राणां वर्ण दोषस्तु क्षत्रिण:। गण दोषस्तु वैश्यानां योनि दोषस्तु पादजान्।। (शीघ्रबोध)

संदिग्ध व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र

व्रत का महत्व

वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छचान्द्रायणादिभि।
शरीरशोष्णं यत् तत् तप इत्युच्यते बुधै।।

व्रत एक प्रकार का तप है । इससे मानव की लौकिक एवं परलौकिक (आध्यात्मिक) उन्नति होती है । व्रत से पापादि की निवृति होती है । व्रत से शरीर तप कर शुद्ध हो जाता है । फलस्वरूप रोग निरोधक क्षमता, मानसिक शक्ति, बृषि चतुरता, उत्साह एवं शारीरिक शक्तिबढती है। आराध्यदेव के प्रसन्न होने से जीवन काल में मनोकामनाएँ पूर्ण होती है एवं शरीर त्यागने के बाद सद्गति प्राप्त होती है।

व्रती के गुण

निजवर्णाश्रमाचार, निरतः शुद्ध मानसः।
अलुब्धः सत्यवादी च, सर्वभूतहिते रतः।।
पूर्व निश्चयमाश्रित्य, यथावत् कर्मकारकः।
अवेदनिन्दको धीमानधिकारी व्रतादिशु।।

स्कंद पुराण के अनुसार जो अपने वर्णाश्रम के आचार-विचार से रहते है, निष्कपट, निर्लोभी सत्यवादी, सब प्राणियों पर दया भाव रखने वाले, वेद के अनुयायी, बुद्धिमान एवं निश्चयकर्मी ऐसे गुणवान पुरूष, स्त्री व्रत करने योग्य होते है ।

व्रत प्रारम्भ समय एवं उद्यापन

अस्तेगते च गुरौ शुक्रे, बाले वृद्धे मलिम्लूचे।
उद्यापनमुपारम्भं, व्रतानां नैव कार्येत्।(गर्ग)
सौम्यवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धदा (रत्नमाला)
हस्तमैत्रमृगपुष्यत्रयुतरा अश्विपौष्णशुभयोगसौख्यदाः।
(मुक्तक संग्रह)
कुर्यादुद्यापनं चैव समाप्तौ यदुदीरितम्।
उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्।(नंदिपुराण)।

गुरू एवं शुक्र के उदय होने रहने पर भद्रादि कुयोग एवं मलमास त्याग रक, शुभ वारों में, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में, शुभ योगों में व्रत प्रारंभ करने पर या उद्यापन करने पर मनोकामना पूर्ण होकर सुख मिलता है।

व्रत भंग कब होता है ?

1. क्रोधात् प्रमादाल्लोभद् वा व्रतभंगो भवेद्।(गरूड पुराण)
2. असकृज्जलपानाश्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात्।
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्य मैथुनात्।।(विष्णु पुराण)

विभिन्न पुराणों के अनुसार दिन में सोने से, बार-बार जल पीने से, तांबुल (पान) चबाने से, स्त्री सहवास करने से, क्रोध, लोभ, हिंसा इत्यादि मनोविकार उत्पन्न होने से, अयोग्य हविष्य खाने पर व्रत भंग हो जाता है।

व्रत भंग कब नहीं होता ?

अष्टौ तान्य व्रतध्नानि, आपो मूलं फलं पयः।
हविर्ब्राम्हण काम्या च, गुरोर्वचनमौषधम्।।(पद्म पुराण)

जल, फल, मूल, दूध, हवि, ब्राह्मण की इच्छा, ओषणी और गुरू (पूज्य जनों) के वचन, इन आठ से व्रत भंग नहीं होता है।

व्रत पर्व उपयोगी काल प्रमाण

व्रत, उत्सव एवं त्योहार के दिन के निर्णय में तिथि, नक्षत्र, योग, करण एवं कर्मकाल इत्यादि के संयोग का विचार करना होता है। कुछ प्रमुख व्रत-पर्वों का निर्णय आगे दिया जा रहा है, जिनमें शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दों का अर्थ पहले जान लेना आवश्यक है जो कि इस प्रकार है

दिन : आज के सूर्योदय से कल के सूर्योदय तक एक दिन होता है। एक दिन में ६० घटि (२४ घंटे) होते है। एक दिन में ८ प्रहर होते है। एक प्रहर ३ घंटे का होता है।

दिनमान एवं रात्रिमान : सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिनमान होता है। ग्रीष्म ऋतु में दिनमान ३० घटि से अधिक और शीत ऋतु में ३० घटि से कम होता है। दिनमान अक्षांश भेद से विभिन्न स्थानों पर पृथक-पृथक होता है। ६० घटि में से दिनमान घटाने पर रात्रिमान होता हैं।

मुहूर्त : दिनमान या रात्रिमान का १५वां भाग एक मुहूर्त होता है। अतः एक दिनमान में १५ मुहूर्त होते है। यदि दिनमान ३० घटि हो तो एक मुहूर्त दो घटि यानि ४५ मिनट का होगा। सूर्यादय से तीन मुहूर्त तक प्रातःकाल, तीन मुहूर्त से ६ तक संगवकाल, ६ से ९ मुहूर्त तक मध्याह्नकाल, ९ से १२ तक अपराह्नकाल, १२ से १५ मुहूर्त तक सायंकाल होता है। इस प्रकार दिनमान में ३-३ मुहूर्त के ५ भाग होते है।

ऊषाःकाल : सूर्योदय से तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घटि या २ घंटा २४ मिनट पहले से ऊषाःकाल लग जाता है। यहां रात्रिमान का १५वां भाग लेना चाहिए।

अभिजित् काल : दिनमान का आठवां मुहूर्त अभिजित कहलाता है। यह मध्यान्ह्काल से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

प्रदोषकाल : प्रदोषो अस्तमया दूर्ध्व, घटिका द्वयमिष्यते।(माधव)

सूर्यास्त से एक मुहूर्त यानि दो घटि अथवा ४५ मिनट तक प्रदोषकाल होता है। मतान्तर से तीन घटि तक भी प्रदोषकाल कहा गया है।

निशीथ काल : ठीक अर्धरात्रि का समय निशीथकल कहलाता है। रात्रिमान का आठवां मुहूर्त निशीथ कहलाता है। यह अर्धरात्रि से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

पूजन अर्चन काल : पूर्वान्हो दैविकः कालो मध्यान्हश्चापि मानुषः।
अपरान्हः पितृणां सु मायान्हो राक्षसः स्मृतः।।(महर्षि व्यास)

प्रातःकाल देवों का, मध्यान्ह मनुष्यों का, अपरान्ह पितरों का एवं सायंकाल राक्षसों का समय है। अतः यथा योग्यकाल में दानादि से यथोचित फल मिलता है।

कर्म काल तिथि : कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः।
तया कर्मणि कुर्वीत ह्रासवृद्धि न कारणम्।। (वृद्ध याज्ञवल्यक्य)

जिस व्रत उपवास या पर्व संबंधी कर्म के लिए शास्त्रों में जो समय नियत है, उस समय यदि व्रत की तिथि मौजुद हो तो उसी दिन व्रत संबंधी कार्य ठीक समय पर करना चाहिए।

तिथियों के प्रकार

१. अखंडा एवं खंडा तिथि : जो तिथि सूर्योदय से सूर्यास्त तक व्याप्त रहे वह अखंड और जो सूर्योदय से दोपहर (दिनमान के आधे भाग) तक न रहे वह खंडा तिथि होती है। खंडा तिथि में व्रत पारंभ या उद्यापन नहीं करना चाहिए।

२. पूर्वा विद्धा : आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे है यदि वह तिथि पिछली तिथि से पिछले दिन संयुक्त हाकर आई हो तो आज की तिथि पूर्व विद्धा कहलाती है। उदाहरण के लिये आज मंगलवार को सूर्योदय के समय एकादशी तिथि है, पिछले दिन (सोमवार को) पिछली (दशमी तिथि) रात १ बजे तक थी और एकादशी लग गई थी। यानि की दोनो तिथियां पिछली दिन रात १ बजे संयुक्त थी। अतः यहां एकादशी पूर्व विद्धा कहलायेगी। यह तिथि आने वाले अगले सूर्यदिय के पहले ही समाप्त होती है। **३. पराविद्धा :** आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे हैं यदि वह तिथि अगली आने वाली तिथि से अगले आने वाले दिन संयुक्त हो तो आज की तिथि परा विद्धा कहलाती है। यह तिथि आने वाले अगले सूर्योदय के बाद समाप्त होती है।

४. युक्ता तिथि : किसी एक दिन एक तिथि समाप्त होती है उसी समय दूसरी तिथि प्रारंभ होती है ऐसी स्थिति में दोनों तिथियां परस्पर युक्ता तिथियां होती हैं। उपरोक्त उदाहरण में सोमवार की रात्रि में १ बजे दशमी तथा एकादशी संयुक्त होने से हम यह कहेंगे कि सोमवार को दशमी तथा एकादशी युक्ता तिथियां हैं। **५. शुद्धा तिथि**-सूर्योदयारंभ पुनः सूर्योदयपर्यन्ता शुद्धा तिथिनिर्णय अर्थात जो तिथि सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक रहे वह शुद्धा होती है, अतः स्पष्ट है कि, जो तिथि वृद्धि को प्राप्त होती है, केवल वही शुद्धा हो सकती है, अन्य सब विद्धा होती हैं।

संदिग्ध व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र

कालचक्र व्यवस्था के अनुसार व्रत-पर्व के प्रकार

1. मासिक व्रत-पर्व- अधिकमास स्नान, वैशाख स्नान सर्वत्र, कार्तिक स्नान पुष्कर क्षेत्र, माघ स्नान अवघ या प्रयागराज क्षेत्र। यह व्रत श्री विष्णु भगवान को समर्पित हैं।

2. प्रत्येक पक्ष की विशिष्ठ तिथियों में किये जाने वाले व्रत संकष्ट चतुर्थी, एकादशी एवं प्रदोष व्रत पाक्षिक व्रत हैं।

3. वार्षिक पर्व : - होली दिवाली इत्यादि।

प्रत्येक पक्ष की विशिष्ठ तिथियों में किये जाने वाले व्रत

१. **संकष्टचतुर्थी व्रत** यह व्रत सभी मासों में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि २ दिन चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी हो तो प्रथम दिन व्रत करना चाहिए। यदि कोई संकट का समय चल रहा हो या किसी संकट आने की संभावना हो तब विघ्न विनाशक श्री गणेश को समर्पित व्रत किया जाता है।

२. **एकादशी व्रत** यह व्रत सभी महीनों के दोनों पक्षों की एकादशी तिथियों को किया जाता है। एकादशी में दशमी का वेध देखा जाता है। वेधकाल को लेकर विभिन्न मत हैं। कोई पहले दिन की ३४ घटि दशमी को त्यागते हैं तो कोई ४५ घटी। इस पंचांग में यदि दशमी ४५ घटि से कम हो तो एकादशी सभी मतों- की होती है और यदि दशमी ४५ घटि या उससे अधिक हो तो स्मार्त उस दिन एकादशी को व्रत करते हैं एवं वैष्णव संप्रदाय का व्रत अगले दिन होता है। यदि एकादशी का क्षय हो तो त्रिस्पर्शस्या उपवास निषेधात् सूत्र के अनुसार आने वाले दिन (पर दिवसे) एकादशी व्रत सबका होगा।

३. **प्रदोष व्रत** - यह व्रत महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशी को भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। इसका समय सूर्यास्त से एक मुहुर्त (दो घटि) रात्रि तक है। कृष्ण पक्ष में परविद्धा प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ली जाती है और शुक्ल पक्ष में पूर्व विद्या (शुक्ल त्रयोदशी पूर्वा परा कृष्ण त्रयोदशी)।

वर्ष में एक बार (वार्षिक)व्रतोत्सव

प्रमुख व्रत, पर्व और उत्सवों के समय निर्णय हेतु शास्त्रीय विवेचन यहां दिया जा रहा है।

नूतन संवत्सर

चैत्रे सितप्रतिपदि यो बारो ऽकोंदये स वर्षेशः ।
उदयद्वितीये पूर्वी नोदयुगलेऽपि पूर्वः स्यात् ।। (ज्योतिर्निबन्ध)

जिस दिन सूर्योदय के समय चौत्र शुक्ल प्रतिपदा हो उस दिन ही संवत्सर उत्सव एवं पूजन होता है। यदि दो दिन ऐसा हो तो पहले दिन संवत्सर मनाना चाहिए। यदि चौत्र अधिमास हो तो शुद्ध मास में संवत्सर पर्व होता है।

नवरात्र

१. प्रतिपत्सम्मुखी कार्या या भवेदापरास्यिकी। (स्कन्द पुराण)
२. अमायुक्ता न कर्तृतव्या प्रतिपत् पूजने मम। (देवी भागवत)
३. भास्करोदयामारभ्य यावत्तु दश नाडिकाः।
प्रातः काल इति प्रोक्तः स्थापनारोपणादिषु (विष्णुधर्म)
४. सम्पूर्णा प्रतिपद्धयेव चित्रायुक्ता यदा भवेत्।
वैधृत्या वापि युक्ता स्यात् तदा माध्यन्दिने रवौ।
अभिजित मुहूर्त यत् तत्र स्थापनमिष्यते (रुद्रयामल)।
५. प्रातरावाहयेद् देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्।
प्रातः प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत।। (देवी पुराण)
६. यत्र क्षयवशादमा युक्तैव लभ्यते, न द्वितीया युता। (तिथि चिंतामणि)
७. दिन द्वये तद् व्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वेव ग्राह्या। (निर्णय सिन्धु)।

भावार्थ- चौत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, एक वर्ष में चार नवरात्र पर्व होते हैं।

१. नवरात्र प्रतिपदा सम्मुखी शुभ होती है।
२. जिस दिन अमावस्या के बाद प्रतिपदा हो अतः उस दिन प्रतिपदा अमावस्या युक्ता होने से देवी पूजन प्रारंभ नहीं करना चाहिए। ३. सूर्योदय से दश घटी (चार घंटा) तक प्रातः काल में घट स्थापना शुभ होती है। ४. यदि प्रातः काल में चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग हो तो उस समय घट स्थापना न करें। यदि उस दिन चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग रात्रि तक रहे तो अभिजित मुहूर्त में स्थापन करें। ५. देवी का आवाहन, प्रवेशन, नित्य पूजन और विसर्जन ये सब प्रातः काल में करना चाहिए। ६. यदि प्रतिपदा तिथि क्षय हो तो अमावस्या युक्ता प्रतिपदा को ही घट स्थापना करना चाहिए। ७. यदि प्रथमा तिथि वृद्धि हो तो प्रथम दिन घट स्थापन करना चाहिए।

गणगौर :

माधव के अनुसार मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतंपरा पराविद्धा तृतीया ग्रहण करना चाहिए।

दुर्गाष्टमी

अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभिः।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)। एवं धर्मसिन्धु।

जिस दिन नवमी युक्ता अष्टमी अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल (संयुक्त) हो उस दिन शुभ फल की कामना करने वालों को दुर्गा पूजन करना चाहिए।

श्रीराम नवमी

१. चैत्र शुक्ल नवम्यां पुनर्वसुयुतायां मध्यान्हे कर्क लग्न राश्यां श्री राम जन्मः।

भावार्थ- जिस दिन मध्यान्ह काल में चौत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं पुनर्वसु नक्षत्र हो उस समय रामनवमी व्रतोत्सवादि करना चाहिए।

२. अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभिः।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)।

भावार्थ- जिस दिन अष्टमी विद्धा अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल हो उस दिन मध्यान्ह काल में राम नवमी पूजन-व्रत करना चाहिए, परन्तु जिस दिन नवमी में दशमी का वेध हो उस दिन वर्जित है।

३ दिन द्वये मध्यान्हव्यास अव्याप्तौ वा परा, अष्टमी विद्धाया निषेधात्। (धर्म सिन्धु)।

भावार्थ यदि चैत्र शुक्ल नवमी दोनों दिन मध्यान्हकाल में व्याप्त हो तो दूसरे दिन रामनवमी उत्सव मनाना चाहिए।

अक्षय तृतीया

१. वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षया तृतीयोच्यते सा पूर्वान्हे व्यापिनी ग्राह्या (निर्णय सिन्धु)।

भावार्थ जिस दिन पूर्वान्हकाल में वैशाख शुक्ल तृतीया हो उस समय अक्षय तृतीया पर्व होरा है।

२. द्वेधा विभक्त दिन पूर्वाद्धक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्। त्रिमुहूर्तधिक व्याप्ति सत्ये परा (धर्म सिन्धु)।

भावार्थ यदि तृतीया दोनों दिन पूर्वान्हकाल में ही तो ५ घटी से अधिक व्याप्त की स्थिति में दूसरे दिन लें और यदि कम हो तो पहले दिन ही तृतीया पर्व होता है।

परशुराम जयंती

वैशाखस्य सिते पक्षे, तृतीयायां पुनर्वसी निशायां प्रथमे यामे, रामाख्याः समये हरिः।।

जिस दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से १ घटि के मध्य तृतीया तिथि हो उस दिन परशुराम जयंती मनाना चाहिए।

गंगा सप्तमी (गंगा गमन मेखलाम्)

वैशाख शुक्ल सप्तमी मध्यान्ह व्यापिनी लेना चाहिए। यदि दो दिन हो तो पहले दिन गंगा पूजन करना चाहिये।

संदिग्ध व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र

नृसिंह
जयंती वैशाखे शुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां निशा मुखे ।
मज्जन्म संभवं पुण्यं व्रतं पाप प्रणाशनम् ।।
हेमाद्री एवं नृसिंह पुराण के अनुसार जिन दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से १ घटि तक) वैशाख शुक्ल चतुर्थी हो उस दिन नृसिंह जयंती मनाना चाहिए। यदि यह स्थिति दोनों दिन हो तो दूसरे दिन व्रतादि उत्सव मनाना चाहिए।

कदली व्रत
इस व्रत का वर्णन हेमाद्री ग्रंथ में है। यह व्रत वैशाख, माघ और कार्तिक मास में से किसी भी मास में चतुर्दशी के दिन किया जा सकता है। यह विशेष रूप से गुजरात में किया जाता है। वैशाख, माघ या कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में जिस दिन पूर्वान्हकाल में चतुर्दशी हो उस दिन यह व्रत होता है।

रम्भातीज व्रत
ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जिस दिन पूर्व विद्धा तिथि हो उस दिन यह व्रत किया जाता है। पूर्व विद्धा से तात्पर्य यह है कि जिस दिन सूर्योदय से पहले ही तृतीया प्रारंभ हो चुकी हो। पिछले वार में ही पूर्व वाली तिथि (द्वितीया) का संगम हो ।

गंगा दशहरा
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशभ्यां बुध हस्तयोः ।
व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषो रवौ ।
दशयोगे नरः स्वात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। (स्कन्द पुराण) ।
ज्येष्ठे मलमासे सति तन्नैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे। (निर्णय सिन्धु) ।
ज्येष्ठ मास में शुक्ल दशमी के समय हस्त नक्षत्र, बुधवार, व्यतिपात योग, गर करण, आनन्द योग, वृषस्थ रवि और कन्या के चंद्र हो तो यह दुर्लभ योग में गंगा स्नान या पूजनादि करने से दश प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है। उपरोक्त योगों में से जिस समय अधिक से अधिक योग हों उस समय का यह पूजन करना चाहिए। यदि ज्येष्ठ अधिमास हो तो अधिमास में ही यह पूजन पुण्यदाई होती है।

रथयात्रा जगन्नाथपुरी
यह अद्भुत रथ यात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया एवं पुष्य नक्षत्र सुयोग में होती है।

गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा
यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण करना चाहिए। ऐसा दो दिन होने पर दूसरे दिन ग्रहण करना चाहिए।

अथैव व्यास पूजोक्त । तत्रा त्रिमुहूर्ता चेत्परैवेति सन्यास पद्धती। त्रिमुहूर्ताधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौर प्रमाणयो। (निर्णय सिन्धु) ।
जिस दिन आषाढ़ पूर्णिमा कम से कम तीन मुहूर्त (६- घटि) व्याप्त रहे उस दिन व्यास पूजा का विधान है।

कजली तृतीया (श्रावण की)
तृतीया श्रावण कृष्णा या स्वाच्छ्रवण संयुता।
तस्यां सम्पूज्य गोविन्दं, तुष्टिमग्रथामवाप्नुयात्।। (हेमाद्री एवं विष्णुधर्मोत्तर) ।
श्रावण कृष्ण तृतीया को श्रवण नक्षत्र के योग में विष्णू पूजन-व्रत किया जाता है। इसमें परविद्धा तिथि ग्राहय होती है पर तिथि से तात्पर्य चतुर्थी तिथि है।

शीतला सप्तमी
हेमाद्री एवं भविष्य पुराण के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण कृष्ण सप्तमी को मध्यान्ह व्यापिनी तिथि में शीतला देवी का पूजन किया जाता है।

दूर्वा गणपति पूजन
सौर पुराण के अनुसार श्रावण शुक्ल पक्ष में मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में यह पूजन होता है।

नाग पंचमी
श्रावण शुक्ल पक्ष में पराविद्धा पंचमी को सर्प नाग पूजन का विधान है। मदनरत्त के अनुसार, पंचमी नाग पूजायां कार्या षष्ठी समन्विताः ।

रक्षाबंधन
भविष्योत्तर पुराण एवं मदनरत्न के अनुसार रक्षाबंधन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा की होता है। इसमें अपरान्ह व्यापिनी तिथि ली जाती है यानि जिस दिन पूर्णिमा ॉ७ घटी से १३ घटी तक या इससे अधिक समय तक व्याप्त रहे उस दिन रक्षाबंधन पर्व मनाना चाहिए। यदि ऐसी स्थिति दो दिन हो तो पहले दिन रक्षाबंधन सूत्र बांधना चाहिए। याद रखें कि उस समय भद्राकाल नहीं होना **चाहि भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा ।**

कजली तृतीया (भाद्रपद कृष्ण पक्ष में)
यह तृतीया व्यापकरूप में मनाई जाती है। माहेश्वरी वैश्य समाज में इस व्रत को सातूड़ी तीज अथवा सतवा तीज कहा जाता है।

चन्द्रषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)
भविष्यपुराण के अनुसार भाद्रपद कृष्ण पक्ष षष्ठी को चन्द्रोदय के समय चन्द्र को अर्घ्य दिया जाता है। चन्द्रमा के उदयकाल में षष्ठी का होना आवश्यक है। यह पूर्व युक्ता लेना चाहिये।

हलषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)
परायुक्ता षष्ठी में हरछठ व्रत का विधान है। अर्थात् जिस दिन षष्ठी एवं सप्तमी युक्त हो उस दिन यह व्रत करना चाहिये।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)
विष्णूपुराण, शिवपुराण, ब्रम्हपुराण, भविष्यपुराण इत्यादि के अनुसार भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय हुआ था। अधिकांश उपासक उपरोक्त योगों का मेल अपने-अपने तरीके से ग्रहण करते है इससे इस व्रत को लेकर सर्वाधिक मतभेद सामने आते हैं। शास्त्रों में इसके शुद्धा, सप्तमी विद्धा, नवमी विद्धा, समा, न्यूना, अधि इत्यादि से अठारह प्रकार के भेद हैं। श्री कृष्ण की जन्म स्थली मथुरा-वृन्दावन में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव व्रतादि प्रायः उदयकालिक अष्टमी (नवमी युक्ता अष्टमी) में ही मनाया जाता है। यह वैष्णव मत भी है।

हरितालिका तीज व्रत - (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)
मुहूर्तमात्र सत्वे ऽपि दिने गौरीव्रतं परेति ।
माधवोक्त जिस दिन केवल एक मुहूर्त भी तृतीया हो उस दिन परायुक्ता तृतीया में हरितालिका व्रत करना चाहिये।

ऋषि पंचमी व्रत
भाद्रपद शुक्लपक्ष पंचमी । माधव के अनुसार, पूजावतेषु सर्वेषु मध्यानव्यापिनी तिथिरिति । दिनद्वये मध्यानव्याप्ता व्याप्तौ वा पूर्वेव सूत्र के अनुसार मध्यानव्यापिनी पंचमी को व्रत करना चाहिए। यदि दो दिन मध्याहन व्यापिनी हो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

संदिग्ध व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र

गणेश चतुर्थी व्रत (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

कृत्यरत्नावली के अनुसार श्री गणेश का जन्म भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्यान्ह में हुआ था। अतः मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में श्री गणेश स्थापन एवं पूजन करना चाहिए। यदि दोनों दिन मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी हो तो पहले दिन स्थापन-पूजन करना चाहिए। इस दिन रात्रि में चन्द्रदर्शन कर लेने से मिथ्या कलंक लगता है, ऐसी मान्यता है। उसके निवारण के लिए भागवत पुराण में उल्लेखित स्यमन्तक की कथा सुनना या पढ़ना चाहिए।

अनन्त चतुर्दशी (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

माधव के अनुसार, द्विमुहूर्त व्याप्तौदायिकी ग्रात्योति। जिस दिन सूर्योदय के पश्चात कम से कम दो मुहूर्त अथवा ३ घटी चतुर्दशी हो उस दिन अनन्त भगवान का पूजन व्रत करना चाहिए।

पितृपक्ष (महालय)

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक सोलह दिन पितरों का तर्पण एवं विशेष दिन श्राद्ध करने का शास्त्रीय विधान हैं, इससे पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है व घर में सुख-शांति बढ़ती है। श्रुति के अनुसार पूर्वान्हो वै देवानां मध्यान्हो मनुष्याणमपरान्हः पितृणाम् । अर्थात अपरान्ह पितरों का समय होता है। इसलिए जिस तिथि को श्राद्ध दिन हो, यदि वह तिथि अपरान्ह व्यापिनी हो तब श्राद्ध करना चाहिए। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि ॉ७ घटि से १३ घटि के बीच व्याप्त रहने वाली तिथि में उस दिन संबंधित तिथि श्राद्ध होता है। यदि उस दिन ॉ७ घटी से १३ घटी के बीच दो तिथियां व्याप्त हों तो दोनों तिथियों का श्राद्ध उसी दिन करना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी दिन सूर्योदय के समय सप्तमी तिथि है तथा पंचांग में उस तिथि का समाप्तिकाल ॉ७ घटी २ॉ पल लिखा है तो सप्तमी अपरान्ह व्यापिनी है तथा अष्टमी भी इसलिए दोनों तिथियों के श्राद्ध एक ही दिन होंगे। अतः उस दिन सप्तमी के साथ-साथ अष्टमी का भी श्राद्ध होगा।

सन्यासियों का श्राद्ध द्वादशी को करना चाहिए।

युद्ध या दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त का श्राद्ध चतुर्दशी को करना चाहिये।

महालक्ष्मी व्रत

आश्विन कृष्ण अष्टमी को चंद्रोदय व्यापिनी तिथि में व्रत का विधान है।

विजया दशमी

शमी पूजा यात्रादौ नक्षत्रोदय व्यापिनी दशमी ग्राह्या।
नवमीशेष युक्तयां दशम्यायम पराजिता ।
ददाति विजयं देवी पूजित जयवर्द्धिनी । (रत्नकोष)

अर्थात जिन दिन श्रवण नक्षत्र के प्रारंभ के समय दशमी तिथि व्याप्त हो उस दिन युद्ध में विजय की कामना रखने वाले राजा की विजय होती है। यदि श्रवण नक्षत्र न मिले तो नवमी दशमी युक्ता दिवस में विजया दशमी मनाना चाहिए।

शरद पूर्णिमा

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को गोदुग्ध की खीर का अर्धरात्रि के समय आराध्यदेव को भोग लगाया जाता है व अगले दिन उसे प्रसाद रूप में उसका भोजन किया जाता है। शरद पूर्णिमा का कर्मकाल रात्रि है अतः कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः । सूत्र के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथ दोनों में होने वाली पूर्णिमा ली जाती है। यदि पहले दिन व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

करवाचौथ

(कार्तिक कृष्ण पक्ष) इस दिन सौभाग्वती महिलाएं दिनभर व्रती रहकर चन्द्रोदय के बाद अन्न-जल ग्रहण करती हैं, इसलिए इस व्रत का कर्मकाल चन्द्रोदयकाल होता है। अतरू कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालवयापिनीतिथिः । नियम के अनुसार इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी के दिन व्रत रखा जाता है। यही निर्णय धर्मसिन्धु में भी है।

गोवत्स द्वादशी

कार्तिक कृष्ण पक्ष। **वत्सपूजा वटश्चौव कर्तव्यौ प्रथमऽहनि** के अनुसार इसमें प्रदोष व्यापिनी पहले दिन की द्वादशी तिथि लेना चाहिए। सायंकाल में गाय एवं बछड़ों का पूजना करना चाहिए।

धनत्रयोदशी, यम दीपदान

यह त्रयोदशी प्रदोष व्यापिनी शुभ होती है। यदि वह दो दिन हो या न हो, दोनों स्थितियों में दूसरे दिन की तिथि ली जाती है।

रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी

इसमें पहले दिन की चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि ली जाती है (निर्णय सिन्धु)

दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन

1. प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी मुख्या एकैक व्याप्तौ परैव (निर्णय सिन्धु) ।

प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या के दिन श्री महालक्ष्मी का पूजन शुभ है। इसमें प्रदोकाल का विशेष महत्व है। यदि दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन को रात्रि में लक्ष्मी पूजन शुभ होता है (तदा विहाय पूर्वेद्युः परेऽन्हि सुखरात्रिका निर्णय सिन्धु)

यमद्वितीया

कार्तिक शुक्ल द्वितीया। यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्व विद्धा शुभ होती है (यमद्वितीया मध्यान्हव्यापिनी पूर्वविद्धा चेति हेमाद्रिः।-निर्णय सिन्धु) ।

आंवला नवमी

नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिणा ।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु दाचन ।। (हेमाद्रि, देवी पुराण)

कार्तिक शुक्ल नवमी। इसमें पूर्वान्ह व्यापिनी तिथि लेना चाहिए। यदि वह दो दिन हो या न हो तो पूर्व विद्धा लेना चाहिए।

बैकुण्ठ चतुर्दशी

कार्तिक शुक्ल अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी को ब्रह्म मुहूर्त में पूजन एवं व्रत करन चाहिए (तिथि निर्णयः)

दत्त जयंती

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा जिस दिन प्रदोष व्यापिनी हो उस दिन दत्त जयंती मनाना चाहिए। (तिथि निर्णयः) ।

वसंत पंचमी

माघ शुक्लपक्ष पंचमी। इस दिन पूर्वविद्धा पंचमी को श्रीगणेश एवं सरस्वतीजी का पूजन किया जाता है।

महाशिवरात्रि

फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी। जैसा कि शिवरात्रि के नाम से संकेत है कि इस व्रत का पूजन कर्मकाल रात्रि है। अतः

'कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः ।'

नियम के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथकाल में व्याप्त पूर्वविद्धा चतुर्थी ली जाती है। पूर्व विद्धा चतुर्दशी लेने का कारण यह है कि शिवरात्रि का पारण चतुर्दशी में ही करना चाहिए। (तिथ्यन्ते पारणं कुर्याद् बिना शिव चतुर्दशीम्)।

संदिग्ध व्रत-पर्व-त्योहार निर्णय सूत्र

होलिका दहन (फाल्गुन पूर्णिमा)

१. प्रदोष व्यापिनी ग्राहया पूर्णिमा फाल्गुनी सदा निशागमे तु पूज्येत् होलिका सर्वतोमुखः (नारदपुराण)।
२. दिनद्वये प्रदोषे चेत् पूर्णा दाहः परेऽहनि (स्मृतिसार)
३. भद्रायां न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा (स्मृत्यन्तर)।
४. तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे (पृथ्वीचन्द्रोदय)।
५. पूर्णिमायाः पूर्वे भागे चतुर्थप्रहरस्य पंचपटीमध्ये भद्राया मुखं जेयम् (ज्योतिर्निबन्ध)।
६. पृथिव्यां यानि कार्यापि शुभानि वयशुभानि च ।
तानि सर्वाणि सिद्धयन्ति विष्टिपुच्छे न संसयः ।। (आचार्य लल्ल)
७. प्रतिपद्भूतभद्रासु याचिंता होलिका दिवा ।
संवत्सरं तु तदाष्ट्रं पुरं दहति साद्भुताम्। (चन्द्रप्रकाश)।
८. दिनार्थात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि रात्री भद्रावसाने तु होलिका तंत्र पूजयेत् ।।(भविष्यपुराण)।
९. दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा सा भद्रा भद्रादा यस्माद् भद्रा कल्याणकारिणी।।(ज्योतिषतत्व)।
१०. ग्रहणशुद्ध खात्वा कर्मणि कुर्वीत श्रुतमन्नं विसर्जयेत्। (स्मृतिकौस्तुभ)।
११. स्पष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्जयेन्मले (धर्मसार)।

अर्थात होलिका दहन का कर्मकाल रात्रि है, इसलिए प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा के समय होलिका दहन करना चाहिए। यदि दोनों दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा व्याप्त हो तो दूसरी लेना चाहिए। यदि प्रदोषकाल में भद्रा हो तो मुख की घटी त्यागकर प्रदोषकाल में होलिका दहन करना चाहिए। पूर्णिमा के दिन तीसरे चौथे प्रहर की आदि को ४ घटी भद्रा का मुख होता है, अतः उक्त समय में भद्रा के रहते होलिका दहन निषेध है। भद्रा का पुच्छकाल शुभ होता है। पूर्णिमा के दिन भद्रा का पुच्छकाल तीसरे प्रहर का अंतिम २ घटी में होता है। (विशेष सूचना भद्रा के मुख पुच्छ प्रकरण में प्रहर की गणना सूर्योदय से न होकर तिथि के आरंभकाल से होती है।) दिन के समय, प्रतिपदा को चतुर्दशी को या भद्राकाल में होलिका दहन करने पर वहां के राज्य, नगर और नागरिक विचित्र उत्पातों से एक वर्ष में नष्ट हो जाते हैं। यदि दोपहर पश्चात पूर्णिमा प्रारंभ हुई हो अर्धरात्रि तक भद्रा रहती है अतः तत्पश्चात सूर्योदय के पहले तक होलिका दहन करना चाहिए। यदि पहले दिन रात भर भद्रा रहे और दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा मौजूद हो उस समय चंद्रग्रहण हो तो पहले दिन ही सूर्यास्त के बाद होलिका दहन कर देना चाहिए, क्योंकि पूर्णिमा में पूर्वार्ध की भद्रा रात्रिकाल में शुभ कही गई है। यदि दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा हो और भद्राकाल समाप्त होने वाला हो, परन्तु चंद्रग्रहण हो तो ग्रहण के शुद्धिकाल उपरांत स्नान करके होलिका दहन कर देना चाहिए। यदि फाल्गुन अधिमास हो तो शुद्ध मास (दूसरे फाल्गुन) की पूर्णिमा को होलिका दहन करना चाहिए।

❊ ग्रहण विवेचन ❊

इस संवत् २०८३ के अंतर्गत भूमण्डलीय ग्रहण गणना नियामक से ४ ग्रहण का प्रारूप गणितागत प्राप्त हो रहा है, इनमें से दो सूर्य ग्रहण तथा दो चन्द्र ग्रहण होंगे। भारतीय भू–भाग में दोनों सूर्य ग्रहण तथा एक चन्द्र ग्रहण दृश्य नहीं होगा एक मान्द्य चन्द्रग्रहण दृश्य होगा। भारत में अदृश्य ग्रहण हेतु वेध, सूतक, स्नान, दान, पुण्य, कर्म, यम, नियम एवं जप अनुष्ठान हेतु मान्यता नहीं होगी। इसी विषय में धर्मशास्त्रीय वचन विशेष यह है कि **द्विपांतरे ग्रहण सत्वेऽपिदर्शन योग्यत्वायान्न पुण्यकालः ।।**

१. **खग्रास सूर्य ग्रहण** – संवत् २०८३ श्रावण कृष्ण पक्ष ३० बुधवार दिनांक १२.८.२०२६ ई. को खग्रास सूर्यग्रहण होगा। इसका भारतीय समय से स्पर्श २१।०४ बजे, मध्य २३।१६ बजे, मोक्ष २५।२८ बजे होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होंगे। इससे भारत में इसका किसी भी प्रकार का यम–नियम–सूतक–दान पुण्य आदि मान्य नहीं होगा। यह ग्रहण नॉर्थ अटलांटिक, लेब्राडोर, वेस्टर्न शहर, मोरक्को, पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस, आस्ट्रिया, जर्मनी, आयरलैण्ड, यूनाईटेड किंगडम, डेनमार्क, पौलेण्ड, नॉर्वे, फिनलैण्ड, स्वीडन, आइसलैण्ड, ग्रीनलैण्ड तथा इसका समुद्री क्षेत्र, कनाडा, आर्कटिका क्षेत्र, पूर्वी साइबेरियन समुद्र आदि में दृश्य होगा।

२. **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** – संवत् २०८३ श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार ता. २८.८.२०२६ ई. को खंडग्रास चन्द्रग्रहण होगा। इसका भारतीय समय से स्पर्श ८।०४ बजे, मध्य ९।४३ बजे, मोक्ष ११।२२ बजे होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा इससे भारत में इसका किसी भी प्रकार का यम–नियम–सूतक–दान–पुण्य आदि मान्य नहीं होंगे। यह ग्रहण दक्षिणी तथा दक्षिण पश्चिमी ग्रीनलैण्ड, लेब्राडोर, ऐसालैण्ड, पुर्तगाल, मोरक्को, वेस्टर्न शहर, दक्षिणी अमेरिका, अटलांटिक महाद्वीप, क्यूबा, मेक्सिको आदि में दृश्य होगा।

३. **कंकणाकृति सूर्यग्रहण** — संवत् २०८३ माघ कृष्ण पक्ष ३० शनिवार ता. ६.२.२०२७ ई. को कंकणाकृति सूर्यग्रहण होगा। इसका भारतीय समय से स्पर्श १८।२८ बजे, मध्य २१।३० बजे, मोक्ष २४।३२ बजे होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा इससे भारत में इसका किसी भी प्रकार का यम–नियम–सूतक–दान–पुण्य आदि मान्य नहीं होंगे। यह ग्रहण दक्षिणी नॉर्थ अटलांटिक, वेस्टर्न शहर, मोरक्को, पुर्तगाल, आर्कटिका क्षेत्र, घाना, नामीबिया, दक्षिणी अफ्रीका, गुयाना, पेरू, बोलिविया, पेरूग्वे, चिले, अर्जेंटीना, साउथ पेसिफिक आदि में दृश्य होगा।

४. **मान्द्य चन्द्रग्रहण** — संवत् २०८३ माघ शुक्ल पक्ष १४ शनिवार ता. २०.२.२०२७ ई. को मान्द्य चन्द्रग्रहण होगा। इसका भारतीय समय से स्पर्श २६।४२ बजे, मध्य २८।४३ बजे, मोक्ष ३०।४३ बजे होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में बरेली, इटावा, झाँसी, ललितपुर, सागर, सतपुरा नेशनल पार्क, अमरावती, यवतमाल, नांदेड़, बीडर, रायचूर, बलारी, मैसूर, थ्रीसूर, कोच्चि आदि से पूर्व में तथा सम्पूर्ण पूर्वी भारत में दृश्य होगा। चूंकि यह उपच्छाया (प्रतिच्छाया) ग्रहण है इससे इसका किसी भी प्रकार का यम–नियम–सूतक–दान–पुण्य आदि मान्य नहीं होंगे। यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका, कनाड़ा, मेक्सिको, क्यूबा, नाइजीरिया, दक्षिणी अमेरिका, आर्कटिक महाद्वीप, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, मंगोलिया, मध्य–पूर्वी रूस, चीन, बर्मा, थाईलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, कोरिया, जापान, नॉर्थ साउथ पेसिफिक समुद्र आदि में दृश्य होगा।

ग्रहण श्रवण फल — पंचांग में लिखे हुए ग्रहण सम्बंधी नाना प्रकार के भेदों सहित फलों का विधान श्रवण करने से गंगा में स्नान करने के समान फल प्राप्त होता है और ग्रहण के निमित्त से जगत में होने वाली सुवृष्टि, अनावृष्टि, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष तथा हरएक वस्तु की तेजी–मन्दी आदि फेरफार को पहिले से जानकर व्यापार द्वारा बहुत से धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

मांगलिक कार्यो में त्याज्य २१ दोष

१. **पंचांग शुद्धि का अभाव** - इसका विवरण विवाह मुहूर्त् पृष्ठों पर दिया गया है।

२. **संक्रान्ति दिन एवं पुण्यकाल** - जब कोई ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उसी का नाम संक्रांति हैं। परन्तु केवल सूर्य द्वारा राशि परिवर्तन करने की घटना के दिन का नाम संक्रांति ही लोक व्यवहार में प्रसिद्ध है। मकर संक्रांति के एक दिन पहले से एक दिन बाद अर्थात् तीन दिन त्याज्य है। अन्य संक्रान्तियों में संक्रांति दिन ही त्याज्य हैं।पुण्यकाल - यदि सूर्यास्त के बाद कर्क या मकर संक्रांति (अर्की) हो तो दुसरे दिन स्नान-दान पुण्यकाल होता है। मेष, वृषादि अन्य संक्रांतियों में अर्की १६ घटी पहले से १६ घटी बाद तक पुण्यकाल होता है। परिहार - कोई परिहार नहीं।

3. पाप षड्वर्ग में लग्न- १. होरा, २ . देष्काण, ३. सप्तमांश, ४. नवमांश, ५. द्वादशांश एवं ६. त्रिशांश, को षड्वर्ग कहते हैं। यदि लग्न इन षड्वर्गों में से अधिकांश पाप ग्रहों के घर में में हो तो यह दोष होता है। परिहार सूर्य चन्द्र बली लग्न से दोष परिहार हो जाता है।

4. पाप नवांश दोष - यदि लग्न किसी पाप ग्रह के नवांश में हो तो यह दोष होता है। परिहार -यदि बुध, गुरु शुक्र में से कोई केन्द्र-त्रिकोण में हो तो नवांशजन्य दोष निवार्य हो जाता है।

५.६. **लग्न से छटें शुक्र व अष्टम मंगल लग्न से छठें, आठवें शुक्र एवं अष्टम् भाव में मंगल अत्यंत दोष कारक कहा गया है**- छटें, आठवें शुक्र का परिहार- नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेपि वा भृगु षट्कोत्थितो उदोषो नास्ति तत्र न संसयः।। भावार्थ- यदि शुक्र नीच, शत्रु क्षेत्री, या अस्त हो तो षष्टम अष्टम दोष नहीं होता है। अष्टम मंगल का परिहार- अस्तगे नीचगे भौमे शत्रु क्षेत्रेगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते।। भावार्थ- यदि मंगल नीच, शत्रु क्षेत्री, या अस्त हो तो अष्टम भौम दोष नहीं होता है।

७. **लग्न कर्तरी दोष**- यदि लग्न के पहले वाली राशि में मार्गी एवं वाद वाली राशि में वक्री पाप ग्रह हों तो वे लग्न को केंची की तरह काटते हैं, इसलिए इसे लग्न कर्तृतरी दोष कहा जाता है। परिहार - यदि कर्तृरी दोष कारक ग्रह नीच, शत्रुक्षेत्री, या अस्त हो तो कर्तृी दोष का परिहार हो जाता है। इसके अलावा यदि बुध, गुरु शुक्र में से कोई केन्द्र त्रिकोण में हो तो कर्तृरी दोष का निवारण हो जाता है।

८. **जन्म राशिसे अष्टम लग्न त्याज्यं चाष्टम् लग्नमेव जननाल्लग्ननाच्च राशेस्तयोः** । (पूर्वकालामृत) जन्म राशि से अष्टम लग्न मुहूर्त शास्त्रों में अत्यंत अशुभ कही गई है। अथवा अष्टमेश लग्न में हो तो अत्यन्त अशुभ होता है।

९. **जन्म राशि से अष्टम चन्द चन्द्रोऽप्यष्टमराशिगस्तदुभयोर्नित्यं दरिद्रप्रदः**। (पूर्वकालामृत) जन्म राशि से अष्टम चन्द्रमा मुहूर्तृत शास्त्रों में अशुभ कहा गया है।

१०. **त्रिकूमत चंद्र लग्नाद्द्वादशगेऽथवा रिपुगते चन्द्रेऽष्टस्थे तदा।रिः फाष्टारिंगचन्द्रनामक महादोषस्तयोर्मृत्युकृत्** (पूर्वकालामृत) यदि लग्न चन्द्रमा छठे, आठवें या भाव में हो तो यह महादोष होता है। परिहार- नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेपि वा चन्द्रे षष्टारि रिफस्थे दोषो नास्ति न संशया।। भावार्थ- यदि चंद्रमा नीच, शत्रुक्षेत्री, या अस्त हो तो पष्टम- द्वादस दोष नहीं होता है।

११ **संग्रह चन्द्र दोषः सग्रहनामको निधनकृच्चन्द्रे ग्रहेणान्विते।दोषो नेति परे जगुः सौम्यग्रहेणान्विते** ।। विवाह कालीन चन्द्रमा के साथ कोई ग्रह हो तो संग्रह चन्द्र दोष होता है। कुछ आचार्यों के मत से शुभ ग्रह युति दोष कारक नहीं होती है। प्रमाण पाप युक्त नक्षत्र के साथ दिए जा रहे हैं।

१२. **दुर्मुहूर्त् इसका वर्णन आगे मुहूर्तृत परिशिष्ठ खांड में देखें परिहार**- लग्न शुद्धि अर्थात्, गुरु शुक्र या बुध के केन्द्र त्रिकोणस्थ होने पर, रवियोग या अमृत- सर्वार्थ सिद्धि योग होने पर दोष नष्ट हो जाता है।

१३. **खार्जूल (एकार्गल) दोष** इसका वर्णन पिछले पृष्ट पर विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है। परिहार यह दोष कश्मीर क्षेत्र में वर्जित कहा गया है।

१४. **ग्रहण दूषित** नक्षत्र सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय जो नक्षत्र होता है, वह ग्रहण के कारण दूषित हो जाता है। सम्पूर्ण आधा अथवा चौथाई ग्रास होने पर क्रमशरू ग्रहण के दिन से आगे के ५ मास, २ मास, १ मास तक मांगलिक कार्यों में वर्जित कहा गया है। परिहार- यदि पूर्ण चन्द्र उस नक्षत्र को भोग ले तो उससे आगे के समयमें दोष नहींहोता है।

१५. **उत्पात दूषित नक्षत्र**- धूम्रकेतु के उदय में ओले गिरने में, राष्ट्रीय विपत्ति में, भूकंप, विशाल उल्कापात या अन्य आकाशीय उत्पात, अति तूफान, अति वर्षा (वाढ) इत्यादि के जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र को समस्त मांगलिक कार्यों में अगले ५ मास तक वर्जित करना चाहिए। परिहार यदि पूर्ण चन्द्र उस नक्षत्र को भोगे तो दोष नहीं। -

१६. **वेध दूषित नक्षत्र**- इसका वर्णन विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है।

१७. **पाप युति दूषित नक्षत्र** इसका वर्णन पिछले पृष्ट पर विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है।

१८. **विष घटी पंचमी** को हस्त नक्षत्र तथा रविवार, सप्तमी को अश्विनी नक्षत्र तथा मंगलवार, षष्ठी को मृगशिर नक्षत्र तथा सोमवार, अष्टमी को अनुराधा नक्षत्र तथा बुधवार, दशमी को रेवती शुक्रवार, एकादशी को रोहिणी शनिवार का योग होने पर विष योग होता है। विष घटी परिहार लग्न शुद्धि अर्थात् गुरु शुक्र या बुध के केन्द्र त्रिकोणस्थ होने पर, रवियोग होने पर या अमृत-सर्वार्थ सिद्धि योग होने पर दोष नहीं।

१९. **लग्न दोष लग्नांशेऽभ्युदिते तदंशपतिना दृष्टे शुभे वा शुभैः मित्रेणापि करग्रहस्तु शुभदो नो चेत् वरस्यान्तकृत्**।। (पूर्वकालामृत) यदि लग्न पर लग्नगत नवांशेश की दृष्टि या योग हो या लग्न अथवा नवांश राशि पर शुभ ग्रहों का दृष्टि योग हो या लग्न नवांशेश के मित्र ग्रहों की लग्न पर दृष्टि हो तो इन परिस्थितियों में लग्न शुभ होती है, अन्यथा लग्न दोष होता है।

२०. **तिथि गंडान्त, नक्षत्र गंडान्त, लग्न गंडान्त** पूर्णा तिथियों (५, १०, १५, ३०) के - की और नन्दा (१, ६, ११) के प्रारम्भ की एक-एक घटी (२४ मिनट) तिथि गंडान्त काल समस्त मांगलिक कार्यों में निषेध कहा गया है। रेवती, के अन्त की दो घटी (४८ मिनट) एवं मूल, अश्विनी, मघा के की दो घटी नक्षत्र गंडान्त कहलाती हैं। ये भी सर्वत्र त्याज्य हैं। कर्क, वृक्षिक, मीन के अन्त की आधी घटी (१२ मिनट) एवं सिंह. धनु मेष के प्रारम्भ की आधी घटी (१२ मिनट) लग्न गंडान्त कहलाती है। ये भी सर्वत्र त्याज्य हैं। त्रिगंडान्त परिहार यदि वेध सिद्ध तिथि नक्षत्रादि हों एवं गुरु शुक्र बुध केन्द्रस्थ लग्न में दोष समन हो जाता है।

२१. **क्रान्तिसाप्य दोष** काल जव सूर्य और चंद्रमा के बीच कांति अंतर ३१ कला के अंदर हो तव यह दोष होता है। इस महादोष का कोई परिहार नहीं है। इस प्रकार २१ दोष सर्वत्र त्याज्य कहे गये हैं।

बली लग्न एवं शुभ योगों से अनेक अशुभ योगों का परिहार

बली लग्न से अनेक दोषों का परिहार - विवाह, मुंडन, उपनयन आदि मांगलिक कार्यों में पंचाग शुद्धि (शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण) के पश्चात लग्न शुद्धि की जाती है। लग्न शुद्धि के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ जाता है जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी। सूत्र- लग्न वीर्य विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा।।अन्य सूत्र- सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्न शुद्धिर्यदा भवेत् ।

(अ) मुहूर्तृत चिंतामणि के अनुसार केन्द्रे कोणे जीव आये रवी लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमे वा । सर्वे दोषा नाशमायन्ति चंद्र लाभे तद्वमुहूर्त नवांश दोषाः ।। भावार्थ- यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों, सूर्य ग्यारहवें भाव में हों या लग्न वर्गोत्तम या चंद्र वर्गोत्तम में हों तो समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। यदि चंद्र ग्यारहवें भाव में हो तो नवांश दोष भी नष्ट होकर शुभ मुहूर्तृतकाल हो जाता है।

(ब) मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार त्रिकोणे केन्द्र वा मदनरहिते दोषशतकं हरेत्सौम्याः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु। भवेदाये केन्द्रेऽङ्ग उत लवेशो यदि तदा समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति ।। भावार्थ यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

(स) मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार अब्दायनतुतिथि मास भपक्षदग्धतिथ्यन्ध काणवरागमुखा दोषा नश्यन्ति विद्गुरु शितेष्विह केन्द्रकोणी तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः ।। भावार्थ- यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हो तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋतु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध-वधिर कांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष, नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

2. शुभ योगों से अशुभकाल का परिहार

अयोगे सुयोगऽपि चेत् स्ययात्तदानीमयोगं निहत्य सिद्धिं तनोति (मुहूर्त् चिंतामणि) भावार्थ- यदि किसी अशुभ योग के समय कोई शुभ योग आ जाये तो वह समय शुभ हो जाता है। रवियोग, अमृत सिद्धियोग, सर्वार्थ सिद्धियोग, कुमार योग, सिद्धयोग एवं आनन्दादि योगों में से शुभ योग में अशुभ एवं दोष युक्त समय का समन होकर वह समय शुभ हो जाता है।

(अ) दोष समूह नाशक रवियोग रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशका (मुहूर्ततचिन्तामणि) । सूर्यद्दशमे षष्टे तुर्ये विंशे त्रयोदशे नवमे चन्द्र नक्षत्रे रवियोगरू इशुभप्रदः ।। अनेक दोषसङ्घानां ध्वंसकोऽय मुदाहृतः ।। (मुहूर्ततगणपति) रवियोग में दोषों का समूह नष्ट हो जाता है। यह प्रबल शुभ योग होता है।

(ब) दोष समूह नाशक अमृतसिद्धि योग अमृतः सिद्धियोगः स्यात् सर्वकार्यार्थसिद्धिदः । यथा सूर्यस्तमो हन्ति दोपसद्धास्था त्वयम्। (मुहूर्ततगणपति) । जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश करता है, उसी प्रकार अमृत सिद्धियोग से दोष समुदाय का नाश होकर वह समय सभी के लिए शुभ हो जाता है।

युति दोष परिहार

मुहूर्तचिंतामणि :- **नश्यन्ति विद्गुरु सितेष्विह केन्द्र कोणे, तद्वच्च पाप विधु युक्तनवांश दोषः ।।८९ ।।**

भावार्थ- यदि बुध, गुरु या शुक्र, केन्द्र या त्रिकोण में हों तो पाप युति एवं नवांश दोष नष्ट हो जाते हैं।

मुहूर्त गणपति : **स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगचंदो, मित्र क्षेत्र गतोऽपि वा ।। गुरुस्वीपवर्गस्थो बली केन्द्र तो विद्युः ।।१४५**
विलोकयन्ति चेद्दोषं नाशयत्येष संग्रहः ।
चंद्रर्क्षे पाप युक्कृत् स्याद्युति दोषस्तदोदितः ।।१४६
धिष्ठैक्ये राशि भेदेभ पापयुग् राशिगं त्यजेत् ।।१४७

भावार्थ- यदि चंद्रमा स्वराशि (कर्क) या उच्च राशि (वृषभ) या मित्र राशि (मिथुन, सिंह, कन्या) में हो या बलवान होकर केन्द्रस्थ हो और उसे स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो सग्रहचंद्र (युति दोष) नष्ट हो जाता है। यदि चंद्रमा व पाप ग्रह का एकही नक्षत्र हो परन्तु राशि भिन्न हों तो शुभ होता है।

मुहूर्त कल्पद्रुमः विवाह कुसुम श्रोक ५०-
चंद्रः सौम्येज्यान्वितः स्वाच्छुभाय, नान्यैः रिः फाष्टारिगो ऽपीह नेष्टः । पश्यंच्छीतांशुं गुरुः स्वीय वर्गे, केन्द्रे दोषं सग्रहाख्यं हिनस्ति ।।५० ।।

भावार्थ- यदि चंद्र की युति सौम्य ग्रहों (गुरु, शुक्र या शुभ युत बुध) से हो तो लग्न से चंद्रमा का ०६.०८.१२ दोष नही होता है। यदि चंद्रमा पर स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो संग्रहचंद्र (युति) दोष) नष्ट हो जाता है।

मुहूर्त् प्रकाश - **स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्र क्षेत्र गतो विधुः । युति दोषान भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ।।**

भावार्थ- यदि चन्द्र स्वक्षेत्री (कर्क राशि में), उच्चस्थ (वृष राशि में), या मित्र क्षेत्री (मिथुन, सिंह, कन्या राशि में) हो तो युति दोष का परिहार हो जाता है।

बहुदोष समूह परिहार

मुहूर्त् चिंतामणि के अनुसार त्रिकोणे केन्द्र वा मदन रहिते दोष शतकं, हरेत्सौम्याः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु । भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति ।। ११ ।।

भावार्थ-यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

अब्दायनतुतिथि पास भपक्षदग्यतिव्यन्ध काणवधिरांगमुखाच दोष ा नश्यन्ति केन्द्रकोणो तद्वच्च पापविद्युयुक्तनवांशदोषः।। भावार्थ- यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हों तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋतु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक-क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध-वघर-काांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष, नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार

मुहूर्तचिंतामणिः विवाह प्रकरणम्, श्लोक ५८-
ऋक्षाणि क्रूर विद्धानि क्रूर भुक्तादिकानि च । भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तन, शुभार्हाणि प्रचक्षते ।।58 ।।

भावार्थ : नक्षत्र क्रूर ग्रह से वैधित, क्रूर ग्रह से मुक्त या भौग्य हो उस नक्षत्र को यदि चंद्रमा ने भोगकर छोड़ दिया हो तो वह नक्षत्र शुभ हो जाता है।

मुहूर्तमार्तण्ड : **लग्नेशे भवगे अथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वाऽङ्गगे । होरायां च शुभस्य वा व्यय भयं नास्तीति पूर्वे जगुः** ॥ ०४/१६।।

भावार्थ- यदि लग्न स्वामी ग्यारहवें भाव में हो या चंद्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या चंद्रमा को छोड़ कर शेष शुभ ग्रहों में से कोई ग्रह लग्न में हो, या लग्न में किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो ग्रह वेध दोष नहीं होता है।

मुहूर्त् गणपति : **पापवेधे च नक्षत्रं, सम्पूर्ण त्याज्यमेव हि । शुभ वेधे च तुर्या द्यौः पादयो द्वि तृतीय योः।।** १५/२३८
लग्ने शुभ ग्रहे वाथ, लग्नेशो लाभपोऽथवा । सौम्यैर्दृष्टो युतो वापि काल होरा शुभस्य वा।। १३६।।
वेध दोषस्तदा न स्याद, विवाहादौ सतां मतम्।। १४०।।

भावार्थ- पाप ग्रह से वेधित सम्पूर्ण नक्षत्र का त्याग और शुभ ग्रह से वेधित नक्षत्र का पाद भेद होने पर नक्षत्र शुभ होता है। यदि लग्न में शुभ ग्रह हो, लग्नेश या लाभेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश या लाभेश से शुभ ग्रह की युति हो, या शुभ ग्रह की काल होरा हो तो विवाह आदि मांगलिक कार्यों में वेध दोष नहीं होता है।

मुहत्तकल्पद्रुमः- **पीयूषांशौ शोभनैः संप्रदृष्टे, सद्धोरायां व तनुस्थे शुभेऽपि । लग्नेशे वा लाभगे वेधदोषो, भ्रष्टावेशो दूर दूरं प्रयाति** ।।१३/४२।।

भावार्थ- यदि चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह का लग्न हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह हो लग्नेश लाभ स्थान में गया हो तो वेध दोष दूर हो जाता है।

मुहूर्त प्रकाश : **लग्ने शुभ ग्रहो वाऽथ लग्नेशो ताभगोऽभवा । सौम्यैर्दृष्टो युतो वा अपि कालहोरा शुभस्य वा** ।।२०३।।

भावार्थ-यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या लग्नेश ग्यारहवें भाव में हो या लग्नेश पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो या किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो वेध दोष का परिहार होकर वेधित नक्षत्र शुभ हो जाता है।

आवश्यक कार्य में तिथि- नक्षादि बहुदोष दान पदार्थ परिहार

मुहूर्त्त गणपतिः शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ३७,३८

तन्दुलांश्च तिथौ दुष्टे, वारे रत्नं सकाचंचनम् ।
गामृक्षे कनकं योगे, करणे धान्यमेव च ।।37 ।।
शंखं रौप्य युतं चन्द्रे, तारायां सैन्धवं तथा ।
नाड्यां हेमं नृपो दद्यात, कार्ये आवश्यके यदि ।।38।।

आवश्यक कार्य में यदि तिथि दोष हो तो चावल दान, वार दोष में रत्न जड़ित स्वर्ण दान, नक्षत्र में गोदान, योग दूषित होने पर स्वर्ण दान, करण दोष में अनाज दान, चंद्रमा में दोष होने पर शंख दान, तारा दूषित होने पर सैंधा नमक, नाड़ी दोष होने पर स्वर्ण दान कर कार्य संपादन करना चाहिये।

मृत्युबाण दोष परिहार

मुहूर्त्त गणपति - रात्रौ चौर रुजौ जयाद्, दिवसे राज पंचकम् ।
संध्ययो भयो मृत्यु सर्वदा वन्हि पंचकम् ।। १६३

भावार्थ- रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य हैं।

रवौ रोगं नृपं मन्दे, बुधे मृत्युं परित्यजेत् ।
भौमे तु पावकं चौरं, लग्ने हीनबले न सत् ।। १६४
(लग्ने पूर्ण बलो पेते, न दोषः पंचकस्य च)

भावार्थ- रविवार को रोगबाण, शनिवार को राजवाण, बुधवार को मृत्युबाण, मंगलवार को अग्निबाण तथा चोरबाण का त्याग करना चाहिये। यदि लग्न निर्बल हो तभी इन पंचबाणों का फल अशुभ होता है। यदि बली लग्न हो तो पंचबाणों का दोष नहीं होता है।

रोगे रोगं गृहे वन्हि, मार्गे तु चौर पंचकम् ।
विवाहे मृत्यु संज्ञंच, सेवायां राज पंचकम् ।।

भावार्थ- रोग में रोगबाण का गृह निर्माण में अग्निबाण का, यात्रा में चोरवाण का, विवाह में मृत्युबाणका एवं नौकरी में राजवाण का त्याग करना चाहिये।

मुहूर्त प्रकाशरू यद्यर्कवारे किल रोग पंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वहिः ।
शनौ च मृत्युः सुरमंत्रिचीर्यूयं विवाहकाले परिवर्जनीयम् ।। १०८

भावार्थ- रविवार को रोगवाण, सोमवार को राजवाण, मंगलवार को अग्निबाण, शनिवार को मृत्युबाण एवं गुरुवार को चोरबाण भरे हुए (सशल्य) होने से विवाह में अशुभ हैं। निष्कर्षतः इनके अलावा अन्य परिस्थितियों में पंचबाण रीते (खाली) होने से विशेष दोष कारक नहीं हैं।

रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजानि पंचकम् ।
उभयोः सन्ध्ययोमृत्यु अन्यकाले न निंदितः । । १०६।।

भावार्थ रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य है अन्य काल में नहीं।

नृपाख्यं नृप सेवायां गृहगोपे अग्नि पंचकम्
याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं कर ग्रहे।।११०।।

भावार्थ राजवाण नौकरी में, अग्निवाण घर छाने में, चोरबाण यात्रा में, रोगवाण यज्ञोपवीत में एवं मृत्युबाण विवाह में निषिद्ध है, अन्य कार्यो में निषिद्ध नहीं है ।

-प्रदेश भेद से लत्ता पातादि १० दोष परिहार

मुहूर्त चिंतामणि - विवाह प्रकरण, श्लोक ६६ के अनुसार,

उपग्रक्षं कुरु वाह्निकेषु कलिङ्ग बषु च पातितं भम् ।
सौराष्ट्र शाल्वेषु च लत्तित भं त्यजेत् तु विद्धं किल सर्व देशे।। ६६ ।।

भावार्थ-लत्ता दोष मालवा व गुजरात में, पात दोष कुरुक्षेत्र एवं फिरोजपुर क्षेत्र में, एकार्गल दोष काश्मीर में, उपग्रह दोष पंजाब, हरियाणा, कुरुक्षेत्र व आगरा क्षेत्र में, युति दोष बंगाल में एवं वेध दोष सर्वत्र त्याज्य कहा गया है।

विवाह में गोचर से त्रिबल शुद्धि परिहार

(१)सूर्य बल परिहार

मुहूर्त्त चिंतामणिः गोचर प्रकरण, श्लोक १६

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदो सितेज्यौ,
मध्ये सदा शशि सुतश्चरमेऽब्ज मंदौ ।।

भावार्थ- सूर्य और मंगल राशि के आदि भाग (प्रथम देष्काण, १ अंश से १० तक) में फल देते हैं।

गर्गाचार्य के अनुसार ' **अनिष्ट स्थाने सूर्ये, शुभ राशिः पुरोभवेत् ।**
त्रयोदश दिनं त्यक्त्वा, परं शुभमादिशेत।।

अर्थात् जन्म राशि से सूर्य अशुभ स्थान में हो एवं सूर्य की अग्रिम राशि शुभ राशि की संक्रान्ति से १३ दिन (यानि १३ अंश) पश्चात् उसे शुभ मानना चाहिए।

(२) **चन्द्र बल परिहार**

दैवज्ञकल्पद्रुमः-गर्भाधाने जन्मकाले, अभिषेके मौञ्जिबन्धने ।
पाणिग्रहे प्रयाणेच, चंद्रो द्ववादशगः शुभः ।।

अर्थात विवाह, गर्भाधान, स्त्रीप्रसंग, उपनयन, यात्रा, व्रत-उपवास आदि कार्यों में पुरुष को १२ वां चंद्र प्रशस्त है, स्त्री या वधू को नहीं।

(3)गुरु बल परिहार

ज्योतिर्निबंध - **रजस्वला यदा कन्या गुरु शुद्धिं न चिन्तयेत ।**
अष्टमेपि प्रकर्त्तव्यो, विवाहः स्त्रिगुणार्चनात् ।

भावार्थ- कन्या के रजस्वलावती हो जाने पर ४, ८, १२वें गुरु तीन गुनी पूजार्चन एवं गौदान के वाद विवाह प्रसस्त है।

मुहूर्तचिंतामणिः स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे, वा स्वाशे वर्गोत्तमे गुरु।
रिफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ।।

भावार्थ अशुभ गुरु यदि उच्चराशि में, स्वराशि में, मित्रराशि में या स्व नवांश में हो तो वह शुभ होता है। में या शत्रु ग्रह की राशि में स्थित शुभ गुरु भी पूज्य होता है। विवाह संस्कार के समय यदि कन्या रजस्वला हो तो कूस्माण्ड सूक्त एवं युज्जानसूक्त से हवनादि कराकर विवाह कराना चाहिये। -

अष्टकवर्ग से त्रिबल शुद्धि

सभी ज्योतिष ग्रंथों में स्पष्ट आदेश है कि गोचर की तुलना में अष्टकवर्ग शुद्धि सूक्ष्म होता है। लेकिन विस्त्रत गणना युक्त कुंडली के अभाव में वर कन्या के टीपना में सूर्य, गुरु, चंद्र की राशियों को देखकर विवाह लग्न शोधन होता रहा है। यह स्थूल साधन है। वर्तमान में कम्प्यूर गणित करने में लगने वाले श्रम एवं समय बचाने का एक उत्तम साधन है, अतः उसमें संबंधित ग्रह के अष्टकवर्ग देखकर जातक को यदि उस राशि में चार या चार से अधिक रेखा प्राप्त हों तो ४, ८, १२ में या पूज्य सूर्य, गुरु, चंद्र शुभ होने से विवाह शुभ कहना चाहिये।

राजमार्त्तण्ड - सुक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धिः, स्थूला शुद्धितु गोचरेः ।
अष्टकवर्ग विशुद्धेषु, गुरु शीतांशु भानुषु ।

सिंहस्थ गुरु का परिहार

मुहूर्तचिंतामणिः शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ४६ सिंह गुरौ सिंहलवे विवाहों नेष्टोऽथ गोदोत्तरतक्ष यावत् । भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेये ।। ४६ मचादि पंचपादेषु गुरु सर्वत्र निंदितः । गंगा गोदान्तरं हित्वा शेषांप्रिशु न दोषत् ।।५० मुहूर्त्त गणपतिरू सिंहराशिस्थिते जीवे, मेयेऽर्केन दूषणम।।

जब गुरु सिंह राशि में और सिंह के नवांश में हों तब केवल गोदावरी नदी से उत्तर और गंगा के दक्षिण तट पर्यन्त क्षेत्र में विवाह अशुभ है। अन्य क्षेत्र में दोष नहीं है। मया के चारों चरण एवं पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण तक के पांच चरणों में सिंहस्थ गुरु सभी जगह त्याज्य है, परन्तु यदि मेष का सूर्य हो तो सिंहस्थ गुरु काल का किसी भी क्षेत्र में दोष नहीं है।

विवाह में गोचर से त्रिबल शुद्धि परिहार

मकरस्थ गुरु का परिहार

मु.चिं.- रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच इज्यः वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ।। ५२।। भावार्थ- रेवा (नर्मदा) के पूर्व में, पटना के पास गंगा में मिलने वाली गण्डकी नदी के पश्चिम में, शोण नदी (अमरकंटक से निकलकर पटना से पहले गंगा में मिलने वाली सोन नदी) के उत्तर-दक्षिण में नीच के गुरु वर्जित नहीं हैं। यह मकर का गुरु कौङ्कण (महाराष्ट्र और गोवा के समुद्र तटीय जिले), मगध (विहार का दक्षिणी भाग), गौड (पश्चिम बंगाल), सिन्धु देश (पाकिस्तान का सिंध प्रान्त) में वर्जित है।

मु. गणपतिरू- मगधे गौड देशे च, सिंधु देशे च कौंकणे । विवाहादि शुभे त्याज्यो, नान्यस्मिन् नक्रगो गुरुः ।।92 ।।

भावार्थ- मकर (नीच राशि) के गुरु केवल मगध, गौड, सिंधु और कोंकण देशों में विवाहदि मांगलिक कार्य वर्जित हैं, अन्य क्षेत्रों में शुभ हैं।

कन्या के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्रीमद्भागवत् के दशम स्कन्ध के २२ वें अध्याय में दिये गये कात्यायनि देवी के मंत्र के यथा संभव संख्या में जाप करने या योग्य पंडित से कराने पर कन्या के विवाह में आ रहीं वाधायें समाप्त होकर शीघ्र विवाह होता है। मंत्र इस प्रकार है-

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी ।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरुते नमः ।।

अर्थ- हे कात्यायनि देवि ! हे महामाया! हे महायोगिनी हे अधिश्वरी! आप श्री नन्दबाबा के पुत्र श्री कृष्ण को मेरा पति बनाईये। हे देवि में आपको नमस्कार करती हूँ।

वर के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्री दुर्गासप्तशती के अर्गलास्तोत्रम् का २४ वां श्लोक -

पत्नी मनोरमां देहि, मनोवृत्तनुसारिणी ।
तारिणीम् दुर्ग संसार, सागरस्य कुलोद् भवाम् ।।

अर्थ - हे देवि मेरी मनोवृत्ति के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो जो इस दुर्गम संसार रूपी सागर से पार होने में सहायक हो तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो। मंत्र जाप विधि - स्नानादि से पवित्र होकर, अपने गृह में स्थित पूजाघर या पूजा स्थान में, पूर्वाभिमुख बैठकर, घी का दीपक जलाकर श्रद्धा एवं विश्वास के ११ माला का जाप करें या ब्राह्मण से करवायें। अपवित्र रहते हुये जाप न करें।

गुरु एवं शुक्र अस्त काल में वर्जित कर्म

मुहूर्त् गणपति के विवाह प्रकरण श्लोक क्रमांक ८० से ८४ तक तथा हेमाद्रि व निर्णयसिन्धु के अनुसार अनित्य कर्म जैसे महादान, अग्नि का आधान, यज्ञ, अपूर्व तीर्थ यात्रा एवं स्नान, अपूर्व देवता का दर्शन, वापी तालाब निर्माणारम्भ, सुर प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, सन्यास, वालक को प्रथम बार बाहर निकालना, राज्याभिषेक, प्रथम मुण्डन, कर्णवेध, सन्यास, वेदव्रत, व्रत का उद्यापन, वधू का प्रथम प्रवेश, अष्टका श्राद्ध, व्रतारम्भ, गृहारम्भ और गृहप्रवेश, विवाह, नामकरण, प्रायश्चित्त कर्म और उपाकर्म गुरु-शुक्रास्त में निषेध हैं। परन्तु अन्य मांगलिक कार्यों में गुरु-शुक्र अस्त का निषेध नहीं है। परिहार सामान्य परिस्थितियों में गुरु शुकास्त दोष युक्त समय है। परन्तु अति आवश्यक परिस्थितियों में गुरु या शुक्र में से किसी एक के उदित रहने पर मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं। प्रयोग परिजात में आचार्य लल्ल ने कहा है कि,

यद्येकस्यापि मूढत्वे, शुभ कर्म न दोषकृत ।
द्वयो मूढत्वोक्त्, दोषत्वं गुरुशुक्रयोः ।।

ऐसा ही उल्लेख मुहूर्तचिन्तामणि की पियूषधारा टीका में भी है।

गुरु के नीचस्थ, अतिचारी, सिंहस्थ, धनाऽर्क या मीनाऽर्क में वर्जित कार्य

यज्ञोपवीत, सन्यास, यक्ष और वेद की दीक्षा, विवाह, कर्णवेध, वास्तु पूजन, देव वधु प्रवेश वर्जित कहे गये हैं।

विवाह में त्रिज्येष्ठ निषेध

जन्ममासे जन्मभे च न च जन्मदिने बुधः । ज्येष्ठमासे न ज्येष्ठस्य विवाह कारयेत्कचित् । न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ।

अर्थात् जन्म मास, जनम नक्षत्र एवं जन्म वार को विवाह नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार ज्येष्ठ मास में जेठे लड़के या लड़की का विवाह न करें। ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ वर एवं ज्येष्ठ कन्या इन तीनों के योग होने पर तो विवाह कदापि नहीं करना चाहिए।

विवाह विषयक अन्य सूत्र

मुहूर्त्त कल्पद्रुमः विवाह कुसुम नैकस्य कन्या द्वितयं सहोस्थमं, देयं तथा सोदरस्य पुंसोः । शुभे न कार्य पितृकर्म गेहे, द्विमंगलं सद्यविनाब्द भेदात्।।३३।।

अर्थात् दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं करना चाहिये। ६ मासों के भीतर दो मांगलिक कार्य न करें। संवत्सर बदलने पर कर सकते हैं।

वशिष्ठ : पुत्री विवाहात्परतः सदैव शुभप्रदं पुत्र विवाह कर्म । अर्थात् पुत्री के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह सब काल में शुभ होता है। इसमें ६ मास का प्रतिबंध नहीं है। **मुहूर्त्त चिन्तामणि- सुतपरिणयात् षड्मासान्तः सुताकरपीडिनं, न च निजकुले तद्धद्वा मण्डनादपि मुण्डनम् । न च सहजयोदये भ्रात्रोः सहोदर कन्यके, न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्थे शुभेन पितृक्रिया ।।**

भावार्थ लड़के की शादी के ६ माह के भीतर लड़के का विवाह नहीं करना चाहिए और न ही अपने कुल में किसी का मुण्डन करना चाहिए। दो सहोदर बहनों का दो सगे भाईयों से विवाह नहीं करना चाहिए। ५ मास के भीतर दो बहनों का विवाह नहीं करना चाहिए। विवाहादि शुभ कार्य में माता या पिता का श्राद्ध नहीं पड़ना चाहिए।

विवाह में कुंडली मिलान

जन्म राशि से मिलान करें या नाम राशि से ?

कार्य के अनुसार जन्म राशि या नाम राशि मुहूर्त्त में विचार

(अ) **विवाहे सर्व यात्रादौ ग्रहगोचरे ।**
जन्मराशेः प्रधानत्वं, नाम राशिं न चिंतयेत् ।।

भावार्थ विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य, यात्रा एवं गोचर ग्रह फलादेश करने में जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए।

(ब) **देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्योहारके ।**
नाम राशे प्रधानत्वं, जन्म राशिं न चिंतयेत् ।।
काकिण्या वर्गशुद्धौ च वादे युते स्वरोदये ।
मंत्रे पुनर्भूवरणे च नाम राशेः प्रधानता ।।

भावार्थ- देश या ग्राम में निवास हेतु कांकिणी विचार, गृह प्रवेश, वाद-विवाद, नौकरी, एवं दैनिक व्यवहार के कार्यों में नाम राशि से विचार करना चाहिये।

यदि वर या वधु में से किसी की जन्म राशि ज्ञात न हो तव क्या करें ?

मुहूर्त्त संग्रह दर्पण (वसिष्ठ) -

अज्ञात जन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत् ।
तैनेव चिंतयेत् सर्व राशि कूटादि जन्मवत् ।।१० ।।
जन्मभं जन्म धिष्णयेन, नाम धिष्णयेन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं, दम्पत्योर्निधनं भवेत् ।।६६ ।।

भावार्थ - वर वधु में से किसी एक की अज्ञात जन्म राशि होने पर दोनों के प्रचलित नाम राशियों से कुंडली मिलान देखना चाहिये, अन्यथा अनिष्ट की संभावना होती है।

कितने गुण मिलने पर शुभ मिलान का आदेश करें ?

अष्टकूटों के कुल गुण ३६ में से आधे १८ गुण मिलान होने पर शुभ होने की परम्परा है।

मुहूर्त गणपति के श्लोक क्रमांक १३ में -

गुणाधिको समुद्वाह कर्त्तव्यो वर कन्ययोः ।।

यह लिखकर केवल अधिक गुण मिलान का आदेश किया है। न्यूनतम गुण संख्या का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मुहूर्त चिंतामणि के किसी भी श्रोक में न्यूतम् गुण मिलान संख्या का आदेश नहीं है। इसकी श्री योगेश्वर पाठक की टीका में न्यूनतम् १८ गुण का एक लोक मिला है-

अशुभोऽष्टादशात्पचेत्, शुभस्त्वष्टादशाधिकः ।
गुणयोगः शुभोऽतीव, सप्तविंशाधिकः स्मृतः ।।
अन्यत्र सूत्र - गुणै षोडशभिर्निन्दं, मध्यमा विंशतिस्तथा ।
श्रेष्ठं त्रिशद् गुणं यावत् परतस्तूत्तमोत्तमः ।।

भावार्थ- १६ तक गुण मिलान निंदनीय हैं। १७ से २० तक गुण मिलान मध्यम हैं ।२३ तक गुण श्रेष्ठ हैं। २३ से अधिक गुण मिलान उत्तरोत्तर उत्तम हैं। (मंगलीक, षडाष्टक इत्यादि का सपरिहार शुभ हो तो उसके वाद शुभ कुंडली मिलान का आदेश करें)

नाड़ी दोष परिहार

(१) मुहूर्त्त संग्रह दर्पण विवाह प्रकरण, श्लोक ८४

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्ण दोषस्तु क्षत्रिणः।
गण दोषस्तु वैश्यानां योनि दोषस्तु पादजान् ।।८४ ।।

भवाथर्रू ब्राम्हण वर्ण के लिये नाड़ी दोष, क्षत्रिय को वर्ण दोष, वैश्य के लिये गणदोष और क्षुदों को योनि दोष त्याज्य है।

(१) राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि युग्मं तथैव ।
नाड़ी दोषो नो गणानां च दोषो, नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। ।।
मुहूर्त कल्पद्रुमः ऋक्षं भिन्नं राशिरोयदि स्वाद राशि द्वन्द्वं चौकमृक्षं यदापि ।नक्षत्रैक्ये पादभेदो यदि स्थान, नाड़ी दोषो नो गणास्यापि दोषः ।।१६।।

भावार्थ- यदि वर एवं कन्या की राशी एक ही हो तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा नक्षत्र एक ही हों तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी और गण दोष नहीं होता है।

(३) **ज्योतिष चिंतामणिः- रोहिण्यार्दा मृगेन्द्राग्नी पुष्य श्रवण पौष्णभम्। अहिर्ववुध्न्यर्क्षमे तेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ।।**

भावार्थ - रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में दोनों का एक नक्षत्र हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(४) **हेमाज्य रत्नगोदानं मृत्युंजय जपं तथा।**
कुर्यादरावश्यके द्वारे नाडी दोषापनुत्तये।।

भावाथर्रू- अति आवश्यकता में स्वर्णादि रत्न एवं गोदान तथा मृत्युंजय जाप कराने से नाड़ी दोष की शान्ति कराई जा सकती है।

दुष्ट भकूट षडाष्टक, नवमपंचम एवं द्विद्वादशदोष परिहार

यदि वर एवं कन्या की राशियां परस्पर छटवीं-आठवीं, नवम पंचम या द्वितीय- द्वादश हो तो मिलान निषेध होता है।

परिहार - (१) **प्रोक्तेदुष्टभकूटेति राश्योरेकाधिपत्यके ।**
मैर्त्या चोद्वाहन श्रेष्ठ होकनाडी न चेत्तयोः।।
राशियाँ वैरभावेऽपि मैत्रो चेत् स्यात्तदंशयोः ।
नाड़ी पश्येच्च ताराणां शुद्धमुद्धाहनं शुभम्।।

यदि वरकन्या की राशियों का स्वामी एक ग्रह हो या परस्पर मित्रता हो या दोनों की नाड़ी एक न हो तो दुष्टकूट दोष न होकर मिलान शुभ होता है। इसी प्रकार यदि वरकन्या के नवांश स्वामियों में मित्रता तथा राशि नाथों में शत्रुता रहने पर भी नाड़ी एवं तारा शुद्धि हो तो विवाह शुभ होता है।

(२) मुहूर्तगणपति : **ताम्रं द्विद्वदशे दद्यात् सुवर्णं च षडष्टके।**
गोयुग्मं नवपंच्याख्ये स्वर्ण वर्णादिदूषणे।।

द्विर्द्वादश योग में तांबा, षडाष्टक में सोना, नवमपंचम दोष में दो गायें एवं वर्णादि दोष में सोना दान कर विवाह शुभ होता है।

मंगलीक योग एवं परिहार

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
कन्याभर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्या विनाशदः ।।

अर्थात लग्न या चंद्र से १, ४, ७ यां १२वें भाव में मंगल होने पर जन्म कुंडली मंगलीक होती है। कन्या के मंगलीक होने पर वर को हानि या वर के मंगलीक होने पर कन्या को हानिकारक होता है।

(१) कुज दोष वती देया, कुज दोष वते किल ।
नास्ति दोषो चानिष्टं दम्पत्यो सुख वर्धनम् ।।

भावार्थ- वर कन्या दोनों के मंगलीक होने पर विवाह शुभ है।

(२) शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो व तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव, भौम दोष विनाश कृत् ।।

भावार्थ- यदि एक की जन्म कुण्डली में मंगल दोष हो और दूसरे की कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु पाप ग्रह हो तो मंगल दोष भंग हो जाता है।

(३) राशीमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ।।

भावार्थ- यदि राशि मैत्री एवं एक ही गण हो या २७ से अधिक गुण मिले हों तो मंगल दोष अविचारणीय होता है।

(४) **ज्योतिष रत्नमाला - सप्तमे वाऽष्टमे भौमे, गुरुणा चेन्निरीक्षितः ।**
तदा तु सर्वसौख्यं स्यात्, भौमदोषो विनश्यति।।

भावाथर्रू- सप्तम् या अष्टम् में बैठे मंगल पर यदि गुरु की दृष्टि हो तो मंगल दोष समाप्त होकर सर्व सुख प्रदायक हो जाता है।

(५) **अस्त नीचस्थ संधिश्च बलहीनं भौमः यदा ।**
जीव पश्ययुर्तिराहु, भीम दोषो तदा नहि ।।

भावार्थ अस्त, संधिगत या नीच राशि गत इस प्रकार बलहीन मंगल का दोष नगण्य होता है, अथवा गुरु से दृष्ट या राहु से युत मंगल की स्थिति में भी मंगल दोष नहीं होता है।

(६) **अजे लग्ने व्यये चापे, पाताले वृश्चिके कुजे ।**
द्यूने मृगे कर्कीचाष्टो भीमदोषो न विद्यते।।

भावार्थ यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक का चौथे भाव में, मकर का सातवे में, कर्क का आठवे में या धनु का मंगल वारहवे भाव में हो तो भीम दोष नहीं होता है।

ग्रह मैत्री से गण, योनि, वर्ण एवं षडाष्टकदोष परिहार बृहज्जयां तिः सार - गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषरू षडाष्टकम् ।चत्वारि नैव दुष्यंति, राशी मैत्री यदा भवेत् ।। ग्रह मैत्री होने पर चारों दोष शान्त होकर विवाह शुभ होता है। गण दोष विशेष में मैर्त्यां राशीशवोरंशस्वामिनोर्वरकन्ययोः । न तत्र गणदोषरू स्वाद्विवाहरू शुभदो मतः ।। अर्थात यदि वरकन्या के राशि या नवांश के स्वामियों में मित्रता हो तो गणदोष नहीं होता है।

विवाह लग्न शोधन विधि

(१) मुहूर्त ग्रंथों के अनुसार विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११वें सूर्य, राहू, केतु व शनि शुभ होते हैं । ३, ६, ११वें मंगल, २, ३, ११वें चंद्र, १, २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११वें गुरु तथा बुध तथा १, २, ४, ५, ९, ११वें स्थान में शुक्र शुभ होते है।

(२) त्रिविक्रम संहिता के अनुसार
त्याज्या लग्ने अब्दयो मंदः षष्टे शुक्रेन्दु लग्नपाः ।
रन्धे चंद्रादयः पंच, सर्वे अब्ज गुरु समौ ।।
भावार्थ- लग्न में चंद्र या पापग्रह न हों, लग्न से छटे घर में शुक्र चंद्र या लग्नेश न हों, आठवें स्थान में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु शुक्र व लग्नेश न हों सप्तम् भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। परिहार स्वरूप सातवें चंद्र तथा गुरु सम फल करते हैं, १२वें शनि, ३रे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि से शांति हो जाती है। इसलिये पंचांग में विवाह लग्न के साथ जहां दान लिखा हो वहां दानादि करवाना चाहिए।
(३) लग्न कर्तृरी दोप, अष्टम मंगल, छटें-बारहवें चंद्र, एवं छटें आठवें शुक्र इत्यादि दोषों का परिहार संबंधित ग्रह के निर्बल होने या बुध-गुरु-शुक्र के केन्द्र या त्रिकोण में हो जाता है।
विवाह लग्न में पंचेष्ठ बल - लग्न में ग्रहों के जो शुभ स्थान बताये गये हैं, उनमें - ग्रह रहने पर प्रत्येक ग्रह को एक बल प्राप्त होता है। लग्न में सूर्यादि ८ ग्रहों में से कम से कम ४ ग्रह शुभ स्थान में होने पर लग्न को ४ अंक बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है। इसे ही पंचेष्ट बल कहते हैं।
विवाह लग्न में विंशोषक बल - उपरोक्त पंचेष्ट बल पद्धति में प्रत्येक ग्रह को एक समान बली माना गया है, जबकि वास्तव में प्रत्येक ग्रह का नैसर्गिक बल पृथक- पृथक होता है। मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार चंद्र बल-५, सूर्यबल ३.३०, मंगलबल - १.३०, गुरुका बल-३, शनि, राहू और केतु का बल मंगल के समान (डेढ़-डेढ़ होता है। नैसगर्कि बल लेने के कारण विंशोधक पद्धति, पंचेष्ट से सूक्ष्म है। समस्त ग्रहों के नैसर्गिक बल का योग २० होने से यह विशोषक कहलाता है। इस पद्धति में १० बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है।
विवाह मुहूर्तो में 10 दोष (१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) जामित्र (६) मृत्युवाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) क्रान्सिाम्य और (१०) दरधा तिथि, क्रमानुसार दश दोष होते हैं। सीधी रेखा (१) दोष अभाव अर्थात् गुण की सूचक है तथा वक्र रेखा (ऽ) दोष सूचक होती है।

गोधूलि लग्न

कुलिकः क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्ठमे शशी ।
तदा गोधूलिका त्याज्यः पंच दोषश्च दूषितः ।।
विवाह मुहूतों में पंचांग शुद्धि के साथ-साथ लग्न में चन्द्र एवं पापग्रह शुद्धि, षष्ठ भाव में चन्द्र शुद्धि तथा अष्टम में चन्द्र-मंगल शुद्धि देखकर तथा क्रांतिसाम्य काल छोड़कर गोधूलि लग्न स्वीकार की गई है। गुरुवार को सूर्यास्त के उपरान्त एवं शनिवार को सूर्यास्त के पहले कुलिक होने से उस समय गोधूलि त्याज्य है।
गोधूलि लग्न समय- सूर्यास्त काल से आधा घटि (१२ मिनट) पहले व १२ मिनट वाद तक, जिस समय गाय आदि चौपाये अपने-अपने घरों को लौटते हुए अपने खुरों से मार्ग में धूल उड़ाते हुए आते हैं, उस काल को मुहूर्तत शास्त्रों में गोधूलि कहा है।

विवाह आदि शुभ मुहूर्तो में पंचांग शुद्धि

(१) **तिथिशुद्धिः**-
जन्म तिथि, माता पिता का श्राद्ध दिन, रिक्ता तिथियां, अमावस्या तिथि क्षय, तिथि वृद्धि को त्यागकर अन्य तिथियां मांगलिक कार्यों में शुभ होती हैं। या जिस मुहूर्त में जिन तिथियों को ग्राह्य किया गया हो वे तिथियां ।
(२) **वारशुद्धि**-
अशुभ या क्रूर ग्रह के वारों जैसे रवि, मंगल एवं शनि को छोड़कर शेष चारों बार मुहूर्त् शास्त्रों में शुभ कहे गये हैं। या जिस मुहूर्त् में जिन वारों को ग्राह्य किया गया हो वे चार।
(३) **नक्षत्र शुद्धि**-
जन्म नक्षत्र में मांगलिक कार्य वर्जित होता है एवं जिस मुहूर्त में जिन नक्षत्रों को ग्राह्य किया गया हो वे नक्षत्र ।
(४) **योग शुद्धि**-
व्यतिपात योग का सम्पूर्ण काल, परिघ योग का पहला आधा भाग, व्याघात योग के प्रारम्भ की ८ घटी, गण्ड एवं अतिगण्ड योग के प्रारम्भ की ५ घटी, शूल योग के प्रारम्भ की ४ घटी, विषकुंभ एवं वज्र योगों के प्रारम्भ कीं २ घटी समस्त मांगलिक कार्यों में त्याज्य होती हैं। शेष समय शुभ होता है।
(५) **करण शुद्धि**-
करणों में विष्टी अर्थात भद्रा काल को अशुभ माना जाता है।

भद्रा किन कार्यों में शुभ होती है ?

युद्धे, भूपतिदर्शने भयपदे घाते च पाते हठे, वैद्यस्यागमने जलप्रतरणे शत्रौः समुदमने जमृगोष्ट्रवादिके संग्रहे स्वीसेवा तुमने व शकटे भद्रा सदा गृह्यते।। भावार्थ युद्ध, राजदर्शन, आक्रमण, घातकार्य, हठ, वैद्य को बुलाना, तैरना, शत्रु से मुकावला, चिकित्सा, पशुक्रम, वाहन लेना देना, प्रेम, स्नान आदि में भद्रा शुभ होती है।

भद्रा परिहार

(१) **चिंतामणि कुंभे ये मयें स्वर्गेऽब्जेयेऽलिगे ।**
स्त्री धनुर्जुनक्रेऽथो, भद्या तत्रैव तत्फलम् ।।
भावार्थ- यदि कुंभ, कर्क, मीन या सिंह राशि में चंद्रमा हो तो भद्रा मनुष्य लोक में रहती है। यदि मेष, वृष, मिथुन या वृश्चिक राशि में चंद्र हो तो भद्रा वास स्वर्ग में व शेष राशियों में भद्रा पाताल में होता है। भद्रा का वास जहां होता है, वहीं उसका फल होता है। इसके अलावा दिन में तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा और रात्री में पूर्वार्ध की भद्रा शुभ कही गई है। एवं मुहुर्त चिंतामणि एवं भविष्य पुराण के अनुसार ''पुच्छे जयावहः'' अर्थात पुच्छ में अवश्य विजय एवं कार्य सिद्धि होती है।
(२) मुहूर्तत गणपति : **तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा ।-**
भदा दोषो न तत्र स्यात्, कार्येऽत्यावश्यके सति ।। २२
भावार्थ - तिथि के प्रथम अर्ध भाग की भद्रा रात में तथा दूसरे अर्ध भाग की भद्रा दिन में शुभ होती है।

भद्रा का पुच्छ काल

यदि एक तिथि का भोगकाल ६० घटी मान लिया जाय तो साढ़े सात घटी का एक प्रहर बनता है। भद्रा का पुच्छकाल पक्ष एवं तिथियों के विभिन्न प्रहरों की अन्तिम तीन घंटों में विद्यमान रहता है, जो कि इस कोष्ठक में स्पष्ट है। प्रहर के प्रारम्भ की गणना तिथि के प्रारम्भ समय से की जाती है।

कृष्ण पक्ष में

तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
३	सातवें प्रहर	४९ घटी ३० पल से ५२ घटी ३० पल
७	दूसरे प्रहर	१२ घटी ०० पल से १५ घटी ०० पल
१०	पांचवें प्रहर	३४ घटी ३० पल से ३७ घटी ३० पल
१४	चौथा प्रहर	२७ घटी ०० पल से ३० घटी ०० पल

शुक्ल पक्ष में

तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
४	आठवें प्रहर	५७ घटी ०० पल से ६० घटी ०० पल
८	प्रथम प्रहर	४ घटी ३० पल से ०७ घटी ३० पल
११	छठवें प्रहर	४२ घटी ०० पल से ४५ घटी ०० पल
१५	तीसरे प्रहर	१९ घटी ३० पल से २२ घटी ३० पल

विवाह का निर्णय करते समय बृहस्पति का विचार करे या नही ?



पं. हेमन्त ओझा
वास्तु व ज्योर्तिविद् जावाल

विवाह में कन्या हेतु बृहस्पति का विचार किया जाये या नहीं इस विषय में सभी पण्डित एकमत नहीं है। अतः हम यहाँ हम सभी तथ्यों पर विचार करते हुए निष्कर्ष निकालने का प्रयास करेंगे। शास्त्रों में कन्या के रजोधर्म योग्य होने के पहले विवाह का विधान बताया गया है। लेकिन ये सब बाते तब की है जब वे सभी बातें तर्कसंगंत थी क्योंकि पहले बाल्याकाल में विवाह होने के बाद भी गौना लडके-लडकी के व्यस्क होने पर ही होता था अर्थात् जब कन्या व्यस्क हो जाये तभी वह पति के सथ रहने तथा सांसारिक धर्म में प्रबृत होने के योग्य होती थी।

शास्त्रों में रजोधर्म के योग्य होने के पहले कन्या का विवाह करने का विधान है। उस समय कन्या के विवाह में गुरूशुद्धि परम आवश्यक थी।

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नवमे रोहिणी भवेत्।
दशमें कन्यका प्रोक्ता द्वादशे वृषली मता।। :- ज्योतिर्निबन्ध

अर्थात् आठ वर्ष की 'गौरी', नौ वर्ष की 'रोहिणी', दस वर्ष की 'कन्यासंज्ञक', तथा तदन्तर द्वादशी वर्षो की कन्या 'वृषली' अर्थात् रजस्वला संज्ञक होती है।

गौरी विवाहिता सौक्ष्यसम्पत्रा स्यात्पतिव्रता।
रोहिणी धनधान्यादिपुत्राढया सुभगा भवेत्।
कन्याविवाहिता सम्पत्समृद्धा स्वामिपूजिता।। :- पीयुषधारा

अर्थात् आठ, नौ तथा दस वर्ष की कन्या का विवाह ही शास्त्रों में शुभ माना गया है।

परन्तु वर्तमान में उपरोक्त बातें व्यावहारिक नहीं है। क्योंकि यदि हम बालविवाह करते है तो अब न वे मानवीय मूल्य बचे है न ही हमारा कानुन इसकी अनुमति देता है। यदि हम बालविवाह करते है तो सपरिवार कारावास की जिन्दगी का अनुभव करना पड सकता है तथा आजकल तो पझिउत जी को भी जेल में भेजने का प्रमाण भारतीय दण्ड संहिता में है।

उपरोक्त बातों पर विचार करने के बाद एक बात तो स्पष्ट है कि यदि कन्या का विवाह 11 या 12 वर्ष की आयु तक किया जाये तब ही गुरूशुद्धि की आवश्यकता है।

यदि हम 11 या 12 वर्ष के बाद कन्या विवाह करते है तो गुरूशुद्धि की आवश्यकता नहीं होगी इसके लिए हम यहाँ कई प्रमाण दे रहे है। अब हमें आशा है कि प्रबुद्ध पण्डितजन अपनी तर्कशक्ति का विकास करते हुए गुरूशुद्धि का प्रामाणिक निर्णय कर सकेंगे।

1. यदि कन्या की आयु 11 या 12 वर्ष की हो तो गुरू के निर्बल होने पर भी शास्त्रोक्त 'बृहस्पति शान्ति' तथा शकुनादि विचार के सम्पादन के साथ उसका विवाह निर्धारित करें।

द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिनं जायते।
पूजाभिः शकनैर्वापि तस्य लग्नं प्रदापेवत्।। :- शीघ्रबोध

2. दस वर्ष से अधिक आयु की कन्या रजस्वला हो जाने के कारण उसकी गुरूशुद्धि को देखकर चन्द्र व तारादि बल का विचार करना चाहिए।

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता।
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः।। :- व्यास...............

3. रजोदर्शन के पश्चा् गुरूशुद्धि की आवश्कता नहीं है। आठवें गुरू में त्रिगुणित पूजा करके विवाह कर सकते है।

रजस्वला यदा कन्या गुरूशुद्धि न चिन्तयेत्।
अष्टेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्।। :- बृहस्पति

4. किसी भी अवस्था की कन्या को 4-8-12 गुरू होने पर भी द्विगुणित पूजा करने पर विवाह में कोई दोष नहीं है।

कन्यार्क्षद्द्विसुतद्युनायनवमे श्रेष्ठो गुरूश्चान्यथा।
पूज्योऽष्टान्त्सुखेतिकाल अहतु प्राज्ञैर्द्विरर्च्यः शुभः।। :- उद्धाहतत्व

5. कन्या की उम्र सात वर्ष की हो जाने के भी पाँच वर्ष के बाद (12 वर्ष) उच्च या स्वराशि (कर्क, धनु, मीन) की अशुभ गुरू भी शुभ फलदायक होता है।

सप्ताब्दात्पंवर्षेषु स्वोच्चस्वर्क्षगतो यदि।
आशुभोऽपि शुभं दद्याब्छुभदर्क्षेषु किं पुनः।। :- ज्योतिर्निबन्ध

6. गौरी संज्ञक कन्या को गुरूबल, रोहिणी का यूर्सबल, कन्या को चन्द्रबल तथा रजस्वला को लग्नबल की आवश्यकता होती है।

देया गुरूबला गौरी, रोहिणी भानुमद्बला।
कन्या चन्द्रबला ग्राह्या ततो लग्नबलेतरा।। :-मुहूर्त गणपति

7. शुद्र, निषादि चतुर्थ वर्णो के लिए गुरूशुद्धि का चिन्तन अनिवार्य नहीं है।

केचिदाहुर्गुरोः शुद्धिर्नान्वेष्या गणकोत्तमै।
विवाहे त्वन्यादीनां चण्डालानां च पुल्कसाम्।। :- ज्योतिर्निबन्ध

निष्कर्ष :- उपरोक्त विषय पर प्रस्तुत प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्टहै कि वर्तमान काल में गुरूशुद्धि का आवश्यकता नहीं है। अतः कन्या रजस्वला हो जाये जो गुरूशुद्धि का विचार नहीं कीरना चाहिए। रजस्वला आरम्भ होने के पूर्व ही विवाह करना हो तो गुरूशुद्धि की आवश्यकता है।

सर्वत्र उपयोग हेतु

देया गुरूबला गौरी, रोहिणी भानुमद्बला।
कन्या चन्द्रबला ग्राह्या ततो लग्नबलेतरा।।

गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौजिबंधने।
पाणिग्रहे प्रवाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ।।

जीवराशि गतो सूर्यः यदि स्यातां पुनः पुनः।
व्रतबन्धविवाहादि शुभकर्माखिलं त्यजेत्।।

आदाने सम्प्रदाने च विवादेराजविग्रहे।
विवाहे च यात्रायां चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

विवहाचुडाव्रतबंधदीक्षा सीमंतकर्माणि वधुप्रवेशः।
नवान्नभोजेचगृहेप्रवेशश्चतुर्थ चन्द्रः शुभकान्तिदः स्यात्।।

रजस्वला यदा कन्या गुरूशुद्धि न चिन्तयेत्।
अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्।।

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवार्जिता।
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः।।

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाति मृगो मघा।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगल प्रदाः।।

❊ अथ प्रश्नेपित्रादिदोषविचारः ❊

पितृजनकृतदोषोदाहतृष्णाऽपि चिंता ज्वरवमन शिरोऽर्तिर्मेपिलग्नेऽगपीड़ा ॥ द्विजवरकृतभोज्यं तर्पणं पिंडदानं जलघटदिनपंच पिप्पलः पूजनीयः ॥१॥

प्रश्न कुण्डली में मेष लग्न आवे तो पितृ दोष समझना, उससे शरीर में दाह, तृष्णा, चिंता, ज्वर, उल्टी और मस्तक की पीड़ा होती है उसकी शान्ति के लिए ब्राह्मण भोजन, तर्पण, पिंडदान और पाँच दिनों तक एक एक घड़ा जल पीपल में डालना और उसकी पूजा करना इससे पितृ–दोष की शान्ति होती है। १

वृषे गोत्रदोषो ज्वरं तापतृष्णा बलं निर्बलं कर्णनेत्रे विकारः। कृते शक्तिपाठे च नैवेद्यदाने कृते क्षीरहोमादिके रोगनाशः ॥२॥

वृषभ लग्न आवे तो गोत्र का दोष जानना और उससे ज्वर, ताप, तृष्णा, शक्ति का नाश तथा कान और नेत्र का विकार होता है, उसकी शांति केलिये चण्डी पाठ, नैवेद्य और देवी के निमित्त क्षीर का होम करने से रोग का नाश होता है। २(देवी)

सदा देवीदोषो यदा युग्मलग्ने व्यथा हस्तयोरंगभंगो भ्रमश्च ॥ पिठस्थापनं पूजनं पिंडदानं शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्यापि कुर्यात् ॥३॥

मिथुन लग्न आवे तो देवी का दोष समझना उससे कमर में पीड़ा शरीर का टूटना और भ्रम होता है। उसकी शान्ति के लिए देवी का सिंहासन स्थापन करके पूजा करनी चाहिए। पिंडदान और गुग्गुल की १०८ आहुति अग्नि में देनी चाहिए।३ (महामाया)

कर्कोदये शाकिनीदोष उग्रो ह्यजीर्णवाता मुखशीर्षपीड़ा। नैवेद्यदानं पयसापि माषैर्घृतप्रदीपकृतदोषनाशः ॥४॥

कर्क लग्न आवे तो भयंकर शाकिनी दोष लगता है उससे अजीर्ण, वायु तथा मुख और सिर की पीड़ा होती है उसकी शान्ति के लिए दूध और उर्द (अडद) का नैवेद्य करना और घी का दीपक करना उससे दोषों का नाश होता है।४ (डाकिनी)

सिंहोदये प्रेतमलीनदोषो ह्यग्निप्रकोपं वमनातिसारम्। दर्भैः कृतं पुत्तलिकाविधानं भोज्यं च पिंडास्तिलतर्पणं च ॥५॥

सिंह लग्न आवे तो मलीन प्रेतों का दोष जानना, उससे अग्नि का प्रकोप, उल्टी और अतिसार होता है। दर्भ का पुत्तलविधान करके ब्राह्मणों को भोजन, पिंडदान और तिल से तर्पण करने से दोष की शान्ति होती है।५ (जलप्रेत दोष)

कन्याविलग्ने कृतकर्मदोषः प्रलापमूर्छाभ्रमदाहतापाः। षडांगजाप्ये दशमांशहोमे कृतेऽभिषेके खलु दोषनाशः ॥६॥

कन्या लग्न आवे तो पहले किये कर्मो का दोष जानना, उससे बकवास, मूर्छा, भ्रम, ताप और दाह उत्पन्न होता है। उसकी शान्ति के लिए शिव पंचाक्षर मंत्र का जप तथा उसका दशांश होम और अभिषेक करना चाहिये उससे दोष का नाश होता है।६ (ग्रह दोष)

तुले क्षेत्रपालकृतो दोषदुष्टो ज्वरश्चांगपीड़ा तथा नेत्ररक्तम्। घृतै रक्तपुष्पैश्च सिंदूरयुक्तं द्विजेंद्राय दानं तिलामाषलोहम् ॥७

तुला लग्न आवे तो क्षेत्रपाल, भैरव सम्बंधी दोष जानना। उससे ताप, अंग पीड़ा और नेत्र लाल रहते हैं। उसकी शांति के लिये घी, लाल पुष्प, सिंदूर, तिल उर्द और लोहे का ब्राह्मण को दान देना, उससे दोष की शान्ति होती है। ७ (भैरव)

वैतालदोषोऽलिलग्ने प्रकुर्यात् ज्वरप्रलापं भ्रमनेत्रपीड़ाम्। तस्य प्रशांत्यै करवीरपुष्पं शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्य प्रकुर्यात् ॥८

वृश्चिक लग्न आवे तो वैताल का दोष जानना, उससे ज्वर बकवास, भ्रम और नेत्र की पीड़ा होती है उसकी शान्ति के लिये कणेर के फूल और गुग्गुल सहित घी की १०८ आहुति देने से दोष का नाश होता है।८ (नाग)

महामारिदोषो धने चैव लग्ने शीर्षे व पीड़ा ज्वरो गात्रभंगः। तस्मात् कृत्वा पुत्तलं क्षेत्रपालं चंडीविधाने कृते दोषनाशः ॥९

धन लग्न आवे तो महामारी का दोष जानना, उससे मस्तक पीड़ा, ज्वर और शरीर का भंग होता है, उसकी शांति के लिये पुत्तल विधान करके क्षेत्रपाल का पूजन और चण्डी विधान करना उससे दोष की शान्ति होती है। ९ (बीमारी)

मृगे मार्गिणीक्षेत्रपालस्य दोषो सदा नेत्रभंगो ज्वरो देहभंगः। कृतं पुत्तलं रक्तपुष्पैर्युतं च कृतस्नानरुद्रीकृते दोषनाशः ॥१०॥

मकर लग्न आवे तो मार्गिणी और क्षेत्रपाल का दोष जानना उससे आँख में पीड़ा, ताप और शरीर का टूटना होता है। उसकी शान्ति के लिए स्नान करके दर्भ से बनाये पूतले की लाल पुष्प से पूजा करके रूद्राभिषेक करने से दोष का नाश होता है। १० (चंद्रिका)

घटे पूर्वजो गोत्रदेव्यादिदोषो ज्वरोद्वेगशोकातिसारस्तथैव ॥ जलं पिप्पले दीयते पिंडदानं तिलस्तर्पणं बह्म भोज्यादिकं च ॥११॥

कुंभ लग्न आवे तो पूर्वज का और गोत्र देवी का दोष जानना, उससे ताप उद्वेग, शोक, अतिसार वगैरह होता है। उसकी शांति के लिए पीपल को पानी डालना, पिण्डदान करना, तिलतर्पण और ब्राह्मण भोजन कराना ॥११ (प्रेत)

मीने शाकिनीकर्कशादोष उग्रो हृदि जाठरे दाहपीड़ा ज्वरश्च। कृते पारणं ब्रह्मभोज्यादिकं च शताष्टाहुतीर्गुग्गुलस्य प्रकुर्यात् ॥१२॥

मीन लग्न आवे तो कर्कशा शाकिनी का दोष जानना। उससे हृदय और पेट में पीड़ा, दाह तथा ज्वर होता है, उसकी शांति के लिए ब्रह्म भोजन कराना और गुग्गुल की १०८ आहुति देना ।१२(डाकिनी)

❊ नष्टवस्तु प्रश्नभावविचारः ❊

मेषे वृषे दिशेत्पूर्वं आग्नेय्यां मिथुने तथा। दक्षिणे कर्कटे ज्ञेयो नैऋत्यां सिंह ईक्षते ॥१३॥

मेष तथा वृषभ लग्न में वस्तु खोई हो तो वह वस्तु पूर्व दिशा में गई है। मिथुन लग्न में गई हो तो अग्नि कोण में, कर्क लग्न में गई हो तो दक्षिण में और सिंह में गई हो तो नैर्ऋत्य कोण में जानना।१३

कन्यायां उत्तरे ज्ञेयः प्रतीच्यां तुलवृश्चिके। धने चैव तु वायव्यांमुत्तरे मकरे घटे। मीन ईशानतो ज्ञेयस्तस्करो दिशि लक्षणम् ॥१४॥

कन्या लग्न में गई हो तो उत्तर में, तुला या वृश्चिक लग्न में पश्चिम में, धन में वायव्य कोण में, मकर तथा कुंभ में उत्तर दिशा में और मीन लग्न में खोई हो तो ईशान कोण में वह वस्तु गई है ऐसा जानना। उसी प्रकार चोर भी उन्हीं दिशाओं में होगा ऐसा समझना।१४

❊ पुनर्विवाह मुहूर्त्त ❊

सूर्य के महानक्षत्र से दिननक्षत्र तक अभिजित शिवाय गिनते पहले तीन नक्षत्रों में मरण, दूसरे में धनलाभ, तीसरे चौथे में मरण, पाँचवें में पुत्रलाभ, छट्ठे में मरण, सातवाँ में स्त्री के गुप्तभाग में बिगाड़, आठवाँ में धन और नववाँ में उन्नति होती है। (ब्रह्मपट)

सूर्य के नक्षत्र से अभिजित के साथ ही दिन के नक्षत्र तक गिनते ४, ११, १८, २५ ये नक्षत्र आवे तो मृत्यु होती है, बाकी के नक्षत्र शुभ जानना, पुनर्विवाह में ब्रह्मपट और रुद्रपट दोनों में शुभ नक्षत्र आवे तब पुनर्विवाह करना (रुद्रपट)।

अर्बुद श्री पंचांग जावाल, पं. जनार्दन ओझा, मो. 9001141150

क्र.सं.	प्रभु का नाम	राशि
१	ऋषभदेव	धनु
२	अजीतनाथ	वृषभ
३	संभवनाथ	मिथुन
४	अभिनन्दन	मिथुन
५	सुमतिनाथ	सिंह
६	पद्मप्रभुनाथ	कन्या
७	सुपार्श्वनाथ	तुला
८	चन्द्रप्रभु	वृश्चिक
९	सुविधिनाथ	धनु
१०	शीतलनाथ	धनु
११	श्रेयांशनाथ	मकर
१२	वासुपुज्य	कुंभ
१३	विमलनाथ	मीन
१४	अनंतनाथ	मीन
१५	धर्मनाथ	कर्क
१६	शांतिनाथ	मेष
१७	कुन्थुनाथ	वृषभ
१८	अरनाथ	मीन
१९	मल्लीनाथ	मेष
२०	मुनी सुव्रत	मकर
२१	नमीनाथ	मेष
२२	नेमीनाथ	कन्या
२३	पार्श्वनाथ	तुला
२४	महावीर	कन्या
२५	सीमन्धर	धनु

श्री तीर्थकर राशि मेलापक यंत्र

राशि-स्वामी	सर्वोतम ✔	श्रेष्ठतर ✔	श्रेष्ठ ✔	प्रीति ✔	शुभ ✔	सम ✔	मध्यम ✕	अशुभ ✕	शत्रु ✕	अतिशत्रु ✕
मेष-मंगल	१६,१९,२१	१५	१३,१४,१८	८	१२ ५ १,९,१०	७,२३	११,२० ३,४	२,१७	६,२२,२४	-
वृषभ-शुक्र	२,१७	१२	३,४	७,२३	६,२२,२४ ११,२० १३,१४,१८	८	-	१६,१९,२१	१,९,१०	५ १५
मिथुन-बुध	३,४	६,२२,२४	१,१७ १३,१४,१८	११,२०	१६,१९,२१ ५,७,२३	१,९,१०	१२	-	१५	८
कर्क-चन्द्र	१५	१६,१९,२१	७,२३	१,९,१०	२,१७ ६,२२,२४	११,२०	८ १३,१४,१८	-	३,४	१२
सिंह-सूर्य	५	८	१४ १,९,१०	१३,१४,१८	१६,१९,२१ ३,४ ६,२२,२४	-	-	१२	११,२० ७,२३	२,१७
कन्या-बुध	६,२२,२४	३,४	७,२३ १,९,१०	१२	२,१७ ५ ८	१३,१४,१८	११,२०	-	१६,१९,२१	१५
तुला-शुक्र	७,२३	११,२०	६,२२,२४	२,१७	१२ ६,२२,२४	१६,१९,२१	-	८ १,९,१०	१३,१४,१८ ५	१५
वृशि.-मंगल	८	५	१,९,१० १२	१६,१९,२१	११,२० १३,१४,१८	२,१७	१५	७,२३ ६,२२,२४	३,४	-
धनु-गुरू	१,९,१०	१३,१४,१८	६,२२,२४ ८	१५	१६,१९,२१ ५ १२	-	३,४	११,२० ७,२३	२,१७	-
मकर-शनि	११,२०	७,२३	१६, १९, २१ १२	३,४	२,१७ ८ १३,१४,१८	-	६,२२,२४	१,९,१०	५	१५
कुंभ-शनि	१२	२,१७	११,२०	६,२२,२४	७,२३ १,९,१०	८ १६,१९,२१	३,४	१३,१४,१८	१५	५
मीन-गुरू	१३,१४,१८	१,९,१०	१६,१९,२१	५	८ ११,२०	३,४ ६,२२,२४	१५	१२	७,२३	२,१७

गांव, व्यक्ति, अथवा मूल नायक भगवान के पास में बैठने वाले भगवान की लेनादेनी देखने का कोष्ठक ज्योतिष शास्त्र में गृह मैत्री के आधार पर तैयार किया गया है। उपरोक्त कोष्ठक में लिखे हुए अंक तीर्थकर भगवान के क्रम के अनुसार है। उदाहरण : १ अर्थात् ऋषभ देव, ५ अर्थात् सुमतिनाथ, १० अर्थात् शीतलनाथ, १६ अर्थात् शांतिनाथ

❋ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में रविवार का चौघड़िया ❋

दिनांक / मास	चंचल चौघड़िया प्रातः	लाभ–अमृत चौघड़िया प्रातः से मध्यान्ह	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह	दिनांक / मास	चंचल चौघड़िया प्रातः	लाभ–अमृत चौघड़िया प्रातः से मध्यान्ह	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह
२२ मार्च २६	०८।१५ से ०९।४५	०९।४५ से १२।४५	१२।२१ से १३।१०	१४।१६ से १५।४६	४ अक्टू.	०८।०३ से ०९।३१	०९।३१ से १२।२७	१२।०४ से १२।५०	१३।५५ से १५।२३
२९ मार्च	०८।०९ से ०९।४०	०९।४० से १२।४३	१२।१९ से १३।०८	१४।१५ से १५।४७	११ अक्टू.	०८।०५ से ०९।३२	०९।३२ से १२।२५	१२।०२ से १२।४८	१३।५२ से १५।१८
५ अप्रैल	०८।०३ से ०९।३६	०९।३६ से १२।४१	१२।१७ से १३।०६	१४।१४ से १५।४७	१८ अक्टू.	०८।०७ से ०९।३३	०९।३३ से १२।२३	१२।०१ से १२।४६	१३।४९ से १५।१४
१२ अप्रैल	०७।५७ से ०९।३१	०९।३१ से १२।३९	१२।१४ से १३।०४	१४।१३ से १५।४८	२५ अक्टू.	०८।१० से ०९।३४	०९।३४ से १२।२२	१२।०० से १२।४५	१३।४७ से १५।११
१९ अप्रैल	०७।५२ से ०९।२७	०९।२७ से १२।३८	१२।१२ से १३।०३	१४।१३ से १५।४८	१ नवम्बर	०८।१२ से ०९।३६	०९।३६ से १२।२२	१२।०० से १२।४४	१३।४५ से १५।०८
२६ अप्रैल	०७।४७ से ०९।२४	०९।२४ से १२।३६	१२।११ से १३।०२	१४।१३ से १५।४९	८ नवम्बर	०८।१६ से ०९।३८	०९।३८ से १२।२२	१२।०० से १२।४४	१३।४४ से १५।०६
३ मई	०७।४३ से ०९।२०	०९।२० से १२।३५	१२।०९ से १३।०१	१४।१३ से १५।५०	१५ नवम्बर	०८।२० से ०९।४१	०९।४१ से १२।२३	१२।०१ से १२।४४	१३।४४ से १५।०५
१० मई	०७।३९ से ०९।१८	०९।१८ से १२।३५	१२।०९ से १३।०१	१४।१३ से १५।५२	२२ नवम्बर	०८।२४ से ०९।४४	०९।४४ से १२।२४	१२।०३ से १२।४६	१३।४५ से १५।०५
१७ मई	०७।३७ से ०९।१६	०९।१६ से १२।३५	१२।०८ से १३।०१	१४।१४ से १५।५४	२९ नवम्बर	०८।२८ से ०९।४८	०९।४८ से १२।२७	१२।०५ से १२।४८	१३।४६ से १५।०६
२४ मई	०७।३५ से ०९।१५	०९।१५ से १२।३५	१२।०९ से १३।०२	१४।१५ से १५।५६	६ दिसम्बर	०८।३२ से ०९।५१	०९।५१ से १२।२९	१२।०८ से १२।५०	१३।४८ से १५।०७
३१ मई	०७।३४ से ०९।१५	०९।१५ से १२।३६	१२।०९ से १३।०३	१४।१७ से १५।५८	१३ दिसं.	०८।३७ से ०९।५५	०९।५५ से १२।३२	१२।११ से १२।५३	१३।५१ से १५।१०
७ जून	०७।३४ से ०९।१५	०९।१५ से १२।३७	१२।१० से १३।०४	१४।१९ से १६।००	२० दिसं.	०८।४१ से ०९।५९	०९।५९ से १२।३६	१२।१५ से १२।५७	१३।५४ से १५।१३
१४ जून	०७।३४ से ०९।१६	०९।१६ से १२।३९	१२।१२ से १३।०६	१४।२० से १६।०२	२७ दिसं.	०८।४४ से १०।०२	१०।०२ से १२।३९	१२।१८ से १३।००	१३।५८ से १५।१६
२१ जून	०७।३५ से ०९।१७	०९।१७ से १२।४०	१२।१३ से १३।०७	१४।२२ से १६।०३	३ जन. २७	०८।४६ से १०।०५	१०।०५ से १२।४३	१२।२२ से १३।०४	१४।०१ से १५।२०
२८ जून	०७।३७ से ०९।१९	०९।१९ से १२।४२	१२।१५ से १३।०९	१४।२३ से १६।०५	१० जनवरी	०८।४८ से १०।०७	१०।०७ से १२।४६	१२।२५ से १३।०७	१४।०५ से १५।२४
५ जुलाई	०७।३९ से ०९।२०	०९।२० से १२।४३	१२।१६ से १३।१०	१४।२४ से १६।०५	१७ जनवरी	०८।४९ से १०।०९	१०।०९ से १२।४८	१२।२७ से १३।१०	१४।०८ से १५।२८
१२ जुलाई	०७।४२ से ०९।२२	०९।२२ से १२।४४	१२।१७ से १३।११	१४।२५ से १६।०६	२४ जनवरी	०८।४८ से १०।०९	१०।०९ से १२।५०	१२।२९ से १३।१२	१४।११ से १५।३२
१९ जुलाई	०७।४४ से ०९।२४	०९।२४ से १२।४५	१२।१८ से १३।११	१४।२५ से १६।०५	३१ जनवरी	०८।४७ से १०।०९	१०।०९ से १२।५२	१२।३० से १३।१४	१४।१४ से १५।३५
२६ जुलाई	०७।४७ से ०९।२६	०९।२६ से १२।४५	१२।१८ से १३।११	१४।२४ से १६।०४	७ फरवरी	०८।४५ से १०।०७	१०।०७ से १२।५३	१२।३१ से १३।१५	१४।१५ से १५।३८
२ अगस्त	०७।४९ से ०९।२८	०९।२८ से १२।४५	१२।१८ से १३।११	१४।२३ से १६।०२	१४ फरवरी	०८।४१ से १०।०५	१०।०५ से १२।५३	१२।३० से १३।१५	१४।१७ से १५।४०
९ अगस्त	०७।५१ से ०९।२९	०९।२९ से १२।४४	१२।१८ से १३।१०	१४।२१ से १५।५९	२१ फरवरी	०८।३७ से १०।०२	१०।०६ से १२।५२	१२।३० से १३।१५	१४।१७ से १५।४२
१६ अगस्त	०७।५३ से ०९।३०	०९।३० से १२।४३	१२।१७ से १३।०८	१४।१९ से १५।५६	२८ फरवरी	०८।३२ से ०९।५९	०९।५९ से १२।५१	१२।२८ से १३।१४	१४।१७ से १५।४४
२३ अगस्त	०७।५५ से ०९।३०	०९।३० से १२।४१	१२।१६ से १३।०६	१४।१६ से १५।५२	७ मार्च	०८।२७ से ०९।५५	०९।५५ से १२।५०	१२।२६ से १३।१३	१४।१७ से १५।४५
३० अगस्त	०७।५६ से ०९।३१	०९।३१ से १२।३९	१२।१४ से १३।०४	१४।१३ से १५।४७	१४ मार्च	०८।२२ से ०९।५०	०९।५० से १२।४८	१२।२४ से १३।१२	१४।१७ से १५।४५
६ सितंबर	०७।५८ से ०९।३१	०९।३१ से १२।३७	१२।१२ से १३।०१	१४।१० से १५।४३	२१ मार्च	०८।१६ से ०९।४६	०९।४६ से १२।४६	१२।२२ से १३।१०	१४।१६ से १५।४६
१३ सितंबर	०७।५९ से ०९।३१	०९।३१ से १२।३४	१२।१० से १२।५९	१४।०६ से १५।३८	२८ मार्च	०८।१० से ०९।४१	०९।४१ से १२।४४	१२।१९ से १३।०८	१४।१५ से १५।४६
२० सितंबर	०८।०० से ०९।३१	०९।३१ से १२।३२	१२।०८ से १२।५६	१४।०२ से १५।३३	४ अप्रैल	०८।०४ से ०९।३६	०९।३६ से १२।४२	१२।१७ से १३।०६	१४।१४ से १५।४७
२७ सितंबर	०८।०२ से ०९।३१	०९।३१ से १२।२९	१२।०५ से १२।५३	१३।५८ से १५।२८	११ अप्रैल	०७।५८ से ०९।३२	०९।३२ से १२।४०	१२।१५ से १३।०५	१४।१४ से १५।४७

※ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में सोमवार का चौघड़िया ※

दिनांक / मास	अमृत चौघड़िया प्रातः	शुभ चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल, लाभ, अमृत चौघड़िया अपरान्ह	दिनांक / मास	अमृत चौघड़िया प्रातः	शुभ चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल, लाभ, अमृत चौघड़िया अपरान्ह
२३ मार्च २६	०६।४३ से ०८।१४	०९।४४ से ११।१५	१२।२१ से १३।०९	१४।१६ से १८।४७	५ अक्टू.	०६।३६ से ०८।०३	०९।३१ से १०।५९	१२।०३ से १२।५०	१३।५४ से १८।१८
३० मार्च	०६।३६ से ०८।०८	०९।४० से ११।११	१२।१९ से १३।०८	१४।१५ से १८।५०	१२ अक्टू.	०६।३९ से ०८।०५	०९।३२ से १०।५८	१२।०२ से १२।४८	१३।५१ से १८।११
६ अप्रैल	०६।२९ से ०८।०२	०९।३५ से ११।०८	१२।१६ से १३।०६	१४।१४ से १८।५३	१९ अक्टू.	०६।४२ से ०८।०७	०९।३३ से १०।५८	१२।०१ से १२।४६	१३।४९ से १८।०४
१३ अप्रैल	०६।२२ से ०७।५६	०९।३१ से ११।०५	१२।१४ से १३।०४	१४।१३ से १८।५६	२६ अक्टू.	०६।४६ से ०८।१०	०९।३४ से १०।५८	१२।०० से १२।४५	१३।४६ से १७।५९
२० अप्रैल	०६।१६ से ०७।५१	०९।२७ से ११।०२	१२।१२ से १३।०३	१४।१३ से १८।५९	२ नवम्बर	०६।५० से ०८।१३	०९।३६ से १०।५९	१२।०० से १२।४४	१३।४५ से १७।५४
२७ अप्रैल	०६।१० से ०७।४७	०९।२३ से ११।००	१२।१० से १३।०२	१४।१३ से १९।०२	९ नवम्बर	०६।५४ से ०८।१६	०९।३८ से ११।००	१२।०० से १२।४४	१३।४४ से १७।५०
४ मई	०६।०५ से ०७।४२	०९।२० से १०।५८	१२।०९ से १३।०१	१४।१३ से १९।०६	१६ नवम्बर	०६।५९ से ०८।२०	०९।४१ से ११।०२	१२।०१ से १२।४५	१३।४४ से १७।४७
११ मई	०६।०० से ०७।३९	०९।१८ से १०।५६	१२।०९ से १३।०१	१४।१४ से १९।०९	२३ नवम्बर	०७।०४ से ०८।२४	०९।४४ से ११।०५	१२।०३ से १२।४६	१३।४५ से १७।४५
१८ मई	०५।५७ से ०७।३६	०९।१६ से १०।५५	१२।०८ से १३।०१	१४।१४ से १९।१३	३० नवम्बर	०७।०९ से ०८।२९	०९।४८ से ११।०७	१२।०६ से १२।४८	१३।४६ से १७।४५
२५ मई	०५।५४ से ०७।३५	०९।१५ से १०।५५	१२।०९ से १३।०२	१४।१६ से १९।१६	७ दिसम्बर	०७।१४ से ०८।३३	०९।५२ से ११।११	१२।०९ से १२।५१	१३।४९ से १७।४५
१ जून	०५।५३ से ०७।३४	०९।१५ से १०।५५	१२।०९ से १३।०३	१४।१७ से १९।२०	१४ दिसं.	०७।१९ से ०८।३७	०९।५६ से ११।१४	१२।१२ से १२।५४	१३।५१ से १७।४७
८ जून	०५।५२ से ०७।३४	०९।१५ से १०।५६	१२।१० से १३।०४	१४।१९ से १९।२३	२१ दिसं.	०७।२३ से ०८।४१	१०।०० से ११।१८	१२।१५ से १२।५७	१३।५५ से १७।५०
१५ जून	०५।५३ से ०७।३४	०९।१६ से १०।५७	१२।१२ से १३।०६	१४।२० से १९।२५	२८ दिसं.	०७।२६ से ०८।४४	१०।०३ से ११।२१	१२।१९ से १३।०१	१३।५८ से १७।५४
२२ जून	०५।५४ से ०७।३६	०९।१७ से १०।५९	१२।१३ से १३।०७	१४।२२ से १९।२७	४ जन. २७	०७।२८ से ०८।४७	१०।०६ से ११।२४	१२।२२ से १३।०४	१४।०२ से १७।५८
२९ जून	०५।५६ से ०७।३७	०९।१९ से ११।००	१२।१५ से १३।०९	१४।२३ से १९।२८	११ जनवरी	०७।२९ से ०८।४८	१०।०८ से ११।२७	१२।२५ से १३।०७	१४।०६ से १८।०३
६ जुलाई	०५।५८ से ०७।४०	०९।२१ से ११।०२	१२।१६ से १३।१०	१४।२४ से १९।२८	१८ जनवरी	०७।२९ से ०८।४९	१०।०९ से ११।२९	१२।२७ से १३।१०	१४।०९ से १८।०९
१३ जुलाई	०६।०१ से ०७।४२	०९।२३ से ११।०३	१२।१७ से १३।११	१४।२५ से १९।२७	२५ जनवरी	०७।२७ से ०८।४८	१०।०९ से ११।३०	१२।२९ से १३।१२	१४।१२ से १८।१४
२० जुलाई	०६।०४ से ०७।४४	०९।२५ से ११।०५	१२।१८ से १३।११	१४।२५ से १९।२५	२ फरवरी	०७।२५ से ०८।४७	१०।०८ से ११।३०	१२।३० से १३।१४	१४।१४ से १८।१९
२७ जुलाई	०६।०८ से ०७।४७	०९।२६ से ११।०६	१२।१८ से १३।११	१४।२४ से १९।२२	८ फरवरी	०७।२१ से ०८।४४	१०।०७ से ११।३०	१२।३१ से १३।१५	१४।१६ से १८।२४
३ अगस्त	०६।११ से ०७।४९	०९।२८ से ११।०६	१२।१८ से १३।११	१४।२३ से १९।१८	१५ फरवरी	०७।१७ से ०८।४१	१०।०५ से ११।२९	१२।३० से १३।१५	१४।१७ से १८।२९
१० अगस्त	०६।१४ से ०७।५१	०९।२९ से ११।०६	१२।१८ से १३।१०	१४।२१ से १९।१३	२२ फरवरी	०७।११ से ०८।३७	१०।०२ से ११।२७	१२।२९ से १३।१५	१४।१७ से १८।३३
१७ अगस्त	०६।१७ से ०७।५३	०९।३० से ११।०६	१२।१७ से १३।०८	१४।१९ से १९।०८	१ मार्च	०७।०५ से ०८।३२	०९।५८ से ११।२५	१२।२८ से १३।१४	१४।१७ से १८।३७
२४ अगस्त	०६।२० से ०७।५५	०९।३० से ११।०५	१२।१५ से १३।०६	१४।१६ से १९।०१	८ मार्च	०६।५९ से ०८।२६	०९।५४ से ११।२२	१२।२६ से १३।१३	१४।१७ से १८।४०
३१ अगस्त	०६।२३ से ०७।५७	०९।३१ से ११।०५	१२।१४ से १३।०४	१४।१३ से १८।५५	१५ मार्च	०६।५२ से ०८।२१	०९।५० से ११।१९	१२।२४ से १३।११	१४।१७ से १८।४३
७ सितंबर	०६।२५ से ०७।५८	०९।३१ से ११।०४	१२।१२ से १३।०१	१४।०९ से १८।४७	२२ मार्च	०६।४५ से ०८।१५	०९।४५ से ११।१५	१२।२२ से १३।१०	१४।१६ से १८।४७
१४ सितंबर	०६।२८ से ०७।५९	०९।३१ से ११।०२	१२।०९ से १२।५८	१४।०५ से १८।४०	२९ मार्च	०६।३७ से ०८।०९	०९।४० से ११।१२	१२।१९ से १३।०८	१४।१५ से १८।५०
२१ सितंबर	०६।३० से ०८।०१	०९।३१ से ११।०१	१२।०७ से १२।५५	१४।०२ से १८।३३	५ अप्रैल	०६।३० से ०८।०३	०९।३६ से ११।०९	१२।१७ से १३।०६	१४।१४ से १८।५३
२८ सितंबर	०६।३३ से ०८।०२	०९।३१ से ११।००	१२।०५ से १२।५३	१३।५८ से १८।२५	१२ अप्रैल	०६।२३ से ०७।५७	०९।३१ से ११।०५	१२।१४ से १३।०५	१४।१४ से १८।५६

❊ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में मंगलवार का चौघड़िया ❊

दिनांक / मास	चंचल चौघड़िया प्रातः	लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह	दिनांक / मास	चंचल चौघड़िया प्रातः	लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह
२४ मार्च २६	०९।४४ से ११।१४	११।१४ से १४।१६	१२।२१ से १३।०९	१५।४६ से १७।१७	६ अक्टू.	०९।३१ से १०।५९	१०।५९ से १३।५४	१२।०३ से १२।५०	१५।२२ से १६।४९
३१ मार्च	०९।३९ से ११।११	११।११ से १४।१५	१२।१८ से १३।०७	१५।४७ से १७।१९	१३ अक्टू.	०९।३२ से १०।५८	१०।५८ से १३।५१	१२।०२ से १२।४८	१५।१७ से १६।४४
७ अप्रैल	०९।३४ से ११।०८	११।०८ से १४।१४	१२।१६ से १३।०६	१५।४७ से १७।२०	२० अक्टू.	०९।३३ से १०।५८	१०।५८ से १३।४८	१२।०० से १२।४६	१५।१३ से १६।३८
१४ अप्रैल	०९।३० से ११।०४	११।०४ से १४।१३	१२।१४ से १३।०४	१५।४८ से १७।२२	२७ अक्टू.	०९।३४ से १०।५८	१०।५८ से १३।४६	१२।०० से १२।४५	१५।१० से १६।३४
२१ अप्रैल	०९।२६ से ११।०२	११।०२ से १४।१३	१२।१२ से १३।०३	१५।४८ से १७।२४	३ नवम्बर	०९।३६ से १०।५९	१०।५९ से १३।४५	१२।०० से १२।४४	१५।०७ से १६।३०
२८ अप्रैल	०९।२३ से १०।५९	१०।५९ से १४।१३	१२।१० से १३।०२	१५।५० से १७।२६	१० नवम्बर	०९।३९ से ११।००	११।०० से १३।४४	१२।०० से १२।४४	१५।०६ से १६।२७
५ मई	०९।२० से १०।५७	१०।५७ से १४।१३	१२।०९ से १३।०१	१५।५१ से १७।२९	१७ नवम्बर	०९।४२ से ११।०२	११।०२ से १३।४४	१२।०२ से १२।४५	१५।०५ से १६।२६
१२ मई	०९।१७ से १०।५६	१०।५६ से १४।१४	१२।०९ से १३।०१	१५।५२ से १७।३१	२४ नवम्बर	०९।४५ से ११।०५	११।०५ से १३।४५	१२।०४ से १२।४६	१५।०५ से १६।२५
१९ मई	०९।१६ से १०।५५	१०।५५ से १४।१५	१२।०८ से १३।०२	१५।५४ से १७।३४	१ दिसम्बर	०९।४९ से ११।०८	११।०८ से १३।४७	१२।०६ से १२।४८	१५।०६ से १६।२५
२६ मई	०९।१५ से १०।५५	१०।५५ से १४।१६	१२।०९ से १३।०२	१५।५६ से १७।३७	८ दिसम्बर	०९।५२ से ११।११	११।११ से १३।४९	१२।०९ से १२।५१	१५।०८ से १६।२७
२ जून	०९।१५ से १०।५६	१०।५६ से १४।१७	१२।१० से १३।०३	१५।५८ से १७।३९	१५ दिसं.	०९।५६ से ११।१५	११।१५ से १३।५२	१२।१२ से १२।५४	१५।१० से १६।२९
९ जून	०९।१५ से १०।५६	१०।५६ से १४।१९	१२।११ से १३।०५	१६।०० से १७।४२	२२ दिसं.	१०।०० से ११।१८	११।१८ से १३।५५	१२।१६ से १२।५८	१५।१४ से १६।३२
१६ जून	०९।१६ से १०।५८	१०।५८ से १४।२१	१२।१२ से १३।०६	१६।०२ से १७।४४	२९ दिसं.	१०।०३ से ११।२२	११।२२ से १३।५९	१२।१९ से १३।०१	१५।१७ से १६।३६
२३ जून	०९।१७ से १०।५९	१०।५९ से १४।२२	१२।१४ से १३।०८	१६।०४ से १७।४५	५ जन. २७	१०।०६ से ११।२५	११।२५ से १४।०३	१२।२३ से १३।०५	१५।२१ से १६।४०
३० जून	०९।१९ से ११।०१	११।०१ से १४।२३	१२।१५ से १३।०९	१६।०५ से १७।४६	१२ जनवरी	१०।०८ से ११।२७	११।२७ से १४।०६	१२।२५ से १३।०८	१५।२५ से १६।४५
७ जुलाई	०९।२१ से ११।०२	११।०२ से १४।२४	१२।१६ से १३।१०	१६।०६ से १७।४७	१९ जनवरी	१०।०९ से ११।२९	११।२९ से १४।०९	१२।२८ से १३।१०	१५।२९ से १६।३९
१४ जुलाई	०९।२३ से ११।०४	११।०४ से १४।२५	१२।१७ से १३।११	१६।०५ से १७।४६	२६ जनवरी	१०।०९ से ११।३०	११।३० से १४।१२	१२।२९ से १३।१३	१५।३३ से १६।५४
२१ जुलाई	०९।२५ से ११।०५	११।०५ से १४।२५	१२।१८ से १३।११	१६।०५ से १७।४५	२ फरवरी	१०।०८ से ११।३०	११।३० से १४।१४	१२।३० से १३।१४	१५।३६ से १६।५८
२८ जुलाई	०९।२६ से ११।०६	११।०६ से १४।२४	१२।१८ से १३।११	१६।०३ से १७।४२	९ फरवरी	१०।०७ से ११।३०	११।३० से १४।१६	१२।२१ से १३।१५	१५।३९ से १७।०२
४ अगस्त	०९।२८ से ११।०६	११।०६ से १४।२३	१२।१८ से १३।११	१६।०१ से १७।३९	१६ फरवरी	१०।०४ से ११।२८	११।२८ से १४।१७	१२।३० से १३।१५	१५।४१ से १७।०५
११ अगस्त	०९।२९ से ११।०६	११।०६ से १४।२१	१२।१८ से १३।०९	१५।५८ से १७।३५	२३ फरवरी	१०।०१ से ११।२७	११।२७ से १४।१७	१२।२९ से १३।१५	१५।४३ से १७।०८
१८ अगस्त	०९।३० से ११।०६	११।०६ से १४।१८	१२।१७ से १३।०८	१५।५४ से १७।३१	२ मार्च	०९।५८ से ११।२४	११।२४ से १४।१७	१२।२८ से १३।१४	१५।४४ से १७।११
२५ अगस्त	०९।३० से ११।०५	११।०५ से १४।१५	१२।१५ से १३।०६	१५।५० से १७।२५	९ मार्च	०९।५३ से ११।२१	११।२१ से १४।१७	१२।२६ से १३।१३	१५।४५ से १७।१३
१ सितंबर	०९।३१ से ११।०४	११।०४ से १४।१२	१२।१३ से १३।०३	१५।४६ से १७।२०	१६ मार्च	०९।४९ से ११।१८	११।१८ से १४।१६	१२।२४ से १३।११	१५।४६ से १७।१५
८ सितंबर	०९।३१ से ११।०३	११।०३ से १४।०९	१२।११ से १३।०१	१५।४१ से १७।१४	२३ मार्च	०९।४४ से ११।१५	११।१५ से १४।१६	१२।२१ से १३।०९	१५।४६ से १७।१७
१५ सितंबर	०९।३१ से ११।०२	११।०२ से १४।०५	१२।०९ से १२।५८	१५।३६ से १७।०८	३० मार्च	०९।४० से ११।११	११।११ से १४।१५	१२।१९ से १३।०८	१५।४७ से १७।१८
२२ सितंबर	०९।३१ से ११।०१	११।०१ से १४।०१	१२।०७ से १२।५५	१५।३१ से १७।०१	६ अप्रैल	०९।३५ से ११।०८	११।०८ से १४।१४	१२।१६ से १३।०६	१५।४७ से १७।२०
२९ सितंबर	०९।३१ से ११।००	११।०० से १३।५७	१२।०५ से १२।५२	१५।२६ से १६।५५	❊ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥ ❊				

✻ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में बुधवार का चौघड़िया ✻

दिनांक / मास	लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	शुभ चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल चौघड़िया अपरान्ह	लाभ चौघड़िया सायं	दिनांक / मास	लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	शुभ चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल चौघड़िया अपरान्ह	लाभ चौघड़िया सायं
२५ मार्च २६	०६।४१ से ०९।४३	११।१४ से १२।४५	१५।४६ से १७।१७	१७।१७ से १८।४८	७ अक्टू.	०६।३६ से ०९।३१	१०।५९ से १२।२६	१५।२१ से १६।४८	१६।४८ से १८।१६
१ अप्रैल	०६।३४ से ०९।३८	११।१० से १२।४२	१५।४७ से १७।१९	१७।१९ से १८।५१	१४ अक्टू.	०६।४० से ०९।३२	१०।५८ से १२।२४	१५।१७ से १६।४३	१६।४३ से १८।०९
८ अप्रैल	०६।२७ से ०९।३४	११।०७ से १२।४०	१५।४७ से १७।२१	१७।२१ से १८।५४	२१ अक्टू.	०६।४३ से ०९।३३	१०।५८ से १२।२३	१५।१३ से १६।३८	१६।३८ से १८।०३
१५ अप्रैल	०६।२० से ०९।२९	११।०४ से १२।३९	१५।४८ से १७।२२	१७।२२ से १८।५७	२८ अक्टू.	०६।४७ से ०९।३४	१०।५८ से १२।२२	१५।१० से १६।३३	१६।३३ से १७।५७
२२ अप्रैल	०६।१४ से ०९।२६	११।०१ से १२।३७	१५।४९ से १७।२४	१७।२४ से १९।००	४ नवम्बर	०६।५१ से ०९।३६	१०।५९ से १२।२२	१५।०७ से १६।३०	१६।३० से १७।५२
२९ अप्रैल	०६।०८ से ०९।२२	१०।५९ से १२।३६	१५।५० से १७।२७	१७।२७ से १९।०३	११ नवम्बर	०६।५६ से ०९।३९	११।०१ से १२।२२	१५।०६ से १६।२७	१६।२७ से १७।४९
६ मई	०६।०३ से ०९।१९	१०।५७ से १२।३५	१५।५१ से १७।२९	१७।२९ से १९।०७	१८ नवम्बर	०७।०१ से ०९।४२	११।०३ से १२।२३	१५।०५ से १६।२५	१६।२५ से १७।४६
१३ मई	०५।५९ से ०९।१७	१०।५६ से १२।३५	१५।५३ से १७।३२	१७।३२ से १९।१०	२५ नवम्बर	०७।०६ से ०९।४५	११।०५ से १२।२५	१५।०५ से १६।२५	१६।२५ से १७।४५
२० मई	०५।५६ से ०९।१६	१०।५५ से १२।३५	१५।५४ से १७।३४	१७।३४ से १९।१४	२ दिसम्बर	०७।११ से ०९।४९	११।०८ से १२।२८	१५।०६ से १६।२५	१६।२५ से १७।४५
२७ मई	०५।५४ से ०९।१५	१०।५५ से १२।३६	१५।५७ से १७।३७	१७।३७ से १९।१७	९ दिसम्बर	०७।१६ से ०९।५३	११।१२ से १२।३१	१५।०८ से १६।२७	१६।२७ से १७।४६
३ जून	०५।५३ से ०९।१५	१०।५६ से १२।३७	१५।५९ से १७।४०	१७।४० से १९।२१	१६ दिसं.	०७।२० से ०९।५७	११।१५ से १२।३४	१५।११ से १६।२९	१६।२९ से १७।४८
६ जून	०५।५२ से ०९।१५	१०।५६ से १२।३८	१६।०१ से १७।४२	१७।४२ से १९।२३	२३ दिसं.	०७।२४ से १०।००	११।१९ से १२।३७	१५।१४ से १६।३३	१६।३३ से १७।५१
१७ जून	०५।५३ से ०९।१६	१०।५८ से १२।३९	१६।०२ से १७।४४	१७।४४ से १९।२६	३० दिसं.	०७।२६ से १०।०४	११।२२ से १२।४१	१५।१८ से १६।३७	१६।३७ से १७।५५
२४ जून	०५।५४ से ०९।१८	१०।५९ से १२।४१	१६।०४ से १७।४६	१७।४६ से १९।२७	६ जन. २७	०७।२८ से १०।०६	११।२५ से १२।४४	१५।२२ से १६।४१	१६।४१ से १८।००
१ जुलाई	०५।५७ से ०९।१९	११।०१ से १२।४२	१६।०५ से १७।४६	१७।४६ से १९।२८	१३ जनवरी	०७।२९ से १०।०८	११।२८ से १२।४७	१५।२६ से १६।४५	१६।४५ से १८।०५
८ जुलाई	०५।५९ से ०९।२१	११।०२ से १२।४३	१६।०६ से १७।४७	१७।४७ से १९।२८	२० जनवरी	०७।२९ से १०।०९	११।२९ से १२।४९	१५।३० से १६।५०	१६।५० से १८।१०
१५ जुलाई	०६।०२ से ०९।२३	११।०४ से १२।४४	१६।०५ से १७।४६	१७।४६ से १९।२६	२७ जनवरी	०७।२७ से १०।०९	११।३० से १२।५१	१५।३३ से १६।५४	१६।५४ से १८।१५
२२ जुलाई	०६।०५ से ०९।२५	११।०५ से १२।४५	१६।०४ से १७।४४	१७।४४ से १९।२४	३ फरवरी	०७।२४ से १०।०८	११।३० से १२।५२	१५।३६ से १६।५९	१६।५९ से १८।२१
२९ जुलाई	०६।०९ से ०९।२७	११।०६ से १२।४५	१६।०३ से १७।४२	१७।४२ से १९।२१	१० फरवरी	०७।२० से १०।०६	११।३० से १२।५३	१५।३९ से १७।०२	१७।०२ से १८।२५
५ अगस्त	०६।१२ से ०९।२८	११।०६ से १२।४४	१६।०१ से १७।३९	१७।३९ से १९।१७	१७ फरवरी	०७।१५ से १०।०४	११।२८ से १२।५३	१५।४१ से १७।०६	१७।०६ से १८।३०
१२ अगस्त	०६।१५ से ०९।२९	११।०६ से १२।४३	१५।५८ से १७।३५	१७।३५ से १९।१२	२४ फरवरी	०७।१० से १०।०१	११।२६ से १२।५२	१५।४३ से १७।०८	१७।०८ से १८।३४
१९ अगस्त	०६।१८ से ०९।३०	११।०६ से १२।४२	१५।५४ से १७।३०	१७।३० से १९।०६	३ मार्च	०७।०३ से ०९।५७	११।२४ से १२।५१	१५।४४ से १७।११	१७।११ से १८।३८
२६ अगस्त	०६।२१ से ०९।३०	११।०५ से १२।४०	१५।५० से १७।२५	१७।२५ से १९।००	१० मार्च	०६।५७ से ०९।५३	११।२१ से १२।४९	१५।४५ से १७।१३	१७।१३ से १८।४१
२ सितंबर	०६।२३ से ०९।३१	११।०४ से १२।३८	१५।४५ से १७।१९	१७।१९ से १८।५३	१७ मार्च	०६।५० से ०९।४८	११।१८ से १२।४७	१५।४६ से १७।१५	१७।१५ से १८।४४
९ सितंबर	०६।२६ से ०९।३१	११।०३ से १२।३६	१५।४० से १७।१३	१७।१३ से १८।४५	२४ मार्च	०६।४३ से ०९।४४	११।१४ से १२।४५	१५।४६ से १७।१७	१७।१७ से १८।४७
१६ सितंबर	०६।२८ से ०९।३१	११।०२ से १२।३३	१५।३६ से १७।०७	१७।०७ से १८।३८	३१ मार्च	०६।३५ से ०९।३९	११।११ से १२।४३	१५।४७ से १७।१९	१७।१९ से १८।५०
२३ सितंबर	०६।३१ से ०९।३१	११।०१ से १२।३१	१५।३१ से १७।००	१७।०० से १८।३०	✻ प्रियंगुलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्य सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।। ✻				
३० सितंबर	०६।३४ से ०९।३१	११।०० से १२।२८	१५।२६ से १७।५४	१६।५४ से १८।२३	ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात् ।।				

❊ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में गुरूवार का चौघड़िया ❊

दिनांक / मास	शुभ चौघड़िया प्रातः	चंचल, लाभ चौघड़िया मध्यान्ह	अभिजित चौघड़िया अपरान्ह	शुभ चौघड़िया सायं	दिनांक / मास	शुभ चौघड़िया प्रातः	चंचल, लाभ चौघड़िया मध्यान्ह	अभिजित चौघड़िया अपरान्ह	शुभ चौघड़िया सायं
२६ मार्च २६	०६।४० से ०८।११	११।१३ से १५।४६	१२।२० से १३।०९	१७।१७ से १८।४८	८ अक्टू.	०६।३७ से ०८।०४	१०।५९ से १५।२०	१२।०३ से १२।४९	१६।४८ से १८।१५
२ अप्रैल	०६।३३ से ०८।०५	११।१० से १५।४७	१२।१८ से १३।०७	१७।१९ से १८।५१	१५ अक्टू.	०६।४० से ०८।०६	१०।५८ से १५।१६	१२।०१ से १२।४७	१६।४२ से १८।०८
९ अप्रैल	०६।२६ से ०८।००	११।०७ से १५।४७	१२।१५ से १३।०५	१७।२१ से १८।५४	२२ अक्टू.	०६।४४ से ०८।०८	१०।५८ से १५।१२	१२।०० से १२।४५	१६।३७ से १८।०२
१६ अप्रैल	०६।१९ से ०७।५४	११।०४ से १५।४८	१२।१३ से १३।०४	१७।२३ से १८।५७	२९ अक्टू.	०६।४८ से ०८।११	१०।५८ से १५।०९	१२।०० से १२।४४	१६।३३ से १७।५६
२३ अप्रैल	०६।१३ से ०७।४९	११।०१ से १५।४९	१२।११ से १३।०२	१७।२५ से १९।०१	५ नवम्बर	०६।५२ से ०८।१४	१०।५९ से १५।०७	१२।०० से १२।४४	१६।२९ से १७।५२
३० अप्रैल	०६।०८ से ०७।४५	१०।५९ से १५।५०	१२।१० से १३।०२	१७।२७ से १९।०४	१२ नवम्बर	०६।५६ से ०८।१८	११।०१ से १५।०५	१२।०१ से १२।४४	१६।२७ से १७।४८
७ मई	०६।०३ से ०७।४१	१०।५७ से १५।५१	१२।०९ से १३।०१	१७।२९ से १९।०७	१९ नवम्बर	०७।०१ से ०८।२२	११।०३ से १५।०५	१२।०२ से १२।४५	१६।२५ से १७।४६
१४ मई	०५।५९ से ०७।३८	१०।५६ से १५।५३	१२।०८ से १३।०१	१७।३२ से १९।११	२६ नवम्बर	०७।०६ से ०८।२६	११।०६ से १५।०५	१२।०४ से १२।४७	१६।२५ से १७।४५
२१ मई	०५।५६ से ०७।३६	१०।५५ से १५।५५	१२।०८ से १३।०२	१७।३५ से १९।१४	३ दिसम्बर	०७।११ से ०८।३१	११।०९ से १५।०६	१२।०७ से १२।४९	१६।२६ से १७।४५
२८ मई	०५।५४ से ०७।३४	१०।५५ से १५।५७	१२।०९ से १३।०३	१७।३७ से १९।१८	१० दिसम्बर	०७।१६ से ०८।३५	११।१२ से १५।०८	१२।१० से १२।५२	१६।२७ से १७।४६
४ जून	०५।५३ से ०७।३४	१०।५६ से १५।५९	१२।१० से १३।०४	१७।४० से १९।२१	१७ दिसं.	०७।२० से ०८।३९	११।१६ से १५।११	१२।१३ से १२।५५	१६।३० से १७।४८
११ जून	०५।५२ से ०७।३४	१०।५७ से १६।०१	१२।११ से १३।०५	१७।४२ से १९।२४	२४ दिसं.	०७।२४ से ०८।४३	११।१९ से १५।१५	१२।१७ से १२।४९	१६।३३ से १७।५२
१८ जून	०५।५३ से ०७।३५	१०।५८ से १६।०३	१२।१२ से १३।०७	१७।४४ से १९।२६	३१ दिसं.	०७।२७ से ०८।४५	११।२३ से १५।१९	१२।२० से १३।०२	१६।३७ से १७।५६
२५ जून	०५।५५ से ०७।३६	१०।५९ से १६।०४	१२।१४ से १३।०८	१७।४६ से १९।२७	७ जन. २७	०७।२९ से ०८।४८	११।२६ से १५।२३	१२।२३ से १३।०६	१६।४२ से १८।०१
२ जुलाई	०५।५७ से ०७।३८	११।०१ से १६।०५	१२।१५ से १३।०९	१७।४७ से १९।२८	१४ जनवरी	०७।२९ से ०८।४९	११।२८ से १५।२७	१२।२६ से १३।०९	१६।४६ से १८।०६
९ जुलाई	०६।०० से ०७।४१	११।०३ से १६।०६	१२।१७ से १३।१०	१७।४७ से १९।२८	२१ जनवरी	०७।२८ से ०८।४९	११।२९ से १५।३०	१२।२८ से १३।११	१६।५१ से १८।११
१६ जुलाई	०६।०३ से ०७।४३	११।०४ से १६।०५	१२।१८ से १३।११	१७।४६ से १९।२६	२८ जनवरी	०७।२६ से ०८।४८	११।३० से १५।३४	१२।३० से १३।१३	१६।५५ से १८।१६
२३ जुलाई	०६।०६ से ०७।४६	११।०५ से १६।०४	१२।१८ से १३।११	१७।४४ से १९।२४	४ फरवरी	०७।२३ से ०८।४६	११।३० से १५।३७	१२।३० से १३।१४	१६।५९ से १८।२१
३० जुलाई	०६।०९ से ०७।४८	११।०६ से १६।०३	१२।१८ से १३।११	१७।४१ से १९।२०	११ फरवरी	०७।१९ से ०८।४३	११।२९ से १५।३९	१२।३१ से १३।१५	१७।०३ से १८।२६
६ अगस्त	०६।१२ से ०७।५०	११।०६ से १६।००	१२।१८ से १३।१०	१७।३८ से १९।१६	१८ फरवरी	०७।१५ से ०८।३९	११।२८ से १५।४१	१२।३० से १३।१५	१७।०६ से १८।३०
१३ अगस्त	०६।१५ से ०७।५२	११।०६ से १५।५७	१२।१७ से १३।०९	१७।३४ से १९।११	२५ फरवरी	०७।०९ से ०८।३५	११।२६ से १५।४३	१२।२९ से १३।१५	१७।०९ से १८।३४
२० अगस्त	०६।१८ से ०७।५४	११।०६ से १५।५३	१२।१६ से १३।०७	१७।२९ से १९।०५	४ मार्च	०७।०३ से ०८।२९	११।२३ से १५।४४	१२।२७ से १३।१४	१७।११ से १८।३८
२७ अगस्त	०६।२१ से ०७।५६	११।०५ से १५।४९	१२।१५ से १३।०५	१७।२४ से १८।५९	११ मार्च	०६।५६ से ०८।२४	११।२० से १५।४५	१२।२५ से १३।१२	१७।१३ से १८।४२
३ सितंबर	०६।२४ से ०७।५७	११।०४ से १५।४५	१२।१३ से १३।०३	१७।१८ से १८।५२	१८ मार्च	०६।४९ से ०८।१८	११।१७ से १५।४६	१२।२३ से १३।११	१७।१५ से १८।४५
१० सितंबर	०६।२६ से ०७।५९	११।०३ से १५।४०	१२।११ से १३।००	१७।१२ से १८।४४	२५ मार्च	०६।४१ से ०८।१२	११।१४ से १५।४६	१२।२० से १३।०९	१७।१७ से १८।४८
१७ सितंबर	०६।२९ से ०८।००	११।०२ से १५।३५	१२।०९ से १२।५७	१७।०६ से १८।३७	१ अप्रैल	०६।३४ से ०८।०६	११।१० से १५।४७	१२।१८ से १३।०७	१७।१९ से १८।५१
२४ सितंबर	०६।३१ से ०८।०१	११।०१ से १५।३०	१२।०६ से १२।५४	१७।०० से १८।२९	८ अप्रैल	०६।२७ से ०८।०१	११।०७ से १५।४७	१२।१६ से १३।०५	१७।२१ से १८।५४
१ अक्टूबर	०६।३४ से ०८।०२	१०।५९ से १५।२५	१२।०४ से १२।५२	१६।५३ से १८।२२	१५ अप्रैल	०६।२१ से ०७।५५	११।०४ से १५।४८	१२।१४ से १३।०४	१७।२२ से १८।५७

अर्बुद श्री पंचांग, अकादमी ऑफ वैदिक साईंस (रजि.) शिवोहम् महालक्ष्मी चौक, गली नं.3, नई आबादी, जावाल, (सिरोही) राज. 307801 मो.9001141150

❊ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में शुक्रवार का चौघड़िया ❊

दिनांक / मास	चंचल लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह	चंचल चौघड़िया सायं	दिनांक / मास	चंचल लाभ अमृत चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	शुभ चौघड़िया अपरान्ह	चंचल चौघड़िया सायं
२० मार्च २६	०६।४६ से ११।१६	१२।२२ से १३।१०	१२।४६ से १४।१६	१७।१६ से १८।४६	२ अक्टूबर	०६।३४ से १०।५९	१२।०४ से १२।५१	१२।२८ से १३।५६	१६।५३ से १८।२१
२७ मार्च	०६।३९ से ११।१३	१२।२० से १३।०८	१२।४४ से १४।१५	१७।१८ से १८।४९	९ अक्टू.	०६।३७ से १०।५८	१२।०२ से १२।४९	१२।२६ से १३।५३	१६।४७ से १८।१४
३ अप्रैल	०६।३२ से ११।०९	१२।१७ से १३।०७	१२।४२ से १४।१४	१७।१९ से १८।५२	१६ अक्टू.	०६।४१ से १०।५८	१२।०१ से १२।४७	१२।२४ से १३।५०	१६।४१ से १८।०७
१० अप्रैल	०६।२५ से ११।०६	१२।१५ से १३।०५	१२।४० से १४।१४	१७।२१ से १८।५५	२३ अक्टू.	०६।४४ से १०।५८	१२।०० से १२।४५	१२।२३ से १३।४७	१६।३६ से १८।०१
१७ अप्रैल	०६।१८ से ११।०३	१२।१३ से १३।०३	१२।३८ से १४।१३	१७।२३ से १८।५८	३० अक्टू.	०६।४८ से १०।५८	१२।०० से १२।४४	१२।२२ से १३।४५	१६।३२ से १७।५६
२४ अप्रैल	०६।१२ से ११।०१	१२।११ से १३।०२	१२।३७ से १४।१३	१७।२५ से १९।०१	६ नवम्बर	०६।५२ से ११।००	१२।०० से १२।४४	१२।२२ से १३।४४	१६।२९ से १७।५१
१ मई	०६।०७ से १०।५८	१२।१० से १३।०२	१२।३६ से १४।१३	१७।२७ से १९।०४	१३ नवम्बर	०६।५७ से ११।०१	१२।०१ से १२।४४	१२।२३ से १३।४४	१६।२७ से १७।४८
८ मई	०६।०२ से १०।५७	१२।०९ से १३।०१	१२।३५ से १४।१३	१७।३० से १९।०८	२० नवम्बर	०७।०२ से ११।०३	१२।०२ से १२।४५	१२।२४ से १३।४४	१६।२५ से १७।४६
१५ मई	०५।५८ से १०।५६	१२।०८ से १३।०१	१२।३५ से १४।१४	१७।३२ से १९।११	२७ नवम्बर	०७।०७ से ११।०६	१२।०५ से १२।४७	१२।२६ से १३।४६	१६।२५ से १७।४५
२२ मई	०५।५५ से १०।५५	१२।०९ से १३।०२	१२।३५ से १४।१५	१७।३५ से १९।१५	४ दिसम्बर	०७।१२ से ११।०९	१२।०७ से १२।५०	१२।२८ से १३।४८	१६।२६ से १७।४५
२९ मई	०५।५३ से १०।५५	१२।०९ से १३।०३	१२।३६ से १४।१६	१७।३८ से १९।१८	११ दिसम्बर	०७।१७ से ११।१३	१२।११ से १२।५२	१२।३१ से १३।५०	१६।२८ से १७।४६
५ जून	०५।५२ से १०।५६	१२।१० से १३।०४	१२।३७ से १४।१८	१७।४० से १९।२१	१८ दिसं.	०७।२१ से ११।१६	१२।१४ से १२।५६	१२।३५ से १३।५३	१६।३० से १७।४९
१२ जून	०५।५२ से १०।५७	१२।११ से १३।०५	१२।३८ से १४।२०	१७।४३ से १९।२४	२५ दिसं.	०७।२५ से ११।२०	१२।१७ से १२।५९	१२।३८ से १३।५७	१६।३४ से १७।५२
१९ जून	०५।५३ से १०।५८	१२।१३ से १३।०७	१२।४० से १४।२१	१७।४५ से १९।२६	१ जन. २७	०७।२७ से ११।२३	१२।२१ से १३।०३	१२।४२ से १४।००	१६।३८ से १७।५६
२६ जून	०५।५५ से ११।००	१२।१४ से १३।०८	१२।४१ से १४।२३	१७।४६ से १९।२७	८ जनवरी	०७।२९ से ११।२६	१२।२४ से १३।०६	१२।४५ से १४।०४	१६।४२ से १८।०१
३ जुलाई	०५।५७ से ११।०१	१२।१६ से १३।१०	१२।४३ से १४।२४	१७।४७ से १९।२८	१५ जनवरी	०७।२९ से ११।२८	१२।२६ से १३।०९	१२।४८ से १४।०७	१६।४७ से १८।०६
१० जुलाई	०६।०० से ११।०३	१२।१७ से १३।११	१२।४४ से १४।२५	१७।४६ से १९।२७	२२ जनवरी	०७।२८ से ११।३०	१२।२८ से १३।११	१२।५० से १४।१०	१६।५१ से १८।१२
१७ जुलाई	०६।०३ से ११।०४	१२।१८ से १३।११	१२।४४ से १४।२५	१७।४६ से १९।२६	२९ जनवरी	०७।२६ से ११।३०	१२।३० से १३।१३	१२।५२ से १४।१३	१६।५६ से १८।१७
२४ जुलाई	०६।०६ से ११।०५	१२।१८ से १३।११	१२।४५ से १४।२४	१७।४४ से १९।२३	५ फरवरी	०७।२३ से ११।३०	१२।३१ से १३।१४	१२।५२ से १४।१५	१७।०० से १८।२२
३१ जुलाई	०६।१० से ११।०६	१२।१८ से १३।११	१२।४५ से १४।२३	१७।४१ से १९।२०	१२ फरवरी	०७।१९ से ११।२९	१२।३० से १३।१५	१२।५३ से १४।१६	१७।०३ से १८।२७
७ अगस्त	०६।१३ से ११।०६	१२।१८ से १३।१०	१२।४४ से १४।२२	१७।३८ से १९।१५	१९ फरवरी	०७।१४ से ११।२८	१२।३० से १३।१५	१२।५२ से १४।१७	१७।०६ से १८।३१
१४ अगस्त	०६।१६ से ११।०६	१२।१७ से १३।०९	१२।४३ से १४।२०	१७।३३ से १९।१०	२६ फरवरी	०७।०८ से ११।२६	१२।२९ से १३।१४	१२।५१ से १४।१७	१७।०९ से १८।३५
२१ अगस्त	०६।१९ से ११।०६	१२।१६ से १३।०७	१२।४१ से १४।१७	१७।२८ से १९।०४	५ मार्च	०७।०२ से ११।२३	१२।२७ से १३।१३	१२।५० से १४।१७	१७।१२ से १८।३९
२८ अगस्त	०६।२१ से ११।०५	१२।१४ से १३।०५	१२।४० से १४।१४	१७।२३ से १८।५८	१२ मार्च	०६।५५ से ११।२०	१२।२५ से १३।१२	१२।४८ से १४।१७	१७।१४ से १८।४२
४ सितंबर	०६।२४ से ११।०४	१२।१२ से १३।०२	१२।३७ से १४।११	१७।१७ से १८।५१	१९ मार्च	०६।४८ से ११।१७	१२।२३ से १३।१०	१२।४६ से १४।१६	१७।१६ से १८।४५
११ सितंबर	०६।२७ से ११।०३	१२।१० से १२।५९	१२।३५ से १४।०७	१७।११ से १८।४३	२६ मार्च	०६।४० से ११।१३	१२।२० से १३।०९	१२।४४ से १४।१५	१७।१७ से १८।४८
१८ सितंबर	०६।२९ से ११।०२	१२।०८ से १२।५७	१२।३२ से १४।०३	१७।०५ से १८।३६	२ अप्रैल	०६।३३ से ११।१०	१२।१८ से १३।०७	१२।४२ से १४।१५	१७।१९ से १८।५१
२५ सितंबर	०६।३२ से ११।००	१२।०६ से १२।५४	१२।३० से १४।००	१६।५९ से १८।२८	९ अप्रैल	०६।२६ से ११।०७	१२।१५ से १३।०५	१२।४० से १४।१४	१७।२१ से १८।५४

✻ विक्रम संवत् २०८३ (सन् २०२६-२०२७) में शनिवार का चौघड़िया ✻

दिनांक / मास	शुभ चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल चौघड़िया अपरान्ह	लाभ अमृत चौघड़िया सायं	दिनांक / मास	शुभ चौघड़िया प्रातः	अभिजित चौघड़िया मध्यान्ह	चंचल चौघड़िया अपरान्ह	लाभ अमृत चौघड़िया सायं
२१ मार्च २६	०८।१५ से ०९।४६	१२।२२ से १३।१०	१२।४६ से १४।१६	१४।१६ से १७।१६	३ अक्टूबर	०८।०३ से ०९।३१	१२।०४ से १२।५१	१२।२७ से १३।५५	१३।५५ से १६।५२
२८ मार्च	०८।१० से ०९।४१	१२।१९ से १३।०८	१२।४४ से १४।१५	१४।१५ से १७।१८	१० अक्टू.	०८।०५ से ०९।३२	१२।०२ से १२।४८	१२।२५ से १३।५२	१३।५२ से १६।४६
४ अप्रैल	०८।०४ से ०९।३६	१२।१७ से १३।०६	१२।४२ से १४।१४	१४।१४ से १७।२०	१७ अक्टू.	०८।०७ से ०९।३२	१२।०१ से १२।४६	१२।२४ से १३।४९	१३।४९ से १६।४१
११ अप्रैल	०७।५८ से ०९।३२	१२।१५ से १३।०५	१२।४० से १४।१४	१४।१४ से १७।२१	२४ अक्टू.	०८।०९ से ०९।३४	१२।०० से १२।४५	१२।२२ से १३।४७	१३।४७ से १६।३६
१८ अप्रैल	०७।५३ से ०९।२८	१२।१३ से १३।०३	१२।३८ से १४।१३	१४।१३ से १७।२३	३१ अक्टू.	०८।१२ से ०९।३५	१२।०० से १२।४४	१२।२२ से १३।४५	१३।४५ से १६।३२
२५ अप्रैल	०७।४८ से ०९।२४	१२।११ से १३।०२	१२।३७ से १४।१३	१४।१३ से १७।२५	७ नवम्बर	०८।१५ से ०९।३८	१२।०० से १२।४४	१२।२२ से १३।४४	१३।४४ से १६।२९
२ मई	०७।४४ से ०९।२१	१२।१० से १३।०२	१२।३६ से १४।१३	१४।१३ से १७।२८	१४ नवम्बर	०८।१९ से ०९।४०	१२।०१ से १२।४४	१२।२३ से १३।४४	१३।४४ से १६।२६
९ मई	०७।४० से ०९।१८	१२।०९ से १३।०१	१२।३५ से १४।१३	१४।१३ से १७।३०	२१ नवम्बर	०८।२३ से ०९।४३	१२।०३ से १२।४६	१२।२४ से १३।४४	१३।४४ से १६।२५
१६ मई	०७।३७ से ०९।१६	१२।०८ से १३।०१	१२।३५ से १४।१४	१४।१४ से १७।३३	२८ नवम्बर	०८।२७ से ०९।४७	१२।०५ से १२।४७	१२।२६ से १३।४६	१३।४६ से १६।२५
२३ मई	०७।३५ से ०९।१५	१२।०९ से १३।०२	१२।३५ से १४।१५	१४।१५ से १७।३५	५ दिसम्बर	०८।३२ से ०९।५१	१२।०८ से १२।५०	१२।२९ से १३।४८	१३।४८ से १६।२६
३० मई	०७।३४ से ०९।१५	१२।०९ से १३।०३	१२।३६ से १४।१७	१४।१७ से १७।३८	१२ दिसम्बर	०८।३६ से ०९।५५	१२।११ से १२।५३	१२।३२ से १३।५१	१३।५१ से १६।२८
६ जून	०७।३४ से ०९।१५	१२।१० से १३।०४	१२।३७ से १४।१८	१४।१८ से १७।४१	१९ दिसं.	०८।४० से ०९।५८	१२।१४ से १२।५६	१२।३५ से १३।५४	१३।५४ से १६।३१
१३ जून	०७।३४ से ०९।१५	१२।११ से १३।०६	१२।३८ से १४।२०	१४।२० से १७।४३	२६ दिसं.	०८।४३ से १०।०२	१२।१८ से १३।००	१२।३९ से १३।५७	१३।५७ से १६।३४
२० जून	०७।३५ से ०९।१७	१२।१३ से १३।०७	१२।४० से १४।२२	१४।२२ से १७।४५	२ जन. २७	०८।४६ से १०।०५	१२।२१ से १३।०३	१२।४२ से १४।०१	१४।०१ से १६।३४
२७ जून	०७।३७ से ०९।१८	१२।१४ से १३।०९	१२।४१ से १४।२३	१४।२३ से १७।४६	९ जनवरी	०८।४८ से १०।०७	१२।२४ से १३।०७	१२।४५ से १४।०५	१४।०५ से १६।४३
४ जुलाई	०७।३९ से ०९।२०	१२।१६ से १३।१०	१२।४३ से १४।२४	१४।२४ से १७।४७	१६ जनवरी	०८।४९ से १०।०९	१२।२७ से १३।०९	१२।४८ से १४।०८	१४।०८ से १६।४७
११ जुलाई	०७।४१ से ०९।२२	१२।१७ से १३।११	१२।४४ से १४।२५	१४।२५ से १७।४६	२३ जनवरी	०८।४८ से १०।०९	१२।२९ से १३।१२	१२।५० से १४।११	१४।११ से १६।५२
१८ जुलाई	०७।४४ से ०९।२४	१२।१८ से १३।११	१२।४५ से १४।२५	१४।२५ से १७।४५	३० जनवरी	०८।४७ से १०।०९	१२।३० से १३।१३	१२।५२ से १४।१३	१४।१३ से १६।५६
२५ जुलाई	०७।४६ से ०९।२६	१२।१८ से १३।११	१२।४५ से १४।२४	१४।२४ से १७।४३	६ फरवरी	०८।४५ से १०।०७	१२।३१ से १३।१५	१२।५३ से १४।१५	१४।१५ से १७।००
१ अगस्त	०७।४९ से ०९।२७	१२।१८ से १३।११	१२।४५ से १४।२३	१४।२३ से १७।४१	१३ फरवरी	०८।४२ से १०।०५	१२।३० से १३।१५	१२।५३ से १४।१६	१४।१६ से १७।०४
८ अगस्त	०७।५१ से ०९।२९	१२।१८ से १३।१०	१२।४४ से १४।२२	१४।२२ से १७।३७	२० फरवरी	०८।३८ से १०।०३	१२।३० से १३।१५	१२।५२ से १४।१७	१४।१७ से १७।०७
१५ अगस्त	०७।५३ से ०९।३०	१२।१७ से १३।०९	१२।४३ से १४।१९	१४।१९ से १७।३३	२७ फरवरी	०८।३३ से ०९।५९	१२।२८ से १३।१४	१२।५१ से १४।१७	१४।१७ से १७।१०
२२ अगस्त	०७।५५ से ०९।३०	१२।१६ से १३।०७	१२।४१ से १४।१७	१४।१७ से १७।२८	६ मार्च	०८।२८ से ०९।५५	१२।२७ से १३।१३	१२।५० से १४।१७	१४।१७ से १७।१२
२९ अगस्त	०७।५६ से ०९।३१	१२।१४ से १३।०४	१२।३९ से १४।१४	१४।१४ से १७।२२	१३ मार्च	०८।२२ से ०९।५१	१२।२५ से १३।१२	१२।४८ से १४।१७	१४।१७ से १७।१४
५ सितंबर	०७।५८ से ०९।३१	१२।१२ से १३।०२	१२।३७ से १४।१०	१४।१० से १७।१६	२० मार्च	०८।१७ से ०९।४६	१२।२२ से १३।१०	१२।४६ से १४।१६	१४।१६ से १७।१६
१२ सितंबर	०७।५९ से ०९।३१	१२।१० से १२।५९	१२।३५ से १४।०६	१४।०६ से १७।१०	२७ मार्च	०८।११ से ०९।४२	१२।२० से १३।०८	१२।४४ से १४।१५	१४।१५ से १७।१८
१९ सितंबर	०८।०० से ०९।३१	१२।०८ से १२।५६	१२।३२ से १४।०३	१४।०३ से १७।०४	३ अप्रैल	०८।०५ से ०९।३७	१२।१७ से १३।०७	१२।४२ से १४।१४	१४।१४ से १७।१९
२६ सितंबर	०८।०१ से ०९।३१	१२।०६ से १२।५३	१२।३० से १३।५९	१३।५९ से १६।५८	✻ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ✻				

✻ गुरू शुक्र अस्त एवं विविध समय शुद्धि विवेचना ✻

१. **मीन संक्रान्ति मलमास** – संवत् २०८२ चैत्र कृष्ण पक्ष १० शनिवार ता.१४.३.२०२६ से संवत् २०८३ वैशाख कृष्ण पक्ष १२ मंगलवार ता.१४.४.२०२६ तक मल मास रहेगा।

२. **अधिक मास** – संवत् २०८३ प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १ रविवार ता.१७.५.२०२६ से द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३० सोमवार ता.१५.६.२०२६ तक अधिक मास रहेगा।

३. **गुरू वृद्धत्व** – संवत् २०८३ आषाढ कृष्ण पक्ष १४ सोमवार ता.१३.७.२०२६ से आषाढ़ शुक्ल पक्ष २ गुरूवार ता.१६.७.२०२६ तक गुरू का वृद्धत्व रहेगा।

४. **गुरू अस्तोदय** – संवत् २०८३ आषाढ शुक्ल पक्ष २ गुरूवार ता.१६.७.२०२६ से श्रावण कृष्ण पक्ष १० शनिवार ता.८.८.२०२६ तक गुरू अस्त रहेगा।

५. **गुरू बाल्यत्व** – संवत् २०८३ श्रावण कृष्ण पक्ष १० शनिवार ता.८.८.२०२६ से श्रावण कृष्ण पक्ष १४ मंगलवार ता.११.८.२०२६ तक गुरू का बाल्यत्व रहेगा।

६. **श्री हरि देवशयन कालांश** – संवत् २०८३ आषाढ शुक्ल पक्ष ११ शनिवार ता.२५.७.२०२६ से कार्तिक शुक्ल पक्ष १० शुक्रवार ता.२०.११.२०२५ पर्यंत एवं संक्रान्ति से आषाढ शुक्ल पक्ष २ गुरूवार ता.१६.७.२०२६ से कार्तिक शुक्ल पक्ष ७ सोमवार ता.१६.११.२०२६ तक देवशयन रहेगा।

७. **महालय श्राद्ध पक्ष** – संवत् २०८३ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ शनिवार ता.२६.९.२०२६ से आश्विन कृष्ण पक्ष ३० शनिवार ता.१०.१०.२०२६ तक श्राद्ध पितृ पक्ष रहेगा।

८. **शुक्र वृद्धत्व** – संवत् २०८३ आश्विन शुक्ल पक्ष १ रविवार ता.११.१०.२०२६ से आश्विन शुक्ल पक्ष ४ ता.१४.१०.२०२६ तक शुक्र का वृद्धत्व रहेगा।

९. **शुक्र अस्तोदय** – संवत् २०८३ आश्विन शुक्ल पक्ष ४ बुधवार ता.१४.१०.२०२६ से शुक्रतारा अस्त रचना का बनते कार्तिक कृष्ण पक्ष ६ शनिवार ता.३१.१०.२०२६ तक शुक्र अस्त रहेगा।

१०. **शुक्र बाल्यत्व** – संवत् २०८३ कार्तिक कृष्ण पक्ष ६ शनिवार ता.३१.१०.२०२६ से कार्तिक कृष्ण पक्ष ९ मंगलवार ता.३.११.२०२६ तक शुक्र का बाल्यत्व रहेगा।

११. **धनु संक्रान्ति मल मास** – संवत् २०८३ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ७ बुधवार ता.१६.१२.२०२६ से प्रारंभ होकर भावी पौष शुक्ल पक्ष ६ गुरूवार ता.१४.१.२०२७ तक मल मास रहेगा।

१२. **होलाष्टक** – संवत् २०८३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार ता.१६.३.२०२७ से फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ रविवार ता.२१.३.२०२७ तक होलाष्टक रहेगा।

१३. **मीन संक्रान्ति मल मास** – संवत् २०८३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ७ सोमवार ता.१५.३.२०२७ से संवत् २०८४ चैत्र शुक्ल पक्ष ८ बुधवार ता.१४.४.२०२७ तक मल मास रहेगा।

✻ दोष सहित (अशुद्ध) विवाह मुहूर्त्त २०८३ ✻

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	दोष
वैशाख कृष्ण पक्ष १३	बुधवार	उभा	१५.४.२६	क्षीण चन्द्रः
वैशाख कृष्ण पक्ष १४	गुरूवार	उभा/रेवती	१६.४.२६	क्षीण चन्द्रः
वैशाख कृष्ण पक्ष ३०	शुक्रवार	रेवती/अश्विनी	१७.४.२६	क्षीण चन्द्रः
वैशाख शुक्ल पक्ष १	शनिवार	अश्विनी	१८.४.२६	क्षीण चन्द्रः
वैशाख शुक्ल पक्ष २	रविवार	रोहिणी	१९.४.२६	लग्नाऽभावः
वैशाख शुक्ल पक्ष ३	सोमवार	मृगशिरा	२०.४.२६	लग्नाऽभावः
वैशाख शुक्ल पक्ष ९	शनिवार	मघा	२५.४.२६	लग्नाऽभावः
वैशाख शुक्ल पक्ष ११	सोमवार	उफा	२७.४.२६	बुध एवं पाप ग्रह मंगल वेधः
वैशाख शुक्ल पक्ष १२	मंगलवार	उफा	२८.४.२६	बुध एवं पाप ग्रह मंगल वेधः
वैशाख शुक्ल पक्ष १२	मंगलवार	हस्त	२८.४.२६	पाप ग्रह शनि वेधः
वैशाख शुक्ल पक्ष १३	बुधवार	हस्त	२९.४.२६	पाप ग्रह शनि वेधः
वैशाख शुक्ल पक्ष १४	गुरूवार	स्वाति	३०.४.२६	पाप ग्रह राहु वेधः, भद्रा
वैशाख शुक्ल पक्ष १५	शुक्रवार	स्वाति	१.५.२६	पाप ग्रह राहु वेधः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष २	रविवार	अनुराधा	३.५.२६	पाप ग्रह सूर्य वेधः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३	सोमवार	अनुराधा	४.५.२६	पाप ग्रह सूर्य वेधः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६	शुक्रवार	श्रवण	८.५.२६	पाप ग्रह केतु वेधः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ७	शनिवार	श्रवण	९.५.२६	पाप ग्रह केतु वेधः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ७	शनिवार	धनिष्ठा	९.५.२६	लग्नाऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १०	मंगलवार	उभा	१२.५.२६	पाप ग्रह शनि युतिः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ११	बुधवार	उभा	१३.५.२६	पाप ग्रह शनि युतिः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ११	बुधवार	रेवती	१३.५.२६	मृत्यु पंचकः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १२	गुरूवार	रेवती/अश्विनी	१४.५.२६	मासान्तः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १३	शुक्रवार	अश्विनी	१५.५.२६	संक्रान्तिः, क्षीण चन्द्रः
		अग्रे पुरूषोत्तम मासः		
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७	रविवार	उफा	२१.६.२६	पापग्रह शनि वेधः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८	सोमवार	उफा	२२.६.२६	पापग्रह शनि वेधः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८	सोमवार	हस्त	२२.६.२६	लग्नाऽभावः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १०	बुधवार	स्वाति	२४.६.२६	पापग्रह राहु वेधः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ११	गुरूवार	स्वाति	२५.६.२६	पापग्रह राहु वेधः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १४	रविवार	मूल	२८.६.२६	बुध पाद वेधः, भद्रा
आषाढ़ कृष्ण पक्ष १	बुधवार	उषा	०१.७.२६	लग्नाऽभावः, वैधृतिः

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	दोष
आषाढ़ कृष्ण पक्ष २	गुरूवार	उषा	०२.७.२६	वैधृतिः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष २	गुरूवार	श्रवण	०२.७.२६	वैधृतिः, भद्रा, पाप ग्रह केतु वेधः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष ३	शुक्रवार	श्रवण	०३.७.२६	पापग्रह केतु वेधः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष ७	मंगलवार	रेवती	०७.७.२६	पापग्रह शनि युतिः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८	बुधवार	रेवती	०८.७.२६	पापग्रह शनि युतिः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८	बुधवार	अश्विनी	०८.७.२६	लग्नाऽभावः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष १२	शनिवार	रोहिणी	११.७.२६	पापग्रह भौम युतिः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष १३	रविवार	रोहिणी/मृगशिरा	१२.७.२६	क्षीण चन्द्रः
आषाढ़ कृष्ण पक्ष १४	सोमवार	मृगशिरा	१३.७.२६	क्षीण चन्द्रः
अग्रे देवशयनः				
श्रावण कृष्ण पक्ष ३०	बुधवार	मघा	१२.८.२६	क्षीण चन्द्रः
श्रावण कृष्ण पक्ष ३०	बुधवार	मघा	१२.८.२६	क्षीण चन्द्रः
श्रावण शुक्ल पक्ष २	शुक्रवार	उफा	१४.८.२६	पाप ग्रह शनि वेधः
श्रावण शुक्ल पक्ष ३	शनिवार	उफा/हस्त	१५.८.२६	पापग्रह शनि वेधः, मृत्यु पंचकः
श्रावण शुक्ल पक्ष ४	रविवार	हस्त/चित्रा	१५.८.२६	मासान्तः
श्रावण शुक्ल पक्ष ५	सोमवार	चित्रा	१७.८.२६	संक्रान्तिः, महापातः
श्रावण शुक्ल पक्ष ६	मंगलवार	स्वाति	१८.८.२६	लग्नाऽभावः, मृत्यु पंचकः
श्रावण शुक्ल पक्ष ७	बुधवार	स्वाति	१९.८.२६	लग्नाऽभावः
श्रावण शुक्ल पक्ष ९	शुक्रवार	अनुराधा	२१.८.२६	वैधृतिः
श्रावण शुक्ल पक्ष १२	मंगलवार	श्रवण	२५.८.२६	पापग्रह सूर्य वेधः
श्रावण शुक्ल पक्ष १३	बुधवार	श्रवण	२६.८.२६	पापग्रह सूर्य वेधः
श्रावण शुक्ल पक्ष १३	बुधवार	धनिष्ठा	२६.८.२६	पापग्रह राहु युतिः
श्रावण शुक्ल पक्ष १४	गुरूवार	धनिष्ठा	२७.८.२६	पापग्रह राहु युतिः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष २	रविवार	रेवती	३०.८.२६	पापग्रह शनि युतिः, भद्रा
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३	सोमवार	रेवती	३१.८.२६	पापग्रह शनि युतिः, महापातः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३	सोमवार	अश्विनी	३१.९.२६	पापग्रह सूर्य वेधः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ४	मंगलवार	अश्विनी	०१.९.२६	पापग्रह सूर्य वेधः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ७	गुरूवार	रोहिणी	०३.९.२६	अल्प रेखा ५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ८	शुक्रवार	रोहिणी	४.९.२६	अल्प रेखा ५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष १३	बुधवार	मघा	९.९.२६	भद्रा, क्षीण चन्द्रः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष १४	गुरूवार	मघा	१०.९.२६	क्षीण चन्द्रः
भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३०	शुक्रवार	उफा	११.९.२६	क्षीण चन्द्रः, पापग्रह शनि वेधः

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	दोष
भाद्रपद शुक्ल पक्ष १	शनिवार	उफा	१२.९.२६	पापग्रह शनि वेधः, महापातः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ३	सोमवार	चित्रा	१४.९.२६	लग्नाऽभावः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ४	मंगलवार	स्वाति	१५.९.२६	मृत्यु पंचकः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ५	बुधवार	अनुराधा	१६.९.२६	मासान्तः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ६	गुरूवार	अनुराधा	१७.९.२६	संक्रान्ति
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ७	शुक्रवार	मूल	१८.९.२६	मृत्यु पंचक, भद्रा
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ८	शनिवार	मूल	१९.९.२६	पापग्रह मंगल वेधः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ९	रविवार	उषा	२०.९.२६	लग्नाऽभावः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११	मंगलवार	उषा/श्रवण	२२.९.२६	लग्नाऽभावः, भद्रा
भाद्रपद शुक्ल पक्ष १२	बुधवार	धनिष्ठा	२३.९.२६	पापग्रह राहु युतिः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३	गुरूवार	धनिष्ठा	२४.९.२६	पापग्रह राहु युतिः
अग्रे श्राद्ध पक्षः				
आश्विन शुक्ल पक्ष १	रविवार	चित्रा	११.१०.२६	पापग्रह सूर्य युतिः
अग्रे शुक्रास्तः				
कार्तिक कृष्ण पक्ष १०	बुधवार	उफा	०४.११.२६	लग्नाऽभावः
कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	गुरूवार	उफा	०५.११.२६	वैधृतिः
कार्तिक कृष्ण पक्ष ११	गुरूवार	हस्त	०५.११.२६	लग्नाऽभावः
कार्तिक कृष्ण पक्ष १२	शुक्रवार	हस्त/चित्रा	०६.११.२६	मृत्यु पंचकः, क्षीण चन्द्रः
कार्तिक कृष्ण पक्ष १३	शनिवार	चित्रा/स्वाति	०७.११.२६	क्षीण चन्द्रः
कार्तिक कृष्ण पक्ष १४	रविवार	स्वाति	०८.११.२६	क्षीण चन्द्रः
कार्तिक कृष्ण पक्ष ३०	सोमवार	स्वाति	०९.११.२६	क्षीण चन्द्रः
कार्तिक शुक्ल पक्ष २	बुधवार	अनुराधा	११.११.२६	लग्नाऽभावः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ४	शुक्रवार	मूल	१३.११.२६	लग्नाऽभावः, भद्रा
कार्तिक शुक्ल पक्ष ५	शनिवार	उषा	१४.११.२६	भुजंग पातः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ६	रविवार	उषा	१५.११.२६	भुजंग पातः, मृत्यु पंचकः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ६	रविवार	श्रवण	१५.११.२६	पापग्रह मंगल केतु वेधः, मासान्तः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ७	सोमवार	श्रवण	१६.११.२६	पापग्रह मंगल केतु वेधः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ७	सोमवार	धनिष्ठा	१६.११.२६	पापग्रह राहु वेधः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ८	मंगलवार	धनिष्ठा	१७.११.२६	पापग्रह राहु वेधः
कार्तिक शुक्ल पक्ष ९	गुरूवार	उभा	१९.११.२६	पापग्रह शनि वेधः
कार्तिक शुक्ल पक्ष १०	शुक्रवार	उभा	२०.११.२६	पापग्रह शनि वेधः
कार्तिक शुक्ल पक्ष १०	शुक्रवार	रेवती	२०.११.२६	लग्नाऽभावः

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	दोष
कार्तिक शुक्ल पक्ष १२	शनिवार	अश्विनी	२१.११.२६	व्यतिपातः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ७	सोमवार	मघा	३०.११.२६	भद्रा, वैधृति
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ८	मंगलवार	मघा	१.१२.२६	वैधृति
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १०	गुरूवार	हस्त	३.१२.२६	भद्रा, पाप ग्रह शनि वेधः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ११	शुक्रवार	हस्त	४.१२.२६	पापग्रह शनि वेधः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १२	शनिवार	स्वाति	५.१२.२६	मृत्यु पंचकः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १३	रविवार	स्वाति	६.१२.२६	मृत्यु पंचकः, क्षीण चन्द्रः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १४	सोमवार	अनुराधा	७.१२.२६	क्षीण चन्द्रः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ३०	मंगलवार	अनुराधा	८.१२.२६	क्षीणचन्द्रः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १	बुधवार	मूल	९.१२.२६	क्षीणचन्द्रः, भुजंग पातः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १	गुरूवार	मूल	१०.१२.२६	भुजंग पातः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ३	शनिवार	श्रवण	१२.१२.२६	भद्रा, पाप ग्रह भौम वेधः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ४	रविवार	श्रवण	१३.१२.२६	भद्रा, पापग्रह भौम वेधः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ५	सोमवार	श्रवण	१४.१२.२६	पापग्रह भौम वेधः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ५	सोमवार	धनिष्ठा	१४.१२.२६	पापग्रह राहु युतिः
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ६	मंगलवार	धनिष्ठा	१५.१२.२६	मासान्तः, पापग्रह राहु युतिः
अग्रे मलमासः				
पौष शुक्ल पक्ष ६	गुरूवार	उभा/रेवती	१४.१.२७	संक्रान्तिः
पौष शुक्ल पक्ष ७	शुक्रवार	रेवती	१५.१.२७	लग्नाऽभावः, भद्रा
पौष शुक्ल पक्ष ७	शुक्रवार	अश्विनी	१५.१.२७	मृत्यु पंचकः
पौष शुक्ल पक्ष ८	शनिवार	अश्विनी	१६.१.२७	मृत्यु पंचकः
पौष शुक्ल पक्ष १०	सोमवार	रोहिणी	१८.१.२७	भद्रा
पौष शुक्ल पक्ष ११	मंगलवार	मृगशिरा	१९.१.२७	पापग्रह सूर्य वेधः
पौष शुक्ल पक्ष १३	बुधवार	मृगशिरा	२०.१.२७	पापग्रह सूर्य वेधः
माघ कृष्ण पक्ष १	शनिवार	मघा	२३.१.२७	लग्नाऽभावः
माघ कृष्ण पक्ष २	रविवार	मघा	२४.१.२७	लग्नाऽभावः पापग्रह सूर्य वेधः
माघ कृष्ण पक्ष ५	मंगलवार	उफा	२६.१.२७	लग्नाऽभावः
माघ कृष्ण पक्ष ५	मंगलवार	हस्त	२६.१.२७	पापग्रह शनि वेधः
माघ कृष्ण पक्ष ६	बुधवार	हस्त	२७.१.२७	पापग्रह शनि वेधः
माघ कृष्ण पक्ष ७	गुरूवार	चित्रा	२८.१.२७	लग्नाऽभावः
माघ कृष्ण पक्ष ७	गुरूवार	स्वाति	२८.१.२७	भुजंग पातः

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	दोष
माघ कृष्ण पक्ष ८	शुक्रवार	स्वाति	२९.१.२७	भुजंग पातः
माघ कृष्ण पक्ष ९	शनिवार	अनुराधा	३०.१.२७	लग्नाऽभावः
माघ कृष्ण पक्ष १२	बुधवार	मूल	३.२.२७	मृत्यु पंचकः
माघ कृष्ण पक्ष १३	गुरूवार	उषा	४.२.२७	क्षीण चन्द्रः
माघ कृष्ण पक्ष १४	शुक्रवार	उषा/श्रवण	५.२.२७	क्षीण चन्द्रः
माघ कृष्ण पक्ष ३०	शनिवार	श्रवण/धनिष्ठा	५.२.२७	क्षीण चन्द्रः
माघ शुक्ल पक्ष १	रविवार	धनिष्ठा	६.२.२७	क्षीण चन्द्रः
माघ शुक्ल पक्ष ३	मंगलवार	उभा	९.२.२७	लग्नाऽभावः
माघ शुक्ल पक्ष ४	बुधवार	रेवती	१०.२.२७	पापग्रह शनि युतिः
माघ शुक्ल पक्ष ५	गुरूवार	रेवती	११.२.२७	पापग्रह शनि युतिः
माघ शुक्ल पक्ष ५	गुरूवार	अश्विनी	११.२.२७	मृत्यु पंचकः
माघ शुक्ल पक्ष ६	शुक्रवार	अश्विनी	१२.२.२७	मासान्तः
माघ शुक्ल पक्ष ८	रविवार	रोहिणी	१४.२.२७	मृत्यु पंचकः
माघ शुक्ल पक्ष ९	सोमवार	मृगशिरा	१५.२.२७	वैधृतिः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष २	सोमवार	उफा	२२.२.२७	पापग्रह शनिवेधः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३	मंगलवार	उफा	२३.२.२७	पापग्रह शनि वेधः, मृत्यु पंचकः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३	मंगलवार	हस्त	२३.२.२७	मृत्यु पंचकः, भुजंग पातः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ४	बुधवार	हस्त	२४.२.२७	भुजंग पातः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ४	बुधवार	हस्त	२४.२.२७	अल्प रेखा ४/५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ५	गुरूवार	चित्रा	२५.२.२७	लग्नाऽभावः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ५	गुरूवार	स्वाति	२५.२.२७	पापग्रह सूर्य वेधः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ६	शुक्रवार	स्वाति	२६.२.२७	पापग्रह सूर्य वेधः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष ११	गुरूवार	उषा/श्रवण	४.३.२७	मृत्यु पंचकः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष १२	शुक्रवार	श्रवण/धनिष्ठा	५.३.२७	पापग्रह मंगल वेधः, क्षीण चन्द्रः
फाल्गुन कृष्ण पक्ष १३	शनिवार	धनिष्ठा	६.३.२७	क्षीण चन्द्रः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष २	बुधवार	रेवती	१०.३.२७	पापग्रह शनि युतिः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष ३	गुरूवार	रेवती	११.३.२७	पापग्रह शनि युतिः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष ४	शुक्रवार	अश्विनी	१२.३.२७	भद्रा
फाल्गुन शुक्ल पक्ष ६	रविवार	रोहिणी	१४.३.२७	मासान्तः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष ७	सोमवार	रोहिणी	१५.३.२७	संक्रान्तिः
अग्रे मीन संक्रान्तिः				

❊ सर्वदेशीय सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः २०८३ ❊

विवाह मुहूर्त्त	तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय सूर्य राशि	गुरू राशि	चन्द्र राशि	रेखा सं.	लत्तादि दस दोष रेखाऐं रेखा= १, दोष = ऽ	विश्वा बल	सपरिहार शुद्ध विवाह लग्न स्टे.टा.घं.मि.	सिरोही लग्न समय	विवाह लग्न समय स्टेण्डर्ड टाईम में गृह, दान, पूजा विवरण आदि
वैशाख शुक्ल	३	सोम	२०-०४-२६	रोहिणी	मेष	मिथुन	वृषभ	१०	।।।।।।।।।।	१०	दिवा लग्न वृषभ	०७.३८ से ०९.३५	चं.१ परिहारः तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
										१०	दिवा लग्न मिथुन	०९.३५ से ११.४८	मं.१० पू. तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
										१०॥	दिवा लग्न कर्क	११.४८ से १२.४४	तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
								९	।।।।।ऽचौ।।।।	१०॥	दिवा लग्न कर्क	१२.४४ से ०२.०५	तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
वैशाख शुक्ल	५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	मेष	मिथुन	वृषभ	७	ऽरा।।।।ऽचौ।ऽ।।	१०	दिवा लग्न वृषभ	०७.३४ से ०९.३१	चन्द्र १ परिहारः
										१०	दिवा लग्न मिथुन	०९.३१ से ११.४४	मं.१० पू.
										१०॥	दिवा लग्न कर्क	११.४४ से १२.३२	
						वृ./मि.		६	ऽरा।।।।ऽचौऽऽ।।	१०॥	दिवा लग्न कर्क	१२.३२ से १.१८	
						मिथुन		७	ऽरा।।।।।ऽ।।।।	५॥	दिवा लग्न कर्क	०१.१८ से ०२.०१	
वैशाख शुक्ल	१०	रवि	२६-०४-२६	मघा	मेष	मिथुन	सिंह	७	।ऽऽके।।ऽअ।।।।	१०	दिवा लग्न वृषभ	०७.१३ से ०९.१०	केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्ति साम्याऽभावः
										१५	दिवा लग्न मिथुन	०९.१० से ११.२३	चं.१० पू. केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्ति साम्यासभावः
										१०॥	दिवा लग्न कर्क	११.२३ से १.४०	केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्ति साम्याऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	४	मंगल	०५-०५-२६	मूल	मेष	मिथुन	धनु	८	।।।ऽगु।।।ऽ।।	११॥	रात्रि लग्न मकर	१२.०८ से १.५३	गुरू पाद वेधाऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	४	बुध	०६-०५-२६	मूल	मेष	मिथुन	धनु	८	।।।ऽगु।।।ऽ।।	१०	रात्रि लग्न मिथुन	०८.३० से १०.४३	चं.७ पू. गुरू वेधाऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	५	गुरू	०७-०५-२६	उत्तराफा.	मेष	मिथुन	धनु	६	ऽचंऽ।।ऽ।।।।ऽ	११॥	रात्रि लग्न मकर	१२.०० से १.२६	दग्धा परिहारः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	६	शुक्र	०८-०५-२६	उत्तराफा.	मेष	मिथुन	धनु	६	ऽचंऽ।।ऽ।।।।ऽ	८	दिवा लग्न वृषभ	०६.२५ से ०८.२२	
										५॥	दिवा लग्न कर्क	१०.३५ से १२.२२	चं.७ पू.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	५	शुक्र	१९-०६-२६	मघा	मिथुन	कर्क	सिंह	७	।ऽऽके।।ऽरा।।।।	६॥	रात्रि लग्न वृषभ	०३.३८ से ०५.३५	श. ३ पू. केतु युति परिहारः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	६	शनि	२०-०६-२६	मघा	मिथुन	कर्क	सिंह	७	।ऽऽके।।ऽरा।।।।	११॥	दिवा लग्न कर्क	०७.४८ से ०९.२६	केतु युति परिहारः भान्तमपि
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	९	मंगल	२३-०६-२६	हस्त	मिथुन	कर्क	कन्या	८	ऽगु।।।।।।ऽ।।	१५	दिवा लग्न कर्क	०७.३७ से ०९.५३	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१२	शुक्र	२६-०६-२६	अनुराधा	मिथुन	कर्क	वृश्चिक	६	ऽसूऽ।।ऽऽ।।।।	१२	रात्रि लग्न मेष	०१.३१ से ०३.१०	चं.८ परिहारः श.१२ पू.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१३	शनि	२७-०६-२६	अनुराधा	मिथुन	कर्क	वृश्चिक	६	ऽसूऽ।।ऽऽ।।।।	१०	दिवा लग्न कर्क	०७.२० से ०९.३७	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१४	रवि	२८-०६-२६	मूल	मिथुन	कर्क	धनु	७	।।।।ऽबु।ऽरा।ऽ।।	१२	रात्रि लग्न मेष	०१.२३ से ०३.०२	शु. १२ पू. बुध पाद वेधाऽभावः गणितेन क्रान्ति साम्याऽभावः
आषाढ कृष्ण	६	सोम	०६-०७-२६	उत्तराभा	मिथुन	कर्क	मीन	८	ऽचं।।।।ऽअ।।।।	१२	रात्रि लग्न मेष	०१.४२ से ०२.३१	श.१२ पू. रात्रि १.४२ उ.
आषाढ कृष्ण	७	मंगल	०७-०७-२६	उत्तराभा	मिथुन	कर्क	मीन	८	ऽचं।।।।ऽअ।।।।	१०	दिवा लग्न कर्क	०६.४१ से ०८.५८	
कार्तिक शुक्ल	१२	शनि	२१-११-२६	रेवती	वृश्चिक	सिंह	मीन	९	।।।।।ऽरा।।।।	८॥	दिवा लग्न धनु	०८.५८ से ११.०२	
								१०	।।।।।।।।।।		लग्न गोधूलि		
										१३॥	रात्रि लग्न मिथुन	०७.२४ से ०९.३७	
										६॥	रात्रि लग्न कर्क	०९.३७ से ११.५४	
कार्तिक शुक्ल	१५	मंगल	२४-११-२६	रोहिणी	वृश्चिक	सिंह	वृषभ	६	ऽरा।।।।ऽऽरो।ऽ।।	१३॥	रात्रि लग्न कर्क	०९.२६ से ११.४२	
मार्गशीर्ष कृष्ण	१	बुध	२५-११-२६	रोहिणी	वृश्चिक	सिंह	वृषभ	७	ऽरा।।।ऽ।।ऽ।।	१३॥	रात्रि लग्न मिथुन	०७.०९ से ०८.३६	भान्तमपि
मार्गशीर्ष कृष्ण	१	बुध	२५-११-२६	मृगशिरा	वृश्चिक	सिंह	वृषभ	१०	।।।।।।।।।।	१३॥	रात्रि लग्न मिथुन	०८.३६ से ०९.२२	

विवाह मुहूर्त्त	तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय सूर्य राशि	गुरू राशि	चन्द्र राशि	रेखा सं.	लत्तादि दस दोष रेखाऐं रेखा=1, दोष = ऽ	विश्वा बल	सपरिहार शुद्ध विवाह लग्न स्टे.टा.घं.मि.	सिरोही लग्न समय	विवाह लग्न समय स्टेण्डर्ड टाईम में गृह, दान, पूजा विवरण आदि
										१३॥	दिवा लग्न कर्क	९.२२ से ११.३९	
मार्गशीर्ष कृष्ण	२	गुरू	२६-११-२६	मृगशिरा	वृश्चिक	सिंह	मिथुन	१०	।।।।।।।।।।।	८॥	दिवा लग्न धनु	८.३९ से १०.४३	चं. ७ पू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	९	बुध	२-१२-२६	उफा.	वृश्चिक	सिंह	सिंह	७	ऽमं।।।।ऽचौ।ऽ।।	८॥	दिवा लग्न धनु	८.५५ से १०.१९	
मार्गशीर्ष कृष्ण	९	बुध	२-१२-२६	उफा.	वृश्चिक	सिंह	कन्या	८	ऽमं।।।।।।ऽ।।	१३॥	रात्रि लग्न मिथुन	६.४२ से ८.५५	दग्धा परिहारः
										१३॥	रात्रि लग्न कर्क	८.५५ से ११.११	तिथ्यंतमपि रात्रि १०।५३ उ.दग्धा परिहारः
मार्गशीर्ष कृष्ण	१०	गुरू	३-१२-२६	उफा.	वृश्चिक	सिंह	कन्या	७	ऽमं।।।।।।ऽ।ऽ	६॥	दिवा लग्न धनु	८.१२ से ९.२४	भान्तमपि दग्धा परिहारः
मार्गशीर्ष शुक्ल	२	शुक्र	११-१२-२६	उषा.	वृश्चिक	सिंह	धनु	१०	।।।।।।।।।।	१५	रात्रि लग्न तुला	३.०४ से ५.२०	रा.४ पू.
मार्गशीर्ष शुक्ल	३	शनि	१२-१२-२६	उषा.	वृश्चिक	सिंह	मकर	९	।।।।।ऽरो।।।।	१०	रात्रि लग्न तुला	३.०० से ३.२८	रा. ४ पू.
पौष शुक्ल	११	मंगल	१९-१-२७	रोहिणी	मकर	सिंह	वृषभ	६	ऽरा।।।।ऽरा।।ऽऽ		लग्न गोधूलि		गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारः, दग्धा परिहारः
माघ कृष्ण	३	सोम	२५-१-२७	उफा.	मकर	कर्क	सिंह	८	।।।।।ऽअ।ऽ।।	१५	रात्रि लग्न तुला	१.०३ से २.२४	रा.४ पू.तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारः
										१२	रात्रि लग्न वृश्चिक	२.२४ से ४.४०	मं.१० पू.तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारः
माघ कृष्ण	१०	रवि	३१-१-२७	अनुराधा	मकर	कर्क	वृश्चिक	७	ऽबु।।।।ऽरो।ऽ।।	१३	रात्रि लग्न तुला	११.४५ से २.०१	रा.४ पू.
माघ कृष्ण	११	मंगल	२-०२-२७	मूल	मकर	कर्क	धनु	७	।।ऽशु।।।।ऽ।ऽ	७	दिवा लग्न मेष	११.०३ से १२.४२	श.१२ पू.दग्धा परिहारः तिथ्यंतमपि
माघ शुक्ल	४	बुध	१०-०२-२७	उभा	मकर	कर्क	मीन	९	।।।।।ऽरो।।।।	७	दिवा लग्न मेष	१०.३१ से १२.११	दिवा ११।०१ या.रोग पंचकः श.१२ पू.
माघ शुक्ल	९	सोम	१५-०२-२७	रोहिणी	कुम्भ	कर्क	वृषभ	८	ऽरा।।।।ऽअ।।।।	१५॥	दिवा लग्न मेष	१०.११ से ११.५०	श.१२ पू.
माघ शुक्ल	१०	मंगल	१६-०२-२७	मृगशिरा	कुम्भ	कर्क	वृ./मि.	८	।ऽ।।।।।।ऽ।।	१५॥	दिवा लग्न मेष	१०.०७ से ११.४६	श.१२ पू.
											लग्न गोधूलि		
										८	रात्रि लग्न तुला	१०.४१ से १२.५७	रा.४ शु.३ पू.
माघ शुक्ल	१४	शनि	२०-०२-२७	मघा	कुम्भ	कर्क	सिंह	७	।।ऽमं।ऽ।।ऽ।।		लग्न गोधूलि		सायं ६।२५ उ.मं.युति परिहारः
										१३	रात्रि लग्न तुला	१०.२५ से १२.४१	शु.३ रा.४ पू.मं.युति परिहारः
फाल्गुन कृष्ण	१	रवि	२१-०२-२७	मघा	कुम्भ	कर्क	सिंह	६	।।ऽमं।ऽऽरो।ऽ।।	१०॥	दिवा लग्न मेष	९.४७ से ११.२६	मं.युति परिहारः श. १२ पू.
फाल्गुन कृष्ण	७	शनि	२७-०२-२७	अनुराधा	कुम्भ	कर्क	वृश्चिक	८	ऽबु।।।।।।।ऽ।।	१०	दिवा लग्न वृषभ	११.४० से १.००	
											लग्न गोधूलि		
										१५	रात्रि लग्न तुला	९.५८ से १२.१४	रा.४ पू.
फाल्गुन कृष्ण	८	रवि	२८-०२-२७	अनुराधा	कुम्भ	कर्क	वृश्चिक	७	ऽबु।।।।ऽचौ।ऽ।।	१०॥	दिवा लग्न मेष	९.२० से १०.५९	चं.८ परिहारः श.१२ पू.
फाल्गुन कृष्ण	९	सोम	१-०३-२७	मूल	कुम्भ	कर्क	धनु	८	।।।।।।ऽऽ।।		लग्न गोधूलि		
										१५॥	रात्रि लग्न तुला	९.५० से १२.०६	रा.४ पू.रात्रि ११.११ या.एकार्गल बाद रेखा ९
फाल्गुन कृष्ण	९	सोम	१-०३-२७	मूल	कुम्भ	कर्क	धनु	९	।।।।।।।ऽ।।	११॥	रात्रि लग्न वृश्चिक	१२.०६ से २.२२	मं.१० शु.३ पू.
फाल्गुन कृष्ण	१०	मंगल	२-०३-२७	मूल	कुम्भ	कर्क	धनु	८	।।।।ऽरो।ऽ।।	१०॥	दिवा लग्न मेष	९.१२ से १०.५१	श.१२ पू.
											लग्न गोधूलि		
फाल्गुन कृष्ण	११	बुध	३-०३-२७	उषा	कुम्भ	कर्क	धनु	७	।ऽऽशु।।।।ऽ।।	११॥	रात्रि लग्न वृश्चिक	१.०६ से २.१५	रा.४ पू.रात्रि १.०६ या.व्यतिपातः
फाल्गुन शुक्ल	१	मंगल	९-०३-२७	उभा	कुम्भ	कर्क	मीन	९	।।।।।ऽचौ।।।।		लग्न गोधूलि		
										६॥	रात्रि लग्न वृश्चिक	११.३५ से १.५१	शु.३ पू.रात्रि १२.१३ या.मं.१० पू.

विवाह मुहूर्त्त	तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय सूर्य राशि	गुरू राशि	चन्द्र राशि	रेखा सं.	लत्तादि दस दोष रेखाऐं रेखा=1, दोष = ऽ	विश्वा बल	सपरिहार शुद्ध विवाह लग्न स्टे.टा.घं.मि.	सिरोही लग्न समय	विवाह लग्न समय स्टेण्डर्ड टाईम में गृह, दान, पूजा विवरण आदि
फाल्गुन शुक्ल	२	बुध	१०-०३-२७	उभा	कुम्भ	कर्क	मीन	१०	IIIIIIIIII	१०ll	दिवा लग्न मेष	८.४१ से १०.२०	श.१२ पू.
										१६ll	दिवा लग्न वृषभ	१०.२० से १०.५३	भान्तमपि

✻ कात्यायनोक्त विवाह मुहूर्त्ताः २०८३ ✻

वैशाख शुक्ल	१३	बुध	२९-०४-२६	चित्रा	मेष	मिथुन	कन्या	७	IIIIऽऽचौऽIII	१०ll	रात्रि लग्न वृश्चिक	८.१२ से १०.२८	
वैशाख शुक्ल	१४	गुरू	३०-०४-२६	चित्रा	मेष	मिथुन	कन्या	७	IIIIऽऽचौऽIII	८	दिवा लग्न वृषभ	०६.५७ से ०८.५४	
										१०	दिवा लग्न मिथुन	०८.५४ से ११.०७	मं. १०पू.
										१०ll	दिवा लग्न कर्क	११.०७ से १.२४	
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	८	रवि	१०-०५-२६	धनिष्ठा	मेष	मिथुन	म./कु.	८	ऽबुIIIIIIऽII	८	दिवा लग्न वृषभ	६.१७ से ८.१५	
										५ll	दिवा लग्न कर्क	१०.२८ से १२.१३	दिवा १२.१३ या.
										१६ll	रात्रि लग्न मकर	११.४८ से १२.५०	रात्रि १२.५० या. भान्तमपि
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	९	मंगल	२३-०६-२६	चित्रा	मिथुन	कर्क	तुला	८	IIIIIIऽरोऽIII	१२	रात्रि लग्न मेष	०१.४३ से ०३.२३	चं.७ श. १२ पू.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१०	बुध	२४-०६-२६	चित्रा	मिथुन	कर्क	तुला	८	IIIIIIऽरोऽIII	१०	दिवा लग्न कर्क	०७.३३ से ९.४९	
आषाढ़ कृष्ण	३	शुक्र	०३-०७-२६	धनिष्ठा	मिथुन	कर्क	कुम्भ	६	IIIऽशुऽऽरोIऽII	१७	रात्रि लग्न मेष	१.०३ से २.४२	शु. पाद वेधाऽभावः
आषाढ़ कृष्ण	४	शनि	०४-०७-२६	धनिष्ठा	मिथुन	कर्क	कुम्भ	६	IIIऽशुऽऽरोIऽII	१०	दिवा लग्न कर्क	६.५३ से ९.०९	शु. पाद वेधाऽभावः
आषाढ़ कृष्ण	९	गुरू	०९-०७-२६	अश्विनी	मिथुन	कर्क	मेष	७	ऽबुIIIIऽराIऽII	८	दिवा लग्न कर्क	६.३३ से ८.५०	
कार्तिक शुक्ल	१३	रवि	२२-११-२६	अश्विनी	वृश्चिक	सिंह	मेष	७	ऽसूऽIIIऽचौIIII	८ll	रात्रि लग्न कर्क	११.२९ से ११.५०	रात्रि ११.२९ या.व्यतिपातः
मार्गशीर्ष कृष्ण	११	शुक्र	४-१२-२६	चित्रा	वृश्चिक	सिंह	कन्या	९	IIIIIIIऽII	१३ll	रात्रि लग्न मिथुन	६.३४ से ८.४७	
मार्गशीर्ष कृष्ण	१२	शनि	५-११-२६	चित्रा	वृश्चिक	सिंह	तुला	९	IIIIIIIऽII	११ll	दिवा लग्न धनु	८.०४ से १०.०८	
माघ कृष्ण	६	बुध	२७-१-२७	चित्रा	वृश्चिक	कर्क	कन्या	८	ऽचंगुIIIIऽराIIII	१०	रात्रि लग्न तुला	१२.०० से २.१७	रा.४ पू.
										१७	रात्रि लग्न वृश्चिक	०२.१७ से ०३.५४	रात्रि ३.५४ या.
फाल्गुन शुक्ल	३	गुरू	११-०३-२७	अश्विनी	वृश्चिक	कर्क	मे ष	८	IIIIIऽरोIऽII	११ll	दिवा लग्न वृषभ	११.२० से १२.१३	
								७	IIIIIऽरोIऽIऽ	८ll	रात्रि लग्न तुला	९.११ से ११.२७	रा. ४ पू.दग्धा परिहारः

✻ विशेष संभागीय विवाह मुहूर्त्ताः २०८३ ✻

श्रावण शुक्ल	१	गुरू	१३-०८-२६	मघा	कर्क	कर्क	सिंह	९	IIIIऽरोIIII	८	रात्रि लग्न मेष	१०.५२ से १२.०२	शु.६ परिहारः श.१२ पू.
										१२	रात्रि लग्न वृषभ	१२.०२ से ०२.००	
श्रावण शुक्ल	८	गुरू	२०-०८-२६	अनुराधा	सिंह	कर्क	वृश्चिक	८	IIIIIऽअIऽII	१६ll	दिवा लग्न तुला	१०.३३ से १०.४९	दिवा. १०.४९ या.अग्नि पंचकः
श्रावण शुक्ल	८	गुरू	२०-०८-२६	अनुराधा	सिंह	कर्क	वृश्चिक	९	IIIIIIIIIऽII	१६ll	दिवा लग्न तुला	१०.४९ से १२.५०	
											लग्न गोधूलि		गोधूलि शु. ८ परिहारः
										८	रात्रि लग्न मेष	०९.५५ से ११.३५	शु. ६ परिहारः श. १२ पू.
										८ll	रात्रि लग्न वृषभ	११.३५ से ०१.३२	
										६ll	रात्रि लग्न कर्क	३.४५ से ४.२५	शु. ३ पू.रात्रि ४.२५ उ.वैधृतिः
श्रावण शुक्ल	१०	शनि	२२-८-२६	मूल	सिंह	कर्क	धनु	८	IIIIIIIऽIऽ		लग्न गोधूलि		शु.८ परिहारः दग्धा परिहारः

विवाह मुहूर्त्त	तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय सूर्य राशि	गुरू राशि	चन्द्र राशि	रेखा सं.	लत्तादि दस दोष रेखाऐं रेखा=1, दोष = ऽ	विश्वा बल	सपरिहार शुद्ध विवाह लग्न स्टे.टा.घं.मि.	सिरोही लग्न समय	विवाह लग्न समय स्टेण्डर्ड टाईम में गृह, दान, पूजा विवरण आदि
श्रावण शुक्ल	१०	शनि	२२-०८-२६	मूल	सिंह	कर्क	धनु	७	।।ऽबु।।।।ऽ।ऽ	८	रात्रि लग्न मेष	९.४७ से ११.२७	श.१२ पू.श. ६ परिहारः दग्धा परिहारः
श्रावण शुक्ल	११	रवि	२३-०८-२६	मूल	सिंह	कर्क	धनु	७	।।ऽबु।।ऽचौ।ऽ।।	१६॥	दिवा लग्न तुला	१०.२१ से १२.३८	
श्रावण शुक्ल	१२	सोम	२४-०८-२६	उषा	सिंह	कर्क	धनु	९	ऽसू।।।।।।।।।	८	रात्रि लग्न मेष	९.३९ से ११.१९	शु.६ परिहारः श.१२ पू.
श्रावण शुक्ल	१२	सोम	२४-०८-२६	उषा	सिंह	कर्क	मकर	९	ऽसू।।।।।।।।।	६॥	रात्रि लग्न कर्क	०३.२९ से ५.४६	चं. ७ शु. ३ पू.
श्रावण शुक्ल	१२	मंगल	२५-०८-२६	उषा	सिंह	कर्क	मकर	९	ऽसू।।।।।।।।।	११॥	दिवा लग्न तुला	१०.१३ से १२.३०	
श्रावण शुक्ल	१२	मंगल	२५-०८-२६	उषा	सिंह	कर्क	मकर	८	ऽसू।।।।ऽरो।।।।		लग्न गोधूलि		शु. ८ परिहारः
										८	रात्रि लग्न मेष	९.३६ से १०.५१	शु.६ परिहारः भान्तमपि रात्रि १०.५१ या.
भाद्रपद कृष्ण	१	शनि	२९-८-२६	उभा	सिंह	कर्क	मीन	१०	।।।।।।।।।।	६॥	रात्रि लग्न कर्क	०३.४२ से ५.२६	शु.६ पू.रात्रि ०३.४२ उ.
भाद्रपद कृष्ण	२	रवि	३०-८-२६	उभा	सिंह	कर्क	मीन	१०	।।।।।।।।।।		लग्न गोधूलि		शु.८ परिहारः
भाद्रपद कृष्ण	२	रवि	३०-८-२६	उभा	सिंह	कर्क	मीन	९	।।।।।ऽरा।।।।	८	रात्रि लग्न मेष	०९.१६ से ०९.१८	शू.६ परिहारः श. १२ पू.रात्रि ९.१८ उ.भद्रा
भाद्रपद कृष्ण	८	शुक्र	४-९-२६	मृगशिरा	सिंह	कर्क	वृषभ	६	ऽबु।।।ऽ।ऽऽ।।	१३॥	रात्रि लग्न कर्क	०२.४६ से ५.०२	
भाद्रपद कृष्ण	९	शनि	५-९-२६	मृगशिरा	सिंह	कर्क	मिथुन	६	ऽबु।।।ऽ।ऽऽ।।	१३॥	दिवा लग्न तुला	१०.१८ से ११.४७	दिवा १०.१८ उ.
											लग्न गोधूलि		
भाद्रपद शुक्ल	१	शनि	१२-९-२६	हस्त	सिंह	कर्क	कन्या	९	।।।।।।ऽ।।।	१२	दिवा लग्न मकर	०३.३९ से ०५.२४	गु.७ पू.
										१३॥	रात्रि लग्न कर्क	०२.१४ से ४.३१	
भाद्रपद शुक्ल	२	रवि	१३-९-२६	हस्त	सिंह	कर्क	कन्या	८	।।।।। ऽरोऽ।।।	११॥	दिवा लग्न तुला	८.५८ से ११.१५	
भाद्रपद शुक्ल	२	रवि	१३-९-२६	चित्रा	सिंह	कर्क	कन्या	७	ऽगु।।।ऽऽरो।।।।	१२	दिवा लग्न मकर	३.३५ से ५.२०	गु.७ पू.
भाद्रपद शुक्ल	२	रवि	१३-९-२६	चित्रा	सिंह	कर्क	तुला	७	ऽगु।।।ऽऽरो।।।।	८॥	रात्रि लग्न कर्क	२.१० से ४.२७	
भाद्रपद शुक्ल	३	सोम	१४-९-२६	स्वाति	सिंह	कर्क	तुला	९	।।ऽशु।।।।।।।	१२	दिवा लग्न मकर	३.३१ से ५.१६	गु.७ पू.
भाद्रपद शुक्ल	१०	सोम	२१-१०-२६	उफा	कन्या	कर्क	ध/म	७	।।।।ऽऽरा।ऽ।।	१३	दिवा लग्न तुला	८.२७ से १०.४३	मं.१० पू.दिवा १०.१२ या.पंचक नहीं रेखा ८
										१३॥	दिवा लग्न वृश्चिक	१०.४३ से १२.५९	रा.४ पू.
भाद्रपद शुक्ल	१२	बुध	२३-९-२६	श्रवण	कन्या	कर्क	मकर	९	।।।।ऽ।।।।।	८	दिवा लग्न तुला	८.१९ से ९.०९	मं.१० पू.दिवा ९.०९ या.भान्तमपि
कार्तिक शुक्ल	१	मंगल	१०-११-२६	अनुराधा	तुला	सिंह	वृश्चिक	१०	।।।।।।।।।।		लग्न गोधूलि		चं.८ परिहारः
										१३॥	रात्रि लग्न वृषभ	६.१० से ८.०७	चं.७ पू.
										८॥	रात्रि लग्न मिथुन	८.०७ से ८.३९	रात्रि ८.३९ उ. चौर पंचक चं. ६ परिहारः
कार्तिक शुक्ल	१	मंगल	१०-११-२६	अनुराधा	तुला	सिंह	वृश्चिक	९	।।।।।ऽचौ।।।।।	८॥	रात्रि लग्न मिथुन	८.३९ से १०.२०	चं.६ परिहारः
कार्तिक शुक्ल	३	गुरू	१२-११-२६	मूल	तुला	सिंह	धनु	१०	।।।।।।।।।।		लग्न गोधूलि		
										१०	रात्रि लग्न मिथुन	७.५९ से १०.१२	चं.७ परिहारः रात्रि ८.२२ उ.रोग पंचकः रेखा ९

द्विरागमन मुहूर्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरू	९.७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।१७ से १।१०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरू	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरू	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ कृष्ण पक्ष	१२	बुध	३.२.२७	मूल	धनु	लं.चि.	
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरू	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरू	२५.२.२७	चित्रा	तुला	लं.चि.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरू	४.३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरू	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२

उपनयन मुहूर्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	वृषभ	९।३९ से ११।३६
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	वृषभ	१०।०८ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	मिथुन	११।३६ से १।४९
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	मिथुन	१२।१३ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।२२ से १।१०
चैत्र शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	२०.३.२६	रेवती	मीन	मिथुन	१२।५४ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	६	मंगल	२४.३.२६	रोहिणी	वृषभ	वृषभ	९।५२ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	६	मंगल	२४.३.२६	रोहिणी	वृषभ	वृषभ	१०।३२ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	९	शुक्र	२७.३.२६	पुनर्वसु	कर्क	मिथुन	११।४५ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	९	शुक्र	२७.३.२६	पुनर्वसु	कर्क	मिथुन	१३।१२ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	मेष	०८।४५ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	वृषभ	९।०३ से ११।०१
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	मिथुन	११।०१ से १।१४
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	मिथुन	११।३८ से
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	अभिजिति	१२।१९ से १।०८
चैत्र शुक्ल पक्ष	११	रवि	२९.३.२६	आश्लेषा	कर्क	मिथुन	१३।०४ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	१	शुक्र	०३.४.२६	चित्रा	तुला	मिथुन	११।१८ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	१	शुक्र	०३.४.२६	चित्रा	तुला	मिथुन	१२।४५ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	६	बुध	०८.४.२६	मूल	धनु	मेष	०८।१७ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	६	बुध	०८.४.२६	मूल	धनु	मिथुन	१०।५५ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	६	बुध	०८.४.२६	मूल	धनु	मिथुन	१२।२५ से
वैशाख कृष्ण पक्ष	१३	बुध	१५.४.२६	पूभा	क./मी	वृषभ	७।५७ से ९।५४
वैशाख कृष्ण पक्ष	१३	बुध	१५.४.२६	पूभा	मीन	मिथुन	९।५४ से १२।०७
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	५	मंगल	२१.४.२६	मृगशिरा	वृषभ	वृषभ	०८।०२ से
वैशाख शुक्ल पक्ष	५	मंगल	२१.४.२६	मृगशिरा	वृषभ	वृषभ	०८।४१ से
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	७।३० से ९।२७
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	०७।५८ से
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	०८।३७ से
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२

उपनयन मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	१२	मंगल	२८.४.२६	उफा	कन्या	वृषभ	०७।३४ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृषभ	६।४५ से ८।४२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरू	७.०५.२६	पूषा	धनु	मिथुन	८।२६ से १०।३९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरू	७.५.२६	पूषा	धनु	अभिजित	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	मकर	वृषभ	६।१७ से ८।१५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	२	मंगल	१६.६.२६	आर्द्रा	मिथुन	मिथुन	०७।०८ से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	२	मंगल	१६.६.२६	आर्द्रा	मिथुन	कन्या	१३।०६ से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	मिथुन	मिथुन	०७।५० से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	५	शुक्र	१९.६.२६	आश्लेषा	कर्क	मिथुन	०७।४२ से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	७	रवि	२१.६.२६	पूफा	सिंह	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	मिथुन	०७।२२ से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	कन्या	१२।३४ से १३।१७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	११	गुरू	२५.६.२६	स्वाति	तुला	मिथुन	०६।३३ से
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	०१.७.२६	उषा	धनु	कन्या	१२।०७ से
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	६	रवि	२९.११.२६	पुष्य	कर्क	धनु	८।२७ से १०।३१
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरू	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	धनु	८।०० से १०।०४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरू	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	धनु	७।४० से ९।४४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।११ से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ कृष्ण पक्ष	१२	बुध	०३.२.२७	मूल	धनु	लं.चि.	
माघ कृष्ण पक्ष	१३	गुरू	०४.२.२७	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।३० से १।१४
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरू	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२	सोम	२२.२.२७	पूफा	सिंह	ल.चिं.	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरू	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरू	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरू	४.३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरू	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।२४ से १।१२

गृहारंभ मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या		
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	०६.५.२६	मूल	धनु		७।५२ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरु	०७.५.२६	पूषा	धनु		
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	०८.५.२६	उषा	मकर		६।२५ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर		
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ *	६।०२ से ७।५९ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२ से १३।०७
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	शुक्र	२६.६.२६	विशाखा	तुला		६।२० या.
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१४ से १।०९
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.७.२६	उषा	धनु		०७।३९ से
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	६	सोम	६.७.२६	पूभा	मीन		१३।४८ या.
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	बुध	९.७.२६	अश्विनी	मेष		१०।३९ से
आषाढ कृष्ण पक्ष	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
श्रावण शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	१४.८.२६	पूफा	सिंह	✼	
श्रावण शुक्ल पक्ष	३	शनि	१५.८.२६	उफा	सिंह/कन्या	✼	
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति ✼	१२।१७ से १।०८
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला	ल.चि. ✼	दिवा ६।४७ या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	विशाखा	तुला	✼	०६।४७ से
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरू	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक		०९।०९ से
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरू	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
श्रावण शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर		०८।०० या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।१४ से १।०५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	१	शनि	२९.८.२६	पूषा	कुंभ		
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	६	बुध	०२.९.२६	भरणी	मेष		
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	०४.९.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजित	१२।१७ से १।०८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	अभिजिति	१२।०९ से १२।५८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरू	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	सोम	२१.९.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०७ से १२।५५
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१३	गुरू	२४.९.२६	शतभिषा	कुंभ	अभिजिति	१२।०६ से १२।५४
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१३	शनि	७.११.२६	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	७।३७ से ९।५३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	६	बुध	२७.१.२७	हस्त	कन्या		
माघ कृष्ण पक्ष	१२	बुध	०३.२.२७	पूषा	धनु	अभिजित ✼	१३।५१ या.
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	०८.२.२७	शतभिषा	कुंभ	अभिजित	१२।३१ से १३।१५ या.
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष		०८।०३ से
माघ शुक्ल पक्ष	७	शनि	१३.२.२७	भरणी	मेष		
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क		११।१६ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२	सोम	२२.२.२७	पूभा	सिंह		
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	७	शनि	२७.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		११।४० से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	०४.३.२७	उषा	मकर		०७।२४ से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५५
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष		११।२० से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	७	सोम	१५.३.२७	रोहिणी	वृषभ	वृषभ	७।०० या.

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ल	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन		कलश
वैशाख शुक्ल	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ/मिथुन	कलश ८।०२ से ११।३१

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	चक्र शुद्धि	सिरोही
वैशाख शुक्ल	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	कलश	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या		कलश	
वैशाख शुक्ल	१५	शुक्र	०१.५.२६	स्वाति	तुला		वास्तु	१०।०१ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	४	बुध	०६.५.२६	मूल	धनु		वास्तु	०७।५२ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	६	शुक्र	०८.५.२६	उषा	मकर		वास्तु	१२।२२ या.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर		वास्तु	१२।०८ से १३।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	कलश	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	कलश	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	कलश	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	कलश	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	११	गुरू	२५.६.२६	स्वाति	तुला		कलश	०७।०९ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	कलश	१२।१४ से १।०९
आषाढ कृष्ण	१	बुध	०१.७.२६	उषा	धनु/मकर		वास्तु	०७।३९ से
आषाढ़ कृष्ण	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	कलश	१२।१७ से १।११
श्रावण शुक्ल	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला		कलश	०६।४७ या.
श्रावण शुक्ल	८	गुरू	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक		कलश	०९।०९ से
श्रावण शुक्ल	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर		कलश	०८।०० या.
श्रावण शुक्ल	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुम्भ		वास्तु	
भाद्रपद कृष्ण	११	सोम	०७.९.२६	पुनर्वसु	कर्क		कलश	१२।४० से
मार्गशीर्ष कृष्ण	१०	गुरू	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	कलश	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	कलश	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण	१२	शनि	५.१२.२६	चित्रा	तुला	धनु	कलश	८।०४ से १०।०८
माघ कृष्ण	१२	बुध	०३.२.२७	पूषा	धनु		कलश	१२।२६ से १३।५१
माघ शुक्ल	२	सोम	०८.२.२७	शतभिषा	कुंभ	अभिजिति	वास्तु	१२।३१ से १३।१५
माघ शुक्ल	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष		कलश	८।०३ से
माघ शुक्ल	१२	गुरू	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन		कलश	
माघ शुक्ल	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजित	कलश	१२।३० से १३।१५
फाल्गुन कृष्ण	३	सोम	२२.२.२७	उफा	सिंह		वास्तु	११।५६ से
फाल्गुन कृष्ण	५	गुरू	२५.२.२७	स्वाति	तुला	ल.चिं.	वास्तु	०९।३३ से
फाल्गुन कृष्ण	११	गुरू	०४.३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	कलश	१२।२७ से १३।१४
फाल्गुन कृष्ण	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	कलश	१०।२० से १०।५३

चक्र शुद्धि रहित गृहप्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा	७।२८ या.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	वृषभ		६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति		१२।०९ से १२।२२
आषाढ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.०७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.		

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरू	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	३	शनि	१२.१२.२६	उषा	धनु	धनु	७।३६ सेर ९।४०
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुंभ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरू	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजित	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या		
वैशाख शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	१.०५.२६	स्वाति	तुला		१०।०१ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृषभ	६।४५ से ८।४२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु		०७।५२ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरू	७.०५.२६	पूषा	धनु		
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	९.०५.२६	श्रवण	मकर	वृषभ	६।२१ से ८।१९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	९.०५.२६	श्रवण	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १३।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	मकर	वृषभ	६।१७ से ८।१५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरू	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	ल.चिं.	१०।४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	७	रवि	२१.६.२६	उफा	सिंह	ल.चिं.	९।३२ से ११।२२

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ उ. १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण	२	सोम	२२.२.२७	उफा	सिंह		११।१६ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	७	शनि	२७.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		११।४० से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	८	रवि	२८.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		१३।४८ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.०३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।२४ से १।१२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	७	सोम	१५.३.२७	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	०७।०१ या.

श्री गणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	४	गुरू	१८.६.२६	पुष्य	कर्क	ल.चिं.	०८।१५ या.
आषाढ कृष्ण	३	शुक्र	०३.७.२६	श्रवण/धनिष्ठा	मकर	अभिजित	१२।१५ से १३।०८
आषाढ कृष्ण	४	शनि	०४.७.२६	धनिष्ठा	कुंभ	ल.चिं.	१२।४१ या.
भाद्रपद शुक्ल	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	कन्या/तुला	ल.चिं.	
माघ शुक्ल	४	बुध	१०.२.२७	उभा	मीन		१४।४७ या.
फाल्गुन कृष्ण	४	बुध	२४.२.२७	हस्त/चित्रा	तुला		

शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन		
वैशाख शुक्ल	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन		
वैशाख शुक्ल	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	ल.चि.	०८।०२ से १०.३० या.
वैशाख शुक्ल	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या	ल.चि.	०७।३० से ९.०० या.
वैशाख शुक्ल	१४	गुरु	३०.४.२६	चित्रा	कन्या	अभिजित	१२।३० से १३.१४ या.
वैशाख शुक्ल	१५	शुक्र	०१.५.२६	स्वाति	तुला		१०।०१ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	२	रवि	०३.५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	ल.चि.	९।३० से १२।००
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	४	बुध	०६.५.२६	मूल	धनु		७।५२ से ०९।००
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	५	गुरु	०७.५.२६	पूषा	धनु	ल.चिं.	
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	६	शुक्र	०८.५.२६	उषा	मकर	वृषभ	०६।२६ से ०८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर	वृषभ	०६।२१ से ०८।१९

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	कुंभ	वृषभ	०६।१७ से ०८।१५
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	ल.चिं.	१०।४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	७	रवि	२१.६.२६	उफा	कन्या		९।३२ से ११।२२
आषाढ़ कृष्ण	१	बुध	०१.७.२६	उषा	धनु		७।३९ से
आषाढ़ कृष्ण	४	शनि	०४.७.२६	धनिष्ठा	कुंभ		१२।४१ से १३।४४
आषाढ़ कृष्ण	९	गुरु	०९.७.२६	अश्विनी	मेष		१०।३९ से १४।५६
श्रावण शुक्ल	३	शनि	१५.८.२६	उफा	सिंह/कन्या		
श्रावण शुक्ल	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या		१३।५४ या.
श्रावण शुक्ल	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला		०६।५७ या.
श्रावण शुक्ल	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक		०९।०९ से
श्रावण शुक्ल	११	रवि	२३.८.२६	मूल	धनु	ल.चिं.	
श्रावण शुक्ल	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर	ल.चिं.	
श्रावण शुक्ल	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुंभ		०७।२७ से
माघ कृष्ण पक्ष	६	बुध	२७.१.२७	हस्त	कन्या	ल.चिं.	
माघ कृष्ण पक्ष	९	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजित	१२।३० से १३।१३
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	०८.२.२७	शतभिषा	कुंभ		०९।४६ से
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष		०८।०३ से
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	ल.चिं.	
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क		०७।३० से १०।३०
फाल्गुन कृष्ण	२	सोम	२२.२.२७	उफा	सिंह		११।५६ से
फाल्गुन कृष्ण	५	गुरु	२५.२.२७	चि./स्वा.	तुला	ल.चिं.	
फाल्गुन कृष्ण	६	शुक्र	२६.२.२७	स्वाति	तुला		१०।१३ या.
फाल्गुन कृष्ण	७	शनि	२७.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		११।४० से
फाल्गुन कृष्ण	८	रवि	२८.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		१३।४७ या.
फाल्गुन शुक्ल	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन		१०।५३ या.
फाल्गुन शुक्ल	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजित	१२।२४ से १३।१२
फाल्गुन शुक्ल	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ		१०।२७ से १२।००
फाल्गुन शुक्ल	७	सोम	१५.३.२७	रोहिणी	वृषभ		०७।०१ या.

विष्णु प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मेष		७।११ से
वैशाख शुक्ल	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	ल.चिं.	
वैशाख शुक्ल	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	ल.चिं.	
वैशाख शुक्ल	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क		८।०२ से
वैशाख शुक्ल	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या	ल.चिं.	
वैशाख शुक्ल	१५	शुक्र	०१.५.२६	स्वाति	तुला		१०।०१ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	मिथुन		१०।४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	५	शुक्र	१९.६.२६	आश्लेषा	कर्क		१०।०७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	६	शनि	२०.६.२६	पूफा	सिंह		०९।२६ से
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	७	रवि	२१.६.२६	पूफा/उफा	सिंह		११।२२ या.
माघ कृष्ण पक्ष	६	बुध	२७.१.२७	हस्त	कन्या	ल.चिं.	
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	ल.चिं.	११।०५ से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष		११।२० से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	७	सोम	१५.३.२७	रोहिणी	वृषभ		०७।०१ या.

श्री देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२६.३.२६	आर्द्रा	मिथुन	ल.चिं.	
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण	९	सोम	११.५.२६	शतभिषा	कुंभ	ल.चिं.	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	०९.७.२६	अश्विनी	मेष	ल.चिं.	
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	९	शनि	०५.९.२६	मार्गशीर्ष	वृ./मि.	ल.चिं.	
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	९	रवि	२०.९.२६	पूषा	धनु		

दक्षिणायने उग्रदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१४ से १।०९
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	९.७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।१७ से १।१०
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१३	रवि	१२.७.२६	मृगशिरा	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	शनि	२८.११.२६	पुनर्वसु	कर्क	धनु	८।३१ से १०।३५
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	शनि	२८.११.२६	पुनर्वसु	कर्क	अभिजिति	१२।०५ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	६	रवि	२९.११.२६	पुष्य	कर्क	धनु	८।२७ से १०।३१
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरु	३.११.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	चित्रा	तुला	धनु	८।०४ से १०।०८
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	धनु	८।०० से १०।०४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	३	शनि	१२.१२.२६	उषा	धनु	धनु	७।३६ सेर ९।४०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ सेर ९।१२

जैन प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या	
वैशाख शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	०१.५.२६	स्वाति	तुला	१०।०१ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	०३.५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	०७।१० से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	०८.५.२६	उषा	मकर	१२।२२ या.
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	१०।४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	७	रवि	२१.६.२६	उफा	कन्या	९।३२ से ११।२२
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	११	गुरु	२५.६.२६	स्वाति	तुला	७।०९ या.
आषाढ कृष्ण पक्ष	१	बुध	०१.७.२६	उषा	धनु	७।३९ से
आषाढ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	०९.७.२६	अश्विनी	मेष	१०।३९ से १४।५७
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	०८.२.२७	शतभिषा	कुंभ	०९।४६ से
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	०८.२.२७	अश्विनी	मेष	०८।०३ से
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	११।१६ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२	सोम	२२.२.२७	उफा	सिंह	११।५६ से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	स्वाति	तुला	०९।३३ से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	२६.२.२७	स्वाति	तुला	१०।१४ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	१०।५३ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	११।२० से

दीक्षा का मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या	
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	०३.५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	०७.१० से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	०६.५.२६	मूल	धनु	०७.५२ से
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	०९.५.२६	श्रवण	मकर	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	मिथुन/कर्क	१०.४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	७	रवि	२१.६.२६	उफा	सिंह	०९.३२ से ११.२२
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	११	गुरु	२५.६.२६	स्वाति	तुला	०७.०९ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	०१.७.२६	उषा	धनु	०७.३९ से

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	५	रवि	०५.७.२६	शतभिषा	कुंभ		
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	०९.७.२६	अश्विनी	मेष		१०.३९ से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	स्वाति	तुला		०९.३३ से
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	७	शनि	२७.२.२७	अनुराधा	वृश्चिक		११.४० से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन		१०.५३ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष		११.२० से
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ		१२.३३ से

विपणि व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त

वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृषभ	६।४५ से ८।४२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१४ से १।०९
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.०७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	९.०७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।१७ से १।१०
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१३	रवि	१२.७.२६	मृगशिरा	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।१७ से १।०८
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	२	रवि	३०.८.२६	उभा	मीन	अभिजिति	१२।१४ से १।०४
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	४.०९.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१२ से १।०२
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	२	रवि	१३.९.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१० से १२।५९
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	अभिजिति	१२।०९ से १२।५८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	सोम	२१.९.२६	उषा	ध./म.	वृश्चिक	१०।४३ से १२।५९

भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	सोम	२१.९.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०७ से १२।५५
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१३	शनि	७.११.२६	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	७।३७ से ९।५३
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।२१ से ९।३७
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	वृश्चिक	७।०६ से ९।२२
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	धनु	९।२२ से ११।२५
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	६	रवि	२९.११.२६	पुष्य	कर्क	धनु	८।२७ से १०।३१
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरु	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	चित्रा	तुला	धनु	८।०४ से १०।०८
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	३	शनि	१२.१२.२६	उषा	धनु	धनु	७।३६ सेर ९।४०
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.०३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२

मशीनरी शुभारंभ मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	कर्क	११।३७ से १।५२
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	कर्क	१०।५५ से १।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	३	सोम	४.०५.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	कर्क	१०।५३ से १।०८
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	३	सोम	४.०५.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	९.०५.२६	श्रवण	मकर	कर्क	१०।३१ से १२।४८
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	७	शनि	९.०५.२६	श्रवण	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	८	रवि	१०.५.२६	धनिष्ठा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	कर्क	१०।१२ से १२।२९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	कर्क	७।५९ से १०।१६
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	कर्क	७।३३ से ९।४९
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	कर्क	७।२० से ९।३७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१३	शनि	२७.६.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१४ से १।०९
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	९.०७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।१७ से १।१०
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१३	रवि	१२.७.२६	रोहिणी	वृषभ	कर्क	६।२१ से ८।२९
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१३	रवि	१२.७.२६	मृगशिरा	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	तुला	१०।४५ से १।०२
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।१७ से १।०८
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला	ल.चिं.	दिवा ६।४७ या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
श्रावण शुक्ल पक्ष	१०	शनि	२२.८.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	तुला	१०।२५ से १२।४२
श्रावण शुक्ल पक्ष	१०	शनि	२२.८.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
श्रावण शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर	तुला	१०।१० से १२।२६
श्रावण शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुम्भ	तुला	१०।०२ से १२।१८
श्रावण शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।१४ से १।०५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	४.०९.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१२ से १।०२
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	११	सोम	७.०९.२६	पुनर्वसु	मिथुन	तुला	९।२२ से ११।३९
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	११	सोम	७.०९.२६	पुनर्वसु	मि/क	अभिजिति	१२।१२ से १।०१
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	२	सूर्य	१३.९.२६	हस्त	कन्या	तुला	८।५८ से ११।१५
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	२	सूर्य	१३.९.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१० से १२।५९
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	तुला	८।५५ से ११।११
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	अभिजिति	१२।०९ से १२।५८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरू	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	तुला	८।४३ से १०।५९
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	७	शुक्र	१८.९.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	तुला	८।३९ से १०।५५
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	७	शुक्र	१८.९.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०८ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१२	बुध	२३.९.२६	श्रवण	मकर	ल.चिं.	दिवा ९।०९ या.
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१३	गुरु	२४.९.२६	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०६ से १२।५४
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	ल.चिं.	
कार्तिक शुक्ल पक्ष	३	गुरू	१२.११.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४
कार्तिक शुक्ल पक्ष	७	सोम	१६.११.२६	श्रवण	मकर	ल.चिं.	
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	शनि	२८.११.२६	पुनर्वसु	कर्क	धनु	८।३१ से १०।३५
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	५	शनि	२८.११.२६	पुनर्वसु	कर्क	अभिजिति	१२।०५ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	६	रवि	२९.११.२६	पुष्य	कर्क	धनु	८।२७ से १०।३१
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	चित्रा	तुला	धनु	८।०४ से १०।०८
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	धनु	८।०० से १०।०४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१३	रवि	६.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ कृष्ण पक्ष	१०	सोम	१.०२.२७	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।३० से १।१४
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	मेष	१०।३९ से १२।१९
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	मेष	९।५८ से ११।३८
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	मेष	९।५४ से ११।३४
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चि.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।२४ से १।१२

कूपारंभ मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.०७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरु	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	धनु	७।४० से ९।४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।११ से १२।५२
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.०३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३

वर–कन्या वरण मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख कृष्ण पक्ष	१३	बुध	१५.४.२६	पूभा	क/मी	वृषभ	७।५७ से ९।५४
वैशाख कृष्ण पक्ष	१३	बुध	१५.४.२६	पूभा	मीन	मिथुन	९।५४ से १२।०७
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरू	७.०५.२६	पूषा	धनु	मिथुन	८।२६ से १०।३९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरू	७.०५.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	वृषभ	६।२५ से ८।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	५	गुरु	१९.६.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।०८ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.६.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चि.	दिवा ७।२८ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
आषाढ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.०७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
आषाढ कृष्ण पक्ष	६	सोम	६.०७.२६	पूभा	धनु	अभिजिति	१२।१६ से १।१०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरु	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरु	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	धनु	७।४० से ९।४४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।११ से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
पौष शुक्ल पक्ष	१०	सोम	१८.१.२६	कृतिका	वृषभ	अभिजिति	१२।२७ से १।१०
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ कृष्ण पक्ष	१२	बुध	३.०२.२७	मूल	धनु	ल.चिं.	
माघ कृष्ण पक्ष	१३	गुरु	४.०२.२७	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।३० से १।१४
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	२	सोम	२२.२.२७	पूफा	सिंह	ल.चिं.	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.०३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३

चूड़ी धारण मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	८.०५.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०९ से १२।२२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	ल.चि.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चित्रा	तुला	ल.चिं.	
आषाढ कृष्ण पक्ष	१	बुध	१.०७.२६	उषा	धनु	ल.चिं.	
आषाढ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	९.०७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।१७ से १।१०
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।१७ से १।०८
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला	ल.चिं.	दिवा ६।४७ या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	४.०९.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१२ से १।०२
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	११	सोम	७.०९.२६	पुनर्वसु	मि/क	अभिजिति	१२।१२ से १।०१
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	अभिजिति	१२।०९ से १२।५८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	सोम	२१.९.२६	उषा	ध/म	वृश्चिक	१०।४३ से १२।५९
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१०	सोम	२१.९.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०७ से १२।५५
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।२१ से ९।३७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१०	गुरु	३.१२.२६	उफा	कन्या	धनु	८।१२ से ९।२४

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
पौष शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२२.१.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।२८ से १।११
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।३० से १।१३
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२

जलवा पूजन मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	कर्क	ल.चि.	
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।१६ से १।०७
श्रावण शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर	ल.चि.	
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	११	सोम	७.०९.२६	पुनर्वसु	मि/क	अभिजिति	१२।१२ से १।०१
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से २।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१२	बुध	२३.९.२६	श्रवण	मकर	ल.चि.	दिवा ९।०९ या.
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।२१ से ९।३७
कार्तिक शुक्ल पक्ष	७	सोम	१६.११.२६	श्रवण	मकर	वृश्चिक	७।०२ से ९।१८
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरु	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
माघ कृष्ण पक्ष	१२	बुध	३.०२.२७	मूल	धनु	ल.चि.	
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५

✻ अभिजित मुहूर्त्त ✻ प्रायः शोधित मुहूर्त्त तालिका में अभिजित मुहूर्त्त में कार्य करें एवं लिखा रहता है। उसका अर्थ यह है कि नित्य के १५ मुहूर्त्तों में आठवां ८ अभिजित् संज्ञक शुभफलद है। इष्ट दिन के दिनमान घटी पल को आधा करें तथा ढाई २।। भागित करके घंटा मिनिट बनावें। इस दिनार्द्ध घंटा मिनिट को सूर्योदय काल में जोड़ें, यह मध्यान्ह काल होगा। इस मध्यान्ह काल से २४ मिनिट पहले तथा २४ मिनिट बाद का समय अभिजित मुहूर्त्त है। इस मुहूर्त्त वेला का प्रयोग बुधवार के दिन शास्त्र सम्मत नहीं तथा अन्य वारों में कार्य प्रसाधना योग्य।

काष्ठ संग्रह

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख कृष्ण पक्ष	१३	बुध	१५.४.२६	पूभा	कु/मी	वृषभ	७।५७ से ९।५४
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	७।३० से ९।२७
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	वृषभ	६।०२ से ७।५९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	मिथुन	७।५९ से १०।१२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजिति	१२।०८ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	शुक्र	१९.६.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।०८ से १।०२
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१२	शनि	११.७.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।१७ से १।११
श्रावण शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	१४.८.२६	पूफा	सिंह	अभिजिति	१२।१७ से १।०९
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।१७ से १।०८
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला	ल.चिं.	दिवा ६।४७ या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।१४ से १।०५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	११	सोम	७.९.२६	पुनर्वसु	मि/क	अभिजिति	१२।१२ से १।०१
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चित्रा	तुला	अभिजिति	१२।०९ से १२।५८
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १२।५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१३	गुरु	२४.९.२६	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०६ से १२।५४
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१०	बुध	४.११.२६	पूफा	सिंह	ल.चिं.	दिवा ११।०४ उ.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१३	शनि	७.११.२६	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	७।३७ से ९।५३
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।२१ से ९।३७
कार्तिक शुक्ल पक्ष	३	गुरु	१२.११.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।१७ से ९।३३
कार्तिक शुक्ल पक्ष	३	गुरु	१२.११.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४
कार्तिक शुक्ल पक्ष	५	शनि	१४.११.२६	पूषा	धनु	वृश्चिक	७।०९ से ९।२५
कार्तिक शुक्ल पक्ष	५	शनि	१४.११.२६	पूषा	धनु	धनु	९।२५ से ११।२९
कार्तिक शुक्ल पक्ष	५	शनि	१४.११.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	११	शुक्र	४.१२.२६	चित्रा	कन्या	अभिजिति	१२।०७ से १२।५०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	चित्रा	तुला	धनु	८।०४ से १०।०८
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१२	शनि	५.१२.२६	स्वाति	तुला	अभिजिति	१२।०८ से १२।५०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरु	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	धनु	७।४० से ९।४४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।११ से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	३	शनि	१२.१२.२६	उषा	धनु	धनु	७।३६ से ९।४०
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
पौष शुक्ल पक्ष	१०	सोम	१८.१.२७	कृतिका	वृषभ	अभिजिति	१२।२७ से १।१०

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
माघ कृष्ण पक्ष	१	शनि	२३.१.२७	आश्लेषा	कर्क	अभिजिति	१२।२९ से १।१२
माघ कृष्ण पक्ष	१३	गुरु	४.०२.२७	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।३० से १।१४
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.९.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	११	गुरु	४.०३.२७	उषा	मकर	अभिजिति	१२।२७ से १।१४
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरू	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२

निलोद्वाह, त्रिपिण्डी श्राद्ध (पितृ क्रिया) मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मेष	वृषभ	७।४२ से ७।३९
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मेष	मिथुन	९।३९ से ११।५२
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मे/वृ	अभिजिति	१२।१२ से १।०३
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	७।३० से ९।२७
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	वृषभ	७।१३ से ९।१०
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	मिथुन	९।१० से ११।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृषभ	६।४५ से ८।४२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	३	सोम	४.०५.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरु	७.०५.२६	पूषा	धनु	मिथुन	८।२६ से १०।३९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरु	७.०५.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	५	शुक्र	१९.६.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।०८ से १।०२
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२३ से १।०७
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१	रवि	२१.२.२७	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।३० से १।१५

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृशभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	कृतिका	वृषभ	वृषभ	१०।०४ से १०।२३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।२४ से १।१२

नारायण बलि (प्रेत क्रिया) मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मेष	वृषभ	७।४२ से ९।३९
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मेष	मिथुन	९।३९ से ११।५२
वैशाख शुक्ल पक्ष	२	रवि	१९.४.२६	कृतिका	मे/वृ	अभिजिति	१२।१२ से १।०३
वैशाख शुक्ल पक्ष	३	सोम	२०.४.२६	रोहिणी	वृषभ	ल.चिं.	दिवा ७।२८ या.
वैशाख शुक्ल पक्ष	६	बुध	२२.४.२६	आर्द्रा	मिथुन	वृषभ	७।३० से ९।२७
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	वृषभ	७।२५ से ९।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरू	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।१ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	वृषभ	८।०२ से ९।१९
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	९।१९ से ११।३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।११ से १।०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	वृषभ	७।१३ से ९।१०
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	मिथुन	९।१० से ११।२३
वैशाख शुक्ल पक्ष	१०	रवि	२६.४.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।११ से १।०२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृषभ	६।४५ से ८।४२
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	मिथुन	८।४२ से १०।५५
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२	रवि	३.०५.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	३	सोम	४.०५.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	४	बुध	६.०५.२६	मूल	धनु	मिथुन	८।३० से १०।४३
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरु	७.०५.२६	पूषा	धनु	मिथुन	८।२६ से १०।३९
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	५	गुरु	७.०५.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।०९ से १।०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	५	शुक्र	१९.६.२६	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।०८ से १।०२
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	८	सोम	२२.६.२६	हस्त	कन्या	अभिजिति	१२।१२ से १।०७
कार्तिक शुक्ल पक्ष	२	बुध	११.११.२६	अनुराधा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।२१ से ९।३७
कार्तिक शुक्ल पक्ष	३	गुरु	१२.११.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	वृश्चिक	७।१७ से ९।३३
कार्तिक शुक्ल पक्ष	३	गुरु	१२.११.२६	ज्येष्ठा	वृश्चिक	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	वृश्चिक	७।०६ से ९।२२
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	धनु	९।२२ से ११।२५
कार्तिक शुक्ल पक्ष	६	रवि	१५.११.२६	उषा	मकर	अभिजिति	१२।०१ से १२।४४

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
कार्तिक शुक्ल पक्ष	७	सोम	१६.११.२६	श्रवण	मकर	वृश्चिक	७।०२ से ९।१८
कार्तिक शुक्ल पक्ष	९	गुरु	१९.११.२६	पूभा	कुम्भ	धनु	९।०६ से ११।१०
कार्तिक शुक्ल पक्ष	९	गुरु	१९.११.२६	पूभा	कुम्भ	अभिजिति	१२।०२ से १२।४५
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१	बुध	२५.११.२६	रोहिणी	वृषभ	धनु	८।४३ से १०।४७
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	धनु	८।३९ से १०।४३
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२	गुरु	२६.११.२६	मृगशिरा	मिथुन	अभिजिति	१२।०४ से १२।४७
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	१	गुरु	१०.१२.२६	मूल	धनु	अभिजिति	१२।१० से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	धनु	७।४० से ९।४४
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	२	शुक्र	११.१२.२६	पूषा	धनु	अभिजिति	१२।११ से १२।५२
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	५	सोम	१४.१२.२६	श्रवण	मकर	धनु	७।२९ से ९।१२
माघ कृष्ण पक्ष	२	रवि	२४.१.२७	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।२९ से १।१२
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	८.०२.२७	शतभिषा	कुम्भ	अभिजिति	१२।३१ से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजिति	१२।३० से १।१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	१	रवि	२१.२.२७	मघा	सिंह	अभिजिति	१२।३० से १।१५
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चित्रा	तुला	ल.चिं.	दिवा ९।३३ या.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	२	बुध	१०.३.२७	उभा	मीन	वृषभ	१०।२० से १०।५३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजिति	१२।२५ से १।१२
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	कृतिका	वृषभ	वृषभ	१०।०४ से १०।२३
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	६	रवि	१४.३.२७	रोहिणी	वृषभ	अभिजिति	१२।२४ से १।१२

वाहन क्रय मुहूर्त्त

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	कर्क	११.३७ से १३.५२
वैशाख शुक्ल पक्ष	७	गुरु	२३.४.२६	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजित	१२.११ से १३.०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	मिथुन	०२.१९ से ११.३१
वैशाख शुक्ल पक्ष	८	शुक्र	२४.४.२६	पुष्य	कर्क	अभिजित	१२.११ से १३.०२
वैशाख शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२९.४.२६	हस्त	कन्या	ल.चिं.	
वैशाख शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	०१.५.२६	स्वाति	तुला	अभिजित	१२.०९ से १३.०१
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१२	गुरु	१४.५.२६	रेवती	मीन	अभिजित	१२.०८ से १३.०१
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	३	बुध	१७.६.२६	पुनर्वसु	मिथुन	कर्क	७.५९ से ९.४७ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१०	बुध	२४.६.२६	चि/स्वा.	तुला	कर्क	७.३३ से ९.४९ या.
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	११	गुरु	२५.६.२६	स्वाति	तुला	कर्क	०७.०९ या.
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	९	गुरु	०९.७.२६	अश्विनी	मेष	अभिजित	१२.१७ से १३.१०
श्रावण शुक्ल पक्ष	५	सोम	१७.८.२६	चित्रा	कन्या	तुला	१०.४५ से १३.०२

मास पक्ष	तिथि	वार	दिनांक	नक्षत्र	चन्द्र	लग्न	सिरोही
श्रावण शुक्ल पक्ष	७	बुध	१९.८.२६	स्वाति	तुला	ल.चिं.	दिवा ६.४७ या.
श्रावण शुक्ल पक्ष	८	गुरु	२०.८.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजित	१२.१६ से १३.०५
श्रावण शुक्ल पक्ष	१३	बुध	२६.८.२६	श्रवण	मकर	तुला	१०.१० से १२.२६
श्रावण शुक्ल पक्ष	१५	शुक्र	२८.८.२६	शतभिषा	कुंभ	अभिजित	१२.१४ से १३.०५
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	०४.९.२६	रोहिणी	वृषभ	अभिजित	१२.१२ से १३.०२
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	३	सोम	१४.९.२६	चि./स्वा.	तुला		०८.५५ से ११.१
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	६	गुरु	१७.९.२६	अनुराधा	वृश्चिक	अभिजित	१२.०९ से १२.५७
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	१२	बुध	२३.९.२६	श्रवण	मकर	ल.चिं.	दिवा ९.९ या.
माघ कृष्ण पक्ष	६	बुध	२७.१.२७	हस्त	कन्या		
माघ कृष्ण पक्ष	८	शुक्र	२९.१.२७	स्वाति	तुला	अभिजित	१२.३० से १३.१३
माघ शुक्ल पक्ष	२	सोम	०८.२.२७	शतभिषा	कुंभ	मेष/अभिजित	१०.३९ से १३.१५
माघ शुक्ल पक्ष	६	शुक्र	१२.२.२७	अश्विनी	मेष	अभिजित	१२.३० से १३.१५
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	मेष	०९.५८ से ११.३८
माघ शुक्ल पक्ष	१२	गुरु	१८.२.२७	पुनर्वसु	मिथुन	अभिजित	१२.३० से १३.१५
माघ शुक्ल पक्ष	१३	शुक्र	१९.२.२७	पुष्य	कर्क	मेष	९.५४ से १.३४
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	५	गुरु	२५.२.२७	चि./स्वा.	तुला	ल.चिं.	दिवा ९.३३ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	६	शुक्र	२६.२.२७	स्वाति	तुला	ल.चिं.	१०.१४ या.
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१२	शुक्र	०५.३.२७	श्रवण	मकर	ल.चिं.	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	३	गुरु	११.३.२७	अश्विनी	मेष	अभिजित	१२.२५ से १३.१२

✻ खात चक्र ✻

संक्रांति	विवाह में सूर्य	देवालय में सूर्य	गृहारम्भ में सूर्य	जलाशय में सूर्य	खा.दिशा	राहु मुख
सूर्य	वृष, मिथुन, कर्क	मीन, मेष, वृषभ	सिंह, कन्या, तुला	मकर, कुंभ, मीन	आग्नेय	ईशान
सूर्य	कुंभ, मीन, मेष	धनु, मकर, कुंभ	वृष, मिथुन, कर्क	तुला, वृश्चि., धनु	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य	वृश्चि., धनु, मकर	कन्या, तुला, वृश्चि.	कुंभ, मीन, मेष	कर्क, सिंह, कन्या	वायव्य	नैऋत्य
सूर्य	सिंह, कन्या, तुला	मिथु., कर्क, सिंह	वृश्चि., धनु, मकर	मेष, वृष, मिथुन	ईशान	वायव्य

वार	समय	राहुकाल वेला	समय	गुलिक कालम्	समय	यमगण्डम्
रवि	सायं	४.३०से ६.०	दिवा	३.० से ४.३०	दिवा	१२.० से १.३०
सोम	प्रातः	७.३०से ९.०	दिवा	१.३० से ३.००	प्रातः	१०.३० से १२.००
मंगल	दिवा	३.०से ४.३०	दिवा	१२.०० से १.३०	प्रातः	९.०० से १०.३०
बुध	दिवा	१२.०से १.३०	प्रातः	१०.३० से १२.०	प्रातः	७.३० से ९.००
गुरू	दिवा	१.३० से ३.०	प्रातः	९.० से १०.३०	प्रातः	६.०० से ७.३०
शुक्र	प्रातः	१०.३० से १२.०	प्रातः	७.३० से ९.००	दिवा	३.०० से ४.३०
शनि	प्रातः	९.० से १०.३०	प्रातः	६.०० से ७.३०	दिवा	१.३० से ३.००

✻ विवाहे शुद्धिचक्रं तथा गोचर ग्रहफल शुभाऽशुभ ज्ञानचक्रम् ✻

यादृशेन शशांकेनग्रहः संचरते नृणाम् ॥ तादृशं फलमाप्नोति शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥ शोधन से ठीक, पूज्य से सामान्य, निन्द्य से अशुभ समझें। ✻ विशेष वचनानुसार वर पक्ष में १२ चन्द्र शुभ मान्य तथा कन्या हेतु १२ वाँ चन्द्र मान्य नहीं। ✻ स्त्रीणां गुरूबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम्। तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण निश्चितम् ॥ गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः। पूजयेत्तानु प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः ॥

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरूः	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
३।६ १०।११	१।२।३।५।६। ७।९।१०।११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शोभन
१।२।५ ७।९	०	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३।६ १०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्य

शिव पंचायतन		
विष्णु		सूर्य
	शिव	
शक्ति		गणेश

शक्ति पंचायतन		
विष्णु		शिव
	शक्ति	
सूर्य		गणेश

विष्णु पंचायतन		
शिव		गणेश
	विष्णु	
शक्ति		सूर्य

गणेश पंचायतन		
विष्णु		शिव
	गणेश	
शक्ति		सूर्य

सूर्य पंचायतन		
शिव		गणेश
	सूर्य	
शक्ति		विष्णु

द्वादशराशितिथि, वार, मास, नक्षत्रादि स्त्रीणां सह घातचन्द्रचक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मास	कार्तिक	मार्ग.	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	आश्वि.	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१-६-११	५-१०-१५	१-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-२५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरू	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कुं.	शुक्ल	परिध	व्याधा	धृति	शूल	शूल	व्यती.	वरी.	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतु.	नाग	बव	कौल	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु	चतु.
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चि.	मेष	कर्क
प्रहर	१ ला	४ था	३ रा	१ ला	१ ला	१ ला	४ था	१ ला	१ ला	४ था	३ रा	४ था
चं.पुरू.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मकर	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चं.स्त्री.	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चि	वृश्चि	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि.	मिथुन	कुम्भ

● सिंहस्थ गुरु में शुभ कार्यों पर विचार ●

शौनकजी के आधार पर –कीर्त्यागार विवाहयागगमनं क्षौरं च कर्णव्यधं विद्यादेवविलोकनोपनयनं दीक्षापरीक्षाव्रतम् । स्नानं तीर्थगमं वनं पुरमहोदानं प्रतिष्ठागणं सिहस्थे विबुधार्चने न शुभदं कर्तुस्तथा सूर्यगम् ।।१।। ऋषि शौनक ने बताया है कि सूर्य की राशि सिंह में गुरु के रहने पर कीर्ति सम्बंधी, घर सम्बंधी, विवाह, यज्ञ, यात्रा, क्षौर, कर्णवेध, विद्या, देवदर्शन, यज्ञोपवीत, दीक्षा, परीक्षा, व्रत, स्नान, तीर्थयात्रा, वन, नगर, भूमि दान व देव प्रतिष्ठा करने पर कर्ता को शुभ फल नहीं होता है ।।१।।

शौनक :– पुनः शौनक जी आधार पर सिंहस्थेऽमरमन्त्रिणि । विवाहव्रतयात्रादिपुरहर्म्यगृहादिकम् क्षौरं विद्योपविद्यां च यत्नतः परिवर्जयेत् ।। २।। ऋषि शौनक ने बताया है कि सिंह के गुरु में विवाह, व्रत, यात्रा, नगर, प्रासाद, घर आदि, मुण्डन, विद्या, उपविद्या सम्बंधी कामों का त्याग यत्न से करना चाहिए ।। २।।

कृष्णम्भट्टीये स्कान्दवचनम् – कृष्णभट्टीय में स्कान्द के वाक्य के आधार पर सिंहस्थिते गुरौ राजन् विवाहं नैव कारयेत् ।। ३।। कृष्णभट्टीय में स्कान्द के वचन से मालूम होता है कि सिंह के गुरु में विवाह नहीं करना चाहिये ।। ३।।

माण्डव्य : – माण्डव्यजी के आधार पर – इष्टापूर्तं च चौलादिसंस्कारान् वास्तुकर्म च । अन्यानि शुभकार्याणि न कुर्यात् सिंहगे गुरौ ।।४।। ऋषि माण्डव्य ने बताया है कि अभीष्ट की सिद्धि के लिये सिंह राशि में गुरु के रहने पर चौलादि संस्कार, वास्तु कार्य और अन्य शुभ काम नहीं करना चाहिए ।।४।।

गर्ग : गर्ग के आधार पर – न गुरौ सिंहराशिस्थे सिहांशकगतेपि वा । क्षोरमन्नं न कुर्वीत विवाहं गृहकर्म च ।।५।। आचार्य गर्ग ने बताया है कि सिंह राशि में गुरु के रहने पर तथा सिंह के नवांश में गुरु की स्थिति होने से क्षौर, अन्नप्राशन, विवाह और गृहारम्भ या गृहप्रवेश कार्य नहीं करना चाहिए ।।५।।

निर्णयामृत – निर्णयामृत के आधार पर उद्यानचूड़ाव्रतबंधदीक्षा विवाहयात्रा च वधूप्रवेशः । तड़ागकूपत्रिदशप्रतिष्ठां बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात् ।।६।। निर्णयामृत में बताया है कि बगीचा, चोल, यज्ञोपवीत, दीक्षा, विवाह, यात्रा, वधू प्रवेश, तालाब, कुआँ, देव प्रतिष्ठा सम्बंधी काम सिंह के गुरू में नहीं करना चाहिए ।।६।।

कालनिर्णये – काल निर्णय के आधार पर – शांतिकं पौष्टिकं यात्रा प्रतिष्ठोद्वाहपूर्वकम् । न कुर्यात्सर्वमांगल्यम् सिंहसंस्थे बृहस्पतौ ।।७।। कालनिर्णय में कहा है कि शान्तिक, पौष्टिक, यात्रा, प्रतिष्ठा, विवाह और समस्त मांगलिक काम सिंह के गुरु में नहीं करना चाहिए ।।७।।

राजमार्तण्डे – राजमार्तण्ड के आधार पर – सिंहे यदा तिष्ठते देवपूज्यः पापं तदा वत्सरमादिशंति । वैधव्यमाप्नोत्यचिरेण कन्या विवाहिता स्याद्येदि माधवेन ।।८।। राजमार्तण्ड में बताया है कि सिंह में जब गुरु विद्यमान होता है तो वह वर्ष अशुभ माना जाता है । यदि वैशाख के अतिरिक्त किसी मास में कन्या का विवाह किया जाए तो शीघ्र ही वह विधवा हो जाती है ।।८।।

विवाह चूड़ाव्रत कर्णवेधक्षौरप्रतिष्ठा च गृहप्रवेशः । सुवर्णशंखाद्युपभोगविद्या सिंहे सुरेज्ये न हि शोभानाः स्युः ।।९।। विवाह, चौल, जनेउ, कर्णवेध, क्षीर, प्रतिष्ठा, गृह प्रवेश, सोना, शंख आदि का उपयोग, विद्या सम्बंधी काम अशुभ होता है ।।९।।

मणिमालायाम् – मणिमाला के आधार पर यात्रा क्षौरं च दीक्षा च विवाहव्रतबंधनम् । प्रतिष्ठादि शुभं कार्य त्यजेत्सिहगते गुरी ।।१०।। मणिमाला में कहा है कि यात्रा, क्षौर, दीक्षा, विवाह, यज्ञोपवीत, प्रतिष्ठा और मांगलिक काम सिंह राशि में गुरू के रहने पर नहीं करना चाहिए ।।१०।।

लल्ल :– लल्लाचार्य के आधार पर – मृगेन्द्रसंस्थिते जीवे मध्यदेशे करग्रहे । मृत्युयोगां मृत्युदः स्याद् दंपत्योरिति निश्चयः ।।११।। आचार्य लल्ल ने बताया है कि सिंह राशि में गुरू के रहने पर मध्यदेश में विवाह होने पर मृत्युयोग होने से वर–वधू के लिये मरण कारक होता है ।।११।।

भृगु – सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि च क्रमात् । कर्तव्यानि न दोषोस्ति पंचाननगते गुरौ ।।१२।। आचार्य भृगु ने बताया है कि सीमंत, जातकर्म से अन्नप्राशन तक के संस्कार सिंह के गुरु में करने पर दोषप्रद नहीं होते हैं ।।१२।।

कल्पतरू के आधार पर – नेष्टे शुक्रे तथा जीवे सिंहस्थे च बृहस्पति । कुर्याच्चैत्रे स्वदेव्यर्चा प्रत्यब्दं कुलधर्मतः ।।१३।। कल्पतरू नामक ग्रंथ में बताया है कि शुक्र और गुरु के नेष्ट होने पर एवं सिंहस्थ गुरु में अपनी वंश परम्परा के आधार पर चैत्र मास में प्रतिवर्ष अपनी कुलदेवी की पूजा करनी चाहिए ।।१३।।

कालनिर्णये – कालनिर्णय के अनुसार – सिंहस्थिते सुरगुरावधिमासके च ज्येष्ठे तथाद्यतनयस्य कुमारिकायाः । कुर्वीत् नार्कगतनीचगोविलग्नेजन्मेशयोश्च निखिलान्यपि मंगलानि ।।१४।।

इति न्यायाद्‌विशेषवाक्यैः सामान्यवचनस्य बाधकत्वं भवति । कचिद्वाध कल्वमिति चेदुक्तम् अंशभेदेनापि वर्ज्यम् ।

कालनिर्णय में बताया है कि सिंह के गुरु, अधिक मास व जेठ में ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री का तथा जन्म राशीश व लग्नेश के अस्त और नीचस्थ होने पर मंगल कार्य नहीं करना चाहिए ।।१४।।

इस प्रकरण के न्याय से विशेषवाक्यों से सामान्य वचन में बाधकता होती है । कैसे बाधकता होती है इसे पूछते हो तो उत्तर में अंश भावयंता होती है, इसे बताते हैं ।

मुहूर्त्तचिन्तामणि – मुहूर्त्तचिन्तामणि के आधार पर सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्ट इति ।

मुहूत्तचिन्तामणि में बताया है कि विवाह में सिंह राशि में सिंह के नवांश में गुरु त्याज्य होता है ।।

राजमार्तण्डे – सिंहराशि तु सिंहाशे यदा भवति वाक्पतिः ।

सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योनिधनप्रदः ।।१५।।

राजमार्तण्ड में बताया है कि सिंह राशि में सिंह के नवांश में गुरु के रहने पर समस्त देशों में विवाह त्याज्य होता है क्योंकि वर–वधू के लिये मरण कारक होता है ।।१५।।

सिंहेन्यराशिसहांशे यदा भवति वाक्पतिः । सर्वदेशे शुभं त्याज्यो दम्पत्योनिधनप्रदः ।।१६।। सिंह में या अन्य राशि में सिंह के नवांश में समस्त देशों में शुभकाम वर्जित होता है क्योंकि वर–वधू का मरण कारक होता है ।।१६।।

❊ अधिक मास निर्णय ❊

यत्र संक्रान्तिरभूद्दि वसैर्ज्येष्ठादिकेऽपि वा । स मासः संज्ञया लोके ख्यातोऽधिक इति स्मृतः ।।

अर्थात् – जिस मास में सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती, चाहे वह ज्येष्ठ आदि कोई भी मास हो, वह लोक में अधिक मास कहलाता है ।

अधिकं शुद्धमासं तु सर्वपापप्रणाशनम् । यः करोति व्रतं भक्तया सर्वयज्ञफलं लभेत् ।।

अर्थात् – यह अधिक मास अत्यन्त शुद्ध और पापों का नाश करने वाला है । जो इसमें भक्तिपूर्वक व्रत करता है, वह समस्त यज्ञों के फल को प्राप्त करता है ।

● चैत्री बसंत नवरात्रि–

१. चैत्री बसंत नवरात्रि – चैत्र कृष्ण पक्ष ३० गुरुवार तारीख १९.३.२०२६ ई.दिवा १२।२२ से ०१।१० तक अभिजित वेला में एवं आवश्यकता में प्रातः ०६।५३ से ०८।१७ तक शुभ, दिवा ११।१७ से १२।४६ तक चंचल वेला, दिवा १२।४६ से ०३।४६ तक लाभ अमृत वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

२. आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि – आषाढ़ शुक्ल पक्ष १ बुधवार तारीख १५.७.२०२६ ई.प्रातः ६।०२ से ९।२३ तक लाभ–अमृत, दिवा ११।०४ से १२।०० तक शुभ वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ है।

३. रक्षाबंधन पर्व मुहूर्त्त – श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार तारीख २८.८.२०२६ ई.दिवा ६।२१ से ११।०५ तक चंचल–लाभ–अमृत, दिवा १२।१४ से १।०५ तक अभिजित, दिवा १२।४० से २।१४ तक शुभ, दिवा ५।२३ से ६।५८ तक चंचल वेला में रक्षाबंधन मुहूर्त्त श्रेष्ठ रहेगा।

४. श्री गणेश पूजन का समय – भाद्रपद शुक्ल पक्ष ३ सोमवार तारीख १४.९.२०२६ ई.मध्यान्ह में श्रीगणेश जन्मोत्सव मनाया जावेगा। शास्त्रानुसार श्रीगणेश पूजन का श्रेष्ठ समय वृश्चिक लग्न सहित मध्यान्ह काल माना गया है। वृश्चिक लग्न दिवा ११।११ से १।२७ तक श्रीगणेश स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

५. आश्विन शरद नवरात्रि – आश्विन शुक्ल पक्ष १ रविवार तारीख ११.१०.२०२६ ई.प्रातः ८।०५ से ९।३२ तक चंचल वेला, दिवा ९।३२ से १२।२५ तक लाभ–अमृत, दिवा १२।०२ से १२।४८ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ है।

६. माघी गुप्त नवरात्रि – माघ शुक्ल पक्ष १ रविवार तारीख ७.२.२०२७ ई.दिवा १०।०७ से १२।५३ तक लाभ–अमृत, दिवा १२।३१ से १।१५ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

७. होलिका दहन – फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ रविवार तारीख ३१.३.२०२७ ई.प्रदोष वेला में सायं ०६।४६ से ९।१० तक होलिका का दहन करना श्रेष्ठ रहेगा।

● बहीखाता निर्माण एवं आनयन मुहूर्त्त

१. स्वस्ति शुभ संवत् २०८३ आश्विन शुक्ल पक्ष ८ सोमवार उषा नक्षत्र ता.१९.१०.२०२६ ई. शुक्रास्तः

२. आश्विन शुक्ल पक्ष १५ सोमवार दि. २६.१०.२६ ई. शुक्रास्तः

३. कार्तिक कृष्ण पक्ष ५ शुक्रवार मृगशिरा नक्षत्र दिवा ९।०४ या.दि. ३०.१०.२०२६ ई.शुक्रास्तः

४. कार्तिक कृष्ण पक्ष ७ रविवार पुष्य नक्षत्र दि.१.११.२०२६ ई.रविपुष्य योग

५. कार्तिक कृष्ण पक्ष १२ शुक्रवार हस्त नक्षत्र दि.६.११.२०२६ ई.

● धन त्रयोदशी श्री कुबेर पूजा

स्वस्ति शुभ संवत् २०८३ कार्तिक कृष्ण पक्ष १२ शुक्रवार दि. ६.११.२०२६ ई.भगवान श्री धन्वंतरि पूजन एवं सायं प्रदोष वेला यमदीपदानं तथा श्रीपूजनं सायं ५।५१ से रात्रि ८।१५ पर्यंत।

● श्री महालक्ष्मी पूजा–दीपोत्सव

श्री संवत् २०८३ कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ रविवार तिथिमानक रचना अनुसार तारीख ८.११.२०२६ ई. दिवस वेला पर प्रालेपन गादी स्थापना–स्याही भरना – कलम दवात संवारने हेतु प्रातः स्टेण्डर्ड रेलवे घड़ी समयानुसार दिवा ८।१६ से ९।३८ तक चंचल वेला, दिवा ९।३८ से १२।२२ तक लाभ–अमृत वेला, दिवा १२।०० से १२।४४ तक अभिजित वेला, दिवा १।३८ से ३।१० तक स्थिर कुम्भ लग्न, दिवा १।४४ से ३।०६ तक शुभ, सायं ५।५० से ८।१४ तक गोधूलि वेला, सायं सायं ५।५० से ९।०६ तक शुभ–अमृत, सायं ६।१८ से ८।१५ तक स्थिर वृषभ लग्न, रात्रि ९।०६ से १०।४४ तक चंचल, रात्रि १२।४५ से २।५९ तक स्थिर सिंह लग्न, रात्रि २।०० से ३।३८ तक लाभ, रात्रिशेष ५।१६ से ६।५४ तक शुभ के चौघड़िया पर्यंत की समय मान्यता भी सामान्य पक्ष अनुसार व्यवहार जनक है।

पत्र व्यवहार का पता – पं.जनार्दन ओझा, राज ज्योतिषी,
अर्बुद श्री पंचांग, अकादमी ऑफ वैदिक साईंस (रजि.)
शिवोहम् महालक्ष्मी चौक, गली नं.3, नई आबादी,
जावाल, (सिरोही) राज. 307801 मो.9001141150

● कलश चक्र ●

सूर्य नक्षत्र	दैनिक नक्षत्र	दैनिक नक्षत्र
अश्विनी	(१) आर्द्रा से हस्त	(२) श्रवण से रेवती
भरणी	(१) पुनर्वसु से चित्रा	(२) घनिष्ठा से अश्विनी
कृतिका	(१) पुष्य से स्वाति	(२) शतभिषा से भरणी
रोहिणी	(१) आश्लेषा से विशाखा	(२) पूभा से कृतिका
मृगशीर्ष	(१) मघा से अनुराधा	(२) उभा से रोहिणी
आर्द्रा	(१) पूफा से ज्येष्ठा	(२) रेवती से मृगशीर्ष
पुनर्वसु	(१) उफा से मूल	(२) अश्विनी से आर्द्रा
पुष्य	(१) हस्त से पूषा	(२) भरणी से पुनर्वसु
आश्लेषा	(१) चित्रा से उषा	(२) कृतिका से पुष्य
मघा	(१) स्वाति से श्रवण	(२) रोहिणी से आश्लेषा
पूफा	(१) विशाखा से धनिष्ठा	(२) मृगशिरा से मघा
उफा	(१) अनुराधा से शतभिषा	(२) आर्द्रा से पूफा
हस्त	(१) ज्येष्ठा से पूभा	(२) पुनर्वसु से उफा
चित्रा	(१) मूल से उभा	(२) पुष्य से हस्त
स्वाति	(१) पूषा से रेवती	(२) आश्लेषा से चित्रा
विशाखा	(१) उषा से अश्विनी	(२) मघा से स्वाति
अनुराधा	(१) श्रवण से भरणी	(२) पूफा से विशाखा
ज्येष्ठा	(१) घनिष्ठा से कृतिका	(२) उफा से अनुराधा
मूल	(१) शतभिषा से रोहिणी	(२) हस्त से ज्येष्ठा
पूषा	(१) पूभा से मृगशिरा	(२) चित्रा से मूल
उषा	(१) उभा से आर्द्रा	(२) स्वाति से पूषा
श्रवण	(१) रेवती से पुनर्वसु	(२) विशाखा से उषा
धनिष्ठा	(१) अश्विनी से पुष्य	(२) अनुराधा से श्रवण
शतभिषा	(१) भरणी से आश्लेषा	(२) ज्येष्ठा से धनिष्ठा
पूभा	(१) कृतिका से मघा	(२) मूल से शतभिषा
उभा	(१) रोहिणी से पूफा	(२) पूषा से पूभा
रेवती	(१) मृगशिरा से उफा	(२) उफा से उभा

चैत्र शुक्ल पक्ष दि. २० मार्च से २ अप्रैल २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२०.०३.२०२६	११:०५:०९:४८	५९।३९	११:१७:३०:१६	८५८।५२	१०:१९:२८:५०	४७।१०	१०:१४:१७:५६	-१।५३	०२:२०:५९:२२	०१।४९	११:२२:३५:५३	७४।१७	११:०९:४९:३२	०७।२९	१०:१३:४८:५६
२१.०३.२०२६	११:०६:०९:२६	५९।३६	००:०१:४९:०९	८६७।०६	१०:२०:१५:५९	४७।०९	१०:१४:१६:०३	०४।००	०२:२१:०१:१०	०२।००	११:२३:५०:१०	७४।१५	११:०९:५७:०१	०७।२९	१०:१३:४५:४५
२२.०३.२०२६	११:०७:०९:०३	५९।३४	००:१६:१६:१५	८६९।३३	१०:२१:०३:०८	४७।०८	१०:१४:२०:०३	०९।३९	०२:२१:०३:१०	०२।११	११:२५:०४:२५	७४।१३	११:१०:०४:३०	०७।२९	१०:१३:४२:३४
२३.०३.२०२६	११:०८:०८:३७	५९।३२	०१:००:४५:४८	८६६।३९	१०:२१:५०:१६	४७।०७	१०:१४:२९:४२	१५।०३	०२:२१:०५:२२	०२।२३	११:२६:१८:३८	७४।११	११:१०:११:५९	०७।२९	१०:१३:३९:२४
२४.०३.२०२६	११:०९:०८:०९	५९।३०	०१:१५:१२:२७	८५९।२४	१०:२२:३७:२३	४७।०६	१०:१४:४४:४५	२०।११	०२:२१:०७:४४	०२।३४	११:२७:३२:४८	७४।०९	११:१०:१९:२९	०७।२९	१०:१३:३६:१३
२५.०३.२०२६	११:१०:०७:३९	५९।२७	०१:२९:३१:५१	८४९।०९	१०:२३:२४:२८	४७।०४	१०:१५:०४:५६	२५।०३	०२:२१:१०:१८	०२।४५	११:२८:४६:५७	७४।०७	११:१०:२६:५८	०७।२९	१०:१३:३३:०२
२६.०३.२०२६	११:११:०७:०६	५९।२५	०२:१३:४१:००	८३७।१०	१०:२४:११:३३	४७।०३	१०:१५:२९:५९	२९।३९	०२:२१:११:०३	०२।५६	००:००:०१:०४	७४।०४	११:१०:३४:२७	०७।२९	१०:१३:२९:५१
२७.०३.२०२६	११:१२:०६:३१	५९।२३	०२:२७:३८:०९	८२४।२८	१०:२४:५८:३६	४७।०२	१०:१५:५९:३८	३३।५९	०२:२१:१५:५९	०३।०७	००:०१:१५:०८	७४।०२	११:१०:४१:५७	०७।२९	१०:१३:२६:४१
२८.०३.२०२६	११:१३:०५:५४	५९।२०	०३:११:२२:३८	८११।४३	१०:२५:४५:३८	४७।०१	१०:१६:३३:३७	३८।०५	०२:२१:१९:०६	०३।१७	००:०२:२९:११	७४।००	११:१०:४९:२६	०७।२९	१०:१३:२३:३०
२९.०३.२०२६	११:१४:०५:१४	५९।१८	०३:२४:५४:२१	७९९।१२	१०:२६:३२:३८	४६।५९	१०:१७:११:४२	४१।५७	०२:२१:२२:२३	०३।२८	००:०३:४३:११	७३।५८	११:१०:५६:५५	०७।२९	१०:१३:२०:१९
३०.०३.२०२६	११:१५:०४:३२	५९।१६	०४:०८:१३:३३	७८६।५७	१०:२७:१९:३८	४६।५८	१०:१७:५३:४०	४५।३६	०२:२१:२५:५१	०३।३९	००:०४:५७:०८	७३।५६	११:११:०४:२४	०७।२८	१०:१३:१७:०८
३१.०३.२०२६	११:१६:०३:४८	५९।१४	०४:२१:२०:३०	७७४।५२	१०:२८:०६:३६	४६।५७	१०:१८:३९:१६	४९।०३	०२:२१:२९:३०	०३।४९	००:०६:११:०४	७३।५३	११:११:११:५२	०७।२८	१०:१३:१३:५७
०१.०४.२०२६	११:१७:०३:०२	५९।१२	०५:०४:१५:२२	७६२।५६	१०:२८:५३:३३	४६।५५	१०:१९:२८:१९	५२।१८	०२:२१:३३:१९	०४।००	००:०७:२४:५७	७३।५१	११:११:१९:२०	०७।२८	१०:१३:१०:४७
०२.०४.२०२६	११:१८:०२:१३	५९।१०	०५:१६:५८:१८	७५१।१३	१०:२९:४०:२८	४६।५४	१०:२०:२०:३७	५५।२३	०२:२१:३७:१९	०४।१०	००:०८:३८:४८	७३।४९	११:११:२६:४८	०७।२७	१०:१३:०७:३६

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः मेष	प्रातः वृषभ	दिवा मिथुन	दिवा कर्क	दिवा सिंह	सायं कन्या	रात्रि तुला	रात्रि वृश्चिक	अर्द्धरात्रोत्तर धनु	अर्द्धरात्रोत्तर मकर	अर्द्धरात्रोत्तर कुंभ	प्रातः मीन
२०.०३.२०२६	शुक्र	१/२	८:००:०१	९:३९:१०	११:३६:२४	१३:४९:२०	१६:०६:०९	१८:२०:२२	२०:३३:५५	२२:५०:१८	२५:०६:१९	२७:१०:०९	२८:५५:२६	३०:२६:५७
२१.०३.२०२६	शनि	३	७:५६:०२	९:३५:१२	११:३२:२६	१३:४५::२१	१६:०२:१०	१८:१६:२३	२०:२९:५६	२२:४६:१९	२५:०२:२१	२७:०६:१०	२८:५१:२७	३०:२२:५८
२२.०३.२०२६	रवि	४	७:५२:०४	९:३१:१३	११:२८:२७	१३:४१:२२	१५:५८:११	१८:१२:२५	२०:२५:५७	२२:४२:२१	२४:५८:२२	२७:०२:११	२८:४७:२८	३०:१९:००
२३.०३.२०२६	सोम	५	७:४८:०५	९:२७:१४	११:२४:२८	१३:३७:२४	१५:५४:१३	१८:०८:२६	२०:२१:५९	२२:३८:२२	२४:५४:२३	२६:५८:१३	२८:४३:३०	३०:१५:०१
२४.०३.२०२६	मंगल	६	७:४४:०६	९:२३:१६	११:२०:३०	१३:३३:२५	१५:५०:१४	१८:०४:२७	२०:१८:००	२२:३४:२३	२४:५०:२५	२६:५४:१४	२८:३९:३१	३०:११:०२
२५.०३.२०२६	बुध	७	७:४०:०८	९:१९:१७	११:१६:३१	१३:२९:२७	१५:४६:१६	१८:००:२९	२०:१४:०१	२२:३०:२५	२४:४६:२६	२६:५०:१५	२८:३५:३२	३०:०७:०४
२६.०३.२०२६	गुरू	८	७:३६:१०	९:१५:१९	११:१२:३३	१३:२५:२८	१५:४२:१७	१७:५६:३१	२०:१०:०३	२२:२६:२६	२४:४२:२८	२६:४६:१७	२८:३१:३४	३०:०३:०५
२७.०३.२०२६	शुक्र	९	७:३२:११	९:११:२१	११:०८:३५	१३:२१:३०	१५:३८:१९	१७:५२:३२	२०:०६:०५	२२:२२:२८	२४:३८:३०	२६:४२:१९	२८:२७:३६	२९:५९:०७
२८.०३.२०२६	शनि	१०	७:२८::१३	९:०७:२३	११:०४:३६	१३:१७:३२	१५:३४:२१	१७:४८:३४	२०:०२:०७	२२:१८:३०	२४:३४:३२	२६:३८:२१	२८:२३:३८	२९:५५:०९
२९.०३.२०२६	रवि	११	७:२४:१५	९:०३:२५	११:००:३९	१३:१३:३४	१५:३०:२३	१७:४४:३६	१९:५८:०९	२२:१४:३२	२४:३०:३४	२६:३४:२३	२८:१९:४०	२९:५१:११
३०.०३.२०२६	सोम	१२	७:२०:१८	८:५९:२७	१०:५६:४१	१३:०९:३६	१५:२६:२६	१७:४०:३९	१९:५४:११	२२:१०:३५	२४:२६:३६	२६:३०:२५	२८:१५:४२	२९:४७:१४
३१.०३.२०२६	मंगल	१३	७:१६:२०	८:५५:३०	१०:५२:४४	१३:०५:३९	१५:२२:२८	१७:३६:४१	१९:५०:१४	२२:०६:३७	२४:२२:३९	२६:२६:२८	२८:११:४५	२९:४३:१६
०१.०४.२०२६	बुध	१४	७:१२:२३	८:५१:३३	१०:४८:४७	१३:०१:४२	१५:१८:३१	१७:३२:४४	१९:४६:१७	२२:०२:४०	२४:१८:४२	२६:२२:३१	२८:०७:४८	२९:३९:१९
०२.०४.२०२६	गुरू	१५	७:०८:२७	८:४७:३६	१०:४४:५०	१२:५७:४५	१५:१४:३४	१७:२८:४८	१९:४२:२०	२१:५८:४३	२४:१४:४५	२६:१८:३४	२८:०३:५१	२९:३५:२२

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ चैत्र शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २० मार्च से २ अप्रैल २०२६ ई.तक

वसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण–उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
गुरू	१	२८:५३	५५:१४	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0	०	०	तिथि क्षय
शुक्र	२	२६:३१	४९:२२	रेवती	२६:२८	ब्रह्म	२२:१५	बालव	१५:४४	११:५९	०६:४६	१८:४६	मेष	२६:२८	२०	**चंद्र दर्शन** मु.३० साम्यार्ध, चेटीचण्ड सर्वा.३०।४५ तक अमृत सिद्धि ०६।४६ से २६।२८ तक **A**
शनि	३	२३:५७	४२:५९	अश्विनी	२४:३८	ऐन्द्र	१९:०१	तैतिल	१३:१५	१२:०१	०६:४५	१८:४६	मेष		२१	रवि योग प्रा.३४।३८ **गणगौर गौरी तृतीया**, आन्दोलन तृतीया, अरून्धती व्रत, सौभाग्य शयन व्रत, मत्स्य जयंती, मनोरथ तृतीया मन्वादि
रवि	४	२१:१७	३६:२२	भरणी	२२:४३	वैधृति	१५:४१	वणिज	१०:३७	१२:०२	०६:४४	१८:४७	वृषभ	२८:१४	२२	**विनायक चतुर्थी श्रीगणेश दमनकार्पण राष्ट्रीय चैत्र मास प्रा.**शक आरंभ १९४८ **B**
सोम	५	१८:३९	२९:४९	कृतिका	२०:५०	विष्कुम्भ	१२:२२	बव	०७:५७	१२:०४	०६:४३	१८:४७	वृषभ		२३	**श्री पंचमी**, हयव्रत, रवियोग एवं कुमार योग प्रा. २०।५० से, सवार्थ सिद्धि योग २०।५० से ३०।४२
मंगल	६	१६:०८	२३:३५	रोहिणी	१९:०५	प्रीति/आयुष्मान	०९:०७ ३०:०२	तैतिल	१६:०८	१२:०५	०६:४२	१८:४८	मिथुन	३०:१७	२४	**स्कंदषष्ठी** यमुना जयंती द्विपुष्कर योग, रवियोग समाप्त १६।०८, राजयोग प्रा. १९।०५, यमदंष्ट्रा ०६।४२ से १९।०५ तक
बुध	७	१३:५१	१७:५३	मृगशिरा	१७:३३	सौभाग्य	२७:०९	वणिज	१३:५१	१२:०७	०६:४१	१८:४८	मिथुन		२५	**महानिशा पूजा** आयम्बिल औली प्रा.(जैन) राजयोग समाप्त १३।५१, भद्रा १३।५१ से २४।४८ तक **C**
गुरू	८	११:४९	१२:५३	आर्द्रा	१६:१९	शोभन	२४:३१	बव	११:४९	१२:०८	०६:४०	१८:४८	मिथुन		२६	**श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीभवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, श्रीरामनवमी स्मार्त्त** रवियोग एवं **D**
शुक्र	९	१०:०७	०८:४०	पुनर्वसु	१५:२४	अतिगण्ड	२२:१०	कौलव	१०:०७	१२:१०	०६:३९	१८:४९	कर्क	०९:३६	२७	श्रीरामनवमी (वै.), **नवरात्रि समाप्त**, रवियोग अहोरात्र, कुमार योग १०।०७ से १५।२४ तक सर्वा.१५।२४ तक
शनि	१०	०८:४६	०५:२०	पुष्य	१४:५०	सुकर्मा	२०:०६	गर	०८:४६	१२:११	०६:३८	१८:४९	कर्क		२८	**श्रीधर्मराज दशमी** नवरात्र पारणा, राहु मघा ४ केतु ७।५३, रवियोग समाप्त १४।५०, भद्रा २०।१४ से
रवि	११	०७:४७	०२:५५	आश्लेषा	१४:३८	धृति	१८:१९	विष्टि	०७:४७	१२:१३	०६:३७	१८:५०	सिंह	१४:३८	२९	**कामदा एकादशी** सर्वे., **श्रीवल्लभाचार्य जयंती**, श्रीलक्ष्मीकांत दोलोत्सव, **E**
सोम	१२	०७:१०	०१:२५	मघा	१४:४८	शूल	१६:५१	बालव	०७:१०	१२:१४	०६:३६	१८:५०	सिंह		३०	**वामन मदन द्वादशी, सोम प्रदोष**, अनंग त्रयोदशी, विष्णु दमनोत्सव, रवि योग प्रा.१४।४८ से
मंगल	१३	०६:५६	००:५३	पूर्वाफा.	१५:२१	गण्ड	१५:४१	तैतिल	०६:५६	१२:१५	०६:३५	१८:५०	कन्या	२१:३३	३१	**श्रीनृसिंह दमनोत्सव, श्रीशिव दमनोत्सव**, महावीर जयंती (जैन), रवियोग समाप्त १५।२१ तक **F**
बुध	१४	०७:०७	०१:२२	उत्तराफा.	१६:१८	वृद्धि	१४:५०	वणिज	०७:०७	१२:१७	०६:३४	१८:५१	कन्या		१	**पूर्णिमा व्रत** (चन्द्रोदय १८।०६), रवियोग समाप्त १६।१८, भद्रा ०७।०७ से १९।२१ तक **G**
गुरू	१५	०७:४२	०२:५२	हस्त	१७:३९	ध्रुव	१४:१९	बव	०७:४२	१२:१८	०६:३३	१८:५१	तुला	३०:२९	२	**चैत्र पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती**, स्नान–दान आदि पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रा.आयम्बिल औली समाप्त (जैन), मंगल मीन में १५।२१

✻ चैत्र शुक्ल पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	२	१०	१०	२	०	११	१०	४
अं.	११	१३	२४	१५	२१	००	१०	१३	१३
क.	०७	४१	११	२९	१३	०१	३४	२९	२९
वि.	०६	००	३३	५९	०३	०४	२७	५१	५१
गति	५९ २५	८३७ १०	४७ ०३	२९ ३९	०२ ५६	७४ ०४	०७ २९	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	मा उ	व अ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उभा. ३	आर्द्रा ३	पूभा. २	शत. ३	पुन. १	अश्विनी १	उभा. ३	शत. ३	पूफा. १

A पंचक २६।२८ तक ,२६।२८ सायन सूर्य मेष पर २०।१७ रवि उत्तर गोल प्रा., मार्गी बुध २५।०२, मंगल पूभा.२१।२१
B रवियोग समाप्त २२।४३ ज्वालामुखी योग २१।१७ से २२।४३ भद्रा १०।३७ से २१।१७ तक, वज्र मूसल (दग्ध) ०६।४४ से २२।४३ तक
C सर्वा.०६।४१ से १७।३३ तक, शुक्र अश्विनी मेष पर २९।०९ से
D सिद्धि योग प्रा.१६।१९ से, स्थिर योग समाप्त १६।१९, सर्वा.१६।१९ से काण ०६।४० से १६।१९ तक, मंगल उदय पूर्व में १४।१८
E दग्ध योग प्रा.०७।४७ से, भद्रा ०७।४७ तक व.शुक्र अश्विनी मेष पर २९।०९, यमघण्ट प्रा.१४।३८
F एवं रवियोग प्रा.२०।१० से, व्यतिपात महापात ०७।२६ से ११।१७ तक, सूर्य रेवती पर २०।११
G सर्वा.१६।१८ से ३०।३३ तक, बुध पूर्वाभाद्रपद २०।१२

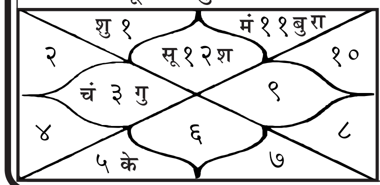
✻ स्वयं सिद्ध साढ़े तीन मुहूर्त्त ✻

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वैशाख शुक्ल तृतीया (आखातीज), आश्विन शुक्ल दशमी यह तीन मुहूर्त्त पूर्ण बली एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा अर्धबली होने से इन्हें साढ़े तीन मुहूर्त्त कहते हैं। यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त हैं। ये पंचांग शुद्धि मुहूर्त्त हैं इनमें पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं, सर्व कार्य के लिए प्रशस्त हैं।

✻ चैत्र शुक्ल पक्ष १५ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	१०	१०	२	०	११	१०	४
अं.	१८	१६	२९	२०	२९	०८	११	१३	१३
क.	०२	५८	४०	२०	३७	३८	२६	०७	०७
वि.	१३	१८	२८	३७	१९	४८	४८	३६	३६
गति	५९ १०	७५१ १३	४६ ५४	५५ २३	०४ १०	७३ ४९	०७ २७	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	रेवती १	हस्त ३	पूभा. ३	पूभा. १	पुन. १	अश्विनी ३	उभा. ३	शत. २	मघा ४

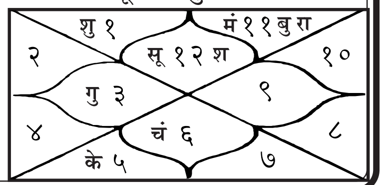
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ पक्ष फल ✻

चैत बदी पंचमी को दक्षिण पूर्व की पवन चले और कुछ वर्षा हो तो भादव मास में तेजी रहती है। चैत बदी सप्तमी को अगर आकाश में बादल हो तो आगे लाल रंग के पदार्थ मन्दे हो जाते हैं। चैत बदी एकादशी को दक्षिण दिशा का वायु चले और बादल गरजें बिजली चमके तो इसे दुर्भिक्ष का शकुन समझना चाहिए। चैत बदी २ से ६ तक पांच दिन तक यदि वर्षा हो तो आगे वर्षा ऋतु में बहुत कम वर्षा होगी।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



वैशाख कृष्ण पक्ष दि. ३ अप्रैल से १७ अप्रैल २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
०३.०४.२०२६	११:१९:०१:२३	५९।०८	०५:२९:२९:३१	७४०।०१	११:००:२७:२२	४६।५३	१०:२१:१६:००	५८।१९	०२:२१:४१:२९	०४।२०	००:०९:५२:३७	७३।४७	११:११:३४:१५	०७।२७	१०:१३:०४:२५
०४.०४.२०२६	११:२०:००:३०	५९।०६	०६:११:४९:३२	७२९।५०	११:०१:१४:१५	४६।५१	१०:२२:१४:१९	६१।०५	०२:२१:४५:४९	०४।३०	००:११:०६:२४	७३।४४	११:११:४१:४१	०७।२६	१०:१३:०१:१४
०५.०४.२०२६	११:२०:५९:३६	५९।०४	०६:२३:५९:२१	७२१।१८	११:०२:०१:०६	४६।५०	१०:२३:१५:२४	६३।४३	०२:२१:५०:१९	०४।४०	००:१२:२०:०८	७३।४२	११:११:४९:०७	०७।२५	१०:१२:५८:०४
०६.०४.२०२६	११:२१:५८:४०	५९।०२	०७:०६:००:४०	७१५।१२	११:०२:४७:५६	४६।४८	१०:२४:१९:०७	६६।१४	०२:२१:५५:००	०४।५०	००:१३:३३:५०	७३।४०	११:११:५६:३३	०७।२५	१०:१२:५४:५३
०७.०४.२०२६	११:२२:५७:४२	५९।००	०७:१७:५५:५२	७१२।१६	११:०३:३४:४५	४६।४७	१०:२५:२५:२२	६८।३९	०२:२१:५९:५०	०५।००	००:१४:४७:३०	७३।३८	११:१२:०३:५७	०७।२४	१०:१२:५१:४२
०८.०४.२०२६	११:२३:५६:४२	५८।५८	०७:२९:४८:०७	७१३।१२	११:०४:२१:३२	४६।४५	१०:२६:३४:०१	७०।५७	०२:२२:०४:५०	०५।१०	००:१६:०१:०८	७३।३६	११:१२:११:२१	०७।२३	१०:१२:४८:३१
०९.०४.२०२६	११:२४:५५:४०	५८।५७	०८:११:४१:१९	७१८।३५	११:०५:०८:१७	४६।४४	१०:२७:४४:५८	७३।१०	०२:२२:१०:००	०५।१९	००:१७:१४:४४	७३।३४	११:१२:१८:४४	०७।२२	१०:१२:४५:२१
१०.०४.२०२६	११:२५:५४:३७	५८।५५	०८:२३:३९:५५	७२८।५०	११:०५:५५:०१	४६।४२	१०:२८:५८:०८	७५।१८	०२:२२:१५:१९	०५।२९	००:१८:२८:१७	७३।३१	११:१२:२६:०६	०७।२१	१०:१२:४२:१०
११.०४.२०२६	११:२६::५३:३१	५८।५३	०९:०५:४८:४४	७४४।००	११:०६:४१:४३	४६।४१	११:००:१३:२६	७७।२२	०२:२२:२०:४८	०५।३८	००:१९:४१:४९	७३।२९	११:१२:३३:२६	०७।२०	१०:१२:३८:५९
१२.०४.२०२६	११:२७:५२:२४	५८।५१	०९:१८:१२:४४	७६३।४७	११:०७:२८:२४	४६।३९	११:०१:३०:४८	७९।२२	०२:२२:२६:२७	०५।४८	००:२०:५५:१८	७३।२७	११:१२:४०:४६	०७।१९	१०:१२:३५:४८
१३.०४.२०२६	११:२८:५१:१६	५८।५०	१०:००:५६:३१	७८७।२५	११:०८:१५:०३	४६।३७	११:०२:५०:०९	८१।१८	०२:२२:३२:१४	०५।५७	००:२२:०८:४५	७३।२५	११:१२:४८:०५	०७।१८	१०:१२:३२:३७
१४.०४.२०२६	११:२९:५०:०५	५८।४८	१०:१४:०३:५६	८१३।२७	११:०९:०१:४०	४६।३५	११:०४:११:२७	८३।१२	०२:२२:३८:११	०६।०६	००:२३:२२:१०	७३।२२	११:१२:५५:२३	०७।१६	१०:१२:२९:२७
१५.०४.२०२६	००:००:४८:५३	५८।४६	१०:२७:३७:२३	८३९।४८	११:०९:४८:१६	४६।३४	१०:०५:३४:३९	८५।०३	०२:२२:४४:१८	०६।१५	००:२४:३५:३२	७३।२०	११:१३:०२:३९	०७।१५	१०:१२:२६:१६
१६.०४.२०२६	००:०१:४७:३९	५८।४४	११:११:३७:११	८६३।५०	११:१०:३४:४९	४६।३२	११:०६:५९:४२	८६।५२	०२:२२:५०:३३	०६।२४	००:२५:४८:५२	७३।१८	११:१३:०९:५४	०७।१४	१०:१२:२३:०५
१७.०४.२०२६	००:०२:४६:२३	५८।४२	११:२६:०१:०१	८८२।४१	११:११:२१:२१	४६।३०	११:०८:२६:३४	८८।३९	०२:२२:५६:५८	०६।३३	००:२७:०२:१०	७३।१६	११:१३:१७:०७	०७।१२	१०:१२:१९:५४

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०३.०४.२०२६	शुक्र	१	७:०४:३०	८:४३:३९	१०:४०:५३	१२:५३:४९	१५:१०:३८	१७:२४:५१	१९:३८:२४	२१:५४:४७	२४:१०:४८	२६:१४:३८	२७:५९:५५	२९:३१:२६
०४.०४.२०२६	शनि	२	७:००:३४	८:३९:४३	१०:३६:५७	१२:४९:५३	१५:०६::४२	१७:२०:५५	१९:३४:२८	२१:५०:५१	२४:०६:५२	२६:१०:४२	२७:५५:५९	२९:२७:३०
०५.०४.२०२६	रवि	३	६:५६:३८	८:३५:४८	१०:३३:०२	१२:४५:५७	१५:०२:४६	१७:१६:५९	१९:३०:३२	२१:४६:५५	२४:०२:५७	२६:०६:४६	२७:५२:०३	२९:२३:३४
०६.०४.२०२६	सोम	४	६:५२:४३	८:३१:५२	१०:२९:०६	१२:४२:०२	१४:५८:५१	१७:१३:०४	१९:२६:३७	२१:४३:००	२३:५९:०१	२६:०२:५१	२७:४८:०८	२९:१९:३९
०७.०४.२०२६	मंगल	५	६:४८:४८	८:२७:५७	१०:२५:११	१२:३८:०७	१४:५४:५६	१७:०९:०९	१९:२२:४२	२१:३९:०५	२३:५५:०६	२५:५८:५६	२७:४४:१३	२९:१५:४४
०८.०४.२०२६	बुध	६	६:४४:५४	८:२४:०३	१०:२१:१७	१२:३४:१२	१४:५१:०२	१७:०५:१५	१९:१८:४७	२१:३५:११	२३:५१:१२	२५:५५:०१	२७:४०:१८	२९:११:५०
०९.०४.२०२६	गुरू	७	६:४१:००	८:२०:०९	१०:१७:२३	१२:३०:१८	१४:४७:०८	१७:०१:२१	१९:१४:५३	२१:३१:१७	२३:४७:१८	२५:५१:०७	२७:३६:२४	२९:०७:५६
१०.०४.२०२६	शुक्र	८	६:३७:०६	८:१६:१६	१०:१३:३०	१२:२६:२५	१४:४३:१४	१६:५७:२७	१९:११:००	२१:२७:२३	२३:४३:२५	२५:४७:१४	२७:३२:३१	२९:०४:०२
११.०४.२०२६	शनि	९	६:३३:१३	८:१२:२३	१०:०९:३७	१२:२२:३२	१४:३९:२१	१६:५३:३५	१९:०७:०७	२१:२३:३०	२३:३९:३२	२५:४३:२१	२७:२८:३८	२९:००:०९
१२.०४.२०२६	रवि	१०	६:२९:२१	८:०८:३०	१०:०५:४४	१२:१८:४०	१४:३५:२९	१६:४९:४२	१९:०३:१५	२१:१९:३८	२३:३५:३९	२५:३९:२९	२७:२४:४६	२८:५६:१७
१३.०४.२०२६	सोम	११	६:२५:२९	८:०४:३९	१०:०१:५३	१२:१४:४८	१४:३१:३७	१६:४५:५१	१८:५९:२३	२१:१५:४६	२३:३१:४८	२५:३५:३७	२७:२०:५४	२८:५२:२५
१४.०४.२०२६	मंगल	१२	६:२१:३८	८:००:४८	९:५८:०२	१२:१०:५७	१४:२७:४६	१६:४१:५९	१८:५५:३२	२१:११:५५	२३:२७:५७	२५:३१:४६	२७:१७:०३	२८:४८:३४
१५.०४.२०२६	बुध	१३	६:१३:५२	७:५६:५७	९:५४:११	१२:०७:०७	१४:२३:५६	१६:३८:०९	१८:५१:४१	२१:०८:०५	२३:२४:०६	२५:२७:५५	२७:१३:१२	२८:४४:४४
१६.०४.२०२६	गुरू	१४	६:१०:०२	७:५३:०७	९:५०:२१	१२:०३:१७	१४:२०:०६	१६:३४:१९	१८:४७:५२	२१:०४:१५	२३:२०:१६	२५:२४:०६	२७:०९:२३	२८:४०:५४
१७.०४.२०२६	शुक्र	३०	६:०६:१३	७:४९:१८	९:४६:३२	११:५९:२८	१४:१६:१७	१६:३०:३०	१८:४४:०२	२१:००:२६	२३:१६:२७	२५:२०:१६	२७:०५:३३	२८:३७:०५

❊ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ❊ वैशाख कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख ३ अप्रैल से १७ अप्रैल २०२६ ई.तक

वसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक अप्रैल	
शुक्र	१	०८:४३	०५:२७	चित्रा	१९:२५	व्याघात	१४:०८	कौलव	०८:४३	१२:२०	०६:३२	१८:५२	तुला		३	**गुड फ्रायडे** राजयोग ०८।४३ से १९।२५, मुसल ०६।३२ से १९।२५ तक
शनि	२	१०:१०	०९:०६	स्वाति	२१:३५	हर्षण	१४:१७	गर	१०:१०	१२:२१	०६:३१	१८:५२	तुला		४	भद्रा २३।०२ से सर्वा. ०६।३१ से २१।३५ तक सिद्धि ०६।३१ से २१।३५ तक
रवि	३	१२:००	१३:४६	विशाखा	२४:०८	वज्र	१४:४३	विष्टि	१२:००	१२:२३	०६:३०	१८:५३	वृश्चिक	१७:२८	५	**संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय** २२।००, बिछुड़ा प्रा. १७।२८ से, मृत्यु योग प्रा. २४।०८ से **A**
सोम	४	१४:११	१९:१५	अनुराधा	२६:५७	सिद्धि	१५:२५	बालव	१४:११	१२:२४	०६:२९	१८:५३	वृश्चिक		६	**श्री अनुसूईया जयंती,** बिछूड़ा सर्वा. ०६।२९ से २६।५७ तक, मंगल उभा.पर २१।५६
मंगल	५	१६:३५	२५:१८	ज्येष्ठा	२९:५४	व्यतिपात	१६:१६	तैतिल	१६:३५	१२:२५	०६:२८	१८:५३	धनु	२९:५४	७	बिछूड़ा समाप्त २९।५४, रवियोग प्रा. २९।५४, कुमारयोग प्रा. २९।५४, दग्ध समाप्त १६।१६
बुध	६	१९:०२	३१:२८	मूल		वरीयान	१७:१०	वणिज	१९:०२	१२:२७	०६:२७	१८:५४	धनु		८	रवियोग अहोरात्र, कुमारयोग समाप्त १९।०२, भद्रा १९।०२ से यमघंट ०६।२७ से ३०।२६ तक
गुरू	७	२१:२०	३७:१५	मूल	०८:४८	परिघ	१७:५८	विष्टि	०८:१३	१२:२८	०६:२६	१८:५४	धनु		९	भद्रा ०८।१३ तक, रवियोग समाप्त ०८।४८, श्रीविजयजयन्तसेनसूरिजी म.सा.पुण्यतिथि
शुक्र	८	२३:१६	४२:०८	पूर्वाषा	११:२८	शिव	१८:३०	बालव	१०:२२	१२:३०	०६:२५	१८:५५	मकर	१८:०४	१०	**मासिक कालाष्टमी,** दग्ध योग समाप्त २३।१६, बुध मीन पर २५।१६
शनि	९	२४:३८	४५:३५	उत्तराषा	१३:४०	सिद्ध	१८:३९	तैतिल	१२:०२	१२:३१	०६:२४	१८:५५	मकर		११	सर्वा. १३।४० से ३०।२३ तक, स्थिर योग समाप्त १३।४०, दग्ध योग समाप्त २४।३८, शनि उदय प. २४।०५
रवि	१०	२५:१७	४७:१६	श्रवण	१५:१४	साध्य	१८:१६	वणिज	१३:०४	१२:३३	०६:२३	१८:५६	कुम्भ	२७:४५	१२	भद्रा १३।०४ से २५।१७ तक पंचक प्रारंभ २७।४५
सोम	११	२५:०९	४६:५८	धनिष्ठा	१६:०४	शुभ	१७:१६	बव	१३:१९	१२:३४	०६:२२	१८:५६	कुम्भ		१३	**वरूथिनी एकादशी (सर्वे.),** पंचक जारी, वैधृति महापात २४।१३ से २८।१० **B**
मंगल	१२	२४:१३	४४:३९	शतभिषा	१६:०६	शुक्ल	१५:३९	कौलव	१२:४७	१२:३५	०६:२१	१८:५७	कुम्भ		१४	**बं.वैशाख मास प्रा., सूर्य मेष में** ०९।३२ से, तिथिवासर ०६।४७ तक **C**
बुध	१३	२२:३२	४०:२८	पूर्वाभा	१५:२३	ब्रह्म	१३:२५	गर	११:२८	१२:३७	०६:२०	१८:५७	मीन	०९:३८	१५	**प्रदोष व्रत, पंचक जारी, मास शिवरात्रि,** भद्रा २२।३२ से, राजयोग १५।२३ से २२।३२ तक
गुरू	१४	२०:१२	३४:४१	उत्तराभा	१३:५९	ऐन्द्र	१०:३७	विष्टि	०९:२६	१२:३८	०६:१९	१८:५७	मीन		१६	भद्रा ०९।२६ तक सर्वा. १३।५९ से, पंचक जारी, स्थिर योग १३।५९ से २०।१२ तक, शुक्र कृतिका पर २२।१४
शुक्र	१५	१७:२२	२७:३८	रेवती	१२:०२	वैधृति/विष्कुम्भ	०७:२२ २७:४५	चतुष्पद	०६:५०	१२:३९	०६:१८	१८:५८	मेष	१२:०२	१७	**दर्शअमावस्या, महर्षि पराशर जयंती, श्रीशुकदेव जयंती, कुमार योग प्रा.** १७।२२ से **D**

❊ वैशाख कृष्ण पक्ष ८ शुक्रवार ❊

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	८	११	१०	२	०	११	१०	४
अं.	२५	२३	०५	२८	२२	१८	१२	१२	१२
क.	५४	३९	५५	५८	१५	२८	२६	४२	४२
वि.	३७	५५	०१	०८	१९	१७	०६	१०	१०
गति	५८ ५५	७२८ ५०	४६ ४२	७५ १८	०५ २९	७३ ३१	०७ २१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	रेवती ३	पू.षा. ४	उ.भा. १	पू.भा. ३	पुनर्वसु १	भरणी २	उ.भा. ३	शत. २	मघा ४

A भद्रा १२।०० तक उत्पात ०६।३० से २४।०८ तक

B दग्ध योग समाप्त २५।०९, बुध उभा पर १४।२२

C मृत्यु योग समाप्त १६।०६, पंचक जारी

D सर्वा. ३०।१८ तक अमृत सिद्धि ०६।१८ से १२।०२ तक पंचक समाप्त १२।०२, शनि उभा पर १५।०४

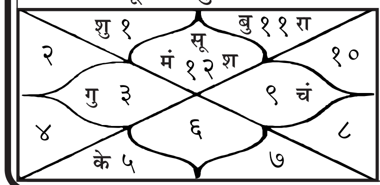
❊ वैशाख कृष्ण पक्ष ३० शुक्रवार ❊

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	११	११	११	२	०	११	१०	४
अं.	०२	२६	११	०८	२२	२७	१३	१२	१२
क.	४६	०१	२१	२६	५६	०२	१७	१९	१९
वि.	२३	०१	२१	३४	५८	१०	०७	५४	५४
गति	५८ ४२	८८२ ४१	४६ ३०	८८ ३९	०६ ३३	७३ १६	०७ १२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	अश्विनी १	रेवती ३	उ.भा. ३	उ.भा. २	पुनर्वसु १	कृतिका १	उ.भा. ३	शत. २	मघा ४

विवाहे सर्वमांगल्यै यात्रादौग्रहगोचरे।
जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥

विवाह कार्य, सभी मांगलिक कार्य, मुहूर्त्त, दिनमान, ग्रहगोचर गणना, दिनदशा हेतु जन्मराशि से ही विचार करना चाहिए।

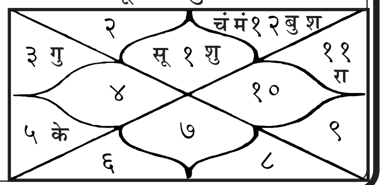
❊ सूर्योदय कुण्डली ❊



❊ मेष संक्रान्ति फलम् ❊

दिनांक १४.४.२०२६ वैशाख कृष्ण पक्ष १२ मंगलवार को प्रातः ९.३३ बजे मेष संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल इसी दिन प्रातःकाल से मान्य रहेगा। झूठ बोलने वाले, ठग, ठगी करने वाले, प्रबंधक, लोभी प्रलोभी, धूर्त्त लोगों के लिए लाभदायक है। कौलव करण संक्रान्ति की अवस्था उतिष्ठा, मुहूर्त्त–१५, हरा वस्त्र, मोती, चन्दन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मसूर, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन द्रव्य घी, शक्कर, बैल आदि में तेजी आवे।

❊ सूर्योदय कुण्डली ❊



वैशाख शुक्ल पक्ष दि. १८ अप्रैल से १ मई २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१८.०४.२०२६	००:०३:४५:०६	५८।४०	००:१०:४३:४२	८९३।५६	११:१२:०७:५१	४६।२८	११:०९:५५:१३	९०।२४	०२:२३:०३:३१	०६।४२	००:२८:१५:२६	७३।१३	११:१३:२४:२०	०७।११	१०:१२:१६:४४
१९.०४.२०२६	००:०४:४३:४६	५८।३८	००:२५:३७:३९	८९६।१७	११:१२:५४::१८	४६।२५	११:११:२५:३७	९२।०९	०२:२३:१०:१३	०६।५१	००:२९:२८:३९	७३।११	११:१३:३१:३०	०७।०९	१०:१२:१३३३
२०.०४.२०२६	००:०५:४२:२४	५८।३६	०१:१०:३३:५६	८८९।५३	११:१३:४०:४३	४६।२३	११:१२:५७:४६	९३।५२	०२:२३:१७:०४	०६।५९	०१:००::४१:४९	७३।०८	११:१३:३८:३९	०७।०७	१०:१२:१०:२२
२१.०४.२०२६	००:०६:४१:००	५८।३४	०१:२५:२३:४९	८७६।११	११:१४:२७:०७	४६।२१	११:१४:३१:३९	९५।३५	०२:२३:२४:०३	०७।०८	०१:०१:५४:५७	७३।०५	११:१३:४५:४६	०७।०५	१०:१२:०७:११
२२.०४.२०२६	००:०७:३९:३४	५८।३२	०२:१०:००:०८	८५८।०१	११:१५:१३::२८	४६।१९	११:१६:०७:१४	९७।१८	०२:२३:३१:१०	०७।१६	०१:०३:०८:०३	७३।०३	११:१३:५२:५२	०७।०४	१०:१२:०४:०१
२३.०४.२०२६	००:०८:३८:०६	५८।३०	०२:२४:१८:०९	८३७।३३	११:१५:५९:४६	४६।१६	११:१७:४४:३२	९९।००	०२:२३:३८:२६	०७।२४	०१:०४:२१:०५	७३।००	११:१३:५९:५५	०७।०२	१०:१२:००:५०
२४.०४.२०२६	००:०९:३६:३६	५८।२७	०३:०८:१५:४२	८१७।०९	११:१६:४६:०२	४६।१४	११:१९:२३:३३	१००।४३	०२:२३:४५:५०	०७।३२	०१:०५:३४::०५	७२।५७	११:१४:०६:५७	०७।००	१०:११:५७:३९
२५.०४.२०२६	००:१०:३५:०३	५८।२५	०३:२१:५२:५०	७९८।१६	११:१७:३२::१६	१६।११	११:२१:०४:१६	१०२।२६	०२:२३:५३:२२	०७।४०	०१:०६:४७:०२	७२।५४	११:१४:१३:५७	०६।५८	१०:११:५४:२८
२६.०४.२०२६	००:११:३३:२८	५८।२३	०४:०५:११:०६	७८१।४०	११:१८:१८:२८	४६।०९	११:२२:४६:४१	१०४।०९	०२:२४::०१:०२	०७।४८	०१:०७:५९:५६	७२।५१	११:१४:२०:५५	०६।५६	१०:११:५१:१७
२७.०४.२०२६	००:१२:३१:५१	५८।२१	०४:१८:१२:४७	७६७।३३	११:१९:०४:३७	४६।०७	११:२४:३०:५०	१०५।५३	०२:२४:०८:५०	०७।५५	०१:०९:१२:४८	७२।४८	११:१४:२७:५०	०६।५४	१०:११:४८:०७
२८.०४.२०२६	००:१३:३०:१३	५८।१९	०५:०१:००:१९	७५५।३८	११:१९:५०:४३	४६।०४	११:२६:१६:४३	१०७।३७	०२:२४:१६:४६	०८।०३	०१:१०:२५:३६	७२।४५	११:१४:३४:४४	०६।५१	१०:११:४४:५६
२९.०४.२०२६	००:१४:२८:३२	५८।१७	०५:१३:३५:५८	७४५।३२	११:२०:३६:४८	४६।०२	११:२८:०४:२०	१०९।२१	०२:२४:२४:४९	०८।११	०१:११:३८:२१	७२।४२	११:१४:४१:३५	०६।४९	१०:११:४१:४५
३०.०४.२०२६	००:१५:२६:४९	५८।१५	०५:२६:०१:३०	७३६।४९	११:२१:२२:५०	४५।५९	११:२९:५३:४१	१११।०६	०२:२४:३२:५९	०८।१८	०१:१२:५१:०४	७२।४०	११:१४:४८:२५	०६।४७	१०:११:३८:३४
०१.०५.२०२६	००:१६:२५:०४	५८।१३	०६:०८:१८:१९	७२९।१०	११:२२:०८:४९	४५।५७	००:०१:४४:४६	११२।५१	०२:२४:४१:१७	०८।२५	०१:१४:०३:४३	७२।३७	११:१४:५५:१२	०६।४५	१०:११:३५:२४

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः मेष	प्रातः वृषभ	प्रातः मिथुन	दिवा कर्क	दिवा सिंह	दिवा कन्या	सायं तुला	रात्रि वृश्चिक	रात्रि धनु	अर्द्धरात्रोत्तर मकर	अर्द्धरात्रोत्तर कुंभ	अर्द्धरात्रोत्तर मीन
१८.०४.२०२६	शनि	१	३०:०२:२४	७:४५:३०	९:४२:४४	११:५५:३९	१४:१२:२८	१६:२६:४१	१८:४०:१४	२०:५६:३७	२३:१२:३९	२५:१६:२८	२७:०१:४५	२८:३३:१६
१९.०४.२०२६	रवि	२	२९:५८:३७	७:४१:४२	९:३८:५६	११:५१:५१	१४:०८:४१	१६:२२:५४	१८:३६:२६	२०:५२:५०	२३:०८:५१	२५:१२:४०	२६:५७:५७	२८:२९:२९
२०.०४.२०२६	सोम	३/४	२९:५४:५०	७:३७:५५	९:३५:०९	११:४८:०४	१४:०४:५४	१६:१९:०७	१८:३२:३९	२०:४९:०३	२३:०५:०४	२५:०८:५३	२६:५४:१०	२८:२५:४२
२१.०४.२०२६	मंगल	५	२९:५०:४०	७:३३:४५	९:३०:५९	११:४३:५५	१४::००:४४	१६:१४:५७	१८:२८:३०	२०:४४:५३	२३:००:५४	२५:०४:४४	२६:५०:०१	२८:२१:३२
२२.०४.२०२६	बुध	६	२९:४६:३१	७:२९:३६	९:२६:५०	११:३९:४५	१३:५६:३४	१६:१०:४८	१८:२४:२०	२०:४०:४३	२२:५६:४५	२५:००:३४	२६:४५:५१	२८:१७:२२
२३.०४.२०२६	गुरू	७	२९:४२:२२	७:२५:२७	९:२२:४१	११:३५:३६	१३:५२:२६	१६:०६:३९	१८:२०:११	२०:३६:३५	२२:५२:३६	२४:५६:२५	२६:४१:४२	२८:१३:१४
२४.०४.२०२६	शुक्र	८	२९:३८:१४	७:२१:१९	९:१८:३३	११:३१:२९	१३:४८:१८	१६:०२:३१	१८:१६:०३	२०:३२:२७	२२:४८:२८	२४:५२:१७	२६:३७:३४	२८:०९:०६
२५.०४.२०२६	शनि	९	२९:३४:०७	७:१७:१२	९:१४:२६	११:२७:२१	१३:४४:११	१५:५८:२४	१८:११:५६	२०:२८:२०	२२:४४:२१	२४:४८:१०	२६:३३:२७	२८:०४:५९
२६.०४.२०२६	रवि	१०	२९:३०:०१	७:१३:०६	९:१०:२०	११:२३:१५	१३:४०:४०	१५:५४:१८	१८:०७:५६	२०:२४:१४	२२:४०:१५	२४:४४:०४	२६:२९:२१	२८:००:५२
२७.०४.२०२६	सोम	११	२९:२५:५५	७:०९:०१	९:०६:१५	११:१९:१०	१३:३५:५९	१५:५०:१२	१८:०३:४५	२०:२०:०८	२२:३६:१०	२४:३९:५९	२६:२५:१६	२७:५६:४७
२८.०४.२०२६	मंगल	१२	२९:२१:५१	७:०४:५६	९:०२:१०	११:१५:०६	१३:३१:५५	१५:४६:०८	१७:५९:४१	२०:१६:०४	२२:३२:०५	२४:३५:५५	२६:२१:१२	२७:५२:४३
२९.०४.२०२६	बुध	१३	२९:१७:४८	७:००:५३	८:५८:०७	११:११:०२	१३:२७:५२	१५:४२:०५	१७:५५:३७	२०:१२:०१	२२:२८:०२	२४:३१:५१	२६:१७:०८	२७:४८:४०
३०.०४.२०२६	गुरू	१४	२९:१३:४५	६:५६:५१	८:५४:०४	११:०७:००	१३:२३:४९	१५:३८:०२	१७:५१:३५	२०:०७:५८	२२:२४:००	२४:२७:४९	२६:१३:०६	२७:४४:३७
०१.०५.२०२६	शुक्र	१५	२९:०९:४४	६:५२:४९	८:५०:०३	११:०२:५९	१३:१९:४८	१५:३४:०१	१७:४७:३३	२०:०३:५७	२२:१९:५८	२४:२३:४७	२६:०९:०४	२७:४०:३६

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ वैशाख शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

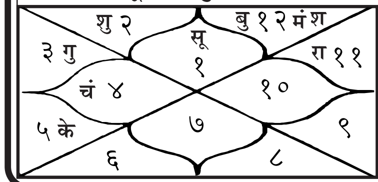
तारीख १८ अप्रैल से १ मई २०२६ ई.तक
वसंत–ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	घं.मि.	दिनांक अप्रैल–मई	
शनि	१	१४:११	१९:४४	अश्विनी	०९:४३	प्रीति	२३:५६	बव	१४:११	१२:४१	०६:१८	१८:५८	मेष		१८	चंद्रदर्शन मु. १५
रवि	२	१०:५०	११:२३	भरणी/कृतिका	०७:१० २८:३५	आयुष्मान	२०:०२	कौलव	१०:५०	१२:४२	०६:१७	१८:५९	वृषभ	१२:३१	१९	**श्रीपरशुराम जयंती, अक्षय तृतीया बद्री–केदार यात्रा प्रा.**कुम्भ दान, त्रेता युगादि **A**
सोम	३	०७:२८	०३:०१	रोहिणी	२६:०८	सौभाग्य	१६:११	गर	०७:२८	१२:४३	०६:१६	१८:५९	वृषभ		२०	**विनायक चतुर्थी**, क्षय तिथि, वर्षीतप पारणा, भद्रा १७।५० से २८।१५ तक **B**
सोम	४	२८:१५	५४:५९	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
मंगल	५	२५:२०	४७:४४	मृगशिरा	२३:५९	शोभन	१२:३१	बव	१४:४५	१२:४५	०६:१५	१९:००	मिथुन	१३:०१	२१	**राष्ट्रीय वैशाख मास प्रा.,श्रीआद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती,** श्रीसूरदास जं., **C**
बुध	६	२२:५०	४१:३०	आर्द्रा	२२:१३	अतिगण्ड/सुकर्मा	०९:०८ ३०:०७	कौलव	१२:०२	१२:४६	०६:१४	१९:००	मिथुन		२२	**श्रीरामानुजाचार्य जयंती** चंदन षष्ठी, रवियोग प्रा. २२।१३ कुमार योग २२।१३ से २२।५० या.**D**
गुरू	७	२०:५०	३६:३१	पुनर्वसु	२०:५७	धृति	२७:३२	गर	०९:४६	१२:४७	०६:१३	१९:०१	कर्क	१५:१३	२३	**गंगा सप्तमी, गंगा जयंती, गुरु पुष्यामृत योग २०।५७ से,** भद्रा २०।५० से **E**
शुक्र	८	१९:२२	३२:५५	पुष्य	२०:१४	शूल	२५:२४	विष्टि	०८:०२	१२:४९	०६:१२	१९:०१	कर्क		२४	**श्रीबगुलामुखी जयंती, मासिक दुर्गाष्टमी** रवियोग प्रा. २०।१४ दग्ध योग समाप्त १९।२२ **F**
शनि	९	१८:२९	३०:४३	आश्लेषा	२०:०५	गण्ड	२३:४३	बालव	०६:५१	१२:५०	०६:१२	१९:०२	सिंह	२०:०५	२५	**श्रीजानकी नवमी** रवियोग अहोरात्र व्यतिपात महापात २२।५५ से २७।१० स्थिर योग **G**
रवि	१०	१८:०७	२९:५२	मघा	२०:२७	वृद्धि	२२:२८	तैतिल	०६:१४	१२:५१	०६:११	१९:०२	सिंह		२६	भद्रा ३०।०८ से यमदंष्ट्रा ०६।११ से २०।२७ तक रवियोग समाप्त २०।२७
सोम	११	१८:१६	३०:१६	पूर्वाफा	२१:१९	ध्रुव	२१:३५	विष्टि	१८:१६	१२:५३	०६:१०	१९:०३	कन्या	२७:३६	२७	**मोहिनी एकादशी सर्वे.**दग्ध योग समाप्त१८।१६ भद्रा १८।१६ तक सूर्य भरणी १ पर **H**
मंगल	१२	१८:५२	३१:४८	उत्तराफा	२२:३६	व्याघात	२१:०४	बव	०६:३१	१२:५४	०६:०९	१९:०३	कन्या		२८	**परशुराम रूक्मिणी द्वादशी,** त्रिपुष्कर योग ०६।०९ से १८।५२ तक
बुध	१३	१९:५२	३४:१९	हस्त	२४:१६	हर्षण	२०:५१	कौलव	०७:१९	१२:५५	०६:०८	१९:०३	कन्या		२९	**प्रदोष व्रत** रवियोग प्रा. २४।१७ से, सर्वा.०६।०८ से २४।१६ तक
गुरू	१४	२१:१३	३७:४४	चित्रा	२६:१७	वज्र	२०:५५	गर	०८:३०	१२:५६	०६:०८	१९:०४	तुला	१३:१४	३०	**श्री नृसिंह जयंती छिन्नमस्ता जयंती श्री शंकराचार्य कैलाश गमन,** भद्रा २१।१३ से **I**
शुक्र	१५	२२:५३	४१:५६	स्वाति	२८:३५	सिद्धि	२१:१३	विष्टि	१०:०१	१२:५८	०६:०७	१९:०४	तुला		१	**पूर्णिमा व्रत श्री बुद्ध पूर्णिमा वैशाख स्नान पूर्ण** भद्रा १०।०१ तक, श्रीकूर्म जयंती, **J**

✻ वैशाख शुक्ल पक्ष ८ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	३	११	११	२	१	११	१०	४
अं.	०९	०८	१६	१९	२३	०५	१४	११	११
क.	३६	१५	४६	२३	४५	३४	०६	५७	५७
वि.	३६	४२	०२	३३	५०	०५	५७	३९	३९
गति	५८ २७	८१७ ०९	४६ १४	१०० ४३	०७ ३२	७२ ५७	०७ ०१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	अश्विनी ३	पुष्य २	रेवती १	रेवती १	पुनर्वसु २	कृतिका ३	उत्तराभा. ४	शतभिषा २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A राजयोग समाप्त ०७।११ रवि योग प्रा. २८।३५ वज्र मूसल (दग्ध) ०६।१७ से ०७।१० तक, शुक्र वृषभ में १५।४८ **B** सर्वा. ०६।१६ से ३०।१५ तक अमृत सिद्धि २६।०८ से ३०।१५ तक सायन सूर्य वृषभ पर ०७।०९ ग्रीष्म ऋतु प्रा. शुक्र भरणी ४ पर २८।४८ **C** सोमनाथ प्रतिष्ठा दिवस रवियोग प्रा. २३।५९ दग्ध योग समाप्त २५।२० यमघण्ट योग प्रा. २३।५९ **D** मूसल ०६।१४ से २२।१३ तक, बुध रेवती पर १३।३७ **E** सर्वा. ०६।१३ से ३०।१२ तक अमृत सिद्धि २०।५७ से ३०।१२ तक सिद्धि ०६।१३ से २०।५७ तक **F** मृत्यु योग प्रा. २०।१४ भद्रा ०८।०२ तक उत्पात ०६।१२ से २०।१४ तक **G** एवं दग्ध योग समाप्त १८।२९ ज्वालामुखी योग १८।२९ से २०।०५ **H** २५।१९ शुक्र रोहिणी १ पर २१।०४ शुक्र कृतिका ४ पर २७।११ **I** चर ०६।०८ से २६।१७ तक रवियोग समाप्त २६।१७, बुध अश्विनी मेष पर ०६।५२ **J** चन्द्रोदय १८।४३, कुमार योग प्रा. २८।३५, अगस्त्य अस्त १३।१५

अथ शुभसमयज्ञानम् (ज्यो प्रकाश)

विवाहे च क्षौरकर्म प्रतिव्रतबन्धम्। अपने चोत्तरे कुर्यादुदिते भार्गवे गुरौ ॥१॥
उदिते च तथा चन्द्रे शुभयोगे शुभदिने। कृष्णस्य दशमी यावच्छुभकर्माणिकारयेत् ॥२॥

विवाह और प्रति, उपनयन में काम उत्तरायण के सूर्य में और शुक्र, गुरू के उदय में करना चाहिये तथा चन्द्रमा का उदय हो और शुभ योग तथा शुभ दिन हो उसी प्रकार कृष्ण पक्ष की दशमी तक शुभ कार्य करना श्रेष्ठ है।

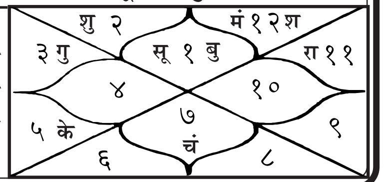
✻ पक्ष फल ✻

वैशाख बदी एकम को यदि भानु (सूरज) बादलों में निकले तो श्रेष्ठ संवत् होगा। वैशाख बदी अष्टमी को बिजली चमके अथवा बादल गरजे तो आगे श्रेष्ठ संवत् होगा। वैशाख बदी अष्टमी और चतुर्दशी दोनों दिन दक्षिणी पवन चले तो वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा होगी। वैशाख सुदी पंचमी को परवा पवन चले तो अनाज संग्रह करना चाहिये आगे तेजी होगी। वैशाख सुदी पंचमी सूर्यास्त समय परवा पवन चले तो सभी प्रकार के धान्य संग्रह करने चाहिए।

✻ वैशाख शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	६	११	०	२	१	११	१०	४
अं.	१६	०८	२२	०१	२४	१४	१४	११	११
क.	२५	१८	०८	४४	४१	०३	५५	३५	३५
वि.	०४	१९	४९	४६	४७	४३	१२	२४	२४
गति	५८ १३	७२१ १०	४५ ५७	१११ ५९	०८ २५	७२ ३७	०६ ४५	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	भरणी १	स्वाति १	रेवती ३	अश्विनी १	पुनर्वसु २	रोहिणी २	उत्तराभा. ४	शत. २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष दि. २ मई से १६ मई २०२५ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
०२.०५.२०२६	००:१७:२३:१७	५८१२	०६:२०:२७:२९	७२२३१	११:२२:५४:४६	४५५५	००:०३:३७:३७	११४३५	०२:२४:४९:४२	०८३२	०१:१५:१६:२०	७२३४	११:१५:०१:५६	०६४२	१०:११:३२:१३
०३.०५.२०२६	००:१८:२१:२९	५८१०	०७:०२:२९:५९	७१७०२	११:२३:४०:४१	४५५२	००:०५:३२:१३	११६२०	०२:२४:५८:१५	०८३९	०१:१६:२८:५४	७२३१	११:१५:०८:३८	०६४०	१०:११:२९:०२
०४.०५.२०२६	००:१९:१९:३९	५८०८	०७:१४:२७:०१	७१३०८	११:२४:२६:३३	४५५०	००:०७:२८:३२	११८०३	०२:२५:०६:५४	०८४६	०१:१७:४१:२४	७२२८	११:१५:१५:१८	०६३७	१०:११:२५:५१
०५.०५.२०२६	००:२०:१७:४८	५८०७	०७:२६:२०:०९	७११२६	११:२५:१२:२२	४५४७	००:०९:२६:३५	११९४४	०२:२५:१५:४०	०८५३	०१:१८:५३:५२	७२२५	११:१५:२१:५५	०६३५	१०:११:२२:४०
०६.०५.२०२६	००:२१:१५:५५	५८०५	०८:०८:११:३५	७१२३९	११:२५:५८:०९	४५४५	००:११:२६:१९	१२१२३	०२:२५:२४:३३	०९००	०१:२०:०६:१७	७२२२	११:१५:२८:३०	०६३२	१०:११:१९:३०
०७.०५.२०२६	००::२२:१४:००	५८०४	०८:२०:०४:१४	७१७३३	११:२६:४३:५४	४५४२	००:१३:२७:४३	१२२५९	०२:२५:३३:३३	०९०७	०१:२१:१८:३९	७२१९	११:१५:३५:०२	०६२९	१०:११:१६:१९
०८.०५.२०२६	००:२३:१२:०४	५८०३	०९:०२:०१:४७	७२६४७	११:२७:२९:३६	४५३९	००:१५:३०:४१	१२४३०	०२:२५:४२:३९	०९१३	०१:२२:३०:५८	७२१६	११:१५:४१:३१	०६२७	१०:११:१३::०८
०९.०५.२०२६	००:२४:१०:०७	५८०१	०९:१४:०८:३४	७४०५२	११:२८:१५:१५	४५३७	००:१७:३५:१२	१२५५६	०२:२५:५१:५३	०९२०	०१:२३:४३:१४	७२१३	११:१५:४७:५८	०६२४	१०:११:०९:५७
१०.०५.२०२६	००:२५:०८:०८	५८००	०९:२६:२९:२६	७५९५७	११:२९:००:५२	४५३४	००:१९:४१:०७	१२७१४	०२:२६:०१:१२	०९२६	०१:२४:५५:२७	७२१०	११:१५:५४:२२	०६२१	१०:११:०६:४७
११.०५.२०२६	००:२६:०६:०८	५७५९	१०:०९:०९:२२	७८३४३	११:२९:४६:२७	४५३२	००:२१:४८:२१	१२८२४	०२:२६:१०:३८	०९३२	०१:२६:०७:३७	७२०७	११:१६:००:४२	०६१८	१०:११:०३:३६
१२.०५.२०२६	००:२७:०४:०६	५७५७	१०:२२:१३:०५	८११११	००:००:३१:५८	४५२९	००:२३:५६:४५	१२९२३	०२:२६:२०:१०	०९३८	०१:२७:१९:४४	७२०४	११:१६:०७:००	०६१५	१०:११:००:२५
१३.०५.२०२६	००:२८:०२:०४	५७५६	११:०५:४४:१७	८४०३०	००:०१:१७:२७	४५२६	००:२६:०६:०८	१३०११	०२:२६:२९:४९	०९४५	०१::२८:३१:४८	७२०१	११:१६:१३:१५	०६१२	१०:१०:५७:१४
१४.०५.२०२६	००:२८:६०:००	५७५५	११:१९:४४:४७	८६८५४	००:०२:०२:५३	४५२३	००:२८:१६:१९	१३०४६	०२:२६:३९:३३	०९५१	०१:२९:४३:४९	७१५८	११:१६:१९:२७	०६०९	१०:१०:५४:०४
१५.०५.२०२६	००:२९:५७:५५	५७५३	००:०४:१३:४१	८९२५३	००:०२:४८:१६	४५२०	०१:००:२७:०५	१३१०६	०२:२६:४९:२४	०९५७	०२:००:५५:४७	७१५५	११:१६:२५:३६	०६०५	१०:१०:५०:५३
१६.०५.२०२६	०१:००:५५:४८	५७५२	००:१९:०६:३४	९०९०१	००:०३:३३:३७	४५१७	०१:०२:३८:११	१३११०	०२:२६:५९:२०	१००२	०२:०२:०७:४२	७१५२	११:१६:३१:४१	०६०२	१०:१०:४७:४२

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०२.०५.२०२६	शनि	१	२९:०५:४३	६:४८:४९	८:४६:०३	१०:५८:५८	१३:१५:४७	१५:३०:०१	१७:४३:३३	१९:५९:५६	२२:१५:५८	२४:१९:४७	२६:०५:०४	२७:३६:३५
०३.०५.२०२६	रवि	२	२९:०१:४४	६:४४:४९	८:४२:०३	१०:५४:५९	१३:११:४८	१५:२६:०१	१७:३९:३४	१९:५५:५७	२२:११:५८	२४:१५:४८	२६:०१:०५	२७:३२:३६
०४.०५.२०२६	सोम	३	२८:५७:४६	६:४०:५१	८:३८:०५	१०:५१:०१	१३:०७:५०	१५:२२:०३	१७:३५:३५	१९:५१:५९	२२:०८:००	२४:११:४९	२५:५७:०६	२७:२८:३८
०५.०५.२०२६	मंगल	४	२८:५३:४९	६३६:५४	८:३४:०८	१०:४७:०३	१३:०३:५३	१५:१८:०६	१७:३१:३८	१९:४८:०२	२२:०४:०३	२४:०७:५२	२५:५३:०९	२७:२४:४१
०६.०५.२०२६	बुध	४/५	२८:४९:५२	६:३२:५८	८:३०:१२	१०:४३:०७	१२:५९:५६	१५:१४:१०	१७:२७:४२	१९:४४:०५	२२:००:०७	२४:०३:५६	२५:४९:१३	२७:२०:४४
०७.०५.२०२६	गुरू	६	२८:४५:५७	६:२९:०३	८:२६:१७	१०:३९:१२	१२:५६:०१	१५:१०:१५	१७:२३:४७	१९:४०:१०	२१:५६:१२	२४:००:०१	२५:४५:१८	२७:१६:४९
०८.०५.२०२६	शुक्र	७	२८:४२:०३	६:२५:०९	८:२२:२३	१०:३५:१८	१२:५२:०७	१५:०६:२१	१७:१९:५३	१९:३६:१६	२१:५२:१८	२३:५६:०७	२५:४१:२४	२७:१२:५५
०९.०५.२०२६	शनि	८	२८:३८:११	६:२१:१६	८:१८:३०	१०:३१:२५	१२:४८:१५	१५:०२:२८	१७:१६:००	१९:३२:२४	२१:४८:२५	२३:५२:१४	२५:३७:३१	२७:०९:०३
१०.०५.२०२६	रवि	९	२८:३४:१९	६:१७:२४	८:१४:३८	१०:२७:३४	१२:४४:२३	१४:५८:३६	१७:१२:०९	१९:२८:३२	२१:४४:३३	२३:४८:२३	२५:३३:४०	२७:०५:११
११.०५.२०२६	सोम	१०	२८:३०:२९	६:१३:३४	८:१०:४८	१०:२३:४३	१२:४०:३२	१४:५४:४६	१७:०८:१८	१९:२४:४२	२१:४०:४३	२३:४४:३२	२५:२९:४९	२७:०१:२०
१२.०५.२०२६	मंगल	११	२८:२६:३९	६:०९:४४	८:०६:५८	१०:१९:५४	१२:३६:४३	१४:५०:५६	१७:०४:२९	१९:२०:५२	२१:३६:५४	२३:४०:४३	२५:२६:००	२६:५७:३१
१३.०५.२०२६	बुध	१२	२८:२२:५१	६:०५:५६	८:०३:१०	१०:१६:०६	१२:३२:५५	१४:४७:०८	१७:००:४१	१९:१७:०४	२१:३३:०५	२३:३६:५५	२५:२२:१२	२६:५३:४३
१४.०५.२०२६	गुरू	१३	२८:१९:०४	६:०२:०९	७:५९:२३	१०:१२:१९	१२:२९:०८	१४:४३:२१	१६:५६:५४	१९:१३:१७	२१:२९:१९	२३:३३:०८	२५:१८:२५	२६:४९:५६
१५.०५.२०२६	शुक्र	१४	२८:१५:१८	५:५८:२४	७:५५:३८	१०:०८:३३	१२:२५:२२	१४:३९:३६	१६:५३:०८	१९:०९:३१	२१:२५:३३	२३:२९:२२	२५:१४:३९	२६:४६:१०
१६.०५.२०२६	शनि	३०	२८:११:३४	२९:५०:४३	७:५१:५३	१०:०४:४९	१२:२१:३८	१४:३५:५१	१६:४९:२४	१९:०५:४७	२१:२१:४८	२३:२५:३८	२५:१०:५४	२६:४२:२६

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (शुद्ध मास) संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख २ मई से १६ मई २०२६ ई.तक

ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

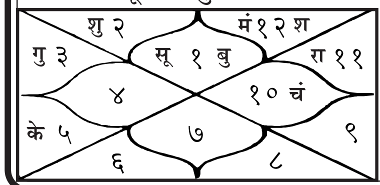
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
शनि	१	२४:५०	४६:५१	विशाखा	-	व्यतिपात	२१:४५	बालव	११:५०	१२:५९	०६:०६	१९:०५	वृश्चिक	२४:३०	२	**श्रीनारद जयंती** बिछूड़ा प्रा. २४।३०
रवि	२	२७:०२	५२:२२	विशाखा	०७:१०	वरीयान	२२:२८	तैतिल	१३:५५	१३:००	०६:०५	१९:०५	वृश्चिक		३	बिछूड़ा, राजयोग प्रा. ०७।१० से उत्पात ०६।०५ से ०७।१० तक, मृत्यु योग प्रा. ०७।१०, बुध अस्त पू. १९।५६
सोम	३	२९:२५	५८:२०	अनुराधा	०९:५८	परिघ	२३:२०	वणिज	१६:१३	१३:०१	०६:०५	१९:०६	वृश्चिक		४	भद्रा १६।१३ से २९।२५ तक सर्वा. ०६।०५ से ०९।५८ तक अगस्त्य लोप १४।२५, बिछूड़ा
मंगल	४	-	६०:००	ज्येष्ठा	१२:५५	शिव	२४:१६	बव	१८:३८	१३:०२	०६:०४	१९:०६	धनु	१२:५५	५	**वृद्धि तिथि अंगारक संकष्टी चतुर्थी** चन्द्रोदय २२।३५ बिछूड़ा समाप्त १२।५५
बुध	४	०७:५२	०४:३१	मूल	१५:५४	सिद्ध	२५:१२	बालव	०७:५२	१३:०३	०६:०३	१९:०७	धनु		६	यमघंट ०६।०३ से १५।५४ तक, **रौद्र नामक गुरु संवत्सर आरंभ** १८।३० **A**
गुरू	५	१०:१४	१०:२९	पूर्वाषा	१८:४६	साध्य	२५:५९	तैतिल	१०:१४	१३:०५	०६:०३	१९:०७	मकर	२५:२६	७	रवियोग प्रा. १८।४६ दग्ध योग प्रा. १०।१४
शुक्र	६	१२:२२	१५:५०	उत्तराषा	२१:२०	शुभ	२६:३०	वणिज	१२:२२	१३:०६	०६:०२	१९:०८	मकर		८	भद्रा १२।२२ से २५।१७ तक सर्वा. २१।२० से रवियोग समाप्त २१।२०, शुक्र मृगशिरायां २१।४७
शनि	७	१४:०३	२०:०४	श्रवण	२३:२५	शुक्ल	२६:३५	बव	१४:०३	१३:०७	०६:०२	१९:०८	मकर		९	मासिक कालाष्टमी, वैधृति महापात १८।५५ से २३।५३ सर्वा. २३।२५ तक **B**
रवि	८	१५:०७	२२:४५	धनिष्ठा	२४:५०	ब्रह्म	२६:०९	कौलव	१५:०७	१३:०८	०६:०१	१९:०९	कुम्भ	१२:१३	१०	यमदंष्ट्रा ०६।०१ से २४।५० तक पंचक प्रारंभ १२।१३
सोम	९	१५:२५	२३:३२	शतभिषा	२५:२९	ऐन्द्र	२५:०४	गर	१५:२५	१३:०९	०६:००	१९:०९	कुम्भ		११	पंचक जारी, कुमार योग प्रा. २५।२९ से, भद्रा २७।१५ से, सूर्य कृतिका १ पर १९।३२ अश्विन्यां मेषे भौम १२।३८
मंगल	१०	१४:५३	२२:१३	पूर्वाभा	२५:१७	वैधृति	२३:१९	विष्टि	१४:५३	१३:१०	०६:००	१९:१०	मीन	१९:२५	१२	पंचक जारी, भद्रा १४।५३ तक सर्वा. २५।१७ से २९।५९ तक, कुमार योग समाप्त २५।१७ **C**
बुध	११	१३:३०	१८:४८	उत्तराभा	२४:१८	विष्कुंभ	२०:५५	बालव	१३:३०	१३:११	०५:५९	१९:१०	मीन		१३	अपरा एकादशी सर्वे.पंचक जारी राजयोग १३।३० से २४।१८, बुध कृतिकायां ११।४५
गुरू	१२	११:२१	१३:२६	रेवती	२२:३४	प्रीति	१७:५३	तैतिल	११:२१	१३:१२	०५:५९	१९:११	मेष	२२:३४	१४	**प्रदोष व्रत वटसावित्री व्रत आरंभ,** स्थिर योग ११।२१ से २२।३४ सर्वा. ०५।५९ से **D**
शुक्र	१३	०८:३२	०६:२४	अश्विनी	२०:१५	आयुष्मान	१४:२१	वणिज	०८:३२	१३:१३	०५:५८	१९:११	मेष		१५	क्षय तिथि मास शिवरात्रि, सूर्य वृषभ में ०६।२२, भद्रा ०८।३२ से १८।५५ तक सर्वा. २०।१५ तक
शुक्र	१४	२९:१२	५८:०३	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
शनि	३०	२५:३१	४८:५३	भरणी	१७:३०	सौभाग्य	१०:२६	चतुष्पद	१५:२३	१३:१४	०५:५८	१९:१२	वृषभ	२२:४७	१६	दर्श अमावस्या, वट सावित्री व्रत उत्तर भारत, **शनि जयंती,** भावुका अमावस्या

A कुमार योग ०७।५२ से १५।५४ तक, बुध भरण्यां २७।५९ **B** यमदंष्ट्रा ०६।०२ से २३।२५ तक, धनिष्ठा महापंचक प्रा. २३।२५ से **C** काण ०६।०० से २५।१७ तक **D** पंचक समाप्त २२।३४, बुध वृषभ पर २४।३२, गुरू पुनर्वसु ३ पर ०३।३५

✻ प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८ रविवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	९	११	०	२	१	११	१०	४
अं.	२५	२६	२९	१९	२६	२४	१५	११	११
क.	०८	२९	००	४१	०१	५५	५४	०६	०६
वि.	०८	२६	५२	०७	१२	२७	२२	४७	४७
गति	५८ ०१	७५१ ५७	४५ ३४	१२७ १४	०९ २६	७२ १०	०६ २१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	भरणी ४	धनिष्ठा १	रेवती ४	भरणी २	पुनर्वसु २	मृगशिरा १	उ.भा. ४	शतभिषा २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ **वट सावित्री व्रत –** वटसावित्री व्रत ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या पूर्वविद्धा में तथा दक्षिण भारत में यह व्रत ज्येष्ठ की पूर्णिमा में होता है, वहां भी पूर्वविद्धा ग्राह्य है। ✻ **भावुक अमावस्या –** ज्येष्ठ की अमावस्या एवं अमान्त मास गणना से वैशाख की अमावस्या – करि दिन भावुक अमावस्या एवं दूसरा दिन – प्रतिपदा ज्येष्ठ शुक्ल की ये दोनों ही दिन शुभ कार्यों में वर्जित माने हैं। **यदि नामिन् भवेद्वर्ण : संयुक्ताक्षर लक्षणः। ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्र यामले ॥** यदि नाम के प्रारंभ में संयुक्त अक्षर हो तो उस नाम के प्रारंभ के प्रथम वर्ण का ही अक्षर ग्रहण करना चाहिए। **द्विशोभनं त्वेकगृह त्वनिष्टं शुभं तु पच्शान्नवभिर्दिनैच्श। आवश्यकं शोभनमृत्सको वा द्वादेडथ वाचार्यविभेदतः शुभः ॥** दो शुभ कार्य एक ही घर में एक साथ करना अशुभ है। परन्तु जरूरी हो तो नौ दिनों का अन्तर रखना। यदि उससे भी अधिक जरूरी हो तो द्वार भेद और आचार्य भेद रख कर करना चाहिए। व्रतबन्धे जन्मासादिविचारः ॥ (मु.चि.)

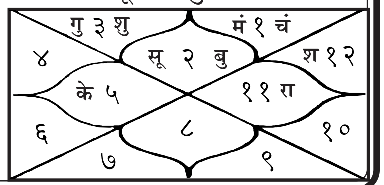
✻ वृषभ संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक १५.५.२०२६ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष १३ शुक्रवार को प्रातः ६.२२ बजे वृषभ संक्रान्ति प्रवेश होगी इसका पुण्यकाल शुक्रवार को प्रातः सूर्योदय से ही मान्य रहेगा। पशुओं का कार्य करने वाले, वैश्य, व्यापारीगण, दूध का कार्य करने वाले, दुग्ध संग्रह केन्द्र, पशुओं का कल्याण करने वाली संस्थाएं आदि के लिए लाभदायक है। वणिज करण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट, मुहूर्त्त–३०, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, जीरा, अजवाइन, कलौंजी, उड़द, कालीमिर्च, विष पदार्थ रसायन, मशीनरी–कलपूर्जे, तिल, अफीम, तरल द्रव्य कार्य व्यवसाय लाभद भावी तेजी कारक योग दिखता है।

✻ प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ३० शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	०	०	१	२	२	११	१०	४
अं.	००	१९	०३	०२	२६	०२	१६	१०	१०
क.	५५	०६	३३	३८	५९	०७	३१	४७	४७
वि.	४८	३४	३७	११	२०	४२	४१	४२	४२
गति	५७ ५२	१०१ ०१	४५ १७	१३१ १०	१० ०२	७१ ५२	०६ ०२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	कृत्तिका २	भरणी २	अश्विनी २	कृत्तिका २	पुनर्वसु ३	मृगशिरा ३	उ.भा. ४	शतभिषा २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दि. १७ मई से ३१ मई २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१७.०५.२०२६	०१:०१:५३:४०	५७५१	०१:०४:१५:३६	९१४।४७	००:०४:१८:५४	४५।१४	०१:०४:४९:२२	१३०।५८	०२:२७:०९:२३	१०।०८	०२:०३:१९:३३	७१।४८	११:१६:३७:४३	०५।५९	१०:१०:४४:३१
१८.०५.२०२६	०१:०२:५१:३०	५७४९	०१:१९:३०:२३	९०९।२८	००:०५:०४:०८	४५।११	०१:०७:००:२०	१३०।२९	०२:२७:१९:३१	१०।१४	०२:०४:३१:२२	७१।४५	११:१६:४३:४२	०५।५५	१०:१०:४१:२०
१९.०५.२०२६	०१:०३:४९:२०	५७४७	०२:०४:३९:५१	८९४।२१	००:०५:४९:२०	४५।०८	०१:०९:१०:४९	१२९।४३	०२:२७:२९:४४	१०।१९	०२:०५:४३:०७	७१।४१	११:१६:४९:३७	०५।५२	१०:१०:३८:१०
२०.०५.२०२६	०१:०४:४७:०७	५७४६	०२:१९:३४:१२	८७२।१४	००:०६:३४:२८	४५।०५	०१:११:२०:३२	१२८।४१	०२:२७:४०:०४	१०।२४	०२:०६:५४:४८	७१।३८	११:१६:५५:२९	०५।४८	१०:१०:३४:५९
२१.०५.२०२६	०१:०५:४४:५३	५७४४	०३:०४:०६:२६	८४६।३४	००:०७:१९:३३	४५।०२	०१:१३:२९:१३	१२७।२२	०२:२७:५०:२८	१०।३०	०२:०८:०६:२६	७१।३४	११:१७:०१:१८	०५।४५	१०:१०:३१:४८
२२.०५.२०२६	०१:०६:४२:३७	५७४३	०३:१८:१३:००	८२०।२५	००:०८:०४:३५	४४।५९	०१:१५:३६:३५	१२५।४९	०२:२८:००:५८	१०।३५	०२:०९:१८:००	७१।३०	११:१७:०७:०२	०५।४१	१०:१०:२८:३७
२३.०५.२०२६	०१:०७:४०:२०	५७४१	०४:०१:५३:२५	७९६।०८	००:०८:४९:३३	४४।५५	०१:१७:४२:२३	१२४।०२	०२:२८:११:३३	१०।४०	०२:१०:२९:३१	७१।२७	११:१७:१२:४३	०५।३७	१०:१०:२५:२७
२४.०५.२०२६	०१:०८:३८:०१	५७३९	०४:१५:०९:३३	७७५।०२	००:०९:३४:२९	४४।५२	०१:१९:४६:२५	१२२।०३	०२:२८:२२:१३	१०।४५	०२:११:४०:५७	७१।२३	११:१७:१८:२१	०५।३४	१०:१०:२२:१६
२५.०५.२०२६	०१:०९:३५:४०	५७३८	०४:२८:०४:३४	७५७।४०	००:१०:१९:२१	४४।४९	०१:२१:४८:२८	११९।५३	०२:२८:३२:५८	१०।५०	०२:१२:५२:२०	७१।१९	११:१७:२३:५४	०५।३०	१०:१०:१९:०५
२६.०५.२०२६	०१:१०:३३:१८	५७३७	०५:१०:४२:१४	७४३।५८	००:११:०४:१०	४४।४६	०१:२३:४८:२१	११७।३४	०२:२८:४३:४७	१०।५५	०२:१४:०३:३८	७१।१५	११:१७:२९:२४	०५।२६	१०:१०:१५:५४
२७.०५.२०२६	०१:११:३०:५५	५७३५	०५:२३:०६:१२	७३३।३२	००:११:४८:५५	४४।४२	०१:२५:४५:५५	११५।०८	०२:२८:५४:४२	१०।५९	०२:१५:१४:५३	७१।१०	११:१७:३४:५०	०५।२२	१०:१०:१२:४३
२८.०५.२०२६	०१:१२:२८:३०	५७३४	०६:०५:१९:४४	७२५।४६	००:१२:३३:३८	४४।३९	०१:२७:४१:०३	११२।३६	०२:२९:०५:४१	११।०४	०२:१६:२६:०३	७१।०६	११:१७:४०:१२	०५।१८	१०:१०:०९:३३
२९.०५.२०२६	०१:१३:२६:०३	५७३३	०६:१७:२५:३०	७२०।०६	००:१३:१८:१७	४४।३६	०१:२९:३३:३९	१०९।५८	०२:२९:१६:४५	११।०८	०२:१७:३७:०९	७१।०२	११:१७:४५:३०	०५।१४	१०:१०:०६:२२
३०.०५.२०२६	०१:१४:२३:३६	५७३१	०६:२९:२५:३७	७१६।०४	००:१४:०२:५३	४४।३३	०२:०१:२३:३७	१०७।१६	०२:२९:२७:५३	११।१३	०२:१८:४८:११	७०।५८	११:१७:५०:४४	०५।१०	१०:१०:०३:११
३१.०५.२०२६	०१:१५:२१:०७	५७३०	०७:११:२१:४०	७१३।२३	००:१४:४७:२५	४४।२९	०२:०३:१०:५३	१०४।३१	०२:२९:३९:०६	११।१७	०२:१९:५९:०९	७०।५३	११:१७:५५:५४	०५।०६	१०:१०:००:००

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	अर्द्धरात्रोत्तर मेष	अर्द्धरात्रोत्तर वृषभ	प्रातः मिथुन	प्रातः कर्क	दिवा सिंह	दिवा कन्या	दिवा तुला	सायं वृश्चिक	रात्रि धनु	रात्रि मकर	अर्द्धरात्रोत्तर कुंभ	अर्द्धरात्रोत्तर मीन
१७.०५.२०२६	रवि	१	२८:०७:५१	२९:४७:००	७:४८:१०	१०:०१:०५	१२:१७:५५	१४:३२:०८	१६:४५:४०	१९:०२:०४	२१:१८:०५	२३:२१:५४	२५:०७:११	२६:३८:४३
१८.०५.२०२६	सोम	२	२८:०४:०९	२९:४३::१८	७:४४:२८	९:५७:२३	१२:१४:१३	१४:२८:२६	१६:४१:५८	१८:५८:२२	२१:१४:२३	२३:१८:१२	२५:०३:२९	२६:३५:०१
१९.०५.२०२६	मंगल	३	२८:००:२८	२९:३९:३७	७:४०:४७	९:५३:४३	१२:१०:३२	१४:२४:४५	१६:३८:१८	१८:५४:४१	२१:१०:४२	२३:१४:३१	२४:५९:४८	२६:३१:२०
२०.०५.२०२६	बुध	४	२७:५६:४८	२९:३५:५८	७:३७:०८	९:५०:०३	१२:०६:५२	१४:२१:०६	१६:३४:३८	१८:५१:०१	२१:०७:०३	२३:१०:५२	२४:५६:०९	२६:२७:४०
२१.०५.२०२६	गुरू	५	२७:५३:१०	२९:३२:१९	७:३३:२९	९:४६:२५	१२:०३:१४	१४:१७:२७	१६:३१:००	१८:४७:२३	२१:०३:२४	२३:०७:१४	२४:५२:३१	२६:२४:०२
२२.०५.२०२६	शुक्र	६/७	२७:४८:५६	२९:२८:०५	७:२९:१५	९:४२:११	११:५९:००	१४:१३:१३	१६:२६:४६	१८:४३:०९	२०:५९:१०	२३:०३:००	२४:४८:१६	२६:१९:४८
२३.०५.२०२६	शनि	८	२७:४४:४३	२९:२३:५२	७:२५:०२	९:३७:५८	११:५४:४७	१४:०९:००	१६:२२:३३	१८:३८:५६	२०:५४:५७	२२:५८:४६	२४:४४:०३	२६:१५:३५
२४.०५.२०२६	रवि	९	२७:४०:३१	२९:१९:४०	७:२०:५०	९:३३:४६	११:५०:३५	१४:०४:४८	१६:१८:२१	१८:३४:४४	२०:५०:४५	२२:५४:३५	२४:३९:५२	२६:११:२३
२५.०५.२०२६	सोम	१०	२७:३६:२१	२९:१५:३०	७:१६:४०	९:२९:३५	११:४६:२५	१४:००:३८	१६:१४:१०	१८:३०:३४	२०:४६:३५	२२:५०:२४	२४:३५:४१	२६:०७:१२
२६.०५.२०२६	मंगल	११	२७:३२:११	२९:११:२१	७:१२:३१	९:२५:२६	११:४२:१५	१३:५६:२९	१६:१०:०१	१८:२६:२४	२०:४२:२६	२२:४६:१५	२४:३१:३२	२६:०३:०३
२७.०५.२०२६	बुध	११	२७:२८:०३	२९:०७:१३	७:०८:२३	९:२१:१८	११:३८:०७	१३:५२:२१	१६:०५:५३	१८:२२:१६	२०:३८:१८	२२:४२:०७	२४:२७:२४	२५:५८:५५
२८.०५.२०२६	गुरू	१२	२७:२३:५७	२९:०३:०६	७:०४:१६	९:१७:१२	११:३४:०१	१३:४८:१४	१६:०१:४६	१८:१८:१०	२०:३४:११	२२:३८:००	२४:२३:१७	२५:५४:४९
२९.०५.२०२६	शुक्र	१३	२७:१९:५१	२८:५९:०१	७:००:११	९:१३:०६	११:२९:५५	१३:४४:०९	१५:५७:४१	१८:१४:०४	२०:३०:०६	२२:३३:५५	२४:१९:१२	२५:५०:४३
३०.०५.२०२६	शनि	१४	२७:१५:४७	२८:५४:५७	६:५६:०७	९:०९:०२	११:२५:५१	१३:४०:०५	१५:५३:३७	१८:१०:००	२०:२६:०२	२२:२९:५१	२४:१५:०८	२५:४६:३९
३१.०५.२०२६	रवि	१५	२७:११:४५	२८:५०:५४	६:५२:०४	९:०४:५९	११:२१:४९	१३:३६:०२	१५:४९:३४	१८:०५:५८	२०:२१:५९	२२:२५:४८	२४:११:०५	२५:४२:३६

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (अधिक मास) संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख १७ मई से ३१ मई २०२६ ई.तक

ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

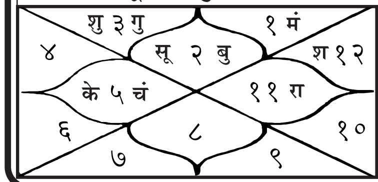
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मई	
रवि	१	२१:४१	३९:२०	कृतिका	१४:३२	शोभन/अतिगण्ड	०६:१५ २६:००	किंस्तुघ्न	११:३७	१३:१५	०५:५७	१९:१२	वृषभ		१७	**पुरूषोत्तम मास प्रा.गंगा दशहरा आरंभ**, करिदिन, चंद्र दर्शन मु. ३० **A**
सोम	२	१७:५४	२९:५२	रोहिणी	११:३२	सुकर्मा	२१:४८	बालव	०७:४७	१३:१६	०५:५७	१९:१३	मिथुन	२२:०५	१८	धनिष्ठा महापंचक समाप्त ११।३२ सर्वा.०५।५७ से २९।५७ तक अमृत सिद्धि ११।३२ से २९।५७ तक
मंगल	३	१४:१९	२०:५६	मृगशिरा	०८:४२	धृति	१७:४८	गर	१४:१९	१३:१७	०५:५७	१९:१३	मिथुन		१९	**अंगारकी विनायक चतुर्थी**, रवियोग प्रा. ८।४२, राजयोग समाप्त ८।४२, भद्रा २४।४० से **B**
बुध	४	११:०७	१२:५८	आर्द्रा/पुनर्वसु	०६:१२ २८:१२	शूल	१४:१०	विष्टि	११:०७	१३:१८	०५:५६	१९:१४	कर्क	२२:३९	२०	रवियोग समाप्त ०६।१२, रवियोग प्रा. २८।१२, कुमार योग प्रा. ११।०७ से २८।१२ **C**
गुरू	५	०८:२७	०६:१८	पुष्य	२६:४९	गण्ड	१०:५८	बालव	०८:२७	१३:१९	०५:५६	१९:१४	कर्क		२१	रवियोग एवं गुरु पुष्यामृत योग समाप्त २६।४९ व्यतिपात महापात २०।०६ से २५।१५ **D**
शुक्र	६	०६:२५	०१:१४	आश्लेषा	२६:०८	वृद्धि	०८:१९	तैतिल	०६:२५	१३:२०	०५:५५	१९:१५	सिंह	२६:०८	२२	**क्षय तिथि, राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास प्रा.**भद्रा २९।०५ से मृत्यु ०५।५५ से २६।०८ तक
शुक्र	७	२९:०५	५७:५४	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय, बुध उदय पश्चिम में
शनि	८	२८:२८	५६:२१	मघा	२६:०९	ध्रुव/व्याघात	०६:१३ २८:४३	विष्टि	१६:४१	१३:२०	०५:५५	१९:१५	सिंह		२३	**दुर्गाष्टमी** रवियोग प्रा. २६।०९ दग्ध योग प्रा. २८।२८ भद्रा १६।४१ तक
रवि	९	२८:३१	५६:३१	पूर्वाफा	२६:५१	हर्षण	२७:४४	बालव	१६:२५	१३:२१	०५:५५	१९:१६	सिंह		२४	**रवियोग अहोरात्र**, सर्वा. २६।५१ से २९।५४ तक
सोम	१०	२९:११	५८:१३	उत्तराफा	२८:०९	वज्र	२७:१५	तैतिल	१६:४७	१३:२२	०५:५४	१९:१६	कन्या	०९:०७	२५	**गंगा दशहरा समाप्त**, नवतपा आरंभ १५।३८, रवियोग अहोरात्र, कुमार योग प्रा. २८।०९, सूर्य रोहिणी पर १५।३८
मंगल	११	-	६०:००	हस्त	-	सिद्धि	२७:१०	वणिज	१७:४३	१३:२३	०५:५४	१९:१७	कन्या		२६	वृद्धि तिथि, कुमार योग अहोरात्र, रवियोग अहोरात्र, भद्रा १७।४३ से
बुध	११	०६:२२	०१:११	हस्त	०५:५७	व्यतिपात	२७:२५	विष्टि	०६:२२	१३:२४	०५:५४	१९:१७	तुला	१९:००	२७	**पुरूषोत्तमा एकादशी** रवियोग एवं कुमार योग समाप्त ०५।५७ राजयोग प्रा. ०६।२३ **E**
गुरू	१२	०७:५८	०५:१०	चित्रा	०८:०८	वरीयान	२७:५४	बालव	०७:५८	१३:२४	०५:५४	१९:१८	तुला		२८	**प्रदोष व्रत**, स्थिर योग प्रा. ०८।०८ से, चर ०५।५४ से ०८।०८ तक
शुक्र	१३	०९:५१	०९:५४	स्वाति	१०:३८	परिघ	२८:३५	तैतिल	०९:५१	१३:२५	०५:५३	१९:१८	तुला		२९	रवियोग प्रा. १०।३८ से, बुध मिथुन में ११।१६, मंगल भरण्यां ०६।२५
शनि	१४	११:५८	१५:१३	विशाखा	१३:२०	शिव	२९:२४	वणिज	११:५८	१३:२६	०५:५३	१९:१९	वृश्चिक	०६:३९	३०	पूर्णिमा व्रत, चन्द्रोदय १८।४८ रवियोग समाप्त १३।२० बिछूड़ा प्रा. ०६।३९ भद्रा ११।५८ से २५।०६ तक
रवि	१५	१४:१५	२०:५५	अनुराधा	१६:१२	सिद्ध	-	बव	१४:१५	१३:२६	०५:५३	१९:१९	वृश्चिक		३१	मृत्यु ०५।५३ से १६।१२ तक, बिछूड़ा, राजयोग समाप्त १६।१२

A शनि रेवती १ पर १४।३८ तक **B** बुध रोहिण्यां १४।३४, शुक्र आर्द्रायां २४।३२ **C** भद्रा ११।०७ तक मूसल ०५।५६ से ०६।१२ तक यमदंष्ट्रा ०६।१२ से २८।१२ तक **D** सर्वा. ०५।५६ से २६।४९ तक अमृत सिद्धि ०५।५६ से २६।४९ तक सायन सूर्य मिथुन पर ०६।०७ **E** भद्रा ०६।२२ तक सर्वा. ०५।५४ से सर्वा. ०५।५७ तक

✻ प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८ शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	४	०	१	२	२	११	१०	४
अं.	०७	०१	०८	१७	२८	१०	१७	१०	१०
क.	४०	५३	४९	४२	११	२९	१२	२५	२५
वि.	२०	२५	३३	२३	१३	३१	४३	२७	२७
गति	५७ ४१	७१६ ०८	४४ ५५	११४ ०२	१० ४०	७१ २७	०५ ३७	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	कृत्तिका ४	मघा १	आर्द्रा ३	रोहिणी ३	पुनर्वसु ३	आर्द्रा २	स्वाति १	शतभिषा २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ अधिक मास निर्णय ✻

यत्र संक्रान्तिरभूद्दि वसैर्ज्येष्ठादिकेऽपि वा। स मासः संज्ञया लोके ख्यातोऽधिक इति स्मृतः ॥ अर्थात् जिस मास में सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती, चाहे वह ज्येष्ठ आदि कोई भी मास हो, वह लोक में अधिक मास कहलाता है।

अधिकं शुद्धमासं तु सर्वपापप्रणाशनम्। यः करोति व्रतं भक्तया सर्वयज्ञफलं लभेत्॥ अर्थात् यह अधिक मास अत्यन्त शुद्ध और पापों को नाश करने वाला है। जो इसमें भक्तिपूर्वक व्रत करता है, वह समस्त यज्ञों के फल को प्राप्त करता है। स्कन्दपुराण (वैष्णव खण्ड, अधिक मास महात्म्य)

मलिनं मलमासं तु ब्रह्मणा संप्रदर्शितम्। विष्णुना पुरुषोत्तम नाम्ना ख्यातिं गम्यते पुनः ॥ अर्थात् ब्रह्मा ने इसे मलिन मास कहा, परन्तु विष्णु ने इसे अपना पुरुषोत्तम नाम प्रदान किया और तब यह महापवित्र हो गया।

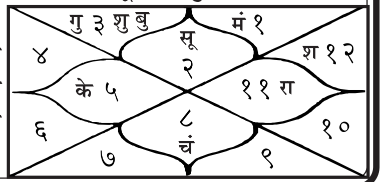
✻ पक्ष फल ✻

जेठ बदी पक्ष में श्रवण धनिष्ठा नक्षत्र हो उन दिनों में आकाश में मेघ छाये रहें और यदि वर्षा न हो तो आगे उत्तम वर्षा होगी और वर्षे (वर्षा हो जाय) तो आगे वर्षा नहीं होगी। चित्रा स्वाति विशाखा नक्षत्रों में यदि जेठ में वर्षा हो तो सावन में वर्षा कम होगी और अन्न महंगा रहेगा। जेठ कृष्ण पक्ष में अष्टमी और चौदस को दक्षिण का वायु चले तो वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है। जेठ बदी एकादशी द्वादशी को बादल हो, बिजली चमके तथा वर्षा हो तो श्रेष्ठ संवत् होगा। अनाज मन्दा रहेगा।

✻ प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५ रविवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	७	०	२	२	२	११	१०	४
अं.	१५	११	१४	०३	२९	१९	१७	१०	१०
क.	२१	२१	४७	१०	३९	५९	५५	००	००
वि.	०७	४०	२५	५३	०६	०९	५४	००	००
गति	५७ ३०	७१३ २३	४४ २९	१०४ ३१	११ १७	७० ५३	०५ ०६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	रोहिणी २	अनुराधा ३	भरणी १	मृगशिरा ३	पुनर्वसु ३	आर्द्रा ४	स्वाति १	शतभिषा २	मघा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष दि. १ जून से १५ जून २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य रा. अं. क. वि.	गति	चन्द्र रा. अं. क. वि.	गति	मंगल रा. अं. क. वि.	गति	बुध रा. अं. क. वि.	गति	गुरु रा. अं. क. वि.	गति	शुक्र रा. अं. क. वि.	गति	शनि रा. अं. क. वि.	गति	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.
०१.०६.२०२६	०१:१६:१८:३८	५७२९	०७:२३:१५:०४	७१२०५	००:१५:३१:५५	४४२६	०२:०४:५५:२५	१०१४४	०२:२९:५०:२३	११२१	०२:२१:१०:०३	७०४९	११:१८:०१:००	०५०२	१०:०९:५६:५०
०२.०६.२०२६	०१:१७:१६:०७	५७२८	०८:०५:०७:०८	७१२२४	००:१६:१६:२१	४४२३	०२:०६:३७:०८	९८५४	०३:००:०१:४४	११२५	०२:२२:२०:५२	७०४५	११:१८:०६:०२	०४५७	१०:०९:५३:३९
०३.०६.२०२६	०१:१८:१३:३५	५७२७	०८:१६:५९:३२	७१४४९	००:१७:००:४४	४४२०	०२:०८:१६:०३	९६०२	०३:००:१३:१०	११३०	०२:२३:३१:३६	७०४०	११:१८:१०:५९	०४५३	१०:०९:५०:२८
०४.०६.२०२६	०१:१९:११:०२	५७२७	०८:२८:५४:२१	७१९५८	००:१७:४५:०४	४४१६	०२:०९:५२:०५	९३०९	०३:००:२४:३९	११३४	०२:२४:४२:१७	७०३६	११:१८:१५:५२	०४४९	१०:०९:४७:१७
०५.०६.२०२६	०१:२०:०८:२९	५७२६	०९:१०:५४:२०	७२८३३	००:१८:२९:२०	४४१३	०२:११:२५:१४	९०१४	०३:००:३६:१३	११३७	०२:२५:५२:५२	७०३१	११:१८:२०:४१	०४४४	१०:०९:४४:०७
०६.०६.२०२६	०१:२१:०५:५५	५७२५	०९:२३:०२:५३	७४१११	००:१९:१३:३३	४४१०	०२:१२:५५:२९	८७१८	०३:००:४७:५०	११४१	०२:२७:०३:२४	७०२७	११:१८:२५:२५	०४४०	१०:०९:४०:५६
०७.०६.२०२६	०१:२२:०३:२०	५७२५	१०:०५:२४:०३	७५८१७	००:१९:५७:४३	४४०७	०२:१४:२२:४७	८४२०	०३:००:५९:३२	११४५	०२:२८:१३:५०	७०२२	११:१८:३०:०५	०४३५	१०:०९:३७:४५
०८.०६.२०२६	०१:२३:००:४५	५७२४	१०:१८:०२:२०	७७९५५	००:२०:४१:५०	४४०३	०२:१५:४७:०६	८११९	०३:०१:११:१७	११४९	०२:२९:२४:१३	७०१८	११:१८:३४:४१	०४३१	१०:०९:३४:३४
०९.०६.२०२६	०१:२३:५८:०९	५७२३	११:०१:०२:१५	८०५३३	००:२१:२५:५३	४४००	०२:१७:०८:२५	७८१७	०३:०१:२३:०६	११५३	०३:००:३४:३०	७०१३	११:१८:३९:१२	०४२६	१०:०९:३१:२३
१०.०६.२०२६	०१:२४:५५:३२	५७२३	११:१४:२७:४८	८३३५२	००:२२:०९:५३	४३५७	०२:१८:२६:४२	७५११	०३:०१:३४:५८	११५६	०३:०१:४४:४३	७००८	११:१८:४३:३८	०४२२	१०:०९:२८:१३
११.०६.२०२६	०१:२५:५२:५५	५७२२	११:२८:२१:४०	८६२३२	००:२२:५३:४९	४३५३	०२:१९:४१:५४	७२०३	०३:०१:४६:५५	१२००	०३:०२:५४:५१	७००३	११:१८:४८:००	०४१७	१०:०९:२५:०२
१२.०६.२०२६	०१:२६:५०:१७	५७२२	००:१२:४४:१२	८८८२४	००:२३:३७:४३	४३५०	०२:२०:५३:५७	६८५२	०३:०१:५८:५४	१२०३	०३:०४:०४:५५	६९५९	११:१८:५२:१६	०४१२	१०:०९:२१:५१
१३.०६.२०२६	०१:२७:४७:३९	५७२१	००:२७:३२:३६	९०७५०	००:२४:२१:३२	४३४६	०२:२२:०२:४९	६५३६	०३:०२:१०:५७	१२०६	०३:०५:१४:५३	६९५४	११:१८:५६:२८	०४०७	१०:०९:१८:४०
१४.०६.२०२६	०१:२८:४५:०१	५७२१	०१:१२:४०:२६	९१७४३	००:२५:०५:१८	४३४२	०२:२३:०८:२५	६२१७	०३:०२:२३:०४	१२१०	०३:०६:२४:४७	६९४९	११:१९:००:३६	०४०२	१०:०९:१५:३०
१५.०६.२०२६	०१:२९:४२:२२	५७२०	०१:२७:५८:०९	९१६२०	००:२५:४९:००	४३३९	०२:२४:१०:४१	५८५२	०३:०२:३५:१३	१२१३	०३:०७:३४:३५	६९४३	११:१९:०४:३८	०३५७	१०:०९:१२:१९

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	अर्द्धरात्रोत्तर मेष	अर्द्धरात्रोत्तर वृषभ	प्रातः मिथुन	प्रातः कर्क	दिवा सिंह	दिवा कन्या	दिवा तुला	सायं वृश्चिक	रात्रि धनु	रात्रि मकर	रात्रि कुंभ	अर्द्धरात्रोत्तर मीन
०१.०६.२०२६	सोम	१	२७:०७:४३	२८:४६:५२	६:४८:०२	९:००:५८	११:१७:४७	१३:३२:००	१५:४५:३३	१८:०१:५६	२०:१७:५८	२२:२१:४७	२४:०७:०४	२५:३८:३५
०२.०६.२०२६	मंगल	२	२७:०३:४३	२८::४२:५२	६:४४:०२	८:५६:५८	११:१३:४७	१३:२८:००	१५:४१:३३	१७:५७:५६	२०:१३:५७	२२:१७:४६	२४:०३:०३	२५:३४:३५
०३.०६.२०२६	बुध	३	२६:५९:४४	२८:३८:५३	६:४०:०३	८:५२:५९	११:०९:४८	१३:२४:०१	१५:३७:३४	१७:५३:५७	२०:०९:५८	२२:१३:४७	२३:५९:०४	२५:३०:३६
०४.०६.२०२६	गुरू	४	२६:५५:४६	२८:३४:५५	६:३६:०५	८:४९:०१	११:०५:५०	१३:२०:०३	१५:३३:३६	१७:४९:५९	२०:०६:०१	२२:०९:५०	२३:५५:०७	२५:२६:३८
०५.०६.२०२६	शुक्र	५	२६:५१:५०	२८:३०:५९	६:३२:०९	८:४५:०५	११:०१:५४	१३:१६:०७	१५:२९:३९	१७:४६:०३	२०:०२:०४	२२:०५:५३	२३:५१:१०	२५:२२:४२
०६.०६.२०२६	शनि	६	२६:४७:५४	२८:२७:०४	६:२८:१४	८:४१:०९	१०:५७:५८	१३:१२:१२	१५:२५:४४	१७:४२:०८	१९:५८:०९	२२:०१:५८	२३:४७:१५	२५:१८:४६
०७.०६.२०२६	रवि	७	२६:४४:००	२८:२३:१०	६:२४:२०	८:३७:१५	१०:५४:०४	१३:०८:१८	१५:२१:५०	१७:३८:१४	१९:५४:१५	२१:५८:०४	२३:४३:२१	२५:१४:५२
०८.०६.२०२६	सोम	८	२६:४०:०८	२८:१९:१७	६:२०:२७	८:३३:२२	१०:५०:१२	१३:०४:२५	१५:१७:५७	१७:३४:२१	१९:५०:२२	२१:५४:११	२३:३९:२८	२५:१०:५९
०९.०६.२०२६	मंगल	९	२६:३६:१६	२८:१५:२५	६:१६:३५	८:२९:३१	१०:४६:२०	१३:००:३३	१५:१४:०६	१७:३०:२९	१९:४६:३०	२१:५०:२०	२३:३५:३७	२५:०७:०८
१०.०६.२०२६	बुध	१०	२६:३२:२६	२८:११:३५	६:१२:४५	८:२५:४०	१०:४२:३०	१२:५६:४३	१५:१०:१५	१७:२६:३९	१९:४२:४०	२१:४६:२९	२३:३१:४६	२५:०३:१७
११.०६.२०२६	गुरू	११	२६:२८:३६	२८:०७:४६	६:०८:५६	८:२१:५१	१०:३८:४०	१२:५२:५४	१५:०६:२६	१७:२२:४९	१९:३८:५१	२१:४२:४०	२३:२७:५७	२४:५९:२८
१२.०६.२०२६	शुक्र	१२	२६:२४:४८	२८:०३:५८	६:०५:०८	८:१८:०३	१०:३४:५२	१२:४९:०६	१५:०२:३८	१७:१९:०१	१९:३५:०३	२१:३८:५२	२३:२४:०९	२४:५५:४०
१३.०६.२०२६	शनि	१३	२६:२१:०१	२८:००:११	६:०१:२१	८:१४:१६	१०:३१:०५	१२:४५:१९	१५:५८:५१	१७:१५:१४	१९:३१:१६	२१:३५:०५	२३:२०:२२	२४:५१:५३
१४.०६.२०२६	रवि	१४	२६:१७:१५	२७:५६:२५	५:५७:३५	८:१०:३०	१०:२७:२०	१२:४१:३३	१४:५५:०५	१७:११:२९	१९:२७:३०	२१:३१:१९	२३:१६:३६	२४:४८:०७
१५.०६.२०२६	सोम	३०	२६:१३:३१	२७:५२:४०	५:५३:५०	८:०६:४६	१०:२३:३५	१२:३७:४८	१४:५१:२१	१७:०७:४४	१९:२३:४५	२१:२७:३४	२३:१२:५१	२४:४४:२३

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (अधिक मास) संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख १ जून से १५ जून २०२६ ई.तक

ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

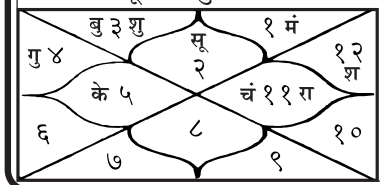
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक जून	
सोम	१	१६:३८	२६:५२	ज्येष्ठा	१९:०९	सिद्ध	०६:१९	कौलव	१६:३८	१३:२७	०५:५३	१९:२०	धनु	१९:०९	१	बिछूड़ा समाप्त १९।०९, गुरु कर्क में २५।४९
मंगल	२	१९:०२	३२:५२	मूल	२२:०६	साध्य	०७:१६	गर	१९:०२	१३:२७	०५:५३	१९:२०	धनु		२	राजयोग प्रा. २२।०६ से, बुध आर्द्रायां ०६।११
बुध	३	२१:२२	३८:४३	पूर्वाषा	२५:००	शुभ	०८:१२	वणिज	०८:१३	१३:२८	०५:५३	१९:२१	धनु		३	दग्ध योग समाप्त २१।२२, राजयोग समाप्त २१।२२ भद्रा ०८।१३ से २१।२२ तक **A**
गुरू	४	२३:३१	४४:०६	उत्तराषा	२७:४२	शुक्ल	०९:०३	बव	१०:२८	१३:२९	०५:५३	१९:२१	मकर	०७:४२	४	**संकष्टी चतुर्थी,** चंद्रोदय २२।५०, यमदंष्ट्रा ०५।५३ से २७।४२ तक **B**
शुक्र	५	२५:२१	४८:४१	श्रवण	-	ब्रह्म	०९:४२	कौलव	१२:२९	१३:२९	०५:५२	१९:२१	मकर		५	सर्वा. ०५।५२ से, कुमार योग अहोरात्र
शनि	६	२६:४२	५२:०३	श्रवण	०६:०३	ऐन्द्र	१०:०४	गर	१४:०५	१३:२९	०५:५२	१९:२२	कुम्भ	१९:०४	६	भद्रा २६।४२ से सर्वा. ०६।०३ तक यमदंष्ट्रा ०५।५२ से ०६।०३ तक **पंचक** प्रा. १९।०४ रवियोग प्रा. ०६।०३
रवि	७	२७:२५	५३:५२	धनिष्ठा	०७:५६	वैधृति	१०:०२	विष्टि	१५:०९	१३:३०	०५:५२	१९:२२	कुम्भ		७	**भानु सप्तमी,** पंचक जारी, रवियोग समाप्त ०७।५६, राजयोग समाप्त ०७।५६, **C**
सोम	८	२७:२४	५३:५०	शतभिषा	०९:१०	विष्कुम्भ	०९:२८	बालव	१५:३०	१३:३०	०५:५२	१९:२३	मीन	२७:३६	८	**मासिक कालाष्टमी,** पंचक जारी, शुक्र कर्क में १७।४४, सूर्य मृगशिरा पर १३।३३
मंगल	९	२६:३५	५१:४७	पूर्वाभा	०९:३९	प्रीति	०८:१८	तैतिल	१५:०६	१३:३१	०५:५२	१९:२३	मीन		९	सर्वा. ०९।३९ से २९।५२ तक, पंचक जारी
बुध	१०	२४:५८	४७:४५	उत्तराभा	०९:२१	आयुष्मान/सौभाग्य	०६:३० २८:०३	वणिज	१३:५३	१३:३१	०५:५२	१९:२३	मीन	०	१०	भद्रा १३।५३ से २४।५८ तक, पंचक जारी
गुरू	११	२२:३७	४१:५१	रेवती	०८:१६	शोभन	२५००	बव	११:५३	१३:३१	०५:५२	१९:२४	मेष	०८:१६	११	**पुरूषोत्तमा एकादशी,** सर्वा. ०५।५२ से, पंचक समाप्त ०८।१६, बुध पुनर्वसु ११।२३, शुक्र पुष्यायां १४।०६
शुक्र	१२	१९:३७	३४:२२	अश्विनी/भरणी	०६:२९ २८:०६	अतिगण्ड	२१:२६	कौलव	०९:११	१३:३२	०५:५२	१९:२४	मेष		१२	**प्रदोष व्रत,** राजयोग ०६।२९ से १९।३७, सर्वा. ०६।२९ तक
शनि	१३	१६:०८	२५:३९	कृतिका	२५:१७	सुकर्मा	१७:२८	गर	०५:५६	१३:३२	०५:५२	१९:२४	वृषभ	०९:२५	१३	मास शिवरात्रि, भद्रा १६।०८ से २६।१६ तक, सर्वा. २५।१७ से २९।५३ तक **D**
रवि	१४	१२:२०	१६ँ०९	रोहिणी	२२:१४	धृति	१३:१५	शकुनि	१२:२०	१३:३२	०५:५३	१९:२५	वृषभ		१४	**पितृकार्य अमावस्या, दर्श अमावस्या**
सोम	३०	०८:२४	०६:१९	मृगशिरा	१९:०८	शूल/गण्ड	०८:५५ २८:३९	नाग	०८:२४	१३:३२	०५:५३	१९:२५	मिथुन	०८:४१	१५	पुरूषोत्तम मास समाप्त, सोमवती अमावस्या, क्षय तिथि, सर्वा. ०५।५३ से १९।०८ तक **E**

A यमदंष्ट्रा ०५।५३ से २५।०० तक **B** स्थिर योग समाप्त २३।३१, वैधृति महापात १८।१३ से २४।५५ **C** भद्रा १५।०९ तक यमदंष्ट्रा ०५।५२ से ०७।५६ तक **D** अमृत सिद्धि २५।१७ से २९।५३ तक, स्थिर योग समाप्त २५।१७ **E** अमृत सिद्धि ०५।५३ से १९।०८ तक सूर्य मिथुन पर १२।५३ बं.आषाढ मास प्रा.

✻ द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ८ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१०	०	२	३	२	११	१०	४
अं.	२३	१८	२०	१५	०१	२९	१८	०९	
क.	००	०२	४१	४७	११	२४	३४	३४	
वि.	४५	२०	५०	०६	१७	१३	४१	३४	
गति	५७ २४	७७१ ५५	४४ ०३	८१ १९	११ ४९	७० १८	०४ ३१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	रोहिणी ४	शतभिषा ४	भरणी ३	आर्द्रा ३	पुनर्वसु ४	पुनर्वसु ३	रेवती १	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ अधिक मास निर्णय ✻

अधिके मासि यत् दानं जपहोमसमन्वितम्। अक्षय्यं भवति प्राज्ञ पित्रादेवमनोरथम्॥ अर्थात् – जो भी दान, जप, होम आदि अधिक मास में किया जाता है, वह अक्षय (कभी नष्ट न होने वाला) फल देता है और देवताओं–पितरों को संतुष्ट करता है।

नारदीय पुराण – अधिकमासे कृते दाने स्नाने होमे जपेपि च। अक्षय्यं फलमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ अर्थात् – अधिक मास में किया गया दान, स्नान, होम और जप अक्षय फल देता है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

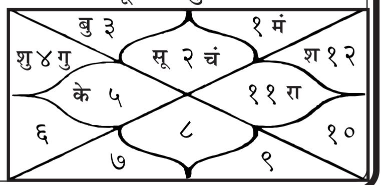
मिथुन संक्रान्ति फलम्

दिनांक १५.६.२०२६ द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३० सोमवार को दिन में १२.५३ बजे मिथुन संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल सोमवार को ही मध्यान्ह काल से मान्य रहेगा। उद्योगपति, वैश्य, व्यापारी, नेता, अभिनेता, राजनेता, दलपति, आयात–निर्यात का कार्य करने वाले, स्टॉकिस्ट, संग्रह करने वाले, उच्च पदासीन व्यक्ति आदि के लिए लाभदायक है। किंस्तुघ्न करण संक्रान्ति की अवस्था उतिष्ठा, मुहूर्त्त ३०, चांदी विविध धातु, सफेद रंग वस्तु, तिलहन–दलहन, मूर्गा, इमारती लकड़ी, भवन निर्माण सामान, उड़द, काली मिर्च, सोना, लोहा–इस्पात, सूत–कपास, रेशम, सुगंधी पदार्थ आदि में तेजी आवे।

✻ द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ३० सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१	०	२	३	३	११	१०	४
अं.	२९	२७	२५	२४	०२	०७	१९	०९	०९
क.	४२	५८	४९	१०	३५	३४	०४	१२	१२
वि.	२२	०९	००	४१	१३	३५	३८	१९	१९
गति	५७ २०	११६ २०	४३ ३९	५८ ५२	१२ १३	६९ ४३	०३ ५७	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मृगशिरा २	मृगशिरा २	भरणी ४	पुनर्वसु २	पुनर्वसु ४	पुष्य २	रेवती १	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दि. १६ जून से २९ जून २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१६.०६.२०२६	०२:००:३९:४२	५७।१९	०२:१३:१४:२९	९०४।०४	००:२६:३२:३९	४३।३५	०२:२५:०९:३४	५५।२३	०३:०२:४७:२६	१२।१६	०३:०८:४४:१९	६९।३८	११:१९:०८:३५	०३।५२	१०:०९:०९:०८
१७.०६.२०२६	०२:०१:३७:०१	५७।१९	०२:२८:१८:३३	८८३।०५	००:२७:१६:१४	४३।३१	०२:२६:०४:५६	५१।४७	०३:०२:५९:४२	१२।१९	०३:०९:५३:५७	६९।३२	११:१९:१२:२७	०३।४७	१०:०९:०५:५७
१८.०६.२०२६	०२:०२:३४:२०	५७।१८	०३:१३:०१:३८	८५६।४५	००:२७:५९:४५	४३।२७	०२:२६:५६:४४	४८।०६	०३:०३:१२:००	१२।२२	०३:११:०३:२९	६९।२७	११:१९:१६:१४	०३।४२	१०:०९:०२:४७
१९.०६.२०२६	०२:०३:३१:३८	५७।१७	०३:२७:१८:२३	८२८।३०	००:२८:४३:१३	४३।२४	०२:२७:४४:५०	४४।१९	०३:०३:२४:२२	१२।२४	०३:१२:१२:५५	६९।२१	११:१९:१९:५६	०३।३७	१०:०८:५९:३६
२०.०६.२०२६	०२:०४:२८:५५	५७।१६	०४:११:०६:५३	८०१।१२	००:२९:२६:३६	४३।२०	०२:२८:२९:१०	४०।२६	०३:०३:३६:४६	१२।२७	०३:१३:२२:१६	६९।१५	११:१९:२३:२३	०३।३२	१०:०८:५६:२५
२१.०७.२०२६	०२:०५:२६:१२	५७।१६	०४:२४:२८:०५	७७६।४६	०१:००:०९:५६	४३।१६	०२:२९:०९:३५	३६।२६	०३:०३:४९:१४	१२।३०	०३:१४:३१:३१	६९।०८	११:१९:२७:०५	०३।२६	१०:०८:५३:१४
२२.०७.२०२६	०२:०६:२३:२७	५७।१५	०५:०७:२४:५१	७५६।१८	०१:००:५३:१२	४३।१२	०२:२९:४६:०१	३२।१९	०३:०४:०१:४३	१२।३२	०३:१५:४०:३९	६९।०२	११:१९:३०:३१	०३।२१	१०:०८:५०:०३
२३.०७.२०२६	०२:०७:२०:४२	५७।१४	०५:२०:०१:०९	७४०।०८	०१:०१:३६:२४	४३।०८	०३:००:१८:२०	२८।०६	०३:०४:१४:१५	१२।३५	०३:१६:४९:४१	६८।५५	११:१९:३३:५२	०३।१६	१०:०८:४६:५३
२४.०७.२०२६	०२:०८:१७:५७	५७।१४	०६:०२:२१:१७	७२८।१०	०१:०२:१९:३३	४३।०५	०३:००:४६:२६	२३।४७	०३:०४:२६:५०	१२।३७	०३:१७:५८:३६	६८।४९	११:१९:३७:०८	०३।१०	१०:०८:४३:४२
२५.०७.२०२६	०२:०९:१५:११	५७।१३	०६:१४:२९:२७	७१९।५८	०१:०३:०२:३७	४३।०१	०३:०१:१०:१२	१९।२२	०३:०४:३९:२७	१२।३९	०३:१९:०७:२५	६८।४२	११:१९:४०:१८	०३।०५	१०:०८:४०:३१
२६.०७.२०२६	०२:१०:१२:२४	५७।१३	०६:२६:२९:२५	७१४।५७	०१:०३:४५:३८	४२।५७	०३:०१:२९:३४	१४।५२	०३:०४:५२:०७	१२।४२	०३:२०:१६:०७	६८।३५	११:१९:४३:२३	०३।००	१०:०८:३७:२०
२७.०७.२०२६	०२:११:०९:३६	५७।१२	०७:०८:२४:२३	७१२।३२	०१:०४:२८:३५	४२।५३	०३:०१:४४:२६	१०।१८	०३:०५:०४:४८	१२।४४	०३:२१:२४:४२	६८।२८	११:१९:४६:२३	०२।५४	१०:०८:३४:१०
२८.०७.२०२६	०२:१२:०६:४९	५७।१२	०७:२०:१६:५५	७१२।१२	०१:०५:११:२८	४२।४९	०३:०१:५४:४४	०५।४२	०३:०५:१७:३२	१२।४६	०३:२२:३३:०९	६८।२१	११:१९:४९:१७	०२।४९	१०:०८:३०:५९
२९.०७.२०२६	०२:१३:०४:०१	५७।१२	०८:०२:०९:०७	७१३।३६	०१:०५:५४:१७	४२।४६	०३:०२:००:२६	०१।०४	०३:०५:३०:१८	१२।४८	०३:२३:४१:३०	६८।१३	११:१९:५२:०६	०२।४३	१०:०८:२७:४८

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	अर्द्धरात्रोत्तर मेष	अर्द्धरात्रोत्तर वृषभ	प्रातः मिथुन	प्रातः कर्क	प्रातः सिंह	दिवा कन्या	दिवा तुला	दिवा वृश्चिक	सायं धनु	रात्रि मकर	रात्रि कुंभ	रात्रि मीन
१६.०६.२०२६	सोम/मंगल	१/२	२६:०९:४७	२७:४८:५६	२९:४६:११	८:०३:०२	१०:१९:५१	१२:३४:०४	१४:४७:३७	१७:०४:००	१९:२०:०२	२३:०९:०८	२४:४०:३९	२४:४०:३९
१७.०६.२०२६	बुध	३	२६:०६:०४	२७:४५:१४	२९:४२:२८	७:५९:१९	१०:१६:०९	१२:३०:२२	१४:४३:५४	१७:००:१८	१९:१६:१९	२३:०५:२५	२४:३६:५६	२४:३६:५६
१८.०६.२०२६	गुरू	४	२६:०२:२३	२७:४१:३२	२९:३८:४६	७:५५:३८	१०:१२:२७	१२:२६:४०	१४:४०:१३	१६:५६:३६	१९:१२:३७	२३:०१:४३	२४:३३:१५	२४:३३:१५
१९.०६.२०२६	शुक्र	५	२५:५८:४२	२७:३७:५२	२९:३५:०६	७:५१:५७	१०:०८:४६	१२:२३:००	१४:३६:३२	१६:५२:५६	१९:०८:५७	२२:५८:०३	२४:२९:३४	२४:२९:३४
२०.०६.२०२६	शनि	६	२५:५५:०३	२७:३४:१२	२९:३१:२६	७:४८:१८	१०:०५:०७	१२:१९:२०	१४:३२:५३	१६:४९:१६	१९:०५:१७	२२:५४:२३	२४:२५:५५	२४:२५:५५
२१.०७.२०२६	रवि	७	२५:५१:२४	२७:३०:३४	२९:२७:४८	७:४४:३९	१०:०१:२८	१२:१५:४१	१४:२९:१४	१६:४५:३७	१९:०१:३९	२२:५०:४५	२४:२२:१६	२४:२२:१६
२२.०७.२०२६	सोम	८	२५:४७:२८	२७:२६:३७	२९:२३:५१	७:४०:४३	९:५७:३२	१२:११:४५	१४:२५:१७	१६:४१:४१	१८:५७:४२	२२:४६:४८	२४:१८:२०	२४:१८:२०
२३.०७.२०२६	मंगल	९	२५:४३:२३	२७:२२:३२	२९:१९:४६	७:३६:३८	९:५३:२७	१२:०७:४०	१४:२१:१२	१६:३७:३६	१८:५३:३७	२२:४२:४३	२४:१४:१५	२४:१४:१५
२४.०७.२०२६	बुध	१०	२५:३९:१८	२७:१८:२८	२९:१५:४२	७:३२:३३	९:४९:२३	१२:०३:३६	१४:१७:०८	१६:३३:३२	१८:४९:३३	२२:३८:३९	२४:१०:१०	२४:१०:१०
२५.०७.२०२६	गुरू	११	२५:३५:१५	२७:१४:२५	२९:११:३९	७:२८:३०	९:४५:१९	११:५९:३३	१४:१३:०५	१६:२९:२८	१८:४५:३०	२२:३४:३६	२४:०६:०७	२४:०६:०७
२६.०७.२०२६	शुक्र	१२	२५:३१:१३	२७:१०:२२	२९:०७:३६	७:२४:२८	९:४१:१७	११:५५:३०	१४:०९:०३	१६:२५:२६	१८:४१:२७	२२:३०:३३	२४:०२:०५	२४:०२:०५
२७.०७.२०२६	शनि	१३	२५:२७:११	२७:०६:२०	२९:०३:३५	७:२०:२६	९:३७:१५	११:५१:२८	१४:०५:०१	१६:२१:२४	१८:३७:२६	२२:२६:३२	२३:५८:०३	२३:५८:०३
२८.०७.२०२६	रवि	१४	२५:२३:१०	२७:०२:२०	२८:५९:३४	७:१६:२५	९:३३:१४	११:४७:२८	१४:०१:००	१६:१७:२३	१८:३३:२५	२२:२२:३१	२३:५४:०२	२३:५४:०२
२९.०७.२०२६	सोम	१५	२५:१९:१०	२६:५८:१९	२८:५५:३३	७:१२:२५	९:२९:१४	११:४३:२७	१३:५७:००	१६:१३:२३	१८:२९:२५	२२:१८:३१	२३:५०:०२	२३:५०:०२

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (शुद्ध मास) संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख १६ जून से २९ जून २०२६ ई.तक

ग्रीष्म–वर्षा ऋतुः रवि उत्तरा.–दक्षिणायणे, उत्तर गोले

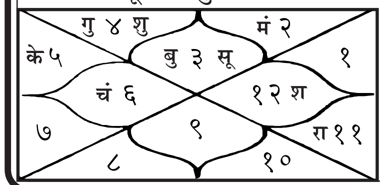
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल		दिनांक जून	
													राशि	घं.मि.		
सोम	१	२८:३१	५६:३७	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0	०	०	**तिथि क्षय,** त्रिपुष्कर योग १६।१२ से २४।५३
मंगल	२	२४:५३	४७:३०	आर्द्रा	१६:१२	वृद्धि	२४:३४	बालव	१४:४०	१३:३३	०५:५३	१९:२५	मिथुन		१६	**चंद्र दर्शन,** चर ०५।५३ से १६।१२ तक, यमघण्ट योग समाप्त १६।१२, कृतिकायां भौमः ०७।३२
बुध	३	२१:३९	३९:२६	पुनर्वसु	१३:३७	ध्रुव	२०:५१	तैतिल	११:१२	१३:३३	०५:५३	१९:२६	कर्क	०८:१३	१७	**रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयंती,** रवियोग प्रा. १३।३७, यमदंष्ट्रा ०५।५३ से १३।३७ तक **A**
गुरू	४	१८:५९	३२:४५	पुष्य	११:३२	व्याघात	१७:३५	वणिज	०८:१४	१३:३३	०५:५३	१९:२६	कर्क		१८	**विनायक चतुर्थी,** गुरु पुष्यामृत सिद्धि योग ११।३२ तक, स्थिर योग ११।३२ से १९।०० **B**
शुक्र	५	१७:००	२७:४८	आश्लेषा	१०:०७	हर्षण	१४:५३	बव	०५:५४	१३:३३	०५:५३	१९:२६	सिंह	१०:०७	१९	रवियोग एवं कुमार योग प्रारंभ १०।०७ से, मृत्यु ०५।५३ से १०।०७ तक
शनि	६	१५:४७	२४:४४	मघा	०९:२६	वज्र	१२:४८	तैतिल	१५:४७	१३:३३	०५:५३	१९:२६	सिंह		२०	**अरण्य षष्ठी,** रवियोग समाप्त ०९।२६ से, मंगल वृषभ में २४।०१
रवि	७	१५:२१	२३:३९	पूर्वाफा	०९:३१	सिद्धि	११:२१	वणिज	१५:२१	१३:३३	०५:५४	१९:२७	कन्या	१५:४०	२१	**भानु सप्तमी,** राजयोग समाप्त ९।३१, भद्रा १५।२१ से २७।२५ तक **C**
सोम	८	१५:४०	२४:२६	उत्तराफा	१०:२२	व्यतिपात	१०:३१	बव	१५:४०	१३:३३	०५:५४	१९:२७	कन्या		२२	**दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती,** अयन परिदिन, रवियोग १०।२२ से १२।२७, सूर्य आर्द्रा पर १२।२६ **D**
मंगल	९	१६:४०	२६:५५	हस्त	११:५४	वरीयान	१०:१३	कौलव	१६:४०	१३:३३	०५:५४	१९:२७	तुला	२४:५३	२३	**महेश नवमी,** रवियोग प्रा. ११।५४
बुध	१०	१८:१३	३०:४६	चित्रा	१३:५९	परिघ	१०:२३	गर	१८:१३	१३:३३	०५:५४	१९:२७	तुला		२४	**श्री बटुक भैरव जयंती, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिन,** रवियोग अहोरात्र, **गंगा दशमी**
गुरू	११	२०:१०	३५:३८	स्वाति	१६:२९	शिव	१०:५३	वणिज	०७:०९	१३:३३	०५:५५	१९:२७	तुला		२५	**निर्जला एकादशी, भीम एकादशी, श्री गायत्री जयंती, रूक्मिणी विवाह E**
शुक्र	१२	२२:२३	४१:१०	विशाखा	१९:१६	सिद्ध	११:३८	बव	०९:१५	१३:३३	०५:५५	१९:२८	वृश्चिक	१२:३३	२६	बिछूड़ा प्रा. १२।३३, राजयोग १९।१६ से २२।२३, वैधृति महापात ०६।२१ से १३।४७ **F**
शनि	१३	२४:४४	४७:०२	अनुराधा	२२:११	साध्य	१२:३२	कौलव	११:३३	१३:३२	०५:५५	१९:२८	वृश्चिक		२७	**प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रत,** बिछूड़ा रवियोग प्रारंभ २२।११, स्थिर योग प्रारंभ २२।११ से
रवि	१४	२७:०७	५२:५९	ज्येष्ठा	२५:०९	शुभ	१३:२९	गर	१३:५६	१३:३२	०५:५६	१९:२८	धनु	२५:०९	२८	**ज्येष्ठाभिषेक,** बिछूड़ा समाप्त २५।०९, रवियोग समाप्त २५।०९, भद्रा २७।०७ से **G**
सोम	१५	२९:२७	५८:४७	मूल	२८:०४	शुक्ल	१४:२६	विष्टि	१६:१८	१३:३२	०५:५६	१९:२८	धनु		२९	**पूर्णिमा व्रत** (चंद्रोदय १९।०३), वटसावित्री व्रत पूर्ण (दक्षिण भारत), श्री कबीर जयंती, मन्वादि **H**

A राजयोग १३।३७ से २१।३९, दग्ध योग समाप्त २१।३९, व्यतिपात महापात १०।४८ से १७।०९ **B** भद्रा ०८।१४ से १८।५९ तक सर्वा. ०५।५३ से ११।३२ तक अमृत सिद्धि ०५।५३ से ११।३२ तक **C** सर्वा. ०९।३१ से २९।५४ तक सायं सूर्य कर्क पर १३।५४ रवि दक्षियायणे वर्षा ऋतु प्रा. **D** बुध कर्क में १५।५३, संग चं.सू. स्त्री स्त्री वाहन खर वर्षा मध्यम **राष्ट्रीय आषाढ मास प्रा. E** भद्रा ०७।०९ से २०।१० तक, रवियोग समाप्त १६।२९ **F** सर्वा. १९।१६ से २९।५५ तक **G** सर्वा. २५।०९ से २९।५६ तक काण ०५।५६ से २५।०९ तक **H** भद्रा १६।१८ तक यमदंष्ट्रा ०५।५६ से २८।०४ तक, बुध वक्री

✻ द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ८ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	५	१	२	३	३	११	१०	४
अं.	०६	०७	००	२९	०४	१५	१९	०८	०८
क.	२३	२४	५३	४६	०१	४०	३०	५०	५०
वि.	२७	५१	१२	०१	४३	३९	३१	०३	०३
गति	५७ १५	७५६ १८	४३ १२	३२ १९	१२ ३२	६१ ०६	०३ २१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मृगशिरा ४	उफा. ४	कृत्तिका २	पुनर्वसु ३	पुष्य १	पुष्य ४	स्वाति १	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ श्री गंगा दशहरा ✻

तिथि नक्षत्रादि १० योगों से गंगा दशहरा दिन निर्णय किया है और इन योगों का पूर्वान्ह में होना प्रशस्त माना है ज्येष्ठ शुक्ल दशमी पूर्वान्ह व्यापिनी में यह पर्व मनाया जाता है। ज्ये शुक्ल दशम्यां गंगावतारः इयं दशहरा संज्ञिका अत्र दश योग उक्ताः। ज्ये मासि सिते पक्षे दशम्यां बुध हस्तयोः व्यतिपाते गरानदे कन्या चंद्र वृषे रवौ ॥ गराख्यं करणं बुधवार हस्तयोगे आनंदाख्योयोगः अत्र दशमी व्यती पातयोः मुख्यत्वम् ।तेन यस्मिनिन्दने कतिपय योगवती दशमी पूर्वान्ह लभ्यते तत्र दशहरा व्रतं कार्यम् ॥ दिन द्वये पूवन्हे सत्वे यत्र बहूनां योगः सा ग्राह्या।

१. ज्ये, २. शुक्ल पक्ष, ३. दशमी, ४. बुधवार, ५. हस्त नक्षत्र (विशेष–बुधवार में हस्त नक्षत्र होने पर आनंद नामक योग बनता है)
६. व्यतिपात योग, ७. गरकरण, ८. आनंद योग, ९. कन्या के चन्द्रमा, १०. वृष के सूर्य इसमें भी दशमी व व्यतिपात मुख्य है।

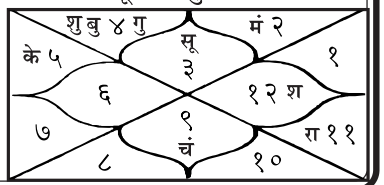
✻ पक्ष फल ✻

जेठ की अमावस्या को दिन रात आकाश निर्मल रहे। बादल आदि न हो तो आगे वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है। जेठ कृष्ण पक्ष की पंचमी को दक्षिणी पवन चले तो आश्विन में अवसर पाकर (मन्दी में) तिल, तेल, घी खरीदना चाहिए। जेठ सुदी पंचमी को बादल हों और दक्षिण की वायु चले तो अनाज का संग्रह करने से आश्विन में लाभ होगा। जेठ सुदी में आर्द्रा से चित्रा नक्षत्र तक अर्थात् आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूफा. उफा.हस्त चित्रा इन नक्षत्रों में बादल हो तो अकाल का चिन्ह समझना चाहिए। न हो तो आगे उत्तम वर्षा होने सुभिक्ष होगा।

✻ द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	८	१	३	३	३	११	१०	४
अं.	१३	०२	०५	०२	०५	२३	१९	०८	०८
क.	०४	०९	५४	००	३०	४९	५२	२७	२७
वि.	०१	०७	१७	२६	१८	३०	०६	४८	४८
गति	५७ १२	७१३ ३६	४२ ४६	०१ ०४	१२ ४८	६८ १३	०२ ४३	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	आर्द्रा २	मूल १	कृत्तिका ३	पुनर्वसु ४	पुष्य १	आश्लेषा ३	स्वाति १	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



आषाढ़ कृष्ण पक्ष दि. ३० जून से १४ जुलाई २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
३०.०६.२०२६	०२:१४:०१:१२	५७।१२	०८:१४:०२:४२	७१६।३४	०१:०६:३७:०३	४२।४२	०३:०२:०१:३१	-३।३२	०३:०५:४३:०६	१२।५०	०३:२४:४९:४३	६८।०६	११:१९:५४:४९	०२।३७	१०:०८:२४:३७
०१.०७.२०२६	०२:१४:५८:२४	५७।११	०८:२५:५९:१६	७२१।११	०१:०७:१९:४४	४२।३८	०३:०१:५७:५९	-०८।०५	०३:०५:५५:५६	१२।५२	०३:२५:५७:४९	६७।५८	११:१९५७२६	०२।३२	१०:०८:२१:२७
०२.०७.२०२६	०२:१५:५५:३५	५७।११	०९:०८:००:२७	७२७।४३	०१:०८:०२२२	४२।३४	०३:०१:४९:५३	-१२।३२	०३:०६:०८:४७	१२।५४	०३:२७:०५:४७	६७।५०	११:१९५९५८	०२।२६	१०:०८:१८:१६
०३.०७.२०२६	०२:१६:५२:४७	५७।१२	०९:२०:०८:१०	७३६।३५	०१:०८:४४:५७	४२।३०	०३:०१:३७:२१	-१६।५०	०३:०६:२१:४१	१२।५५	०३:२८:१३:३७	६७।४२	११:२००२२४	०२।२०	१०:०८:१५:०५
०४.०७.२०२६	०२:१७:४९:५८	५७।१२	१०:०२:२४:४५	७४८।१७	०१:०९:२७:२७	४२।२७	०३:०१:२०:३१	-२०।५५	०३:०६:३४:३६	१२।५७	०३:२९:२१:१९	६७।३४	११:२००४४४	०२।१५	१०:०८:११:५४
०५.०७.२०२६	०२:१८:४७:१०	५७।१२	१०:१४::५३:०२	७६३।१३	०१:१०:०९:५४	४२।२३	०३:००:५९:३६	-२४।४५	०३:०६:४७:३४	१२।५९	०४:००:२८:५४	६७।२६	११:२००६५९	०२।०९	१०:०८:०८:४३
०६.०७.२०२६	०२:१९:४४:२२	५७।१२	१०:२७:३६:१५	७८१।३४	०१:१०:५२:१७	४२।१९	०३:००:३४:५१	-२८।१३	०३:०७:००:३२	१३।००	०४:०१:३६:२०	६७।१८	११:२००९०८	०२।०३	१०:०८:०५:०३
०७.०७.२०२६	०२:२०:४१:३४	५७।१३	११:१०:३७:४९	८०३।०७	०१:११:३४:३६	४२।१५	०३:००:०६:३८	-३१।१८	०३:०७:१३:३३	१३।०२	०४:०२:४३:३८	६७।०९	११:२०११११	०१।५७	१०:०८:०२:२२
०८.०७.२०२६	०२:२१:३८:४७	५७।१३	११:२४:००:५५	८२७।००	०१:१२:१६:५१	४२।११	०२:२९:३५:१९	-३३।५६	०३:०७:२६:३५	१३।०३	०४:०३:५०:४७	६७।०१	११:२०१३०८	०१।५१	१०:०७:५९:११
०९.०७.२०२६	०२:२२:३५:५९	५७।१३	००:०७:४७:५६	८५१।४०	०१:१२:५९:०२	४२।०८	०२:२९:०१:२४	-३६।०२	०३:०७:३९:३८	१३।०५	०४:०४:५७:४८	६६।५२	११:२०१५००	०१।४५	१०:०७:५६:००
१०.०७.२०२६	०२:२३:३३:१३	५७।१४	००:२१:५९:३६	८७४।४५	०१:१३:४१:१०	४२।०४	०२:२८:२५:२२	-३७।३३	०३:०७:५२:४३	१३।०६	०४:०६:०४:४०	६६।४३	११:२०१६४५	०१।४०	१०:०७:५२:५०
११.०७.२०२६	०२:२४:३०:२७	५७।१४	०१:०६:३४:२१	८९३।२३	०१:१४:२३:१४	४२।००	०२:२७:४७:४९	-३८।२८	०३:०८:०५:४९	१३।०७	०४:०७:११:२४	६६।३४	११:२०१८२५	०१।३४	१०:०७:४९:३९
१२.०७.२०२६	०२:२५:२७:४१	५७।१५	०१:२१:२७:४४	९०४।४६	०१:१५:०५:१३	४१।५६	०२:२७:०९:२१	-३८।४३	०३:०८:१८:५७	१३।०९	०४:०८:१७:५८	६६।२५	११:२०१९५८	०१।२७	१०:०७:४६:२८
१३.०७.२०२६	०२:२६:२४:५५	५७।१५	०२:०६:३२:३१	९०६।५६	०१:१५:४७:०९	४१।५१	०२:२६:३०:३८	-३८।११	०३:०८:३२:०५	१३।१०	०४:०९:२४:२३	६६।१५	११:२०२१२६	०१।२१	१०:०७:४३:१७
१४.०७.२०२६	०२:२७:२२:१०	५७।१५	०२:२१:३९:२७	८९९।११	०१:१६:२९:००	४१।४७	०२:२५:५२:१९	-३७।१४	०३:०८:४५:१५	१३।११	०४:१०:३०:३८	६६।०६	११:२०२२४७	०१।१५	१०:०७:४०:०७

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
३०.०६.२०२६	मंगल	१	२५:१५:११	२६:५४:२०	२८:५१:३४	७:०८:२६	९:२५:१५	११:३९:२८	१३:५३:००	१६:०९:२४	१८:२५:२५	२०:२९:१४	२२:१४:३१	२३:४६:०२
०१.०७.२०२६	बुध	१	२५:११:१२	२६:५०:२१	२८:४७:३५	७:०४:२७	९:२१:१६	११:३५:२९	१३:४९:०२	१६:०५:२५	१८:२१:२६	२०:२५:१६	२२:१०:३२	२३:४२:०४
०२.०७.२०२६	गुरू	२	२५:०७:१४	२६:४६:२३	२८:४३:३७	७:००:२९	९:१७:१८	११:३१:३१	१३:४५:०४	१६:०१:२७	१८:१७:२८	२०:२१:१७	२२:०६:३४	२३:३८:०६
०३.०७.२०२६	शुक्र	३	२५:०३:१६	२६:४२:२६	२८:३९:४०	६:५६:३१	९:१३:२०	११:२७:३४	१३:४१:०६	१५:५७:२९	१८:१३:३१	२०:१७:२०	२२:०२:३७	२३:३४:०८
०४.०७.२०२६	शनि	४	२४:५९:१९	२६:३८:२९	२८:३५:४३	६:५२:३४	९:०९:२३	११:२३:३७	१३:३७:०९	१५:५३:३३	१८:०९:३४	२०:१३:२३	२१:५८:४०	२३:३०:११
०५.०७.२०२६	रवि	५	२४:५५:२३	२६:३४:३२	२८:३१:४६	६:४८:३८	९:०५:२७	११:१९:४०	१३:३३:१३	१५:४९:३६	१८:०५:३८	२०:०९:२७	२१:५४:४४	२३:२६:१५
०६.०७.२०२६	सोम	६	२४:५१:२७	२६:३०:३७	२८:२७:५१	६:४४:४२	९:०१:३१	११:१५:४४	१३:२९:१७	१५:४५:४०	१८:०१:४२	२०:०५:३१	२१:५०:४८	२३:२२:१९
०७.०७.२०२६	मंगल	७	२४:४७:३२	२६:२६:४१	२८:२३:५५	६:४०:४७	८:५७:३६	११:११:४९	१३:२५:२२	१५:४१:४५	१७:५७:४६	२०:०१:३६	२१:४६:५२	२३:१८:२४
०८.०७.२०२६	बुध	८	२४:४३:३७	२६:२२:४६	२८:२०:००	६:३६:५२	८:५३:४१	११:०७:५४	१३:२१:२७	१५:३७:५०	१७:५३:५२	१९:५७:४१	२१:४२:५८	२३:१४:२९
०९.०७.२०२६	गुरू	९	२४:३९:४२	२६:१८:५२	२८:१६:०६	६:३२:५८	८:४९:४७	११:०४:००	१३:१७:३२	१५:३३:५६	१७:४९:५७	१९:५३:४६	२१:३९:०३	२३:१०:३४
१०.०७.२०२६	शुक्र	१०/११	२४:३५:४८	२६:१४:५८	२८:१२:१२	६:२९:०३	८:४५:५३	११:००:०६	१३:१३:३८	१५:३०:०२	१७:४६:०३	१९:४९:५२	२१:३५:०९	२३:०६:४०
११.०७.२०२६	शनि	१२	२४:३१:५५	२६:११:०४	२८:०८:१८	६:२५:१०	८:४१:५९	१०:५६:१२	१३:०९:४५	१५:२६:०८	१७:४२:०९	१९:४५:५९	२१:३१:१५	२३:०२:४७
१२.०७.२०२६	रवि	१३	२४:२८:०१	२६:०७:११	२८:०४:२५	६:२१:१७	८:३८:०६	१०:५२:१९	१३:०५:५१	१५:२२:१५	१७:३८:१६	१९:४२:०५	२१:२७:२२	२२:५८:५३
१३.०७.२०२६	सोम	१४	२४:२४:०८	२६:०३:१८	२८:००:३२	६:१७:२४	८:३४:१३	१०:४८:२६	१३:०१:५८	१५:१८:२२	१७:३४:२३	१९:३८:१२	२१:२३:२९	२२:५५:००
१४.०७.२०२६	मंगल	३०	२४:२०:१६	२५:५९:२५	२७:५६:३९	६:१३:३१	८:३०:२०	१०:४४:३३	१२:५८:०६	१५:१४:२९	१७:३०:३०	१९:३४:२०	२१:१९:३६	२२:५१:०८

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ आषाढ़ कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख ३० जून से १४ जुलाई २०२६ ई.तक

वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	घं.मि.	दिनांक जून-जुलाई	
मंगल	१	-	६०:००	पूर्वाषा	-	ब्रह्म	१५:१९	बालव	१८:३४	१३:३२	०५:५६	१९:२८	धनु		३०	वृद्धि तिथि, वटसावित्री व्रत पारणा
बुध	१	०७:३९	०४:१६	पूर्वाषा	०६:५१	ऐन्द्र	१६:०४	कौलव	०७:३९	१३:३१	०५:५६	१९:२८	मकर	१३:३२	१	**गुरू हरगोविन्दसिंह जयंती,** यमदंष्ट्रा ०५।५६ से ०६।५१ तक, शनि रेवत्यां २ पर २७।४१
गुरू	२	०९:३८	०९:१४	उत्तराषा	०९:२७	वैधृति	१६:३९	गर	०९:३८	१३:३१	०५:५७	१९:२८	मकर		२	बुध अस्त पश्चिम में, भद्रा २२।३२ से यमदंष्ट्रा ०५।५७ से ०९।२७ तक
शुक्र	३	११:२१	१३:२९	श्रवण	११:४७	विष्कुंभ	१६:५९	विष्टि	११:२१	१३:३१	०५:५७	१९:२८	कुम्भ	२४:४८	३	संकष्टी चतुर्थी, चंद्रोदय २२।००, भद्रा ११।२१ तक सर्वा.०५।५७ से ११।४७ तक पंचक प्रारंभ २४।४८
शनि	४	१२:४०	१६:४७	धनिष्ठा	१३:४४	प्रीति	१७:०१	बालव	१२:४०	१३:३०	०५:५८	१९:२८	कुम्भ		४	पंचक जारी, शुक्र सिंह में १९।१५, बुध अस्त प. १४।५३ मंगल रोहिण्यां २३।५४
रवि	५	१३:३१	१८:५३	शतभिषा	१५:१३	आयुष्मान	१६:४०	तैतिल	१३:३१	१३:३०	०५:५८	१९:२८	कुम्भ		५	पंचक जारी, रवियोग प्रारंभ १५।१३
सोम	६	१३:४८	१९:३३	पूर्वाभा	१६:०८	सौभाग्य	१५:५१	वणिज	१३:४८	१३:३०	०५:५८	१९:२८	मीन	०९:५७	६	पंचक जारी, भद्रा १३।४८ से २५।४२ तक मूसल ०५।५८ से १६।०८ तक **A**
मंगल	७	१३:२५	१८:३७	उत्तराभा	१६:२४	शोभन	१४:३१	बव	१३:२५	१३:२९	०५:५९	१९:२८	मीन		७	**कालाष्टमी,** पंचक जारी, बुध वक्री मिथुन में १०।३७, रवियोग समाप्त १६।२४, **B**
बुध	८	१२:२२	१५:५८	रेवती	१६:००	अतिगण्ड	१२:३८	कौलव	१२:२२	१३:२९	०५:५९	१९:२८	मेष	१६:००	८	**बुधाष्टमी** उत्पात ०५।५९ से १६।०० तक पंचक समाप्त १६।००, मृत्यु योग प्रा. १६।००
गुरू	९	१०:३८	११:३७	अश्विनी	१४:५६	सुकर्मा	१०:१२	गर	१०:३८	१३:२८	०६:००	१९:२८	मेष		९	भद्रा २१।३२ से सर्वा.०६।०० से १४।५६ तक यमदंष्ट्रा ०६।०० से १४।५६ तक
शुक्र	१०	०८:१७	०५:४२	भरणी	१३:१५	धृति/शूल	०७:१५ २७:५०	विष्टि	०८:१७	१३:२८	०६:००	१९:२७	वृषभ	१८:४५	१०	क्षय तिथि, **योगिनी एकादशी स्मार्त्त,** व्यतिपात महापात ०६।५० से १२।३४ भद्रा ०८।१७ तक
शनि	११	२९:२३	५८:२८	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
शनि	१२	२६:०५	५०:११	कृतिका	११:०४	गण्ड	२४:०५	कौलव	१५:४७	१३:२७	०६:००	१९:२७	वृषभ		११	**योगिनी एकादशी वैष्णव** सर्वा. ११।०४ से ३०।०१ तक अमृत सिद्धि ११।०४ से ३०।०१ तक
रवि	१३	२२:३०	४१:१४	रोहिणी/मृगशिरा	०८:२९ २९:४२	वृद्धि	२०:०६	गर	१२:१९	१३:२६	०६:०१	१९:२७	मिथुन	१९:०६	१२	**प्रदोष व्रत** मास शिवरात्रि, भद्रा २२।३० से
सोम	१४	१८:५०	३२:०२	आर्द्रा	२६:५२	ध्रुव	१६:००	विष्टि	०८:४०	१३:२६	०६:०१	१९:२७	मिथुन		१३	भद्रा.०८।४० तक, गुरु वृद्धत्व प्रा. २५।२७
मंगल	३०	१५:१४	२३:००	पुनर्वसु	२४:१०	व्याघात	११:५७	नाग	१५:१४	१३:२५	०६:०२	१९:२७	कर्क	१८:४९	१४	दर्श अमावस्या, कुमार योग १५।१४ से २४।१०

✻ आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८ बुधवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	११	१	२	३	४	११	१०	४
अं.	२१	२४	१२	२९	०७	०३	२०	०७	०७
क.	३८	००	१६	३५	२६	५०	१३	५९	५९
वि.	४७	५५	५१	१९	३५	४७	०८	११	११
गति	५७ १३	८२७ ००	४२ ११	३३ ५६	१३ ०३	६७ ०१	०१ ५१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	रेवती १	रेवती ३	रोहिणी १	पुनर्वसु ३	पु ष्य	मघा २	रेवती २	शतभिषा १	मघा ३

A सूर्य पुनर्वसु पर १२।०३ संग चं.सू.स्त्री.पु.वाहन अश्व वर्षा मध्यम, रवि योग समाप्त १२।०४ एवं रवि योग प्रा. १६।०६, कुमार योग समाप्त १३।४८
B राजयोग समाप्त १३।२५, सर्वा. ०५।५९ से १६।२४ तक सिद्धि ०५।५९ से १६।२४ तक

नष्टवस्तुप्रश्नविचारः (ज्यो.प्र.) अन्धाक्षं मन्दाक्षं काणाक्षं दिव्यलोचम्। गणयेद् रोहिणी पूर्व सप्तवारमनुक्रमात्।।
अन्धे च लभते शीघ्र मन्दे चैव दिनत्रयम्। काणाक्षे मासयेकं तु सुनेत्र लभ्यते।।

जिस दिन कोई भी वस्तु खो गई हो अथवा चोरी हो गई उस दिन का नक्षत्र नीचे के चक्र में देखते हुए अँध में जाय तो जल्दी हाथ आयेगी। मन्द में जाय तो तीन दिनों के अन्दर मिल जायेगी। काण में जाय तो एक महीने में मिलेगी। यदि सुलोचन में जाय तो कभी भी वह वस्तु नहीं मिलेगी।

अन्ध	रो.	पु.	उ.	वि.	पु.	ध.	रे.
मन्द	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.
काण	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.
सुलोचना	पू.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.

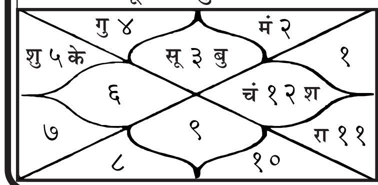
अन्धके पू र्वतो वस्तु मन्दके दक्षिणे तथा पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने।।

अन्ध नक्षत्र में गई हुई वस्तु पूर्व दिशा में जानना। मन्द नक्षत्र में दक्षिण दिशा में, काण नक्षत्र में पश्चिम दिशा में, सुलोचन नक्षत्र में गई हुई उत्तर दिशा में गई ऐसा जानना चाहिए।

✻ आषाढ़ कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार ✻

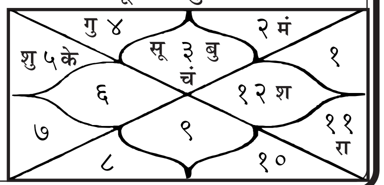
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	२	१	२	३	४	११	१०	४
अं.	२७	२१	१६	२५	०८	१०	२०	०७	०७
क.	२२	३९	२९	५२	४५	३०	२२	४०	४०
वि.	१०	२७	००	१९	१५	३८	४७	०७	०७
गति	५७ १५	८११ १९	४९ ४७	३७ १४	१३ ११	६६ ०६	०१ १५	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पुनर्वसु ३	पुनर्वसु १	रोहिणी २	पुनर्वसु २	पु ष्य	मघा ४	रेवती २	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ पक्ष फल ✻ आषाढ बदी एकम को बादल गरजे वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा न होने से अनाज में तेजी आती है। आषाढ बदी 4 को यदि तुषार (ओला बर्फ आदि) पडे तो उत्तम वर्ष होती है और सभी लोग सुखी होते हैं। आषाढ बदी पंचमी को आकाश निर्मल रहे, बादल बिजली का निशान ना हो तो आगे खेती नष्ट हो जाती है। आषाढ बदी अष्टमी बादलों में चांद छुपा रहे तो वर्षाकाल में बहुत उत्तम वर्षा होती है आषाढ सुदी 4 को बादल बिजली अथवा वर्षा हो या बादल गरजे तो उत्तम वर्षा होने से अन्न की उपज अच्छी होगी। आषाढ सुदी पांचे को पश्चिम में इन्दधनुष हो और पश्चिम की वायु चले तो खूब वर्षा हो। आषाढ सुदी आठै को निर्मल आकाश रहे और चन्द्रमा दिखता रहे तो आगे वर्षा की कमी समझनी चाहिए। आषाढ सुदी 9 और पूर्णमासी की रात निर्मल हो तथा चन्द्रमा भी निर्मल हो तो निश्चय ही दुर्भिक्ष होता है गरीब आदमी अन्न के अभाव से दुखित होते हैं।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



आषाढ़ शुक्ल पक्ष दि. १५ जुलाई से २९ जुलाई २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१५.०७.२०२६	०२:२८:१९:२५	५७।१५	०३:०६:३८:४६	८८।५९	०१:१७:१०:४७	४१।४३	०२:२५:१५:०५	-३५।३०	०३:०८:५८:२६	१३।१२	०४:११:३६:४४	६५।५५	११:२०:२४:०३	०१।०९	१०:०७:३६:५६
१६.०७.२०२६	०२:२९:१६:४१	५७।१६	०३:२१:२१:४४	८६।१५	०१:१७:५२:३०	४१।३९	०२:२४:३९:३४	-३३।०८	०३:०९:११:३७	१३।१२	०४:१२:४२:३९	६५।४५	११:२०:२५:१२	०१।०३	१०:०७:३३:४५
१७.०७.२०२६	०३:००:१३:५७	५७।१६	०४:०५:४१:५९	८३।०२	०१:१८:३४:०९	४१।३४	०२:२४:०६:२६	-३०।०९	०३:०९:२४:५०	१३।१३	०४:१३:४८:२४	६५।३४	११:२०:२६:१५	००।५७	१०:०७:३०:३४
१८.०७.२०२६	०३:०१:११:१२	५७।१६	०४:१९:३६:०१	८०।०९	०१:१९:१५:४३	४१।३०	०२:२३:३६:१७	-२६।३७	०३:०९:३८:०३	१३।१४	०४:१४:५३:५९	६५।२३	११:२०:२७:१२	००।५१	१०:०७:२७:२३
१९.०७.२०२६	०३:०२:०८:२९	५७।१६	०५:०३:०३:१०	७८।५१	०१:१९:५७:१४	४१।२६	०२:२३:०९:४०	-२२।३५	०३:०९:५१:१७	१३।१५	०४:१५:५९:२२	६५।१२	११:२०:२८:०३	००।४५	१०:०७:२४:१३
२०.०७.२०२६	०३:०३:०५:४५	५७।१६	०५:१६:०५:०२	७५।४२	०१:२०:३८:३९	४१।२२	०२:२२:४७:०५	-१८।०६	०३:१०:०४:३२	१३।१५	०४:१७:०४:३३	६५।००	११:२०:२८:४८	००।३९	१०:०७:२१:०२
२१.०७.२०२६	०३:०४:०३:०१	५७।१७	०५:२८:४४:४४	७४।३६	०१:२१:२०:०१	४१।१७	०२:२२:२८:५९	-१३।१४	०३:१०:१७:४७	१३।१६	०४:१८:०९:३३	६४।४७	११:२०:२९:२६	००।३२	१०:०७:१७:५१
२२.०७.२०२६	०३:०५:००:१८	५७।१७	०६:११:०६:२०	७२।५५	०१:२२:०१:१८	४१।१३	०२:२२:१५:४५	-८।०२	०३:१०:३१:०२	१३।१६	०४:१९:१४:२०	६४।३५	११:२०:२९:५९	००।२६	१०:०७:१४:४०
२३.०७.२०२६	०३:०५:५७:३५	५७।१७	०६:२३:१४:१५	७१।३८	०१:२२:४२:३१	४१।०९	०२:२२:०७:४४	-२।३४	०३:१०:४४:१८	१३।१६	०४:२०:१८:५५	६४।२२	११:२०:३०:२५	००।२०	१०:०७:११:३०
२४.०७.२०२६	०३:०६:५४:५२	५७।१८	०७:०५:१२:५३	७१।२६	०१:२३:२३:४०	४१।०४	०२:२२:०५:१०	०३।०७	०३:१०:५७:३५	१३।१७	०४:२१:२३:१७	६४।०९	११:२०:३०:४५	००।१४	१०:०७:०८:१९
२५.०७.२०२६	०३:०७:५२:१०	५७।१८	०७:१७:०६:१९	७१।५१	०१:२४:०४:४४	४१।००	०२:२२:०८:१६	०८।५७	०३:११:१०:५१	१३।१७	०४:२२:२७:२६	६३।५५	११:२०:३०:५९	००।०८	१०:०७:०५:०८
२६.०७.२०२६	०३:०८:४९:२८	५७।१९	०७:२८:५८:१०	७१।२१	०१:२४:४५:४४	४०।५६	०२:२२:१७:१३	१४।५४	०३:११:२४:०८	१३।१७	०४:२३:३१:२१	६३।४१	११:२०:३१:०७	००।०२	१०:०७:०१:५७
२७.०७.२०२६	०३:०९:४६:४६	५७।१९	०८:१०:५१:३२	७१।२५	०१:२५:२६:४०	४०।५१	०२:२२:३२:०७	२०।५६	०३:११:३७:२५	१३।१७	०४:२४:३५:०१	६३।२६	११:२०:३१:०९	-००।०४	१०:०६:५८:४६
२८.०७.२०२६	०३:१०:४४:०५	५७।२०	०८:२२:४८:५७	७२।३३	०१:२६:०७:३२	४०।४७	०२:२२:५३:०३	२७।००	०३:११:५०:४३	१३।१७	०४:२५:३८:२८	६३।१२	११:२०:३१:०५	-००।१०	१०:०६:५५:३६
२९.०७.२०२६	०३:११:४१:२५	५७।२०	०९:०४:५२:३०	७३।२४	०१:२६:४८:१९	४०।४३	०२:२३:२०:०२	३३।०४	०३:१२:०४:००	१३।१६	०४:२६:४१:४०	६२।५६	११:२०:३०:५४	-००।१७	१०:०६:५२:२५

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
१५.०७.२०२६	बुध	१	२४:१६:२३	२५:५५:३३	२७:५२:४७	६:०९:३८	८:२६:२८	१०:४०:४१	१२:५४:१३	१५:१०:३७	१७:२६:३८	१९:३०:२७	२१:१५:४४	२२:४७:१५
१६.०७.२०२६	गुरू	२	२४:१२:३१	२५:५१:४०	२७:४८:५५	६:०५:४६	८:२२:३५	१०:३६:४८	१२:५०:२१	१५:०६:४४	१७:२२:४६	१९:२६:३५	२१:११:५२	२२:४३:२३
१७.०७.२०२६	शुक्र	३	२४:०८:३९	२५:४७:४८	२७:४५:०३	२९:५७:५८	८:१८:४३	१०:३२:५६	१२:४६:२९	१५:०२:५२	१७:१८:५४	१९:२२:४३	२१:०८:००	२२:३९:३१
१८.०७.२०२६	शनि	४	२४:०४:४७	२५:४३:५७	२७:४१:११	२९:५४:०६	८:१४:५१	१०:२९:०५	१२:४२:३७	१४:५९:००	१७:१५:०२	१९:१८:५१	२१:०४:०८	२२:३५:३९
१९.०७.२०२६	रवि	५	२४:००:५५	२५:४०:०५	२७:३७:१९	२९:५०:१५	८:११:००	१०:२५:१३	१२:३८:४५	१४:५५:०९	१७:११:१०	१९:१४:५९	२१:००:१६	२२:३१:४७
२०.०७.२०२६	सोम	६	२३:५७:०४	२५:३६:१३	२७:३३:२७	२९:४६:२३	८:०७:०८	१०:२१:२१	१२:३४:५४	१४:५१:१७	१७:०७:१८	१९:११:०८	२०:५६:२४	२२:२७:५६
२१.०७.२०२६	मंगल	७	२३:५३:१२	२५:३२:२२	२७:२९:३६	२९:४२:३१	८:०३:१६	१०:१७:३०	१२:३१:०२	१४:४७:२६	१७:०३:२७	१९:०७:१६	२०:५२:२३	२२:२४:०४
२२.०७.२०२६	बुध	८	२३:४९:२१	२५:२८:३०	२७:२५:४४	२९:३८:४०	७:५९:२५	१०:१३:३८	१२:२७:११	१४:४३:३४	१६:५९:३५	१९:०३:२५	२०:४८:४१	२२:२०:१३
२३.०७.२०२६	गुरू	९	२३:४५:२९	२५:२४:३८	२७:२१:५२	२९:३४:४८	७:५५:३३	१०:०९:४६	१२:२३:१९	१४:३९:४२	१६:५५:४३	१८:५९:३३	२०:४४:४९	२२:१६:२१
२४.०७.२०२६	शुक्र	१०	२३:४१:३५	२५:२०:४४	२७:१७:५८	२९:३०:५४	७:५१:३९	१०:०५:५२	१२:१९:२५	१४:३५:४८	१६:५१:५०	१८:५५:३९	२०:४०:५५	२२:१२:२७
२५.०७.२०२६	शनि	११	२३:३७:४१	२५:१६:५०	२७:१४:०५	२९:२७:००	७:४७:४५	१०:०१:५८	१२:१५:३१	१४:३१:५४	१६:४७:५६	१८:५१:४५	२०:३७:०२	२२:०८:३३
२६.०७.२०२६	रवि	१२	२३:३३:४७	२५:१२:५७	२७:१०:११	२९:२३:०६	७:४३:५१	९:५८:०५	१२:११:३७	१४:२८:००	१६:४४:०२	१८:४७:५१	२०:३३:०८	२२:०४:३९
२७.०७.२०२६	सोम	१३	२३:२९:५३	२५:०९:०३	२७:०६:१७	२९:१९:१२	७:३९:५७	९:५४:११	१२:०७:४३	१४:२४:०६	१६:४०:०८	१८:४३:५७	२०:२९:१४	२२:००:४५
२८.०७.२०२६	मंगल	१४	२३:२५:५९	२५:०५:०९	२७:०२:२३	२९:१५:१८	७:३६:०३	९:५०:१७	१२:०३:४९	१४:२०:१२	१६:३६:१४	१८:४०:०३	२०:२५:२०	२१:५६:५१
२९.०७.२०२६	बुध	१५	२३:२२:०५	२५:०१:१४	२६:५८:२९	२९:११:२४	७:३२:०९	९:४६:२२	११:५९:५५	१४:१६:१८	१६:३२:२०	१८:३६:०९	२०:२१:२६	२१:५२:५७

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ आषाढ़ शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख १५ जुलाई से २९ जुलाई २०२६ ई.तक

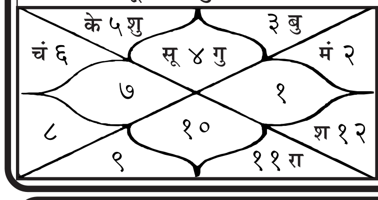
वर्षा ऋतु: रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक जुलाई	
बुध	१	११:५१	१४:३३	पुष्य	२१:४७	हर्षण/वज्र	०८:०४ २८:३०	बव	११:५१	१३:२४	०६:०२	१९:२६	कर्क		१५	**आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि प्रा.**, गुरु अस्त पश्चिम में १९।४८, राजयोग ११।५१ से २१।४७ चंद्रदर्शन मु.३०
गुरू	२	०८:५३	०७:०७	आश्लेषा	१९:५२	सिद्धि	२५२२	कौलव	०८:५३	१३:२४	०६:०३	१९:२६	सिंह	१९:५२	१६	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा**, आषाढ़ी बीज, सूर्य कर्क पर २३।३९ **बं.श्रावण मास प्रा.**, शुक्र पूफा.१९।०७
शुक्र	३	०६:२८	०१:०३	मघा	१८:३५	व्यतिपात	२२४६	गर	०६:२८	१३:२३	०६:०३	१९:२६	सिंह		१७	क्षय तिथि, **श्री विनायक चतुर्थी**, करिदिन, रवियोग समाप्त एवं सिद्धि योग प्रा.१८।३५ **A**
शनि	४	२८:४३	५६:४०	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
शनि	५	२७:४३	५४:०९	पूर्वाफा	१८:००	वरियान	२०४५	बव	१६:०७	१३:२२	०६:०३	१९:२६	कन्या	२३:५९	१८	**आषाढ़ी पंचमी, श्री द्वारिकाधीश पाटोत्सव कांकरोली**, श्रीवल्लभाचार्य वैकुण्ठ गमन, रवियोग प्रा.१८।००
रवि	६	२७:३०	५३:३६	उत्तराफा	१८:१२	परिध	१९२३	कौलव	१५:३१	१३:२१	०६:०४	१९:२५	कन्या		१९	**कुमार षष्ठी, स्कन्दषष्ठी**, सर्वा.०६।०४ से ३०।०४ तक अमृत सिद्धि १८।१२ से ३०।०४ तक, रवियोग समाप्त १८।१२
सोम	७	२८:०३	५४:५७	हस्त	१९:१०	शिव	१८३७	गर	१५:४१	१३:२१	०६:०४	१९:२५	कन्या		२०	**विवस्वत सप्तमी**, रवियोग ११।२९ से १९।१० भद्रा २८।०३ से सूर्य पुष्य पर ११।२८ **B**
मंगल	८	२९:१७	५८:०१	चित्रा	२०:४९	सिद्ध	१८२५	विष्टि	१६:३६	१३:२०	०६:०५	१९:२५	तुला	०७:५४	२१	मास दुर्गाष्टमी, अट्ठाई प्रा.(जैन), बुध उदय पूर्व में, भद्रा १६।३६ तक
बुध	९	-	६०:००	स्वाति	२३:०३	साध्य	१८४२	बालव	१८:०७	१३:१९	०६:०५	१९:२४	तुला		२२	वृद्धि तिथि, रवियोग प्रा.२३।०३, वैधृति महापात १६।१० से २१।५१ सायन सूर्य सिंह पर २४।४३
गुरू	९	०७:०४	०२:२५	विशाखा	२५:४३	शुभ	१९२०	कौलव	०७:०४	१३:१८	०६:०६	१९:२४	वृश्चिक	१९:०१	२३	**भड़ली नवमी, गुप्त नवरात्रि पूर्ण, राष्ट्रीय श्रावण मास प्रा.** श्री तिलक एवं **C**
शुक्र	१०	०९:१३	०७:४८	अनुराधा	२८:३६	शुक्ल	२०११	गर	०९:१३	१३:१७	०६:०६	१९:२३	वृश्चिक		२४	**माण्डवी दशमी, गिरिजा पूजा**, मन्वादि, बिछूड़ा, भद्रा २२।२३ से सर्वा.२८।३६ तक **D**
शनि	११	११:३५	१३:४०	ज्येष्ठा	-	ब्रह्म	२१०८	विष्टि	११:३५	१३:१६	०६:०७	१९:२३	वृश्चिक		२५	देवशयनी एकादशी, **चातुर्मास प्रा.विष्णु शयनोत्सव**, गौरी व्रत प्रा.,भद्रा ११।३५ तक, मूसल ०६।०७ से ३०।०७ तक
रवि	१२	१३:५८	१९:३८	ज्येष्ठा	०७:३५	ऐन्द्र	२२०५	बालव	१३:५८	१३:१५	०६:०७	१९:२२	धनु	०७:३५	२६	**प्रदोष व्रत**, बिछूड़ा समाप्त ०७।३५, दग्ध योग समाप्त १३।५८, शनि वक्री २४।२७ **E**
सोम	१३	१६:१५	२५:१९	मूल	१०:२९	वैधृति	२२५४	तैतिल	१६:१५	१३:१४	०६:०८	१९:२२	धनु		२७	**जया पार्वती व्रत प्रारंभ**, यमदंष्ट्रा ०६।०८ से १०।२९ तक, रवियोग १०।२९ से
मंगल	१४	१८:१९	३०:२८	पूर्वाषा	१३:११	विष्कुंभ	२३३३	वणिज	१८:१९	१३:१३	०६:०८	१९:२१	मकर	१९:४९	२८	चौमासी चतुर्दशी (जैन), रवियोग समाप्त १३।११, वज्र मूसल योग प्रा.१३।११, भद्रा.१८।१९ से, राजयोग १८।१९ से
बुध	१५	२०:०६	३४:५३	उत्तराषा	१५:३७	प्रीति	२३५७	विष्टि	०७:१५	१३:१२	०६:०९	१९:२१	मकर		२९	**श्री गुरुपूर्णिमा व्यास पूजा, पूर्णिमा व्रत**, चन्द्रोदय १९।१९, शिव शयनोत्सव, वायु परीक्षा **F**

✻ आषाढ़ शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	५	१	२	३	४	११	१०	४
अं.	०४	२८	२१	२२	१०	१८	२०	०७	०७
क.	०३	४४	२०	२८	१७	०९	२९	१७	१७
वि.	०१	४४	०१	५९	४७	३३	२६	५१	५१
गति	५७ १७	७४१ ३६	४१ १७	१३ १४	१३ १६	६४ ४७	०० ३२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पुष्य १	चित्रा २	रोहिणी ४	पुनर्वसु १	पुष्य ३	पूर्वाफा २	स्वाति २	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A भद्रा १७।३० से २८।४३ तक काण ०६।०३ से १८।३५ तक **B** वज्र मूसल योग प्रा.१९।१० संग चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहन मूषक (मृग) वर्षा मध्यम **C** चन्द्रशेखर आजाद जन्म, रवियोग अहोरात्र, सर्वा.२५।४३ से, बिछूड़ा प्रा.१९।०१, बुध मार्गी **D** यमदंष्ट्रा ०६।०६ से २८।३६ तक, रवियोग समाप्त २८।३६,वज्र मूसल योग प्रा.२८।३६ब **E** सर्वा.०७।३५ से ३०।०८ तक काण ०६।०७ से ०७।३५ तक **F** कोकिला व्रत, गौरी व्रत जागरण, भद्रा ०७।१५ तक, कुमार योग प्रा.२०।०६, अमरनाथ यात्रा प्रा., राजयोग १५।३७ तक

✻ **श्री रथयात्रा** – आषाढ शुक्ल द्वितीया पुष्य नक्षत्र युता में या केवल द्वितीया में भी विशेष वैष्णव निर्णय में। **आषाढ शुक्ल द्वितीयायां पुष्यार्थ युतायां केवलायाम् वा।** ✻ **स्कन्द षष्ठी** – आषाढ़ शुक्ल षी शुद्धा के अभाव में पूर्वविद्धा में। **सूर्य सप्तमी** – आषाढ शुक्ल सप्तमी में शुद्धा के अभाव में पूर्वविद्धा में। **श्री हरि शयन** – आषाढ शुक्ल एकादशी व्रत वाले दिन सूर्यास्त बाद समय में। **आषाढ़ शुक्लेकाश्यां विष्णु शयनोत्सवः।** यहाँ स्मार्त्त–वैष्णव अपने व्रत वाले दिन करते हैं किसी मत में द्वादशी को पारण वाले दिन ही शयनोत्सव होता है। ✻ **एकादशी व्रत पारणा** – आषाढ शुक्ल द्वादशी को प्रायः अनुराधा नक्षत्र होता है इस एकादशी देवशयनी के पारणा में अनुराधा नक्षत्र में नहीं होना चाहिये, इसमें पारणा का निषेध है। यदि द्वादशी वाले दिन अनुराधा नक्षत्र का भोगकाल पारणाकाल पूर्वान्ह से अधिक हो तो अनुराधा मान अधिक हो तो द्वादशी में ही पारणा करें। नक्षत्र निषेध का अनादर है वह कौस्तुभकार का मत धर्मसिन्धु में हैं। उक्त विषय पर पुरुषार्थ चिन्तामणिकार का मत धर्मसिन्धु में ही इस प्रकार है कि मंगलकाल को बचाकर प्रातः मध्यान्ह के भाग में ही पारणा करें ✻ **कोकिला व्रत** – आषाढ़ी पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी में दो दिन पूर्णिमा का व्याप्ति अव्याप्ति यहां में द्वितीय दिन अस्यामेव कोकिलव्रतम्।

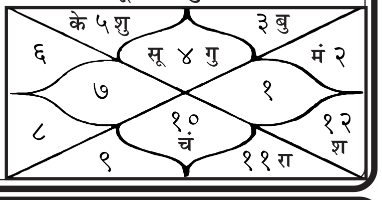
✻ कर्क संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक १६.७.२०२६ आषाढ शुक्ल पक्ष 2 गुरूवार को रात्रि ११.३९ बजे कर्क संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका गुरूवार को ही मध्यान्ह काल से मान्य रहेगा। शिक्षक, प्रोफेसर, व्याख्याता, लेखक, पत्रकार, कथा वाचक, उपदेश देने वाले धर्मगुरु, अनुसूचित जाति, पहाड़, पर्वत, जंगल में निवास करने वाले, अल्पसंख्यक आदि के लिए लाभदायक है। गर करण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट, मुहूर्त्त ३०, हाथी, गधा, लाल वस्त्र, लोहा–इस्पात, सलिया, सुगन्धित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, सूत–कपास, पोस्ता, लहसुन, मिर्च, मसूर, हल्दी, कलपूर्जे, मशीनरी, सोना, चांदी, असगंध, चांवल, कंदमूल पदार्थ कार्य व्यवसाय लाभद आदि में तेजी आवे।

✻ आषाढ़ शुक्ल पक्ष १५ बुधवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	९	१	२	३	४	११	१०	४
अं.	११	०४	२६	२३	१२	२६	२०	०६	०६
क.	४१	५२	४८	२०	०४	४१	३०	५२	५२
वि.	२५	३०	१९	०२	००	४०	५४	२५	२५
गति	५७ २०	७३१ २४	४० ४३	३३ ०४	१३ १६	६२ ५६	०० १७	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पुष्य	उत्तराषा. ३	मृगशिरा २	पुनर्वसु २	पुष्य ३	उत्तराफा. १	स्वाति २	शतभिषा १	मघा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



श्रावण कृष्ण पक्ष दि. ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
३०.०७.२०२६	०३:१२:३८:४५	५७२१	०९:१७:०३:५४	७४०।४३	०१:२७:२९:०२	४०।३९	०२:२३:५३:०६	३९।०७	०३:१२:१७:१६	१३।१७	०४:२७:४४:३६	६२।४१	११:२०:३०:३७	-००।२३	१०:०६:४९:१४
३१.०७.२०२६	०३:१३:३६:०७	५७२२	०९:२९:२४:३७	७५१।२४	०१:२८:०९:४०	४०।३४	०२:२४:३२:१४	४५।०८	०३:१२:३०:३३	१३।१७	०४:२८:४७:१७	६२।२५	११:२०:३०:१५	-००।२९	१०:०६:४६:०३
०१.०८.२०२६	०३:१४:३३:२९	५७२३	१०:११:५६:०२	७६३।३१	०१:२८:५०:१५	४०।३०	०२:२५:१७:२१	५१।०५	०३:१२:४३:५०	१३।१७	०४:२९:४९:४२	६२।०९	११:२०:२९:४६	-००।३५	१०:०६:४२:५३
०२.०८.२०२६	०३:१५:३०:५२	५७२४	१०:२४:३९:३३	७७७।०८	०१:२९:३०:४५	४०।२६	०२:२६:०८:२६	५६।५६	०३:१२:५७:०७	१३।१६	०५:००:५१:५०	६१।५२	११:२०:२९:११	-००।४१	१०:०६:३९:४२
०३.०८.२०२६	०३:१६:२८:१६	५७२५	११:०७:३६:४१	७९२।१७	०२:००:११:११	४०।२२	०२:२७:०५:२२	६२।४१	०३:१३:१०:२४	१३।१६	०५:०१:५३:४२	६१।३५	११:२०:२८:३०	-००।४७	१०:०६:३६:३१
०४.०८.२०२६	०३:१७:२५:४१	५७२६	११:२०:४८:५९	८०८।४९	०२:००:५१:३३	४०।१७	०२:२८:०८:०३	६८।१८	०३:१३:२३:४०	१३।१६	०५:०२:५५:१७	६१।१७	११:२०:२७:४३	-००।५३	१०:०६:३३:२०
०५.०८.२०२६	०३:१८:२३:०७	५७२८	००:०४:१७:४८	८२६।१७	०२:०१:३१:५०	४०।१३	०२:२९:१६:२२	७३।४७	०३:१३:३६:५५	१३।१५	०५:०३:५६:३३	६०।५९	११:२०:२६:५०	-००।५९	१०:०६:३०:१०
०६.०८.२०२६	०३:१९:२०:३५	५७२९	००:१८:०४:०६	८४३।४९	०२:०२:१२:०३	४०।०९	०३:००:३०:०९	७९।०४	०३:१३:५०:११	१३।१५	०५:०४:५७:३२	६०।४०	११:२०:२५:५०	-१।०५	१०:०६:२६:५९
०७.०८.२०२६	०३:२०:१८:०४	५७३०	०१:०२:०७:५५	८६०।०७	०२:०२:५२:११	४०।०४	०३:०१:४९:१२	८४।०९	०३:१४:०३:२६	१३।१४	०५:०५:५८:१२	६०।२१	११:२०:२४:४५	-।११	१०:०६:२३:४८
०८.०८.२०२६	०३:२१:१५:३४	५७३२	०१:१६:२८:०२	८७३।२९	०२:०३:३२:१५	४०।००	०३:०३:१३:२२	८९।००	०३:१४:१६:४०	१३।१४	०५:०६:५८:३४	६०।०१	११:२०:२३:३४	-१।१७	१०:०६:२०:३७
०९.०८.२०२६	०३:२२:१३:०६	५७३३	०२:०१:०१:३१	८८२।११	०२:०४:१२:१५	३९।५५	०३:०४:४२:२२	९३।३५	०३:१४:२९:५३	१३।१३	०५:०७:५८:३५	५९।४१	११:२०:२२:१७	-१।२३	१०:०६:१७:२६
१०.०८.२०२६	०३:२३:१०:३९	५७३४	०२:१५:४३:४२	८८४।४५	०२:०४:५२:१०	३९।५०	०३:०६:१५:५७	९७।५३	०३:१४:४३:०६	१३।१२	०५:०८:५८:१६	५९।२०	११:२०:२०:५३	-१।२९	१०:०६:१४:१६
११.०८.२०२६	०३:२४:०८:१३	५७३५	०३:००:२८:२७	८८०।२२	०२:०५:३२:००	३९।४६	०३:०७:५३:४९	१०१।५१	०३:१४:५६:१८	१३।११	०५:०९:५७:३७	५८।५९	११:२०:१९:२४	-१।३५	१०:०६:११:०५
१२.०८.२०२६	०३:२५:०५:४८	५७३७	०३:१५:०८:४९	८६९।०८	०२:०६:११:४६	३९।४१	०३:०९:३५:४०	१०५।२७	०३:१५:०९:२९	१३।१०	०५:१०:५६:३५	५८।३७	११:२०:१७:४९	-१।४१	१०:०६:०७:५४

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
३०.०७.२०२६	गुरू	१	२३:१८:११	२४:५७:२०	२६:५४:३४	२९:०७:३०	७:२८:१५	९:४२:२८	११:५६:०१	१४:१२:२४	१६:२८:२५	१८:३२:१५	२०:१७:३१	२१:४९:०३
३१.०७.२०२६	शुक्र	२	२३:१४:१६	२४:५३:२६	२६:५०:४०	२९:०३:३६	७:२४:२१	९:३८::३४	११:५२:०६	१४:०८:३०	१६:२४:३१	१८:२८:२०	२०:१३:३७	२१:४५:०८
०१.०८.२०२६	शनि	३	२३:१०:२२	२४:४९:३१	२६:४६:४५	२८:५९:४१	७:२०:२६	९:३४:३९	११:४८:१२	१४:०४:३५	१६:२०:३७	१८:२४:२६	२०:०९:४२	२१:४१:१४
०२.०८.२०२६	रवि	४	२३:०६:२७	२४:४५:३७	२६:४२:५१	२८:५५:४६	७:१६:३१	९:३०:४५	११:४४:१७	१४:००:४१	१६:१६:४२	१८:२०:३१	२०:०५:४८	२१:३७:१९
०३.०८.२०२६	सोम	५	२३:०२:३२	२४:४१:४२	२६:३८:५६	२८:५१:५२	७:१२:३७	९:२६:५०	११:४०:२२	१३:५६:४६	१६:१२:४७	१८:१६:३६	२०:०१:५३	२१:३३:२४
०४.०८.२०२६	मंगल	६	२२:५८:३७	२४:३७:४७	२६:३५:०१	२८:४७:५६	७:०८:४२	९:२२:५५	११:३६:२७	१३:५२:५१	१६:०८:५२	१८:१२:४१	१९:५७:५८	२१:२९:२९
०५.०८.२०२६	बुध	७	२२:५४:४२	२४:३३:५१	२६:३१:०६	२८:४४:०१	७:०४:४६	९:१९:००	११:३२:३२	१३:४८:५५	१६:०४:५७	१८:०८:४६	१९:५४:०३	२१:२५:३४
०६.०८.२०२६	गुरू	८	२२:५०:४७	२४:२९:५६	२६:२७:१०	२८:४०:०६	७:००:५१	९:१५:०४	११:२८:३७	१३:४५:००	१६:०१:०१	१८:०४:५०	१९:५०:०७	२१:२१:३८
०७.०८.२०२६	शुक्र	९	२२:४६:५१	२४:२६:००	२६:२३:१४	२८:३६:१०	६:५६:५५	९:११:०८	११:२४:४१	१३:४१:०४	१५:५७:०६	१८:००:५५	१९:४६:११	२१:१७:४३
०८.०८.२०२६	शनि	१०	२२:४२:५५	२४:२२:०४	२६:१९:१९	२८:३२:१४	६:५२:५९	९:०७:१२	११:२०:४५	१३:३७:०८	१५:५३:१०	१७:५६:५९	१९:४२:१६	२१:१३:४७
०९.०८.२०२६	रवि	११	२२:३८:५९	२४:१८:०८	२६:१५:२२	२८:२८:१८	६:४९:०३	९:०३:१६	११:१६:४९	१३:३३:१२	१५:४९:१४	१७:५३:०३	१९:३८:१९	२१:०९:५१
१०.०८.२०२६	सोम	१२/१३	२२:३५:०२	२४:१४:१२	२६:११:२६	२८:२४:२२	६:४५:०७	८:५९:२०	११:१२:५२	१३:२९:१६	१५:४५:१७	१७:४९:०६	१९:३४:२३	२१:०५:५४
११.०८.२०२६	मंगल	१४	२२:३१:०६	२४:१०:१५	२६:०७:२९	२८:२०:२५	६:४१:१०	८:५५:२३	११:०८:५६	१३:२५:१९	१५:४१:२०	१७:४५:०९	१९:३०:२६	२१:०१:५७
१२.०८.२०२६	बुध	३०	२२:२७:०९	२४:०६:१८	२६:०३:३२	२८:१६:२८	६:३७:१३	८:५१:२६	११:०४:५९	१३:२१:२२	१५:३७:२३	१७:४१:१२	१९:२६:२९	२०:५८:०१

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ श्रावण कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ ई.तक

वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

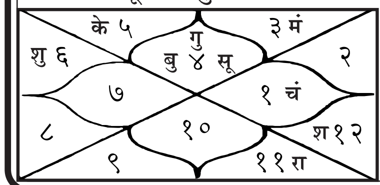
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक जुलाई–अगस्त	
गुरू	१	२१:३१	३८:२४	श्रवण	१७:४३	आयुष्मान	२४:०५	बालव	०८:५१	१३:११	०६:०९	१९:२०	मकर		३०	**गौरीव्रत पारणा,** पार्थिव शिव पूजन प्रारंभ, शाकभक्षण त्याग आरंभ, सूर्य पुष्य ४ पर २२।४५
शुक्र	२	२२:३२	४०:५७	धनिष्ठा	१९:२७	सौभाग्य	२३:५४	ै तिल	१०:०५	१३:१०	०६:१०	१९:२०	कुम्भ	०६:३८	३१	**अशून्यशयन व्रत, जया पार्वती व्रत जागरण,** पंचक प्रारंभ ०६।३८, राजयोग समाप्त १९।२७
शनि	३	२३:०८	४२:२५	शतभिषा	२०:४५	शोभन	२३:२३	वणिज	१०:५३	१३:०९	०६:१०	१९:१९	कुम्भ		१	**जया पार्वती व्रत पूर्ण,** पंचक जारी, शुक्र कन्या में ०९।२९, भद्रा १०।५३ से २३।०८ तक **A**
रवि	४	२३:१६	४२:४३	पूर्वाभा	२१:३७	अतिगण्ड	२२:२९	बव	११:१५	१३:०८	०६:१०	१९:१९	मीन	१५:२७	२	**संकष्टी चतुर्थी,** चंद्रोदय २१।४०, पंचक जारी, मंगल मिथुन में २२।५३, **B**
सोम	५	२२:५५	४१:५०	उत्तराभा	२२:००	सुकर्मा	२१:१३	कौलव	११:०९	१३:०७	०६:११	१९:१८	मीन		३	सूर्य आश्लेषा पर १०।२४ संग चं.चं.स्त्री पु.वाहन गज (नाग) वर्षा श्रेष्ठ, पंचक जारी
मंगल	६	२२:०४	३९:४१	रेवती	२१:५४	धृति	१९:३३	गर	१०:३३	१३:०६	०६:११	१९:१७	मेष	२१:५४	४	रवियोग प्रा. २१।५४, मंगन अश्विनी में २१।५४, कुमार योग २१।५४ से २२।०४ **C**
बुध	७	२०:४३	३६:१८	अश्विनी	२१:१८	शूल	१७:२९	विष्टि	०९:२७	१३:०५	०६:१२	१९:१७	मेष		५	**कालाष्टमी,** भद्रा ०९।२७ तक मृत्यु ०६।१२ से २१।१८ तक, रवियोग समाप्त २१।१८ **D**
गुरू	८	१८:५३	३१:४२	भरणी	२०:१४	गण्ड	१५:००	बालव	०७:५१	१३:०४	०६:१२	१९:१६	वृषभ	२५:५३	६	स्थिरयोग प्रा. २०।१४, यमघण्ट प्रा. २०।१४, सूर्य आश्लेषा २ पर २१।५७
शुक्र	९	१६:३७	२६:०२	कृतिका	१८:४३	वृद्धि	१२:११	गर	१६:३७	१३:०३	०६:१३	१९:१५	वृषभ		७	कुमार योग प्रा. १८।४३, यमघण्ट प्रा. १८।४३, भद्रा २७।२१ से
शनि	१०	१४:००	१९:२७	रोहिणी	१६:५१	ध्रुव/व्याघात	०९:०२ २९:३८	विष्टि	१४:००	१३:०२	०६:१३	१९:१५	मिथुन	२७:४९	८	गुरु उदय पूर्व में २३।५५, भद्रा १४।०० तक सर्वा.०६।१३ से १६।५१ तक अमृत सिद्धि ०६।१३ से १६।५१ तक
रवि	११	११:०६	१२:१०	मृगशिरा	१४:४३	हर्षण	२६:०४	बालव	११:०६	१३:००	०६:१४	१९:१४	मिथुन		९	**कामिका एकादशी,** राजयोग ११।०६ से १४।४३, दग्ध योग प्रा. ११।०६ से
सोम	१२	०८:०१	०४:२८	आर्द्रा	१२:२७	वज्र	२२:२६	तैतिल	०८:०१	१२:५९	०६:१४	१९:१३	कर्क	२८:४३	१०	**क्षय तिथि, सोमप्रदोष व्रत,** भद्रा २८।५५ से
सोम	१३	२८:५५	५६:४२	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
मंगल	१४	२५:५४	४९:०८	पुनर्वसु	१०:०९	सिद्धि	१८:५१	विष्टि	१५:२३	१२:५८	०६:१४	१९:१२	कर्क		११	मास शिवरात्रि, भद्रा १५।२३ तक, गुरू बाल्यत्व समाप्त २३।५५
बुध	३०	२३:०७	४२:०९	पुष्य/आश्लेषा	०८:०० ३०:०७	व्यतिपात	१५:२६	चतुष्पद	१२:२८	१२:५७	०६:१५	१९:१२	सिंह	३०:०७	१२	**हरियाली अमावस्या, दर्श अमावस्या,** कुमार योग प्रा. ३०।०७ से, गुरू उदय पूर्व में, **E**

A यमदंष्ट्रा ०६।१० से २०।४५ तक, राहु धनिष्ठा ४, केतु मघा २ पर २७।१२ **B** सर्वा. २१।३७ से ३०।११ तक चर ०६।१० से २१।३७ तक **C** भद्रा २२।०४ से सर्वा. २१।५४ से ३०।१२ तक अमृत सिद्धि २१।५४ से ३०।१२ तक पंचक समाप्त २१।५४ **D** मृत्यु योग समाप्त २१।१८, व्यतिपात महापात ११।०९ से १५।४१ तक, बुध कर्क में १९।४२ **E** चर ३०।०७ से ३०।१५ तक, मंगल आर्द्रायां २२।३४

✻ श्रावण कृष्ण पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	०	२	३	३	५	११	१०	४
अं.	१९	१८	०२	००	१३	०४	२०	०६	०६
क.	२०	०४	१२	३०	५०	५७	२५	२६	२६
वि.	३५	०६	०३	०९	११	३२	५०	५९	५९
गति	५७ २९	८४३ ४९	४० ०९	७९ ०४	१३ १५	६० ४०	०१ ०५	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	आश्लेषा १	भरणी २	मृगशिरा ३	पुनर्वसु ४	पुष्य ४	उत्तराफा ३	रेवती २	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



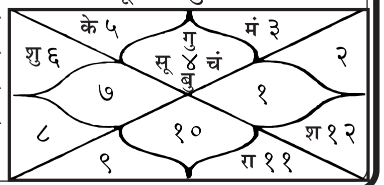
अशून्य शयन व्रत – श्रावण कृष्ण द्वितीया चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया में दो दिन चन्द्रोदय व्यापिनी, अव्यापिनी की स्थिति में द्वितीय दिन होगा। यह व्रत श्रावण–भाद्रपद–आश्विन–कार्तिक मासों के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया में तय होता है। **आषाढ़ अमान्तमासकोण – कृष्णद्वितीयायां अशून्य शयन व्रतम् अत्राते चंद्रोदय व्यापिनी तिथि ग्रा्ह्या चंद्रोदय पूजायुक्ते, दिनद्वये सत्वे असले वा परैव ॥ पंचमी –** लोकाचार में श्रावण कृष्ण पंचमी को नागपूजा औदयिकी पंचमी में । **हरियाली अमावस्या –** श्रावण अमावस्या औदयिकी।

सावन बदी एकम को सूर्य उदय होते समय दिखाई न दे बादलों में छुपा रहे तो वर्षा ऋतु में बहुत वर्षा होगी और संवत् उत्तम होगा। सावन कृष्ण पक्ष में अश्विनी नक्षत्र वाले दिन मेघ वर्ष करें तो संवत् उत्तम होगा। इसमें कुछ संदेह नहीं है। सावन में कृतिका नक्षत्र वाले दिन यदि वर्षा हो जाये तो वर्षा ऋतु में चार मास तक अच्छी वर्षा होगी। सावन में रोहिणी नक्षत्र वाले दिन यदि वर्षा नहीं हो तो दुर्भिक्ष के कारण हाहाकार मच जाता है। सावन में चित्रा स्वाति विशाखा तीन नक्षत्रों में वर्ष नहीं हो तो पानी की इच्छा करने वालों को किसी नदी पर जाकर बसना चाहिए। तात्पर्य यह है वर्षा नहीं होगी। सावन बदी एकादशी को अगर वर्षा हो तो उत्तम संवत् होने में कुछ संदेह न करो। सावन बदी द्वादशी को मघा नक्षत्र अथवा उफा उषा उभा तीनों नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो और बादल वर्षा हो तो उत्तम वर्षा का चिन्ह समझो। सावन सुदी ७ को वर्षा हो तो उत्तम उपज होने से आगे निःसन्देह मन्दी होगी। सावन सुदी सप्तमी को वर्षा हो जाये तो अन्न की उपज उत्तम होती है।

✻ श्रावण कृष्ण पक्ष ३० बुधवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	३	२	३	३	५	११	१०	४
अं.	२५	१५	०६	०९	१५	१०	२०	०६	०६
क.	०५	०८	११	३५	०९	५६	१७	०७	०७
वि.	४८	४९	४६	४०	२९	३५	४९	५४	५४
गति	५७ ३७	८६१ ०८	३९ ४१	१०५ २७	१३ १०	५८ ३७	०१ ४१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	आश्लेषा ३	पुष्य ४	मृगशिरा ४	पुष्य २	पुष्य ४	हस्त १	रेवती २	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



श्रावण शुक्ल पक्ष दि. १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१३.०८.२०२६	०३:२६:०३:२५	५७३८	०३:२९:३७:५८	८५२।०६	०२:०६:५१:२७	३९।३६	०३:११:२१:०७	१०८।४२	०३:१५:२२:३९	१३।०९	०५:११:५५:१२	५८।१३	११:२०:१६:०८	-१।४७	१०:०६:०४:४३
१४.०८.२०२६	०३:२७:०१:०३	५७३९	०४:१३:५०:०३	८३०।५७	०२:०७:३१:०३	३९।३१	०३:१३:०९:४९	१११।३३	०३:१५:३५:४८	१३।०८	०५:१२:५३:२५	५७५०	११:२०:१४:२१	-१।५३	१०:०६:०१:३३
१५.०८.२०२६	०३:२७:५८:४१	५७४०	०४:२७:४१:०१	८०७।४६	०२:०८:१०:३४	३९।२६	०३:१५:०१:२२	११४।००	०३:१५:४८:५६	१३।०७	०५:१३:५१:१५	५७२५	११:२०:१२:२८	-१।५८	१०:०५:५८:२२
१६.०८.२०२६	०३:२८:५६:२१	५७४१	०५:११:०८:४६	७८४।३१	०२:०८:५०:००	३९।२१	०३:१६:५५:२३	११६।०४	०३:१६:०२:०३	१३।०५	०५:१४:४८:४०	५६।५९	११:२०:१०:३०	-२।०४	१०:०५:५५:११
१७.०८.२०२६	०३:२९:५४:०२	५७४२	०५:२४:१३:१७	७६२।५७	०२:०९:२९:२२	३९।१६	०३:१८:५१:२६	११७।४३	०३:१६:१५:०८	१३।०४	०५:१५:४५:३९	५६।३२	११:२०:०८:२६	-२।१०	१०:०५:५२:००
१८.०८.२०२६	०४:००:५१:४४	५७४३	०६:०६:५६:१४	७४४।२३	०२:१०:०८:३८	३९।११	०३:२०:४९:०९	११९।००	०३:१६:२८:१२	१३।०३	०५:१६:४२:११	५६।०४	११:२०:०६:१७	-२।१५	१०:०५:४८:४९
१९.०८.२०२६	०४:०१:४९:२८	५७४४	०६:१९:२०:३७	७२९।४२	०२:१०:४७:४९	३९।०६	०३:२२:४८:०९	११९।५५	०३:१६:४१:१५	१३।०१	०५:१७:३८:१५	५५।३६	११:२०:०४:०२	-२।२१	१०:०५:४५:३९
२०.०८.२०२६	०४:०२:४७:१२	५७४५	०७:०१:३०:१८	७१९।२४	०२:११:२६:५६	३९।०१	०३:२४:४८:०४	१२०।३०	०३:१६:५४:१६	१२।५९	०५:१८:३३:५१	५५।०६	११:२०:०१:४१	-२।२६	१०:०५:४२:२८
२१.०८.२०२६	०४:०३:४४:५७	५७४६	०७:१३:२९:४२	७१३।३८	०२:१२:०५:५७	३८।५६	०३:२६:४८:३५	१२०।४७	०३:१७:०७:१५	१२।५८	०५:१९:२८:५६	५४।३५	११:१९:५९:१५	-२।३१	१०:०५:३९:१७
२२.०८.२०२६	०४:०४:४२:४३	५७४८	०७:२५:२३:२०	७१२।११	०२:१२:४४:५४	३८।५१	०३:२८:४९:२२	१२०।४८	०३:१७:२०:१३	१२।५६	०५:२०:२३:३१	५४।०३	११:१९:५६:४४	-२।३७	१०:०५:३६:०६
२३.०८.२०२६	०४:०५:४०:३१	५७४९	०८:०७:१५:३९	७१५।०७	०२:१३:२३:४५	३८।४६	०४:००:५०:१०	१२०।३४	०३:१७:३३:०९	१२।५४	०५:२१:१७:३४	५३।२९	११:१९:५४:०७	-२।४२	१०:०५:३२:५६
२४.०८.२०२६	०४:०६:३८:२०	५७५०	०८:१९:१०:४६	७२१।३४	०२:१४:०२:३२	३८।४१	०४:०२:५०:४४	१२०।०८	०३:१७:४६:०३	१२।५२	०५:२२:११:०३	५२।५५	११:१९:५१:२६	-२।४७	१०:०५:२९:४५
२५.०८.२०२६	०४:०७:३६:१०	५७५१	०९:०१:१२:२०	७३१।०५	०२:१४:४१:१३	३८।३६	०४:०४:५०:५२	११९।३१	०३:१७:५८:५५	१२।५०	०५:२३:०३:५८	५२।१९	११:१९:४८:३९	-२।५२	१०:०५:२६:३४
२६.०८.२०२६	०४:०८:३४:०१	५७५३	०९:१३:२३:२५	७४२।५८	०२:१५:१९:४९	३८।३१	०४:०६:५०:२३	११८।४६	०३:१८:११:४६	१२।४८	०५:२३:५६:१७	५१।४२	११:१९:४५:४७	-२।५७	१०:०५:२३:२३
२७.०८.२०२६	०४:०९:३१:५३	५७५४	०९:२५:४६:२३	७५६।२९	०२:१५:५८:२१	३८।२६	०४:०८:४९:०९	११७।५३	०३:१८:२४:३४	१२।४६	०५:२४:४७:५९	५१।०३	११:१९:४२:५०	-३।०२	१०:०५:२०:१३
२८.०८.२०२६	०४:१०:२९:४८	५७५६	१०:०८:२२:५२	७७०।५१	०२:१६:३६:४७	३८।२१	०४:१०:४७:०२	११६।५५	०३:१८:३७:२०	१२।४४	०५:२५:३९:०२	५०।२४	११:१९:३९:४९	-३।०६	१०:०५:१७:०२

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

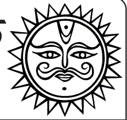
दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
१३.०८.२०२६	गुरू	१	२२:२३:११	२४:०२:२१	२५:५९:३५	२८:१२:३१	६:३३:१६	८:४७:२९	११:०१:०१	१३:१७:२५	१५:३३:२६	१७:३७:१५	१९:२२:३२	२०:५४:०३
१४.०८.२०२६	शुक्र	२	२२:१९:१४	२३:५८:२३	२५:५५:३७	२८:०८:३३	६:२९:१८	८:४३:३१	१०:५७:०४	१३:१३:२७	१५:२९:२९	१७:३३:१८	१९:१८:३४	२०:५०:०६
१५.०८.२०२६	शनि	३	२२:१५:१६	२३:५४:२५	२५:५१:४०	२८:०४:३५	६:२५:२०	८:३९:३४	१०:५३:०६	१३:०९:२९	१५:२५:३१	१७:२९:२०	१९:१४:३७	२०:४६:०८
१६.०८.२०२६	रवि	४	२२:११:१८	२३:५०:२७	२५:४७:४१	२८:००:३७	६:२१:२२	८:३५:३५	१०:४९:०८	१३:०५:३१	१५:२१:३३	१७:२५:२२	१९:१०:३८	२०:४२:१०
१७.०८.२०२६	सोम	५	२२:०७:१९	२३:४६:२९	२५:४३:४३	२७:५६:३९	६:१७:२४	८:३१:३७	१०:४५:०९	१३:०१:३३	१५:१७:३४	१७:२१:२३	१९:०६:४०	२०:३८:११
१८.०८.२०२६	मंगल	६	२२:०३:२१	२३:४२:३०	२५:३९:४४	२७:५२:४०	३०:०९:२९	८:२७:३८	१०:४१:११	१२:५७:३४	१५:१३:३६	१७:१७:२५	१९:०२:४१	२०:३४:१३
१९.०८.२०२६	बुध	७	२१:५९:२२	२३:३८:३१	२५:३५:४५	२७:४८:४१	३०:०५:३०	८:२३:३९	१०:३७:१२	१२:५३:३५	१५:०९:३६	१७:१३:२६	१८:५८:४२	२०:३०:१४
२०.०८.२०२६	गुरू	८	२१:५५:२२	२३:३४:३२	२५:३१:४६	२७:४४:४२	३०:०१:३१	८:१९:४०	१०:३३:१२	१२:४९:३६	१५:०५:३७	१७:०९:२६	१८:५४:४३	२०:२६:१४
२१.०८.२०२६	शुक्र	९	२१:५१:२३	२३:३०:३२	२५:२७:४६	२७:४०:४२	२९:५७:३१	८:१५:४०	१०:२९:१३	१२:४५:३६	१५:०१:३७	१७:०५:२७	१८:५०:४३	२०:२२:१५
२२.०८.२०२६	शनि	१०	२१:४७:२३	२३:२६:३२	२५:२३:४६	२७:३६:४२	२९:५३:३१	८:११:४०	१०:२५:१३	१२:४१:३६	१४:५७:३८	१७:०१:२७	१८:४६:४३	२०:१८:१५
२३.०८.२०२६	रवि	११	२१:४३:२२	२३:२२:३२	२५:१९:४६	२७:३२:४२	२९:४९:३१	८:०७:४०	१०:२१:१३	१२:३७:३६	१४:५३:३७	१६:५७:२६	१८:४२:४३	२०:१४:१४
२४.०८.२०२६	सोम	१२	२१:३९:२८	२३:१८:३८	२५:१५:५२	२७:२८:४८	२९:४५:३७	८:०३:४६	१०:१७:१८	१२:३३:४२	१४:४९:४३	१६:५३:३२	१८:३८:४९	२०:१०:२०
२५.०८.२०२६	मंगल	१२	२१:३५:३४	२३:१४:४४	२५:११:५८	२७:२४:५४	२९:४१:४३	७:५९:५२	१०:१३:२४	१२:२९:४८	१४:४५:४९	१६:४९:३८	१८:३४:५५	२०:०६:२६
२६.०८.२०२६	बुध	१३	२१:३१:४०	२३:१०:४९	२५:०८:०४	२७:२०:५९	२९:३७:४८	७:५५:५७	१०:०९:३०	१२:२५:५३	१४:४१:५५	१६:४५:४४	१८:३१:०१	२०:०२:३२
२७.०८.२०२६	गुरू	१४	२१:२७:४५	२३:०६:५५	२५:०४:०९	२७:१७:०५	२९:३३:५४	७:५२:०३	१०:०५:३५	१२:२१:५९	१४:३८:००	१६:४१:४९	१८:२७:०६	१९:५८:३७
२८.०८.२०२६	शुक्र	१५	२१:२३:५०	२३:०३:००	२५:००:१४	२७:१३:१०	२९:२९:५९	७:४८:०८	१०:०१:४०	१२:१८:०४	१४:३४:०५	१६:३७:५४	१८:२३:११	१९:५४:४२

अर्बुद श्री पंचांग, अकादमी ऑफ वैदिक साईंस (रजि.) शिवोहम् महालक्ष्मी चौक, गली नं.3, नई आबादी, जावाल, (सिरोही) राज. 307801 मो.9001141150

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ श्रावण शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई.तक

वर्षा–शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले



दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मई–जून
गुरू	१	२०:४२	३६:०७	मघा	२८:३८	वरियान	१२:१६	किंस्तुघ्न	०९:५१	१२:५६	०६:१५	१९:११	सिंह		१३
शुक्र	२	१८:४७	३१:१९	पूर्वाफा	२७:४३	परिघ	०९:२८	बालव	०७:४०	१२:५४	०६:१६	१९:१०	सिंह		१४
शनि	३	१७:२९	२८:०३	उत्तराफा	२७:२५	शिव/सिद्ध	०७:०९ २९:२१	गर	१७:२९	१२:५३	०६:१६	१९:०९	कन्या	०९:३५	१५
रवि	४	१६:५३	२६:३१	हस्त	२७:५१	साध्य	२८:०८	विष्टि	१६:५३	१२:५२	०६:१७	१९:०९	कन्या		१६
सोम	५	१७:०१	२६:४९	चित्रा	२८:५९	शुभ	२७:२९	बालव	१७:०१	१२:५१	०६:१७	१९:०८	तुला	१६:१९	१७
मंगल	६	१७:५१	२८:५४	स्वाति	-	शुक्ल	२७:२२	तैतिल	१७:५१	१२:४९	०६:१७	१९:०७	तुला		१८
बुध	७	१९:२०	३२:३५	स्वाति	०६:४७	ब्रह्म	२७:४४	गर	०६:३१	१२:४८	०६:१८	१९:०६	वृश्चिक	२६:३०	१९
गुरू	८	२१:१९	३७:३२	विशाखा	०९:०८	ऐन्द्र	२८:२५	विष्टि	०८:१६	१२:४७	०६:१८	१९:०५	वृश्चिक		२०
शुक्र	९	२३:३७	४३:१५	अनुराधा	११:५३	वैधृति	२९:१८	बालव	१०:२६	१२:४५	०६:१९	१९:०४	वृश्चिक		२१
शनि	१०	२६:०१	४९:१४	ज्येष्ठा	१४:४९	विष्कुम्भ	३०:१४	तैतिल	१२:४९	१२:४४	०६:१९	१९:०३	धनु	१४:४९	२२
रवि	११	२८:१९	५४:५९	मूल	१७:४५	प्रीति	-	वणिज	१५:११	१२:४३	०६:२०	१९:०२	धनु		२३
सोम	१२	-	६०:००	पूर्वाषा	२०:२८	प्रीति	०७:०४	बव	१७:२३	१२:४२	०६:२०	१९:०१	मकर	२७:०६	२४
मंगल	१२	०६:२१	००:०३	उत्तराषा	२२:५१	आयुष्मान	०७:४१	बालव	०६:२१	१२:४०	०६:२०	१९:००	मकर		२५
बुध	१३	०८:००	०४:०७	श्रवण	२४:४८	सौभाग्य	०७:५९	तैतिल	०८:००	१२:३९	०६:२१	१९:००	मकर		२६
गुरू	१४	०९:०९	०७:०१	धनिष्ठा	२६:१५	शोभन	०७:५५	वणिज	०९:०९	१२:३७	०६:२१	१८:५९	कुम्भ	१३:३५	२७
शुक्र	१५	०९:४९	०८:३८	शतभिषा	२७:१३	अतिगण्ड	०७:२७	बव	०९:४९	१२:३६	०६:२१	१८:५८	कुम्भ		२८

दिनांक	
१३	मुसल ०६।१५ से २८।३८ तक, नक्तव्रत आरंभ
१४	**स्वामी श्री करपात्रीजी जयंती,** चंद्रदर्शन मु. ३० साम्यार्ध, जीवन्तिका व्रत **A**
१५	**स्वतंत्रता दिवस, मधुश्रवा तृतीया, स्वर्णगौरी तीज, हरियाली तीज,** रवियोग समाप्त २७।२५ **B**
१६	**श्रीविनायक चतुर्थी, ऋगहिरण्यकेशी श्रावणी,** भद्रा १६।५३ तक सर्वा. ०६।१७ से २७।५१ तक **C**
१७	**नाग पंचमी, तक्षक पूजन,** वज्र मूसल (दग्ध) ०६।१७ से २८।५९ तक, रवियोग समाप्त ०७।५९ **D**
१८	**श्रीकल्कि जयंती, रवियोग अहोरात्र,** गुरु आश्लेषा १ पर २७।१२
१९	**श्रीगोस्वामी तुलसीदास जयंती,** रवियोग समाप्त ०६।४७, बुध अस्त पूर्व में, भद्रा १९।२० से, **बिछूड़ा प्रा.** २६।३०
२०	
२१	**जीवन्तिका व्रत,** बगीचा नवमी, बिछूड़ा, रवियोग प्रा. ११।५३, वज्र मूसल योग ११।५३ से **E**
२२	रवियोग अहोरात्र, मूसल ०६।१९ से १४।४९ तक, बिछूड़ा समाप्त १४।४९, बुध सिंह में १९।३३
२३	**पुत्रदा पवित्रा एकादशी,** भद्रा १५।११ से २८।१९ तक सर्वा. ०६।२० से १७।४५ तक **F**
२४	वृद्धि तिथि, **पवित्रा द्वादशी, दामोदर द्वादशी, विष्णु पवित्रारोपण,** अगस्त्य उदय २१।११ **G**
२५	**भौम प्रदोष,** वज्र मूसल (दग्ध) ०६।२० से २२।५१ तक, रवियोग प्रा. २२।५१ से, शुक्र चित्रायां २२।४९
२६	**ऋग्वेदीय उपाकर्म,** रवियोग समाप्त २४।४८, वज्र मूसल योग प्रा. २४।४८
२७	**पूर्णिमा व्रत, हयग्रीव जयंती, ऋग्यजुशुक्लअथर्ववेंदीय उपाकर्म H**
२८	**रक्षाबंधन, मान्द्य चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य नहीं), विश्व संस्कृत दिवस,** जीविन्तका व्रत **I**

A राजयोग एवं रवियोग प्रा. २७।४३, सिद्धि ०६।१६ से २७।४३ तक **B** भद्रा २९।०६ से, उत्पात ०६।१६ से २७।२५ तक, स्थिर योग १७।२९ से २७।२५, यमघण्ट एवं मृत्यु योग २७।२५ से, बुध आश्लेषा २६।१६ **C** अमृत सिद्धि ०६।१७ से २७।५१ तक, रवियोग प्रा. २७।५१ **D** रवियोग प्रा. २८।५९ सूर्य मघा सिंह पर ०७।५९, वैधृति महापात १३।५५ से १८।१३, बं.भाद्रपद मास प्रा.संग चं.सू.स्त्री स्त्री वाहन चातक (मयूर) वर्षा श्रेष्ठ **E** सर्वा. ११।५३ तक, यमदंष्ट्रा ०६।१९ से ११।५३ तक अगस्त्य दर्शन १९।३३ **F** रवियोग समाप्त १७।४५, राजयोग प्रा. २८।१९, सिद्धि ०६।२० से १७।४५, दग्ध योग प्रा. २८।१९ तक राष्ट्रीय भाद्रपद मास प्रा.सायन सूर्य कन्या पर ०७।४९ शरद ऋतु प्रा. **G** तिथि वासर १०।५० तक, उत्पात ०६।२० से २०।२८ तक, मृत्यु योग प्रा. २०।२८ **H** भद्रा ०९।०९ से २१।३३ तक पंचक प्रारंभ १३।३५ **I** कोकिला व्रत पूर्ण, अमरनाथ यात्रा पूर्ण, पंचक जारी, कुमार योग प्रा. २७।१३,

✻ श्रावण शुक्ल पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	७	२	३	३	५	११	१०	४
अं.	०२	०१	११	२४	१६	१८	२०	०५	०५
क.	४७	३०	२६	४८	५४	३३	०१	४२	४२
वि.	१२	१८	५६	०४	१६	५१	४१	२८	२८
गति	५७ ४५	७११ २४	३९ ०१	११० ३०	१२ ५९	५५ ०६	०२ २६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मघा १	विशाखा ४	आर्द्रा २	आश्लेषा ३	आश्लेषा १	हस्त ३	रेवती २	धनिष्ठा ४	मघा २

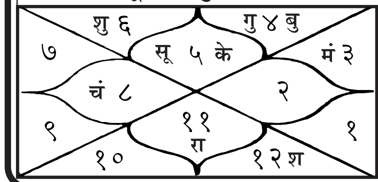
✻ श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१०	२	४	३	५	११	१०	४
अं.	१०	०८	१६	१०	१८	२५	१९	०५	०५
क.	२९	२२	३६	४७	३७	३९	३९	१७	१७
वि.	४८	५२	४७	०२	२०	०२	४९	०२	०२
गति	५७ ५६	७७० ५१	३८ २१	११६ ५५	१२ ४४	५० २४	०३ ०६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मघा ४	उत्तराषा १	आर्द्रा ३	मघा ४	आश्लेषा १	चित्रा १	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ ज्वालामुखी योग ✻

पड़वा मूल पांचम भरणी, आठम कृतिका, नवमी रोहिणी, दशम आश्लेषा। ये योग ज्वालामुखी कहीया जन्में तो जीवे नहीं नारी पहने चूड़लो निश्चित विधवा होय एवं सर्व कार्य विफल होय॥ अर्थात् तिथि १ को मूल नक्षत्र हो, तिथि ५ को भरणी नक्षत्र हो, तिथि ८ को कृति का नक्षत्र हो, तिथि ९ को रोहिणी नक्षत्र हो, तिथि १० को आश्लेषा नक्षत्र हो तो इसको ज्वालामुखी योग कहते हैं। इसमें किसी बच्चे का जन्म हो तो उसकी मृत्यु हो जाती है या फिर मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। अगर कोई महिला चूड़ी धारण करती है तो वह विधवा होती है अर्थात् तलाक, कलह या पति की मृत्यु संभावित है। इसमें कोई भी कार्य किया जाता है तो वह विफल ही होता है।

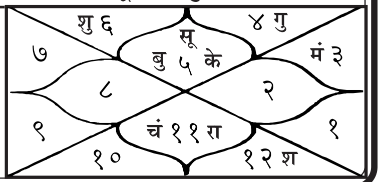
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ सिंह संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक १७.८.२०२६ श्रावण शुक्ल पक्ष ५ सोमवार को प्रातः ७.५९ बजे सिंह संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल सोमवार को ही प्रातः सूर्योदय वेला से मान्य रहेगा। शेयर बाजार का कार्य करने वाले, आयात–निर्यात का कार्य करने वाले वैश्य–व्यापारीगण, उच्चपदासीन अधिकारी, नेता, दलपति, गजेटेड अधिकारी आदि के लिए लाभदायक है। बालव करण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्टा, मुहूर्त्त–३०, सौंठ, गरम मसाला, घोड़ा, सोना, चांदी, चना, तुवर, हल्दी, चन्दन, रोली, चाय, तम्बाखु, सरसों, दाना मैथी, केसर, सुगंधी पदार्थ आदि में तेजी का योग बन पाये।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



भाद्रपद कृष्ण पक्ष दि. २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२९.०८.२०२६	०४:११:२७:४३	५७५७	१०:२१:१३:४३	७८५।२५	०२:१७:१५:०८	३८।१६	०४:१२:४३:५७	११५।५२	०३:१८:५०:०४	१२।४२	०५:२६:२९:२६	४९।४२	११:१९:३६:४२	-३।११	१०:०५:१३:५१
३०.०८.२०२६	०४:१२:२५:४०	५७५९	११:०४:१९:०८	७९९।३५	०२:१७:५३:२४	३८।११	०४:१४:३९:४८	११४।४५	०३:१९:०२:४६	१२।४०	०५:२७:१९:०८	४९।००	११:१९:३३:३१	-३।१६	१०:०५:१०:४०
३१.०८.२०२६	०४:१३:२३:३९	५८।०१	११:१७:३८:४३	८१२।५३	०२:१८:३१:३५	३८।०६	०४:१६:३४:३३	११३।३६	०३:१९:१५:२६	१२।३७	०५:२८:०८:०८	४८।१५	११:१९:३०:१५	-३।२०	१०:०५:०७:२९
१.९.२०२६	०४:१४:२१:४०	५८।०३	००:०१:११:३७	८२४।५९	०२:१९:०९:४१	३८।०१	०४:१८:२८:०९	११२।२५	०३:१९:२८:०३	१२।३५	०५:२८:५६:२३	४७।२९	११:१९:२६:५५	-३।२५	१०:०५:०४:१९
२.९.२०२६	०४:१५:१९:४३	५८।०४	००:१४:५६:३६	८३५।३८	०२:१९:४७:४२	३७।५६	०४:२०:२०:३४	१११।१३	०३:१९:४०:३८	१२।३२	०५:२९:४३:५२	४६।४२	११:१९:२३:३०	-३।२९	१०:०५:०१:०८
३.९.२०२६	०४:१६:१७:४७	५८।०६	००:२८:५२:१४	८४४।३९	०२:२०:२५:३८	३७।५०	०४:२२:११:४८	११०।०१	०३:१९:५३:११	१२।३०	०६:००:३०:३४	४५।५३	११:१९:२०:०१	-३।३३	१०:०४:५७:५७
४.९.२०२६	०४:१७:१५:५४	५८।०८	०१:१२:५६:५३	८५१।४७	०२:२१:०३:२८	३७।४५	०४:२४:०१:४८	१०८।४८	०३:२०:०५:४१	१२।२७	०६:०१:१६:२७	४५।०२	११:१९:१६:२७	-३।३८	१०:०४:५४:४६
५.९.२०२६	०४:१८:१४:०२	५८।१०	०१:२७:०८:३९	८५६।४१	०२:२१:४१:१३	३७।३९	०४:२५:५०:३६	१०७।३५	०३:२०:१८:०८	१२।२४	०६:०२:०१:२९	४४।०९	११:१९:१२:५०	-३।४२	१०:०४:५१:३६
६.९.२०२६	०४:१९:१२:१२	५८।१२	०२:११:२५:२१	८५८।५६	०२:२२:१८:५२	३७।३४	०४:२७:३८:१२	१०६।२३	०३:२०:३०:३२	१२।२२	०६:०२:४५:३७	४३।१४	११:१९:०९:०८	-३।४६	१०:०४:४८:२५
७.९.२०२६	०४:२०:१०:२५	५८।१४	०२:२५:४४:१७	८५८।००	०२:२२:५६:२६	३७।२८	०४:२९:२४:३५	१०५।१२	०३:२०:४२:५४	१२।१९	०६:०३:२८:५१	४२।१७	११:१९:०५:२२	-३।५०	१०:०४:४५:१४
८.९.२०२६	०४:२१:०८:३९	५८।१६	०३:१०:०२:१७	८५३।२६	०२:२३:३३:५५	३७।२३	०५:०१:०९:४७	१०४।०१	०३:२०:५५:१३	१२।१६	०६:०४:११:०८	४१।१७	११:१९:०१:३२	-३।५३	१०:०४:४२:०३
९.९.२०२६	०४:२२:०६:५६	५८।१८	०३:२४:१५:४३	८४४।५९	०२:२४:११:१७	३७।१७	०५:०२:५३:४८	१०२।५१	०३:२१:०७:२८	१२।१३	०६:०४:५२:२५	४०।१५	११:१८:५७:३९	-३।५७	१०:०४:३८:५३
१०.९.२०२६	०४:२३:०५:१४	५८।२०	०४:०८:२०:४२	८३२।४५	०२:२४:४८:३४	३७।११	०५:०४:३६:४०	१०१।४२	०३:२१:१९:४१	१२।०९	०६:०५:३२:४१	३९।११	११:१८:५३:४२	-४।०१	१०:०४:३५:४२
११.९.२०२६	०४:२४:०३:३४	५८।२२	०४:२२:१३:२७	८१७।१५	०२:२५:२५:४५	३७।०५	०५:०६:१८:२२	१००।३४	०३:२१:३१:५०	१२।०६	०६:०६:११:५२	३८।०४	११:१८:४९:४१	-४।०४	१०:०४:३२:३१

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२९.०८.२०२६	शनि	१	२१:१९:५५	२२:५९:०५	२४:५६:१९	२७:०९:१४	२९:२६:०४	७:४४:१३	९:५७:४५	१२:१४:०९	१४:३०:१०	१६:३३:५९	१८:१९:१६	१९:५०:४७
३०.०८.२०२६	रवि	२	२१:१६:००	२२:५५::०९	२४:५२:२३	२७:०५:१९	२९:२२:०८	७:४०:१७	९:५३:५०	१२:१०:१३	१४:२६:१५	१६:३०:०४	१८:१५:२०	१९:४६:५२
३१.०८.२०२६	सोम	३	२१:१२:०४	२२:५१:१३	२४:४८:२८	२७:०१:२३	२९:१८:१२	७:३६:२२	९:४९:५४	१२:०६:१७	१४:२२:१९	१६:२६:०८	१८:११:२५	१९:४२:५६
१.९.२०२६	मंगल	४/५	२१:०८:०८	२२:४७:१७	२४:४४:३२	२६:५७:२७	२९:१४:१६	७:३२:२६	९:४५:५८	१२:०२:२१	१४:१८:२३	१६:२२:१२	१८:०७:२९	१९:३९:००
२.९.२०२६	बुध	६	२१:०४:१२	२२:४३:२१	२४:४०:३५	२६:५३:३१	२९:१०:२०	७:२८:२९	९:४२:०२	११:५८:२५	१४:१४:२७	१६:१८:१६	१८:०३:३२	१९:३५:०४
३.९.२०२६	गुरू	७	२१:००:१५	२२:३९:२५	२४:३६:३९	२६:४९:३५	२९:०६:२४	७:२४:३३	९:३८:०५	११:५४:२९	१४:१०:३०	१६:१४:१९	१७:५९:३६	१९:३१:०७
४.९.२०२६	शुक्र	८	२०:५६:१९	२२:३५:२८	२४:३२:४२	२६:४५:३८	२९:०२:२७	७:२०:३६	९:३४:०९	११:५०:३२	१४:०६:३३	१६:१०:२२	१७:५५:३९	१९:२७:१०
५.९.२०२६	शनि	९	२०:५२:२२	२२:३१:३१	२४:२८:४५	२६:४१:४१	२८:५८:३०	७:१६:३९	९:३०:१२	११:४६:३५	१४:०२:३६	१६:०६:२५	१७:५१:४२	१९:२३:१३
६.९.२०२६	रवि	१०	२०:४८:२४	२२:२७:३४	२४:२४:४८	२६:३७:४४	२८:५४:३३	७:१२:४२	९:२६:१४	११:४२:३८	१३:५८:३९	१६:०२:२८	१७:४७:४५	१९:१९:१६
७.९.२०२६	सोम	११	२०:४४:२७	२२:२३:३७	२४:२०:५१	२६:३३:४६	२८:५०:३६	७:०८:४५	९:२२:१७	११:३८:४१	१३:५४:४२	१५:५८:३१	१७:४३:४८	१९:१५:१९
८.९.२०२६	मंगल	१२	२०:४०:२९	२२:१९:३९	२४:१६:५३	२६:२९:४९	२८:४६:३८	७:०४:४७	९:१८:२०	११:३४:४३	१३:५०:४४	१५:५४:३३	१७:३९:५०	१९:११:२१
९.९.२०२६	बुध	१३	२०:३६:३२	२२:१५:४१	२४:१२:५५	२६:२५:५१	२८:४२:४०	७:००:४९	९:१४:२२	११:३०:४५	१३:४६:४७	१५:५०:३६	१७:३५:५२	१९:०७:२४
१०.९.२०२६	गुरू	१४	२०:३२:३४	२२:११:४३	२४:०८:५७	२६:२१:५३	२८:३८:४२	६:५६:५१	९:१०:२४	११:२६:४७	१३:४२:४९	१५:४६:३८	१७:३१:५४	१९:०३:२६
११.९.२०२६	शुक्र	३०	२०:२८:३६	२२:०७:४५	२४:०४:५९	२६:१७:५५	२८:३४:४४	६:५२:५३	९:०६:२६	११:२२:४९	१३:३८:५१	१५:४२:४०	१७:२७:५६	१८:५९:२७

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ भाद्रपद कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ ई.तक

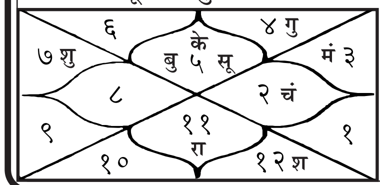
शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
शनि	१	०९:५७	०८:५९	पूर्वाभा.	२७:४२	सुकर्मा/धृति	०६:३६ २९:२१	कौलव	०९:५७	१२:३५	०६:२२	१८:५७	मीन	२१:३८	२९	**गायत्री पुरश्चरण प्रा.**, दधिभक्षण त्याग, पंचक जारी, बुध उभा. १२।५६, अशून्य शमन व्रत
रवि	२	०९:३८	०८:०९	उत्तराभा.	२७:४५	शूल	२७:४६	गर	०९:३८	१२:३३	०६:२२	१८:५६	मीन		३०	भद्रा २१।१८ से सर्वा. ०६।२२ से २७।४५ तक सूर्य पूर्वाफा पर २७।५९ **A**
सोम	३	०८:५२	०६:१३	रेवती	२७:२४	गण्ड	२५:५०	विष्टि	०८:५२	१२:३२	०६:२३	१८:५५	मेष	२७:२४	३१	**कज्जली तृतीया, सातूड़ी तीज,** संकष्ठी चतुर्थी, चन्द्रोदय २०।५०, बहुला चतुर्थी **B**
मंगल	४	०७:४२	०३:१९	अश्विनी	२६:४२	वृद्धि	२३:३८	बालव	०७:४२	१२:३१	०६:२३	१८:५४	मेष		१	**क्षय तिथि,** कुमार योग ०७।४२ से २६।४२, सर्वा. ०६।२३ से २६।४२ तक **C**
मंगल	५	३०:१३	५९:३५	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
बुध	६	२८:२७	५५:०८	भरणी	२५:४३	ध्रुव	२१:१२	गर	१७:२२	१२:२९	०६:२३	१८:५३	मेष		२	**हलषष्ठी,** शुक्र तुला में १३।४६, रवियोग प्रा. २५।४३, भद्रा २८।२७ से **D**
गुरू	७	२६:२६	५०:०६	कृतिका	२४:२९	व्याघात	१८:३३	विष्टि	१५:२८	१२:२८	०६:२४	१८:५२	वृषभ	०७:२६	३	भद्रा १५।२८ तक यमघंट ०६।२४ से २४।२९ तक, रवियोग समाप्त २४।२९
शुक्र	८	२४:१४	४४:३५	रोहिणी	२३:०४	हर्षण	१५:४४	बालव	१३:२१	१२:२७	०६:२४	१८:५१	वृषभ		४	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सर्वे., कालाष्टमी, दूर्वाष्टमी,** यमदंष्ट्रा ०६।२४ से २३।०४ तक, दग्ध योग समाप्त २४।१४
शनि	९	२१:५४	३८:४४	मृगशिरा	२१:३१	वज्र	१२:४७	तैतिल	११:०५	१२:२५	०६:२४	१८:५०	मिथुन	१०:१८	५	**गोगा नवमी, नन्द महोत्सव,** भद्रा ०८।४२ से १९।३० तक, बुध उफा. १६।२९ **E**
रवि	१०	१९:३०	३२:४२	आर्द्रा	१९:५३	सिद्धि	०९:४५	वणिज	०८:४२	१२:२४	०६:२५	१८:४९	मिथुन		६	भद्रा ०८।४२ से १९।३० तक
सोम	११	१७:०५	२६:३९	पुनर्वसु	१८:१४	व्यतिपात/वरीयान	०६:४१ २७:३८	बालव	१७:०५	१२:२२	०६:२५	१८:४७	कर्क	१२:३८	७	**अजा एकादशी,** कुमार योग समाप्त १७।०५, दग्ध योग समाप्त १७।०५ **F**
मंगल	१२	१४:४३	२०:४५	पुष्य	१६:३९	परिघ	२४:४०	तैतिल	१४:४३	१२:२१	०६:२६	१८:४६	कर्क		८	**वत्स द्वादशी (बछबारस), भौम प्रदोष, पर्यूषण पर्व,** सर्वा. १६।३९ से ३०।२६ तक **G**
बुध	१३	१२:३१	१५:१४	आश्लेषा	१५:१४	शिव	२१:५२	वणिज	१२:३१	१२:१९	०६:२६	१८:४५	सिंह	१५:१४	९	**मास शिवरात्रि, अघोरा चतुर्दशी,** द्वापर युगादि, पर्यूषण पर्व, भद्रा १२।३१ से २३।३० तक
गुरू	१४	१०:३४	१०:१९	मघा	१४:०५	सिद्ध	१९:१७	शकुनि	१०:३४	१२:१८	०६:२६	१८:४४	सिंह		१०	**दर्श अमावस्या,** पिठौरी अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या, मूसल ०६।२६ से १४।०५ तक, शुक्र स्वात्यां
शुक्र	३०	०८:५७	०६:१६	पूर्वाफा	१३:१६	साध्य	१७:०२	नाग	०८:५७	१२:१७	०६:२७	१८:४३	कन्या	१९:०८	११	**देवकार्ये अमावस्या,** बुध उदय पश्चिम में, सिद्धि ०६।२७ से १३।१६ तक

✻ भाद्रपद कृष्ण पक्ष ८ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१	२	४	३	६	११	१०	४
अं.	१७	१२	२१	२४	२०	०१	१९	०४	०४
क.	१५	५६	०३	०१	०५	१६	१६	५४	५४
वि.	५४	५३	२८	४८	४१	२७	२७	४६	४६
गति	५८ ०८	८५१ ४७	३७ ४५	१०८ ४८	१२ २७	४५ ०२	०३ ३८	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूर्वाफा. २	रोहिणी १	पुनर्वसु १	पूर्वाफा. ४	आश्लेषा २	चित्रा ३	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A संग सू.चं.स्त्री.पु.वाहन खर वर्षा मध्यम, पंचक जारी, राजयोग समाप्त २७।४५ **B** भद्रा ०८।५२ तक पंचक समाप्त २७।२३, व्यतिपात महापात ०६।२१ से १०।१७ **C** अमृत सिद्धि ०६।२३ से २६।४२ तक, मंगल अश्विनी पर २६।४२, दग्ध योग ०७।४२ से ३०।१४, ज्वालामुखी योग २६।४३ से ३०।१४ **D** मंगल पुनर्वसु में १३।१६, शुक्र तुलायां १३।४४, सर्वा. २५।४३ से ३०।२४ तक काण ०६।२३ से २५।४३ तक **E** स्थिर योग २१।३१ से २१।५४, दग्ध योग समाप्त २१।५४ **F** सर्वा. १८।१४ से ३०।२६ तक, बुध कन्या में १३।३५ **G** राजयोग समाप्त १४।४३

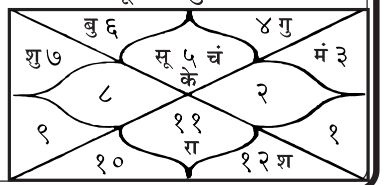
✻ जन्माष्टमी निर्णय – भादवा मास की कृष्ण पक्ष अष्टमी अर्द्धरात्रि व्यापिनी में (निशीथ वेला में प्रशस्त) १ यदि अष्टमी निशीथ व्यापिनी प्रथम दिन हो तो स्मार्त्त व्रत प्रथम दिन होगा। २ अष्टमी दोनों दिन ही निशीथ व्यापिनी हो तो स्मार्त्त व्रत द्वितीय दिन होगा। ४ यदि अष्टमी निशीथ व्यापिनी दो दिन हो तो अष्टमी व रोहिणी दोनों ही निशीथ काल में जिसमें होंगे स्मार्त्त व्रत उसी दिन होगा। प्रथम दिन होने पर प्रथम दिन ही होगा। ५ अष्टमी दो दिन निशीथ व्यापिनी हो और रोहिणी नक्षत्र दोनों ही दिन निशीथ में हो तो स्मार्त्त व्रत दूसरे दिन होगा। ६ अष्टमी दो दिन निशीथ व्यापिनी हो और रोहिणी नक्षत्र भी दोनों ही दिन व्याप्त हो तो भी स्मार्त्त व्रत द्वितीय दिन होगा। ७ अष्टमी शुद्धाधिका होकर द्वितीय दिन सूर्य उदय बाद रोहिणी से मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी व रोहिणी का योग हो तो भी स्मार्त्त व्रत दूसरे दिन ही होगा। जन्माष्टमी निर्णय में सोमवार अथवा बुधवार का योग प्रशस्त माना है।

भादव बदी दौयज को आकाश में बादल छाये रहें तो धान्य की उपज अच्छी होती है। मन्दी होने पर खरीदें फागुन में लाभ होगा। भादव सुदी चौथ को आकाश में चांद न दिखाई दे बादलों में छुपा रहे तो अच्छी वर्षा होती है। भादव सुदी पंचमी को बादल वर्षा न करें तो भगवान का कोप ही समझना चाहिये। दुर्भिक्ष के कारण सज्जन भी दुर्जन हो जाते हैं। भादव सुदी सप्तमी को आकाश में बादल बिजली और गर्जन नहीं हो तो दुर्भिक्ष के कारण सभी वस्तुएं तेज हो जाती हैं। भादव सुदी अष्टमी आकाश निर्मल रहने के कारण सूरज और चांद भी निर्मल रहे। बादल अथवा कुण्डल आदि न हो तो पांच महीने तक अनाज और कपड़ा तेज रहेगा। परन्तु इसी योग से सैंधव नमक सूत सन पाट आदि पांच मास तक मन्दा रहेगा। भादव सुदी नामी को वर्षा हो तो आगे अकाल पड़ता है और अगर एकादशी को वर्षा हो जाए तो सुभिक्ष के कारण सब प्रकार का माल मन्द हो जाता है। भादवा में चित्रा–स्वाति और विशाखा नक्षत्रों में वर्षा हो, तो वर्षा काल समाप्त समझकर आगे वर्षा होने की आश छोड़ देनी चाहिये।

✻ भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३० शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	४	२	५	३	६	११	१०	४
अं.	२४	२२	२५	०६	२१	०६	१८	०४	०४
क.	०३	१३	२५	१८	३१	११	४९	३२	३२
वि.	३४	२७	४५	२२	५०	५२	४९	३१	३१
गति	५८ २२	८१७ १५	३७ ०५	१०० ३४	१२ ०६	३८ ०४	०४ ०४	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूफा. ४	पूफा. ३	पुनर्वसु २	उफा. ३	आश्लेषा २	चित्रा ४	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



भाद्रपद शुक्ल पक्ष दि. १२ सितम्बर से २६ सितम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१२.०९.२०२६	०४:२५:०१:५६	५८।२४	०५:०५:५०:४२	७९१।२५	०२:२६:०२:५०	३६।५९	०५:०७:५८:५६	९९।२७	०३:२१:४३:५६	१२।०३	०६:०६:४९:५६	३६।५४	११:१८:४५:३७	-४।०७	१०:०४:२९:२०
१३.०९.२०२६	०४:२६:००:२०	५८।२५	०५:१९:१०:०७	७८०।२७	०२:२६:३९:४९	३६।५३	०५:०९:३८:२४	९८।२१	०३:२१:५५:५९	११।५९	०६:०७:२६:५०	३५।४२	११:१८:४१:३०	-४।१०	१०:०४:२६:०९
१४.०९.२०२६	०४:२६:५८:४५	५८।२७	०६:०२:१०:३४	७६१।४५	०२:२७:१६:४२	३६।४७	०५:११:१६:४५	९७।१६	०३:२२:०७:५८	११।५६	०६:०८:०२:३२	३४।२६	११:१८:३७:२०	-४।१३	१०:०४:२२:५९
१५.०९.२०२६	०४:२७:५७:१२	५८।२९	०६:१४:५२:१९	७४४।३८	०२:२७:५३:२८	३६।४०	०५:१२:५४:०१	९६।११	०३:२२:१९:५४	११।५२	०६:०८:३६:५८	३३।०७	११:१८:३३:०७	-४।१६	१०:०४:१९:४८
१६.०९.२०२६	०४:२८:५५:४१	५८।३०	०६:२७:१६:५७	७३०।१७	०२:२८:३०:०९	३६।३४	०५:१४:३०:१२	९५।०८	०३:२२:३१:४६	११।४८	०६:०९:१०:०५	३१।४५	११:१८:२८:५१	-४।१९	१०:०४:१६:३७
१७.०९.२०२६	०४:२९:५४:११	५८।३२	०७:०९:२७:१४	७१९।३९	०२:२९:०६:४३	३६।२८	०५:१६:०५:२०	९४।०५	०३:२२:४३:३४	११।४४	०६:०९:४१:४९	३०।१९	११:१८:२४:३२	-४।२१	१०:०४:१३:२६
१८.०९.२०२६	०५:००:५२:४४	५८।३४	०७:२१:२६:५४	७१३।२४	०२:२९:४३:११	३६।२२	०५:१७:३९:२५	९३।०२	०३:२२:५५:१९	११।४१	०६:१०:१२:०८	२८।५०	११:१८:२०:१०	-४।२४	१०:०४:१०:१६
१९.०९.२०२६	०५:०१:५१:१७	५८।३५	०८:०३:२०:१८	७११।५४	०३:००:१९:३२	३६।१५	०५:१९:१२:२७	९२।००	०३:२३:०६:५९	११।३७	०६:१०:४०:५८	२७।१८	११:१८:१५:४७	-४।२६	१०:०४:०७:०५
२०.०९.२०२६	०५:०२:४९:५३	५८।३७	०८:१५:१२:१२	७१५।१७	०३:००:५५:४७	३६।०९	०५:२०:४४:२७	९०।५८	०३:२३:१८:३६	११।३२	०६:११:०८:१६	२५।४२	११:१८:११:२१	-४।२८	१०:०४:०३:५४
२१.०९.२०२६	०५:०३:४८:३०	५८।३९	०८:२७:०७:२९	७२३।२२	०३:०१:३१:५६	३६।०२	०५:२२:१५:२५	८९।५६	०३:२३:३०:०८	११।२८	०६:११:३३:५७	२४।०२	११:१८:०६:५२	-४।३०	१०:०४:००:४३
२२.०९.२०२६	०५:०४:४७:०८	५८।४०	०९:०९:१०:५१	७३५।४५	०३:०२:०७:५८	३५।५६	०५:२३:४५:२१	८८।५४	०३:२३:४१:३७	११।२४	०६:११:५७:५९	१२।१८	११:१८:०२:२२	-४।३२	१०:०३:५७:३३
२३.०९.२०२६	०५:०५:४५:४९	५८।४२	०९:२१:२६:३५	७५१।४१	०३:०२:४३:५४	३५।४९	०५:२५:१४:१५	८७।५२	०३:२३:५३:०१	११।२०	०६:१२:२०:१८	२०।३१	११:१७:५७:५०	-४।३४	१०:०३:५४:२२
२४.०९.२०२६	०५:०६:४४:३१	५८।४४	१०:०३:५८:१७	७७०।०९	०३:०३:१९:४३	३५।४२	०५:२६:४२:०७	८६।४९	०३:२४:०४:२०	११।१५	०६:१२:४०:४९	१८।४०	११:१७:५३:१६	-४।३५	१०:०३:५१:११
२५.०९.२०२६	०५:०७:४३:१५	५८।४६	१०:१६:४८:२६	७८९।४७	०३:०३:५५:२६	३५।३६	०५:२८:०८:५६	८५।४५	०३:२४:१५:३६	११।११	०६:१२:५९:२९	१६।४६	११:१७:४८:४१	-४।३७	१०:०३:४८:००
२६.०९.२०२६	०५:०८:४२:०१	५८।४८	१०:२९:५८:१३	८०९।०५	०३:०४:३१:०१	३५।२९	०५:२९:३४:४१	८४।४१	०३:२४:२६:४६	११।०६	०६:१३:१६:१५	१४।४८	११:१७:४४:०४	-४।३८	१०:०३:४४:४९

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्रीरौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
१२.०९.२०२६	शनि	१	२०:२४:३७	२२:०३:४७	२४:०१:०१	२६:१३:५७	२८:३०:४६	६:४८:५५	९:०२:२७	११:१८:५१	१३:३४:५२	१५:३८:४१	१७:२३:५८	१८:५५:२९
१३.०९.२०२६	रवि	२	२०:२०:३९	२१:५९:४८	२३:५७:०३	२६:०९:५८	२८:२६:४७	६:४४:५७	८:५८:२९	११:१४:५२	१३:३०:५४	१५:३४:४३	१७:२०:००	१८:५१:३१
१४.०९.२०२६	सोम	३	२०:१६:४०	२१:५५:५०	२३:५३:०४	२६:०६:००	२८:२२:४९	६:४०::५८	८:५४:३०	११:१०:५४	१३:२६:५५	१५:३०:४४	१७:१६:०१	१८:४७:३२
१५.०९.२०२६	मंगल	४	२०:१२:४२	२१:५१:५१	२३:४९:०५	२६:०२:०१	२८:१८:५०	६:३६:५९	८:५०:३२	११:०६:५५	१३:२२:५७	१५:२६:४६	१७:१२:०२	१८:४३:३४
१६.०९.२०२६	बुध	५	२०:०८:४३	२१:४७:५२	२३:४५:०७	२५:५८:०२	२८:१४:५१	६:३३:०१	८:४६:३३	११:०२:५६	१३:१८:५८	१५:२२:४७	१७:०८:०४	१८:३९:३५
१७.०९.२०२६	गुरू	६	२०:०४:४४	२१:४३:५४	२३:४१:०८	२५:५४:०३	२८:१०:५३	६:२९:०२	८:४२:३४	१०:५८:५८	१३:१४:५९	१५:१८:४८	१७:०४:०५	१८:३५:३६
१८.०९.२०२६	शुक्र	७	२०:००:४५	२१:३९:५५	२३:३७:०९	२५:५०:०४	२८:०६:५४	३०:२१:०७	८:३८:३५	१०:५४:५९	१३:११:००	१५:१४:४९	१७:००:०६	१८:३१:३७
१९.०९.२०२६	शनि	८	१९:५६:४६	२१:३५:५६	२३:३३:१०	२५:४६:०५	२८:०२:५५	३०:१७:०८	८:३४:३६	१०:५१:००	१३:०७:०१	१५:१०:५०	१६:५६:०७	१८:२७:३८
२०.०९.२०२६	रवि	९	१९:५२:४७	२१:३१:५७	२३:२९:११	२५:४२:०६	२७:५८:५६	३०:१३:०९	८:३०:३७	१०:४७:०१	१३:०३:०२	१५:०६:५१	१६:५२:०८	१८:२३:३९
२१.०९.२०२६	सोम	१०	१९:४८:४८	२१:२७:५७	२३:२५:१२	२५:३८:०७	२७:५४:५६	३०:०९:१०	८:२६:३८	१०:४३:०१	१२:५९:०३	१५:०२:५२	१६:४८:०९	१८:१९:४०
२२.०९.२०२६	मंगल	११	१९:४४:४९	२१:२३:५८	२३:२१:१२	२५:३४:०८	२७:५०:५७	३०:०५:११	८:२२:३९	१०:३९:०२	१२:५५:०४	१४:५८:५३	१६:४४:०९	१८:१५:४१
२३.०९.२०२६	बुध	१२	१९:४०:५०	२१:१९:५९	२३:१७:१३	२५:३०:०९	२७:४६:५८	३०:०१:२१	८:१८:४०	१०:३५:०३	१२:५१:०५	१४:५४:५४	१६:४०:१०	१८:११:४२
२४.०९.२०२६	गुरू	१३	१९:३६:५०	२१:१६:००	२३:१३:१४	२५:२६:१०	२७:४२:५९	२९:५७:१२	८:१४:४१	१०:३१:०४	१२:४७:०५	१४:५०:५४	१६:३६:११	१८:०७:४२
२५.०९.२०२६	शुक्र	१४	१९:३२:५१	२१:१२:०१	२३:०९:१५	२५:२२:११	२७:३९:००	२९:५३:१३	८:१०:४१	१०:२७:०५	१२:४३:०६	१४:४६:५५	१६:३२:१२	१८:०३:४३
२६.०९.२०२६	शनि	१५	१९:२८:५२	२१:०८:०२	२३:०५:१६	२५:१८:१२	२७:३५:०१	२९:४९:१४	८:०६:४२	१०:२३:०६	१२:३९:०७	१४:४२:५६	१६:२८:१३	१७:५९:४४

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ भाद्रपद शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख १२ सितम्बरसे २६ सितम्बर २०२६ ई.तक

शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे, उत्तर–दक्षिण गोल

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
शनि	१	०७:४७	०३:२०	उत्तराफा	१२:५५	शुभ	१५:०९	बव	०७:४७	१२:१५	०६:२७	१८:४२	कन्या		१२	**सामवेदीय उपाकर्म,** बाबा रामदेव नवरात्र आरंभ, महावीर स्वामी जन्म वांचन A
रवि	२	०७:०९	०१:४४	हस्त	१३:०७	शुक्ल	१३:४३	कौलव	०७:०९	१२:१४	०६:२७	१८:४१	तुला	२५:२६	१३	**श्रीवराह जयंती,** सर्वा. ०६।२७ से १३।०७ तक अमृत सिद्धि ०६।२७ से १३।०७ तक B
सोम	३	०७:०७	०१:३९	चित्रा	१३:५५	ब्रह्म	१२:४६	गर	०७:०७	१२:१२	०६:२८	१८:४०	तुला		१४	हरितालिका तीज, **श्री विनायक चतुर्थी, श्रीगणेश स्थापना,** कलंक चतुर्थी (चन्द्र दर्शन निषेध) C
मंगल	४	०७:४५	०३:१२	स्वाति	१५:२१	ऐन्द्र	१२:२०	विष्टि	०७:४५	१२:११	०६:२८	१८:३९	तुला		१५	**ऋषि पंचमी, श्री अंगिरा जयंती,** संवत्सरी (जैन), भद्रा ०७।४५ तक, रवियोग समाप्त १५।२१ D
बुध	५	०९:००	०६:१९	विशाखा	१७:२२	वैधृति	१२:२२	बालव	०९:००	१२:०९	०६:२८	१८:३८	वृश्चिक	१०:४९	१६	बिछूड़ा प्रा. १०।४९, रवियोग प्रा. १७।२२, कुमार योग समाप्त १७।२२, सर्वा. १७।२२ से E
गुरू	६	१०:४८	१०:४९	अनुराधा	१९:५४	विष्कुम्भ	१२:४९	तैतिल	१०:४८	१२:०८	०६:२९	१८:३७	वृश्चिक		१७	**सूर्य षष्ठी, चम्पा षष्ठी, श्रीबलराम जयंती, गौरी आवाहन, संतान सप्तमी, श्रीविश्वकर्मा पूजा** F
शुक्र	७	१३:०२	१६:२१	ज्येष्ठा	२२:४५	प्रीति	१३:३४	वणिज	१३:०२	१२:०७	०६:२९	१८:३६	धनु	२२:४५	१८	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत आरंभ,** ज्येष्ठा गौरी पूजन, दग्ध योग प्रा. १३।०२ G
शनि	८	१५:२८	२२:२५	मूल	२५:४३	आयुष्मान	१४:२९	बव	१५:२८	१२:०५	०६:३०	१८:३५	धनु		१९	**दुर्गाष्टमी, श्रीराधाष्टमी, श्रीदधीचि जयंती, गौरी विसर्जन,** दग्ध योग प्रा. १५।२८ H
रवि	९	१७:५२	२८:२६	पूर्वाषा	२८:३५	सौभाग्य	१५:२२	कौलव	१७:५२	१२:०४	०६:३०	१८:३४	धनु		२०	**अदुःख नवमी (उदासीन सम्प्रदाय),** श्रीमद् भागवत सप्ताह प्रा., श्रीरामदेव नवरात्र समाप्त I
सोम	१०	२०:०१	३३:४८	उत्तराषा	-	शोभन	१६:०५	तैतिल	०६:५९	१२:०२	०६:३०	१८:३३	मकर	११:१५	२१	**दशावतार जयंती,** श्रीतेजा दशमी, रवियोग अहोरात्र, मृत्यु ०६।३० से ३०।३१ तक, दग्ध प्रा. २०।०१ से
मंगल	११	२१:४४	३८:०३	उत्तराषा	०७:०७	अतिगण्ड	१६:२९	वणिज	०८:५७	१२:०१	०६:३१	१८:३१	मकर		२२	**पद्मा एकादशी सर्वे., जलझूलनी एकादशी, डोल ग्यारस,** रवियोग समाप्त ०७।०७ J
बुध	१२	२२:५१	४०:५०	श्रवण	०९:०९	सुकर्मा	१६:२६	बव	१०:२२	११:५९	०६:३१	१८:३०	कुम्भ	२१:५७	२३	**वामन द्वादशी, श्री वामन जयंती, श्रवण द्वादशी, श्री भुवनेश्वरी जयंत, पंचक प्रारंभ** २१।५७ K
गुरू	१३	२३:१९	४१:५९	धनिष्ठा	१०:३५	धृति	१५:५४	कौलव	११:१०	११:५८	०६:३१	१८:२९	कुम्भ		२४	**प्रदोष व्रत, गौत्रिरात्रि व्रत आरंभ,** पंचक जारी, रवियोग प्रा. १०।३५, भद्रा २३।०७से, स्थिर योग प्रा. १०।३५
शुक्र	१४	२३:०७	४१:२९	शतभिषा	११:२२	शूल	१४:५१	गर	११:१८	११:५७	०६:३२	१८:२८	मीन	२९:३३	२५	**अनंत चतुर्दशी,** पंचक जारी, रवियोग समाप्त ११।२२, व्यतिपात महापात २४।३१ से २८।३६, भद्रा २३।०७ से
शनि	१५	२२:१९	३९:२७	पूर्वाभा	११:३२	गण्ड	१३:१७	विष्टि	१०:४७	११:५५	०६:३२	१८:२७	मीन		२६	**पूर्णिमा व्रत,** चंद्रोदय १७।५७, पौष्ठपदी पूर्णिमा, पूर्णिमा श्राद्ध, भागवत सप्ताह पूर्ण L

✻ भाद्रपद शुक्ल पक्ष ८ शनिवार ✻

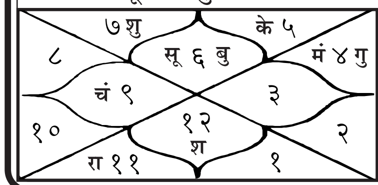
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	८	३	५	३	६	११	१०	४
अं.	०१	०३	००	१९	२३	१०	१८	०४	०४
क.	५१	२०	१९	१२	०६	४०	१५	०७	०७
वि.	१७	१८	३२	२७	५९	५८	४७	०५	०५
गति	५८ ३५	७११ ५४	३६ १५	९२ ०१	११ ३७	२७ १८	०४ २६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उफा. २	मूल २	पुनर्वसु ४	हस्त ३	आश्लेषा २	स्वाति २	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

A चंद्र दर्शन मु. ३० उत्पात ०६।२७ से १२।५५ तक, यमघण्ट व मृत्यु योग प्रा. १२।५५, वैधृति महापात १०।०१ से १३।४९ B बुध हस्त १०।४४ बुध उदय पश्चिम में ०७।१५, रवियोग १३।०७ से २१।४८, राजयोग प्रा. १३।०७ से, सूर्य उत्तराफा. पर २१।४८ संग सू.सू.स्त्री स्त्री वाहन मंडूक वर्षा श्रेष्ठ C भद्रा १९।२१ से वज्र मुसल (दग्ध) ०६।२८ से १३।५५ तक, रवियोग प्रा. १३।५५ D कुमार योग प्रा. १५।२१, दग्ध योग प्रा. ०७।४५ E अमृत सिद्धि १७।२२ से ३०।२९ तक F कार्तिक स्वामी दर्शन, बिछूड़ा, रवियोग समाप्त १९।५४, दग्ध योग समाप्त १०।४८, सर्वा. १९।५४ तक सूर्य कन्या पर ०७।५३ बं.आश्विन मास प्रा. G भद्रा १३।०२ से २६।१४ तक चर ०६।२९ से २२।४५ तक, बिछूड़ा समाप्त २२।४५, वज्र मूसल समाप्त २२।४५, मंगल कर्क में १६।३६ H रवियोग प्रा. २५।४३, सर्वा. २८।३५ से ३०।३० तक, I रवियोग अहोरात्र, सर्वा. २८।३५ से ३०।३० तक J कुमार योग ०७।०७ से २१।४४, विषुव दिन, भद्रा ०८।५७ से २१।४४ तक वज्र मुसल (दग्ध) ०६।३१ से ०७।०७ तक सायन सूर्य तुला पर २९।३५ रवि दक्षिण गोल प्रा. K मंगल पुष्य में २९।४१ राष्ट्रीय आश्विन मास प्रा., राजयोग ०९।०९ से २२।५१, वज्रमूसल प्रा. ०९।०९ से L भद्रा १०।४७ तक, पितृ तर्पण आरंभ, सन्यासी चतुर्मास समाप्त, पंचक जारी, अम्बाजी मेला (गुज.), गौत्रिरात्रि व्रत पूर्ण, बुध तुला में १२।४१

✻ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	१०	३	५	३	६	११	१०	४
अं.	०८	२९	०४	२९	२४	१३	१७	०३	०३
क.	४२	५८	३१	३४	२६	१६	४४	४४	४४
वि.	०१	१३	०१	४१	४६	१५	०४	४९	४९
गति	५८ ४८	८०९ ०५	३५ २९	८४ ४१	११ ०६	१४ ४८	०४ ३८	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उत्तराफा ४	पूर्वाभा ३	पुष्य १	चित्रा २	आश्लेषा ३	स्वाति २	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

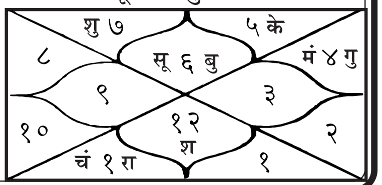
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ कन्या संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक १७.९.२०२६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष ६ गुरूवार प्रातः ७.५३ बजे कन्या संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल गुरूवार को ही प्रातःकाल सूर्योदय से मान्य रहेगा। शिक्षक, लेखक, पत्रकार, कथावाचक, धर्मोपदेशक, धर्मगुरु, नेता, अभिनेता, दलपति, किसी पार्टी का कार्यकर्ता, सुदूर क्षेत्र में निवास करने वाले, अभिभाषक आदि के लिए लाभदायक है। तैतिल करण संक्रान्ति की अवस्था सुप्ता, मुहूर्त्त ३०, गुड़, मावा, श्रीफल, खोपरा बुरा, गधा, भेड़, मिठाई, ईंट, कांसा, मूंगा, मादक पदार्थ, भगतत खनिज वस्तु, घी, शक्कर, फूल, भोजपत्र, जंगल वस्तु, इमारती लकड़ी, ताम्बा, सूखा मेवा आदि में तेजी का योग दिखता है।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



आश्विन कृष्ण पक्ष दि. २७ सितम्बर से १० अक्टूबर २०२५ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं. ३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२७.०९.२०२६	०५:०९:४०:४९	५८।५०	११:१३:२७:१८	८२६।२७	०३:०५:०६:३१	३५।२२	०६:००:५९:२२	८८।३५	०३:२४:३७:५३	११।०२	०६:१३:३१:०३	१२।४६	११:१७:३९:२६	-४।३९	१०:०३:४१:३९
२८.०९.२०२६	०५:१०:३९:३८	५८।५२	११:२७:१३:४५	८४०।३२	०३:०५:४१:५३	३५।१६	०६:०२:२२:५७	८२।२७	०३:२४:४८:५४	१०।५७	०६:१३:४३:४९	१०।४१	११:१७:३४:४७	-४।४०	१०:०३:३८:२८
२९.०९.२०२६	०५:११:३८:३०	५८।५४	००:११:१४:१८	८५०।२४	०३:०६:१७:०९	३५।०९	०६:०३:४५:२४	८१।१८	०३:२४:५९:५१	१०।५२	०६:१३:५४:३०	०८।३३	११:१७:३०:०६	-४।४१	१०:०३:३५:१७
३०.०९.२०२६	०५:१२:३७:२४	५८।५६	००:२५:२४:४१	८५५।४३	०३:०६:५२:१७	३५।०२	०६:०५:०६:४१	८०।०६	०३:२५:१०:४३	१०।४७	०६:१४:०३:०२	०६।२२	११:१७:२५:२५	-४।४२	१०:०३:३२:०६
०१.१०.२०२६	०५:१३:३६:२१	५८।५९	०१:०९:४०:२४	८५६।४८	०३:०७:२७:१९	३४।५५	०६:०६:२६:४७	७८।५१	०३:२५:२१:३०	१०।४२	०६:१४:०९:२४	०४।०७	११:१७:२०:४३	-४।४२	१०:०३:२८:५६
०२.१०.२०२६	०५:१४:३५:१९	५९।०१	०१:२३:५७:१२	८५४।२६	०३:०८:०२:१४	३४।४७	०६:०७:४५:३७	७७।३२	०३:२५:३२:१२	१०।३७	०६:१४:१३:३१	०१।५१	११:१७:१६:०१	-४।४३	१०:०३:२५:४५
०३.१०.२०२६	०५:१५:३४:२०	५९।०३	०२:०८:११:३८	८४९।३६	०३:०८:३७:०१	३४।४०	०६:०९:०३:१०	७६।१०	०३:२५:४२:४९	१०।३२	०६:१४:१५:२२	-००।२८	११:१७:११:१८	-४।४३	१०:०३:२२:३४
०४.१०.२०२६	०५:१६:३३:२३	५९।०६	०२:२२:२१:१४	८४३।०९	०३:०९:११:४१	३४।३२	०६:१०:१९:२०	७४।४३	०३:२५:५३:२१	१०।२६	०६:१४:१४:५४	-२।४९	११:१७:०६:३५	-४।४३	१०:०३:१९:२३
०५.१०.२०२६	०५:१७:३२:२९	५९।०८	०३:०६:२४:२३	८३५।४०	०३:०९:४६:१३	३४।२५	०६:११:३४:०३	७३।११	०३:२६:०३:४७	१०।२१	०६:१४:१२:०६	-५।११	११:१७:०१:५२	-४।४३	१०:०३:१६:१३
०६.१०.२०२६	०५:१८:३१:३७	५९।१०	०३:२०:२०:०३	८२७।२२	०३:१०:२०:३८	३४।१७	०६:१२:४७:१४	७१।३३	०३:२६:१४:०८	१०।१५	०६:१४:०६:५५	-७।३४	११:१६:५७:०८	-४।४३	१०:०३:१३:०२
०७.१०.२०२६	०५:१९:३०:४७	५९।१२	०४:०४:०७:२६	८१८।१०	०३:१०:५४:५५	३४।०९	०६:१३:५८:४८	६९।४८	०३:२६:२४:२३	१०।१०	०६:१३:५९:२२	-९।५७	११:१६:५२:२५	-४।४३	१०:०३:०९:५१
०८.१०.२०२६	०५:२०:२९:५९	५९।१५	०४:१७:४५:३६	८०७।४९	०३:११:२९:०४	३४।०१	०६:१५:०८:३६	६७।५५	०३:२६:३४:३३	१०।०४	०६:१३:४९:२५	-१२।२०	११:१६:४७:४३	-४।४२	१०:०३:०६:४०
०९.१०.२०२६	०५:२१:२९:१४	५९।१७	०५:०१:१३:२५	७९६।०५	०३:१२:०३:०५	३३।५३	०६:१६:१६:३१	६५।५३	०३:२६:४४:३७	०९।५८	०६:१३:३७:०५	-१४।४२	११:१६:४३:००	-४।४२	१०:०३:०३:२९
१०.१०.२०२६	०५:२२:२८:३०	५९।१९	०५:१४:२९:२९	७८२।५८	०३:१२:३६:५८	३३।४४	०६:१७:२२:२४	६३।४१	०३:२६:५४:३४	०९।५२	०६:१३:२२:२३	-१७।०२	११:१६:३८:१९	-४।४१	१०:०३:००:१९

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्रीरौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२७.०९.२०२६	रवि	१	१९:२४:५३	२१:०४:०३	२३:०१:१७	२५:१४:१३	२७:३१:०२	२९:४५:१५	८:०२:४३	१०:१९:०७	१२:३५:०८	१४:३८:५७	१६:२४:१४	१७:५५:४५
२८.०९.२०२६	सोम	२	१९:२०:५४	२१:००:०४	२२:५७:१८	२५:१०:१३	२७:२७:०३	२९:४१:१६	७:५८:४४	१०:१५:०८	१२:३१:०९	१४:३४:५८	१६:२०:१५	१७:५१:४६
२९.०९.२०२६	मंगल	३	१९:१६:५५	२०:५६:०५	२२:५३:१९	२५:०६:१५	२७:२३:०४	२९:३७:१७	७:५४:४५	१०:११:०९	१२:२७:१०	१४:३०:५९	१६:१६:१६	१७:४७:४७
३०.०९.२०२६	बुध	४	१९:१२:५६	२०:५२:०६	२२:४९:२०	२५:०२:१६	२७:१९:०५	२९:३३:१८	७:५०:४६	१०:०७:१०	१२:२३:११	१४:२७:००	१६:१२:१७	१७:४३:४८
०१.१०.२०२६	गुरू	५	१९:०८:५७	२०:४८:०७	२२:४५:२१	२५:५८:१७	२७:१५:०६	२९:२९:१९	७:४६:४८	१०:०३:११	१२:१९:१२	१४:२३:०१	१६:०८:१८	१७:३९:४९
०२.१०.२०२६	शुक्र	६	१९:०४:५९	२०:४४:०८	२२:४१:२३	२४:५४:१८	२७:११:०७	२९:२५:२१	७:४२:४९	९:५९:१२	१२:१५:१४	१४:१९:०३	१६:०४:१९	१७:३५:५१
०३.१०.२०२६	शनि	७/८	१९:०१:००	२०:४०:१०	२२:३७:२४	२४:५०:२०	२७:०७:०९	२९:२१:२२	७:३८:५०	९:५५:१४	१२:११:१५	१४:१५:०४	१६:००:२१	१७:३१:५२
०४.१०.२०२६	रवि	९	१८:५७:०२	२०:३६:११	२२:३३:२६	२४:४६:२१	२७:०३:१०	२९:१७:२४	७:३४:५२	९:५१:१५	१२:०७:१७	१४:११:०६	१५:५६:२२	१७:२७:५४
०५.१०.२०२६	सोम	१०	१८:५३:०४	२०:३२:१३	२२:२९:२७	२४:४२:२३	२६:५९:१२	२९:१३:२५	७:३०:५४	९:४७:१७	१२:०३:१८	१४:०७:०७	१५:५२:२४	१७:२३:५५
०६.१०.२०२६	मंगल	११	१८:४९:०५	२०:२८:१५	२२:२५:२९	२४:३८:२५	२६:५५:१४	२९:०९:२७	७:२६:५६	९:४३:१९	११:५९:२०	१४:०३:०९	१५:४८:२६	१७:१९:५७
०७.१०.२०२६	बुध	१२	१८:४५:०७	२०:२४:१७	२२:२१:३१	२४:३४:२७	२६:५१:१६	२९:०५:२९	७:२२:५८	९:३९:२१	११:५५:२२	१३:५९:११	१५:४४:२८	१७:१५:५९
०८.१०.२०२६	गुरू	१३	१८:४१:१०	२०:२०:१९	२२:१७:३३	२४:३०:२९	२६:४७:१८	२९:०१:३१	७:१९:००	९:३५:२३	११:५१:२५	१३:५५:१४	१५:४०:३०	१७:१२:०२
०९.१०.२०२६	शुक्र	१४	१८:३७:१२	२०:१६:२२	२२:१३:२६	२४:२६:३२	२६:४३:२१	२८:५७:३४	७:१५:०२	९:३१:२६	११:४७:२७	१३:५१:१६	१५:३६:३३	१७:०८:०४
१०.१०.२०२६	शनि	३०	१८:३३:१५	२०:१२:२४	२२:०९:३९	२४:२२:३४	२६:३९:२३	२८:५३:३७	७:११:०५	९:२७:२८	११:४३:३०	१३:४७:१९	१५:३२:३५	१७:०४:०७

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ आश्विन कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २७ सितम्बर से १० अक्टूबर २०२६ ई.तक

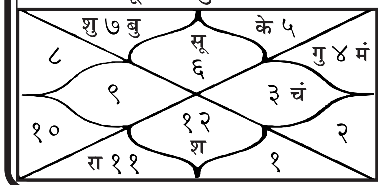
शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोल

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
रवि	१	२०:५९	३६:०७	उत्तराभा	११:०८	वृद्धि	११:१७	बालव	०९:४३	११:५४	०६:३२	१८:२६	मीन		२७	**महालय आरंभ, प्रतिप्रदा का श्राद्ध,** सर्वा. ०६।३२ से ११।०८ तक सूर्य हस्त पर १३।२० **A**
सोम	२	१९:१४	३१:४३	रेवती	१०:१६	ध्रुव/व्याघात	०८:५३ ३०:१३	तैतिल	०८:०९	११:५२	०६:३३	१८:२५	मेष	१०:१६	२८	**द्वितीया का श्राद्ध,** भद्रा ३०।१४ से पंचक समाप्त १०।१६
मंगल	३	१७:११	२६:३४	अश्विनी	०९:०४	हर्षण	२७:२०	विष्टि	१७:११	११:५१	०६:३३	१८:२४	मेष		२९	**तृतीया का श्राद्ध,** भरणी श्राद्ध, अंगारकी संकष्टी चतुर्थी, चन्द्र उदय २०।१० **B**
बुध	४	१४:५६	२०:५६	भरणी/कृतिका	०७:३७ ३०:०३	वज्र	२४:२०	बालव	१४:५६	११:४९	०६:३४	१८:२३	वृषभ	१३:१४	३०	**चतुर्थी का श्राद्ध, पंचमी का श्राद्ध, कृतिका श्राद्ध,** कुमार योग प्रा. ३०।०३ से **C**
गुरू	५	१२:३६	१५:०४	रोहिणी	२८:२७	सिद्धि	२१:१८	तैतिल	१२:३६	११:४८	०६:३४	१८:२२	वृषभ		१	**षष्ठी का श्राद्ध,** दग्ध योग प्रा. १२।३६ से, रवियोग व मृत्यु योग प्रा. २८।२७ से, उत्पात ०६।३४ से २८।२७ तक, बुध स्वात्यां ०९।२९
शुक्र	६	१०:१६	०९:१३	मृगशिरा	२६:५५	व्यतिपात	१८:१७	वणिज	१०:१६	११:४६	०६:३४	१८:२१	मिथुन	१५:४०	२	**सप्तमी का श्राद्ध,** रवियोग समाप्त २६।५५, राजयोग १०।१६ से २६।५५, भद्रा १०।१६ से २१।०७ तक
शनि	७	०८:००	०३:३३	आर्द्रा	२५:३०	वरीयान	१५:२१	बव	०८:००	११:४५	०६:३५	१८:२०	मिथुन		३	**क्षय तिथि, कालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध,** श्रीमहालक्ष्मी व्रत पूर्ण, दग्ध योग प्रा. २९।५२ **D**
शनि	८	२९:५२	५८:१४	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय, **D** राहु धनिष्ठा ३, केतु मघा १ पर २४।५२ **D-1**
रवि	९	२७:५४	५३:१८	पुनर्वसु	२४:१४	परिघ	१२:३२	तैतिल	१६:५२	११:४४	०६:३५	१८:१९	कर्क	१८:३२	४	**मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,** सर्वा. २४।१४ से
सोम	१०	२६:०८	४८:५१	पुष्य	२३:०९	शिव	०९:५१	वणिज	१५:००	११:४२	०६:३६	१८:१८	कर्क		५	**दशमी का श्राद्ध,** ज्वालामुखी योग २३।०९ से २६।०८, दग्ध योग प्रा. २६।०८ से **E**
मंगल	११	२४:३५	४४:५७	आश्लेषा	२२:१८	सिद्ध/साध्य	०७:२० २९:००	बव	१३:२०	११:४१	०६:३६	१८:१७	सिंह	२२:१८	६	**इन्दिरा एकादशी (सर्वे.), एकादशी का श्राद्ध,** कुमार योग २२।१८ से २४।३५, सर्वा. ०६।३६ से २२।१८ तक
बुध	१२	२३:१७	४१:४१	मघा	२१:४०	शुभ	२६:५२	कौलव	११:५४	११:३९	०६:३६	१८:१६	सिंह		७	**द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध,** मघा श्राद्ध, राजयोग २१।४० से २३।१७ **F**
गुरू	१३	२२:१६	३९:०९	पूर्वाफा	२१:२०	शुक्ल	२४:५८	गर	१०:४४	११:३८	०६:३७	१८:१५	कन्या	२७:१८	८	**प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि,** कलियुगादि, **त्रयोदशी का श्राद्ध,** वैधृति महापात समाप्त ०८।०७ **G**
शुक्र	१४	२१:३६	३७:२७	उत्तराफा	२१:२०	ब्रह्म	२३:२१	विष्टि	०९:५४	११:३६	०६:३७	१८:१४	कन्या		९	**चतुर्दशी का श्राद्ध, अस्त्र शस्त्र हतानां अपमृत्यु श्राद्ध,** माँ कात्यायनी जयंती, भद्रा ०९।५४ तक
शनि	३०	२१:२०	३६:४६	हस्त	२१:४३	ऐन्द्र	२२:०२	चतुष्पद	०९:२५	११:३५	०६:३८	१८:१३	कन्या		१०	**देवपितृकार्ये सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध (चतुर्दशी पूर्णिमा अमावस्या श्राद्ध) H**

✻ आश्विन कृष्ण पक्ष ७ शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	२	३	६	३	६	११	१०	४
अं.	१५	०८	०८	०९	२५	१४	१७	०३	०३
क.	३४	११	३७	०३	४२	१५	११	२२	२२
वि.	२०	३८	०१	१०	४९	२२	१८	३४	३४
गति	५९ ०३	८४१ ३६	३४ ४०	७६ १०	१० ३२	०० २८	०४ ४३	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	हस्त २	आर्द्रा १	पुष्य २	स्वाति १	आश्लेषा ३	स्वाति ३	रेवती १	धनिष्ठा ४	मघा २

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A पंचक जारी, संग सू.चं.स्त्री पु.वाहन मूषक (मृग) वर्षा मध्यम **B** राजयोग ०९।०४ से १७।११, भद्रा १७।११ तक सर्वा. ०६।३३ से ०९।०४ तक अमृत सिद्धि ०६।३३ से ०९।०४ तक, मंगल अश्विनी में **C** सर्वा. ०७।३७ से ३०।३४ तक काण ०६।३४ से ०७।३७ तक सिद्धि ०७।३७ से ३०।०३ तक बैंक अर्द्ध लेखाबंदी **D-1** स्थिर योग ०८।०० से २५।३०, शुक्र वक्री **E** भद्रा १५।०० से २६।०८ तक सर्वा. २३।०९ तक **F** वैधृति महापात २८।१७ से, चर ०६।३६ से २१।४० तक **G** गुरु आश्लेषा १८।२९, स्थिर योग प्रा. २१।२० से, वज्र मूसल योग प्रा. २१।२० से, भद्रा २२।१६ से **H** गजछाया, महालय श्राद्ध पूर्ण, पितृ विसर्जन, मृत्यु ०६।३८ से २१।४३ तक यमघंट ०६।३८ से २१।४३ तक सूर्य चित्रा पर २६।२० संग सू.स्त्री.वाहन अश्व मध्यम वर्षा

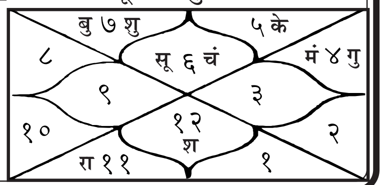
✻ महालय श्राद्ध – आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से अमावस तक के दिन महालय संज्ञक होते हैं । तिथि वृद्धि में १६ दिन, तिथि साम्य में १५ दिन, तिथि क्षय में १४ दिन होते हैं। दिवंगतों की मृत तिथि इस पक्ष में जिस दिन मध्यान्ह से अपरान्ह व्यापिनी जिस दिन हो उस दिन श्राद्ध होता है। कुछ तिथि विशिष्ट है विषेय व वर्जित हैं। १. आश्विन कृष्ण नवमी को मातृ नवमी जिसे सौभाग्यवती नवमी भी कहते हैं, इसमें मृत सौभाग्यवती स्त्री के श्राद्ध का विधान है, चाहे वह किसी भी तिथि को मृत हो। २. आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को केवल शस्त्रादिहत श्राद्ध है अर्थात् जिसकी मृत्यु शस्त्र दुर्घटना आदि में हुई हो उनकी तिथि कोई भी हो, उनका श्राद्ध चतुर्दशी को ही होगा। ३. जिनकी साधारण मृत्यु यदि चतुर्दशी को हुई हो तो उनका श्राद्ध चतुर्दशी को नहीं होना चाहिए, उनका श्राद्ध द्वादशी/अमावस्या को होगा। ४. जिनकी साधारण मृत्यु पूर्णिमा को हुई है, उनका श्राद्ध सर्वपितृ अमावस्या को होगा। यद्यपि लोक व्यवहार में पूर्णिमा श्राद्ध भाद्रपदी पूर्णिमा को किया जाता है, लेकिन पूर्णिमा महालय में सम्मिलित नहीं है।

आसोज बदी पड़वा, आठें और दशमी को आकाश में बादल हो तो शीघ्र ही वर्षा से आनंद होता है। आसोज बदी चौथ को सूर्य बादलों में उदय हो तो प्रजा में सुख शान्ति रहती है और उत्तम वर्षा होती है। आसोज बदी दशमी एकादशी और द्वादशी को बादल हो, बिजली चमके और गर्जना हो तो जौ, गेहूं की खेती में हानि होती है। आसोज में भरणी और कृतिका नक्षत्र वाले दिनों में चाँद पर कुण्डल हो तो अनाज का संग्रह करने से लाभ होता है। आसोज सुदी पंचमी को सोमवार हो और उस दिन हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो तो वर्षा होना ठीक नहीं है। यदि वर्षा हो जाये तो सुदूर मालवा देश में चले जाना चाहिए। विजयादशमी (आसोज सुदी दशमी) को बादल वर्षा हो तो उड़द, मूंग, मोठ आदि दाल, अन्न और तिलहन आदि तिल, अलसी सरसों तेज होती है।

✻ आश्विन कृष्ण पक्ष ३० शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	५	३	६	३	६	११	१०	४
अं.	२२	१४	१२	१७	२६	१३	१६	०३	०३
क.	२८	२९	३६	२२	५४	२२	३८	००	००
वि.	३०	२९	५८	२४	३४	२३	१९	१९	१९
गति	५९ १९	७८२ ५८	३३ ४४	६३ ४१	०९ ५२	१७ ०२	०४ ४१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	हस्त ४	हस्त २	पुष्य ३	स्वाति ४	आश्लेषा ४	स्वाति ३	उत्तराभा ४	धनिष्ठा ३	मघा १

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



आश्विन शुक्ल पक्ष दि. ११ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
११.१०.२०२६	०५:२३:२७:४९	५९।२१	०५:२७:३२:२७	७६८।४८	०३:१३:१०:४२	३३।३६	०६:१८:२६:०५	६१।१७	०३:२७:०४:२६	०९।४६	०६:१३:०५:२१	-११।२०	११:१६:३३:३८	-४।४०	१०:०२:५७:०८
१२.१०.२०२६	०५:२४:२७:१०	५९।२३	०६:१०:२१:१६	७५४।१५	०३:१३:४४:१८	३३।२७	०६:१९:२७:२२	५८।४०	०३:२७:१४:१२	०९।४०	०६:१२:४६:०१	-२१।३३	११:१६:२८:५८	-४।३९	१०:०२:५३:५७
१३.१०.२०२६	०५:२५:२६:३३	५९।२५	०६:२२:५५:३१	७४०।१३	०३:१४:१७:४५	३३।१८	०६:२०:२६:०२	५५।४८	०३:२७:२३:५२	०९।३३	०६:१२:२४:२८	-२३।४२	११:१६:२४:२०	-४।३७	१०:०२:५०:४६
१४.१०.२०२६	०५:२६:२५:५८	५९।२७	०७:०५:१५:४३	७२७।४५	०३:१४:५१:०३	३३।०९	०६:२१:२१:५०	५२।४०	०३:२७:३३:२५	०९।२७	०६:१२:००:४६	-२५।४५	११:१६:१९:४३	-४।३६	१०:०२:४७:३६
१५.१०.२०२६	०५:२७:२५:२४	५९।२८	०७:१७:२३:२९	७१७।५६	०३:१५:२४:१३	३३।००	०६:२२:१४:३१	४९।१४	०३:२७:४२:५१	०९।२०	०६:११:३५:००	-२७।४१	११:१६:१५:०७	-४।३४	१०:०२:४४:२५
१६.१०.२०२६	०५:२८:२४:५३	५९।३०	०७:२९:२१:२५	७११।४४	०३:१५:५७:१३	३२।५१	०६:२३:०३:४४	४५।२६	०३:२७:५२:१२	०९।१३	०६:११:०७:१९	-२९।२९	११:१६:१०:३३	-४।३२	१०:०२:४१:१४
१७.१०.२०२६	०५:२९:२४:२३	५९।३२	०८:११:१३:०९	७०९।५७	०३:१६:३०:०५	३२।४२	०६:२३:४९:११	४१।१६	०३:२८:०१:२५	०९।०७	०६:१०:३७:५०	-३१।०७	११:१६:०६:००	-४।३०	१०:०२:३८:०३
१८.१०.२०२६	०६:००:२३:५५	५९।३४	०८:२३:०३:०६	७१३।०८	०३:१७:०२:४७	३२।३३	०६:२४:३०:२७	३६।४१	०३:२८:१०:३२	०९।००	०६:१०:०६:४४	-३२।३४	११:१६:०१:३०	-४।२८	१०:०२:३४:५२
१९.१०.२०२६	०६:०१:२३:२८	५९।३५	०९:०४:५६:१४	७२१।३६	०३:१७:३५:१९	३२।२३	०६:२५:०७:०८	३१।३८	०३:२८:१९:३२	०८।५३	०६:०९:३४:०९	-३५।५०	११:१५:५७:०२	-४।२६	१०:०२:३१:४२
२०.१०.२०२६	०६:०२:२३:०४	५९।३७	०९:१६:५७:५१	७३५।२१	०३:१८:०७:४२	३२।१४	०६:२५:३८:४५	२६।०५	०३:२८:२८:२५	०८।४६	०६:०९:००:१९	-३४।५३	११:१५:५२:३६	-४।२४	१०:०२:२८:३१
२१.१०.२०२६	०६:०३:२२:४१	५९।३९	०९:२९:१३:११	७५३।५६	०३:१८:३९:५६	३२।०४	०६:२६:०४:५०	२०।००	०३:२८:३७:१०	०८।३९	०६:०८:२५:२६	-३५।४३	११:१५:४८:१२	-४।२१	१०:०२:२५:२०
२२.११.२०२६	०६:०४:२२:२०	५९।४१	१०:११:४७:०८	७७६।२७	०३:१९:१२:००	३१।५४	०६:२६:२४:५०	१३।२२	०३:२८:४५:४९	०८।३१	०६:०७:४९:४३	-३६।११	११:१५:४३:५१	-४।१८	१०:०२:२२:०९
२३.११.२०२६	०६:०५:२२:०१	५९।४२	१०:२४:४३:३५	८०१।२२	०३:१९:४३:५४	३१।४४	०६:२६:३८:१२	०६।०९	०३:२८:५४:२१	०८।२४	०६:०७:१३:२४	-३६।४०	११:१५:३९:३३	-४।१६	१०:०२:१८:५९
२४.११.२०२६	०६:०६:२१:४३	५९।४४	११:०८:०४:५६	८२६।३५	०३:२०:१५:३८	३१।३४	०६:२६:४४:२१	-१।३७	०३:२९:०२:४५	०८।१७	०६:०६:३६:४४	-३६।४५	११:१५:३५:१७	-४।१३	१०:२:१५:४८
२५.११.२०२६	०६:०७:२१:२७	५९।४६	११:२१:५१:३१	८४९।३४	०३:२०:४७:१२	३१।२४	०६:२६:४२:४४	-९।५५	०३:२९:११:०१	०८।०९	०६:०५:५९:५९	-३६।३६	११:१५:३१:०४	-४।१०	१०:०२:१२:३७
२६.११.२०२६	०६:०८:२१:१४	५९।४८	००:०६:०१:०५	८६७।४७	०३:२१:१८:३६	३१।१३	०६:२६:३२:४९	-१८।४०	०३:२९:१९:१०	०८।०१	०६:०५:२३:२३	-३६।११	११:१५:२६:५५	-४।०६	१०:०२:०९:२६

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
११.१०.२०२६	रवि	१	१८:२९:१८	२०:०८:२७	२२:०५:४१	२४:१८:३७	२६:३५:२६	२८:४९:३९	७:०७:०८	९:२३:३१	११:३९:३३	१३:४३:२२	१५:२८:३८	१७:००:१०
१२.१०.२०२६	सोम	२	१८:२५:२१	२०:०४:३०	२२:०१:४४	२४:१४:४०	२६:३१:२९	२८:४५:४२	७:०३:११	९:१९:३४	११:३५:३६	१३:३९:२५	१५:२४:४१	१६:५६:१३
१३.१०.२०२६	मंगल	३	१८:२१:२४	२०:००:३४	२१:५७:४८	२४:१०:४३	२६:२७:३३	२८:४१:४६	६:५९:१४	९:१५:३८	११:३१:३९	१३:३५:२८	१५:२०:४५	१६:५२:१६
१४.१०.२०२६	बुध	४	१८:१७:२८	१९:५६:३७	२१:५३:५१	२४:०६:४७	२६:२३:३६	२८:३७:४९	६:५५:१८	९:११:४१	११:२७:४३	१३:३१:३२	१५:१६:४८	१६:४८:१९
१५.१०.२०२६	गुरू	५	१८:१३:३१	१९:५२:४१	२१:४९:५५	२४:०२:५१	२६:१९:४०	२८:३३:५३	६:५१:२२	९:०७:४५	११:२३:४६	१३:२७:३५	१५:१२:५२	१६:४४:२३
१६.१०.२०२६	शुक्र	६	१८:०९:३६	१९:४८:४५	२१:४५:५९	२३:५८:५५	२६:१५:४४	२८:२९:५७	६:४७:२६	९:०३:४९	११:१९:५१	१३:२३:४०	१५:०८:५६	१६:४०:२७
१७.१०.२०२६	शनि	७	१८:०५:४०	१९:४४:४९	२१:४२:०४	२३:५४:५९	२६:११:४९	२८:२६:०२	६:४३:३०	८:५९:५४	११:१५:५५	१३:१९:४४	१५:०५:०१	१६:३६:३२
१८.१०.२०२६	रवि	७	१८:०१:४५	१९:४०:५४	२१:३८:०८	२३:५१:०४	२६:०७:५३	२८:२२:०६	३०:३५:३९	८:५५:५८	११:१२:००	१३:१५:४९	१५:०१:०५	१६:३२:३६
१९.१०.२०२६	सोम	८	१७:५७:५०	१९:३६:५९	२१:३४:१३	२३:४७:०९	२६:०३:५८	२८:१८:११	३०:३१:४४	८:५२:०३	११:०८:०५	१३:११:५४	१४:५७:१०	१६:२८:४१
२०.१०.२०२६	मंगल	९	१७:५३:५५	१९:३३:०४	२१:३०:१९	२३:४३:१४	२६:००:०३	२८:१४:१७	३०:२७:४९	८:४८:०८	११:०४:१०	१३:०७:५९	१४:५३:१५	१६:२४:४७
२१.१०.२०२६	बुध	१०	१७:५०:००	१९:२९:१०	२१:२६:२४	२३:३९:२०	२५:५६:०९	२८:१०:२२	३०:२३:५५	८:४४:१४	११:००:१५	१३:०४:०४	१४:४९:२१	१६:२०:५२
२२.११.२०२६	गुरू	११	१७:४६:०६	१९:२५:१६	२१:२२:३०	२३:३५:२६	२५:५२:१५	२८:०६:२८	३०:२०:०१	८:४०:२०	१०:५६:२१	१३:००:१०	१४:४५:२७	१६:१६:५८
२३.११.२०२६	शुक्र	१२	१७:४२:१२	१९:२१:२२	२१:१८:३६	२३:३१:३२	२५:४८:२१	२८:०२:३४	३०:१६:०७	८:३६:२६	१०:५२:२७	१२:५६:१६	१४:४१:३३	१६:१३:०४
२४.११.२०२६	शनि	१३	१७:३८:१४	१९:१७:२४	२१:१४:३८	२३:२७:३४	२५:४४:२३	२७:५८:३६	३०:१२:०९	८:३२:२८	१०:४८:२९	१२:५२:१८	१४:३७:३५	१६:०९:०६
२५.११.२०२६	रवि	१४	१७:३४:१४	१९:१३:२४	२१:१०:३८	२३:२३:३४	२५:४०:२३	२७:५४:३६	३०:०८:०८	८:२८:२८	१०:४४:२९	१२:४८:१८	१४:३३:३५	१६:०५:०६
२६.११.२०२६	सोम	१५	१७:३०:१४	१९:०९:२४	२१:०६:३८	२३:१९:३४	२५:३६:२३	२७:५०:३६	३०:०४:०९	८:२४:२८	१०:४०:२९	१२:४४:१८	१४:२९:३५	१६:०१:०६

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ आश्विन शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख ११अक्टूबर से २६ अक्टूबर २०२६ ई.तक

शरद–हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक अक्टूबर	
रवि	१	२१:३२	३७:१३	चित्रा	२२:३३	वैधृति	२१:०५	किंस्तुघ्न	०९:२२	११:३४	०६:३८	१८:१२	तुला	१०:०४	११	**शारदीय नवरात्र प्रा., मातामह श्राद्ध, घट स्थापना, श्रीअग्रसेन जयंती,** राजयोग २१।२५ से २२।३३ तक, शुक्र वृद्धत्व २५।२५
सोम	२	२२:१४	३८:५८	स्वाति	२३:५२	विष्कुंभ	२०:३२	बालव	०९:४९	११:३२	०६:३९	१८:११	तुला		१२	चंद्र दर्शन मु. १५, यमघण्ट प्रारंभ २३।५२ से, बुध विशाखा १८।४२
मंगल	३	२३:२८	४२:०३	विशाखा	२५:४३	प्रीति	२०:२३	तैतिल	१०:४७	११:३१	०६:३९	१८:१०	वृश्चिक	१९:१२	१३	**सिंदूर तृतीया,** बिछूड़ा प्रारंभ १९।१२, रवियोग प्रारंभ २५।४३ से
बुध	४	२५:१४	४६:२६	अनुराधा	२८:०३	आयुष्मान	२०:३९	वणिज	१२:१७	११:२९	०६:४०	१८:०९	वृश्चिक		१४	**श्री विनायक चतुर्थी,** भद्रा १२।१७ से २५।४१ तक सर्वा. ०६।४० से २८।०३ तक **A**
गुरू	५	२७:२६	५१:५४	ज्येष्ठा	-	सौभाग्य	२१:१५	बव	१४:१७	११:२८	०६:४०	१८:०८	वृश्चिक		१५	**ललिता पंचमी, श्री उपांग ललिता व्रत,** बिछूड़ा जारी, दग्ध योग प्रारंभ २७।२६ से
शुक्र	६	२९:५५	५८:०६	ज्येष्ठा	०६:४८	शोभन	२२:०५	कौलव	१६:३९	११:२६	०६:४१	१८:०७	धनु	०६:४८	१६	**श्रीसरस्वती आह्वान** ०६।४८, बिछूड़ा समाप्त ०६।४८, रवियोग प्रारंभ ०६।४८ से **B**
शनि	७	-	६०:००	मूल	०९:४७	अतिगण्ड	२३:०२	गर	१९:१२	११:२५	०६:४१	१८:०६	धनु		१७	वृद्धि तिथि, **सरस्वती पूजन** ९।४७ से १६।३३, सूर्य तुला पर १९।५१, मंगल आश्लेषायां १२।४६ **C**
रवि	७	०८:२९	०४:२८	पूर्वाषा	१२:४९	सुकर्मा	२३:५६	वणिज	०८:२९	११:२४	०६:४२	१८:०५	मकर	१९:३३	१८	**महानिशा पूजन, सरस्वती बलिदान** १२।४९ से, महालक्ष्मी पूजन, आयम्बिल औली प्रारंभ (जैन) **D**
सोम	८	१०:५२	१०:२५	उत्तराषा	१५:३९	धृति	२४:३५	बव	१०:५२	११:२२	०६:४२	१८:०४	मकर		१९	**श्रीमहादुर्गाष्टमी,** सरस्वती विसर्जन १५।३९ से २०।५४, रवियोग प्रारंभ १५।३९ से **E**
मंगल	९	१२:५१	१५:२१	श्रवण	१८:०२	शूल	२४:५०	कौलव	१२:५१	११:२१	०६:४३	१८:०४	मकर		२०	**महानवमी, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी, दशहरा, अपराजिता शमी पूजा F**
बुध	१०	१४:१२	१८:४३	धनिष्ठा	१९:४८	गण्ड	२४:३३	गर	१४:१२	११:२०	०६:४३	१८:०३	कुम्भ	०७:००	२१	**श्रीदुर्गा विसर्जन, श्रीमाधवाचार्य जयंती,** रवियोग समाप्त १९।४८ **G**
गुरू	११	१४:४९	२०:१२	शतभिषा	२०:४९	वृद्धि	२३:३९	विष्टि	१४:४९	११:१८	०६:४४	१८:०२	कुम्भ		२२	**पापांकुशा एकादशी (सर्वे.),** पंचक जारी, भद्रा १४।४९ तक
शुक्र	१२	१४:३६	१९:४१	पूर्वाभा	२१:०३	ध्रुव	२२:०८	बालव	१४:३६	११:१७	०६:४४	१८:०१	मीन	१५:०४	२३	**प्रदोष व्रत, पंचक जारी,** रवियोग प्रारंभ **२१।०३, राष्ट्रीय कार्तिक मास प्रा. H**
शनि	१३	१३:३७	१७:१२	उत्तराभा	२०:३२	व्याघात	२०:०१	तैतिल	१३:३७	११:१५	०६:४५	१८:००	मीन		२४	**पंचक जारी,** रवियोग समाप्त १२।५१, रवियोग प्रारंभ २०।३२, स्थिर योग प्रारंभ २०।३२ **I**
रवि	१४	११:५७	१२:५८	रेवती	१९:२२	हर्षण	१७:२२	वणिज	११:५७	११:१४	०६:४५	१७:५९	मेष	१९:२२	२५	**शरद पूर्णिमा व्रत, क्षीरपान, कोजागरी व्रत,** पंचक समाप्त १९।२२, रवियोग समाप्त १९।२२ **J**
सोम	१५	०९:४२	०७:२०	अश्विनी	१७:४१	वज्र	१४:१७	बव	०९:४२	११:१३	०६:४६	१७:५९	मेष		२६	**श्री वाल्मिकी जयंती, कार्तिक स्नान आरंभ, दीपदान आरंभ,** आयम्बिल औली समाप्त **K**

✻ आश्विन शुक्ल पक्ष ८ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	९	३	६	३	६	११	१०	४
अं.	०१	०४	१७	२५	२८	०९	१५	०२	०२
क.	२३	५६	३५	०७	१९	३४	५७	३१	३१
वि.	२८	१४	१९	०८	३२	०९	०२	४२	४२
गति	५९ ३५	७२१ ३६	३२ २३	३१ ३८	०८ ५३	३३ ५०	०४ २६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	चित्रा ३	उ.षा. ३	आश्लेषा १	विशाखा २	आश्लेषा ४	स्वाति १	उ.भा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

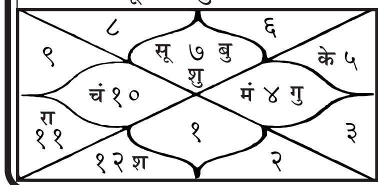
A अमृत सिद्धि ०६।४० से २८।०३ तक, बिछूड़ा जारी, शुक्र अस्त पश्चिम में १८।१३, रवियोग समाप्त २८।०३ **B** कुमार योग प्रारंभ ०६।४८ से २९।५, वज्र मूसल योग समाप्त ०६।४८, चर ०६।४१ से ०६।४८ तक **C** रवियोग समाप्त ९।४७, मंगल आश्लेषायां १२।४६ बं.कार्तिक मास प्रा. **D** राजयोग समाप्त ०८।२९, भद्रा ०८।२९ से २१।४३ तक सर्वा. १२।४९ से ३०।४२ तक **E** सर्वा. १५।३९ से ३०।४३ तक मृत्यु ०६।४२ से १५।३९ तक **F** **अस्त्र शस्त्र पूजन, श्रीबुद्धजयंती,** रवियोग अहोरात्र, सूर्य चित्रा ४ पर २८।२५ तक, कुमार योग १२।५१ से १८।०२ **G** व्यतिपात महापात १८।०० से २२।१६, भद्रा २६।३६ से वज्र मुसल (दग्ध) ०६।४३ से १९।४८ तक पंचक प्रारंभ ०७।०० **H** शुक्र चित्रायां २७।२२, सायन सूर्य वृश्चिक पर १५।०८ हेमन्त ऋतु प्रा. **I** वज्र मूसल योग प्रारंभ २०।३२, सूर्य स्वाति पर १२।५१ संग सू.चं.स्त्री.पु.वाहन मंडूक वर्षा श्रेष्ठ **J** श्रीकृपालु जयंती भद्रा ११।५७ से २२।५३ तक सर्वा. १९।२२ से ३०।४६ तक पंचक समाप्त १९।२२ **K** कुमार योग ९।४२ से १७।५१ भद्रा ११।५७ से २२।५३ तक सर्वा. १९।२२ से ३०।४६ तक पंचक समाप्त १९।२२

✻ **चतुर्थाष्टमद्वाद्वशचन्द्र विचार** ✻ **उत्सवे चाभिषेके च जनने व्रतबन्धने। पारिग्रहे प्रयाणे च शशिर्द्वादशग शुभ ॥** प्रयाण, राज्याभिषेक, जन्मकाल, जनेउ, विवाह या उत्सवों में बारहवाँ चन्द्र शुभ कहा गया है। **अष्टमे द्वादशे चन्द्रे कन्यायां नैव शस्यते। करग्रहश्चतुर्थेपि संमवे सति नो भवेत्** आठवाँ, बारहवाँ चन्द्र कन्या को श्रेष्ठ नहीं परन्तु विवाह में शुभ दिवस नहीं मिलता हो तो चौथे चन्द्र में विवाह करना शुभ है।

✻ आश्विन शुक्ल पक्ष १५ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	०	३	६	३	६	११	१०	४
अं.	०८	०६	२१	२६	२९	०५	१५	०२	०२
क.	२१	०१	१८	३२	१९	२३	२६	०९	०९
वि.	१४	०५	३६	४९	१०	२३	५५	२६	२६
गति	५९ ४८	८६७ ४७	३१ १३	१८ ४०	०८ ०१	३६ ११	०४ ०६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	स्वाति १	अश्विनी २	आश्लेषा २	विशाखा २	आश्लेषा ४	चित्रा ४	उ.भा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

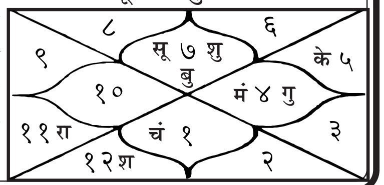
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



तुला संक्रान्ति फलम्

दिनांक १७.१०.२०२६ आश्विन शुक्ल पक्ष ७ शनिवार को सायं ७.५१ बजे तुला संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल शनिवार के दिन मध्यान्ह वेला से मान्य रहेगा। श्रम कर आजीविका चलाने वाले, बेरोजगार, निर्धन, गरीब, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आदिवासी, अल्पसंख्यक, वृद्ध, असहाय आदि के लिए लाभदायक है। वणिज करण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट, मुहूर्त्त ३०, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, मशीनरी–कलपूर्जे, अजवाईन, कलौंजी, उड़द, कालीमिर्च, विष पदार्थ–रसायन, तिल, अफीम, जीरा, तरल द्रव्य आदि में तेजीकारक योग बन पावे।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



कार्तिक कृष्ण पक्ष दि. २७ अक्टूबर से ९ नवम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२७.१०.२०२६	०६:०९:२१:०२	५९।५०	००:२०:२८:५३	८७९।११	०३:२१:४९:४९	३१।०३	०६:२६:१४:०९	-२७।४५	०३:२९:२७:१२	०७।५४	०६:०४:४७:११	-३५।३२	११:१५:२२:४८	-४।०३	१०:०२:०६:१६
२८.१०.२०२६	०६:१०:२०:५२	५९।५२	०१:०५:०८:०३	८८२।४६	०३:२२:२०:५२	३०।५२	०६:२५:४६:२४	-३७।००	०३:२९:३५:०६	०७।४६	०६:०४:११:४०	-३४।३८	११:१५:१८:४५	-४।००	१०:०२:०३:०५
२९.१०.२०२६	०६:११:२०:४४	५९।५४	०१:१९:५०:४९	८७८।५४	०३:२२:५१:४५	३०।४१	०६:२५:०९:२४	-४६।०८	०३:२९:४२:५१	०७।३८	०६:०३:३७:०२	-३३।३०	११:१५:१४:४५	-३।५६	१०:०१:५९:५४
३०.१०.२०२६	०६:१२:२०:३९	५९।५६	०२:०४:२९:४३	८६९।०४	०३:२३:२२:२६	३०।३०	०६:२४:२३:१६	-५४।५१	०३:२९:५०:२९	०७।३०	०६:०३:०३:३२	-३२।०९	११:१५:१०:४९	-३।५३	१०:०१:५६:४३
३१.१०.२०२६	०६:१३:२०:३५	५९।५९	०२:१८:५८:४७	८५५।२३	०३:२३:५२:५६	३०।१९	०६:२३:२८:२५	-६२।४७	०३:२९:५७:५९	०७।२२	०६:०२:३१:२३	-३०।३७	११:१५:०६:५७	-३।४९	१०:०१:५३:३२
०१.११.२०२६	०६:१४:२०:३४	६०।०१	०३:०३:१४:१०	८४०।००	०३:२४:२३:१५	३०।०७	०६:२२:२५:३८	-६९।३०	०४:००:०५:२१	०७।१३	०६:०२:००:४६	-२८।५४	११:१५:०३:०८	-३।४५	१०:०१:५०:२२
०२.११.२०२६	०६:१५:२०:३५	६०।०३	०३:१७:१४:१०	८२४।३३	०३:२४:५३:२२	२९।५५	०६:२१:१६:०८	-७४।३५	०४:००:१२:३४	०७।०५	०६:०१:३१:५३	-२७।०१	११:१४:५९:२३	-३।४१	१०:०१:४७:११
०३.११.२०२६	०६:१६:२०:३८	६०।०५	०४:००:५८:४३	८१०।०५	०३:२५:२३:१७	२९।४३	०६:२०:०१:३३	-७७।३८	०४:००:१९:३९	०६।५६	०६:०१:०४:५२	-२५।००	११:१४:५५:४२	-३।३७	१०:०१:४४:००
०४.११.२०२६	०६:१७:२०:४३	६०।०७	०४:१४:२८:४८	७९६।५७	०३:२५:५३:००	२९।३१	०६:१८:४३:५४	-७८।२३	०४:००:२६:३५	०६।४७	०६:००:३९:५२	-२२।५२	११:१४:५२:०६	-३।३२	१०:०१:४०:४९
०५.११.२०२६	०६:१८:२०:५०	६०।०९	०४:२७:४५:४५	७८५।०४	०३:२६:२२:३१	२९।१८	०६:१७:२५:३२	-७६।३९	०४:००:३३:२२	०६।३९	०६:००:१७:००	-२०।३८	११:१४:४८:३४	-३।२८	१०:०१:३७:३९
०६.११.२०२६	०६:१९:२०:५९	६०।११	०५:१०:५०:४९	७७३।५९	०३:२६:५१:४९	२९।०५	०६:१६:०८:५३	-७२।२७	०४:००:४०:०१	०६।३०	०५:२९:५६:२२	-१८।११	११:१४:४५:०६	-३।२३	१०:०१:३४:२८
०७.११.२०२६	०६:२०:२१:११	६०।१३	०५:२३:४४:४८	७६३।१७	०३:२७:२०:५४	२८।५२	०६:१४:५६:२६	-६५।५९	०४:००:४६:३०	०६।२१	०५:२९:३८:०३	-१५।५७	११:१४:४१:४३	-३।१९	१०:०१:३१:१७
०८.११.२०२६	०६:२१:२१:२४	६०।१५	०६:०६:२८:०५	७५२।३८	०३:२७:४९:४५	२८।३८	०६:१३:५०:२७	-५७।३३	०४:००:५२:५१	०६।११	०५:२९:२२:०६	-१३।३२	११:१४:३८:२४	-३।१४	१०:०१:२८:०६
०९.११.२०२६	०६:२२:२१:३९	६०।१७	०६:१९:००:४३	७४२।००	०३:२८:१८:२३	२८।२४	०६:१२:५२:५५	-४७।३५	०४:००:५९:०२	०६।०२	०५:२९:०८:३४	-११।०५	११:१४:३५:१०	-३।०९	१०:०१:२४:५६

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२७.१०.२०२६	मंगल	१/२	१७:२६:१५	१९:०५:२४	२१:०२:३८	२३:१५:३४	२५:३२:२३	२७:४६:३७	३०:००:०९	८:२०:२८	१०:३६:३०	१२:४०:१९	१४:२५:३५	१५:५७:०७
२८.१०.२०२६	बुध	३	१७:२२:१५	१९:०१:२५	२०:५८:३९	२३:११:३५	२५:२८:२४	२७:४२:३७	२९:५६:१०	८:१६:२९	१०:३२:३०	१२:३६:१९	१४:२१:३६	१५:५३:०७
२९.१०.२०२६	गुरू	४	१७:१८:१७	१८:५७:२६	२०:५४:४०	२३:०७:३६	२५:२४:२५	२७:३८:३८	२९:५२:११	८:१२:३०	१०:२८:३२	१२:३२:२१	१४:१७:३७	१५:४९:०८
३०.१०.२०२६	शुक्र	५	१७:१४:१८	१८:५३:२७	२०:५०:४२	२३:०३:३७	२५:२०:२७	२७:३४:४०	२९:४८:१२	८:०८:३२	१०:२४:३३	१२:२८:२२	१४:१३:३९	१५:४५:१०
३१.१०.२०२६	शनि	६	१७:१०:२०	१८:४९:२९	२०:४६:४३	२२:५९:३९	२५:१६:२८	२७:३०:४२	२९:४४:१४	८:०४:३३	१०:२०:३५	१२:२४:२४	१४:०९:४०	१५:४१:१२
०१.११.२०२६	रवि	७	१७:०६:२२	१८:४५:३१	२०:४२:४६	२२:५५:४१	२५:१२:३०	२७:२६:४४	२९:४०:१६	८:००:३५	१०:१६:३७	१२:२०:२६	१४:०५:४२	१५:३७:१४
०२.११.२०२६	सोम	८	१७:०२:२४	१८:४१:३४	२०:३८:४८	२२:५१:४४	२५:०८:३३	२७:२२:४६	२९:३६:१८	७:५६:३८	१०:१२:३९	१२:१६:२८	१४:०१:४५	१५:३३:१६
०३.११.२०२६	मंगल	९	१६:५८:२७	१८:३७:३६	२०:३४:५१	२२:४७:४६	२५:०४:३५	२७:१८:४९	२९:३२:२१	७:५२:४०	१०:०८:४२	१२:१२:३१	१३:५७:४७	१५:२९:१९
०४.११.२०२६	बुध	१०	१६:५४:३०	१८:३३:३९	२०:३०:५४	२२:४३:४९	२५:००:३८	२७:१४:५२	२९:२८:२४	७:४८:४३	१०:०४:४५	१२:०८:३४	१३:५३:५०	१५:२५:२२
०५.११.२०२६	गुरू	११	१६:५०:३३	१८:२९:४३	२०:२६:५७	२२:३९:५३	२४:५६:४२	२७:१०:५५	२९:२४:२७	७:४४:४७	१०:००:४८	१२:०४:३७	१३:४९:५४	१५:२१:२५
०६.११.२०२६	शुक्र	१२	१६:४६:३७	१८:२५:४६	२०:२३:००	२२:३५:५६	२४:५२:४५	२७:०६:५८	२९:२०:३१	७:४०:५०	९:५६:५२	१२:००:४१	१३:४५:५७	१५:१७:२८
०७.११.२०२६	शनि	१३	१६:४२:४०	१८:२१:५०	२०:१९:०४	२२:३२:००	२४:४८:४९	२७:०३:०२	२९:१६:३५	७:३६:५४	९:५२:५६	११:५६:४४	१३:४२:०१	१५:१३:३२
०८.११.२०२६	रवि	१४	१६:३८:४५	१८:१७:५४	२०:१५:०८	२२:२८:०४	२४:४४:५३	२६:५९:०६	२९:१२:३९	७:३२:५८	९:४९:००	११:५२:४९	१३:३८:०५	१५:०९:३६
०९.११.२०२६	सोम	३०	१६:३४:४९	१८:१३:५८	२०:११:१३	२२:२४:०८	२४:४०:५८	२६:५५:११	२९:०८:४३	७:२९:०३	९:४५:०४	११:४८:५३	१३:३४:१०	१५:०५:४१

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ कार्तिक कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २७ अक्टूबर से ९ नवम्बर २०२६ ई.तक

हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले

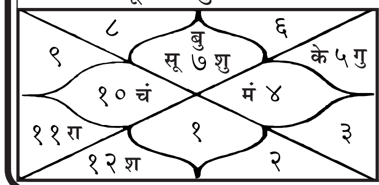
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक अक्टू.-नवं.	
मंगल	१	०७:०२	००:३९	भरणी	१५:३९	सिद्धि	१०:५३	कौलव	०७:०२	११:११	०६:४६	१७:५८	वृषभ	२१:०७	२७	क्षय तिथि, राजयोग ०७।०२ से १५।३९, सर्वा. १५।३९ से मूसल ०६।४६ से १५।३९ तक, त्रिपुष्कर योग १५।३९ से २८।०७
मंगल	२	२८:०७	५३:२२	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	
बुध	३	२५:०७	४५:५१	कृतिका	१३:२६	व्यतिपात/वरियान	०७:१८ २७:४०	वणिज	१४:३७	११:१०	०६:४७	१७:५७	वृषभ		२८	दग्ध योग समाप्त २५।०७, भद्रा १४।३७ से २५।०७ तक सर्वा. ३०।४८ तक सिद्धि ०६।४७ से १३।२६ तक, शुक्र उदय पूर्व में
गुरू	४	२२:११	३८:२८	रोहिणी	११:१२	परिध	२४:०६	बव	११:३८	११:०९	०६:४८	१७:५६	मिथुन	२२:०७	२९	**संकष्टी चतुर्थी,** चंद्र उदय २०।५० **करवा चौथ** मृत्यु योग प्रारंभ ११।१२ से **A**
शुक्र	५	१९:२५	३१:३३	मृगशिरा	०९:०४	शिव	२०:४१	कौलव	०८:४६	११:०८	०६:४८	१७:५६	मिथुन		३०	
शनि	६	१६:५८	२५:२३	आर्द्रा/पुनर्वसु	०७:१२ २९:४०	सिद्ध	१७:३१	वणिज	१६:५८	११:०६	०६:४९	१७:५५	कर्क	२४:०१	३१	**सरदार पटेल जयंती,** रवियोग ०७।१२ से २९।४०, गुरू सिंह में १२।०२ से, भद्रा १६।५८ से २७।५२ तक
रवि	७	१४:५२	२०:०७	पुष्य	२८:३१	साध्य	१४:३९	बव	१४:५२	११:०५	०६:४९	१७:५४	कर्क		१	**कालाष्टमी, अहोई अष्टमी,** राधाकुण्ड स्नान (वृन्दावन), राजयोग समापत १४।५२ **B**
सोम	८	१३:११	१५:५३	आश्लेषा	२७:४६	शुभ	१२:०६	कौलव	१३:११	११:०४	०६:५०	१७:५४	सिंह	२७:४६	२	वैधृति महापात २०।१७ से २४।४०, बुध स्वात्यां २९।५९
मंगल	९	११:५५	१२:४१	मघा	२७:२६	शुक्ल	०९:५४	गर	११:५५	११:०३	०६:५१	१७:५३	सिंह		३	कुमार योग ११।५५ से २७।२६, भद्रा २३।२६ से, शुक्र बाल्यत्व समाप्त २३।५५
बुध	१०	११:०४	१०:३१	पूर्वाफा	२७:३०	ब्रह्म/ऐन्द्र	०८:०१ ३०:२६	विष्टि	११:०४	११:०१	०६:५१	१७:५२	सिंह		४	भद्रा ११।०४ तक
गुरू	११	१०:३६	०९:२१	उत्तराफा	२७:५६	वैधृति	२९:०९	बालव	१०:३६	११:००	०६:५२	१७:५२	कन्या	०९:३४	५	**रमा एकादशी (सर्वे.) गौवत्स द्वादशी,** शुक्र वक्री कन्या में २५।१७ **C**
शुक्र	१२	१०:३१	०९:०७	हस्त	२८:४३	विष्कुम्भ	२८:१०	तैतिल	१०:३१	१०:५९	०६:५२	१७:५१	कन्या		६	**प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धन्वंतरि पूजन, यमदीपदान,** सूर्य विशाखा पर २१।०३
शनि	१३	१०:४८	०९:४८	चित्रा	२९:५२	प्रीति	२७:२७	वणिज	१०:४८	१०:५८	०६:५३	१७:५१	तुला	१७:१५	७	**श्रीकालभैरव हनुमंत पूजा, श्रीहनुमान जयंती,** मास शिवरात्रि, भद्रा १०।४८ से २३।०५ तक **D**
रवि	१४	११:२८	११:२७	स्वाति	-	आयुष्मान	२७:०३	शकुनि	११:२८	१०:५६	०६:५४	१७:५०	तुला		८	**नरक चतुर्दशी, दर्श अमावस्या, अभ्यंग स्नान, दीपावली महालक्ष्मी पूजन, महावीर स्वामी निर्वाण दिवस**
सोम	३०	१२:३२	१४:०४	स्वाति	०७:२४	सौभाग्य	२६:५७	नाग	१२:३२	१०:५५	०६:५४	१७:५०	वृश्चिक	२६:४८	९	**सोमवती अमावस्या** १२।३२ तक, **गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, गौक्रीड़ा, अन्नकूट E**

A बुध अस्त पश्चिम में, उत्पात ०६।४८ से ११।१२ तक **B** रविपुष्य समाप्त २८।३१, सर्वा. ०६।४९ से २८।३१ तक, सोना–चाँदी चौपड़ा क्रय करने का श्रेष्ठ मुहूर्त्त **C** वज्र मुसल (दग्ध) ०६।५२ से २७।५६ तक **D** सर्वा. २९।५२ से ३०।५४ तक काण ०६।५३ से २९।५२ तक, स्थिर योग प्रा. २९।५२ **E** **बिछूड़ा प्रारंभ** २६।४८ से, बुध उदय पूर्व में, कुमार योग प्रारंभ १२।३२, यमघण्ट योग प्रारंभ ०७।२४

✻ कार्तिक कृष्ण पक्ष ८ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	३	३	६	४	६	११	१०	४
अं.	१५	१७	२४	२१	००	०१	१४	०१	०१
क.	२०	१४	५३	१६	१२	३१	५९	४७	४७
वि.	३५	१०	२२	०८	३४	५३	२३	११	११
गति	६० ०३	८२४ ३३	२९ ५५	७४ ३५	०७ ०५	२७ ०१	०३ ४१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	स्वाति ३	आश्लेषा १	आश्लेषा ३	विशाखा १	मघा १	चित्रा ३	उ.भा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ वर्षा योग ✻

तितर वरणी वादरी विधवा काजर रेख।
वा बरसे, वा घर करे इनमें मीन न मेख॥

अर्थात् – यदि बादल तितर वर्ण के हो रहे हों तो वे उसी प्रकार से निश्चित वर्षा करेंगे, जिस प्रकार से कि विधवा महिला ने काजल लगाया है तो वह घर निश्चित ही बसायेगी।

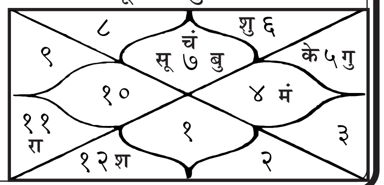
✻ पक्ष फल ✻

कार्तिक बदी एकम को सूरज उदय होते समय अथवा सायंकाल सूर्य के कुण्डल हो तो सरसों, अलसी, तेल आदि तिलहन में विशेष तेजी आती है। सरसों तिल तेल आदि तिलहन का व्यापार नहीं करना चाहिए। कार्तिक बदी दशमी शनिवार यदि आकाश में बादल हो तो पूंगीफल (सुपारी) और घी खरीदकदर चौथे महीने में बेचने से लाभ होता है। कार्तिक बदी एकादशी को आकाश में बादल हो तो आगामी आषाढ में अच्छी वर्षा होती है। कार्तिक में सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण हो, भूकम्प हो, बिजली धूल उड़े, उल्कापात, तारा टूटे या और कोई उत्पात हो तो धान्य का संग्रह करना चाहिये और पांच महीने बाद बेचने से लाभ होता है।

✻ कार्तिक कृष्ण पक्ष ३० सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	६	३	६	४	५	११	१०	४
अं.	२२	१९	२८	१२	००	२९	१४	०१	०९
क.	२१	००	१८	५२	५९	०८	३५	२४	२४
वि.	३९	४३	२३	५५	०२	३४	१०	५६	५६
गति	६० १७	७४२ ०१	२८ २४	४७ ३५	०६ ०२	११ ०५	०३ ०९	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	विशाखा १	स्वाति ४	आश्लेषा ४	स्वाति २	मघा १	चित्रा २	उ.भा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



कार्तिक शुक्ल पक्ष दि. १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
१०.११.२०२६	०६:२३:२१:५६	६०।१९	०७:०१:२२:४३	७३।४०	०३:२८:४६:४७	२८।१०	०६:१२:०५:२०	-३६।३५	०४:०१:०५:०५	०५।५३	०५:२८:५७:२९	-८।३७	११:१४:३२:०१	-३।०४	१०:०१:२१:४५
११.११.२०२६	०६:२४:२२:१५	६०।२०	०७:१३:३४:२२	७२।१३	०३:२९:१४:५७	२७।५६	०६:११:२८:४५	-२५।०१	०४:०१:१०:५७	०५।४३	०५:२८:४८:५१	-६।०९	११:१४:२८:५७	-२।५९	१०:०१:१८:३४
१२.११.२०२६	०६:२५:२२:३५	६०।२२	०७:२५:३६:३६	७१।२८	०३:२९:४२:५३	२७।४१	०६:११:०३:४४	-१३।१९	०४:०१:१६:४१	०५।३४	०८:२८:४२:४२	-३।४२	११:१४:२५:५८	-२।५४	१०:०१:१५:२३
१३.११.२०२६	०६:२६:२२:५७	६०।२३	०८:०७:३१:०४	७०।२०	०४:००:१०:३४	२७।२६	०६:१०:५०:२४	-१।५१	०४:०१:२२:१४	०५।२४	०५:२८:३९:००	-१।१६	११:१४:२३:०५	-२।४८	१०:०१:१२:१२
१४.११.२०२६	०६:२७:२३:२०	६०।२५	०८:१९:२०:२४	७०।४३	०४:००:३८:०१	२७।११	०६:१०:४८:३४	०९।०७	०४:०१:२७:३८	०५।१४	०५:२८:३७:४४	०१।०९	११:१४:२०:१६	-२।४३	१०:०१:०९:०२
१५.११.२०२६	०६:२८:२३:४५	६०।२६	०९:०१:०८:०७	७१।२८	०४:०१:०५:१२	२६।५६	०६:१०:५७:४०	१९।२२	०४:०१:३२:५२	०५।०४	०५:२८:३८:५३	०३।३२	११:१४:१७:३३	-२।३८	१०:०१:०५:५१
१६.११.२०२६	०६:२९:२४:११	६०।२७	०९:१२:५८:३५	७१।१५	०४:०१:३२:०८	२६।४०	०६:११:१७:०२	२८।४८	०४:०१:३७:५६	०४।५४	०५:२८:४२:२५	०५।५२	११:१४:१४:५६	-२।३२	१०:०१:०२:४०
१७.११.२०२६	०७:००:२४:३८	६०।२९	०९:२४:५६:५०	७३।२९	०४:०१:५८:४८	२६।२४	०६:११:४५:५०	३७।२०	०४:०१:४२:५०	०४।४४	०५:२८:४८:१७	०८।०९	११:१४:१२:२४	-२।२६	१०:००:५९:२९
१८.११.२०२६	०७:०१:२५:०७	६०।३०	१०:०७:०८:१८	७५।१३	०४:०२:२५:१२	२६।०८	०६:१२:२३:११	४४।५९	०४:०१:४७:३४	०४।३४	०५:२८:५६:२७	१०।२४	११:१४:०९:५७	-२।२१	१०:००:५६:१९
१९.११.२०२६	०७:०२:२५:३७	६०।३१	१०:१९:३८:३१	७७।५९	०४:०२:५१:२०	२५।५१	०६:१३:०८:१०	५१।४६	०४:०१:५२:०८	०४।२४	०५:२९:०६:५१	१२।३५	११:१४:०७:३६	-२।१५	१०:००:५३:०८
२०.११.२०२६	०७:०३:२६:०९	६०।३३	११:०२:३२:३०	८०।३७	०४:०३:१७:११	२५।३५	०६:१३:५९:५६	५७।४३	०४:०१:५६:३२	०४।१३	०५:२९:१९:२६	१४।४३	११:१४:०५:२१	-२।०९	१०:००:४९:५७
२१.११.२०२६	०७:०४:२६:४१	६०।३४	११:१५:५४:०८	८३।०७	०४:०३:४२:४६	२५।१८	०६:१४:५७:३९	६२।५४	०४:०२:००:४५	०४।०३	०५:२९:३४:०९	१६।४८	११:१४:०३:१२	-२।०३	१०:००:४६:४६
२२.११.२०२६	०७:०५:२७:१५	६०।३५	११:२९:४५:१४	८५।३८	०४:०४:०८:०३	२५।००	०६:१६:००:३३	६७।२४	०४:०२:०४:४८	०३।५२	०५:२९:५०:५७	१८।४९	११:१४:०१:०९	-१।५७	१०:००:४३:३५
२३.११.२०२६	०७:०६:२७:५०	६०।३६	००:१४:०४:५३	८८।४८	०४:०४:३३:०३	२४।४२	०६:१७:०७:५७	७१।१७	०४:०२:०८:४१	०३।४२	०६:००:०९:४६	२०।४७	११:१३:५९:११	-१।५१	१०:००:४०:२५
२४.११.२०२६	०७:०७:२८:२७	६०।३८	००:२८:४८:४१	९००।२३	०४:०४:५७:४६	२४।२४	०६:१८:१९:१५	७४।३७	०४:०२:१२:२२	०३।३१	०६:००:३०:३३	२२।४१	११:१३:५७:२०	-१।४५	१०:००:३७:१४

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
१०.११.२०२६	मंगल	१	१६:३०:५४	१८:१०:०३	२०:०७:१७	२२:२०:१३	२४:३७:०२	२६:५१:१५	२९:०४:४८	७:२५:०७	९:४१:०९	११:४४:५८	१३:३०:१४	१५:०१:४५
११.११.२०२६	बुध	२	१६:२६:५८	१८:०६:०८	२०:०३:२२	२२:१६:१८	२४:३३:०७	२६:४७:२०	२९:००:५३	७:२१:१२	९:३७:१४	११:४१:०२	१३:२६:१९	१४:५७:५०
१२.११.२०२६	गुरू	३	१६:२३:०४	१८:०२:१३	१९:५९:२७	२२:१२:२३	२४:२९:१२	२६:४३:२५	२८:५६:५८	७:१७:१७	९:३३:१९	११:३७:०८	१३:२२:२४	१४:५३:५५
१३.११.२०२६	शुक्र	४	१६:१९:०९	१७:५८:१८	१९:५५:३३	२२:०८:२८	२४:२५:१८	२६:३९:३१	२८:५३:०३	७:१३:२३	९:२९:२४	११:३३:१३	१३:१८:२९	१४:५०:०१
१४.११.२०२६	शनि	५	१६:१५:१४	१७:५४:२४	१९:५१:३८	२२:०४:३४	२४:२१:२३	२६:३५:३६	२८:४९:०९	७:०९:२८	९:२५:२९	११:२९:१८	१३:१४:३५	१४:४६:०६
१५.११.२०२६	रवि	६	१६:११:२०	१७:५०:२९	१९:४७:४४	२२:००:३९	२४:१७:२९	२६:३१:४२	२८:४५:१४	७:०५:३४	९:२१:३५	११:२५:२४	१३:१०:४१	१४:४२:१२
१६.११.२०२६	सोम	७	१६:०७:२६	१७:४६:३५	१९:४३:५०	२१:५६:४५	२४:१३:३४	२६:२७:४८	२८:४१:२०	७:०१:३९	९:१७:४१	११:२१:३०	१३:०६:४६	१४:३८:१८
१७.११.२०२६	मंगल	८	१६:०३:३२	१७:४२:४१	१९:३९:५५	२१:५२:५१	२४:०९:४०	२६:२३:५४	२८:३७:२६	३०:५३:४९	९:१३:४७	११:१७:३६	१३:०२:५२	१४:३४:२४
१८.११.२०२६	बुध	९	१५:५९:३८	१७:३८:४७	१९:३६:०२	२१:४८:५७	२४:०५:४६	२६:२०:००	२८:३३:३२	३०:४९:५६	९:०९:५३	११:१३:४२	१२:५८:५८	१४:३०:३०
१९.११.२०२६	गुरू	९	१५:५५:४४	१७:३४:५३	१९:३२:०८	२१:४५:०३	२४:०१:५३	२६:१६:०६	२८:२९:३८	३०:४६:०२	९:०५:५९	११:०९:४८	१२:५५:०५	१४:२६:३६
२०.११.२०२६	शुक्र	१०/११	१५:५१:४०	१७:३१:००	१९:२८:१४	२१:४१:१०	२३:५७:५९	२६:१२:१२	२८:२५:४४	३०:४२:०८	९:०२:०५	११:०५:५४	१२:५१:११	१४:२२:४२
२१.११.२०२६	शनि	१२	१५:४७:५६	१७:२७:०६	१९:२४:२०	२१:३७:१६	२३:५४:०५	२६:०८:१८	२८:२१:५१	३०:३८:१४	८:५८:११	११:०२:००	१२:४७:१७	१४:१८:४८
२२.११.२०२६	रवि	१३	१५:४४:०२	१७:२३:१२	१९:२०:२६	२१:३३:२२	२३:५०:११	२६:०४:२४	२८:१७:५७	३०:३४:२०	८:५४:१८	१०:५८:०७	१२:४३:२३	१४:१४:५४
२३.११.२०२६	सोम	१४	१५:४०:११	१७:१९:२०	१९:१६:३४	२१:२९:३०	२३:४६:१९	२६:००:३३	२८:१४:०५	३०:३०:२८	८:५०:२६	१०:५४:१५	१२:३९:३१	१४:११:०३
२४.११.२०२६	मंगल	१५	१५:३६:१९	१७:१५:२९	१९:१२:४३	२१:२५:३९	२३:४२:२८	२५:५६:४१	२८:१०:१४	३०:२६:३७	८:४६:३५	१०:५०:२३	१२:३५:४०	१४:०७:११

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ कार्तिक शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख १० नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई.तक

हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मई–जून	
मंगल	१	१४:०१	१७:४४	विशाखा	०९:१९	शोभन	२७:०९	बव	१४:०१	१०:५४	०६:५५	१७:४९	वृश्चिक		१०	चंद्रदर्शन मु. ३०, बिछूड़ा, कुमार योग समाप्त ०९।१९, राजयोग प्रारंभ १४।०१
बुध	२	१५:५४	२२:२५	अनुराधा	११:३८	अतिगण्ड	२७:४०	कौलव	१५:५४	१०:५३	०६:५६	१७:४९	वृश्चिक		११	**भाईदूज, यमद्वितीया, चित्रगुप्त पूजन, विश्वकर्मा पूजा,** बिछूड़ा जारी, राजयोग समाप्त ११।३८ **A**
गुरू	३	१८:१०	२८:०४	ज्येष्ठा	१४:१९	सुकर्मा	२८:२६	गर	१८:१०	१०:५२	०६:५६	१७:४८	धनु	१४:१९	१२	बिछूड़ा समाप्त १४।१९, रवियोग प्रारंभ १४।१९, मंगल सिंह में २०।२२
शुक्र	४	२०:४३	३४:२५	मूल	१७:१७	धृति	२९:२२	वणिज	०७:२५	१०:५१	०६:५७	१७:४८	धनु		१३	**श्रीविनायक चतुर्थी,** रवियोग समाप्त १७।१७, बुध मार्गी, शुक्र मार्गी, भद्रा ०७।२५ से २०।४३ तक
शनि	५	२३:२४	४१:०७	पूर्वाषा	२०:२४	शूल	३०:२२	बव	१०:०३	१०:५०	०६:५८	१७:४८	मकर	२७:११	१४	**लाभ पंचमी, सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी, प.पू.भरतलालजी ओझा जन्म जयंती, रवियोग प्रारंभ** २०।२४
रवि	६	२६:०२	४७:३८	उत्तराषा	२३:२९	गण्ड	-	कौलव	१२:४४	१०:४९	०६:५९	१७:४७	मकर		१५	**सूर्य षष्ठी, रवियोग समाप्त** २३।२९, सर्वा.०६।५९ से २३।२९ तक
सोम	७	२८:२०	५३:२२	श्रवण	२६:१७	गण्ड	०७:१६	गर	१५:१४	१०:४८	०६:५९	१७:४७	मकर		१६	व्यतिपात महापात ०९।४७ से १५।१९, भद्रा २८।२० से सर्वा. ०६।५९ से २६।१७ तक **B**
मंगल	८	३०:०६	५७:४४	धनिष्ठा	२८:३५	वृद्धि	०७:५४	विष्टि	१७:१८	१०:४७	०७:००	१७:४६	कुम्भ	१५:३०	१७	**दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी,** रवियोग व मृत्युयोग प्रारंभ २८।३५, भद्रा १७।१८ तक उत्पात ०७।०० से २८।३५ तक पंचक प्रारंभ १५।३०
बुध	९	-	६०:००	शतभिषा	३०:१०	ध्रुव	०८:०५	बालव	१८:४२	१०:४६	०७:०१	१७:४६	कुम्भ		१८	**अक्षय नवमी, आँवला नवमी,** सतयुगादि, वृद्धि तिथि, रवियोग अहोरात्र, पंचक जारी
गुरू	९	०७:०७	००:१३	पूर्वाभा	३०:५७	व्याघात/हर्षण	०७:४२ ३०:४०	कौलव	०७:०७	१०:४५	०७:०१	१७:४६	मीन	२४:५०	१९	**श्रीरंगअवधूत जयंती (नारेश्वर–गुज),** पंचक जारी, रवियोग अहोरात्र, सूर्य अनुराधा पर २७।०३
शुक्र	१०	०७:१६	००:३५	उत्तराभा	३०:५१	वज्र	२८:५५	गर	०७:१६	१०:४४	०७:०२	१७:४६	मीन		२०	**क्षय तिथि, प्रबोधिनी एकादशी (स्मार्त्त), भीष्म पंचक व्रत आरंभ,** रवियोग समाप्त ३०।५१ **C**
शुक्र	११	३०:३२	५८:४५	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0	०	०	तिथि क्षय
शनि	१२	२८:५७	५४:४५	रेवती	२९:५५	सिद्धि	२६:३०	बव	१७:५१	१०:४३	०७:०३	१७:४५	मेष	२९:५५	२१	प्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव), तुलसी विवाह प्रारंभ, **चातुर्मास समाप्त, स्थिर योग समाप्त** २८।५७ से २९।५५ **D**
रवि	१३	२६:३८	४८:५५	अश्विनी	२८:१६	व्यतिपात	२३:२९	कौलव	१५:५२	१०:४२	०७:०४	१७:४५	मेष		२२	**प्रदोष व्रत,** रवियोग प्रारंभ २८।१६, शुक्र तुला में १७।०२, सर्वा. ०७।०४ से २८।१६ तक **E**
सोम	१४	२३:४३	४१:३७	भरणी	२६:०२	वरीयान	१९:५८	गर	१३:१४	१०:४१	०७:०४	१७:४५	मेष		२३	**वैकुण्ठ चतुर्दशी,** रवियोग समाप्त २६।०२, भद्रा २३।४३ से चर ०७।०४ से २६।०२ तक
मंगल	१५	२०:२४	३३:१७	कृतिका	२३:२५	परिघ	१६:०५	विष्टि	१०:०६	१०:४०	०७:०५	१७:४५	वृषभ	०७:२५	२४	**पूर्णिमा व्रत, त्रिपुरारी पूजन, देव दीपावली, तुलसी विवाह पूर्ण, भीष्म पंचक व्रत पूर्ण F**

✻ कार्तिक शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	९	४	६	४	५	११	१०	४
अं.	००	२४	०१	११	०१	२८	१४	००	००
क.	२४	५६	५८	४५	४२	४८	१२	५९	५९
वि.	३८	५०	४८	५०	५०	१७	२४	२९	२९
गति	६० २९	७३१ २९	२६ २४	३७ २०	०४ ४४	०८ ०९	०२ २६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	विशाखा ४	धनिष्ठा १	मघा १	स्वाति २	मघा १	चित्रा २	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

A बुध उदय पू.७।२०, दग्ध योग प्रारंभ १५।५४, सर्वा.०६।५६ से ११।३८ तक अमृत सिद्धि ०६।५६ से ११।३८ तक **B** सिद्धि ०६।५९ से २६।१७ तक सूर्य वृश्चिक पर १९।४३ अट्ठाई (जैन), बं.मार्गशीर्ष मास प्रा. **C** राजयोग ३०।३२ से ३०।५१, भद्रा १९।०१ से ३०।३२ तक, सर्वा.३०।५१ से ३१।०३ तक अमृत सिद्धि ३०।५१ से ३१।०३ तक **D** वज्र मूसल (दग्ध) ०७।०३ से २९।५५ तक पंचक समाप्त २९।५५ **E** राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मास प्रा.सायन सूर्य धनु पर १२।५३ **F** कार्तिक स्नान व्रत पूर्ण, पुष्कर मेला, भद्रा १०।०६ तक सर्वा.०७।०५ से २३।२५ तक, कुमार योग प्रारंभ २३।२५ यमदंष्ट्रा ०७।०५ से २३।२५ तक

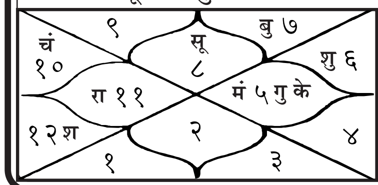
✻ नारायणबल्यादि मुहूर्त्त विचार ✻

कार्तिकादिषु मासेषु तूत्तरायणे रचौ। शुक्ले पक्षेयत्र कृष्णे पादस्यादो शुभे दिन। कार्तिक वगैरह महीनों में, उत्तरायण के सूर्य में , शुक्ल पक्ष में तथा कृष्ण पक्ष के प्रथम पाद में याने कृष्ण पक्ष की पंचमी तक शुभ दिन में पंचांग शुद्धि का विचार करके नारायण बलि करना। (उस में क्षयमास और अधिक मास वर्ज्य है।) **अस्तं गते गुरौ शुक्र पौषाषाढ़ाधिमासके। प्रेतकार्य कुर्वीत गयां गोदावरीं विनाश।** मेघातिथि कहता है कि गुरू, शुक्र का अस्त हुआ तो तब तथा पौष, आषाढ़ और अधिक मास में गया गोदावरी के सिवा अन्यत्र प्रेत कार्य करना नहीं। अतः गया, गोदावरी में गुरू, शुक्र के अस्त में नारायण बलि करने में बाधा नहीं।

✻ कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	०	४	६	४	६	११	१०	४
अं.	०७	२८	०४	१८	०२	००	१३	००	००
क.	२८	४८	५७	१९	१२	३०	५७	३७	३७
वि.	२७	४१	४६	१५	२२	३३	२०	१४	१४
गति	६० ३८	१०० २३	२४ २४	७४ ३७	०३ ३१	२२ ४१	०१ ४५	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	मा उ	व अ	व अ	व अ
नक्षत्र	अनुराधा २	कृतिका १	मघा २	स्वाति ४	मघा १	चित्रा ३	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

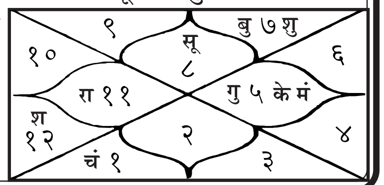
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ वृश्चिक संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक१६.११.२०२६ कार्तिक शुक्ल पक्ष ७ सोमवार को सायं ७.४३ बजे वृश्चिक संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल सोमवार को ही मध्यान्ह काल से मान्य रहेगा। लोभी व्यक्ति, स्टॉक का कार्य करने वाले, तस्कर, ठग, विस्फोट का कार्य करने वाले, वैश्य–व्यापारी, आयात–निर्यात का कार्य करने वाले आदि के लिए लाभदायक है। वणिजकरण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट मुहूर्त्त–३०, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, मशीनरी–कलपूर्जे, तिल, अफीम, जरा, अजवाईन, कलौंजी, उड़द, कालीमिर्च, विष पदार्थ रसायन तरल द्रव्य आदि में तेजी आवे।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष दि. २५ नवम्बर से ८ दिसम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२५.११.२०२६	०७:०८:२९:०४	६०३९	०१:१३:४९:०४	१०७१०	०४:०५:२२:१०	२४०६	०६:१९:३३:५२	७७२८	०४:०२:१५:५४	०३२०	०६:००:५३:१४	२४३१	११:१३:५५:३५	-१३९	१०:००:३४:०३
२६.११.२०२६	०७:०९:२९:४४	६०४१	०१:२८:५६:१४	१०३३८	०४:०५:४६:१६	२३४७	०६:२०:५१:२०	७९५४	०४:०२:१९:१४	०३१०	०६:०१:१७:४५	२६१८	११:१३:५३:५५	-१३३	१०:००:३०:५२
२७.११.२०२६	०७:१०:३०:२४	६०४२	०२:१३:५९:५३	८९१०७	०४:०६:१०:०३	२३२८	०६:२२:११:१४	८१५८	०४:०२:२२२:२४	०२५९	०६:०१:४४:०३	२८०१	११:१३:५२:२२	-१२७	१०:००:२७:४२
२८.११.२०२६	०७:११:३१:०६	६०४४	०२:२८:५१:००	८७२१४	०४:०६:३३:३१	२३०८	०६:२३:३३:१२	८३४३	०४:०२:२५:२२	०२४८	०६:०२:१२:०४	२९४०	११:१३:५०:५५	-१२१	१०:००:२४:३१
२९.११.२०२६	०७:१२:३१:५०	६०४५	०३:१३:२३:१४	८५००४	०४:०६:५६:३९	२२४८	०६:२४:५६:५५	८५१२	०४:०२:२८:१०	०२३७	०६:०२:४१:४४	३११६	११:१३:४९:३४	-११५	१०:००:२१:२०
३०.११.२०२६	०७:१३:३२:३५	६०४७	०३:२७:३३:१८	८२७२०	०४:०७:१९:२७	२२२७	०६:२६:२२:०७	८६२७	०४:०२:३०:४७	०२२५	०६:०३:१३:००	३२४८	११:१३:४८:१९	-१०८	१०:००:१८:०९
०१.१२.२०२६	०७:१४:३३:२२	६०४८	०४:११:२०:३९	८०६००	०४:०७:४१:५४	२२०६	०६:२७:४८:३४	८७३०	०४:०२:३३:१२	०२१४	०६:०३:४५:४९	३४१७	११:१३:४७:११	-१०२	१०:००:१४:५९
०२.१२.२०२६	०७:१५:३४:१०	६०५०	०४:२४:४६:३८	७८७०६	०४:०८:०४:००	२१४४	०६:२९:१६:०४	८८२३	०४:०२:३५:२६	०२०३	०६:०४:२०:०६	३५४२	११:१३:४६:०९	-००५६	१०:००:११:४८
०३.१२.२०२६	०७:१६:३५:००	६०५१	०५:०७:५३:४५	७७१०३	०४:०८:२५:४४	२१२२	०७:००:४४:२७	८९०७	०४:०२:३७:२९	०१५१	०६:०४:५५:४८	३७०४	११:१३:४५:१३	-००४९	१०:००:०८:३७
०४.१२.२०२६	०७:१७:३५:५२	६०५३	०५:२०:४४:४७	७५७४०	०४:०८:४७:०६	२०५९	०७:०२:१३:३४	८९४५	०४:०२:३९:२०	०१४०	०६:०५:३२:५२	३८२३	११:१३:४४:२४	-००४३	१०:००:०५:२६
०५.१२.२०२६	०७:१८:३६:४४	६०५४	०६:०३:२२:२७	७४६३१	०४:०९:०८:०५	२०३६	०७:०३:४३:१८	९०१६	०४:०२:४१:००	०१२८	०६:०६:११:१५	३९३८	११:१३:४३:४१	-००३६	१०:००:०२:१५
०६.१२.२०२६	०७:१९:३७:३८	६०५५	०६:१५:४८:५९	७३७०५	०४:०९:२८:४१	२०१२	०७:०५:१३:३४	९०४२	०४:०२:४२:२८	०११७	०६:०६:५०:५३	४०५१	११:१३:४३:०५	-००३०	०९:२९:५९:०५
०७.१२.२०२६	०७:२०:३८:३३	६०५६	०६:२८:०६:०४	७२८५५	०४:०९:४८:५३	१९४८	०७:०६:४४:१६	९१०४	०४:०२:४३:४५	०१०५	०६:०७:३१:४४	४२००	११:१३:४२:३५	-००२३	०९:२९:५५:५४
०८.१२.२०२६	०७:२१:३९:२९	६०५७	०७:१०:१४:५९	७२१४७	०४:१०:०८:४१	१९२३	०७:०८:१५:२०	९१२३	०४:०२:४४:५०	००५३	०६:०८:१३:४४	४३०७	११:१३:४२:१२	-००१७	०९:२९:५२:४३

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२५.११.२०२६	बुध	१	१५:३२:२८	१७:११:३८	१९:०८:५२	२१:२१:४८	२३:३८:३७	२५:५२:५०	२८:०६:२३	३०:२२:४६	८:४२:४३	१०:४६:३२	१२:३१:४९	१४:०३:२०
२६.११.२०२६	गुरू	२	१५:२८:३७	१७:०७:४६	१९:०५:०१	२१:१७:५६	२३:३४:४६	२५:४८:५९	२८:०२:३१	३०:१८:५५	८:३८:५२	१०:४२:४१	१२:२७:५७	१३:५९:२९
२७.११.२०२६	शुक्र	३/४	१५:२४:४५	१७:०३:५५	१९:०१:०९	२१:१४:०५	२३:३०:५४	२५:४५:०७	२७:५८:४०	३०:१५:०३	८:३५:००	१०:३८:४९	१२:२४:०६	१३:५५:३७
२८.११.२०२६	शनि	५	१५:२०:५४	१७:००:०३	१८:५७:१७	२१:१०:१३	२३:२७:०२	२५:४१:१५	२७:५४:४८	३०:११:११	८:३१:०९	१०:३४:५८	१२:२०:१४	१३:५१:४५
२९.११.२०२६	रवि	६	१५:१७:०२	१६:५६:११	१८:५३:२६	२१:०६:२१	२३:२३:१०	२५:३७:२४	२७:५०:५६	३०:०७:२०	८:२७:१७	१०:३१:०६	१२:१६:२२	१३:४७:५४
३०.११.२०२६	सोम	७	१५:१३:१०	१६:५२:१९	१८:४९:३३	२१:०२:२९	२३:१९:१८	२५:३३:३१	२७:४७:०४	३०:०३:२७	८:२३:२५	१०:२७:१४	१२:१२:३०	१३:४४:०१
०१.१२.२०२६	मंगल	८	१५:०९:१७	१६:४८:२७	१८:४५:४१	२०:५८:३७	२३:१५:२६	२५:२९:३९	२७:४३:१२	२९:५९:३५	८:१९:३२	१०:२३:२१	१२:०८:३८	१३:४०:०९
०२.१२.२०२६	बुध	९	१५:०५:२४	१६:४४:३४	१८:४१:४८	२०:५४:४४	२३:११:३३	२५:२५:४६	२७:३९:१९	२९:५५:४२	८:१५:४०	१०:१९:२९	१२:०४:४५	१३:३६:१६
०३.१२.२०२६	गुरू	१०	१५:०१:३१	१६:४०:४१	१८:३७:५५	२०:५०:५१	२३:०७:४०	२५:२१:५३	२७:३५:२६	२९:५१:४९	८:११:४७	१०:१५:३६	१२:००:५२	१३:३२:२३
०४.१२.२०२६	शुक्र	११	१४:५७:३८	१६:३६:४८	१८:३४:०२	२०:४६:५८	२३:०३:४७	२५:१८:००	२७:३१:३३	२९:४७:५६	८:०७:५३	१०:११:४२	११:५६:५९	१३:२८:३०
०५.१२.२०२६	शनि	१२	१४:५३:४४	१६:३२:५४	१८:३०:०८	२०:४३:०४	२२:५९:५३	२५:१४:०६	२७:२७:३९	२९:४४:०२	८:०३:५९	१०:०७:४८	११:५३:०५	१३:२४:३६
०६.१२.२०२६	रवि	१३	१४:४९:५०	१६:२९:००	१८:२६:१४	२०:३९:१०	२२:५५:५९	२५:१०:१२	२७:२३:४४	२९:४०:०८	८:००:०५	१०:०३:५४	११:४९:११	१३:२०:४२
०७.१२.२०२६	सोम	१४	१४:४५:५५	१६:२५:०५	१८:२२:१९	२०:३५:१५	२२:५२:०४	२५:०६:१७	२७:१९:५०	२९:३६:१३	७:५६:१०	९:५९:५९	११:४५:१६	१३:१६:४७
०८.१२.२०२६	मंगल	३०	१४:४२:००	१६:२१:१०	१८:१८:२४	२०:३१:२०	२२:४८:०९	२५:०२:२२	२७:१५:५५	२९:३२:१८	७:५२:१५	९:५६:०४	११:४१:२१	१३:१२:५२

✼ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✼ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २५ नवम्बर से ८ दिसम्बर २०२६ ई. तक

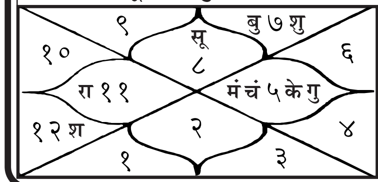
हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
बुध	१	१६:५१	२४:२३	रोहिणी	२०:३६	शिव	१२:००	कौलव	१६:५१	१०:३९	०७:०६	१७:४५	वृषभ		२५	सर्वा.०७।०६ से ३१।०६ तक, कुमार योग समाप्त १६।५१, राजयोग प्रारंभ २०।३६ से ३१।०६ तक, बुध विशाखायां १३।४१
गुरू	२	१३:१६	१५:२३	मृगशिरा	१७:४७	सिद्ध/साध्य	०७:५० २७:४४	गर	१३:१६	१०:३८	०७:०६	१७:४५	मिथुन	०७:११	२६	भद्रा २३।३१ से मृत्यु ०७।०६ से १७।४७ तक
शुक्र	३	०९:४९	०६:४५	आर्द्रा	१५:०९	शुभ	२३:५१	विष्टि	०९:४९	१०:३७	०७:०७	१७:४५	मिथुन		२७	**सौभाग्य सुंदरी तृतीया, श्रीसंकष्टी चतुर्थी,** चंद्र उदय २०।४५, क्षय तिथि, कुमार योग प्रारंभ ३०।४० से **A**
शुक्र	४	३०:४०	५८:५३	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0	०	०	तिथि क्षय
शनि	५	२७:५८	५२:०४	पुनर्वसु	१२:५०	शुक्ल	२०:१८	कौलव	१७:१५	१०:३७	०७:०८	१७:४५	कर्क	०७:२२	२८	वैधृति महापात ०८।१३ से २३।४९
रवि	६	२५:४७	४६:३६	पुष्य	११:००	ब्रह्म	१७:०८	गर	१४:४८	१०:३६	०७:०९	१७:४४	कर्क		२९	**रवियोग प्रा. ११।०, प.पू.श्री डोंगरेजी महाराज पुण्यतिथि,** भद्रा २५।४७ से सर्वा.०७।०९ से ११।०० तक, रविपुष्य ०७।०९ से ११।००
सोम	७	२४:१२	४२:३७	आश्लेषा	०९:४२	ऐन्द्र	१४:२७	विष्टि	१२:५५	१०:३५	०७:०९	१७:४४	सिंह	०९:४२	३०	रवियोग समाप्त ०९।४२, भद्रा १२।५५ तक
मंगल	८	२३:१४	४०:११	मघा	०९:०१	वैधृति	१२:१५	बालव	११:३९	१०:३५	०७:१०	१७:४५	सिंह		१	**कालाष्टमी, श्रीकालभैरव जयंती**
बुध	९	२२:५३	३९:१५	पूर्वाफा	०८:५५	विष्कुम्भ	१०:३१	तैतिल	१०:५९	१०:३४	०७:११	१७:४५	कन्या	१४:५९	२	बुध वृश्चिक में १७।२७
गुरू	१०	२३:०४	३९:४२	उत्तराफा	०९:२४	प्रीति	०९:१५	वणिज	१०:५४	१०:३३	०७:११	१७:४५	कन्या		३	भद्रा १०।५४ से २३।०४ तक वज्र मुसल (दग्ध) ०७।११ से ०९।२४ तक सूर्य ज्येष्ठा पर ०७।२८
शुक्र	११	२३:४५	४१:२३	हस्त	१०:२३	आयुष्मान	०८:२३	बव	११:२१	१०:३३	०७:१२	१७:४५	तुला	२३:०३	४	**उत्पन्ना एकादशी (सर्वे.),** कुमार योग समाप्त १०।२३, राजयोग प्रारंभ २३।४५ से ३१।१३ तक, बुध अनुराधा पर २३।१३
शनि	१२	२४:५३	४४:०९	चित्रा	११:४९	सौभाग्य	०७:५३	कौलव	१२:१६	१०:३२	०७:१३	१७:४५	तुला		५	तिथिवासर ०७।०२ तक, स्थिर योग प्रारंभ २४।५३ से, सर्वा. ११।४९ से ३१।१३ तक **B**
रवि	१३	२६:२३	४७:५३	स्वाति	१३:३८	शोभन	०७:४१	गर	१३:३५	१०:३२	०७:१४	१७:४५	तुला		६	**प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि,** भद्रा २६।२३ से
सोम	१४	२८:१३	५२:२७	विशाखा	१५:४८	अतिगण्ड	०७:४६	विष्टि	१५:१५	१०:३१	०७:१४	१७:४५	वृश्चिक	०९:१४	७	**मास शिवरात्रि,** यमघण्ट योग समाप्त १५।४८, बिछूड़ा प्रारंभ ०९।१४, भद्रा १५।१५ तक, सर्वा.१५।४८ से ३१।१५ तक
मंगल	३०	३०:२२	५७:४७	अनुराधा	१८:१६	सुकर्मा	०८:०६	चतुष्पद	१७:१५	१०:३१	०७:१५	१७:४५	वृश्चिक		८	**दर्श अमावस्या,** बिछूड़ा जारी

✼ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ८ मंगलवार ✼

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	४	४	६	४	६	११	१०	४
अं.	१४	११	०७	२७	०२	०३	१३	००	००
क.	३३	२०	४१	४८	३३	४५	४७	१४	१४
वि.	२२	३९	५४	३४	१२	४९	११	५९	५९
गति	६० ४८	८०६ ०१	२२ ०६	८७ ३०	०२ १४	३४ १७	०१ ०२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	अनुराधा ४	मघा ४	मघा ३	विशाखा ३	मघा १	चित्रा ४	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा ३	मघा १

✼ सूर्योदय कुण्डली ✼



A भद्रा ०९।४९ तक, सर्वा.१५।०९ से ३१।०८ तक **B** शुक्र स्वाति २२।५८, राहु धनिष्ठा २, मकर, केतु अश्लेषा ४ , कर्क पर २२।३२, काण ०७।१३ से ११।४९ तक, राहु मकर में एवं केतु कर्क में २१।५२

तीर्थयात्राविवाहाआशनोनयादिषु। मांगल्यसर्वकार्येषु घातचन्द्र न चिंतयेत् ।।घात तिथि, घातवार और घात नक्षत्र ये प्रस्थान करने में त्याज्य हैं। दूसरे कामों में उनका दोष नहीं है। तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन और उपनयन वगैरह कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं करना चाहिए

। **ग्रहणद्वयमयध्यस्थः पक्षस्यादिर्य भवेत्। विवाहे विधवा नारी तं चौलं न कारयेत् ।।** दो ग्रहणों के मध्य में पक्ष का आरंभ हुआ हो तो उस पक्ष में विवाह करने से कन्या से कन्या को वैधव्य प्राप्त होता है, इसलिए उस समय में विवाह यज्ञोपवीत और चौल नहीं करना चाहिए।

ग्रासादौ दिवसाष्टकं च विबुर्धस्त्याज्यं कलिंगेषु। हूणे मागधमालवादिषु तथ पंचाहमेवं सदा। विंध्यस्योत्तर मागरोषु च तथा त्याज्यं दिनानां त्रयम्। इत्युत्क खलु शौनकादिमुनिभिस्तापीतेऽहस्त्यजेत् ।। सूर्य, चन्द्र ग्रहण का कलिंग देश में पहले आठ दिन त्याग करना, हूण, मगध, मालवा देश में पहले पांच दिन त्याग करना, विंध्याचल पर्वत के उत्तर भाग में पहले तीन दिन त्याग करना और ताप्ती नदी के किनारे के देश में पहले एक दिन त्याग करना ऐसा शौनकादि महर्षियों ने कहा है। **त्रिष्दष्योपगतं नराणां शुभप्रदं स्यात् ग्रहणं रवींद्रोः। द्विसप्तनदेपुषु मध्यमं स्वाच्छेपेष्वनिष्ट कथितं मुनींद्रेः।** अपनी जन्म राशि से ३, ६, १०, ११ स्थान में (राशि में) सूर्य, चन्द्र का ग्रहण आये तो शुभ जानना २, ७, ९, ५ में मध्यम और बाकी अन्य १, ४, ८, १२ इनमें आये तो मुनियों ने खराब फल देने वाला कहा है।

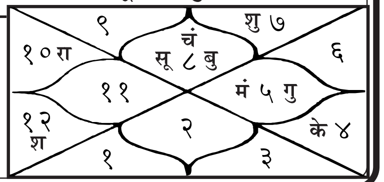
✼ पक्ष फल ✼

मंगसर बदी सप्तमी को दिन रात आकाश निर्मल रहे, बादल आदि न हो तो आगे बैसाख में अन्न मन्दा रहता है और यदि बादल हों वायु आदि के कारण धूल धूसरित हो तो महंगा रहता है। मंगसर बदी त्रयोदशी को अगर तुषार बर्फ ओले आदि पड़े तो धन धान्य बढ़ता है। संसार में आनंद रहता है। मंगसर बदी चतुर्दशी और अमावस्या को आकाश में घटा हो तो अनाज, चारा घास तेज होता है। इसी योग को दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कहा गया है। उत्तम उपजेगी फसल मन्दी चौथे मास। तात्पर्य यह है कि अनाज पहले तेज रहकर चार मास बाद मन्दा होता है।

✼ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार ✼

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	७	४	७	४	६	११	९	३
अं.	२१	१०	१०	०८	०२	०८	१३	२९	२९
क.	३९	१४	०८	१५	४४	१३	४२	५२	५२
वि.	२९	५९	४१	२०	५०	४४	१२	४३	४३
गति	६० ५७	७२१ ४७	१९ २३	९१ २३	०० ५३	४३ ०७	०० १७	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
नक्षत्र	ज्येष्ठा २	अनुराधा ३	मघा ४	अनुराधा २	मघा १	स्वाति १	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा ४	आश्लेषा ४

✼ सूर्योदय कुण्डली ✼



मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष दि. ९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर २०२६ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य रा. अं. क. वि.	गति	चन्द्र रा. अं. क. वि.	गति	मंगल रा. अं. क. वि.	गति	बुध रा. अं. क. वि.	गति	गुरु रा. अं. क. वि.	गति	शुक्र रा. अं. क. वि.	गति	शनि रा. अं. क. वि.	गति	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.
०९.१२.२०२६	०७:२२:४०:२७	६०।५८	०७:२२:१६:४६	७१५।४१	०४:१०:२८:०४	१८।५७	०७:०९:४६:४३	९१।३९	०४:०२:४५:४३	००।४२	०६:०८:५६:५०	४४।११	११:१३:४१:५५	-००।१०	०९:२९:४९:३२
१०.१२.२०२६	०७:२३:४१:२५	६०।५९	०८:०४:१२:२७	७१०।५६	०४:१०:४७:०१	१८।३१	०७:११:१८:२२	९१।५२	०४:०२:४६:२५	००।३०	०६:०९:४१:०१	४५।२३	११:१३:४१:४५	-००।०३	०९:२९:४६:२२
११.१२.२०२६	०७:२४:४२:२४	६१।००	०८:१६:०३:२३	७०८।०२	०४:११:०५:३२	१८।०५	०७:१२:५०:१४	९२।०४	०४:०२:४६:५४	००।१८	०६:१०:२६:१३	४६।११	११:१३:४१:४२	००।०३	०९:२९:४३:११
१२.१२.२०२६	०७:२५:४३:२४	६१।०१	०८:२७:५१:२५	७०७।४०	०४:११:२३:३७	१७।३८	०७:१४:२२:१९	९२।१५	०४:०२:४७:१२	००।०६	०६:११:१२:२५	४७।०८	११:१३:४१:४५	००।१०	०९:२९:४०:००
१३.१२.२०२६	०७:२६:४४:२४	६१।०१	०९:०९:३९:०६	७१०।३६	०४:११:४१:१५	१७।१०	०७:१५:५४:३४	९२।२५	०४:०२:४७:१८	-००।०६	०६:११:५९:३३	४८।०३	११:१३:४१:५५	००।१६	०९:२९:३६:४९
१४.१२.२०२६	०७:२४:४५:२६	६१।०२	०९:२१:२९:४२	७१७।३५	०४:११:५८:२५	१६।४२	०७:१७:२६:५९	९२।३४	०४:०२:४७:१३	-००।१७	०६:१२:४७:३६	४८।५५	११:१३:४२:११	००।२३	०९:२९:३३:३९
१५.१२.२०२६	०७:२८:४६:२७	६१।०२	१०:०३:२७:१७	७२९।१५	०४:१२:१५:०८	१६।१४	०७:१८:५९:३३	९२।४२	०४:०२:४६:५५	-००।२९	०६:१३:३६:३१	४९।४६	११:१३:४२:३४	००।३०	००:२९:३०:२८
१६.१२.२०२६	०७:२९:४७:३०	६१।०३	१०:१५:३६:३२	७४५।५९	०४:१२:३१:२१	१५।४४	०७:२०:३२:१५	९२।५१	०४:०२:४६:२६	-००।४१	०६:१४:२६:१७	५०।३४	११:१३:४३:०४	००।३६	०९:२९:२७:१७
१७.१२.२०२६	०८:००:४८:३२	६१।०३	१०:२८:०२:३२	७६७।४८	०४:१२:४७:०६	१५।१५	०७:२२:०५:०६	९२।५९	०४:०२:४५:४५	-००।५३	०६:१५:१६:५१	५१।२१	११:१३:४३:४०	००।४३	०९:२९:२४:०६
१८.१२.२०२६	०८:०१:४९:३५	६१।०३	११:१०:५०:२०	७९४।०७	०४:१३:०२:२१	१४।४४	०७:२३:३८:०५	९३।०८	०४:०२:४४:५२	-१।०५	०६:१६:०८:१२	५२।०६	११:१३:४४:२३	००।४९	०९:२९:२०:५५
१९.१२.२०२६	०८:०२:५०:३९	६१।०४	११:२४:०४:२७	८२३।३३	०४:१३:१७:०५	१४।१४	०७:२५:११:१३	९३।१७	०४:०२:४३:४८	-१।१६	०६:१७:००:१८	५२।५०	११:१३:४५:१२	००।५६	०९:२९:१७:४५
२०.१२.२०२६	०८:०३:५१:४३	६१।०४	००:०७:४७:५९	८५३।४७	०४:१३:३१:१९	१३।४२	०७:२६:४४:३०	९३।२७	०४:०२:४२:३१	-१।२८	०६:१७:५३:०८	५३।३२	११:१३:४६:०८	०१।०२	०९:२९:१४:३४
२१.१२.२०२६	०८:०४:५२:४७	६१।०४	००:२२:०१:४६	८८१।३९	०४:१३:४५:०१	१३।१०	०७:२८:१७:५७	९३।३७	०४:०२:४१:०३	-१।४०	०६:१८:४६:४०	५४।१२	११:१३:४७:११	०१।०९	०९:२९:११:२३
२२.१२.२०२६	०८:०५:५३:५१	६१।०५	०१:०६:४३:२६	९०३।३५	०४:१३:५८:११	१२।३८	०७:२९:५१:३४	९३।४७	०४:०२:३९:२४	-१।५१	०६:१९:४०:५२	५४।५१	११:१३:४८:२०	०१।१५	०९:२९:०८:१२
२३.१२.२०२६	०८:०६:५४:५६	६१।०५	०१:२१:४७:०१	९१६।२४	०४:१४:१०:४९	१२।०४	०८:०१:२५:२१	९३।५९	०४:०२:३७:३३	-२।०३	०६:२०:३५:४३	५५।२९	११:१३:४९:३५	०१।२२	०९:२९:०५:०२

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्रीरौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा मेष	दिवा वृषभ	सायं मिथुन	रात्रि कर्क	रात्रि सिंह	मध्यरात्रि कन्या	अर्द्धरात्रोत्तर तुला	अर्द्धरात्रोत्तर वृश्चिक	प्रातः धनु	प्रातः मकर	दिवा कुंभ	दिवा मीन
०९.१२.२०२६	बुध	१	१४:३८:०४	१६:१७:१४	१८:१४:२८	२०:२७:२४	२२:४४:१३	२४:५८:२६	२७:११:५९	२९:२८:२२	७:४८:१९	९:५२:०८	११:३७:२५	१३:०८:५६
१०.१२.२०२६	गुरू	१	१४:३४::०८	१६:१३:१७	१८:१०:३२	२०:२३:२७	२२:४०:१७	२४:५४:३०	२७:०८:०२	२९:२४:२६	७:४४:२३	९:४८:१२	११:३३:२९	१३:०५:००
११.१२.२०२६	शुक्र	२	१४:३०:११	१६:०९:२०	१८:०६:३५	२०:१९:३०	२२:३६:२०	२४:५०:३३	२७:०४:०५	२९:२०:२९	७:४०:२६	९:४४:१५	११:२९:३१	१३:०१:०३
१२.१२.२०२६	शनि	३	१४:२६:१३	१६:०५:२३	१८:०२:३७	२०:१५:३३	२२:३२:२२	२४:४६:३५	२७:००:०८	२६:१६:३१	७:३६:२८	९:४०:१७	११:२५:३४	१२:५७:०५
१३.१२.२०२६	रवि	४	१४:२२:१५	१६:०१:२४	१७:५८:३९	२०:११:३४	२२:२८:२३	२४:४२:३७	२६:५६:०९	२९:१२:३३	७:३२:३०	९:३६:१९	११:२१:३५	१२:५३:०६
१४.१२.२०२६	सोम	५	१४:१८:१५	१५:५७:२५	१७:५४:३९	२०:०७:३५	२२:२४:२४	२४:३८:३७	२६:५२:१०	२९:०८:३३	७:२८:३१	९:३२:२०	११:१७:३६	१२:४९:०७
१५.१२.२०२६	मंगल	६	१४:१४:१५	१५:५३:२५	१७:५०:३९	२०:०३:३५	२२:२०:२४	२४:३४:३७	२६:४८:१०	२९:०४:३३	७:२४:३१	९:२८:२०	११:१३:३६	१२:४५:०७
१६.१२.२०२६	बुध	७	१४:१०:१५	१५:४९:२४	१७:४६:३९	१९:५९:३४	२२:१६:२४	२४:३०:३७	२६:४४:०९	२९:००:३३	७:२०:३०	९:२४:१९	११:०९:३५	१२:४१:०७
१७.१२.२०२६	गुरू	८	१४:०६:१३	१५:४५:२३	१७:४२:३७	१९:५५:३३	२२:१२:२२	२४:२६:३५	२६:४०:०८	२८:५६:३१	३१:१२:३२	९:२०:१७	११:०५:३४	१२:३७:०५
१८.१२.२०२६	शुक्र	९	१४:०२:१०	१५:४१:२०	१७:३८:३४	१९:५१:३०	२२:०८:१९	२४:२२:३३	२६:३६:०५	२८:५२:२८	३१:०८:३०	९:१६:१५	११:०१:३१	१२:३३:०२
१९.१२.२०२६	शनि	१०	१३:५८:०७	१५:३७:१७	१७:३४:३१	१९:४७:२७	२२:०४:१६	२४:१८:२९	२६:३२:०२	२८:४८:२५	३१:०४:२६	९:१२:११	१०:५७:२८	१२:२८::५९
२०.१२.२०२६	रवि	११	१३:५४:०३	१५:३३:१२	१७:३०:२६	१९:४३:२२	२२:००:११	२४:१४:२५	२६:२७:५७	२८:४४:२१	३१:००:२२	९:०८:०७	१०:५३:२३	१२:२४:५४
२१.१२.२०२६	सोम	१२	१३:४९:५७	१५:२९:०७	१७:२६:२१	१९:३९:१७	२१:५६:०६	२४:१०:१९	२६:२३:५२	२८:४०:१५	३०:५६:१६	९:०४:०१	१०:४९:१८	१२:२०:४९
२२.१२.२०२६	मंगल	१३	१३:४५:५७	१५:२५:०७	१७:२२:२१	१९:३५:१७	२१:५२:०६	२४:०६:१९	२६:१९:५२	२८:३६:१५	३०:५२:१६	९:००:०१	१०:४५:१८	१२:१६:४९
२३.१२.२०२६	बुध	१४/१५	१३:४२:२०	१५:२१:२९	१७:१८:४४	१९:३१:३९	२१:४८:२८	२४:०२:४२	२६:१६:१४	२८:३२:३८	३०:४८:३९	८:५६:२४	१०:४१:४०	१२:१३:११

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख ९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर २०२६ ई.तक

हेमंत–शिशिर ऋतुः रवि दक्षिणा.उत्तरायणे, दक्षिण गोले

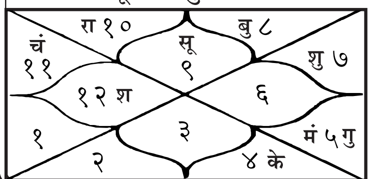
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक दिसम्बर	
बुध	१	-	६०:००	ज्येष्ठा	२१:००	धृति	०८:३९	किंस्तुघ्न	१९:३२	१०:३०	०७:१६	१७:४६	धनु	२१:००	९	वृद्धि तिथि, ज्वालामुखी योग प्रारंभ २१।००, बिछूड़ा समाप्त
गुरू	१	०८:४७	०३:४६	मूल	२३:५८	शूल	०९:२४	बव	०८:४७	१०:३०	०७:१६	१७:४६	धनु		१०	**चन्द्रदर्शन** मुस.३०, ज्वालामुखी योग समाप्त ०८।४५, मार्तण्ड भैरव षड्रात्रोत्सव प्रारंभ, शनि मार्गी ३०।००
शुक्र	२	११:२३	१०:१७	पूर्वाषा	२७:०४	गण्ड	१०:१८	कौलव	११:२३	१०:२९	०७:१७	१७:४६	धनु		११	राजयोग समाप्त २७।०४ रवियोग प्रारंभ २७।०४
शनि	३	१४:०७	१७:०३	उत्तराषा	३०:१२	वृद्धि	११:१६	गर	१४:०७	१०:२९	०७:१८	१७:४६	मकर	०९:५१	१२	रवियोग समाप्त ३०।१२, स्थिर योग १४।०७ से ३०।१२, व्यतिपात महापात १०।०७ से १७।४५ **A**
रवि	४	१६:४८	२३:४५	श्रवण	-	ध्रुव	१२:१४	विष्टि	१६:४८	१०:२९	०७:१८	१७:४७	मकर		१३	**श्री विनायक चतुर्थी,** भद्रा १६।४८ तक, बुध ज्येष्ठा १७।१८
सोम	५	१९:१७	२९:५५	श्रवण	०९:१२	व्याघात	१३:०४	बालव	१९:१७	१०:२८	०७:१९	१७:४७	कुम्भ	२२:३६	१४	**विवाह पंचमी,** रवियोग प्रारंभ ०९।१२, कुमार योग समाप्त ०९।१२, सर्वा.०७।१९ से ०९।१२ तक **B**
मंगल	६	२१:२०	३५:०१	धनिष्ठा	११:५३	हर्षण	१३:३७	कौलव	०८:२२	१०:२८	०७:१९	१७:४७	कुम्भ		१५	**स्कंद षष्ठी, चम्पा षष्ठी, मार्तण्ड भैरव उत्थान,** अन्नपूर्णा व्रंत प्रारंभ, रवियोग समाप्त एवं **C**
बुध	७	२२:४६	३८:३६	शतभिषा	१४:०२	वज्र	१३:४६	गर	१०:०८	१०:२८	०७:२०	१७:४८	कुम्भ		१६	**मित्र सप्तमी,** रवियोग १०।२५ से १४।०२, भद्रा २२।४६ से, सूर्य मूल धनु पर १०।२५ **D**
गुरू	८	२३:२६	४०:१५	पूर्वाभा	१५:३१	सिद्धि	१३:२१	विष्टि	११:१३	१०:२८	०७:२१	१७:४८	मीन	०९:१३	१७	**मासिक दुर्गाष्टमी,** पंचक जारी, भद्रा ११।१३ तक
शुक्र	९	२३:१५	३९:४४	उत्तराभा	१६:१०	व्यतिपात	१२:१९	बालव	११:२७	१०:२८	०७:२१	१७:४९	मीन		१८	पंचक जारी, रवियोग प्रारंभ १६।१०, सर्वा.१६।१० से ३१।२२ तक **अमृत सिद्धि १६।१०** से ३१।२२ तक
शनि	१०	२२:१०	३७:०१	रेवती	१५:५८	वरीयान	१०:३५	तैतिल	१०:४९	१०:२७	०७:२२	१७:४९	मेष	१५:५८	१९	रवियोग अहोरात्र, वज्र मुसल (दग्ध) ०७।२२ से १५।५८ तक पंचक समाप्त १५।५८
रवि	११	२०:१५	३२:१२	अश्विनी	१४:५६	परिघ/शिव	०८:१० २९:०७	वणिज	०९:१८	१०:२७	०७:२२	१७:५०	मेष		२०	**मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती,** रवियोग समाप्त १४।५६, राजयोग प्रारंभ २०।१५ से ३१।२३ तक **E**
सोम	१२	१७:३७	२५:३५	भरणी	१३:०९	सिद्ध	२५:३२	बालव	१७:३७	१०:२७	०७:२३	१७:५०	वृषभ	१८:३६	२१	**अखण्ड द्वादशी, सोम प्रदोष व्रत,** चर ०७।२३ से १३।०९ तक सायन सूर्य मकर पर २६।२० रवि उत्तरायणे शिशिर ऋतु प्रा.
मंगल	१३	१४:२४	१७:३३	कृतिका	१०:४६	साध्य	२१:३२	तैतिल	१४:२४	१०:२७	०७:२३	१७:५१	वृषभ		२२	रवियोग प्रारंभ १०।४६ से, बुध धनु में ०७।४० से, सर्वा. ०७।२३ से १०।४६ तक **F**
बुध	१४	१०:४८	०८:३०	रोहिणी/मृगशिरा	०७:५७ २८:५३	शुभ	१७:१५	वणिज	१०:४८	१०:२७	०७:२४	१७:५१	मिथुन	१८:२६	२३	**क्षय तिथि, पूर्णिमा व्रत, दत्तात्रेय जयंती, श्रीअन्नपूर्णा जयंती,** लवण दान **G**
बुध	१५	३०:५८	५८:५७	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय

A गुरू वक्री, भद्रा २७।२८ से सर्वा.३०।१२ से ३१।१८ तक **B** सिद्धि ०७।१९ से ०९।१२ तक पंचक प्रारंभ २२।३६ **C** मृत्यु योग प्रारंभ ११।५३ से, उत्पात ०७।१९ से ११।५३ तक **D** बं.पौष मास प्रा., बुध अस्त पूर्व में, धनार्क मल मास प्रारंभ १०।२५ से **E** वज्र मूसल योग प्रारंभ १४।५६ से, दग्ध योग प्रारंभ २०।१५ से, भद्रा ०९।१८ से २०।१५ तक सर्वा.०७।२२ से १४।५६ तक **F** बुध धनु मूल पर ०७।३९, शुक्र विशाखा १३।५४, यमदंष्ट्रा ०७।२३ से १०।४६ तक राष्ट्रीय पौष मास प्रा. **G** रवियोग समाप्त ०७।५७, राजयोग १०।४८ से २८।५३, भद्रा १०।४८ से २०।५४ तक सर्वा.०७।२४ से २८।५३ तक मूसल २८।५३ से ३१।२४ तक

✻ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	१०	४	७	४	६	११	९	३
अं.	००	२८	१२	२२	०२	१५	१३	२९	२९
क.	४८	०२	४७	०५	४५	१६	४३	२४	२४
वि.	३२	३२	०६	०६	४५	५१	४०	०६	०६
गति	६१ ०३	७६७ ४८	१५ १५	९२ ५९	०० ५३	५१ २१	०० ४३	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मूल १	पूर्वाभा.३	मघा ४	ज्येष्ठा २	मघा १	स्वाति ३	उत्तराभा.४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ धनार्क विचार ✻

उदन्वतो रोधसि कापिलाख्यं भूमण्डलं योजनषृकमानं।

रेवामहीमध्यगमार्यराश्योरर्के विवाहो विहितोऽतिभद्र॥

धनार्क और मीनार्क में नर्मदा औश्र मही नदी के मध्य भाग में समुद्र किनारे छः योजन तक विवाह करने में शुभ फल देता है। इसके सिवाय अन्य प्रदेशों में धनार्क और मीनार्क में विवाह नहीं करना चाहिए।

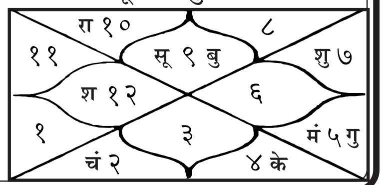
✻ धनु संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक **१६.१२.२०२६** मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष **७** बुधवार को दिन में **१०.२५** बजे धनु संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल बुधवार के दिन ही मध्यान्ह काल से मान्य होगा। स्टॉक का कार्य करने वाले, तस्कर, ठग, चोरी करने वाले, नेता, अभिनेता, राजनेता, अधीक्षक, दलपति, उच्च पदासीन व्यक्ति, राजपत्रित अधिकारी आदि के लिए लाभदायक है। वणिज करण अवस्था उपविष्ट, मुहूर्त्त–**१५**, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, मशीनरी–कलपूर्जे, तिल, अफीम, जीरा, अजवाईन, कलौंजी, उड़द, कालीमिर्च, विष पदार्थ–रसायन, तरल द्रव्य आदि में तेजी आवे।

✻ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १४ बुधवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	१	४	८	४	६	११	९	३
अं.	०६	२१	१४	०१	०२	२०	१३	२९	२९
क.	५४	४७	१०	२५	३७	३५	४९	०५	०५
वि.	५६	०१	४९	२१	३३	४३	३५	०२	०२
गति	६१ ०५	९१६ २४	१२ ०४	९३ ५९	०२ ०३	५५ २९	०१ २२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	मूल ३	रोहिणी ४	पुनर्वसु १	मूल १	मूल १	विशाखा १	उत्तराभा ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



पौष कृष्ण पक्ष दि. २४ दिसम्बर २०२६ से ७ जनवरी २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२४.१२.२०२६	०८:०७:५६:०१	६१।०६	०२:०७:०३:२५	९१८।१५	०४:१४:२२:५३	११।३०	०८:०२:५९:२०	९४।११	०४:०२:३५:३०	-२।१४	०६:२१:३१:१२	५६।०५	११:१३:५०:५७	०१।२८	०९:२९:०१:५१
२५.१२.२०२६	०८:०८:५७:०७	६१।०६	०२:२२:२१:४०	९०९।१४	०४:१४:३४:२३	१०।५६	०८:०४:३३:३१	९४।२५	०४:०२:३३:१६	-२।२६	०६:२२:२७:१७	५६।४१	११:१३:५२:२५	०१।३५	०९:२८:५८:४०
२६.१२.२०२६	०८:०९:५८:१३	६१।०६	०३:०७:३०:५४	८९१।१४	०४:१४:४५:१९	१०।२०	०८:०६:०७:५६	९४।३९	०४:०२:३०:५०	-२।३७	०६:२३:२३:५७	५७।१४	११:१३:५४:००	०१।४१	०९:२८:५५:२९
२७.१२.२०२६	०८:१०:५९:१९	६१।०७	०३:२२:२२:०८	८६७।१७	०४:१४:५५:३९	०९।४४	०८:०७:४२:३५	९४।५४	०४:०२:२८:१३	-२।४८	०६:२४:२१:१२	५७।४७	११:१३:५५:४१	०१।४७	०९:२८:५२:१९
२८.१२.२०२६	०८:१२:००:२६	६१।०८	०४:०६:४९:२४	८४०।४०	०४:१५:०५:२३	०९।०७	०८:०९:१७:२९	९५।१०	०४:०२:२५:२४	-३।००	०६:२५:१८:५९	५८।१९	११:१३:५७:२८	०१।५४	०९:२८:४९:०८
२९.१२.२०२६	०८:१३:०१:३४	६१।०८	०४:२०:५०:०५	८१४।११	०४:१५:१४:३०	०८।२९	०८:१०:५२:३८	९५।२७	०४:०२:२२:२५	-३।११	०६:२६:१७:१८	५८।४९	११:१३:५९:२२	०२।००	०९:२८:४५:५७
३०.१२.२०२६	०८:१४:०२:४२	६१।०९	०५:०४:२४:१५	७८९।४६	०४:१५:२३:००	०७।५१	०८:१२:२८:०५	९५।४५	०४:०२:१९:१४	-३।२२	०६:२७:१६:०७	५९।१८	११:१४:०१:२२	०२।०६	०९:२८:४२:४६
३१.१२.२०२६	०८:१५:०३:५०	६१।०९	०५:१७:३४:०२	७६८।३५	०४:१५:३०:५०	०७।११	०८:१४:०३:५०	९६।०३	०४:०२:१५:५१	-३।३३	०६:२८:१५:२५	५९।४६	११:१४:०३:२९	०२।१३	०९:२८:३९:३५
०१.०१.२०२७	०८:१६:०४:५९	६१।०९	०६:००:२२:३६	७५१।०५	०४:१५:३८:०२	०६।३१	०८:१५:३९:५३	९६।२३	०४:०२:१२:१८	-३।४४	०६:२९:१५:११	६०।१३	११:१४:०५:४२	०२।१९	०९:२८:३६:२५
०२.०१.२०२७	०८:१७:०६:०९	६१।१०	०६:१२:५३:४१	७३७।१४	०४:१५:४४:३३	०५।५१	०८:१७:१६:१६	९६।४३	०४:०२:०८:३४	-३।५५	०७:००:१५:२४	६०।३९	११:१४:०८:००	०२।२५	०९:२८:३३:१४
०३.०१.२०२७	०८:१८:०७:१९	६१।१०	०६:२५:१०:५५	७२६।४३	०४:१५:५०:२४	०५।०९	०८:१८:५२:५९	९७।०४	०४:०२:०४:३९	-४।०६	०७:०१:१६:०२	६१।०४	११:१४:१०:२६	०२।३१	०९:२८:३०:०३
०४.०१.२०२७	०८:१९:०८:२९	६१।१०	०७:०७:१७:३८	७१९।०४	०४:१५:५५:३३	०४।२७	०८:२०:३०:०४	९७।२६	०४:०२:००:३३	-४।१६	०७:०२:१७:०६	६१।२७	११:१४:१२:५७	०२।३८	०९:२८:२६:५२
०५.०१.२०२७	०८:२०:०९:३९	६१।१०	०७:१९:१६:४२	७१३।४८	०४:१६:००:००	०३।४४	०८:२२:०७:२९	९७।४८	०४:०१:५६:१७	-४।२७	०७:०३:१८:३३	६१।५०	११:१४:१५:३५	०२।४४	०९:२८:२३:४२
०६.०१.२०२७	०८:२१:१०:४९	६१।१०	०८:०१:१०:३०	७१०।३३	०४:१६:०३:४४	०३।०१	०८:२३:४५:१७	९८।१०	०४:०१:५१:५०	-४।३७	०७:०४:२०:२४	६२।१३	११:१४:१८:१८	०२।५०	०९:२८:२०:३१
०७.०१.२०२७	०८:२२:११:५९	६१।१०	०८:१३:०१:०३	७०९।०६	०४:१६:०६:४५	०२।१७	०८:२५:२३:२७	९८।३३	०४:०१:४७:१३	-४।४७	०७:०५:२२:३६	६२।३४	११:१४:२१:०८	०२।५६	०९:२८:१७:२०

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः	दिवा
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२४.१२.२०२६	गुरू	१	१३:३८:४१	१५:१७:५१	१७:१५:०५	१९:२८:०१	२१:४४:५०	२३:५९:०३	२६:१२:३६	२८:२८:५९	३०:४५:००	८:५२:४५	१०:३८:०२	१२:०९:३३
२५.१२.२०२६	शुक्र	२	१३:३५:०१	१५:१४:११	१७:११:२५	१९:२४:२१	२१:४१:१०	२३:५५:२४	२६:०८:५६	२८:२५:२०	३०:४१:२१	८:४९:०६	१०:३४:२२	१२:०५:५३
२६.१२.२०२६	शनि	३	१३:३१:२१	१५:१०:३०	१७:०७:४५	१९:२०:४०	२१:३७:३०	२३:५१:४३	२६:०५:१५	२८:२१:३९	३०:३७:४०	८:४५:२५	१०:३०:४१	१२:०२:१३
२७.१२.२०२६	रवि	४	१३:२७:३९	१०:०६:४८	१७:०४:०३	१९:१६:५९	२१:३३:४८	२३:४८:०१	२६:०१:३३	२८:१७:५७	३०:३३:५८	८:४१:४३	१०:२७:००	११:५८:३१
२८.१२.२०२६	सोम	५	१३:२३:५६	१५:०३:०५	१७:००:२०	१९:१३:१५	२१:३०:०५	२३:४४:१८	२५:५७:५०	२८:१४:१४	३०:३०:१५	८:३८:००	१०:२३:१६	११:५४:४८
२९.१२.२०२६	मंगल	६	१३:२०:११	१४:५९:२१	१६:५६:३५	१९:०९:३१	२१:२६:२०	२३:४०:३३	२५:५४:०६	२८:१०:२९	३०:२६:३१	८:३४:१५	१०:१९:३२	११:५१:०३
३०.१२.२०२६	बुध	७	१३:१६:२६	१४:५५:३५	१६:५२:५०	१९:०५:४५	२१:२२:३५	२३:३६:४८	२५:५०:२०	२८:०६:४४	३०:२२:४५	८:३०:३०	१०:१५:४६	११:४७:१८
३१.१२.२०२६	गुरू	८	१३:१२:३९	१४:५१:४८	१६:४९:०३	१९:०१:५९	२१:१८:४८	२३:३३:०१	२५:४६:३३	२८:०२:५७	३०:१८:५८	८:२६:४३	१०:११:५९	११:४३:३१
०१.०१.२०२७	शुक्र	९	१३:०८:५१	१४:४८:००	१६:४५:१५	१८:५८:१०	२१:१४:५९	२३:२९:१३	२५:४२:४५	२७:५९:०९	३०:१५:१०	८:२२:५५	१०:०८:११	११:३९:४२
०२.०१.२०२७	शनि	१०	१३:०५:०१	१४:४४:११	१६:४१:२५	१८:५४:२१	२१:११:१०	२३:२५:२३	२५:३८:५६	२७:५५:१९	३०:११:२०	८:१९:०५	१०:०४:२२	११:३५:५३
०३.०१.२०२७	रवि	११	१३:०१:१०	१४:४०:२०	१६:३७:३४	१८:५०:३०	२१:०७:१९	२३:२१:३२	२५:३५:०५	२७:५१:२८	३०:०७:३०	८:१५:१४	१०:००:३१	११:३२:०२
०४.०१.२०२७	सोम	१२	१२:५७:१८	१४:३६:२८	१६:३३:४२	१८:४६:३८	२१:०३:२७	२३:१७:४०	२५:३१:१३	२७:४७:३६	३०:०३:३७	८:११:२२	९:५६:३९	११:२८:१०
०५.०१.२०२७	मंगल	१३	१२:५३:२४	१४:३२:३४	१६:२९:४८	१८:४२:४४	२०:५९:३३	२३:१३:४६	२५:२७:१९	२७:४३:४२	२९:५९:४४	८:०७:२९	९:५२:४५	११:२४:१६
०६.०१.२०२७	बुध	१४	१२:४९:२९	१४:२८:३९	१६:२५:५३	१८:३८:४९	२०:५५:३८	२३:०९:५१	२५:२३:२४	२७:३९:४७	२९:५५:४९	८:०३:३४	९:४८:५०	११:२०:२१
०७.०१.२०२७	गुरू	३०	१२:४५:३३	१४:२४:४३	१६:२१:५७	१८:३४:५३	२०:५१:४२	२३:०५:५५	२५:१९:२८	२७:३५:५१	२९:५१:५२	७:५९:३७	९:४४:५४	११:१६:२५

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ पौष कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख २४ दिसम्बर २०२६ से ७ जनवरी २०२७ ई.तक

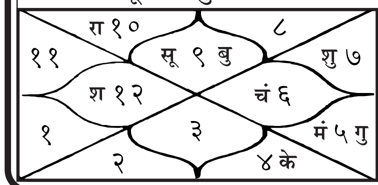
शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
गुरू	१	२७:०८	४९:१९	आर्द्रा	२५:४७	शुक्ल	१२:५१	बालव	१७:०२	१०:२७	०७:२४	१७:५२	मिथुन		२४	सर्वा. २५।४७ से काण ०७।२४ से २५।४७ तक
शुक्र	२	२३:२७	४०:०५	पुनर्वसु	२२:५०	ब्रह्म/ऐन्द्र	०८:२८ २८:१६	तैतिल	१३:१५	१०:२८	०७:२५	१७:५२	कर्क	१७:३३	२५	राजयोग प्रारंभ २२।५० से, सर्वा. २२।५० तक, राजयोग २२।५० से २३।२७
शनि	३	२०:०६	३१:४१	पुष्य	२०:१३	वैधृति	२४:२२	वणिज	०९:४३	१०:२८	०७:२५	१७:५३	कर्क		२६	**संकष्टी चतुर्थी**, चंद्र उदय २०।४५, स्थिर योग प्रारंभ २०।१३, भद्रा ०९।४३ से २०।०६ तक
रवि	४	१७:१४	२४:३१	आश्लेषा	१८:०५	विष्कुम्भ	२०:५३	बालव	१७:१४	१०:२८	०७:२५	१७:५३	सिंह	१८:०५	२७	यमघण्ट योग प्रारंभ १८।०५
सोम	५	१४:५९	१८:५२	मघा	१६:३३	प्रीति	१७:५५	तैतिल	१४:५९	१०:२८	०७:२६	१७:५४	सिंह		२८	रवियोग प्रारंभ १६।३३ से, कुमार योग समाप्त १६।३३
मंगल	६	१३:२५	१४:५८	पूर्वाफा	१५:४३	आयुष्मान	१५:३०	वणिज	१३:२५	१०:२८	०७:२६	१७:५४	कन्या	२१:३७	२९	रवियोग समाप्त १२।४५, रवियोग प्रारंभ १५।४३, राजयोग १३।२५ से १५।४३ **A**
बुध	७	१२:३७	१२:५६	उत्तराफा	१५:३७	सौभाग्य	१३:४१	बव	१२:३७	१०:२९	०७:२७	१७:५५	कन्या		३०	**कालाष्टमी**, रवियोग समाप्त १५।३७, सर्वा. १५।३७ से ३१।२७ तक, बुध पूषा. १८।३१
गुरू	८	१२:३३	१२:४५	हस्त	१६:१३	शोभन	१२:२६	कौलव	१२:३३	१०:२९	०७:२७	१७:५६	तुला	२८:४७	३१	
शुक्र	९	१३:११	१४:१८	चित्रा	१७:२९	अतिगण्ड	११:४३	गर	१३:११	१०:२९	०७:२७	१७:५६	तुला		१	शुक्र वृश्चिक में २३।२२, भद्रा. २५।४३ से मूसल ०७।२७ से १७।२९ तक नववर्ष दिवस
शनि	१०	१४:२५	१७:२३	स्वाति	१९:१९	सुकर्मा	११:२८	विष्टि	१४:२५	१०:३०	०७:२७	१७:५७	तुला		२	**पौष दशमी, श्रीपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक,** व्यतिपात महापात २८।०७ से **B**
रवि	११	१६:०९	२१:४३	विशाखा	२१:३७	धृति	११:३७	बालव	१६:०९	१०:३०	०७:२८	१७:५८	वृश्चिक	१५:००	३	**सफला एकादशी,** बिछूड़ा प्रारंभ १५।००, दग्ध योग प्रारंभ १६।०९ **C**
सोम	१२	१८:१६	२७:०१	अनुराधा	२४:१५	शूल	१२:०३	तैतिल	१८:१६	१० ३०	०७:२८	१७:५८	वृश्चिक		४	अन्नपूर्णा व्रत समाप्त, बिछूड़ा जारी, सर्वा ०७।२८ से २४।१५ तक, शुक्र अनुराधा ३०।०३
मंगल	१३	२०:४०	३३:००	ज्येष्ठा	२७:०७	गण्ड	१२:४३	वणिज	२०:४०	१०:३१	०७:२८	१७:५९	धनु	२७:०७	५	**भौम प्रदोष व्रत,** मास शिवरात्रि, बिछूड़ा समाप्त २७।०७, भद्रा २०।४० से
बुध	१४	२३:१५	३९:२६	मूल	३०:०८	वृद्धि	१३:३२	विष्टि	०९:५६	१०:३१	०७:२८	१८:००	धनु		६	भद्रा ०९।५६ तक यमघंट ०७।२८ से ३०।०८ तक
गुरू	३०	२५:५४	४६:०५	पूर्वाषा	-	ध्रुव	१४:२६	चतुष्पद	१२:३४	१०:३२	०७:२९	१८:०१	धनु		७	दर्श अमावस्या, बुध उषा. २४।०७

✻ पौष कृष्ण पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	५	४	८	४	६	११	९	३
अं.	१५	१७	१५	१४	०२	२८	१४	२८	२८
क.	०३	३४	३०	०३	१५	१५	०३	३९	३९
वि.	५०	०२	५०	५०	५१	२५	२९	३५	३५
गति	६१ ०९	७६८ ३५	०७ ११	९६ ०३	०३ ३३	५९ ४६	०२ १३	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूर्वाषा १	हस्त ४	पूर्वाफा ३	पूर्वाषा १	मघा १	विशाखा ३	उत्तराभा ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A भद्रा १३।२५ से २४।५६ तक सूर्य पूर्वाषा पर १२।४४ **B** भद्रा १४।२५ तक, सर्वा. ०७।२७ से १९।१९ तक सिद्धि ०७।२७ से १९।१९ तक **C** राजयोग एवं मृत्यु योग प्रारंभ २१।३७ से, व्यतिपात महापात समाप्त ११।२४, उत्पात ०७।२८ से २१।३७ तक

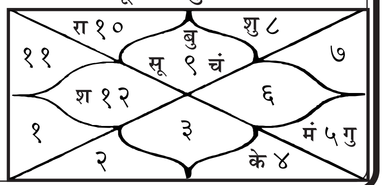
✻ **तैलाभ्यंगफलम् – रविस्तापं कान्तिं वितरित शशिर्भूमतिनयो, मृति लक्ष्मीं सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम्। विपत्तिं दैतयानां गुरुरखिलभोगानुगमनो, नृणां तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूयेतनय ॥** रविवार को तैलाभ्यंग स्नान तापप्रद, सोमवार को कान्तिप्रद, मंगल को मृत्युप्रद, बुध को लक्ष्मीप्रद, गुरु को विपत्तिनाशक, शुक्र को विपत्तिप्रद और शनि को सम्पत्तिदायक है। ✻ **अंगस्फूरणफलम् – अगस्य दक्षिणे भाग प्रशस्तं स्फुरणं भवेत्। अप्रशस्तं तथा वाने पृस्य हृदयस्य च** पुरूष के अंग का दाहिना भाग फड़के तो शुभ, बायां भाग, पीठ, हृदय फड़के तो अशुभ माना जानना। स्त्रियों के लिये इससे विपरित फल जानना। ✻ **गुणैक्य–चिंतन –** वर्णादि अष्टकों के प्रतिज्ञाक्रमानुसार गुणों का योग ३६ होता है। सम्पूर्ण अष्टकों का पृथक–पृथक अथवा गुण–सम्पात कोक के द्व ारा विचार करने पर प्राप्त गेुणों का योग १६ तक तुच्छ, २० तक मध्यम ३० तक उत्तम तथा ३१ से ३६ तक सर्वोत्कृष्ट मेलापक समझना चाहिए। उक्त च **–गुणै षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमं विंशतिस्तथा। श्रें त्रिंदशगुणं यावत्परतस्तुत्तमोत्तमम् ॥ – ज्योतिर्निबन्ध।** परन्तु सामान्यतः १८ गुणों से अधिक की प्राप्ति में मेलापक ग्राह्य समझा गया है। **एकैकवृ द्धि तो ज्ञेया वर्णादीनां गुणा क्रमात्। विवाह शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके। – मुहूर्त्त गणपति**

✻ वर्षफल ✻ पौष बदी सप्तमी और अष्टमी को आधी ऋतु में अच्छी वर्षा होगी। रात वर्षा हो तो आगे वर्षा उत्तम होगी। पौष बदी नौमी को पूर्व दिशा में बादल गर्जे, तो जान लेना चाहिए कि खेती नष्ट होने की घोषणा हो रही है। पौष मास की नौमी और एकादशी को पूर्व में बादल गर्जे तो लोग भोजन की कमी के कारण कृश रहें , अन्न भाव तेज हों। इस योग में दक्षिणी पवन भी अशुभ मानी है। बादल बिजली गर्जना भी हो तो दुर्भिक्षकारी फल होता है। पौष सुदी पड़वा तथा दोयज को बादल बिजली हो, तो उत्तम वर्षा होती है और अन्न की उपज भी बहुत होती है। पौष सुदी चौथ बादल न हो तथा गर्जना न हो तो आग वर्षा काल वर्षा का मुहताज रहता है अर्थात् बरसात में वर्षा नहीं होती। पौष सुदी पंचमी को यदि तुषार (पाला) पड़े तो वर्षाकाल में निश्चय ही अच्छी वर्षा होती है। पौष सुदी सप्तमी, अष्टमी, नवमी को बादल अथवा वर्षा भी हो तो जगत में उत्तम वर्षा से सुख शांति रहे। पौष सुदी त्रयोदशी को मंगलवार अथवा शनिवार हो और उस दिन वर्षा न हो तो गेहूं संग्रह करना चाहिए। लाभकारी चांस है।

✻ पौष कृष्ण पक्ष ३० गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	८	४	८	४	७	११	९	३
अं.	२२	१३	१६	२५	०१	५	१४	२८	२८
क.	११	०१	०६	२३	४७	२२	२९	१७	१७
वि.	५९	०३	४५	२७	१३	३६	०८	२०	२०
गति	६१ १०	७०९ ०६	०२ १७	९८ ३३	०४ ४७	६२ ३४	०२ ५६	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा अ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूर्वाषा ३	मूल ४	पूर्वाफा १	पूर्वाषा ४	मघा १	अनुराधा १	उत्तराभा ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



पौष शुक्ल पक्ष दि.८ जनवरी से २२ जनवरी २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
०८.०१.२०२७	०८:२३:१३:१०	६१।१०	०८:२४:५०:०८	७०९।२४	०४:१६:०९:०२	०१।३२	०८:२७:०२:००	९८।५५	०४:०१:४२:२६	-४।५७	०७:०६:२५:१०	६२।५४	११:१४:२४:०३	०३।०२	०९:२८:१४:०९
०९.०१.२०२७	०८:२४:१४:२०	६१।१०	०९:०६:३९:३२	७११।३९	०४:१६:१०:३५	००।४७	०८:२८:४०:५५	९९।१८	०४:०१:३७:२९	-५।०७	०७:०७:२८:०५	६३।१४	११:१४:२७:०५	०३।०८	०९:२८:१०:५८
१०.०१.२०२७	०८:२५:१५:३०	६१।१०	०९१८:३१:१२	७१६।११	०४:१६:११:२२	००।०२	०९:००:२०:१२	९९।३९	०४:०१:३२:२२	-५।१६	०७:०८:३१:१९	६३।३३	११:१४:३०:१३	०३।१३	०९:२८:०७:४८
११.०१.२०२७	०८:२६:१६:३९	६१।०९	१०:००:२७:२३	७२३।२८	०४:१६:११:२४	-००।४४	०९:०१:५९:५२	१००।००	०४:०१:२७:०६	-५।२६	०७:०९:३४:५२	६३।५१	११:१४:३३:२६	०३।१९	०९:२८:०४:३७
१२.०१.२०२७	०८:२७:१७:४८	६१।०९	१०:१२:३०:५२	७३४।००	०४:१६:१०:३९	-१।३१	०९:०३:३९:५२	१००।२०	०४:०१:२१:४०	-५।३५	०७:१०:३८:४३	६४।०९	११:१४:३६:४५	०३।२५	०९:२८:०१:२६
१३.०१.२०२७	०८:२८:१८:५७	६१।०८	१०:२४:४४:५१	७४८।१२	०४:१६:०९:०९	-२।१७	०९:०५:२०:११	१००।३७	०४:०१:१६:०६	-५।४४	०७:११:४२:५२	६४।२६	११:१४:४०:१०	०३।३१	०९:२७:५८:१५
१४.०१.२०२७	०८:२९:२०:०५	६१।०७	११:०७:१३:०३	७६६।१८	०४:१६:०६:५१	-३।०४	०९:०७:००:४९	१००।५३	०४:०१:१०:२२	-५।५२	०७:१२:४७:१८	६४।४३	११:१४:४३:४१	०३।३६	०९:२७:५५:०५
१५.०१.२०२७	०९:००:२१:१२	६१।०७	११:१९:५९:२१	७८८।१०	०४:१६:०३:४७	-३।५२	०९:०८:४१:४२	१०१।०५	०४:०१:०४:३०	-६।०१	०७:१३:५२:०१	६४।५९	११:१४:४७:१८	०३।४२	०९:२७:५१:५४
१६.०१.२०२७	०९:०१:२२:१९	६१।०६	००:०३:०७:३१	८१३।०५	०४:१५:५९:५५	-४।३९	०९:१०:२२:४७	१०१।१४	०४:००:५८:३०	-६।०९	०७:१४:५६:५९	६५।१४	११:१४:५१:००	०३।४८	०९:२७:४८:४३
१७.०१.२०२७	०९:०२:२३:२५	६१।०५	००:१६:४०:३६	८३९।४१	०४:१५:५५:१६	-५।२७	०९:१२:०४:०१	१०१।१८	०४:००:५२:२१	-६।१७	०७:१६:०२:१३	६५।२९	११:१४:५४:४७	०३।५३	०९:२७:४५:३२
१८.०१.२०२७	०९:०३:२४:३०	६१।०४	०१:००:४०:१७	८६५।४६	०४:१५:४९:४९	-६।१५	०९:१३:४५:१८	१०१।१६	०४:००:४६:०४	-६।२४	०७:१७:०७:४२	६५।४४	११:१४:५८:४०	०३।५८	०९:२७:४२:२२
१९.०१.२०२७	०९:०४:२५:३५	६१।०४	०१:१५:०६:०३	८८८।३४	०४:१५:४३:३५	-७।०२	०९:१५:२६:३४	१०१।०७	०४:००:३९:४०	-६।३२	०७:१८:१३:२६	६५।५८	११:१५:०२:३९	०४।०४	०९:२७:३९:११
२०.०१.२०२७	०९:०५:२६:३८	६१।०३	०१:२९:५४:३७	९०५।०७	०४:१५:३६:३२	-७।५०	०९:१७:०७:४१	१००।४९	०४:००:३३:०९	-६।३९	०७:१९:१९:२३	६६।११	११:१५:०६:४२	०४।०९	०९:२७:३६:००
२१.०१.२०२७	०९:०६:२७:४१	६१।०२	०२:१४:५९:४३	९१२।५७	०४:१५:२८:४२	-८।३८	०९:१८:४८:३०	१००।२२	०४:००:२६:३०	-६।४६	०७:२०:२५:३५	६६।२५	११:१५:१०:५१	०४।१४	०९:२७:३२:४९
२२.०१.२०२७	०९:०७:२८:४३	६१।०१	०३:००:१२:४०	९१०।४९	०४:१५:२०:०४	-९।२६	०९:२०:२८:५२	९९।४२	०४:००:१९:४४	-६।५२	०७:२१:३२:००	६६।३८	११:१५:१५:०५	०४।१९	०९:२७:२९:३८

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०८.०१.२०२७	शुक्र	१	१२:४१:३५	१४:२०:४५	१६:१७:५९	१८:३०:५५	२०:४७:४४	२३:०१:५७	२५:१५:३०	२७:३१:५३	२९:४७:५५	७:५५:३९	९:४०:५६	११:१२:२७
०९.०१.२०२७	शनि	२	१२:३७:३६	१४:१६:४५	१६:१४:००	१८:२६:५६	२०:४३:४५	२२:५७:५८	२५:११:३१	२७:२७:५४	२९:४३:५५	७:५१:४०	९:३६:५७	११:०८:२८
१०.०१.२०२७	रवि	३	१२:३३:३५	१४:१२:४५	१६:०९:५९	१८:२२:५५	२०:३९:४४	२२:५३:५७	२५:०७:३०	२७:२३:५३	२९:३९:५५	७:४७:३९	९:३२:५६	११:०४:२७
११.०१.२०२७	सोम	३	१२:२९:३३	१४:०८:४३	१६:०५:५७	१८:१८:५३	२०:३५:४२	२२:४९:५५	२५:०३:२८	२७:१९:५१	२९:३५:५३	७:४३:३७	९:२८:५४	११:००:२५
१२.०१.२०२७	मंगल	४	१२:२५:३०	१४:०४:३९	१६:०१:५४	१८:१४:४९	२०:३१:३९	२२:४५:५२	२४:५९:२४	२७:१५:४८	२९:३१:४९	७:३९:३४	९:२४:५०	१०:५६:२१
१३.०१.२०२७	बुध	५	१२:२१:२५	१४:००:३४	१५:५७:४९	१८:१०:४४	२०:२७:३४	२२:४१:४७	२४:५५:१९	२७:११:४३	२९:२७:४४	७:३५:२९	९:२०:४५	१०:५२:१६
१४.०१.२०२७	गुरू	६	१२:१७:१८	१३:५६:२८	१५:५३:४२	१८:०६:३८	२०:२३:२७	२२:३७:४०	२४:५१:१३	२७:०७:३६	२९:२३:३८	७:३१:२२	९:१६:३९	१०:४८:१०
१५.०१.२०२७	शुक्र	७	१२:१३:१०	१३:५२:२०	१५:४९:३४	१८:०२:३०	२०:१९:१९	२२:३३:३२	२४:४७:०५	२७:०३:२८	२९:१९:३०	३१:२३:१९	९:१२:३१	१०:४४:०२
१६.०१.२०२७	शनि	८	१२:०९:०१	१३:४८:११	१५:४५:२५	१७:५८:२१	२०:१५:१०	२२:२९:२३	२४:४२:५६	२६:५९:१९	२९:१५:२०	३१:१९:०९	९:०८:२२	१०:३९:५३
१७.०१.२०२७	रवि	९	१२:०४:५०	१३:४४:००	१५:४१:१४	१७:५४:१०	२०:१०:५९	२२:२५:१२	२४:३८:४५	२६:५५:०८	२९:११:१०	३१:१४:५९	९:०४:११	१०:३५:४२
१८.०१.२०२७	सोम	१०	१२:००:३८	१३:३९:४८	१५:३७:०२	१७:४९:५८	२०:०६:४७	२२:२१:००	२४:३४:३३	२६:५०:५६	२९:०६:५७	३१:१०:४६	८:५९:५९	१०:३१:३०
१९.०१.२०२७	मंगल	११/१२	११:५६:२४	१३:३५:३४	१५:३२:४८	१७:४५:४४	२०:०२:३३	२२:१६:४७	२४:३०:१९	२६:४६:४२	२९:०२:४४	३१:०६:३३	८:५५:४५	१०:२७:१६
२०.०१.२०२७	बुध	१३	११:५२:०९	१३:३१:१९	१५:२८:३३	१७:४१:२९	१९:५८:१८	२२:१२:३१	२४:२६:०४	२६:४२:२७	२८:५८:२९	३१:०२:१८	८:५१:३०	१०:२३:०१
२१.०१.२०२७	गुरू	१४	११:४८:२३	१३:२७:३३	१५:२४:४७	१७:३७:४३	१९:५४:३२	२२:०८:४५	२६:२२:१८	२६:३८:४१	२८:५४:४३	३०:५८:३२	८:४७:४४	१०:१९:१५
२२.०१.२०२७	शुक्र	१५	११:४४:४५	१३:२३:५४	१५:२१:०९	१७:३४:०५	१९:५०:५४	२२:०५:०७	२४:१८:४०	२६:३५:०३	२८:५१:०४	३०:५४:५३	८:४४:०६	१०:१५:३७

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ पौष शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख ८ जनवरी से २२ जनवरी २०२७ ई. तक

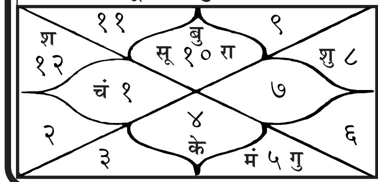
शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक जनवरी	
शुक्र	१	२८:३४	५२:४३	पूर्वाषा	०९:१३	व्याघात	१५:२१	किंस्तुघ्न	१५:१५	१०:३३	०७:२९	१८:०१	मकर	१५:५९	८	राजयोग २८।३४ से ३१।२९
शनि	२	३१:०८	५९:०७	उत्तराषा	१२:१६	हर्षण	१६:१५	बालव	१७:५२	१०:३३	०७:२९	१८:०२	मकर		९	बुध मकर में २४।३८, चंद्र दर्शन मु.३० सर्वा. १२।१६ से ३१।२९ तक, त्रिपुष्कर योग ०७।२९ से १२।१६
रवि	३	-	६०:००	श्रवण	१५:१२	वज्र	१७:०२	तैतिल	२०:२०	१०:३४	०७:२९	१८:०३	कुम्भ	२८:३५	१०	वृद्धि तिथि, रवियोग प्रारंभ १५।१२, राजयोग प्रारंभ १५।१२, मंगल वक्री, पंचक प्रारंभ २८।३५
सोम	३	०९:२९	०५:००	धनिष्ठा	१७:५३	सिद्धि	१७:३८	गर	०९:२९	१०:३४	०७:२९	१८:०३	कुम्भ		११	विनायक चतुर्थी, रवियोग समाप्त १४।४० एवं रवियोग प्रारंभ १७।५३, भद्रा २२।३२ से **A**
मंगल	४	११:३०	१०:०२	शतभिषा	२०:१४	व्यतिपात	१७:५७	विष्टि	११:३०	१०:३५	०७:२९	१८:०४	कुम्भ		१२	**स्वामी विवेकानंद जयंती,** रवियोग समाप्त २०।१४, कुमार योग प्रारंभ २०।१४ **B**
बुध	५	१३:०२	१३:५३	पूर्वाभा	२२:०४	वरियान	१७:५३	बालव	१३:०२	१०:३६	०७:२९	१८:०५	मीन	१५:४०	१३	पंचक जारी, रवियोग प्रारंभ २२।०४, कुमार योग समाप्त २२।०४
गुरू	६	१३:५९	१६:१५	उत्तराभा	२३:१९	परिघ	१७:२२	तैतिल	१३:५९	१०:३७	०७:२९	१८:०६	मीन		१४	**मकर संक्रान्ति,** सूर्य मकर में २१।११, मलमास समाप्त, रवियोग समाप्त २३।१९ **C**
शुक्र	७	१४:१४	१६:५२	रेवती	२३:५१	शिव	१६:१८	वणिज	१४:१४	१०:३७	०७:२९	१८:०६	मेष	२३:५१	१५	**गुरु सप्तमी, संक्रान्ति पुण्यकाल** सूर्योदय से सूर्यास्त, भद्रा १४।१४ से २६।०५ तक, बुध श्रवण २४।०५ **D**
शनि	८	१३:४४	१५:३६	अश्विनी	२३:३९	सिद्ध	१४:३८	बव	१३:४४	१०:३८	०७:२९	१८:०७	मेष		१६	**शाकम्भरी नवरात्र आरंभ,** रवियोग प्रारंभ २३।३९, दग्ध योग प्रारंभ १३।४४, वैधृति महापात ३०।५५ से
रवि	९	१२:२७	१२:२६	भरणी	२२:४२	साध्य	१२:२३	कौलव	१२:२७	१०:३९	०७:२९	१८:०८	वृषभ	२८:२२	१७	**रवियोग अहोरात्र,** वैधृति महापात समाप्त १२।३० पर, बुध उदय पश्चिम में **E**
सोम	१०	१०:२८	०७:२७	कृतिका	२१:०५	शुभ/शुक्ल	०९:३३ ३०:१३	गर	१०:२८	१०:४०	०७:२९	१८:०९	वृषभ		१८	**पुत्रदा एकादशी (स्मार्त्त),** रवियोग समाप्त एवं कुमार योग प्रारंभ २१।०५ **F**
मंगल	११	०७:५०	००:५३	रोहिणी	१८:५४	ब्रह्म	२६:२७	विष्टि	०७:५०	१०:४१	०७:२९	१८:०९	मिथुन	२९:३८	१९	**क्षय तिथि, पुत्रदा एकादशी (वैष्णव), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, श्रीराममन्दिर प्रतिष्ठा दिवस (अयोध्या)** **G**
मंगल	१२	२८:४२	५३:०३	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
बुध	१३	२५:१२	४४:१९	मृगशिरा	१६:१७	ऐन्द्र	२२:२३	कौलव	१४:५९	१०:४२	०७:२९	१८:१०	मिथुन		२०	**प्रदोष व्रत,** रवियोग प्रारंभ १६।१७, सर्वा. ०७।२९ से १६।१७ तक सायन सूर्य कुम्भ पर १३।००
गुरू	१४	२१:३०	३५:०५	आर्द्रा	१३:२४	वैधृति	१८:०८	गर	११:२२	१०:४३	०७:२८	१८:११	कर्क	२९:१०	२१	**पूर्णिमा व्रत,** रवियोग एवं स्थिर योग समाप्त १३।२४, भद्रा २१।३० से, बुध उदय प. २९।२५ **H**
शुक्र	१५	१७:४७	२५:४८	पुनर्वसु	१०:२५	विष्कुम्भ	१३:५०	विष्टि	०७:३८	१०:४४	०७:२८	१८:१२	कर्क		२२	**पौषी पूर्णिमा,** माघ स्नान प्रारंभ, शाकम्भरी नवरात्र पूर्ण, राजयोग १०।२५ से १७।४७ **I**

✻ पौष शुक्ल पक्ष ८ शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	०	४	९	४	७	११	९	३
अं.	०१	०३	१५	१०	००	१४	१४	२७	२७
क.	२२	०७	५९	२२	५८	५६	५१	४८	४८
वि.	१९	३१	५५	४७	३०	५९	००	४३	४३
गति	६१ ०६	८१३ ०५	०४ ३९	१०१ १४	०६ ०९	६५ १४	०३ ४८	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उत्तराषा २	अश्विनी १	पूर्वाफा १	श्रवण १	मघा १	अनुराधा ४	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A सूर्य उत्तराषा पर १४।४० **B** दग्ध योग प्रारंभ ११।३० से, भद्रा ११।३० तक मृत्यु ०७।२९ से २०।१४ तक **C** दग्ध योग समाप्त १३।५९, सर्वा. २३।१९ से बं.माघ मास प्रा. **D** सर्वा. ३१।२९ तक अमृत सिद्धि ०७।२९ से २३।५१ तक पंचक समाप्त २३।५१ **E** वज्र मूसल (दग्ध) ०७।२९ से २२।४२ तक **F** भद्रा २१।१३ से सर्वा. २१।०५ से ३१।२९ तक **G** कुमार योग समाप्त ०७।५०, राजयोग १८।५४ से २८।४२, भद्रा ०७।५० तक यमदंष्ट्रा ०७।२९ से १८।५४ तक **H** सर्वा. १३।२४ से काण ०७।२८ से १३।२४ तक सूर्य अभिजित पर १०।२१ राष्ट्रीय माघ मास प्रा. **I** भद्रा ०७।३८ तक सर्वा. १०।२५ तक

✻ प्रतिमा विचार ✻

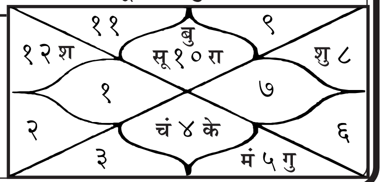
श्रावणे स्थापयेल्लिंगमाश्विने जगदंबिकाम्। मार्गशीर्षे हरिं वैव सर्वान् पौषेपि केचन् ॥ श्रावण में शंकर की स्थापना करना, आश्विन में जगदम्बा की स्थापना करना, मार्गशीर्ष में विष्णु का स्थापन करना और पौष मास (मकरस्थ सूर्य) में किसी भी देवता की स्थापना करना शुभ है। **स्थाप्यो हरिर्दिनकरो मिथुन महेशो। नारायणश्च युवतौ घके विधाता। देव्यो द्विमूर्त्तभवनेषु निवेश्नीया। क्षुदाश्चरे स्थिरगृह निखिलाश्च देवा ॥** मिथुन लग्न में विष्णु, महादेव तथा सूर्य की स्थापना करना, कन्या लग्न में कृष्ण की, तथा कुंभ लग्न में ब्रह्मा, द्विस्वभाव लग्नों में देवियों की स्थापना करनी चाहिये। चर लग्नों में योगिनियों की और स्थिर लग्नों में सर्व देवताओं की स्थापना करना शुभ है। **प्राप्य पक्षं शुभं दक्षिणायने।** शुक्ल पक्ष में (और कृष्ण पक्ष की दशमी तक) तथा दक्षिणायन के बाद उत्तरायण के सूर्य में प्रतिमा करना शुभ है। **सोमो ब्रहस्पश्चिैव शुक्रश्चैव तथा बुध। एते वारा शुभा प्रोक्ता प्रतियज्ञकर्माणि।** सोम, बुध, गुरू तथा शुक्र इन वारों में प्रतिमा तथा यज्ञ करना शुभ है। **वैशाखे श्रावणे मासे चाश्विने मार्गशीर्षके। माघफाल्गुनयोर्वापि तसं पक्षे शुभे दिने। रुद्रारम्भ प्रकर्तव्य पुत्रापौत्रादिवृद्धये ॥** वैशाख, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन इन मासों में और शुक्ल पक्ष में रुद्रयागारंभ करें तो पुत्रपौत्रादिक की वृद्धि होती है।

✻ पक्ष फल ✻ दिनांक १४.१.२०२७ पौष शुक्ल पक्ष ६ गुरूवार को रात्रि ९.१० बजे मकर संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल अगले दिन शुक्रवार को सूर्योदय वेला से मान्य रहेगा। साहित्यकार, पत्रकार, ज्ञान देने वाले शिक्षक, प्रोफेसर, व्याख्याता, विद्वान, प्रवचनकर्ता, धर्मगुरु, कथावाचक, वैज्ञानिक, शोध का कार्य करने वाले आदि के लिए लाभदायक है। संक्रान्ति वास निवास माली घर है, गर करण अवस्था, उपविष्ट, मुहूर्त्त–४५, मसूर, हल्दी, कलपूर्जे, मशीनरी, सोना, चांदी, असगंध, हाथी, गधा, लाल वस्त्र, सूत–कपास, पोस्ता, लहसुन, मिर्च, लोहा–इस्पात, सलिया, सुगंधित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, चांवल, कंदमूल पदार्थ आदि में तेजी आवे।

✻ पौष शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	३	४	९	४	७	११	९	३
अं.	०७	००	१५	२०	००	२१	१५	२७	२७
क.	२८	१२	२०	२८	१९	३२	१५	२९	२९
वि.	४३	४०	०४	५२	४४	००	०५	३८	३८
गति	६१ ०१	११० ४९	०९ २६	९९ ४२	०६ ५२	६६ ३८	०४ १९	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उत्तराषा. ४	पुनर्वसु ४	पूर्वाफा १	श्रवण ४	मघा १	ज्येष्ठा २	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



माघ कृष्ण पक्ष दि. २३ जनवरी से ६ फरवरी २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२३.०१.२०२७	०९:०८:२९:४४	६१।०१	०३:१५:२३:२९	८९९।०१	०४:१५:१०:३९	-१०।१३	०९:२२:०८:३४	९८।४८	०४:००:१२:५२	-६।५८	०७:२२:३८:३८	६६।५१	११:१५:१९:२५	०४।२४	०९:२७:२६:२८
२४.०१.२०२७	०९:०९:३०:४५	६१।००	०४:००:२२:३०	८७९।१८	०४:१५:००:२५	-११।०१	०९:२३:४७:२२	९७।३८	०४:००:०५:५४	-७।०४	०७:२३:४५:२८	६७।०३	११:१५:२३:४९	०४।२९	०९:२७:२३:१७
२५.०१.२०२७	०९:१०:३१:४५	६०।५९	०४:१५:०१:४८	८५४।१९	०४::१४:४९:२५	-११।४८	०९:२५:२५:००	९६।०७	०३:२९:५८:४९	-७।१०	०७:२४:५२:३१	६७।१५	११:१५:२८:१८	०४।३४	०९:२७:२०:०६
२६.०१.२०२७	०९:११:३२:४४	६०।५९	०४:२९:१६:०७	८२६।५९	०४:१४:३७:३७	-१२।३५	०९:२७:०१:०७	९४।१५	०३:२९:५१:३९	-७।१६	०७:२५:५९:४६	६७।५६	११:१५:३२:५३	०४।३९	०९:२७:१६:५५
२७.०१.२०२७	०९:१२:३३:४३	६०।५८	०५:१३:०३:०६	७९१।५३	०४:१४:२५:०२	-१३।२१	०९:२८:३५:२२	९१।५६	०३:२९:४४:२३	-७।२१	०७:२७:०७:१३	६७।३८	११:१५:३७:३२	०४।४४	०९:२७:१३:४५
२८.०१.२०२७	०९:१३:३४:४१	६०।५८	०५:२६:२२:५९	७७४।५९	०४:१४:११:४१	-१४।०७	१०:००:०७:१८	८९।०८	०३:२९:३७:०३	-७।२६	०७:२८:१४:५०	६७।४८	११:१५:४२:१६	०४।४९	०९:२७:१०:३४
२९.०१.२०२७	०९:१४:३५:३९	६०।५७	०६:०९:१७:५८	७५३।३२	०४:१३:५७:३५	-१४।५२	१०:०१:३६:२७	८५।४७	०३:२९:२९:३७	-७।३०	०७:२९:२२:३८	६७।५९	११:१५:४७:०५	०४।५४	०९:२७:०७:२३
३०.०१.२०२७	०९:१५:३६:३६	६०।५६	०६:२१:५१:३०	७३६।१४	०४:१३:४२:४३	-१५।३६	१०:०३:०२:१४	८१।४९	०३:२९:२२:०७	-७।३५	०८:००:३०:३७	६८।०९	११:१५:५१:५९	०४।५८	०९:२६:५७:५१
३१.०१.२०२७	०९:१६:३७:३२	६०।५६	०७:०४:०७:४४	७२३।१७	०४:१३:२७:०८	-१६।११	१०:०४:२४:०३	७७।१२	०३:२९:१४:३२	-७।३८	०८:०१:३८:४६	६८।१८	११:१५:५६:५८	०५।०३	०९:२६:५४:४०
०१.०२.२०२७	०९:१७:३८:२८	६०।५५	०७:१६:११:०१	७१४।३२	०४:१३:१०:४९	-१७।००	१०:०५:४१:१५	७१।५०	०३:२९:०६:५४	-७।४२	०८:०२:४७:०४	६८।२७	११:१६:०२:०१	०५।०८	०९:२६:५७:५१
०२.०२.२०२७	०९:१८:३९:२३	६०।५४	०७:२८:०५:३३	७०९।३९	०४:१२:५३:४९	-१७।४१	१०:०६:५३:०५	६५।४३	०३:२८:५९:१२	-७।४५	०८:०३:५५:३१	६८।३६	११:१६:०७:०९	०५।१२	०९:२६:५४:४०
०३.०२.२०२७	०९:१९:४०:१७	६०।५३	०८:०९:५५:१२	७०८।०९	०४:१२:३६:०८	-१८।२०	१०:०७:५८:४९	५८।४९	०३:२८:५१:२७	-७।४८	०८:०५:०४:०७	६८।४५	११:१६:१२:२१	०५।१७	०९:२६:५१:२९
०४.०२.२०२७	०९:२०:४१:१०	६०।५२	०८:२१:४३:२१	७०९।३५	०४:१२:१७:४८	-१८।५७	१०:०८:५७:३८	५१।०७	०३:२८:४३:३८	-७।५१	०८:०६:१२:५२	६८।५३	११:१६:१७:३७	०५।२१	०९:२६:४८:१८
०५.०२.२०२७	०९:२१:४२:०२	६०।५१	०९:०३:३२:५६	७१३।२७	०४:११:५८:५०	-१९।३३	१०:०९:४८:४५	४२।३८	०३:२८:३५:४८	-७।५३	०८:०७:२१:४५	६९।०१	११:१६:२२:५८	०५।२५	०९:२६:४५:०८
०६.०२.२०२७	०९:२२:४२:५३	६०।५०	०९:१५:२६:२३	७१९।२४	०४:११:३९:१७	-२०।०७	१०:१०:३१:२३	३३।२६	०३:२८:२७:५५	-७।५४	०८:०८:३०:४६	६९।०८	११:१६:२८:२४	०५।३०	०९:२६:४१:५७

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	प्रातः
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
२३.०१.२०२७	शनि	१	११:४१:०५	१३:२०:१५	१५:१७:२९	१७:३०:२५	१९:४७:१४	२२:०१:२७	२४:१५:००	२६:३१:२३	२८:४७:२५	३०:५१:१३	८:४०:२६	१०:११:५७
२४.०१.२०२७	रवि	२	११:३७:२४	१३:१६:३३	१५:१३:४८	१७:२६:४४	१९:४३:३३	२१:५७:४६	२४:११:१९	२६:२७:४२	२८:४३:४३	३०:४७:३२	८:३६:४५	१०:०८:१६
२५.०१.२०२७	सोम	३/४	११:३३:४१	१३:१२:५१	१५:१०:०५	१७:२३:०१	१९:३९:५०	२१:५४:०३	२४:०७:३६	२६:२३:५९	२८:४०:०१	३०:४३:५०	८:३३:०२	१०:०४:३३
२६.०१.२०२७	मंगल	५	११:२९:५७	१३:०९:०७	१५:०६:२१	१७:१९:१७	१९:३६:०६	२१:५०:२०	२४:०३:५२	२६:२०:१६	२८:३६:१७	३०:४०:०६	८:२९:१८	१०:००:४९
२७.०१.२०२७	बुध	६	११:२६:१२	१३:०५:२२	१५:०२:३६	१७:१५:३२	१९:३२:२१	२१:४६:३४	२४:००:०७	२६:१६:३०	२८:३२:३२	३०:३६:२०	८:२५:३३	९:५७:०४
२८.०१.२०२७	गुरू	७	११:२२:२५	१३:०१:३५	१४:५८:४९	१७:११:४५	१९:२८:३४	२१:४२:४८	२३:५६:२०	२६:१२:४४	२८:२८:४५	३०:३२:३४	८:२१:४६	९:५३:१७
२९.०१.२०२७	शुक्र	८	११:१८:३७	१३:५७:४७	१४:५५:०१	१७:०७:५७	१९:२४:४६	२१:३९:००	२३:५२:३२	२६:०८:५६	२८:२४:५७	३०:२८:४६	८:१७:५८	९:४९:२९
३०.०१.२०२७	शनि	८	११:१४:४८	१२:५३:५८	१४:५१:१२	१७:०४:०८	१९:२०:५७	२१:३५:१०	२३:४८:४३	२६:०५:०६	२८:२१:०८	३०:२४:५६	८:१४:०९	९:४५:४०
३१.०१.२०२७	रवि	९	११:१०:५७	१२:५०:०७	१४:४७:२१	१७:००:१७	१९:१७:०७	२१:३१:२०	२३:४४:५२	२६:०१:१६	२८:१७:१७	३०:२१:०६	८:१०:१८	९:४१:४९
०१.०२.२०२७	सोम	१०	११:०७:०६	१२:४६:१५	१४:४३:३०	१६:५६:२५	१९:१३:१५	२१:२७:२८	२३:४१:००	२५:५७:२४	२८:१३:२५	३०:१७:१४	८:०६:२६	९:३७:५७
०२.०२.२०२७	मंगल	११	११:०३:१२	१२:४२:२२	१४:३९:३६	१६:५२:३२	१९:०९:२२	२१:२३:३५	२३:३७:०७	२५:५३:३१	२८:०९:३२	३०:१३:२१	८:०२:३३	९:३४:०४
०३.०२.२०२७	बुध	१२	११:५९:१८	१२:३८:२८	१४:३५:४२	१६:४८:३८	१९:०५:२७	२१:१९:४०	२३:३३:१३	२५:४९:३६	२८:०५:३८	३०:०९:२६	७:५८:३९	९:३०:१०
०४.०२.२०२७	गुरू	१३	१०:५५:२२	१२:३४:३२	१४:३१:४६	१६:४४:४२	१९:०१:३२	२१:१५:४५	२३:२९:१७	२५:४५:४१	२८:०१:४२	३०:०५:३१	७:५४:४३	९:२६:१४
०५.०२.२०२७	शुक्र	१४	१०:५१:२६	१२:३०:३५	१४:२७:५०	१६:४०:४६	१८:५७:३५	२१:११:४८	२३:२५:२०	२५:४१:४४	२७:५७:४५	३०:०१:३४	७:५०:४६	९:२२:१७
०६.०२.२०२७	शनि	३०	१०:४७:२८	१२:२६:३७	१४:२३:५२	१६:३६:४८	१८:५३:३७	२१:०७:५०	२३:२१:२२	२५:३७:४६	२७:५३:४७	२९:५७:३६	७:४६:४८	९:१८:२०

अर्बुद श्री पंचांग, अकादमी ऑफ वैदिक साईंस (रजि.) शिवोहम् महालक्ष्मी चौक, गली नं.3, नई आबादी, जावाल, (सिरोही) राज. 307801 मो.9001141150

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ माघ कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख २३ जनवरी से ६ फरवरी २०२७ ई.तक

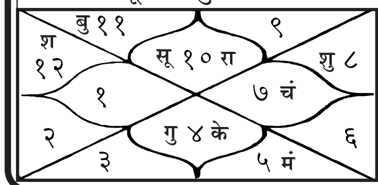
शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक जन–फर	
शनि	१	१४:१३	१६:५३	पुष्य/आश्लेषा	०७:३१ २८:५३	प्रीति/आयुष्मान	०९:३८ २९:४०	कौलव	१४:१३	१०:४५	०७:२८	१८:१२	सिंह	२८:५३	२३	बुध धनिष्ठायां २२।४७
रवि	२	१०:५८	०८:४५	मघा	२६:४१	सौभाग्य	२६:०३	गर	१०:५८	१०:४६	०७:२८	१८:१३	सिंह		२४	भद्रा २१।३० से यमदंष्ट्रा ०७।२८ से २६।४१ तक, सूर्य श्रवण पर १७।०१ **A**
सोम	३	०८:११	०१:४९	पूर्वाफा	२५:०३	शोभन	२२:५४	विष्टि	०८:११	१०:४७	०७:२७	१८:१४	कन्या	३०:४५	२५	क्षय तिथि, संकष्टी चतुर्थी, चंद्र उदय ३१।३३, भद्रा ०८।११ तक सूर्य अभिजित निर्गम पर १४।००
सोम	४	३०:०१	५६:२३	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0	०	०	तिथि क्षय
मंगल	५	२८:३४	५२:४७	उत्तराफा	२४:०७	अतिगण्ड	२०:१८	कौलव	१७:१२	१०:४८	०७:२७	१८:१५	कन्या		२६	**गणतंत्र दिवस,** दग्ध योग समाप्त २८।३४, कुमार योग प्रारंभ २४।०७
बुध	६	२७:५४	५१:०९	हस्त	२३:५६	सुकर्मा	१८:१९	गर	१६:०८	१०:४९	०७:२७	१८:१५	कन्या		२७	कुमार योग समाप्त २३।५६, रवियोग प्रारंभ २३।५६, राजयोग प्रारंभ २७।५४ **B**
गुरू	७	२८:०३	५१:३२	चित्रा	२४:३३	धृति	१६:५७	विष्टि	१५:५३	१०:५०	०७:२६	१८:१६	तुला	१२:०८	२८	**श्रीरामानंदाचार्य जयंती,** रवियोग समाप्त २४।३३, स्थिर योग प्रारंभ २८।०३ **C**
शुक्र	८	२८:५९	५३:५१	स्वाति	२५:५४	शूल	१६:१३	बालव	१६:२५	१०:५१	०७:२६	१८:१७	तुला		२९	**कालाष्टमी,** व्यतिपात महापात समाप्त ११।०४, दग्ध योग समाप्त २८।५९, शुक्र धनु में १८।४२
शनि	९	३०:३४	५७:५१	विशाखा	२७:५५	गण्ड	१६:०२	तैतिल	१७:४२	१०:५२	०७:२६	१८:१८	वृश्चिक	२१:२२	३०	दग्ध योग समाप्त ३०।३४, बिछूड़ा प्रारंभ २१।२२
रवि	१०	-	६०:००	अनुराधा	३०:२८	वृद्धि	१६:१८	वणिज	१९:३५	१०:५३	०७:२५	१८:१८	वृश्चिक		३१	वृद्धि तिथि, बिछूड़ा, भद्रा १९।३५ से मृत्यु ०७।२५ से ३०।२८ तक, मंगल मघायां १६।०६
सोम	१०	०८:४२	०३:१२	ज्येष्ठा	-	ध्रुव	१६:५६	विष्टि	०८:४२	१०:५४	०७:२५	१८:१९	वृश्चिक		१	बिछूड़ा, भद्रा ०८।४२, बुध शतभिषायां २४।५८
मंगल	११	११:११	०९:२६	ज्येष्ठा	०९:२१	व्याघात	१७:४७	बालव	११:११	१०:५५	०७:२४	१८:२०	धनु	०९:२१	२	**षट्तिला एकादशी,** बिछूड़ा समाप्त ०९।२१, कुमार योग ०९।२१ से ११।११
बुध	१२	१३:५१	१६:०७	मूल	१२:२६	हर्षण	१८:४४	तैतिल	१३:५१	१०:५७	०७:२४	१८:२१	धनु		३	**प्रदोष व्रत,** राजयोग १२।२६ से १३।५१, यमघंट ०७।२४ से १२।२६ तक
गुरू	१३	१६:३२	२२:५१	पूर्वाषा	१५:३२	वज्र	१९:४१	वणिज	१६:३२	१०:५८	०७:२३	१८:२१	मकर	२२:१८	४	**मास शिवरात्रि, मेरू त्रयोदशी (जैन),** स्थिर योग प्रारंभ १५।३२ से, भद्रा १६।३२ से २९।५० तक
शुक्र	१४	१९:०६	२९:१७	उत्तराषा	१८:३२	सिद्धि	२०:३२	शकुनि	१९:०६	१०:५९	०७:२३	१८:२२	मकर		५	सर्वा. १८।३२ से, महोदय योग २०।३२ से,
शनि	३०	२१:२६	३५:०९	श्रवण	२१:१९	व्यतिपात	२१:१३	चतुष्पद	०८:१८	११:००	०७:२२	१८:२३	मकर		६	**दर्श अमावस्या, मौनी अमावस्या,** महोदय योग सूर्यास्त तक, सर्वा. २१।१९ तक, राहु धनिष्ठा १ केतु ३ पर २०।११ **D**

✻ माघ कृष्ण पक्ष ८ शुक्रवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	६	४	१०	३	७	११	९	३
अं.	१४	०९	१३	०१	२९	२९	१५	२७	२७
क.	३५	१७	५७	३६	२९	२२	४७	०७	०७
वि.	३९	५८	३५	२७	३७	३८	०५	२३	२३
गति	६० ५७	७५३ ३२	१४ ५२	८५ ४७	०७ ३०	६७ ५९	०४ ५४	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	श्रवण २	स्वाति १	पूर्वाफा १	धनिष्ठा ३	आश्लेषा ४	ज्येष्ठा ४	उषा. ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A राजयोग प्रारंभ २६।४१ से ३१।२७ तक, गुरू वक्री कर्क में २५।३३ **B** बुध कुंभ में २७।३७, भद्रा २७।५४ से सर्वा. ०७।२७ से २३।५६ तक **C** व्यतिपात महापात प्रारंभ २९।५५, भद्रा १५।५३ से, चर ०७।२६ से २४।३३ तक **D** यमदंष्ट्रा ०७।२२ से २१।१९ तक सूर्य धनिष्ठा पर २०।०९

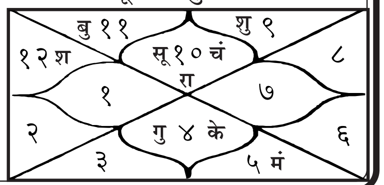
✻ **प्रदोष व्रत** ✻ प्रदोष काल व्यापिनी त्रयोदशी में प्रदोष का व्रत किया जाता है। इसमें सूर्यास्त के बाद त्रि–मुहूर्त्त व्यापिनी त्रयोदशी को प्राथमिकता दी जाती है। यदि द्वादशी को ही प्रदोष काल में त्रयोदशी आ जावे तो द्वादशी के दिन प्रदोष का होता है। यदि त्रयोदशी वाले दिन ही प्रदोष काल में त्रयोदशी हो तो त्रयोदशी के दिन ही प्रदोषव्रत होगा परन्तु यदि दोनों दिन प्रदोष काल में त्रयोदशी व्याप्त हो तो ऐसी स्थिति में दूसरे दिन अर्थात् त्रयोदशी वाले दिन ही प्रदोष का व्रत किया जाता है और यदि दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी न हो तो दूसरे दिन अर्थात् त्रयोदशी वाले दिन ही प्रदोष का व्रत किया जाता है। प्रदोष व्रत में सोम प्रदोष, भौम प्रदोष एवं शनि प्रदोष विशेष फलदायी है। यहां पर तीन मुहूर्त्त का मान मध्यम रूप से **६** घी तक कोई तिथि रहे तो उसे प्रदोष व्यापिनी तिथि कहते हैं। यदि इसका सूक्ष्म मान निकालना हो तो रात्रि मान में **१५** का भाग लगाकर भागफल में **३** का गुणा कर देंगे तो प्रदोषकाल का कुल मान प्राप्त हो जावेगा।

✻ **पक्ष फल** ✻ माघी प्रतिपदा को आकाश निर्मल रहे तथा वायु में निर्मलता धूल आदि विकार न हो तो सुगंधित वस्तुएं तेल फुलैल तथा तिलहन में तेजी आती है। माघ बदी तीज को केवल बादल गर्जे परन्तु बरसे नहीं तो जौ, गेहूं आदि अन्न का संग्रह करने से निश्चय लाभ होता है। माघ सुदी पंचमी को बादल हों आगे भादव में उत्तम वर्षा होती है। माघ बदी **६** को अगर दिशायें और आकाश निर्मल हो तो लाभ की इच्छा करने वाले व्यापारियों को कपास संग्रह करनी चाहिए। माघ बदी सप्तमी को स्वाति नक्षत्र भी हो तब आकाश में बादल हो वर्षा हो, बर्फ गिरे, घटा से सूर्य चांद ढंके रहें तो वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा होती है और अनाज मन्दा रहता है। माघ सुदी **७-८-९** को बादल हो तो धान्य की बढोत्तरी हो। माघ बदी नवमी दशमी एकादशी को बादल हो बिजली चमके त था पवन चले तो सुहावनी वर्षा होती है। माघ की त्रयोदशी बदी अथवा सुदी में यदि ओले पड़ जाये तो वर्षा ऋतु में उत्तम वर्षा से धान्य मन्दा होता है। माघ सुदी सप्तमी से चतुर्दशी तक आठ दिन वर्षा हो तो उत्तम वर्षा का ठाठ (अधिकता) समझना चाहिये।

✻ माघ कृष्ण पक्ष ३० शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	९	४	१०	३	८	११	९	३
अं.	२२	१५	११	१०	२८	०८	१६	२६	२६
क.	४२	२६	३९	३१	२७	३०	२८	४१	४१
वि.	५३	२३	१७	२३	५५	४६	२४	५७	५७
गति	६० ५०	७११ २४	२० ०७	३३ २६	०७ ५४	६९ ०८	०५ ३०	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	श्रवण ४	श्रवण २	मघा ४	शतभिषा २	आश्लेषा ४	मूल ३	उत्तराभा. ४	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



माघ शुक्ल पक्ष दि.७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३०मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
०७.०२.२०२७	०९:२३:४३:४३	६०।४९	०९:२७:२५:४७	७२७।१०	०४:११:१९:१०	-२०।३१	१०:११:०४:४९	२३।३५	०३:२८:२०:०१	-७।५६	०८:०९:३९:५४	६९।१६	११:१६:३३:५३	०५।३४	०९:२६:३८:४६
०८.०२.२०२७	०९:२४:४४:३२	६०।४७	१०:०९:३२:५७	७३६।३६	०४:१०:५८:३२	-२१।०९	१०:११:२८:२४	१३।१४	०३:२८:१२:०५	-७।५७	०८:१०:४९:१०	६९।२३	११:१६:३९:२७	०५।३८	०९:२६:३५:३५
०९.०२.२०२७	०९:२५:४५:१९	६०।४६	१०:२१:४९:३३	७४७।४४	०४:१०:३७:२३	-२१।३६	१०:११:४१:३७	०२।३१	०३:२८:०४:०८	-७।५८	०८:११:५८:३३	६९।३०	११:१६:४५:०५	०५।४२	०९:२६:३२:२५
१०.०२.२०२७	०९:२६:४६:०५	६०।४५	११:०४:१७:१८	७६०।३८	०४:१०:१५:४७	-२२।०१	१०:११:४४:०९	-८।१९	०३:२७:५६:१०	-७।५८	०८:१३:०८:०३	६९।३६	११:१६:५०:४७	०५।४६	०९:२६:२९:१४
११.०२.२०२७	०९:२७:४६:५०	६०।४३	११:१६:५७:५६	७७५।२४	०४:०९:५३:४५	-२२।२४	१०:११:३५:५०	-१९।०२	०३:२७:४८:१३	-७।५८	०८:१४:१७:३९	६९।४३	११:१६:५६:३२	०५।५०	०९:२६:२६:०३
१२.०२.२०२७	०९:२८:४७:३३	६०।४१	११:२९:५३:२०	७९२।००	०४:०९:३१:२१	-२२।४४	१०:११:१६:४७	-२९।२२	०३:२७:४०:१५	-७।५७	०८:१५:२७:२१	६९।४९	११:१७:०२:२२	०५।५३	०९:२६:२२:५२
१३.०२.२०२७	०९:२९:४८:१४	६०।४०	००:१३:०५:२१	८१०।१४	०४:०९:०८:३७	-२३।०२	१०:१०:४७:२५	-३९।००	०३:२७:३२:१७	-७।५७	०८:१६:३७:१०	६९।५५	११:१७:०८:१६	०५।५७	०९:२६:१९:४१
१४.०२.२०२७	१०:००:४८:५४	६०।३८	००:२६:३५:३५	८२९।३१	०४:०८:४५:३५	-२३।१७	१०:१०:०८:२५	-४७।३८	०३:२७:२४:२१	-७।५५	०८:१७:४७:०५	७०।००	११:१७:१४:१३	०६।०१	०९:२६:१६:३१
१५.०२.२०२७	१०:०१:४९:३२	६०।३६	०१:१०:२५:०६	८४८।४९	०४:०८:२२:१७	-२३।३०	१०:०९:२०:४७	-५५।००	०३:२७:१६:२५	-७।५४	०८:१८:५७:०५	७०।०६	११:१७:२०:१४	०६।०४	०९:२६:१३:२०
१६.०२.२०२७	१०:०२:५०:०९	६०।३५	०१:२४:३३:५५	८६६।४०	०४:०७:५८:४८	-२३।४०	१०:०८:२५:४६	-६०।५२	०३:२७:०८:३२	-७।५२	०८:२०:०७:११	७०।१२	११:१७:२६:१८	०६।०८	०९:२६:१०:०९
१७.०२.२०२७	१०:०३:५०:४३	६०।३३	०२:०९:००:३५	८८१।१३	०४:०७:३५:०८	-२३।४७	१०:०७:२४:५५	-६५।०२	०३:२७:००:३९	-७।५०	०८:२१:१७:२२	७०।१७	११:१७:३२:२६	०६।११	०९:२६:०६:५८
१८.०२.२०२७	१०:०४:५१:१६	६०।३१	०२:२३:४१:४८	८९०।३४	०४:०७:११:२१	-२३।५१	१०:०६:१९:५३	-६७।२५	०३:२६:५२:५०	-७।४७	०८:२२:२७:३९	७०।२२	११:१७:३८:३७	०६।१५	०९:२६:०३:४८
१९.०२.२०२७	१०:०५:५१:४७	६०।२९	०३:०८:३२:२२	८९३।०८	०४:०६:४७:३०	-२३।५३	१०:०५:१२:२८	-६८।०१	०३:२६:४५:०२	-७।४५	०८:२३:३८:०२	७०।२७	११:१७:४४:५२	०६।१८	०९:२६:००:३७
२०.०२.२०२७	१०:०६:५२:१६	६०।२८	०३:२३:२५:२९	८८८।०१	०४:०६:२३:३७	-२३।५२	१०:०४:०४:२७	-६६।५३	०३:२६:३७:१८	-७।४१	०८:२४:४८:२९	७०।३३	११:१७:५१:०९	०६।२१	०९:२५:५७:२६

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	मध्यरात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः
			मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०७.०२.२०२७	रवि	१	१०:४३:२९	१२:२२:३८	१४:१९:५३	१६:३२:४८	१८:४९:३८	२१:०३:५१	२३:१७:२३	२५:३३:४७	२७:४९:४८	२९:५३:३७	७:४२:४९	९:१४:२०
०८.०२.२०२७	सोम	२	१०:३९:२८	१२:१८:३८	१४:१५:५२	१६:२८:४८	१८:४५:३७	२०:५९:५१	२३:१३:२३	२५:२९:४७	२७:४५:४८	२९:४९:३७	७:३८:४९	९:१०:२०
०९.०२.२०२७	मंगल	३	१०:३५:२७	१२:१४:३७	१४:११:५१	१६:२४:४७	१८:४१:३६	२०:५५:४९	२३:०९:२२	२५:२५:४५	२७:४१:४६	२९:४५:३५	७:३४:४८	९:०६:१९
१०.०२.२०२७	बुध	४	१०:३१:२४	१२:१०:३४	१४:०७:५९	१६:२०:४४	१८:३७:३४	२०:५१:४७	२३:०५:१९	२५:२१:४३	२७:३७:४४	२९:४१:३३	७:३०:४५	९:०२:१६
११.०२.२०२७	गुरू	५	१०:२७:२१	१२:०६:३१	१४:०३:४५	१६:१६:४१	१८:३३:३०	२०:४७:४३	२३:०१:१६	२५:१७:३९	२७:३३:४१	२९:३७:२९	७:२६:४२	८:५८:१३
१२.०२.२०२७	शुक्र	६	१०:२३:१६	१२:०२:२६	१३:५९:४१	१६:१२:३६	१८:२९:२६	२०:४३:३९	२२:५७:११	२५:१३:३५	२७:२९:३६	२९:३३:२५	७:२२:३७	८:५४:०८
१३.०२.२०२७	शनि	७	१०:१९:११	११:५८:२१	१३:५५:३५	१६:०८:३१	१८:२५:२०	२०:३९:३३	२२:५३:०६	२५:०९:२९	२७:२५:३०	२९:२९:१९	७:१८:३२	८:५०:०३
१४.०२.२०२७	रवि	८	१०:१५:०४	११:५४:१४	१३:५१:२८	१६:०४:२४	१८:२१:१४	२०:३५:२७	२२:४८:५९	२५:०५:२३	२७:२१:२४	२९:२५:१३	३१:१०:२९	८:४५:५६
१५.०२.२०२७	सोम	९	१०:१०:५७	११:५०:०७	१३:४७:२१	१६:००:१७	१८:१७:०६	२०:३१:१९	२२:४४:५२	२५:०१:१५	२७:१७:१६	२९:२१:०५	३१:०६:२२	८:४१:४९
१६.०२.२०२७	मंगल	१०	१०:०६:४९	११:४५:५८	१३:४३:१३	१५:५६:०८	१८:१२:५८	२०:२७:११	२२:४०:४३	२४:५७:०७	२७:१३:०८	२९:१६:५७	३१:०२:१३	८:३७:४०
१७.०२.२०२७	बुध	११	१०:०२:३९	११:४१:४९	१३:३९:०३	१५:५१:५९	१८:०८:४८	२०:२३:०२	२२:३६:३४	२४:५२:५७	२७:०८:५९	२९:१२:४८	३०:५८:०४	८:३३:३१
१८.०२.२०२७	गुरू	१२	९:५८:२९	११:३७:३९	१३:३४:५३	१५:४७:४९	१८:०४:३८	२०:१८:५१	२२:३२:२४	२४:४८:४७	२७:०४:४९	२९:०८:३७	३०:५३:५४	८:२९:२१
१९.०२.२०२७	शुक्र	१३	९:५४:२२	११:३३:३२	१३:३०:४७	१५:४३:४२	१८:००:३२	२०:१४:४५	२२:२८:१७	२४:४४:४१	२७:००:४२	२९:०४:३१	३०:४९:४७	८:२५:१४
२०.०२.२०२७	शनि	१४/१५	९:५०:३६	११:२९:४५	१३:२७:००	१५:३९:५६	१७:५६:४५	२०:१०:५८	२२:२४:३०	२४:४०:५४	२६:५६:५५	२९:००:४४	३०:४६:००	८:२१:२७

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ माघ शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख ७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ ई.तक

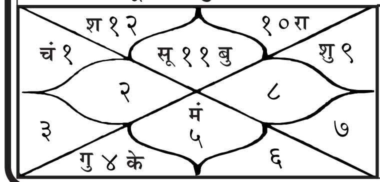
शिशिर–बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक फरवरी	
रवि	१	२३:२८	४०:१५	धनिष्ठा	२३:४९	वरियान	२१:४०	किंस्तुघ्न	१०:३०	११:०१	०७:२२	१८:२३	कुम्भ	१०:३६	७	**गुप्त नवरात्रि प्रा.** राजयोग २३।२८ से २३।४९, यमदंष्ट्रा ०७।२२ से २३।४९ तक पंचक प्रारंभ १०।३६
सोम	२	२५:०७	४४:२४	शतभिषा	२५:५७	परिध	२१:५१	बालव	१२:२०	११:०३	०७:२१	१८:२४	कुम्भ		८	पंचक जारी, चंद्रदर्शन मु.१५, शनि रेवत्यां ०७।५१
मंगल	३	२६:२०	४७:२९	पूर्वाभा	२७:४०	शिव	२१:४३	तैतिल	१३:४७	११:०४	०७:२१	१८:२५	मीन	२१:१७	९	**गौरी तृतीया,** पंचक जारी, रवियोग प्रारंभ २७।४०, बुध वक्री, सर्वा. २७।४० से ३१।२० तक **A**
बुध	४	२७:०५	४९:२२	उत्तराभा	२८:५६	सिद्ध	२१:१३	वणिज	१४:४६	११:०५	०७:२०	१८:२५	मीन		१०	**वरद विनायक चतुर्थी, तिलकुण्ड चतुर्थी, गणेश जयंती,** पंचक जारी, शुक्र पूषायां ०९।३७ **B**
गुरू	५	२७:१९	४९:५८	रेवती	२९:४२	साध्य	२०:२०	बव	१५:१६	११:०७	०७:१९	१८:२६	मेष	२९:४२	११	**श्री पंचमी, बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन,** रवियोग प्रारंभ २९।४२, वैधृति महापात २७।३६ से **C**
शुक्र	६	२७:००	४९:१३	अश्विनी	२९:५६	शुभ	१९:०२	कौलव	१५:१३	११:०८	०७:१९	१८:२७	मेष		१२	रवियोग समाप्त २९।५६, वैधृति महापात समाप्त ०८।०३, कुमार योग समाप्त २७।०० **D**
शनि	७	२६:०७	४७:०३	भरणी	२९:३७	शुक्ल	१७:१८	गर	१४:३८	११:०९	०७:१८	१८:२७	मेष		१३	**रथ सप्तमी, श्रीनर्मदा जयंती,** स्थिर योग प्रारंभ २९।३७, ज्वालामुखी योग प्रारंभ २९।३७ **E**
रवि	८	२४:४२	४३:३०	कृतिका	२८:४७	ब्रह्म	१५:०८	विष्टि	१३:२८	११:११	०७:१७	१८:२८	वृषभ	११:२८	१४	**दुर्गाष्टमी, भीमाष्टमी,** बुध अस्त पश्चिम में, रवियोग प्रारंभ २८।४७ **F**
सोम	९	२२:४५	३८:४०	रोहिणी	२७:२६	ऐन्द्र	१२:३३	बालव	११:४७	११:१२	०७:१७	१८:२९	वृषभ		१५	**महानंदा नवमी,** रवियोग अहोरात्र, कुमार योग २२।४७ से २७।२६ तक **G**
मंगल	१०	२०:२०	३२:४०	मृगशिरा	२५:३८	वैधृति/विष्कुम्भ	०९:३३ ३०:१४	तैतिल	०९:३६	११:१३	०७:१६	१८:२९	मिथुन	१४:३५	१६	रवियोग समाप्त २५।३८, यमघण्ट योग प्रारंभ २५।३८ से, भद्रा ३०।५९ से
बुध	११	१७:३२	२५:४३	आर्द्रा	२३:२९	प्रीति	२६:३७	विष्टि	१७:३२	११:१५	०७:१५	१८:३०	मिथुन		१७	**जया एकादशी (सर्वे.),** भद्रा १७।३२ तक मूसल ०७।१५ से २३।२९ तक, बुध धनिष्ठा २२।११
गुरू	१२	१४:२८	१८:०४	पुनर्वसु	२१:०६	आयुष्मान	२२:५०	बालव	१४:२८	११:१६	०७:१५	१८:३०	कर्क	१५:४२	१८	**प्रदोष व्रत, भीम द्वादशी,** गुरु पुष्यामृत सिद्धि योग २१।०६ से, सर्वा. ०७।१५ से ३१।१४ तक **H**
शुक्र	१३	११:१५	१०:०३	पुष्य	१८:३६	सौभाग्य	१८:५८	तैतिल	११:१५	११:१७	०७:१४	१८:३१	कर्क		१९	**श्रीविश्वकर्मा जयंती, श्रीशिवाजी जयंती,** रवियोग समाप्त १८।३६, रवियोग प्रारंभ २४।३८ **I**
शनि	१४	०८:००	०१:५८	आश्लेषा	१६:०८	शोभन	१५:०८	वणिज	०८:००	११:१९	०७:१३	१८:३२	सिंह	१६:०८	२०	**क्षय तिथि, पूर्णिमा व्रत, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ण, संत रविदास जयंती J**
रवि	१५	२८:५४	५४:१२	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय

✻ माघ शुक्ल पक्ष ८ रविवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०	४	१०	३	८	११	९	३
अं.	००	२६	०८	१०	२७	१७	१७	२६	२६
क.	४८	३५	४५	०८	२४	४७	१४	१६	१६
वि.	५४	३५	३५	२५	२१	०५	१३	३१	३१
गति	६० ३८	८२१ ३१	२३ १७	४७ ३८	०७ ५५	७० ००	०६ ०१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	धनिष्ठा ३	भरणी ४	मघा ३	शतभिषा २	आश्लेषा ४	पूर्वाषा २	चित्रा १	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



A काण ०७।२१ से २७।४० तक **B** रवियोग समाप्त २८।५६, भद्रा १४।४६ से २७।०५ तक **C** सर्वा. ०७।१९ से पंचक समाप्त २९।४२ **D** बुध अस्त पश्चिम में १३।४२, राजयोग प्रारंभ २७।५६, सर्वा. २९।५६ तक **E** भद्रा २६।०७ से सूर्य कुम्भ पर १०।०९ बं.फाल्गुन मास प्रा. **F** ज्वालामुखी योग समाप्त २४।४२ एवं ज्वालामुखी योग प्रारंभ २८।४७, भद्रा १३।२८ तक **G** ज्वालामुखी योग समाप्त २२।४५, सर्वा. ०७।१७ से ३१।१६ तक अमृत सिद्धि २७।२६ से ३१।१६ तक **H** अमृत सिद्धि २१।०६ से ३१।१४ तक सिद्धि ०७।१५ से २१।०६ तक सायन सूर्य मीन पर २७।०४ बसंत ऋतु प्रा. **I** गुरु आश्लेषा ३ पर २१।०५, मृत्यु योग प्रारंभ १८।३६, उत्पात ०७।१४ से १८।३६ तक सूर्य शतभिषा पर २४।३८ **J माघ जयंती, मान्द्य चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य),** रवियोग समाप्त १६।०९, स्थिर योग समाप्त ०८।००, भद्रा ०८।०० से १८।२५ तक राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रा.

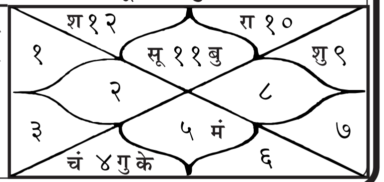
✻ **गौरी तृतीया व्रत –** तृतीया दिन सौभाग्यवती स्त्रियां पति की दीर्घायु–आरोग्य की अनुकूलता की कामना से एवं कुंवारी अनुकूल पति की प्राप्ति के निमित्त इस व्रत को करती हैं । इस व्रत में गौरी मां का पूजन अर्चन किया जाता है। गौरी तृतीया व्रत परयुता (चतुर्थी व्रत) तृतीया में करने का निर्देश है। **वरद तिल–कुन्द चतुर्थी व्रत –** प्रदोषव्यापिनी माघ शुक्ल चतुर्थी के दिन ये व्रत किये जाते हैं। ये तीनों व्रत गणेशजी के हैं। **बसंत पंचमी/श्रीपंचमी व्रत –** यह पंचमी पूर्वान्हव्यापिनी ली जाती है। **रथ सप्तमी व्रत –** माघ शुक्ल सप्तमी, अरूणोदयकाल व्यापिनी है। व्रत के देवता सूर्य, इस दिन तीर्थ पर स्नान दान का माहात्म्य को सूर्यग्रहणकालीन स्नानादि के माहात्म्य से भी अधिक माना गया है। **भीष्माष्टमी –** माघ शुक्ल अष्टमी मध्यान्हकाल व्यापिनी ग्राह्य है। **भीष्म द्वादशी –** माघ द्वादशी पूर्वविद्धा ग्राह्य है। **माघी पूर्णिमा –** सूर्य उदय में व्याप्त पराग्राह्य है।

✻ कुम्भ संक्रान्ति फलम् ✻ दिनांक १३.२.२०२७ माघ शुक्ल पक्ष ७ शनिवार को दिन में १०.०९ बजे कुम्भ संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल शनिवार के दिन ही सूर्योदय से मान्य रहेगा। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पर्वत, पहाड़ आदि पर निवास करने वाले, वृद्ध, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, गरीब–कमजोर वर्ग आदि के लिए लाभदायक हैं । गर करण संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट, मुहूर्त्त–१५, लोहा–इस्पात, सलिया, सुगन्धित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, चांवल, सूत–कपास, पोस्ता, मिर्च, मसूर, हल्दी, कलपूर्जे, मशीनरी, सोना चांदी, असगंध, हाथी, गधा, लाल वस्त्र, लहसुन, कंदमूल पदार्थ आदि में तेजी आवे ।

✻ माघ शुक्ल पक्ष १४ शनिवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	३	४	१०	३	८	११	९	३
अं.	०६	२३	०६	०४	२६	२४	१७	२५	२५
क.	५२	२५	२३	०४	३७	४८	५१	५७	५७
वि.	१६	२९	३७	२७	१८	२९	०९	२६	२६
गति	६० २८	८८८ ०१	२३ ५२	६६ ५३	०७ ४१	७० ३३	०६ २१	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	शतभिषा १	आश्लेषा ३	मघा २	धनिष्ठा ४	आश्लेषा ३	पूर्वाषा ४	चित्रा १	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



फाल्गुन कृष्ण पक्ष दि. २१ फरवरी से ८ मार्च २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२१.०२.२०२७	१०:०७:५२:४४	६०।२६	०४:०८:१३:३०	८७५।२३	०४:०५:५९:४५	-२३।४१	१०:०२:५७:३४	-६४।१२	०३:२६:२९:३६	-७।३८	०८:२५:५९:०२	७०।३८	११:१७:५७:३०	०६।२४	०९:२५:५४:१५
२२.०२.२०२७	१०:०८:५३:१०	६०।२५	०४:२२:४८:५४	८५६।२५	०४:०५:३५:५६	-२३।४३	१०:०१:५३:२२	-६०।१०	०३:२६:२१:५८	-७।३४	०८:२७:०९:३९	७०।४३	११:१८:०३:५५	०६।२७	०९:२५:५१:०४
२३.०२.२०२७	१०:०९:५३:३५	६०।२३	०५:०७:०५:१९	८३३।०५	०४:०५:१२:१३	-२३।३४	१०:००:५३:१२	-५५।००	०३:२६:१४:२४	-७।३०	०८:२८:२०:२२	७०।४७	११:१८:१०:२२	०६।३०	०९:२५:४७:५४
२४.०२.२०२७	१०:१०:५३:५८	६०।२२	०५:२०:५८:२३	८०७।४२	०४:०४:४८:३८	-२३।२३	०९:२९:५८:१२	-४८।५९	०३:२६:०६:५४	-७।२६	०८:२९:३१:०९	७०।५२	११:१८:१६:५२	०६।३३	०९:२५:४४:४३
२५.०२.२०२७	१०:११:५४:२०	६०।२०	०६:०४:२६:०५	७८२।३२	०४:०४:२५:१५	-२३।१०	०९:२९:०९:१३	-४२।२१	०३:२५:५९:२८	-७।२१	०९:००:४२:०१	७०।५७	११:१८:२३:२५	०६।३६	०९:२५:४१:३२
२६.०२.२०२७	१०:१२:५४:४०	६०।१९	०६:१७:२८:३७	७५९।२९	०४:०४:०२:०५	-२२।५३	०९:२८:२६:५१	-३५।२०	०३:२५:५२:०७	-७।१६	०९:०१:५२:५८	७१।०१	११:१८:३०:०१	०६।३९	०९:२५:३८:२१
२७.०२.२०२७	१०:१३:५४:५९	६०।१७	०७:००:०८:०७	७३९।५७	०४:०३:३९:१२	-२२।३५	०९:२७:५१:३१	-२८।०८	०३:२५:४४:५१	-७।११	०९:०३:०३:५९	७१।०५	११:१८:३६:४०	०६।४२	०९:२५:३५:११
२८.०२.२०२७	१०:१४:५५:१६	६०।१६	०७:१२:२८:०४	७२४।४८	०४:०३:१६:३७	-२२।१४	०९:२७:२३:२३	-२०।५४	०३:२५:३७:४०	-७।०५	०९:०४:१५:०४	७१।०९	११:१८:४३:२२	०६।४४	०९:२५:३२:००
०१.०३.२०२७	१०:१५:५५:३२	६०।१४	०७:२४:३२:५२	७१४।२७	०४:०२:५४:२३	-२१।५०	०९:२७:०२:२९	-१३।४६	०३:२५:३०:३५	-६।५९	०९:०५:२६:१३	७१।१३	११:१८:५०:०७	०६।४७	०९:२५:२८:४९
०२.०३.२०२७	१०:१६:५५:४६	६०।१३	०८:०६:२७:१९	७०८।५९	०४:०२:३२:३३	-२१।२४	०९:२६:४८:४३	-६।५०	०३:२५:२३:३६	-६।५३	०९:०६:३७:२६	७१।१७	११:१८:५६:५४	०६।५०	०९:२५:२५:३८
०३.०३.२०२७	१०:१७:५५:५९	६०।११	०८:१८:१६:१८	७०८।१०	०४:०२:११:०९	-२०।५६	०९:२६:४१:५३	-००।१०	०३:२५:१६:४३	-६।४७	०९:०७:४८:४३	७१।२०	११:१९:०३:४३	०६।५२	०९:२५:२२:२८
०४.०३.२०२७	१०:१८:५६:११	६०।१०	०९:००:०४:२८	७११।३५	०४:०१:५०:१३	-२०।२६	०९:२६:४१:४४	०६।१२	०३:२५:०९:५६	-६।४०	०९:०९:००:०३	७१।२४	११:१९:१०:३५	०६।५४	०९:२५:१९:१७
०५.०३.२०२७	१०:१९:५६:२०	६०।०८	०९:११:५६:०३	७१८।३६	०४:०१:२९:४६	-१९।५४	०९:२६:४७:५५	१२।१३	०३:२५:०३:१७	-६।३३	०९:१०:११:२७	७१।२७	११:१९:१७:३०	०६।५७	०९:२५:१६:०६
०६.०३.२०२७	१०:२०:५६:२८	६०।०६	०९:२३:५४:४०	७२८।३३	०४:०१:०९:५२	-१९।२०	०९:२७:००:०८	१७।५३	०३:२४:५६:४४	-६।२५	०९:११:२२:५४	७१।३०	११:१९:२४:२६	०६।५९	०९:२५:१२:५५
०७.०३.२०२७	१०:२१:५६:३५	६०।०५	१०:०६:०३:१३	७४०।३८	०४:००:५०:३२	-१८।४४	०९:२७:१८:०२	२३।१२	०३:२४:५०:१८	-६।१८	०९:१२:३४:२४	७१।३३	११:१९:३१:२६	०७।०१	०९:२५:०९:४४
०८.०३.२०२७	१०:२२:५६:३९	६०।०३	१०:१८:२३:५१	७५४।०२	०४:००:३१:४८	-१८।०७	०९:२७:४१:१४	२८।११	०३:२४:४४:००	-६।१०	०९:१३:४५:५७	७१।३६	११:१९:३८:२७	०७।०३	०९:२५:०६:३४

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः मेष	दिवा वृषभ	दिवा मिथुन	दिवा कर्क	सायं सिंह	रात्रि कन्या	रात्रि तुला	मध्यरात्रि वृश्चिक	अर्द्धरात्रोत्तर धनु	अर्द्धरात्रोत्तर मकर	प्रातः कुंभ	प्रातः मीन
२१.०२.२०२७	रवि	१	९:४६:४८	११:२५:५८	१३:२३:१३	१५:३६:०८	१७:५२:५७	२०:०७:१०	२२:२०:४३	२४:३७:०६	२६:५३:०८	२८:५६:५६	३०:४२:१३	८:१७:४०
२२.०२.२०२७	सोम	२	९:४३:००	११:२२:०९	१३:१९:२४	१५:३२:२०	१७:४९:०९	२०:०३:२२	२२:१६:५४	२४:३३:१८	२६:४९:१९	२८:५३:०८	३०:३८:२४	८:१३:५१
२३.०२.२०२७	मंगल	३	९:३९:१०	११:१८:२०	१३:१५:३५	१५:२८:३०	१७:४५:२०	१९:५९:३३	२२:१३:०५	२४:२९:२९	२६:४५:३०	२८:४९:१९	३०:३४:३५	८:१०:०२
२४.०२.२०२७	बुध	४	९:३५:२१	११:१४:३०	१३:११:४५	१५:२४:४१	१७:४१:३०	१९:५५:४३	२२:०९:१५	२४:२५:३९	२६:४१:४०	२८:४५:२९	३०:३०:४५	८:०६:१२
२५.०२.२०२७	गुरू	५	९:३१:३०	११:१०:४०	१३:०७:५४	१५:२०:५०	१७:३७:३९	१९:५१:५२	२२:०५:२५	२४:२१:४८	२६:३७:५०	२८:४१:३८	३०:२६:५५	८:०२:२२
२६.०२.२०२७	शुक्र	६	९:२७:३९	११:०६:४८	१३:०४:०३	१५:१६:५९	१७:३३:४८	१९:४८:०१	२२:०१:३४	२४:१७:५७	२६:३३:५८	२८:३७:४७	३०:२३:०४	७:५८:३१
२७.०२.२०२७	शनि	७	९:२३:४७	११:०२:५७	१३:००:११	१५:१३:०७	१७:२९:५६	१९:४४:०९	२१:५७:४२	२४:१४:०५	२६:३०:०७	२८:३३:५५	३०:१९:१२	७:५४:३९
२८.०२.२०२७	रवि	८	९:१९:५४	१०:५९:०४	१२:५६:१९	१५:०९:१५	१७:२६:०४	१९:४०:१७	२१:५३:४९	२४:१०:१३	२६:२६:१४	२८:३०:०३	३०:१५:१९	७:५०:४६
०१.०३.२०२७	सोम	९	९:१६:०१	१०:५५:११	१२:५२:२६	१५:०५:२१	१७:२२:११	१९:३६:२४	२१:४९:५६	२४:०६:२०	२६:२२:२१	२८:२६:१०	३०:११:२६	७:४६:५३
०२.०३.२०२७	मंगल	१०	९:१२:०८	१०:५१:१८	१२:४८:३२	१५:०१:२८	१७:१८:१७	१९:३२:३०	२१:४६:०३	२४:०२:२६	२६:१८:२८	२८:२२:१६	३०:०७:३३	७:४३:००
०३.०३.२०२७	बुध	११	९:०८:१४	१०:४७:२३	१२:४४:३८	१४:५७:३४	१७:१४:२३	१९:२८:३६	२१:४२:०९	२३:५८:३२	२६:१४:३३	२८:१८:२२	३०:०३:३९	७:३९:०६
०४.०३.२०२७	गुरू	११	९:०४:१९	१०:४३:२९	१२:४०:४३	१४:५३:३९	१७:१०:२८	१९:२४:४२	२१:३८:१४	२३:५४:३७	२६:१०:३९	२८:१४:२८	२९:५९:४४	७:३५:११
०५.०३.२०२७	शुक्र	१२	९:००:२४	१०:३९:३४	१२:३६:४८	१४:४९:४४	१७:०६:३३	१९:२०:४६	२१:३४:१९	२३:५०:४२	२६:०६:४४	२८:१०:३३	२९:५५:४९	७:३१:१६
०६.०३.२०२७	शनि	१३	८:५६:२९	१०:३५:३८	१२:३२:५३	१४:४५:४९	१७:०२:३८	१९:१६:५१	२१:३०:२३	२३:४६:४७	२६:०२:४८	२८:०६:३७	२९:५१:५३	७:२७:२०
०७.०३.२०२७	रवि	१४	८:५२:३३	१०:३१:४२	१२:२८:५७	१४:४१:५३	१६:५८:४२	१९:१२:५५	२१:२६:२८	२३:४२:५१	२५:५८:५२	२८:०२:४१	२९:४७:५८	७:२३:२५
०८.०३.२०२७	सोम	३०	९:४८:३६	१०:२७:४६	१२:२५:०१	१४:३७:५६	१६:५४:४६	१९:०८:५९	२१:२२:३१	२३:३८:५५	२५:५४:५६	२७:५८:४५	२९:४४:०१	७:१९:२८

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ फाल्गुन कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र शक संवत् १९४८

तारीख २१ फरवरी से ८ मार्च २०२७ ई.तक

बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक फरवरी-मार्च	
रवि	१	२६:०४	४७:०९	मघा	१३:५१	अतिगण्ड	११:२७	बालव	१५:२६	११:२०	०७:१२	१८:३२	सिंह		२१	राजयोग प्रारंभ २६।०४, यमदंष्ट्रा ०७।१२ से १३।५१ तक, शुक्र उषायां १९।२५
सोम	२	२३:३९	४१:१०	पूर्वाफा	११:५५	सुकर्मा/धृति	०८:०२ २८:५९	तैतिल	१२:४८	११:२१	०७:११	१८:३३	कन्या	१७:३०	२२	
मंगल	३	२१:४९	३६:३७	उत्तराफा	१०:२८	शूल	२६:२६	वणिज	१०:४०	११:२३	०७:११	१८:३३	कन्या		२३	व्यतिपात महापात २६।१४ से ३०।१५, बुध वक्री मकर में २८।४६, भद्रा १०।४० से २१।४९ तक
बुध	४	२०:४१	३३:४७	हस्त	०९:३९	गण्ड	२४:२७	बव	०९:१०	११:२४	०७:१०	१८:३४	तुला	२१:३०	२४	**संकष्टी चतुर्थी,** चंद्र उदय २२।११, शुक्र मकर में १५।१७, सर्वा. ०७।१० से ०९।३९ तक
गुरू	५	२०:१८	३२:५३	चित्रा	०९:३३	वृद्धि	२३:०४	कौलव	०८:२३	११:२६	०७:०९	१८:३४	तुला		२५	दग्ध योग प्रारंभ २०।१८ से, बुध उदय पूर्व में, चर ०७।०९ से ०९।३३ तक
शुक्र	६	२०:४४	३३:५९	स्वाति	१०:१३	ध्रुव	२२:१८	गर	०८:२५	११:२७	०७:०८	१८:३५	वृश्चिक	२९:१४	२६	**यशोदा जयंती,** बिछूड़ा प्रारंभ २९।१४, रवियोग प्रारंभ १०।१३, कुमार योग १३।१३ से २०।४४, भद्रा २०।४४ से
शनि	७	२१:५५	३७:००	विशाखा	११:४०	व्याघात	२२:०८	विष्टि	०९:१४	११:२८	०७:०७	१८:३६	वृश्चिक		२७	**श्रीनाथजी पाटोत्सव,** बिछूड़ा, रवियोग समाप्त ११।४०, भद्रा ०९।१४ तक, त्रिपुष्कर योग ०७।०७ से ११।४०
रवि	८	२३:४७	४१:४१	अनुराधा	१३:४७	हर्षण	२२:२८	बालव	१०:४७	११:३०	०७:०६	१८:३६	वृश्चिक		२८	**कालाष्टमी, सीताष्टमी,** बिछूड़ा, मृत्यु ०७।०६ से १३।४७ तक
सोम	९	२६:०८	४७:३६	ज्येष्ठा	१६:२७	वज्र	२३:१०	तैतिल	१२:५४	११:३१	०७:०५	१८:३७	धनु	१६:२७	१	**समर्थ गुरु रामदास जयंती,** बिछूड़ा समाप्त १६।२७, कुमार योग प्रारंभ २६।०८
मंगल	१०	२८:४५	५४:११	मूल	१९:२७	सिद्धि	२४:०६	वणिज	१५:२५	११:३३	०७:०४	१८:३७	धनु		२	**सरस्वती जयंती,** कुमार योग समाप्त २९।२७, भद्रा १५।२५ से २८।४५ तक
बुध	११	-	६०:००	पूर्वाषा	२२:३४	व्यतिपात	२५:०६	बव	१८:०५	११:३४	०७:०३	१८:३८	मकर	२९:२०	३	वृद्धि तिथि, बुध मार्गी, यमदंष्ट्रा ०७।०३ से २२।३४ तक
गुरू	११	०७:२५	००:५५	उत्तराषा	२५:३६	वरीयान	२६:००	बालव	०७:२५	११:३६	०७:०३	१८:३८	मकर		४	**विजया एकादशी,** यमदंष्ट्रा ०७।०३ से २५।३६ तक सूर्य पूर्वाभा पर ३०।५९, शुक्र श्रवण २५।३९
शुक्र	१२	०९:५४	०७:१२	श्रवण	२८:२१	परिघ	२६:४२	तैतिल	०९:५४	११:३७	०७:०२	१८:३९	मकर		५	**प्रदोष व्रत,** सर्वा. ०७।०२ से २८।२१ तक
शनि	१३	१२:०४	१२:३९	धनिष्ठा	३०:४२	शिव	२७:०५	वणिज	१२:०४	११:३९	०७:०१	१८:३९	कुम्भ	१७:३४	६	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,** निशीथ काल २४।२८ से २५।१६, स्थिर योग प्रारंभ ३०।४२ **A**
रवि	१४	१३:४७	१६:५८	शतभिषा	-	सिद्ध	२७:०६	शकुनि	१३:४७	११:४०	०७:००	१८:४०	कुम्भ		७	पंचक जारी, द्वापर युगादि, शुक्र श्रवण २ पर २०।४८
सोम	३०	१४:५९	२०:०२	शतभिषा	०८:३५	साध्य	२६:४३	नाग	१४:५९	११:४१	०६:५९	१८:४०	मीन	२७:४०	८	**दर्श अमावस्या, सोमवती अमावस्या** १४।५९ तक, पंचक जारी, कुमार योग प्रारंभ १४।५९

A भद्रा १२।०४ से २४।५९ तक पंचक प्रारंभ १७।३४

✻ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ८ गुरूवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	७	४	१	३	९	११	९	३
अं.	१४	१२	०३	२७	२५	०४	१८	२५	२५
क.	५५	२८	१६	२३	३७	१५	४३	३२	३२
वि.	१६	०४	३७	२३	४०	०४	२२	००	००
गति	६० १६	७२४ ४८	२२ १४	२० ५४	०७ ०५	७१ ०९	०६ ४४	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	शतभिषा ३	अनुराधा ३	मघा १	धनिष्ठा २	आश्लेषा ३	उत्तराषा ३	चित्रा १	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

✻ महाशिवरात्रि व्रत ✻

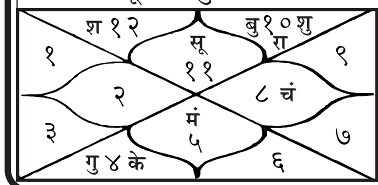
निशीथ व्यापिनी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन यह व्रत किया जाता है। यहां निशीथ शब्द से रात्रि का मध्यवर्ती (अष्टम) मुहूर्त्त ग्रहण करना चाहिए, चतुर्दशी पहले ही दिन निशीथव्यापिनी हो तो व्रत पहले दिन। ईशान संहिता के शिवलिंगतयोद्भुत कोटसूर्यसमप्रभ इस वचन के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव होने से शिवरात्रि को महाशिवरात्रि कहा जाता है। महाशिवरात्रि का पारणा–दिनमान के ४ भाग में तीसरा भाग से पहले चतुर्दशी समाप्त हो रही है तो चतुर्दशी के बाद पारणा होगा और यदि ३ याम से अधिक चतुर्दशी हो तो चतुर्दशी में ही पारणा होगा।

याम त्रयात् अर्वाक चतुर्दशी समाप्तौ चतुर्दश्यन्ते पारणम्।
याम त्रय उर्ध्वं गामिन्या चतुर्दश्यां प्रात चतुर्दशी मध्येएव ॥4॥

✻ फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३० सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१०	४	९	३	९	११	९	३
अं.	२२	१८	००	२७	२४	१३	१९	२५	२५
क.	५६	२३	३१	४१	४४	४५	३८	०६	०६
वि.	३९	५१	४८	१४	००	५७	२७	३४	३४
गति	६० ०३	७५४ ०२	१८ ०७	२८ ११	०६ १०	७१ ३६	०७ ०३	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूर्वाभा १	शतभिषा ४	मघा १	धनिष्ठा २	आश्लेषा ३	श्रवण २	चित्रा १	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

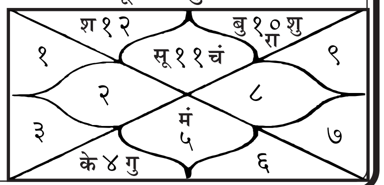
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ पक्ष फल ✻

फागुन बदी तीज को अगर आकाश में बादल हों अथवा वायु चले तो आसोज सुदी तीज को दिन रात वर्षा होती है। फागुन सुदी सात को बादल न हो तथा वायु का जोर भी न हो तो तृण संज्ञक धान्य (ज्वार, बाजरा, मक्का, ग्वार आदि) की उत्तम उपज होती है। फाल्गुन मास में बादल छाये रहे परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा ऋतु में वर्षा होती है। फाल्गुन की पूर्णमासी को बादल गरजें अथवा वर्षा हो तो सातवें मास में लाभ होगा। अनाज का स्टॉक करो। होलिका दहन समय यदि आकाश में बादल हो तो जौ, गेहूं की खेती को रोली (एक प्रकार का रोग) लगने से उपज मध्यम होगी और भाव तेज रहेगा।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



फाल्गुन शुक्ल पक्ष दि. ९ मार्च से २ २ मार्च २ ० २७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा. ५ घं. ३ ० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
०९.०३.२०२७	१०:२३:५६:४२	६०।०१	११:००:५७:५३	७६८।००	०४:००:१३:४१	-१७।२८	०९:२८:०९:२५	३२।५०	०३:२४:३७:५०	-६।०२	०९:१४:५७:३३	७१।३९	११:१९:४५:३०	०७।०५	०९:२५:०३:२३
१०.०३.२०२७	१०:२४:५६:४३	५९।५९	११:१३:४५:५३	७८१।५६	०३:२९:५६:१३	-१६।४७	०९:२८:४२:१६	३७।११	०३:२४:३१:४८	-५।५४	०९:१६:०९:१२	७१।४१	११:१९:५२:३६	०७।०७	०९:२५:००:१२
११.०३.२०२७	१०:२५:५६:४२	५९।५७	११:२६:४७:४८	७९५।२२	०३:२९:३९:२६	-१६।०६	०९:२९:१९:२७	४१।१४	०३:२४:२५:५५	-५।४५	०९:१७:२०:५३	७१।४४	११:१९:५९:४३	०७।०९	०९:२४:५७:०१
१२.०३.२०२७	१०:२६:५६:३८	५९।५५	००:१०:०३:१०	८०८।०५	०३:२९:२३:२०	-१५।२३	१०:००:००:४१	४५।०१	०३:२४:२०:०९	-५।३६	०९:१८:३२:३७	७१।४६	११:२०:०६:५२	०७।११	०९:२४:५३:५१
१३.०३.२०२७	१०:२७:५६:३३	५९।५२	००:२३:३१:१५	८२०।०२	०३:२९:०७:५७	-१४।३१	१०:००:४५:४२	४८।३३	०३:२४:१४:३३	-५।२७	०९:१९:४४:२३	७१।४९	११:२०:१४:०४	०७।१३	०९:२४:५०:४०
१४.०३.२०२७	१०:२८:५६:२५	५९।५०	०१:०७:११:१७	८३१।१२	०३:२८:५३:१८	-१३।५४	१०:०१:३४:१५	५१।५१	०३:२४:०९:०६	-५।१८	०९:२०:५६:१२	७१।५१	११:२०:२१:१६	०७।१५	०९:२४:४७:२९
१५.०३.२०२७	१०:२९:५६:१५	५९।४८	०१:२१:०२:२९	८४१।३३	०३:२८:३९:२४	-१३।०१	१०:०२:२६:०६	५४।५७	०३:२४:०३:४७	-५।०९	०९:२२:०८:०२	७१।५३	११:२०:२८:३१	०७।१६	०९:२४:४४:१८
१६.०३.२०२७	११:००:५६:०३	५९।४६	०२:०५:०४:०२	८५०।५२	०३:२८:२६:१४	-१२।२३	१०:०३:२१:०३	५७।५१	०३:२३:५८:३८	-४।५९	०९:२३:१९:५५	७१।५५	११:२०:३५:४७	०७।१८	०९:२४:४१:०८
१७.०३.२०२७	११:०१:५५:४९	५९।४३	०२:१९:१४:५३	८५८।३५	०३:२८:१३:५१	-११।३७	१०:०४:१८:५४	६०।३५	०३:२३:५३:३९	-४।५०	०९:२४:३१:५०	७१।५७	११:२०:४३:०५	०७।१९	०९:२४:३७:५७
१८.०३.२०२७	११:०२:५५:३२	५९।४१	०३:०३:३३:२८	८६३।५४	०३:२८:०२:१४	-१०।५०	१०:०५:१९:२९	६३।०९	०३:२३:४८:४९	-४।४०	०९:२५:४३:४८	७१।५९	११:२०:५०:२४	०७।२०	०९:२४:३४:४६
१९.०३.२०२७	११:०३:५५:१३	५९।३९	०३:१७:५७:२३	८६५।४८	०३:२७:५१:२४	-१०।०३	१०:०६:२२:३८	६५।३६	०३:२३:४४:०९	-४।३०	०९:२६:५५:४७	७२।०१	११:२०:५७:४४	०७।२२	०९:२४:३१:३५
२०.०३.२०२७	११:०४:५४:५२	५९।३७	०४:०२:२३:१०	८६३।१५	०३:२७:४१:२१	-९।१६	१०:०७:२८:१४	६७।५४	०३:२३:३९:३९	-४।२०	०९:२८:०७:४८	७२।०३	११:२१:०५:०६	०७।२३	०९:२४:२८:२४
२१.०३.२०२७	११:०५:५४:२९	५९।३५	०४:१६:४६:२५	८५५।३६	०३:२७:३२:०५	-८।२९	१०:०८:३६:०८	७०।०६	०३:२३:३५:१९	-४।१०	०९:२९:१९:५२	७२।०५	११:२१:१२:२९	०७।२४	०९:२४:२५:१४
२२.०३.२०२७	११:०६:५४:०३	५९।३३	०५:०१:०२:०१	८४२।४६	०३:२७:२३:३५	-७।४२	१०:०९:४६:१३	७२।११	०३:२३:३१:०९	-४।००	१०:००:३१:५७	७२।०८	११:२१:१९:५३	०७।२५	०९:२४:२२:०३

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः मेष	प्रातः वृषभ	दिवा मिथुन	दिवा कर्क	सायं सिंह	सायं कन्या	रात्रि तुला	मध्यरात्रि वृश्चिक	अर्द्धरात्रोत्तर धनु	अर्द्धरात्रोत्तर मकर	अर्द्धरात्रोत्तर कुंभ	प्रातः मीन
०९.०३.२०२७	मंगल	१	८:४४:४०	१०:२३:४९	१२:२१:०४	१४:३४:००	१६:५०:४९	१९:०५:०२	२१:१८:३५	२३:३४:५८	२५:५०:४९	२७:५४:४८	२९:४०:०५	७:१५:३२
१०.०३.२०२७	बुध	२	८:४०:४३	१०:१९:५२	१२:१७:०७	१४:३०:०३	१६:४६:५२	१९:०१:०५	२१:१४:३८	२३:३१:०१	२५:४७:०२	२७:५०:५१	२९:३६:०८	७:११:३५
११.०३.२०२७	गुरू	३	८:३६:४५	१०:१५:५५	१२:१३:१०	१४:२६:०६	१६:४२:५५	१८:५७:०८	२१:१०:४०	२३:२७:०४	२५:४३:०५	२७:४६:५४	२९:३२:१०	७:०७:३७
१२.०३.२०२७	शुक्र	४	८:३२:४८	१०:११:५८	१२:०९:१२	१४:२२:०८	१६:३८:५७	१८:५३:१०	२१:०६:४३	२३:२३:०६	२५:३९:०८	२७:४२:५६	२९:२८:१३	७:०३:४०
१३.०३.२०२७	शनि	५	८:२८:५०	१०:०८:००	१२:०५:१४	१४:१८:१०	१६:३४:५९	१८:४९:१३	२१:०२:४५	२३:१९:०९	२५:३५:१०	२७:३८:५९	२९:२४:१५	६:५९:४२
१४.०३.२०२७	रवि	६	८:२४:५२	१०:०४:०२	१२:०१:१६	१४:१४:१२	१६:३१:०१	१८:४५:१५	२०:५८:४७	२३:१५:११	२५:३१:१२	२७:३५:०१	२९:२०:१७	६:५५:४४
१५.०३.२०२७	सोम	७	८:२०:५४	१०:०:०४	११:५७:१८	१४:१०:१४	१६:२७:०३	१८:४१:१६	२०:५४:४९	२३:११:१२	२५:२७:१४	२७:३१:०२	२९:१६:१९	६:५१:४६
१६.०३.२०२७	मंगल	८/९	८:१६:५६	९:५६:०५	११:५३:२०	१४:०६:१६	१६:२३:०५	१८:३७:१८	२०:५०:५१	२३:०७:१४	२५:२३:१५	२७:२७:०४	२९:१२:२१	३०:४३:५२
१७.०३.२०२७	बुध	१०	८:१२:५७	९:५२:०७	११:४९:२१	१४:०२:१७	१६:१९:०६	१८:३३:२०	२०:४६:५२	२३:०३:१६	२५:१९:१७	२७:२३:०६	२९:०८:२२	३०:३९:५३
१८.०३.२०२७	गुरू	११	८:०८:५९	९:४८:०८	११:४५:२३	११:५८:१९	१६:१५:०८	१८:२९:२१	२०:४२:५४	२२:५९:१७	२५:१५:१८	२७:१९:०७	२९:०४:२४	३०:३५:५५
१९.०३.२०२७	शुक्र	१२	८:०५:००	९:४४:१०	११:४१:२४	१३:५४:२०	१६:११:०९	१८:२५:२२	२०:३८:५५	२२:५५:१८	२५:११:२०	२७:१५:०८	२९:००:२५	३०:३१:५६
२०.०३.२०२७	शनि	१३	८:०१:०१	९:४०:११	११:३७:२५	१३:५०:२१	१६:०७:११	१८:२१:२४	२०:३४:५६	२२:५१:२०	२५:०७:२१	२७:११:१०	२८:५६:२६	३०:२७:५७
२१.०३.२०२७	रवि	१४	७:५७:०३	९:३६:१२	११:३३:२७	१३:४६:२३	१६:०३:१२	१८:१७:२५	२०:३०:५७	२२:४७:२१	२५:०३:२२	२७:०७:११	२८:५२:२७	३०:२३:५९
२२.०३.२०२७	सोम	१५	७:५३:०४	९:३२:१४	११:२९:२८	१३:४२:२४	१५:५९:१३	१८:१३:२६	२०:२६:५९	२२:४३:२२	२५:५९:२४	२७:०३:१२	२८:४८:२९	३०:२०:००

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ फाल्गुन शुक्ल पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शक संवत् १९४८

तारीख ९ मार्च से २२ मार्च २०२७ ई.तक

वसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, दक्षिण–उत्तर गोले

दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च	
मंगल	१	१५:४१	२१:४९	पूर्वाभा	०९:५८	शुभ	२५:५८	बव	१५:४१	११:४३	०६:५८	१८:४१	मीन		९	**पयोव्रत प्रारंभ, पंचक जारी, चंद्र दर्शन** मु. ४५, कुमार योग समाप्त ०९।५८ **A**
बुध	२	१५:५३	२२:२२	उत्तराभा	१०:५३	शुक्ल	२४:५०	कौलव	१५:५३	११:४४	०६:५७	१८:४१	मीन		१०	**फूलेरा दूज, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती,** पंचक जारी, राजयोग समाप्त १०।५३, दग्ध योग प्रारंभ १५।५३, शनि रेवती २ पर ३०।२७
गुरू	३	१५:३८	२१:४६	रेवती	११:२०	ब्रह्म	२३:२१	गर	१५:३८	११:४६	०६:५६	१८:४२	मेष	११:२०	११	रवियोग प्रारंभ ११।२०, बुध कुंभ में २९।०६, भद्रा २७।२१ से सर्वा. ०६।५६ से पंचक समाप्त ११।२०
शुक्र	४	१४:५८	२०:०७	अश्विनी	११:२२	ऐन्द्र	२१:३४	विष्टि	१४:५८	११:४७	०६:५५	१८:४२	मेष		१२	**श्री विनायक चतुर्थी,** रवियोग समाप्त ११।२२, ज्वालामुखी योग प्रारंभ १४।५८, भद्रा १४।५८ तक सर्वा. ११।२२ तक
शनि	५	१३:५५	१७:३३	भरणी	११:०३	वैधृति	१९:३०	बालव	१३:५५	११:४९	०६:५४	१८:४३	वृषभ	१६:५५	१३	**महर्षि याज्ञवल्क्य जयंती,** ज्वालामुखी योग समाप्त ११।०३, रवियोग प्रारंभ ११।०३
रवि	६	१२:३२	१४:०९	कृतिका	१०:२३	विष्कुम्भ	१७:१०	तैतिल	१२:३२	११:५०	०६:५३	१८:४३	वृषभ		१४	**अट्ठाई प्रारंभ (जैन),** रवियोग समाप्त १०।२३
सोम	७	१०:५२	१०:००	रोहिणी	०९:२६	प्रीति	१४:३६	वणिज	१०:५२	११:५२	०६:५२	१८:४३	मिथुन	२०:५१	१५	**होलाष्टक प्रारंभ** १०।५२ से, भद्रा १०।५२ से २१।५५ तक सर्वा.०६।५२ से ३०।५१ तक **B**
मंगल	८	०८:५५	०५:१०	मृगशिरा/आर्द्रा	०८:१३ ३०:४६	आयुष्मान	११:५०	बव	०८:५५	११:५३	०६:५१	१८:४४	मिथुन		१६	**क्षय तिथि, दुर्गाष्टमी,** रवियोग प्रारंभ ०८।१३ से, कुमार योग प्रारंभ ३०।४४ **C**
मंगल	९	३०:४४	५९:४३	0	०	0	०	0	०	०	०	०	0		०	तिथि क्षय
बुध	१०	२८:२२	५३:५०	पुनर्वसु	२९:०७	सौभाग्य/शोभन	०८:५३ २९:४७	तैतिल	१७:३४	११:५५	०६:५०	१८:४४	कर्क	२३:३३	१७	रवियोग समाप्त २९।०७, कुमार योग समाप्त २९।०७, यमदंष्ट्रा ०६।५० से २९।०७ तक
गुरू	११	२५:५२	४७:३७	पुष्य	२७:२१	अतिगण्ड	२६:३४	वणिज	१५:०८	११:५६	०६:४९	१८:४५	कर्क		१८	**आमलकी एकादशी,** गुरु पुष्यामृत योग समाप्त २७।२१, भद्रा १५।०८ से २५।५२ तक **D**
शुक्र	१२	२३:१८	४१:१५	आश्लेषा	२५:३१	सुकर्मा	२३:१९	बव	१२:३५	११:५८	०६:४८	१८:४५	सिंह	२५:३१	१९	तिथिवासर ०७।१४ तक, **श्रीनृसिंह द्वादशी,** मृत्यु ०६।४८ से २५।३१ तक
शनि	१३	२०:४६	३४:५८	मघा	२३:४५	धृति	२०:०५	कौलव	१०:०१	११:५९	०६:४७	१८:४६	सिंह		२०	**शनि प्रदोष,** रवियोग प्रारंभ २३।४५, सायन सूर्य मेष पर २५।५६ रवि उत्तर गोल प्रा.
रवि	१४	१८:२२	२९:०१	पूर्वाफा.	२२:०७	शूल	१६:५८	गर	०७:३२	१२:०१	०६:४६	१८:४६	कन्या	२७:४५	२१	**पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन** रात्रि १८।४५ से २१।०९, रवियोग समाप्त २२।०७ **E**
सोम	१५	१६:१४	२३:४३	उत्तराफा.	२०:४६	गण्ड	१४:०४	बव	१६:१४	१२:०२	०६:४५	१८:४७	कन्या		२२	**धुलेण्डी, अभ्यंग स्नान,** होलाष्टक समाप्त १६।१४, चैतन्य महाप्रभु जयंती **F**

✻ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	२	३	१०	३	९	११	९	३
अं.	००	०५	२८	०३	२३	२३	२०	२४	२४
क.	५६	०४	२६	२१	५८	१९	३५	४१	४१
वि.	०३	०२	१४	०३	३८	५५	४७	०८	०८
गति	५९ ४६	८५० ५२	१२ २३	५७ ५१	०४ ५९	७१ ५५	०७ १८	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	पूर्वाभा ४	मृगशिरा ४	आश्लेषा ४	धनिष्ठा ४	आश्लेषा ३	श्रवण ४	रेवती २	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

A मंगल आश्लेषा कर्क पर २४।१३, स्थिर योग प्रारंभ ०९।५८, राजयोग प्रारंभ १५।४१, मंगन वक्री कर्क में २१।१९, वैधृति महापात, १८।०९ से २२।०९, सर्वा.०९।५८ से ३०।५७ तक **B** शुक्र धनिष्ठायां २९।३१, अमृत सिद्धि ०९।२६ से ३०।५१ तक सूर्य मीन पर ०७।०० बं.चैत्र मास प्रा., मीनार्क मलमास प्रारंभ **C** यमघण्ट प्रारंभ ०८।१३ से ३०।४६, चर ०८।१३ से ३०।४६ तक **D** बुध शतभिषायां ११।५६, रवियोग १५।२१ से २७।२१, सर्वा.०६।४९ से २७।२१ तक, अमृत सिद्धि ०६।४९ से २७।२१ तक, सूर्य उत्तराभा पर १५।२० **E** शनि अस्त प.१३।४७, राजयोग १८।२२ से २२।०७, व्यतिपात महापात २३।०६ से, शुक्र कुंभ में १८।५३, भद्रा १८।२२ से २९।१५ तक सर्वा.२२।०७ से ३०।४५ तक **F** व्यतिपात महापात समाप्त २४।३१, कुमार योग प्रारंभ २२।४६, राष्ट्रीय चैत्र मास प्रा.

पयोव्रत फाल्गुन शुक्ल औदयिक प्रतिपदा से फाल्गुन शुक्ल द्वादशी पर्यन्त।

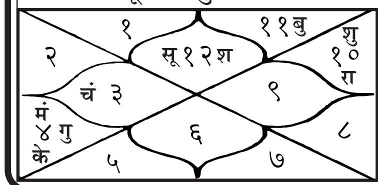
✻ अथ फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदामारभ्य द्वादश दिन पर्यन्त पयोव्रतम्। ✻

होलाष्टक – फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्त होलाष्ट माना गया है। होलिका दहन – भद्रा रहित प्रदोषव्यापिनी फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा में होलिका दहन किया जाता है। इस दहन में निर्णायक तत्व में पूर्णिमा, प्रदोष, निशीथ व भद्रादि तत्व हैं। प्रदोष – सूर्य अस्त के बाद ३ मुहूर्त्त–६ घटी २ घटी २४ मिनिट तक का समय। निशीथ – १५ विभागात्मिक रात्रि का ८ वां भाग – मध्य रात्रि स्थूलमान से रात्रि के ११.३६ बजे से १२.१४ बजे तक होता है। होलिका दहन सर्वथा निशीथ से पहले ही शास्त्र सम्मत है।

✻ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ सोमवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	३	१०	३	१०	११	९	३
अं.	०६	०१	२७	०९	२३	००	२१	२४	२४
क.	५४	०२	२३	४६	३१	३१	१९	२२	२२
वि.	०३	०१	३५	१३	०९	५७	५३	०३	०३
गति	५९ ३३	८४२ ४६	०७ ४२	७२ ११	०४ ०९	७२ ०८	०७ २५	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
नक्षत्र	उत्तराभा २	उत्तराफा २	आश्लेषा ४	शतभिषा १	आश्लेषा ३	धनिष्ठा ३	रेवती २	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

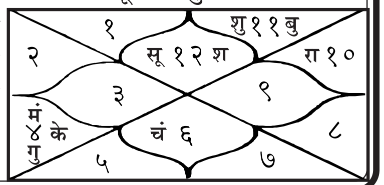
✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ मीन संक्रान्ति फलम् ✻

दिनांक १५.३.२०२७ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ७ सोमवार को प्रातः ७.०० बजे मीन संक्रान्ति प्रवेश होगी। इसका पुण्यकाल इसी दिन सोमवार को सूर्योदय से मान्य रहेगा। वैज्ञानिक, शोध का कार्य करने वाले, विद्वान, प्राचार्य, साहित्यकार, वैश्य, व्यापारी, शेयर बाजार का कार्य करने वाले, शेयर कम्पनी चलाने वाले, आयात निर्यात का कार्य करने वाले आदि के लिए लाभदायक है। संक्रान्ति की अवस्था उपविष्ट मुहूर्त्त–४५, विष पदार्थ रसायन, भेड़–बकरी, उंट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा–इस्पात, जीरा, अजवाइन, कलौंजी, उड़द, काली मिर्च, मशीनरी–कलपूर्जे, तिल, अफीम, तरल द्रव्य आदि में तेजी आवे।

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



चैत्र कृष्ण पक्ष दि. २३ मार्च से ६ अप्रैल २०२७ दृश्य गणितीय निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः स्टे.टा.५ घं.३० मि.

दिनांक	सूर्य	गति	चन्द्र	गति	मंगल	गति	बुध	गति	गुरु	गति	शुक्र	गति	शनि	गति	मध्यम राहु
	रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.		रा. अं. क. वि.
२३.०३.२०२७	११:०७:५३:३६	५९।३१	०५:१५:०४:४६	८२५।२५	०३:२७:१५:५३	-६।५६	१०:१०:५८:२५	७४।११	०३:२३:२७:०९	-३।४९	१०:०१:४४:०५	७२।१०	११:२१:२७:१८	०७।२६	०९:२४:१८:५२
२४.०३.२०२७	११:०८:५३:०६	५९।२९	०५:२८:५०:१२	८०४।५७	०३:२७:०८:५७	-६।०९	१०:१२:१२:३६	७६॥०७	०३:२३:२३:२०	-३।३९	१०:०२:५६:१४	७२।१२	११:२१:३४:४४	०७।२७	०९:२४:१५:४१
२५.०३.२०२७	११:०९:५२:३५	५९।२७	०६:१२:१५:०८	७८३।०५	०३:२७:०२:४८	-५।२२	१०:१३:२८:४३	७७।५७	०३:२३:१९:४१	-३।२८	१०:०४:०८:२६	७२।१४	११:२१:४२:१२	०७।२८	०९:२४:१२:३१
२६.०३.२०२७	११:१०:५२:०२	५९।२५	०६:२५:१८:१४	७६१।४३	०३:२६:५७:२६	-४।३६	१०:१४:४६:४०	७९।४५	०३:२३:१६:१३	-३।१८	१०:०५:२०:३९	७२।१५	११:२१:४९:४०	०७।२९	०९:२४:०९:२०
२७.०३.२०२७	११:११:५१:२७	५९।२३	०७:०७:५९:५६	७४२।३१	०३:२६:५२:५०	-३।५०	१०:१६:०६:२५	८१।२८	०३:२३:१२:५५	-३।०७	१०:०६:३२:५५	७२।१७	११:२१:५७:०९	०७।३०	०९:२४:०६:०९
२८.०३.२०२७	११:१२:५०:५०	५९।२१	०७:२०:२२:२८	७२६।५२	०३:२६:४९:००	-३।०४	१०:१७:२७:५३	८३।०९	०३:२३:०९:४८	-२।५६	१०:०७:४५:१२	७२।१९	११:२२:०४:३९	०७।३१	०९:२४:०२:५८
२९.०३.२०२७	११:१३:५०:११	५९।२०	०८:०२:२९:१९	७१५।४४	०३:२६:४५:५७	-२।१८	१०:१८:५१:०२	८४।४७	०३:२३:०६:५२	-२।४५	१०:०८:५७:३१	७२।२१	११:२२:१२:१०	०७।३१	०९:२३:५९:४८
३०.०३.२०२७	११:१४:४९:३१	५९।१८	०८:१४:२५:०३	७०९।४१	०३:२६:४३:३८	-१।३३	१०:२०:१५:४९	८६।२३	०३:२३:०४:०७	-२।३४	१०:१०:०९:५२	७२।२२	११:२२:१९:४१	०७।३२	०९:२३:५६:३७
३१.०३.२०२७	११:१५:४८:४८	५९।१६	०८:२६:१४:४४	७०८।५६	०३:२६:४२:०५	-००।४८	१०:२१:४२:१३	८७।५८	०३:२३:०१:३३	-२।२३	१०:११:२२:१४	७२।२४	११:२२:२७:१३	०७।३३	०९:२३:५३:२६
०१.०४.२०२७	११:१६:४८:०४	५९।१४	०९:०८:०३:४०	७१३।२३	०३:२६:४१:१७	-४४।०४	१०:२३:१०:१०	८९।३०	०३:२२:५९:१०	-२।१२	१०:१२:३४:३८	७२।२५	११:२२:३४:४५	०७।३३	०९:३२:५०:१५
०२.०४.२०२७	११:१७:४७:१८	५९।१२	०९:१९:५७:०३	७२२।३७	०३:२६:४१:१२	००।४०	१०:२४:३९:४१	९१।०२	०३:२२:५६:५८	-२।०१	१०:१३:४७:०३	७२।२७	११:२२:४२:१८	०७।३३	०९:२३:४७:०४
०३.०४.२०२७	११:१८:४६:३१	५९।१०	१०:०१:५९:४०	७३५।५६	०३:२६:४१:५२	०१।२३	१०:२६:१०:४३	९२।३३	०३:२२:५४:५८	-१।४९	१०:१४:५९:३०	७२।२८	११:२२:४९:५२	०७।३४	०९:२३:४३:५४
०४.०४.२०२७	११:१९:४५:४१	५९।०९	१०:१४:१५:३६	७५२।२१	०३:२६:४३:१६	०२।०६	१०:२७:४३:१५	९४।०२	०३:२२:५३:०८	-१।३८	१०:१६:११:५८	७२।२९	११:२२:५७:२६	०७।३४	०९:२३:४०:४३
०५.०४.२०२७	११:२०:४४:५०	५९।०७	१०:२६:४७:५६	७७०।३३	०३:२६:४५:२२	०२।४९	१०:२९:१७:१८	९५।३२	०३:२२:५१:३०	-१।२७	१०:१७:२४:२७	७२।३०	११:२३:०५:००	०७।३४	०९:२३:३७:३२
०६.०४.२०२७	११:२१:४३:५६	५९।०५	११:०९:३८:२९	७८९।०५	०३:२६:४८:११	०३।३१	११:००:५२:४९	९७।०१	०३:२२:५०:०४	-१।१५	१०:१८:३६:५८	७२।३२	११:२३:१२:३४	०७।३४	०९:२३:३४:२१

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टे.टा.घं.मि.श्री रौद्र नाम संवत्सर

दिनांक	दिन	तिथि	प्रातः मेष	प्रातः वृषभ	दिवा मिथुन	दिवा कर्क	दिवा सिंह	सायं कन्या	रात्रि तुला	रात्रि वृश्चिक	मध्यरात्रि धनु	अर्द्धरात्रोत्तर मकर	अर्द्धरात्रोत्तर कुंभ	प्रातः मीन
२३.०३.२०२७	मंगल	१	७:४९:०५	९:२८:१५	११:२५:२९	१३:३८:२५	१५:५५:१४	१८:०९:२८	२०:२३:००	२२:३९:२४	२४:५५:२५	२६:५९:१४	२८:४४:३०	३०:१६:०१
२४.०३.२०२७	बुध	२	७:४५:०७	९:२४:१६	११:२१:३१	१३:३४:२७	१५:५१:१६	१८:०५:२९	२०:१९:०२	२२:३५:२५	२४:५१:२६	२६:५५:१५	२८:४०:३२	३०:१२:०३
२५.०३.२०२७	गुरू	३	७:४१:०८	९:२०:१८	११:१७:३२	१३:३०:२८	१५:४७:१७	१८:०१:३०	२०:१५:०३	२२:३१:२६	२४:४७:२८	२६:५१:१७	२८:३६:३३	३०:०८:०४
२६.०३.२०२७	शुक्र	४	७:३७:१०	९:१६:१९	११:१३:३४	१३:२६:३०	१५:४३:१९	१७:५७:३२	२०:११:०५	२२:२७:२८	२४:४३:२९	२६:४७:१८	२८:३२:३५	३०:०४:०६
२७.०३.२०२७	शनि	५	७:३३:११	९:१२:२१	११:०९:३६	१३:२२:३२	१५:३९:२१	१७:५३:३४	२०:०७:०६	२२:२३:३०	२४:३९:३१	२६:४३:२०	२८:२८:३६	३०:००:०७
२८.०३.२०२७	रवि	६	७:२९:१३	९:०८:२३	११:०५:३८	१३:१८:३३	१५:३५:२३	१७:४९:३६	२०:०३:०८	२२:१९:३२	२४:३५:३३	२६:३९:२२	२८:२४:३८	२९:५६:०९
२९.०३.२०२७	सोम	७	७:२५:१५	९:०४:२५	११:०१:४०	१३:१४:३६	१५:३१:२५	१७:४५:३८	१९:५९:१०	२२:१५:३४	२४:३१:३५	२६:३५:२४	२८:२०:४०	२९:५२:११
३०.०३.२०२७	मंगल	८	७:२१:१८	९:००:२७	१०:५७:४२	१३:१०:३८	१५:२७:२७	१७:४१:४०	१९:५५:१३	२२:११:३६	२४:२७:३७	२६:३१:२६	२८:१६:४३	२९:४८:१४
३१.०३.२०२७	बुध	९	७:१७:२०	८:५६:३०	१०:५३:४५	१३:०६:४०	१५:२३:३०	१७:३७:४३	१९:५१:१५	२२:०७:३९	२४:२३:४०	२६:२७:२९	२८:१२:४५	२९:४४:१६
०१.०४.२०२७	गुरू	१०	७:१३:२३	८:५२:३३	१०:४९:४७	१३:०२:४३	१५:१९:३२	१७:३३:४६	१९:४७:१८	२२:०३:४२	२४:१९:४३	२६:२३:३२	२८:०८:४८	२९:४०:१९
०२.०४.२०२७	शुक्र	११	७:०९:२६	८:४८:३६	१०:४५:५०	१२:५८:४६	१५:१५:३६	१७:२९:४९	१९:४३:२१	२१:५९:४५	२४:१५:४६	२६:१९:३५	२८:०४:५१	२९:३६:२२
०३.०४.२०२७	शनि	१२	७:०५:३०	८:४४:३९	१०:४१:५४	१२:५४:५०	१५:११:३९	१७:२५:५२	१९:३९:२५	२१:५५:४८	२४:११:५०	२६:१५:३८	२८:००:५५	२९:३२:२६
०४.०४.२०२७	रवि	१३	७:०१:३४	८:४०:४३	१०:३७:५८	१२:५०:५४	१५:०७:४३	१७:२१:५६	१९:३५:२९	२१:५१:५२	२४:०७:५३	२६:११:४२	२७:५६:५८	२९:२८:३०
०५.०४.२०२७	सोम	१४	६:५७:३८	८:३६:४७	१०:३४:०२	१२:४६:५८	१५:०३:४७	१७:१८:००	१९:३१:३३	२१:४७:५६	२४:०३:५८	२६:०७:४६	२७:५३:०३	२९:२४:३४
०६.०४.२०२७	मंगल	३०	६:५३:४२	८:३२:५२	१०:३०:०७	१२:४३:०२	१५:५९:५२	१७:१४:०५	१९:२७:३७	२१:४४:०१	२४:००:०२	२६:०३:५१	२७:४९:०७	२९:२०:३८

✻ अर्बुद श्री पञ्चाङ्ग ✻ चैत्र कृष्ण पक्ष संवत् २०८३ श्रीरौद्र, शकसंवत् १९४८

तारीख २३ मार्च से ६ अप्रैल २०२७ ई.तक

वसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

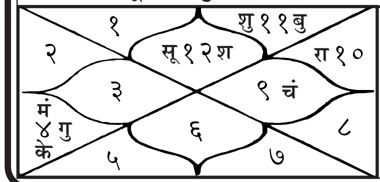
दिन	तिथि	घं./मि.	घटी/पल	नक्षत्र	घं./मि.	योग	घं./मि.	करण	घं./मि.	दिनमान घं./मि.	सूर्योदय घं./मि.	सूर्यास्त घं./मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल राशि	चन्द्रराशि प्रवेश काल घं.मि.	दिनांक मार्च–अप्रैल	
मंगल	१	१४:२९	१९:२३	हस्त	१९:५०	वृद्धि	११:२७	कौलव	१४:२९	१२:०३	०६:४४	१८:४७	कन्या		२३	**वसंतोत्सव**, आम्रकुसुम प्राशन, कुमार योग समाप्त १४।२९, राजयोग प्रारंभ १९।५०
बुध	२	१३:१५	१६:२०	चित्रा	१९:२५	ध्रुव	०९:१५	गर	१३:१५	१२:०५	०६:४३	१८:४७	तुला	०७:३३	२४	राजयोग समापत १९।२५, दग्ध योग प्रारंभ १३।१५, भद्रा २४।५१ से, गुरु आश्लेषा २ पर २७।२१
गुरू	३	१२:३८	१४:५२	स्वाति	१९:४०	व्याघात/हर्षण	०७:३१ ३०:२१	विष्टि	१२:३८	१२:०६	०६:४१	१८:४८	तुला		२५	संकष्टी चतुर्थी, चंद्रोदय २१।५२, स्थिर योग १२।३८ से १९।४०, भद्रा १२।३८ तक
शुक्र	४	१२:४४	१५:०९	विशाखा	२०:३६	वज्र	२९:४५	बालव	१२:४४	१२:०८	०६:४०	१८:४८	वृश्चिक	१४:१८	२६	बिछूड़ा प्रारंभ १४।१८, कुमार योग १२।४४ से २०।३६, सर्वा.२०।३६ से ३०।३९ तक
शनि	५	१३:३४	१७:१६	अनुराधा	२२:१५	सिद्धि	२९:४२	तैतिल	१३:३४	१२:०९	०६:३९	१८:४९	वृश्चिक		२७	**श्रीरंग पंचमी**, बिछूड़ा, रवियोग प्रारंभ १२।१५, शुक्र शतभिषायां ०७।५१
रवि	६	१५:०५	२१:०८	ज्येष्ठा	२४:३२	व्यतिपात	३०:०७	वणिज	१५:०५	१२:११	०६:३८	१८:४९	धनु	२४:३२	२८	**एकनाथ षष्ठी**, बिछूड़ा समाप्त २४।३२, रवियोग समाप्त २४।३२ **A**
सोम	७	१७:१२	२६:२५	मूल	२७:१८	वरियान	-	बव	१७:१२	१२:१२	०६:३७	१८:५०	धनु		२९	**शीतला सप्तमी, कालाष्टमी**, यमदंष्ट्रा ०६।३७ से २७।१८ तक, बुध पूभायां २५।०३
मंगल	८	१९:४०	३२:४०	पूर्वाषा	३०:२१	वरियान	०६:५४	कौलव	१९:४०	१२:१४	०६:३६	१८:५०	धनु		३०	**शीतला अष्टमी**, वर्षीतप पारणा (जैन), वज्र मूसल योग प्रारंभ ३०।२१
बुध	९	२२:१७	३९:१४	उत्तराषा	-	परिघ	०७:५३	तैतिल	०८:५९	१२:१५	०६:३५	१८:५०	मकर	१३:०८	३१	सूर्य रेवती पर २६।१५
गुरू	१०	२४:४६	४५:२८	उत्तराषा	०९:२५	शिव	०८:५२	वणिज	११:३३	१२:१७	०६:३४	१८:५१	मकर		१	मंगल मार्गी, भद्रा ११।३३ से २४।४६ तक यमदंष्ट्रा ०६।३४ से ०९।२५ तक बैंक वार्षिक लेखाबंदी
शुक्र	११	२६:५३	५०:४८	श्रवण	१२:१६	सिद्ध	०९:४१	बव	१३:५३	१२:१८	०६:३३	१८:५१	कुम्भ	२५:३३	२	**पापमोचनी एकादशी**, राजयोग प्रारंभ २६।५३, कुमार योग समाप्त १२।१६ **B**
शनि	१२	२८:२७	५४:४७	धनिष्ठा	१४:४२	साध्य	१०:१०	कौलव	१५:४४	१२:१९	०६:३२	१८:५२	कुम्भ		३	तिथिवासर ९।१६ तक, पंचक जारी, स्थिर योग प्रारंभ २८।२७ से
रवि	१३	२९:२४	५७:११	शतभिषा	१६:३३	शुभ	१०:१३	गर	१७:००	१२:२१	०६:३१	१८:५२	कुम्भ		४	**प्रदोष व्रत, वारूणी योग** १६।३३ तक, पंचक जारी, वैधृति महापात ०८।३६ से १२।४३, भद्रा २९।२४ से
सोम	१४	२९:४१	५७:५७	पूर्वाभा	१७:४७	शुक्ल	०९:४७	विष्टि	१७:३७	१२:२२	०६:३०	१८:५३	मीन	११:३२	५	**मास शिवरात्रि**, एकलिंगजी पाटोत्सव, पंचक जारी, बुध मीन में १६।१४ **C**
मंगल	३०	२९:२१	५७:१०	उत्तराभा	१८:२३	ब्रह्म	०८:५१	चतुष्पद	१७:३५	१२:२४	०६:२९	१८:५३	मीन		६	दर्श अमावस्या, सर्वा.०६।२९ से १८।२३ तक सिद्धि ०६।२९ से १८।२३ तक, शनि रेवती ३ पर २९।०४

A भद्रा १५।०५ से २८।०५ तक सर्वा.२४।३२ से ३०।३७ तक काण ०६।३८ से २४।३२ तक **B** सर्वा.०६।३३ से १२।१६ तक पंचक प्रारंभ २५।३३ **C** भद्रा १७।३७ तक मूसल ०६।३० से १७।४७ तक

✻ चैत्र कृष्ण पक्ष ८ मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	८	३	१०	३	१०	११	९	३
अं.	१४	१४	२६	२०	२३	१०	२२	२३	२३
क.	४९	२५	४३	१५	०४	०९	१९	५६	५६
वि.	३१	०३	३८	४९	०७	५२	४१	३७	३७
गति	५९ १८	७०९ ४१	०१ ३३	८६ २३	०२ ३४	७२ २२	०७ ३२	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा उ	व उ	मा अ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
नक्षत्र	उभा. ४	पूषा. १	आश्लेषा ४	पूभा. १	आश्लेषा २	आश्लेषा २	रेवती २	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



✻ **उपनयन विचार** ✻ चैत्रे मीने तं शां चैत्रे मेषे तं नहीं । मेषस्थोर्के मघोः शुक्ले तान्यमद्यं पिबेद्रुह चैत्र मास के मीनार्क में उपनयन संस्कार करना श्रे है, चैत्र मास में मेघ के सूर्य में तबंध करना श्रे नहीं है। **चैत्रे मासे भास्करे मीनसंस्थे कुर्वा न्मौजीवबंधनं ब्राह्मणावाम्। शुक्रस्यास्तं वाक्पतेर्नावलोक्य। नैव ग्राह्या चन्द्रगुर्वोश्च शुद्धि॥** चैत्र मास में सूर्य यदि मीन राशि में हो तो ब्राह्मणों को तबंध करना श्रे है। उस वक्त शुक्र के अस्त का किंवा गुरू है के अस्त का तथा चन्द्रमा या गुरू की शुद्धि देखना जरूरी नहीं है। ✻ **धुलहैड़ी** : होलिका दहन से द्वितीय दिन ही होती है। ✻ **दोलोत्सव** : फाल्गुनी पूर्णिमा के निक उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में होता है। **नरो होलागंत दृष्टवा गोविन्दं पुरूषोत्तमं, फाल्गुन्यां संयतोभूत्वा गोविन्दस्यपुरं जेत्** ✻ **वसन्तारम्भोत्सवः** चैत्र कृष्ण प्रतिपदा औदयिकी ग्राह्य है तदो दिन होने पर पूर्वविद्धा के दिन। ✻ **शीतला पूजा** : चैत्र कृष्ण की सप्तमी व अष्टमी शीतलाष्टमी होती है। शीतला देवी पूजा के लिये विविध व्यंजन बनाते हैं और एक दिन पहले ही बनाते हैं, पर्युषित बासी सामग्री होने से इसे बसौड़ भी कहते हैं। लोक में अपनी–अपनी क्षेत्रीय परम्पराओं से चैत्रकृष्ण पक्ष के सोमवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार को मनाते हैं । ✻ **वारूणी पर्व** : चैत्र कृष्ण की त्रयोदशी की शतभिषा नक्षत्र हो तो । ✻ **महावारूणी पर्व** : इसी त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र व शनिवार की शुभ योग भी हो तो यह योग होता है। ✻ **वर्षपूर्ति** : चैत्र कृष्ण अमावस्या औदयिक में दो दिन होने पर परविद्धा ग्राह्य है।

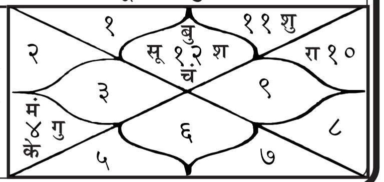
✻ पक्ष फल ✻

अमावस्या एवं पूर्णिमा मंगलवारी है। इससे माह में क्रय–विक्रय की जाने वाली वस्तुओं में तेजी का रूख दिखता है। आतंकवादी गतिविधियों में भी तेजी आने के योग हैं। बैंकों की स्थितियाँ सुदृढ होती हुई दिख रही हैं। भारत का विवादों के बाद दूसरे राष्ट्रों से मधुर व्यापारिक सम्बंध होता हुआ दिख रहा है।

✻ चैत्र कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार ✻

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	३	११	३	१०	११	९	३
अं.	२१	०९	२६	००	२२	१८	२३	२३	२३
क.	४३	३८	४८	५२	५०	३६	१२	३४	३४
वि.	५६	२९	११	४९	०४	५८	३४	२१	२१
गति	५९ ०५	७८१ ०५	०३ ३१	९७ ०१	०१ १५	७२ ३२	०७ ३४	३ ११	३ ११
मा/व रा/अ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ
नक्षत्र	रेवती २	उत्तराभा २	आश्लेषा ४	पूभा. ४	आश्लेषा २	शतभिषा ४	रेवती २	धनिष्ठा १	आश्लेषा ३

✻ सूर्योदय कुण्डली ✻



❊ पितृदोष/प्रेत बाधा ❊

किसी भी जातक के अपने परिवार में उसके जन्म से पूर्व यदि किसी पूर्वज की मरणोपरांत अंत्येष्टि क्रिया शास्त्र सम्मत विधि विधान से न की गई हो या उसके परिवार में पूर्वजों के निमित्त कोई भी कार्य न किया जाता हो तो जातक की कुण्डली में पितृ दोष जिसे प्रेत बाधा भी कहते हैं, अवश्य मिलता है। पितृ दोष आगे चलकर आनुवांशिक रोग की तरह से आने वाली अगली पीढ़ी में भी आने लगता है। पितृ दोष जातक के अपने परिवार अर्थात् पितृ पक्ष या मातृ पक्ष अर्थात् ननिहाल दोनों में से किसी के कारण भी हो सकता है।

पितृ दोष के कारण होने वाली समस्याएँ – आपकी कुण्डली में चाहे कितने भी अच्छे योग क्यों न हों, यदि आपकी कुण्डली में पितृ दोष है तो जीवन अत्यन्त संघर्षमय हो जाता है। पितृ दोष के प्रभाव के कारण धन हानि, अनावश्यक विवाद, परिवार में क्लेश, शुभ कार्यों में विलम्ब, संतानहीनता, अचानक दुर्घटना का योग, नौकरी–व्यापार में असफलता, अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में समस्याओं की भरमार होती है। इसका प्रभाव धीरे–धीरे पूरे परिवार पर होने लगता है और यह परिवार को दीमक की तरह धीरे–धीरे नष्ट कर देता है।

पितृ दोष के योग – राहु–केतु और शनि को अत्यन्त ही पापग्रह माना जाता है और इन्हीं के प्रभाव में यदि चन्द्रमा, सूर्य या गुरु आएँ तो पितृ दोष का सृजन हो जाता है। इसके साथ ही लग्न, पंचम, नवम और अष्टम स्थान के सम्बंध से भी पितृ दोष देखा जाता है। चन्द्रमा के कारण बनने वाला पितृ दोष माता के पक्ष के कारण, सूर्य के प्रभावित होने पर पिता के पक्ष के कारण, गुरु के पाप प्रभावित होने पर गुरु या साधु संतों के श्राप के कारण, शनि–राहु युति हो तो सर्प और अपने संतान के दोष का कारण बनता है। साथ ही यदि आप स्वयं अपराध या कुकर्म में लिप्त हैं, जैसे यदि आपने किसी स्त्री या पुरुष को इतना परेशान किया कि वह आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाये तो आपकी अगली पीढ़ी में भयानक पितृ दोष/प्रेत बाधा उत्पन्न होगी। दुष्कर्म, भ्रूण हत्या, किसी का धन हड़प लेना या किसी को धोखे से मार देना यह सब जघन्य अपराधों की श्रेणी में आते हैं और इसी का परिणाम आपको स्वयं या आपकी अगली पीढ़ी को किसी घटना–दुर्घटना का शिकार होकर चुकाना पड़ता है। यह घटनाएँ भी बहुत हृदय विदारक होती हैं। जैसे पूरे परिवार का कार समेत पानी में या खाई में गिरकर समाप्त हो जाना, आग से घर में जल जाना, कहीं भगदड़ में मारा जाना। अर्थात् यदि आपने कोई जघन्य अपराध किया हो तो कानून आपको सजा दे या न दे, समय जरूर देख रहा होता है और उसका परिणाम आपको और आपकी आने वाली पीढ़ी को अवश्य भोगना पड़ता है। आगे कुछ ग्रहों की स्थिति जो पितृ दोष को दर्शाती है :–

❊ राहु, केतु या शनि से चन्द्रमा की युति (माता या माता के पक्ष के कारण श्राप)

❊ राहु, केतु या शनि से सूर्य की युति (पिता या पिता के पक्ष के कारण श्राप)

❊ राहु या केतु से मंगल की युति (भाई के कारण श्राप)

❊ राहु या केतु से गुरु की युति (गुरु या संत का श्राप)

❊ राहु या केतु से शुक्र की युति (ब्राह्मण या किसी विद्वान पुरुष का श्राप)

❊ राहु–केतु या शनि के साथ चन्द्रमा का अष्टम में बैठना भयानक प्रेत बाधा को दर्शाता है।

❊ अष्टमेश का लग्न में या लग्नेश का अष्टम में बैठना भी अत्यन्त घातक होता है।

❊ राहु–केतु –शनि या मंगल का पंचम में बैठना भी पितृ दोष का परिचायक होता है।

यदि केतु अकेला पंचम में हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि ना हो तो वह जातक–जातिका अपने संतान को गर्भ में ही मार देते हैं।

उपर दिए गए ग्रहों की स्थिति का होना ही केवल पूर्ण पितृ दोष या प्रेत दोष का कारक नही हो जाता अपितु ग्रहों का बलाबल, नक्षत्रों में उनकी स्थिति इत्यादि पर भी निर्भर होता है। साथ ही उपर दिए गए पितृ दोषों में कुछ का प्रभाव कुछ कम होता है या जीवन के किसी एक क्षेत्र में होता है। परन्तु कुछ दोष बहुत ही भयानक होते हैं और उनका परिणाम भी अत्यन्त ही भयानक होता है। अतः किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले किसी विद्वान ज्योतिर्विद से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

समाधान – पितृ दोष या प्रेत बाधा का समाधान कुछ मामलों को छोड़कर संभव है। कुछ मामलों को इसलिए कहा कि यदि जातक की जन्म कुण्डली में दोष है और उस दोष के प्रभाव में आकर उसने भी कोई अपराध कर दिया तो उसका उपचार संभव नहीं है। उपर्युक्त ग्रह स्थिति अनुसार यदि किसी जातक की कुण्डली में केतु पंचम भाव में है और उसके प्रभाव में आकर उसने स्वयं ही अपने भ्रूण की हत्या गर्भ में की हो तो उसका उपचार नहीं है। उसका तो सिर्फ परिणाम है जिसे उसने भुगतना ही होता है। पितृ दोष का उपचार उसके लक्षण के आधार पर किया जाता है जिसमें श्राद्ध, नारायण बलि, त्रिपिंडी श्राद्ध इत्यादि के अलावा यदि भयानक प्रेत बाधा हो तो वनदुर्गा का अनुष्ठान इत्यादि शामिल है। इसका सबसे बेहतर तरीका यह है कि किसी विद्वान से कुण्डली की परीक्षण अच्छे से कराकर ही यथा उचित उपचार कराएँ। पितरों के निमित्त सामान्य श्राद्ध, नारायण बलि और त्रिपिण्डी श्राद्ध करने के लिए पितृ पक्ष सर्वोत्तम समय है। अज्ञात पितरों के लिए और किसी भी तरह के पितृ दोष के निवारणार्थ पूजा के लिए पितृ पक्ष की अमावस्या श्रेष्ठ मानी जाती है। अतः पितृ दोष/प्रेत बाधा के निवारण के लिए इन पक्ष का लाभ उठाएं। दोष न भी हो तो भी आपकी आगे की पीढ़ी में इस तरह का दोष उत्पन्न न हो और आपके पूर्वजों का आशीर्वाद आपके और आपकी आने वाली पीढ़ी पर बना रहे इसके निमित्त यथा सामर्थ्य श्राद्ध अवश्य करें।



ज्योतिषाचार्य पं. भानू शास्त्री

छोटी काशी बून्दी (राज.)

मो. ९६३६२६७८४०

✻ वर्ष 2026 में देश व दुनिया का भविष्य ✻

साल 2026 सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरे का वर्ष है। चारों तरफ विश्वयुद्ध की चुनौतियाँ मुंह फाड़े खड़ी रहेंगी। इस वर्ष शनि महाराज वर्ष पर्यंत मीन राशि (गुरु की राशि) में चलायमान रहेंगे। देवगुरु बृहस्पति अतिचारी होकर दो बार संक्रान्ति करेंगे। बृहस्पति एक ओर अपनी उच्च राशि तथा दूसरी बार सिंह राशि में आकर विश्व क्षीतिज पर बड़ी बड़ी समस्याएँ लेकर आएंगे। पूर्व में भी डायमण्ड राशिफल 2024 के पृष्ठ सं.4–5 पर स्पष्ट रूप से संकेत किया गया था कि 2025 से 2030 तक का समय विश्वयुद्ध का रहेगा। इसमें 2026 की परिस्थितियां विश्वशांति के लिए घातक हैं । अतिचारी बृहस्पति इस आग में घी का काम करेगा

नववर्ष विक्रम संवत् 2083 का आरम्भ 19 मार्च 2026 से हो रहा है जहां प्रतिपदा तिथि का क्षय हो रहा है। क्षय तिथि से विक्रम संवत् आरंभ सम्पूर्ण विश्व के लिए परेशानियों से परिपूर्ण रहेगा। रौद्र नामक विक्रम संवत् समग्र विश्व के लिए रौद्र रूप में रहेगा। वर्ष का वर्षेश गुरु है तथा मंत्री मंगल है। यह साल बहुत ही परेशानियों से परिपूर्ण रहेगा। समग्र विश्व पर विश्वयुद्ध के बादल मंडराएंगे। अतिचारी बृहस्पति और रौद्र नामक संवत्सर के ताण्डव को पूरा विश्व देखेगा। राजाओं एवं राष्ट्रों पर संकट है। प्रजा में अनिश्चितता व हाहाकार रहेगा। यह साल अत्यन्त भारी है। विश्व शांति के लिए प्रयास होंगे, परन्तु प्रयासों को कहीं कोई सफलता नहीं मिल पाएगी।

इस वर्ष 2 जून तक गुरु मिथुन राशि शत्रु राशि में परिभ्रमण करेंगे। तदुपरांत कर्क राशि में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष वर्षपर्यंत राहु कुंभ राशि (शनि की राशि) में परिभ्रमण करेंगे। मुस्लिम देशों पर संकट के बादल गहराएंगे। मिसाईलें चलती रहेंगी। विकास से विनाश का मंजर दिखलाई देगा। इस वर्ष प्राकृतिक आपदा के साथ साथ दुर्घटनापओं के योग (रेल दुर्घटना, वायुयान दुर्घटना आदि के योग) भी बने हुए हैं।

विश्व युद्ध की बात करें तो अमेरिका, चीन, कनाडा, रूस, ईजराईल, फिलीस्तीन, आदि देश भूमिका में रहेंगे। 27 जुलाई से 11 दिसम्बर के मध्य वक्री शनि आग में घी का काम करेगा।

नास्त्रेदमस, वेंगा बाबा आदि अनेकानेक भविष्यवक्ताओं ने तीसरे विश्वयुद्ध के विषय में भविष्यवाणी की है, उन संकेतों का स्पष्ट अर्थ यही है कि 2025 से 2030 तक का समय मानव जाति के लिए बड़ा संकट का काल है। मानव सभ्यता संकट में चल रही है तथा इस दौरान विश्व की एक चौथाई जनसंख्या पर संकट रहेगा। इस वर्ष शनि महाराज वर्षपर्यंत मीन राशि में रहेंगे, जहां जुलाई से दिसम्बर तक वक्री भी होंगे। यह परिस्थितियां विस्फोटक रहेंगी। किसी बड़ी आपदा या हमले के संकेत मिल रहे हैं।

रौद्र नामक संवत्सर जो 19 मार्च 2026 से आरंभ हो रहा है वह भी अपना रुद्र रुप दिखलाएगा। संवत्सरों में 54 वां संवत्सर है। साल 2026 के पूर्वार्द्ध से ज्यादा समस्याएं व गहमागहमी उत्तरार्द्ध में ज्यादा होंगी। वहीं प्रकृति भी आक्रामक रूप में रहेगी। अनिष्टकारी सूचनाएं मिलेंगी। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि, कहीं भूकम्प, भूस्खलन की स्थितियां बनेंगी। प्रजा में असंतोष रहेगा, वहीं राजा पर भी संकट रहेगा। पेट्रोल, डीजल, पेट्रोलियम पदार्थों के भाव आसमान छूएंगे। जल संकट रहेगा तथा भारत पाकिस्तान में तनाव जारी रहेगा। जल पर भी संकट पैदा होगा। वर्षारंभ में सूर्य–मंगल दोनों ही लग्न में हैं। अग्निकाण्ड, बम विस्फोट, ड्रोन अटैक, मिसाईल अटैक, वायुयान दुर्घटना जैसी घटनाओं में इजाफा होगा।

चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि से सम्बंध अच्छे नहीं रहेंगे। अमेरिका, पाकिस्तान की वकालत करेगा, वहीं चीन मूक दर्शक बन पाकिस्तान को शह देगा। विश्वयुद्ध की आंधी मुस्लिम देशों से उठेगी तथा सम्पूर्ण विश्व इसकी जद में होगा। मोहम्मद उल सल्ल की मानें तो हिजरी साल 1400 कयामत आरंभ हो जायेगी। अभी 1447 हिजरी चल रहा है, मुस्लिम देशों से उसी युद्ध की आंधी सम्पूर्ण विश्व में छा जायेगी।

राजनीति के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व – इस वर्ष शनि महाराज मीन राशि (गुरु की राशि में) आकर प्रलयकारी स्थितियों को निर्मित करेंगे। अमेरिका की दादागिरी पर अंकुश लगेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की छवि धूमिल होगी। रूस का रूख आक्रामक रहेगा। ईजराइल, फिलीस्तीन, हमास, भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, चीन जैसे देश विश्वयुद्ध में भूमिका में रहेंगे तथा विश्व स्तर पर उपजे तनाव से महंगाई में चार गुना इजाफा होगा। मंदी की मार भी रहेगी। चीन, अमेरिका के बीच में शीतयुद्ध का लाभ उठाकर विस्फोटक सामग्रियों को बेचेंगे। जुलाई से दिसम्बर के मध्य वक्री शनि के कारण स्थितियां भयावह रहेंगी।

विश्व स्तर पर आर्थिक हालात – विश्व स्तर पर अशांति, अस्थिरता व असमंजस में उपजे माहौल के कारण मंदी व महंगाई हावी रहेगी। बड़ी बड़ी कम्पनियों व देशों में रोजगार को लेकर संकट उपस्थित होगा। विश्व के लगभग सभी देश आर्थिक मंदी, महंगाई से प्रताड़ित होंगे। अनाज, सब्जियां, रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं, पेट्रोल, डीजल, गैस, क्रूड ऑयल, के दामों में भयंकर वृद्धि के संकेत हैं ।

वर्ष 2026 में भारत की स्थिति – इस नए वर्ष का अधिपति गुरु है तथा मंत्री मंगल है। यह साल भारत के लिए भी इतना अच्छा नहीं है। भारत के लिए आर्थिक, राजनीतिक एवं विदेश नीति के मोर्चे पर अच्छा नहीं है। बृहस्पति वर्षेश है तथा इस वर्ष अतिचारी रूप में परिभ्रमण करेंगे, कोई बड़ी आपदा या दुर्घटना की स्थिति स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ रही है। अतिचारी गुरु 2 जून से कर्क राशि में प्रवेश कर जाएंगे। यहां से भारत के लिए परिस्थितियां अधिक परेशानी से भरी हुई रहेंगी।

अंक ज्योतिष के अनुसार वर्ष का मूलांक 1 बनता है, जिसका स्वामी सूर्य है। चीन बार बार भारत को आंख दिखलाएगा। पाकिस्तान भी चीन की मदद व अमेरिका की शह पर भारत के खिलाफ गतिविधियां करेगा। न्यायपालिका में तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार उजागर होंगे। नरेन्द्र मोदी को भी इस वर्ष लग्नेश मंगल की महादशा चुनौतियों की भरमार रखेगी। आर्थिक मोर्चों पर भारत – एक और विश्वयुद्ध के बादल, दूसरी ओर महंगाई व बेरोजगारी भारत की मूलभूत समस्याएं रहेंगी। आर्थिक मामलों में भारत सरकार का रवैया भी स्पष्ट नहीं रहेगा, नित्य परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे। कम्पनियां कॉस्ट कटिंग पर ध्यान देंगी, जिससे बेरोजगारी की समस्या बनेगी। सोने के भावों में बेतहाशा वृद्धि होगी। शेयर्स के भावों में उठापटक होगी। महंगाई आसमान को छूएगी तथा वर्षारंभ के 11 मार्च से पूर्व गुरु के वक्रत्व काल में कोई आर्थिक घोटाला उजागर हो सकता है।

भारत की राजनीतिक स्थिति वर्ष 2026 में – हालांकि इस वर्ष केन्द्र में भारत सरकार को कोई खतरा नहीं है, हालांकि इस वर्ष पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, पुडुचेरी तथा केरल जैसे राज्यों में चुनाव होने हैं। इसमें भारतीय जनता पार्टी को अच्छी सफलता नहीं मिलेगी। एक या दो प्रदेशों में सरकार में इसका योगदान हो सकता है। सत्ताधारी पार्टी (भाजपा) के लिए मुश्किलों व चुनौतियों का दौर रहेगा। नरेन्द्र मोदी (सत्ता प्रमुख) की लोकप्रियता व सर्वमान्यता में पहले की अपेक्षा कुछ कमी देखी जाएगी। विदेश नीति व अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चे पर उनके प्रदर्शन में कमी रहेगी।

पं.रमेश भोजराजजी द्विवेदी
विश्व विख्यात भविष्य वक्ता
लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड विजेता
अज्ञात दर्शन, जोधपुर (राज.)
मो.9829040883



❊ वैदिक फलित ज्योतिष एवं वैवाहिक मिलान में नवताराओं एवं तारा मैत्री का महत्व (तारा बल) ❊

वैदिक फलित ज्योतिष और वैवाहिक मिलान में नवताराओं एवं तारा मैत्री (तारा बल) का विशेष महत्व है। हमारे वैदिक ऋषिओं ने अपने ज्योतिषीय अनुसंधान में पाया कि जन्म नक्षत्र से सापेक्ष प्रथम नौ (नवक) नक्षत्र नौ प्रकार का फल देते हैं ; जन्म नक्षत्र से 10 वें नक्षत्र से अगले नौ नक्षत्रों में ; तथा 19 वें नक्षत्र से उछाले नौ नक्षत्रों में क्रम से उन्हीं फलों की पुनरावृत्ति होती है। अतः उनके फलानुसार ही उन्होंने इनके नाम रखे। इस प्रकार कुल 27 नक्षत्र 9 समूहों में बंट जाते हैं और प्रत्येक समूह में कुल तीन नक्षत्र शामिल होते हैं ; इन नक्षत्र समूहों को तारा कहते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं :–

जन्म सम्पद् विपते क्षेम प्रत्यरि साधको बधः।
मैत्रं तथाऽति (तथाति) मैत्रं च तारा नाम सदृक फलाः ।।

अर्थात् जन्म, सम्पत्, विपत, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वधः, मित्र एवं अतिमित्र ये नवताराएं हैं। ये नाम के समान ही फल देती हैं।

जन्म नक्षत्र को जन्म तारा भी कहते हैं। जन्म नक्षत्र से 10 वें एवं 19 वें नक्षत्र यहां से क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय आवृत्तियां आरम्भ होती हैं, उन्हें क्रमशः अनुजन्म नक्षत्र या अनुजन्म तारा और त्रिजन्म नक्षत्र या त्रिजन्म तारा भी कहते हैं। प्रायः इन ताराओं को एक तालिका के रूप में दर्शाया जाता है। इस तालिका को नवतारा चक्र या केवल तारा चक्र से जानते हैं। उदाहरण हेतु यदि किसी का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ है तो उसके लिए तारा चक्र नीचे दी गई तालिका जैसा होगा। उदाहरण स्वरूप –

❊ नवतारा चक्र तालिका ❊

किसी भी व्यक्ति के लिए तारा समूह याद रखना अत्यन्त सरल है।

नवताराओं के नाम	क्रमांक	जन्म तारा	अनुजन्म तारा		त्रिजन्म तारा	
जन्म	1	पुष्य	10	अनुराधा	19	उत्तराभाद्रपद
सम्पत	2	आश्लेषा	11	ज्येष्ठा	20	रेवती
विपत	3	मघा	12	मूल	21	अश्विनी
क्षेम	4	पूर्वाफाल्गुनी	13	पूर्वाषाढ़ा	22	भरणी
प्रत्यरि	5	उत्तराफाल्गुनी	14	उत्तराषाढ़ा	23	कृतिका
साधक	6	हस्त	15	श्रवण	24	रोहिणी
वध	7	चित्रा	16	धनिष्ठा	25	मृगशिरा
मित्र	8	स्वाति	17	शतभिषा	26	आर्द्रा
अतिमित्र	9	विशाखा	18	पूर्वाभाद्रपद	27	पुनर्वसु

।।जन्मभमनु जन्मर्क्षं त्रिजन्मभं नेष्टमखिल कार्येषु ।।

❊ जन्म नक्षत्र तारा बल का शुभाशुभ फल ❊

जन्मभनुंजन्मक्षै त्रिजन्मभ नेकृमां खिलं कार्येषु। सम्पत्तारा शुभदा विपदाख्या विपल्प्रदा तारा।

(वृद्ध वशिष्ठ संहिता 310/5)

अर्थात् जन्म नक्षत्र (जन्म तारा), अनुजन्मतारा, त्रिजन्मतारा समस्त कार्यों के लिए नेष्ठ कहा है। सम्पद–शुभ फलप्रद। विपत–विपत्ति देने वाला कहा है।

ज्योतिष में नवतारा चक्र का प्रयोग करके जन्म नक्षत्र के आधार पर व्यक्ति के जीवन में होने वाली घटनाओं का अनुमान लगाया जाता है। 3,5,7 भाव विपत, प्रत्यरि वधतारा अशुभ होती है। 1,2,4,6,8 और 9 वीं तारा अर्थात् जन्म, सम्पत, क्षेम, साधक मित्र तथा अति मित्र तारा शुभ होती है। इनमें जन्म तारा को मध्यम माना गया है। शेष अति शुभ हैं।

साधक तारा में, मैत्र तारा में अतिमैत्र तारा में जो भी महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है, वहां कार्यों में बहुत जल्दी सफलता मिलती है और वहां कार्यों में सफलता की संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती है।

लेकिन विपत तारा में, प्रत्यरि तारा में और वध तारा में जो भी कार्य किया जाता है वह कार्य नष्ट हो जाता है या कुछ दिन चलेगा और उसके बाद धीरे–धीरे नष्ट हो जाएगा।

क्रमांक	नवतारा	जिस अधिपति द्वारा शासित	पशु/पक्षी	नवताराओं का महत्व
1	जन्म तारा	सूर्य अधिपति द्वारा शासित	मोर	जन्म तारा भाव–बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्य, मेधा शक्ति, मनोभाव, जन्म प्रक्रिया से जुड़ी सावधानियां। वैदिक ज्योतिष जन्मतारा भाव जन्म नक्षत्र आधारित चन्द्रमा हमारे मन का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमारी मानसिक पहचान, प्रकृति, पसन्द और नापसंद और गुणों को आकार देता है। इसलिए हमारा जन्म नक्षत्र अर्थात् जन्म तारा हमारे दृष्टिकोण, प्रवृत्ति, मानसिक स्थिति को दर्शाता है। जन्म नक्षत्र/जन्म तारा हमारे विचारों, भावनाओं और अनुभवों को नियंत्रित करता है।
2	सम्पत तारा सम्पत तारा शुभदा	बुध अधिपति द्वारा शासित	घोड़ा	भाव – धन सम्पत्ति, आर्थिक स्थिति। यह बहुत ही अनुकूल तारा है। यह कुण्डली में दूसरे और ग्यारहवें घर से सम्बंधित है। आय और लाभ के बारे में काफी हद तक बताता है।
3	विपत तारा विपदारन्या विपत्प्रदा तारा	राहु अधिपति द्वारा शासित	बकरी	विपत भाव विपत्ति, कष्ट, चिन्ता, आपदाएं, दुर्घटनाएं और दुर्भाग्य अपने नाम के अनुरूप ही इस तारा का प्रभाव कष्ट चिन्ता जैसी स्थिति को दिखाता है। विभिन्न प्रकार के खतरों का सूचक, चोट लगना मुद्दों में उलझने।

				यह तारा राहु द्वारा प्रभावित होने से काफी परेशानी को दिखाता है। भ्रम की स्थिति जीवन भर अधिक असर डालती है।

✻ तारों का शुभाशुभ फल ✻

क्षेमाख्या क्षेमकरी, प्रतिकूला प्रत्यारिस्तारा।

साधनंभ साधनम् नैधनभं नैधनं नृणाम्।

(वृद्ध वशिष्ठ संहिता पृष्ठ 310 श्लोक 6)

अर्थात् – क्षेम तारा कल्याणकारिणी, पत्यरि तारा प्रतिकूल फलप्रदा, साधक/साधना तारा साधन देने वाली, निधन तारा मनुष्यों को मृत्यु देने वाली होती है।

4	क्षेम तारा क्षैमख्या क्षेमकरी	बृहस्पति अधिपति द्वारा शासित	हाथी	अनुकूल प्रभाव, शान्ति, शुभ घटनाएं श्रेयकर – प्रसन्नता, खुशी, सकारात्मकता। क्षेम तारा अनुकूल प्रभाव को दिखाता है। अच्छे स्वास्थ्य और मन की शान्ति, जीवन की आरामदायक स्थिति को दर्शाता है। इसीलिए यह सम्बंधित व्यवहार के बारे में बताता है। क्षेम तारा – बृहस्पति द्वारा प्रभावित होने के कारण एक सकारात्मक स्थिति के लिए विशेष माना जाता है।
5	प्रत्यरि तारा प्रतिकूलता प्रत्यारिस्तारा	केतु अधिपति द्वारा शासित	कौआ	प्रत्यक्ष चुनौती, बाधाएं और विफलताएं। प्रत्यरि तारा – यह एक नकारात्मक तारा है और सभी तरह की बाधाओं को दर्शाता है। ऐसा कहा जाता है कि यह मन में बहुत सी उलझनें पैदा करता है। कार्यों और गतिविधियों को पूरा करने में बाधा उत्पन्न करता है। इस तारा का स्वामी केतु होने के कारण अनिश्चितता का भाव अधिक रहता है। विषय वासना के प्रति ध्यान होता है और अजीब सा भय भी बना रहता है
6	साधक तारा साधनभं साधनटं	चन्द्रमा अधिपति द्वारा शासित	लोमड़ी	साधक भाव कार्य सिद्धि, सफलता। शान्ति, स्थिरता, आत्म नियंत्रण उपलब्धियां और सफलताएं।

				साधक तारा – अनुकूल रहता है, इसका प्रभाव शान्ति स्थिरता और आत्म नियंत्रण की स्थिति को दर्शाता है। यह उन सभी प्राप्तियों और लाभों के बारे में बताता है, जिसकी प्राप्ति व्यक्ति अपने प्रयासों से करता है। ऐसा माना जाता है कि यह तारा भगवान का आशीर्वाद देने वाला होता है। इस तारा पर चन्द्रमा का आधिपत्य होता है जिसके कारण मानसिकता विशेष रूप से प्रभावित होती है।
7	वध तारा नैधनभं नैधनं नृणाम्	शनि अधिपति द्वारा शासित	शेर	वध भाव निधन मृत्यु दुर्भाग्य परेशानी इनकार, नकारात्मकता।।

मैत्रीकरणं मित्रभभृति मैत्रं परममैत्रर्क्षेम। एवं विचार्य सततं बलाबल दैववित्कथयेत्।। वृद्ध वशिष्ठ संहिता पृष्ठ 31 श्लोक

अर्थात् – मित्र तारा मैत्रीकारक, अतिमैत्र तारा परम मैत्रीकारक होता है। इस प्रकार भली भांति विचार करके ज्योतिषियों को फलादेश करना चाहिए।

				वधतारा को खराब प्रभाव देने वाला माना गया है यह एक अशुभ तारा है और मारक प्रकृति का होता है। यह नकारात्मकता से भरा हुआ और सभी प्रकार दुर्भाग्य, परेशानी और इनकार को दर्शाता है। इस तारा का स्वामी शनि होने के कारण जीवन में सफलता की गति धीमी बनी रहती है। ज्यादातर मौत वध तारा में होती है। स्वास्थ्य समस्याएं आती हैं।
8	मित्र तारा मैत्रीकणं मित्रभं	शुक्र अधिपति द्वारा शासित	चील	मित्र तारा खुशी समर्थन, स्वतंत्रता, कल्याण, अनुकूलता। मित्र तारा शुभ तारा है। यह अनुकूलता देने वाला होता है। जीवन में समृद्धि की प्राप्ति, सफलता का सुख, अपनों का प्रेम इसके द्वारा संभव है। यह जीवन में सही रास्ता दिखाता है और मन को अच्छी शुभता प्रदान करता है। मित्र तारा शुक्र के प्रभाव में होने के कारण भौतिक सुख समृद्धि को भी प्रदान करता है।

9	परममित्र तारा (अति मित्र तारा) अतिमैत्रं परममैत्रर्क्षम्	मंगल अधिपति द्वारा शासित	हंस	परम मित्र तारा भाव अनुकूलता साहस ऊर्जा ओज–जोश उत्साह समर्थन, परम सुख, प्रसन्नता। यह शुभ तारा है इसका प्रभाव अनुकूल फल देने वाला होता है इसके जीवन में मिले जुले फल देखने को मिलते हैं। परम मित्र तारा पर मंगल का प्रभाव होता है इसके कारण साहस, जोश, ऊर्जा, ओज एवं उत्साह को देने वाला तारा है। अंतरंग दोस्ती या रिश्ते, खुशी की महान भावना, आसानी से जीवन जीना, आरामदायक एवं आराम से रहना।

पुष्य नक्षत्र में सभी ताराएं ग्राह्य हैं। यथा –

जन्मख्यां मध्यमं प्रौक्तं नेष्टं पंच–त्रि–सप्तमम्। अन्यर्क्षं शुभदं ज्ञेयं पुष्यः सर्वत्र शोभनः।।

अर्थात् जन्म तारा मध्यम, 3, 5, 7 वीं तारा अशुभ। किन्तु पुष्य–नक्षत्र नेष्ट तारा होने पर भी समस्त कार्यों में शुभ होता है।

तारा बल – मुहूर्त्त के समय जो नक्षत्र कार्यरत हो यदि वह जन्म नक्षत्र के सापेक्ष शुभ तारा (सम्पत, क्षेम, साधक, मित्र या अतिमित्र व कुछ मामलों में जन्म तारा) का हो तो मुहूर्त्त को बल प्राप्त होता है। इसी को मुहूर्त्त का तारा बल कहते हैं। इसके विपरीत यदि मुहूर्त्त नक्षत्र – विपत, प्रत्यरि एवं वध तारा हो तो मुहूर्त्त नक्षत्र बलहीन होता है और ऐसे मुहूर्त्त में आरंभ किए गए कार्य की सफलता संदिग्ध होती है।

❊ मुहूर्त्त नक्षत्र एवं तारा बल ❊

किसी भी कार्य के प्रारंभ हेतु मुहूर्त्त नक्षत्र चयन के दो चरण होते हैं – (1) कार्य के अनुरूप संभावित उपयुक्त नक्षत्रों का चयन। (2) इसमें उस नक्षत्र का चयन जो तारा बल युक्त हों।

मुहूर्त्त में चन्द्रबल एवं तारा बल में कम से कम एक का उपस्थित होना आवश्यक है। दोनों हो तो मुहूर्त्त अति उत्तम। किन्तु एक अन्य शास्त्र मत के अनुसार तारा बल की महत्ता चन्द्रबल से अधिक है। यथा –

कुजादिभ्यो बली सूर्यो , बली सूर्याच्च चन्द्रमाः।
चन्द्राद् बलवती तारां, तस्मात् तारा गरीयसी।।

अर्थात् मंगलादि ग्रहों में सूर्य बली, सूर्य से चन्द्रमा बली और चन्द्रमा से तारा बली होती है, इस कारण तारा की गरिमा है।

तारा बल – मुहूर्त्त में – मुहूर्त्त नक्षत्र, चन्द्रबल, तारा बल, योगिनी, भद्रा, गुरुबल, राहु, शुभ न होने पर भी पुष्य नक्षत्र की महिमा –

पुष्य नक्षत्र का शास्त्रोक्त महत्व –

न योगीयोगं न च लग्नीलग्नं, न तारिका चन्द्र बलं गुरुश्च।
न योगिनी राहुः न बलिष्ठ कालः एतानि विघ्नानि हरति पुष्य।।

योगिनी अच्छी न हो, चन्द्रमा भी अच्छा न हो, तारा भी अच्छा न हो और भद्रा राहु ये भी अच्छे न हो, गुरु बल भी अच्छा न हो परन्तु पुष्य नक्षत्र उस दिन हो तो इतने दोषों को दूर करता है।

सिंहो यता सर्व चतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुड्नाम।
चन्द्रे विरूद्धैऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुण्ये।।

जैसे सिंह चौपायों में बलवान होता है ऐसे ही नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र बलवान होता है। चन्द्रमा भी विरोधी हो और गोचर भी विरूद्ध हो तो भी पुष्य नक्षत्र में काम बिगड़ता नहीं। पुष्य नक्षत्र में किया गया काम सिद्ध होता है।

समस्त कर्म्मोचित्काल पुष्यो, दुष्यो विवाहे मद मूर्छितत्वात्
सहस्त्रपुत्रप्रसवे न तस्मादिहापि मुक्तोभुवि लोकसंघेः ।।3।।

सभी कार्यों में पुष्य नक्षत्र शुभ है, परन्तु विवाह में यह नक्षत्र शुभ नहीं माना गया है क्योंकि ब्रह्माजी द्वारा विवाह के लिये यह नक्षत्र शापित है।

पुष्य का अर्थ पोषण करने वाला, ऊर्जा व शक्ति प्रदान करने वाला। ऋग्वेद में पुष्य को तिष्य अर्थात् शुभ या मांगलिक तारा भी कहते हैं। पुष्य का प्राचीन नाम तिष्य, शुभ, सुन्दर तथा सुख सम्पदा देने वाला है। विद्वान इस नक्षत्र को बहुत शुभ और कल्याणकारी मानते हैं। विद्वान इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह गाय का धन मानते हैं। उनके विचार से गाय का दूध पृथ्वी लोक का अमृत है। पुष्य नक्षत्र गाय के थन से निकले ताजे दूध सरीखा पोषणकारी, लाभप्रद और मन को प्रसन्नता देने वाला है। इस नक्षत्र में मातृत्व के सभी गुण पाए जाते हैं । पुष्य नक्षत्र उत्पादन क्षमता संरक्षणता, संवर्धन व समृद्धि का प्रतीक माना गया है।

❊ वैवाहिक मिलान में तारा गुण मिलान ❊

(तारा कूट अर्थात् तारा बल का सूक्ष्म विवेचन)

आइए वर–कन्या कुण्डली मिलान के अन्तर्गत अष्टकूट मिलान में तारा कूट भाव, तारा बल का गूढ़ रहस्य एवं विशेष महत्व पर विचार करते हैं

अथ तारा कूट विचार : वैवाहिक मिलान में तारा बल के तीन गुणों का क्या है गूढ़ रहस्य एवं महत्व ? वर–वधू कुण्डली मिलान में, व्यापार–कारोबार ठेकेदारी में साझेदारी अर्थात् पार्टनरशिप में, स्वामी भृत्य सम्बंध में भाव नौकर रखते या सहायक रखते समय स्वामी नौकर का ताराबल एवं मित्रता या प्रेम सम्बंधों में तारा मिलान या तारा बल देखना क्यों आवश्यक है।

तारा कूट का सम्बंध जन्म नक्षत्रों से है। जन्म नक्षत्र से गिनने पर तारा का ज्ञान होता है। जैसा कि हम पहले विचार कर चुके हैं कि जन्म नक्षत्र सहित आगे आने वाले नक्षत्रों को ही तारा कहा जाता है। कुण्डली मिलान में 9 प्रकार की तारा होती है। यह शुभ और अशुभ दोनों प्रकार की होती है।

जन्म सम्पत, विपत, क्षेम प्रत्यरि साधको वधः।
तथा मैत्रातिमैत्रे च नवतारा प्रकीर्तिता।।

1 जन्म	2 सम्पत्	3 विपत्
4 क्षेम	5 प्रत्यरि	6 साधक
7 वध	8 मैत्र (मित्र)	9 अति मैत्र (अति मित्र)

इनमें 3, 5, 7 क्रमशः विपत (विपत्ति, विपदा), प्रत्यरि (विरोध अपमान, प्रत्यक्ष चुनौती) और वध (निधन मृत्यु दुर्भाग्य परेशानी नकारात्मकता) अशुभ ताराएं कही गई हैं।

कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं के अलग–अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3,5 न बचे तो अशुभ तारा होती है। अन्यथा 1, 2, 4, 6, 8, 9 (0) भाव शून्य बचे तो शुभ तारा होता है जैसे जन्म तारा, सम्पत क्षेम साधक, मित्र और अति मैत्र ताराएं शुभ होती हैं।

1. विवाहोपरान्त पति पत्नी की या पत्नी पति की हत्या (वध) क्यों कर देता/देती है।

2. मित्रता–प्रेम सम्बंयों, लिव इन रिलेशनशिप एवं लव जिहाद में प्रेमी–प्रेमिका की हत्या क्यों कर देता है ?

3. नौकर–मालिक की हत्या क्यों कर देता है या मालिक – नौकर को ठिकाने क्यों लगा देता है ? एवं साझेदारी में या व्यापार में या ठेकेदारी कार्यो में एक साझेदार (पार्टनर) दूसरे साझेदार पार्टनर को ठिकाने क्यों लगा देता है।

तारा गुण बोधक चक्र से यह जानना और आसान हो जाएगा।

※ अथ तारागुण बोधक (ताराबल) चक्रामिदम् ※

विवाह, मित्रता, पार्टनरशिप के संदर्भ में (भाग्य मिलान)

शेषांक	भाग्य मिलान	1	2	3	4	5	6	7	8	9 (0)
	तारा	जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अति मित्र
1	जन्म	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
2	सम्पत	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
3	विपत	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
4	क्षेम	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
5	प्रत्यरि	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
6	साधक	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
7	वध	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
8	मित्र	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
9	अतिमित्र	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

तारा कूट (भाग्य मिलान)

अष्टकूट के इस तीसरे बिन्दू (तृतीय कूट) में हम वर–वधू के तारों का मिलान करते हैं। जिस प्रकार हम भौतिक जगत में उपलब्ध उत्पादों, सेवाओं, साधनों आदि की स्टार–रेटिंग करके उसकी गुणवत्ता तय करते हैं, ठीक उसी प्रकार तारा मिलान के अन्तर्गत हम दोनों जीवन साथियों के नक्षत्र समूहों के आपसी सम्बंधों के अनुसार दोनों के जीवन स्तर की गुणवत्ता का आंकलन करते हैं और यही तारा मिलान हमें बताता है कि इन दो भिन्न–भिन्न भाग्य वाले जीवों के मिलान से इनके संयुक्त जीवन में, दोनों परिवारों में किस प्रकार की भौतिक सम्पदा समृद्धि का आगमन होगा। इनकी आर्थिक उपलब्धियां कैसी रहेंगी, ऐश्वर्य के किस स्तर को छू पाएंगे, इनके तारों का मिलान इनके जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करेगा या अवनति की ओर ?

प्रत्येक जीव का जन्म किसी एक नक्षत्र विशेष में होता है और उसी नक्षत्र की तरंगों से प्रभावित हमारा जीवनकाल और ब्रह्माण्ड के मार्ग में एक निश्चित गुण धर्म स्वभाव और भाग्य को लेकर अपनी अनन्त यात्रा की ओर अग्रसर होता है। जैसे कि हमारे जन्म नक्षत्र से तीसरे नक्षत्र वाला जीव हमें विपदा में डालने वाला, परेशानी को उत्पन्न करने वाला होता है। दूसरे नम्बर का नक्षत्र हमारी सम्पदा को बढ़ाने वाला, चौथा नक्षत्र हमारी रक्षा, पालन करने वाला, पांचवां नक्षत्र शत्रुस्वरूप, छठा नक्षत्र कार्य का साधक, सातवें नक्षत्र वाला जीव हमारी मृत्यु तक का कारण बनने वाला या अतीव कष्टकारी, आठवां मित्र और नौवें नक्षत्र वाला अतिमित्र हमारे उपर जान छिड़कने वाला होता है। अगर ताराकूट मिलान श्रेष्ठ हो। उदाहरण स्वरूप अगर वर–वधू का तारा मिलान क्रमशः अतिमित्र–सम्पत हो यह मिलान अति उत्तम है। यह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक दूसरे के लिए भाग्यशाली साबित होंगे। सदैव वर–वधू के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

बस इसी नक्षत्र जनित सम्बंध विक्षेप को दर्शाने के लिए दैवज्ञ महर्षियों ने तारा कूट मिलान की व्यवस्था की है।

तारा कूट मिलान या ताराबल मिलान दो अपरिचित व्यक्तियों (अनजान लोगों) के भाग्य का मिलान या फिर यह कह सकते हैं दो अपरिचित व्यक्तियों की ओरा/दिव्यता/प्रभामण्डल/आभामण्डल का मिलान कैसा है, दोनों की ओरा/आभा या नक्षत्र मणि मिलान करती है या नहीं।

ज्योतिष एक बहुत गहरा शास्त्र है जो दिव्य अलौकिक आध्यात्मिक ज्ञान से लबालब भरा हुआ है। कोई भी निर्णय जल्दबाजी में न करें। नाक्षत्रिक गुण मिलान कुण्डली मिलान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पूरक भाग है। अपने पूर्वज महर्षियों की इस दिव्य आलौकिक वेद–विद्या पर हम तुच्छ प्राणी उंगली नहीं उठा सकते। पहले हमें ज्योतिष शास्त्र की दिव्यता को समझ लेना चाहिए, यही हमारी उपलब्धि रहेगी।

1. कन्याभं वरभाद्गण्यं वरभाद् वरभं तथा। नवहच्छेषभे नेष्टे सप्तपंच त्रि संख्यके॥ (नेष्ट 7,5,3)

2. कन्यार्काद वरभं यावत कन्याभं वरभाद्। गणयेन्नवहच्छेषे त्रिष्वदिभम् सत्स्मृत॥ (नेष्ट 3,5,7)

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र पर्यन्त ; वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर उन दो प्राप्त संख्याओं को नौ का भाग देने पर 3,5,7 बचें तो अशुभ तारा होती है।

उदाहरणता : अगर वर का नक्षत्र वधू के नक्षत्र से तीसरा (विपत तारा) आता है तो विवाहोपरान्त भयंकर विपत्ति आना शुरू हो जाती है जैसा कि तारे के नाम विपत से स्वयं स्पष्ट है। (विपत भाव विपत्ति, दुर्भाग्य, कष्ट, चिन्ता, दुर्घटना) परन्तु दोष वधू को दिया जाता है कि जब से वधू के पैर घर में पड़े हैं, तब से घर में शांति नहीं है। इसी प्रकार अगर सातवां नक्षत्र (या 7 वां तारा) आता है तो विवाह के बाद किसी की मृत्यु हो जाती है या मृत्यु तुल्य कष्ट आ जाता है। यह सातवां तारा नकारात्मकता देता है। जैसा कि सप्तम तारा वध के नाम से स्वयं स्पष्ट है। वैवाहिक जीवन बिखर जाता है ; भाग्य का नाश हो जाता है। वध तारा आने पर शादी या व्यापार में साझेदारी या मित्रता भी नहीं करनी चाहिए।

इसी तरह पांचवां तारा प्रत्यरि भी जीवन में प्रत्यक्ष चुनौतियों, बाधाओं, विफलताओं, उलझनों, गतिविधियों में बाधाएं, उलझनें और अनिश्चितता का वातावरण देने वाला है।

इसके अलावा कोई भी शुभ काम आप करते हैं तो जिस दिन वो काम करना चाहते हैं उस दिन के नक्षत्र को अपने नक्षत्र से मिला लेना चाहिए भाव जन्म नक्षत्र से तारा (तारा बल) देख लेना चाहिए ; कहीं ऐसा न हो कि अपने यात्रा तो शुभ मुहूर्त्त देखकर शुरू की और रास्ते में दुर्घटना हो गई।

दुष्ट तारा – विपत, प्रत्यरि, वध में यात्रा में सदैव परहेज करना चाहिए। उदाहरण के लिए मान लेते हैं कि यात्रा पर जा रहे हैं। सम्बंधित व्यक्ति का जन्म नक्षत्र अश्विनी और जिस दिशा में जा रहे हैं उस दिन सातवां नक्षत्र यानी पुनर्वसु नक्षत्र है जो कि उस व्यक्ति ने नक्षत्र का वध (वध तारा) बनता है तो उस यात्रा में उसकी मृत्यु भी संभव हो सकती है। इसलिए कुण्डली मिलान में तारा कूट (तारा बल) के 3 गुण बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। यह तारा कूट गुण मिलान पिता पुत्र के व्यापार में , व्यापार में– साझेदारी में या यात्रा में बहुत ही विशेष रूप से विचारणीय है। मित्रता में यह तारा मिलान बहुत ही आवश्यक है।

उपरोक्त शास्त्रोक्त सारगर्भित सूक्ष्म विश्लेषणात्मक विवेचना से स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि कुण्डली मिलान, व्यापार, मित्रता, साझेदारी मुहूर्त्त एवं यात्रादि मुहूर्त्त में चन्द्रबल एवं अन्य बलों (कूटों) के साथ तारा कूट / ताराबल ही विशेष पारदर्शिक गरिमामयी मार्गदर्शक भूमिका होती है।

यथा :–

कुजादिभ्यो बली सूर्यो , बली सूर्याच्च चन्द्रमाः ।
चन्द्राद् बलवती तारां, तस्मात् तारा गरीयसी ॥

शास्त्रमतानुसार ताराबल की महत्ता, चन्द्रबल से भी अधिक कही गई है। इसीलिए वैवाहिक मिलान, व्यापार, मित्रता, साझेदारी, मुहूर्त्तों एवं यात्रादि मुहूर्त्तों में ताराबल की विशेष महत्ता है।

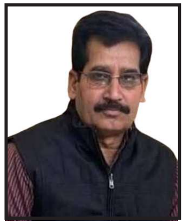
शास्त्र मत अनुसार – मंगलादि गृहों में सूर्य बली, सूर्य से चन्द्रमा बली और चन्द्रमा से तारा बली होती है। इसी कारण तारा की गरिमा है।

विशेष : अगर अत्यावश्यक परिस्थिति में जब किसी कार्यक्रम या यात्रादि मुहूर्त्त को टालना संभव न हो तो तारा दोष की शान्ति उपाय करके कार्य सम्पन्न किया जा सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है।

दुष्ट तारा शान्ति प्रकार

प्रत्यरि लवणं दधाच्शाकं त्रिजन्मशु। गुड़ विपतितारायां, सुवर्ण निधने तिलं॥

प्रत्यरि तारा में नमक, विपत और जन्म तारा में शाक, विपति तारा में गुड़ और निधन अर्थात् वध तारा में तिल और सोना दान में दें।



पं.विश्वकुमार शर्मा
विशेषज्ञ – वेदांग, ज्योतिष, वास्तु एवं कर्मकाण्ड
न्यू शास्त्री नगर, पठानकोट (पंजाब)
मो.8872543398

❋ भद्रा क्या है और क्यों अशुभ है ❋

किसी भी मांगलिक कार्य में भद्रा योग का विशेष ध्यान रखा जाता है क्योंकि भद्रा काल में मंगल उत्सव की शुरूआत या समाप्ति अशुभ मानी जाती है। अतः भद्रा काल की अशुभता को मानकर कोई भी आस्थावान व्यक्ति शुभ कार्य नहीं करता। इसलिए जानते हैं कि आखिर क्या होती है भद्रा और क्यों इसे अशुभ माना जाता है ?

पुराणों के अनुसार भद्रा भगवान सूर्यदेव की पुत्री और राजा शनि की बहन है। शनि की तरह ही इसका स्वभाव भी कड़क बताया गया है। उनके स्वभाव को नियंत्रित करने के लिए ही भगवान ब्रह्मा ने उन्हें कालगणना या पंचांग के एक प्रमुख अंग विष्टी करण में स्थान दिया। भद्रा की स्थिति में कुछ शुभ कार्यों, यात्रा और उत्पादन आदि कार्यों को निषेध माना गया है। किन्तु भद्राकाल में तंत्र कार्य, अदालती और राजनैतिक एवं चुनावी कार्य सुफल देने वाले माने गए हैं।

हिन्दू पंचांग के पांच प्रमुख अंग होते हैं। यह हैं – तिथि, वार, योग, नक्षत्र और करण। इनमें करण एक महत्वपूर्ण अंग होता है। यह तिथि का आधा भाग होता है। करण की संख्या 11 होती है। यह चर और अचर में बांटे गए हैं। चर या गतिशील करण में बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि गिने जाते हैं। अचर या अचलित करण में शकुनि, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न होते हैं। इन 11 करणों में सातवें करण विष्टि का नाम ही भद्रा है। यह सदैव गतिशील होती है। पंचांग शुद्धि में भद्रा का खास महत्व होता है। यूं तो भद्रा का शाब्दिक अर्थ है कल्याण करने वाली है, लेकिन इस अर्थ के विपरीत भद्रा या विष्टी करण में शुभ कार्य निषेध बताए गए हैं। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार अलग–अलग राशियों के अनुसार भद्रा तीनों लोकों में घुमती है। जब यह मृत्युलोक में होती है तब सभी शुभ कार्यों में बाधक या उनका नाश करने वाली मानी गई है। चन्द्रमा जब कर्क, सिंह, कुंभ व मीन राशि में विचरण करता है और भद्रा विष्टी करण का योग होता है, तब भद्रा पृथ्वीलोक में रहती है। इस समय सभी शुभ कार्य वर्जित होते हैं। इसके दोष निवारण के लिए भद्रा व्रत का विधान भी धर्मग्रंथों में बताया गया है।

ऐसा माना जाता है कि दैत्यों को मारने के लिए भद्रा गर्दभ (गधा के मुख) और लम्बे पूंछ और तीन पैर युक्त उत्पन्न हुई। भद्रा, काले वर्ण, लम्बे केश, बड़े दांत वाली तथा भयंकर रूप वाली कन्या है। जन्म लेते ही भद्रा यज्ञों में विघ्न बाधा पहुंचाने लगी और मंगल कार्यों में उपद्रव करने लगी तथा सारे जगत को पीड़ा पहुंचाने लगी। उसके दुष्ट स्वभाव को देखकर सूर्यदेव को उसके विवाह की चिंता होने लगी और वे सोचने लगे कि इस दुष्टा कुरुपा कन्या का विवाह कैसे होगा ? सभी ने सूर्यदेव के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा दिया। तब सूर्यदेव ने ब्रह्माजी से उचित परामर्श मांगा। ब्रह्माजी ने तब विष्टि से कहा कि – हे भद्रे, बव, बाव, कौलव आदि करणों के अंत में तुम निवास करो तथा जो व्यक्ति तुम्हारे समय में गृह प्रवेश तथा अन्य मांगलिक कार्य करे, तो तुम उन्हीं में विघ्न डालो, जो तुम्हारा आदर न करे, उनका कार्य तुम बिगाड़ देना। इस प्रकार उपदेश देकर ब्रह्माजी अपने लोक चले गए। तब से भद्रा अपने समय में ही देव दानव मानव समस्त प्राणियों को कष्ट देती हुई घुमने लगी। भद्रा का दूसरा नाम विष्टि करण है। कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, एकादशी के उत्तरार्ध में एवं कृष्णपक्ष की सप्तमी–चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष की अष्टमी–पूर्णमासी के पूर्वार्ध में भद्रा रहती है। जिस भद्रा के समय चन्द्रमा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक राशि में स्थित हो तो भद्रा निवास स्वर्ग में होता है। यदि चन्द्रमा कन्या, तुला, धनु, मकर राशि में हो तो भद्रा पाताल में निवास करती है और कर्क, सिंह, कुंभ, मीन राशि का चन्द्रमा हो तो भद्रा का भू–लोक पर निवास रहता है। शास्त्रों के अनुसार धरती लोक की भद्रा सबसे अधिक अशुभ मानी जाती है। तिथि के पूर्वार्ध की दिन की भद्रा कहलाती है। तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा को रात की भद्रा कहते हैं। यदि दिन की भद्रा रात के समय और रात्रि की भद्रा दिन के समय आ जाए तो भद्रा को शुभ मानते हैं। यदि भद्रा के समय कोई अति आवश्यक कार्य करना हो तो भद्रा की प्रारंभ की 5 घटी जो भद्रा का मुख होती है, अवश्य त्याग देना चाहिए। भद्रा 5 घटी मुख में , 2 घटी कण्ठ में, 11 घटी हृदय में और 4 घटी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है तो कार्य का नाश होता है। जब भद्रा कण्ठ में रहती है तो धन का नाश होता है। जब भद्रा हृदय में रहती है तो प्राण का नाश होता है। जब भद्रा पुच्छ में होती है, तो विजय की प्राप्ति एवं कार्य सिद्ध होते हैं



पं.अभिषेक जोशी
नक्षत्र लोक, ज्योतिर्विज्ञान शोध संस्थान, जोधपुर (राज.) मो.9588810027

卐 करण चक्रम् 卐

कृष्ण पक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
पूर्वार्द्ध	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पाद
उत्तरार्द्ध	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैत्तिल	वणिज	शकुनि	नाग

शुक्ल पक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६
पूर्वार्द्ध	किष्तुघ्न	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव	कौलव	कौलव	विष्टि	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि
उत्तरार्द्ध	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैत्तिल	तैत्तिल	बल	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैत्तिल	वणिज	बव

भद्रा मुख, पुच्छ, वास आदि

	शुक्ल पक्ष				कृष्ण पक्ष			
तिथि	४उत्तरार्द्ध	८पूर्वार्द्ध	११उत्तरार्द्ध	१५पूर्वार्द्ध	३उत्तरार्द्ध	७पूर्वार्द्ध	१०उत्तरार्द्ध	१४पूर्वार्द्ध
भद्रा मुख का काल	प्रथम प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	द्वितीय प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	तृतीय प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	चतुर्थ प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	चतुर्थ प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	तृतीय प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	द्वितीय प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य	प्रथम प्रहर के प्रारंभ में षष्ठांश तुल्य
भद्रा पुच्छ का काल	चतुर्थ प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	प्रथम प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	द्वितिय प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	तृतीय प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	तृतीय प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	द्वितीय प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	प्रथम प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य	चतुर्थ प्रहर के अन्त में दशमांश तुल्य
भद्रा वास	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैऋत्य	ईशान	दक्षिण	वायव्य	पूर्व

नोट– (१) भद्रा के सर्वर्क्षमान को तीन स्थानों पर रखकर उसे अलग–अलग ४,६,१० से भाग देने पर भद्रा के क्रमशः प्रहर, षठांश, और दशमांश प्राप्त होंगे। (२) तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रायें 'दिन की भद्रायें' तिथि के उत्तरार्द्ध की भद्रायें 'रात्रि की भद्रायें' कहलाती है। दिन की भद्रा रात्रि के समय तथा रात्रि की भद्रायें दिन के समय हों तो शुभ होती है। (३) दिनार्द्ध से परवर्तीतकाल की भद्रा शुभ होती है। (४) दिनार्द्ध से मध्यरात्रि तक भद्रा पुच्छ भी शुभ होती है। (५) भद्रा में शुभ कार्य असफल होते हैं किन्तु वध, विषदान, उच्चादन, अश्व, भैंस, ऊँट के व्यापार में भद्रा सफलता देती है।

भद्रावासः– मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, राशि में चन्द्रमा होने पर भद्रा का निवास स्वर्गलोक में कन्या, तुला, धनु, मकर राशि में भद्रा का निवास पाताल में, कुंभ, मीन, कर्क, सिंह राशि में चन्द्रमा में भद्रा का निवास भूमि पर होता है।

भद्रावास फलम् – भूमि की भद्रा का सदा त्याग करना चाहिए। स्वर्ग और पाताल की भद्रा शुभ होती है।

चन्द्र एवं तारा विचार :– जन्म या नाम राशि से १, ३, ६, ७, १०, ११ वाँ तथा शुक्ल पक्ष में २, ५, ९ वाँ चन्द्र भी श्रेष्ठ होता है। जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र से मुहूर्त्त नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या हो उसमें 9 का भाग देकर शेष १, २, ४, ६, ८, ० रहे तो तारा (नक्षत्र) शुभ है।

विशेष :–शुक्ल ६ से कृष्ण ८ पूर्वार्द्ध तक चन्द्र बल मुख्य, कृष्ण अष्टमी उत्तरार्द्ध से अमावस्या पर्यन्त ताराबल मुख्य तथा शुक्ल प्रतिपदा से पंचमी तक तारा व चन्द्र दोनों का बल देखना चाहिए।

द्वादश चन्द्र विशेष

गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेकेमोज्जीबन्धने पाणिग्रहण प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।
गंर्भाधान, अभिषेक, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण, यात्रा आदि में 12 वाँ चन्द्र श्रेष्ठ है।

जन्म चन्द्र विश्लेषण

कृषि, भवन विवाहेन्नप्राशने मोज्जीबन्धेः प्रथम युवति संगम राम कृपादि कृत्ये।
षटर्विधि अभिषेक जन्म चन्द्र प्रशस्तः इति वदति वराह क्षौर यात्रा विहायः।।

कृषि, मकान, विवाह, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत, प्रथम स्त्री संगम, कूपादि निर्माण तथा अभिषेक में जन्म चन्द्र प्रशस्त है। क्षौर क्रिया, यात्रा में जन्म चन्द्र का त्याग करना चाहिए।

घात चन्द्र विशेष

तीर्थ यात्रा विवाहान्नप्राशनोपनयनादिषु, मांगल्ये सर्वकार्येषु घात चन्द्रं न चिन्तयेत्।
युद्धे चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा राजसेवा वाहनादी घात चन्द्रं विवर्जयेत्।।

तीर्थ यात्रा, विवाह, अन्न प्राशन, उपनयन आदि में घात चन्द्र का विचार न करें किन्तु युद्ध, विवाद, कुमारी पूजन, राज्य सेवा, वाहन प्रयोग में घात चन्द्र त्यागने योग्य है।

षष्ठाष्टम द्वादश चन्द्र विशेष

नीच राशि गते चन्द्रे शत्रुक्षेत्र गतेऽपि वा। चन्द्रेष्टमारिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।।
नीच, शत्रु क्षेत्री चन्द्र ६, ८, १२ वाँ होने पर भी शुभ होता है।

जन्म राशि नाम राशि विचाार

व्यवहार राजसेवा संग्राम ग्राममैत्रैषु। ज्ञातेऽपि जन्मराशौ फलमुक्तं नामराशिवशात्।।
व्यापार, राजसेवा, लडाई, ग्राम, मित्रता, इनमें जन्म राशि ज्ञात भी हो तो भी नाम राशि के वश विचार करना।

मुहूर्त्त में तिथ्यादि के गुण

तिथिरेक गुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम्। वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम्।
द्वात्रिंशल्लक्षणो योगस्ताराः षष्टिगुणाः स्मृताः। चन्द्रः शतगुणः प्रोक्तो लग्नं कोटिगुणं स्मृतम्।।

मुहूर्त्त में तिथि को १ गुण, नक्षत्र को ४ गुण, वार को ८ गुण, करण को १६ गुण, योग को ३२ गुण, तारा को ६० गुण, चन्द्रमा को १०० गुण तथा लग्न को करोड़ गुण प्राप्त होते हैं।

साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

१. चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (सृष्ट्यारम्भ दिन) २. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) ३. आश्विन शुक्ला दशमी (विजय दशमी) ४. कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा (गुजरात, महाराष्ट्रै, संवतारम्भ), प्रथम तीन मुहूर्त्त पूर्ण बली तथा चतुर्थ मुहूर्त्त अर्ध बली होने से इन्हें साढ़े तीन मुहूर्त्त कहते है।

दोष समूह नाशक रवियोग

सूर्याधिष्ठित नक्ष से चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र तक गिनने पर संखा ४,६,९,१०,१३,२० हो तो रवियोग होता है यह त्रयोदश कुयोग नाशक है। रवियोग शुभ कार्यो में अत्यन्त उपयोगी है।

तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नादि यान्यनि। मध्यदेशे विवर्जयानि न दूष्याणीतरेषु तु।। (मु.चि.) मास शून्य तिथि, नक्षत्र, राशि, लग्न ये मध्यदेश में ही वर्जित है। अन्य देशों में नहीं। युगादि तिथियों में तिल, नमक, स्वर्ण, गाय का दान करना चाहिये, ये तिथियां अत्यंत पुण्य देने वाली है। इनमें शुभ कार्य नहीं करना अपितु अक्षय तृतीया में समस्त मांगलिक कार्य किये जा सकते है। मन्वादि तिथियों में मन्वन्तरों 12, युगादि 4, मन्वादि 14, देवताओं को प्रिया हैं। कल्पादि तिथियों में श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति होती है। अमावस्या 12, युगादि 4, मन्वादि 14, संक्रांति 12, वैधृति 12, व्यतीपात 12, महालय 16, अष्टका 5, अन्तष्टका 5, इस प्रकार के वर्ष के 96 दिन श्राद्ध कर्म के हैं।

नन्दा तिथियों में कर्तव्य-नन्दा तिथियों में चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु (भूमि) पूजन, तन्त्र, खेती, नाच तमाशा, विवाह, वाहन का प्रयोग शुभ है। **भद्रा** में उपरोक्त वर्णित सभी कार्य शुभ होते हैं और पौष्टिक बलवीर्य पुरूषार्थ को बढ़ाने वाला कर्म शुभ होता है। **जया** में संग्राम के लिए उपयोगी कार्स सब सिद्ध होते है, तथा **रिक्ता** में वध, बन्धन आदि विष, अग्नि सम्बन्धी और शस्त्र निर्माण कार्य शुभ होते हैं। **पूर्णा** तिथियों में विवाह अन्य मंगलोत्सव, यात्रा तथा पौष्टिक सहित शान्ति कर्म शुभ होते है। नोट-**अमावस्या** में केवल पितृ कर्म होते हैं। जिस अमावस्या में चन्द्रकला दृष्ट हो तो वह सिनीवाली और कला नष्ट रहे वह कुहूवाली कही जाती है।

वार :- एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक (अहोरात्र) का समय वार कहलाता है। वार रवि सोम आदि सात हैं। इनमें विहित कर्मव्य निम्न प्रकार हैं :-

१. रविवार - संगीत वाद्यादि शिक्षा, स्वास्थ्य विचार, औषध सेवन, मोटरयान, सवारी, नौकरी, पशु खरीदी, हवन, मंत्र उपदेश, शिक्षा, दीक्षा, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, धातु की खरीद, बेचान, वाद-विवाद, न्याय विषयक सलाह कार्य, नवीन कार्य पद ग्रहण शुभ।

२. सोमवार - कृषि खेती यंत्र खरीदी, बीज बोना, बगीचा, फल के वृक्ष लगाना, वस्त्र तथा रत्न धारण, औषध क्रय-विक्रय, भ्रमण-यात्रा, कला कार्य, स्त्री-प्रसंग, नवीन कार्य, अलंकार धारण, पशुपालन, वस्त्रभूषण क्रय-विक्रय हेतु शुभ।

३. मंगलवार - जासूसी कार्य, भेद लेना, ऋण देना, गवाही, चोरी, विष कार्य, असद् कार्य, अग्नि विषयक कार्य, सेना-संग्राम युद्ध, नीति-रीति, वाद-विवाद निर्णय, साहस कृत्य आदि कार्य शुभ, पर ऋण लेना अशुभ है।

४. बुधवार - ऋण देना अहितकर तथा शिक्षा-दीक्षा विषयक कार्य, विद्यारम्भ, अध्ययन चातुर्यकार्य, सेवावृत्ति, बही-खाता, हिसाब विचार, शिल्प कार्य, निर्माण-कार्य, नोटिस देना, गृहप्रवेश, राजनीति विचार, शालागमन शुभ है।

५. गुरूवार - ज्ञान विज्ञान की शिक्षा, धर्म न्यान विषयक कार्य, अनुष्ठान विज्ञान, कानूनी व कला संकाय शिक्षा आरम्भ, ग्रह शान्ति, मांगलीक कार्य, नवीन पद ग्रहण, वस्त्र आभूषण धारण, यात्रा, ट्रक-ट्रैक्टर इंजन, मोटर, यान चालन, औषध सेवन व निर्माण शुभ साथ ही शपथग्रहण शुभद।

६. शुक्रवार - सांसर्गिक काम, गुप्त विचार गोष्ठी, प्रेम व्यवहार, मित्रता, वस्त्र मणिरत्न धारण तथा निर्माण, अर्क, इत्र, नाटक, छाया-चित्र फिल्म, संगीत आदि कार्य शुभ। भंडार भरना, खेती करना, हल प्रवाह, धान्यरोपण, आयु, ज्ञान, शिक्षा, शुभ।

७. शनिवार - गृह प्रवेश व निर्माण, नौकर-चाकर रखना, धातु लोह, मशीनरी, कलपुर्जो के कार्य, गवाही व्यापार विचार, वादविवादादि, दुष्टकार्य, वाहन खरीदना, सेवा विषयक कार्य करना शुभा परन्तु बीज बोना, कृषि खेती कार्य शुभ नहीं।

नक्षत्र - क्रांतिवृत्त प्रारम्भ स्थान से प्रत्येक 13 अंक 20 कला विभाग को 'नक्षत्र' कहते है। क्रांति वृत्त में 27 विभाग होते है। आकाश में परिभ्रमण करते चन्द्र को एक विभाग में जितना समय लगता है वह नक्षत्र का भोग काल होता है। जिस दिन समय चन्द्र पृथ्वी से जिस नक्षत्र पुज्ज में दिखाई दे उस दिन पंचांग में वहीं नक्षत्र होता है। उक नक्षत्र में चन्द्र का भोगकाल 67-30 घट्यादि तक हो सकता है।

नक्षत्रः- १. अश्विनी, २. भरणी, ३. कृतिका, ४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६. आर्द्रा, ७. पुनर्वसु, ८. पुष्य, ९. आश्लेषा, १०. मघा, ११. पूर्वाफाल्गुनी, १२. उत्तराफाल्गुनी, १३. हस्त, १४. चित्रा, १५. स्वाति, १६. विशाखा, १७. अनुराधा, १८. ज्येष्ठा, १९. मूल, २०. पूर्वाषाढा, २१. उत्तराषाढा, २२. श्रवण, २३. धनिष्ठा, २४. शतभिषा (शततारका), २५. पूर्वाभाद्रपद, २६. उत्तराभाद्रपद, २७. रेवती।

अभिजित नक्षत्रः- उत्तराषाढा नक्षत्र का चतुर्थ चरण राश्यादि ९.०६.४०.०० से श्रवण नक्षत्र का प्रथम १४ वाँ भाग राश्यादि ९.१०.५३.२० तक अभिजित नक्षत्र होता है।

पंचक नक्षत्रः- धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवती पर्यन्त (पांच नक्षत्र) पंचक नक्षत्र कहलाते है। इनमें काष्ठ संग्रह, शंयया निर्माण, छत डालना तथा दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है। अत्यावश्यकता में शतभिषा के मध्य की, पू.भा. के आदि की तथा उ.भा. के अन्त की ५-५ घटी त्याज्य की जानी चाहिए। रेवती नक्षत्र सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है।

नक्षत्र संज्ञा फल विवेक

१. ध्रुव स्थिर नक्षत्रः- तीनों उत्तरा, रोहिणी तथा रविवार ध्रुव स्थिर संज्ञा के हैं। इनमें स्थिर कार्य, बीज बोना, गृहारम्भ, शांतिकर्म, बाग बगीचा, वृक्षारोपण, गायन, वादन शिक्षा, मैत्र, संधिविचार, वस्त्राभूषण निर्माण व धारण करना शुभ, खेल-खिलाडी हेतु शुभद। मैत्री, पदीय व अन्य शपथग्रहण, स्थान ग्रहण शुभ।

२. चर-चल नक्षत्रः- स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा सोमवार। इनमें मोटर, ट्रक, साइकिल आदि विविध यानों का चलाना, यात्रा, क्रय-विक्रय, दुकान खोलना, चित्रकारी, विद्या ज्ञान शुभ।

३. उग्र क्रूर नक्षत्रः- तीनों पूर्वा, भरणी, मघा तथा मंगलवार इनमें दुष्ट कार्य, तस्करी धंधा, विष व शस्त्रकर्म शुभ हैं।

४. मिश्र+साधारण नक्षत्रः- विशाखा, कृतिका, नक्षत्र तथा बुधवार, इनमें मांगलिक कार्य, व्यापार, उद्योग शुभ तथा उग्र नक्षत्र के कार्य भी कर सकते हैं।

५. क्षिप्रलघु नक्षत्रः- हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि. तथा गुरूवार इनमें औषध ज्ञान, वस्तु विक्रय, स्त्री सम्भोग, शास्त्र ज्ञान, संगीत कला, यात्रा तथा चर+चल नक्षत्र में कहे कार्य शुभ।

६. मृदु मैत्र नक्षत्रः- मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा शुक्रवार इनमें संगीत, वस्त्रपरिधान, स्त्री क्रीड़ा, मैत्री कार्य, अलंकार धारण आदि कार्य शुभ हैं।

७. तीक्ष्ण दारूण नक्षत्रः- मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, तथा शनिवार इनमें उग्रकर्म, पापकर्म तथा ''उग्र+क्रूर'' नक्षत्र विचार में बताये गये कार्य शुभ होते हैं।

योगः-सूर्य+चन्द्र गति में १३ अंश २० कला का अन्तर होने से एक योग कालांश होता है। योग भी २७ होते हैं। सूर्य, चन्द्र की गति भेद से एक योग का भोगकाल न्यूनतम ५० घटी तथा अधिकतम ६२।३० घट्यादि हो सकता है। २७ योगों के नाम निम्न हैं :- १. विष्कुंभ २. प्रीति ३. आयुष्मान ४. सौभाग्य ५. शोभन ६. अतिदण्ड ७. सुकर्मा ८. धृति ९. शूल १०. गण्ड ११. वृद्धि १२. ध्रुव १३. व्याघात १४. हर्षण १५. वज्र १६. सिद्धि १७. व्यतीपात १८. वरीयान १९. परिघ २०. शिव २१. सिद्ध २२. साध्य २३. शुभ २४. शुक्ल २५. ब्रह्मा २६. ऐन्द्र २७. वैधृति।

शुभाशुभ विचारः-समस्त शुभ कार्यो में वैधृति व्यतिपात का पूर्ण अंश, वज्र तथा विष्कुंभ योग के प्रारम्भ की तीन घटी, परिघ का पूर्वार्द्ध, शूल योग के प्रारम्भ ५ घटी, व्याघात योग के प्रारम्भ की ९ घटी तथा गण्ड एवं अतिगण्ड योग की प्रारम्भ की ६-६ घटियां समस्त शुभ कार्यो में त्याज्य हैं।

करणः तिथ्यर्धं करणं स्यात्। तिथि के अर्ध भाग को करण कहते हैं। करण ११ हैं।
१. बव २. बालव ३. कौलव ४. तैत्तिल ५. गर ६. वणिज ७. विष्टि (भद्रा) ये सात करण '**चर संज्ञक**' है। १. शकुनि २. चतुष्पाद ३. नाग ४. किंस्तुघ्न ये चार करण स्थिर संज्ञक हैं। चर संज्ञक करणों में विष्टि (भद्रा) करण तथा चारों स्थिर करण अशुभ हैं शेष ६ चर संज्ञक शुभ करण कहलाते हैं।

।। श्री गणेशाय नमः ।।



अथ कालायनादि निर्णयः

कालः षोढा-अब्दोऽयनमृतुर्मासः पक्षो दिवस इति। तत्राब्दो माधवमते पञ्चधा सावनः सौरश्चान्द्रो नाक्षत्रो बार्हस्पत्य इति। 'समय' के संक्षेप में ६ प्रकार हैं। वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन। वर्ष के पांच भेद हैं। सावन, सौर, चान्द्र, नाक्षत्र, बार्हस्पतयः। व्यावहारिक संज्ञोऽयं कालः स्मृत्यादि कर्मसु। योज्यः सर्वत्र तत्रापि जैवोवा नर्मदोत्तरे।।

आर्ष्टिर्षेण – स्मरेत्सर्वत्र कर्मादौ चान्द्रं सम्वत्सरं सदा। नान्यं यस्माद्वत्सरादौ, प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तिता।

व्यावहारिक संज्ञा वाला यह काल (चान्द्रवर्ष) स्मृति शास्त्रोक्त सर्वकर्मो में सदैव मानना चाहिये क्योंकि इसी की 'वत्सर' आदि में प्रवृत्ति कहीं गई हैं। बार्हस्पत्य वर्ष को नर्मदा से उत्तर में मानना चाहिये।

व्यावहारिक संज्ञा वाला यह काल (चान्द्रवर्ष) स्मृति शास्त्रोक्त सर्वकर्मो में सदैव मानना चाहिये क्योंकि इसी की 'वत्सर' आदि में प्रवृत्ति कहीं गई हैं। बार्हस्पत्य वर्ष को नर्मदा से उत्तर में मानना चाहिये।

अयनः:– सूर्य की तीन ऋचाओं को 'अयन' कहते है। अयन के दो भाग है दक्षिण और उत्तर। सायन (निरयन + अयनांश) मकर राश्यादि से सायन मिथुन राश्यन्त तक सूर्य के रहने पर उत्तरायण (देवताओं का दिन) तथा सायन कर्क राश्यादि से सायन धनु राश्यन्त तक सुर्य की स्थितिवश दक्षिणायन (देव रात्रि) कहते है।

ऋतु :– शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त ये ६ ऋतु हैं। सायन मकर राश्यादि सूर्य से सायन कुंभ राश्यन्त तक=शिशिर। सायन मीन राश्यादि सूर्य से सायन मेष राश्यान्त तक = बसन्त। सायन वृष राश्यादि सूर्य से सायन मिथुन राश्यान्त तक=ग्रीष्म। सायन कर्क राश्यादि सुर्य से सायन सिंह राश्यान्त तक=वर्षा, सायन कन्या राश्यादि सूर्य से सायन तुला राश्यान्त तक=शरद्। सायन वृश्चिक राश्यादि सूर्य से सायन धनु राश्यान्त तक=हेमन्त।

मासः:– अमान्त से अमान्त तक चान्द्रमास, सूर्य संक्रांति प्रारम्भ से सूर्य संक्रान्त्यन्त तक सौर, तीस, सूर्योदय तक ३० दिन का सावन और २७ नक्षत्रों में चन्द्र भ्रमण करने पर नाक्षत्र महिना होता है। सौर मास से विवाहादि व ग्रहचारादि का, सावन मास से गर्भ की वृद्धि आदि का, नाक्षत्र से वर्षा का, और चान्द्रमास से व्रत, यज्ञादि का विचार करना चाहिये। चान्द्रमास दो प्रकार का होता है एक शुक्ल पक्षीय प्रतिपदादि से अमान्त तक, दूसरा कृष्ण पक्षीय प्रतिपदा से पूर्णिमान्त तक होता है। देवकार्य मे पूर्णिमान्त तथा पितृकार्य में अमान्त मास ग्रहण करना चाहिये।

पक्ष :– शुक्ल व कृष्ण दो पक्ष होते हैं। देव कार्य में शुक्ल पक्ष तथा पितृ कार्य में कृष्ण पक्ष का ग्रहण करना चाहिये समस्त शुभ कार्य शुक्ल पक्ष में प्रशस्त हैं।

दिन :– एक अहोरात्र को दिन कहते हैं। अहोरात्र का विभाजन निम्न प्रकार हैं: १. दिनमान के समान पांच भाग करने पर प्रथम भाग प्रातः काल, द्वितीय भाग संगवकाल (पूर्वान्ह काल), तृतीय भाग मध्यान्ह काल, चतुर्थ भाग अपरान्ह काल तथा पंचम भाग सायंकाल होता है। २. सूर्यास्त के बाद तीन मुहुर्त्त कर समय (रात्रिमान का पंचमांश) प्रदोष काल होता है। ३. सूर्यास्त के बाद तीन घटी सांय संध्याकाल तथा सूर्योदय से तीन घटी पूर्व का समय प्रातः संध्याकाल होता है। ४. सूर्योदय से पूर्व चार घटी तक का समय अरूणोदय काल कहलाता है।

निशीथकाल :– मध्यरात्रि से एक घटी पूर्व तथा एक घटी बाद (रात्रीमान का १५ वां भाग) निशीथ काल होता है।

मुहूर्त्त :– दिनमान या रात्रिमान के १५ वें भाग को एक मुहूर्त्त कहते हैं।

पंचाग परिचय :– तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण (पंच + अंग) के समुदाय का पंचांग कहते हैं।

तिथिः:– आकाश में सूर्य तथा चन्द्र की गति तथा स्थिति के आधार पर तिथियों का मान निर्धारित होता है। सूर्य-चन्द्र में १२ अंश का अन्तर एक तिथि का मान होता है। सूर्य की दैनिक गति न्यूनतम ५७ कला ११ विकला तथा अधिकतम ६१ कला ११ विकला होती है। चन्द्र की दैनिक गति न्यूनतम ७०६ कला तथा अधिकतम ९१७ कला होती है। अतः सूर्य चन्द्र की गति भेद से एक तिथि का मान न्यूनतम ५० कला तथा अधिकतम ६७।३० कलादि तक होता है।

तिथि चक्रम्

तिथि	तिधीश	सज्ञां	निन्द्य योगाः	दग्ध लग्न पक्षे द्वये	पक्षरन्ध्र तिथि आदित्याज्य घटी	दग्धा तिथि सूर्यराशि वशात्	दग्धा तिथि चन्द्रराशि वशात्	सत् असत्
१	अग्नि	नन्दा	उ. षा.	तुला-मकर	– –	– –	– –	सत्
२	ब्रह्मा	भद्रा	अनु.	–	–	धनु-मीन	कुंभ-धनु	सत्
३	गौरी	जया	तीनों उत्तरा	सिंह-मकर	– –	– –	– –	सत्
४	गणेश	रिक्ता	–	–	पक्षद्वये-८-घटी	वृष-कुंभ	मेष-मिथुन	असत्
५	सर्प	पूर्णा	मघा	मिथुन, कन्या	– –	– –	– –	सत्
६	स्कंद	नन्दा	रोहिणी	–	पक्षद्वये-९-घटी	मेष-कर्क	तुला-सिंह	असत्
७	रवि	भद्रा	हस्त-मूल	धनु, कर्क	– –	– –	– –	सत्
८	शिव	जया	पू. भा.	–	पक्षद्वये १४ घटी	मिथुन-कन्या	मकर-मीन	असत्
९	दुर्गा	रिक्ता	कृतिका	कर्क-सिंह	पक्षद्वये २५ घटी	– –	– –	असत्
१०	यम	पूर्णा	–	–	– –	सिंह-वृश्चिक	वृष-कर्क	सत्
११	विश्वेदेवा	नन्दा	रोहिणी	धनु-मीन	–	–	–	सत्
१२	विष्णु	भद्रा	आश्लेषा	–	पक्षद्वये १० घटी	तुला-मकर	वृश्चिक-कन्या	असत्
१३	कामदेव	जया	चित्रा, स्वा.	वृष-मीन	– –	–	–	सत्
१४	शिव	रिक्ता	–	–	पक्षद्वये ४ घटी	–	–	असत्
१५	चन्द्र	पूर्णा	–	–	–	–	–	सत्
३०	पितर	पूर्णा	–	–	–	–	–	असत्

मासेषु शून्य तिथ्यादयः / मन्वादि तिथ्यादयः

मासाः	शून्य तिथयः			शून्यः नक्षत्राः	शून्यः राशिः	मन्वादिः तिथिः	युगादिः तिथिः	कल्पादि तिथिः
	पक्षद्वये	कृष्णपक्ष	शुक्लपक्ष					
चैत्र	८,९	-	-	अश्विनी,रोहिणी	कुंभ	शु. ३,१४	-	कृ ३ शु. १,५
वैशाख	१२	-	-	चित्रा-स्वाति	मीन	-	शु. ३,२४	शु. ३
ज्येष्ठ	-	२४	१३	उ. षा. पुष्य	वृष	शु. १५	-	-
आषाढ	-	६	७	पू.फा., धनिष्ठा	मिथुन	शु. १०,१५	-	-
श्रावण	२,३	-	-	उ. षा. श्रवण	मेष	-	-	-
भाद्रपद	१,२	-	-	शत., रेवती	कन्या	शु. ३, कृ.८,३०	-	-
अश्विन	१०,११	-	-	पूर्वाभाद्रपद	वृश्चिक	शु. ९	कृ १३, कलि.	-
कार्तिक	-	५	१४	कृत्तिका, मघा	तुला	शु. १२,१५	शु. ९ सत.	शु. ७
मार्गशीर्ष	७,८	-	-	चित्रा, विशाखा	धनु	-	-	शु. ९
पौष	४,५	-	-	आर्द्रा, अश्वि.,ह.	कर्क	शु. ११	-	-
माघ	-	५	६	श्रवण, मूल	मकर	शु. ७	-	शु. १३
फाल्गुन	-	४	३	भरणी, ज्येष्ठा	सिंह	शु. १५	कृ. ३०,द्वापर	-

✻ वार, तिथ एवं नक्षत्र कि योग से बनने वाले शुभाशुभ योग ✻

शुभाशुभ योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
अमृत सिद्ध योग	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
विषयोग तिथि	४	६	७	८	९	१०	११
सर्वार्थसिद्ध योग एवं दुष्ट तिथि	अश्विनी, पुष्य, उफा.,हस्त,मूल, उषा.,उभा. १,३ (७, संवर्त)	रोहि.,मृग. पुष्य, अनु. श्रवण २,११	अश्विनी कृतिका श्लेषा,उभा. ३,९,१२	कृतिका,रोहि. मृगशिरा हस्त,अनुराधा ३,९,११	अश्विनी,पुन. पुष्य,अनुराधा रेवती	अश्विनी पुन.,अन. श्रवण,रेवती	रोहिणी स्वाती श्रवण ११,१३
सिद्धियोग नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
सिद्धियोग तिथि	०	०	३',८'',१३	२,७',१२	४,१०',२४''	१,६,११''	४'',९,१४''
दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
दग्ध तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२ (१ संवर्त)	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
क्रकच (अधम) योग	१२ ति.	११ ति.	१० ति.	९ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
रत्नांकुर योग	८'',१३	१	४'',१४	५,१०',१५''	२,७',१२	५,१५''	३',८''
मृत्युदा तिथि	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१२	२,७,१२	५,१०,१५
यमद्रष्टा	मघा, धनिष्ठा	विशा.,मूल	भरणी,कृति.	पुनर्वसु, रेवती	अश्वि.,उषा.	रोहि.,अनु.	श्रवण,शत.
कालयोग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	चित्रा	अभिजित	पू.भा.
वज्र योग	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा
लुम्बक योग	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फा.
उत्पाद योग	विशाखा	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग	अनुराधा	उषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
यमघण्ट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृतिका	रोहिणी	हस्त
वारवेला (दिन)	४।५	७।३	६।२	४।३	६।८	३।४	१।६।८
वारवेला (रात)	६।४	७।४	२	६।४	५।८	३	६।१
कुलिक मुहूर्त्त (दिन)	१४	१२	१०	८	६	४	२
कुलिक मुहूर्त्त (रात)	१३	११	९	७	५	३	१
कण्टक मुहूर्त्त	६	४	२	१४	१२	१०	८
कालवेला मुहूर्त्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
अर्धयाम मुहूर्त्त	७।८	१०।१४	२।४	९।१०	१५।१६	५।६	११।१२
यमघण्ट मुहूर्त्त	१०	८	६	४	२	१४	१२
दुष्ट क्षण	१४	९।१२	२।४	८	६।१२	४।६	१।२

'कृष्ण पक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा होती है। ''शुक्ल पक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा होती है।

कुमार योग

तिथि - १,५,६,१०,११ **वार**- मंगल, बुध, सोम, शुक्र **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण पूर्वाभाद्रपद इनमें से किसी दिन इन तिथि+वार+नक्षत्र के योग से कुमार योग घटित होता है। यह मैत्री, विद्या, दीक्षा, गृह तथा अन्य व्रतादि कार्यों हेतु शुभ हैं।

राज योग

तिथि- २,३,७,१२,१५ **वार**-रवि, मंगल, बुध, शुक्र **नक्षत्र**- भरणी, मृगशिरा पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद तीनों के सुयोग मिलने पर राजयोग घटित होता है। यह योग मांगलिक कार्य, धर्मकार्य, पौष्टिक आदि कार्यो में शुभ हैं।

त्रिपुष्कर योग

२,७,१२ **तिथि**, शनि, मंगल, रवि **वार** तथा कृतिका, पुर्नवसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा.,पू.भा. नक्षत्र इनके योग से त्रिपुष्कर योग घटित होता है। त्रिपुष्कर योग में किसी वस्तु या जीव की हानि या प्राप्ति हो जाय तो उसका तिगुणा फल मिलता है।

द्विपुष्कर योग

तिथि-२,७,१२, **वार**- शनि, मंगल, रवि, **नक्षत्र**- धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा इनके योग से द्विपुष्कर योग घटित होता है। द्विपुष्कर योग में किसी वस्तु या प्राणी की हानि या प्राप्ति हो तो उसका द्विगुणा फल मिलता है।

अयोगे सुयोगेऽपि हेतु स्यात्तदानीयोगं निहत्यैष सिद्धि तनोति।
परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वज्य शस्तम्।।

यदि यमदृष्ट्रा, कालयोग, अन्यान्य कुयोग में सुयोग आ जाए जो कुयोग के (बुरे फल) का नाश कर शुभ फल ही होता है। अतः उसमें कार्य सम्पादन किया जाना चाहिए। अन्य आचार्यो के मत से तत्काल लग्न शुद्धि समस्त अशुभ योगों के फल का नाश कर शुभ फल देने में समर्थ होती है। यथा-

यत्रलग्नं बिना किञ्चित् क्रियते शुभ संज्ञकम्। तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जयाते फलम्।।

अतः कार्य-भेद से लग्नशुद्धि का विचार सुविज्ञजन स्वयं करें। सामान्यतः लग्न से ४।८।१२ वें स्थान शुद्ध हों, ३,६,११ वें स्थानों में पाप ग्रह, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, अपनी राशि से ३।६।१०।११ वीं लग्न राशि होनी चाहिए। राशि से ४।८।१२ वाँ चन्द्रमा नहीं होना चाहिए। कुछ आचार्य १२ वाँ चन्द्र नेष्ट नहीं मानते हैं।

देशभेद से दुष्ट योगों का परिहार

कुयोगास्तिथिवारात्थास्तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा।।

तिथि और वार से उत्पन्न, तिथि और नक्षत्र से उत्पन्न, दिन और नक्षत्र से उत्पन्न कुयोग एवं वार, तिथि, नक्षत्र इन तीनों से उत्पन्न कुयोग हूण (मध्य एशिया) वंग (बंगाल), खग (नेपाल) क्षेत्र में ही त्याज्य हैं अन्य स्थानों पर दोष मानने की आवश्यकता नहीं हैं।

नोट - विषाख्य कुलिक और संवर्त योग की अवशिष्ट तथा वार दग्ध, हुताशन, की सर्वतिथियों का समावेश चक्र में वार-क्रम से अन्यान्य अशुभ तिथियों में हो गया हैं। इसलिए इन कुयोगों के कालम अलग से नहीं दिए गए हैं।

चक्रांकित रविवार में हस्तनक्षत्र और पंचमी तिथि एक साथ आ जायें तो **'त्रितयज'** कुयोग होता है जो सभी शुभ कार्यो में त्याज्य माना गया है, ऐसे ही अन्य सभी वारों में जानना चाहिए।

✻ आनन्दादि २८ योगा 'निर्णय' सारिणी ✻

क्र.	योगा.	रविवार	सोमवार	भौमवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	फलम्
१	आनन्द	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	सिद्धि
२	कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	मृत्यु
३	धूम्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	असुख
४	प्रजापति	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	सौभाग्य
८	श्रीवक्स	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सौख्य संपद्
९	वज्र	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पुर्वा.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	पुनर्वसु	राजसम्मान
१२	मित्र	उत्तराफा.	विशाखा	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनागमन
१५	लुम्बक	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	धनक्षय
१६	उत्पात	विशाखा	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	स्वाति	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	कल्याण
२१	अमृत	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	राजसम्मान
२२	मुसल	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	स्वाति	मूल	अक्षयविद्याा
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पू.षाढ़ा	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	महाकष्ट
२६	चर	पू.भाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.भाद्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वा.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	गृहारम्भ
२८	प्रवर्द्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा	विशाखा	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	विवाह

आनन्दादि २८ योगों में त्याज्य दुष्ट घटिका : ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गर योगों की प्रारम्भ की ५ घटी, पद्म, लुम्बक योगों की प्रारम्भ की ४ घटी, काण, मुसल योगों की प्रारम्भ की २ घटी, धूम्र योग के प्रारम्भ की १ घटी, गद योग के प्रारम्भ की ७ घटी, त्याग कर शेष घटीयों में मांगलिक कार्य किये जा सकते हैं। कालदण्ड, उत्पाद, मृत्यु, राक्षस योग की सम्पूर्ण घटियां अर्थात् सम्पूर्ण योग ही शुभ कार्यो में त्याज्य हैं।

निरक्षदेशीय लंकोदय मान

सूर्य सिद्धान्त आदि सभी सिद्धान्त व करण ग्रन्थों में सूर्य की परम् क्रांति (क्रांतिवृत्त एवं नाड़ी वृत्त के धरातलों का मध्यवर्ती कोण) स्थायी रूप से २४ अंश मानी गयी हैं। किन्तु वेधसिद्ध सूक्ष्म एवं वास्तविक परम् क्रांति ई० सन् २०१० में २३°। २६'। १६.७४'' है जो प्रतिवर्ष २८ प्रति विकला की क्षय दर से घट रही हैं। अतः ई० सन् २०१० की वेध सिद्ध सूक्ष्म परम् क्रांति से साधित मेषादि लग्नों के निरक्षदेशीय लंकोदय मान निम्न प्रकार है -

राशियों के लंकोदय मान

राशि	लंकोदयमान पल-वि.-प्र.वि.	लंकोदयमान मि.-सै.-प्र.सै.
मेष-मीन	२७९।०६।२८	१११।३८।३५
वृष-कुंभ	२९९।०४।५६	११९।३७।५८
मिथुन-मकर	३२१।४८।३६	१२८।४३।२७
कर्क-धनु	३२१।४८।३६	१२८।४३।२७
सिंह-वृश्चिक	२९९।०४।५६	११९।३७।५८
कन्या-तुला	२७९।०६।२८	१११।३८।३५

पलभा बोधक चक्रम्

अक्षांश (उत्तर)	पलभा अं.व्य.प्र.	अक्षांश (उत्तर)	पलभा अं.व्य.प्र.
१	०१।५४।०२	२३	०५।०५।३७
१०	०२।०६।५७	२४	०५।२०।३४
११	०३।१९।४७	२५	०५।३५।४४
१२	०२।३३।०२	२६	०५।५१।१०
१३	०२।४६।१४	२७	०६।०६।५१
१४	०२।५९।३१	२८	०६।२२।५०
१५	०३।१२।५५	२९	०६।३९।०६
१६	०३।२६।२७	३०	०६।५।४२
१७	०३।४०।०८	३१	०७।१२।३७
१८	०३।५३।५७	३२	०७।२९।५४
१९	०४।०७।५५	३३	०७।४।७।३४
२०	०४।२२।०४	३४	०८।०५।३९
२१	०४।३६।२३	३५	०८।२४।०९
२२	०४।५०।५४	३६	०८।४३।०७

भूकेन्द्रीय (खगोलिक) अक्षांश संस्कार स्पष्टीकरण

व्यावहारिक दृष्टि से पृथ्वी गोल मानकर उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक १८०° भागों में बांटा गया हैं। भूमध्य रेखा से ९०° अंश ऊपर व ९०° अंश नीचे ये भौगोलिक अक्षांश हैं। किन्तु वास्तव में पृथ्वी गोल नहीं होकर मौसमी या नारंगी के फूल जैसी ऊपर -नीचे चपटी है तथा भूमध्य रेखा पर इसका व्यास अधिक है इस भौगोलिक और खगोलिक अंश में अन्तर होने के कारण सूर्य स्पष्ट एवं लग्न स्पष्ट इत्यादि में निम्नलिखित भूकेन्द्रीय संस्कार (-) ऋण करना आवश्यक हैं।

अक्षांश	अन्तर क.वि.	अक्षांश	अन्तर क.वि.	अक्षांश	अन्तर क.वि.	अक्षांश	अन्तर क.वि.	अक्षांश	अन्तर क.वि.
८	३।१०	१५	५।४५	२२	८।००	२९	९।४६	३६	१०।५८
९	३।३३	१६	६।०६	२३	८।१७	३०	७।५९	३७	११।०५
१०	३।५६	१७	६।२६	२४	८।३४	३१	१०।११	३८	११।१२
११	४।१८	१८	६।४६	२५	७।५०	३२	१०।२२	३९	११।१७
१२	४।४१	१९	७।०५	२६	९।०५	३३	१०।३२		
१३	५।०३	२०	७।२४	२७	९।१९	३४	१०।४२		
१४	४।२४	२१	७।४२	२८	७।३३	३५	१०।५०		

पलभा एवं स्वोदयमान ज्ञान विधि

सायन मेष संक्रान्ति या सायन तुला संक्रान्ति के दिन स्पष्ट मध्यान्ह्न काल में १२ अंगुल शंकु की छाया जितनी हो उतनी की उस स्थान की पलभा समझनी चाहिए। उदाहरण- जयपुर नगर का भौगोलिक अक्षांश २६ अंश ५५ कला है। भूकेन्द्रिय (खगोलिक) अक्षांश संस्कार सारिणी से संस्कार ९ कला ऋण किया तो २६ अशं ४६ कला जयपुर का खगोलिक अक्षांश प्राप्त हुआ। पलभा सारिणी में २७ अक्षांश की पलभा ६।६।५१ अंगुलादि तथा २६ अक्षांश की पलभा ५।५१।१० अंगुलादि है। अतः ४६ कला का मान प्राप्त करने के लिए २७ अक्षांश की पलभा ६।६।५१ अंगुलादि में से २६ अक्षांश की पलभा ५।५१।१० अंगुलादि को घटाया तो १५ व्य. ४१ प्र.व्य. प्राप्त हुई। अतः ४६ कला के मान के लिये ४६ ६०x ०।१५।४१=१२ व्य. ०१ प्र.व्य. मान मिला तो इसे २६ अक्षांश की पलभा में जोड़ने पर ५।५१।१०+०।१२।०१=६।३।११ अंगुलादि जयपुर की पलभा ज्ञात हुई। **चरखण्ड साधन :-** जयपुर की पलभा को तीन स्थानों मे रखकर प्रथम को १० से दूसरे को ८ से, तीसरे को १०/३ से गुणा करने पर प्राप्त फल (चरखण्डों) को मेषादि तीन राशियों के लंकोदय मान में से ऋण, कर्क आदि तीन राशियों में धन, तुलादि तीन राशियों में धन तथा मकरादि तीन राशियों में से ऋण करने पर जयपुर के स्वोदयमान ज्ञात होगें।

राशि	निरक्षोदयमान या लंकोदयमान पल-वि.-प्रति.वि.		चरखण्ड पल-वि.प्रति.वि.	स्वोदय मान पल-वि.-प्रति.वि.
मेष-मीन	२७९।०६।२७	-	६०।३१।५०	२१८।३४।३८
वृष-कुंभ	२९९।०४।५६	-	४८।२५।२८	२५०।३९।२८
मिथुन-मकर	३२१।४८।३६	-	२०।१०।३७	३०१।३७।५९
कर्क-धनु	३२१।४८।३६	+	२०।१०।३७	३४१।५९।१३
सिंह-वृश्चिक	२९९।०४।५६	+	४८।२५।२८	३४७।३०।२४
कन्या-तुला	२७९।०६।२८	+	६०।३१।५०	३३९।३८।१८

अथ् तिथि कष्टावली यंत्रम्

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	स्कन्द	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	विष्णु	काम	शिव	चन्द्र	पितर
विष-घटी	१५-११	५-९	७-१२	७-११	७-११	५-९	४-८	८-१२	७-११	१०-१४	३-७	१३-१७	१४-१८	७-११	८-१२	८-१२
कष्ट दिन	१२	८	७	१६	२१	१२	८	१३	१८	२५	७	७	१०	६०	३	१८
दिनबलि	घृत	खीर	अन्न	मोदक	खीर	मीठा	दही शर्करा	पूडी	गुलगुला	सप्तधान्य	मोदक	मोदक	दही शर्करा	मीठा	दही	मधु
दानपदार्थाः	घी	भोजन	अन्न	वस्त्र	तेल	तिल	मूंग	मुद्रा	स्वर्ण	रजत	लोह	ताम्र	सप्तधान्य	कांस्यपात्र	रजत	भोजन

अथ् वार कष्टावली यंत्रम्

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
स्वामी	रूद्र	गौरी	स्कन्द	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	यम
विषघटी	२०-२४	२-६	१२-१६	१०-१४	७-११	५-९	२५-२९
कष्टदि.	५	८	५	७	५	७	१५
दानादि	खीर बलि	चावल दान	गेहूं दान	मूंग दान	चावल दान	तिलदान	उड़द दान

विविधा कुयोगाः

पू.षा. १+धनु लग्न या पुष्य १+ कर्क लग्न में जन्म हों तो पितृहानि, पू.षा. या पुष्य के द्वितीय चरण में मातृहानि। तृतीय चरण में स्वयं की हानि, चतुर्थ चरण में मामा का नाश, उ.फा. १ या पुष्य २,३ या चित्रा-३, भरणी १,२ या हस्त -३ या रेवती ४ में पुत्र जन्म हो तो पितृहानि एवं कन्या जन्म हों तो मातृहानि। निम्न नक्षत्रों की निर्दिष्ट समयावधि के बाद शुभाशुभ फल मिलता है-

नक्षत्र	अश्विनी	मघा	ज्येष्ठा	चित्रा	मूल	हस्त	आश्लेषा	रेवती	उ.फा.	पुष्य	पू.षा.
चरण	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-	-
समय	१६ वर्ष	८ वर्ष	१ वर्ष	४ वर्ष	४ वर्ष	१२ वर्ष	२ वर्ष	१ वर्ष	२६ मास	३ मास	९ मास

संकेत : तिथि, वार, नक्षत्र आदि के स्पष्ट सर्वर्क्षमान से ही विष घटी काल, नक्षत्र चरण आदि निर्णय करने चाहिये।

कृष्ण पक्ष चतुर्दशी फलम्	
घटी	फलम्
१०	शुभ
१०	पिता का नाश
१०	माता का नाश
१०	मामा का नाश
१०	भाई का नाश
१०	जातक का नाश

सं.	योग नमानि	फलम्	सं.	योग नमानि	फलम्
१	मुसल या मुदगर	शोभन का नाश	७	व्यतिपात	अंगहीन
२	भद्रा	दरिद्रता	८	परिघ	मृत्युतुल्य कष्ट
३	रिक्ता तिथि	शीघ्र नपुंसकता	९	वैधृति	पितृकष्ट या हानि
४	यमकण्टक	विकलांग	१०	विष्कुंभ	धन हानि
५	पाप ग्रहों से पीडित जन्म नक्षत्र	रोगी	११	शूल	उदर शूल
			१२	गण्ड	गण्ड रोग
६	पिता के जन्मर्क्ष या कर्मर्क्ष या चन्द्र नवांश	पितृनाश	१३	गुलिक	अंग दोष

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

दिन	तिथि + नक्षत्रादि
रोग प्रारम्भ दिन	जन्म राशि, जन्म नक्षत्र, जन्म लग्न या राशि लग्न से आठवें चन्द्र
रविवार	१२ तिथि व मघा नक्षत्र या भरणी, अनुराधा नक्षत्र
सोमवार	आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र
मंगलवार	नन्दा (१-६-११) तिथि व कृतिका, मघा, शतभिषा नक्षत्र
बुधवार	भद्रा (२-७-१२) तिथि व अश्विनी, विशाखा, आश्लेषा नक्षत्र
गुरूवार	षष्ठी तिथि व शतभिषा नक्षत्र या जया (३,-८-१३) तिथि व मघा, ज्ये., मृग. नक्षत्र
शुक्रवार	अष्टमी तिथि व अश्विनी, आश्ले., श्रवण नक्षत्र या रिक्ता (४-९-१४) तिथि व आर्द्रा, धनि. नक्षत्र
शनिवार	नवमी तिथि व पू.षा., हस्त, पू.भा. नक्षत्र या पूर्णा (५-१०-१५) तिथि व भरणी नक्षत्र
सू. मं. श.	४,६,९,१२,१४,३०, तिथि व भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्ले., तीनों पूर्वा, विशाखा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट, सभी कुयोगों में मारकेश दशा विशेष विचारणीय।

✻ अथ जन्म लग्न से पाया विचार ✻

लग्नत: 1.6.11	चन्द्र	स्वर्ण पाद	रोग, कुटुम्ब से वैमनस्य, द्रव्यहानि, क्लेश
लग्नत: 2.5.9	चन्द्र	रजत पाद	व्यापार, धन, धान्य, यश वृद्धि, सम्पत्ति सुख
लग्नत: 3.7.10	चन्द्र	ताम्र पाद	लक्ष्मी प्राप्ति, व्यापार व शरीर सौंख्य, विजय
लग्नत: 4.8.12	चन्द्र	लोह पाद	मंदाग्नि, रोग, शोक, व्यापार हानि

✻ अथ रोग त्रिनाड़ी चक्रम् ✻

आदि	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनुराधा	ज्येष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	भरणी	कृतिका
मध्य	पुनर्वसु	मघा	हस्त	विशाखा	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रोहिणी
अन्त्य	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाति	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृगशिरा

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र, जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। रोग काल में जिस दिन एक ही नाड़ी यह योग मिले उस दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु होगी। यह रोग त्रिनाड़ी यात्रा व रण के समय भी वर्जित करना।

अभुक्त मूल विषये नारद् :- नारद मज से आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती के अन्त को दो-दो घटी तथा अश्विनी, मघा, मूल के प्रारम्भ की दो-दो घटी अभुक्त मूल है। इनमें, संधिकाल की एक-एक घटी विशेष अरिष्टप्रद समझनी। अभुक्त मूल के दिन में जन्में जातक पिता को तथा रात्रि में जन्में जातक माता को एवं सायंकाल में जन्में स्वयं को कष्टप्रद होते हैं कम से कम २७ दिन बाद विधानोक्त शांति के बाद ही पिता को बालक के दर्शन करने चाहिये। अन्य मत से आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती के अन्त की क्रमशः ११, ६, ४ घटी तथा अश्विनी, मघा, मूल के प्रारम्भ की क्रमशः ३, ४, ९ घटी गण्डमूल समझनी चाहिये।

मूल शान्ति समय :- अश्विनी, मघा, मूल, ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषा नक्षत्र में जन्में जातकों की १० वें दिन मूल संज्ञक नक्षत्र में ही विधानोक्त शांति करानी चाहिये। इन मूल संज्ञक नक्षत्रों के अभुक्त काल में जन्में जातकों की मूल शान्ति २७ दिन बाद जब जन्म नक्षत्र पुनः आये तब शास्त्रोक्त शांति विधान प्रक्रिया से मूल शांन्ति आवश्यक है।

जन्म नक्षत्र से पाया विचाार

आर्द्रादि दशकं रूप विशाखादि युगलोहकम्।पूर्वादि सप्तताम्रश्च रेवती षष्ठ स्वर्णकम्।

आर्द्रा से १० नक्षत्र चांदी के पाया, विशाखा से ४ नक्षत्र तक लोहे के पाया, पूषा से ७ नक्षत्र तक तांबे का पाया तथा रेवती से ६ नक्षत्र तक सोने का पाया जानना।

अथ् नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र	स्वामी	विष घटी	चरणगत कष्ट दिन				जपार्थ मंत्राः	जप स.	रोगो.	दान पदार्था	आराध्य वृक्ष
		से – तक	१	२	३	४		(सहस्त्र)	कष्ट दिन		
अश्विनी	अश्वि.कुमा.	४०-५४	९	११	१	२०	मृत्युंजयमन्त्रः	५	९	भोजनदानम्	कुचला वृक्ष
भरणी	यम	२४-२८	०	८०	४०	११	यमायतेवेतिमंत्रः	१०	११	गौअन्नदानम्	आंवला
कृतिका	अग्नि	३०-३४	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेतिमंत्रः	१०	९	स्वर्णदानम्	गूलर
रोहिणी	ब्रह्मा	४०-४४	३	९	१८	३०	ब्रह्मययेति मंत्रः	५	७	घृत दानम्	जामुन
मृगशिरा	चन्द्र	१४-१८	९	५	७	१०	इमं देवेति मंत्रः	१०	३०	तिलदानम्	खैरी
आर्द्रा	शिव	२१-२५	०	१८	०	०	नमस्तेरूद्रड़तिमंत्रः	१०	मृ.तु.	गौ दानम्	कृष्णगुरू
पु.र्वसु	अदिति	३०-३४	७	१४	२	२१	अदितिद्योरिति मंत्रः	१०	७	पीतल दानम्	कीकर
पुष्य	गुरू	२०-२४	६	७	१०	२१	वृहस्पतेति मंत्रः	१०	७	तेलान्न दानम्	पीपल
आश्लेषा	सर्प	३२-३६	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेतिमंत्रः	१०	मृ.तु.	गोऽजादि दानम्	नागचम्पा
मघा	पितर	३०-३४	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइति मंत्रः	१०	२०	वस्त्राज्य दानम्	वटवृक्ष
पू.फा.	भग	२०-२४	०	१५	०	३०	भगप्प्रणेति मंत्रः	१०	मृ.तु.	भोजनदानम्	अशोक वृक्ष
उ.फा.	अर्यमा	१८-२२	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मंत्रः	१०	७	अन्न दानम्	खेजड़ी वृक्ष
हस्तं	रवि	२१-२५	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातबेदेति मंत्रः	५	१५	तेल दानम्	जुही
चित्रा	विश्वकर्मा	२०-२४	११	९	९	१६	त्वष्टातुरीगति मंत्रः	१०	११	दुग्धदानम्	बिल्ववृक्ष
स्वामि	वायु	१४-१८	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मंत्रः	१०	मृ.तु.	गोघृतदानम्	अर्जुन वृक्ष
विशाखा	इन्द्रग्नि	१४-१८	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निइतिमंत्रः	१०	१६	गोस्वर्णदानम्	नागकेशर
अनुराधा	मित्र	१०-१४	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेतिमंत्रः	१०	स्थिर	गोघृतदानम्	नागकेशर
ज्येष्ठा	इन्द्र	१४-१८	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मंत्रः	५	मृ.तु.	तिल दानम्	नीमवृक्ष
मूल	राक्षस	५६-६०	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मंत्रः	५	९	रजतपात्र दानम्	वेतवृक्ष
पू.षाढा	जल	२४-२८	०	१५	२४	१०	आपोधर्मेति मंत्रः	५	मृ.तु.	गौमुक्तादानम्	अर्क वृक्ष
उ.षाढा	विश्वेदेवा	२०-२४	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मंत्रः	१०	३०	भोजन दानम्	कटहलवृक्ष
श्रवण	विष्णु	१०-१४	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मंत्रः	१०	११	श्रीफलदानम्	श्वेत वृक्ष
धनिष्ठा	वसु	१०-१४	१५	४	२०	२१	वसो. पवित्रेति मंत्रः	१०	१५	अश्वान्नदानम्	नारियल
शतभिषा	वरूण	१८-२२	०	४५	३	२२	वरणस्तम्भेति मंत्रः	१०	११	भोजनान्न दानम्	आम वृक्ष
पू.भाद्र.	अजैकपाद	१६-२०	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मंत्रः	१०	मृ.तु.	भोजनदानम्	कदम्बवृक्ष
उ.भाद्र	अहिर्बुध्न्य	२४-२८	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मंत्रः	१०	७	अन्न दानम्	मेहंदीवृक्ष
रेवती	पूषा	३०-३४	१८	१०	९	२०	पृषणतवव्रं मंत्रः	५	स्थिर	वृष दानम्	बेर वृक्ष

अथ् कन्या जन्मनि मूल चक्रम्

स्थानम	शीर्ष	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाहूवो	हस्ते	गुहे	जंघा	जान्वो	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुनाथ	धननांश	धनलाभ	कुटिला	धनलाभ	दयावती	कामिनी	मातृनाश	भ्रातृ नाश	वैधव्य

गण्डमूल नक्षत्र

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती

गण्डमूल पाद फलम्

गण्ड नक्षत्र	अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
प्रथम चरण	पितृकष्ट	राज्यसुख	मातृहानि	ज्येष्ठ भ्रातृ ना.	पितृनाश	राज सम्मान
द्वितीय चरण	सुखसम्पत्ति	धनहानि	पितृहानि	अनुजभ्रातृ ना.	मातृनाश	मंत्रीपद
तृतीय चरण	मंत्री पद	मातृहानि	सुखसम्पत्ति	पितृनाश	धननाश	सुखसम्पत्ति
चतुर्थ चरण	राज सम्मान	पितृहानि	धनलाभ	स्वहानि	धनलाभ	अनेक कष्ट

मूल वृक्ष फलम्

अंग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फलम्	मूल नाश	वंशनाश	मातृ क्लेश	मातृ नाश	मंत्री पद	मंत्री पद	घर लाभ	अल्पायु

मूल पुरूष फलम्

अंग	शीर्ष	मुख	स्कन्ध	बाह्वो	हस्त	हृदय	नाभौ	गुह्ये	जान्वो	पाद
घटी	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पितृनाश	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान	मतिमान

आश्लेषा पुरूष फलम्

अंग	मस्तक	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कन्ध	हाथ	हृदय	नाभि	गुदा	पैर
घटी	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फलम्	राज्य सुख	पितृ हानि	मातृ हानि	लंपट	गुरू भक्त	बली	आत्मघाती	बहमी	तपस्वी	धन हानि

ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्

घटी	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
फलम्	नानी नाश	नाना नाश	मामा नाश	माता नाश	स्व नाश	वंश नाश	मातृकुल नाश	अग्रज नाश	श्वसुरवंश नाश	सर्व नाश

अथ् मूल निवास फलम्

जन्म मासानुसारेण	वैशा.,ज्ये.,मार्ग.फाल्गु.	चैत्र,श्राव.,कार्तिक,पौष	आषा.,माघ,आश्वि.,भाद्र.
जन्म लग्न	२-४-८-११	३-६-९-१२	१-४-७-१०
मूल निवासम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश	शुभम्

अथ् कन्या जन्मानि नक्षत्र फलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
चरण	१,२,३	२,३,४	१,२,३,४	४
फलम्	फलम्	सासनाश	ज्येष्ठ नाश	देवरनाश

☼ अवकहड़ा चक्रम् ☼

नक्षत्र	१. अश्विनी				२. भरणी				३. कृतिका				४. रोहिणी				५. मृगशिरा				६. आर्द्रा				७. पुनर्वसु				८. पुष्य				९. आश्लेषा			
योनि	अश्व				गज				मेष				सर्प				सर्प				श्वान				मार्जार				मेष				मार्जार			
गण	देव				मनुष्य				राक्षस				मनुष्य				देव				मनुष्य				देव				देव				राक्षस			
नाडी	आद्य				मध्य				अन्त्य				अन्त्य				मध्य				आद्य				आध्य				मध्य				अन्त्य			
युंजा	पूर्व				पूर्व				पूर्व				पूर्व				पूर्व				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य			
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चरणाक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लु	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	क	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
राशि	मेष									वृष									मिथुन									कर्क								
स्वामी	मंगल									शुक्र									बुध									चन्द्र								
वर्ण	क्षत्रिय									वैश्य									शुद्र									विप्र (ब्राह्मण)								
वश्य	चतुष्पाद									चतुष्पाद									मानव									जलचर								
हंसक	अग्नि									भूमि									वायु									जल								
नक्षत्र	१०. मघा				११. पूर्वा फा.				१२. उत्तरा फा.				१३. हस्त				१४. चित्रा				१५. स्वाति				१६. विशाखा				१७. अनुराधा				१८. ज्येष्ठा			
योनी	मूषक				मूषक				गौ				महिष				व्याघ्र				महिष				व्याघ्र				मृग				मृग			
गण	राक्षस				मनुष्य				मनुष्य				देव				राक्षस				देव				राक्षस				देव				राक्षस			
नाडी	अन्त्य				मध्य				आद्य				आद्य				मध्य				अन्त्य				अन्त्य				मध्य				आद्य			
युंजा	मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				अन्तय			
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चरणाक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
राशि	सिंह									कन्या									तुला									वृश्चिक								
स्वामी	सूर्य									बुध									शुक्र									मंगल								
वर्ण	क्षत्रिय									वैश्य									शुद्र									विप्र (ब्राह्मण)								
वश्य	वचचर									मानव									मानव									कीटक								
हंसक	अग्नि									भूमि									वायु									जल								
नक्षत्र	१९. मूल				२०. पूर्वाषाढ़ा				२१. उत्तराषाढ़ा				२२. श्रवण				२३. धनिष्ठा				२४. शतभिषा				२५. पूर्वा भाद्र.				२६. उत्तराभाद्र.				२७. रेवती			
योनी	श्वान				वानर				नकुल				वानर				सिंह				अश्व				सिंह				गौ				गज			
गण	राक्षस				मनुष्य				मनुष्य				देव				राक्षस				राक्षस				मनुष्य				मनुष्य				देव			
नाडी	आद्य				मध्य				अन्त्य				अन्त्य				मध्य				आद्य				आद्य				मध्य				अन्त्य			
युंजा	अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				अन्त्य				पूर्व			
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
चरणाक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खु	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची
राशि	धनु									मकर									कुंभ									मीन								
स्वामी	गुरू									शनि									शनि									गुरू								
वर्ण	क्षत्रिय									वैश्य									शूद्र									विप्र (ब्राह्मण)								
वश्य	मानव									जलचर									मानव									जलचर								
हंसक	अग्नि									भूमि									वायु									जल								

अथ् ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा ६ वर्ष				चन्द्र दशा १० वर्ष				मंगल दशा ७ वर्ष				राहु दशा १८ वर्ष				गुरू दशा १६ वर्ष				शनि दशा १९ वर्ष				बुध दशा १७ वर्ष				केतु दशा ७ वर्ष				शुक्र दशा २० वर्ष			
कृ. उ. फा., उ. शा.				रो., हस्त, श्रवण				मृग., चित्रा, धनि.				आर्द्रा, स्वा., शत.				पुन., विशा., पूभा.				पुष्य,अनु., उ. भा.				आश्ले.,ज्ये., रेव.				मघा, मूल, अश्वि.				पू.फा.,पू.शा.,भर.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	२८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	१	१८	गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	६	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	१	बु.	२	६	२८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	१	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	२८	शु.	२	८	२	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	१	२८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	२८	गु.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	२८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	२८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

अथरौद्रादि (आर्द्रादि) अष्टोंत्तरी महादशान्तर्दशा बोध चक्रम्।

सूर्य दशा ६ वर्ष				चन्द्र दशा १५ वर्ष				मंगल दशा ४ वर्ष				बुध दशा १७ वर्ष				शनि दशा १० वर्ष				गुरू दशा १२ वर्ष				राहु दशा १२ वर्ष				शुक्र दशा २१ वर्ष				ग्रहाः/वर्षाणि
आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले.				मघा, पू.फा., उ.फा.				हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा				अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल				पू. षा., उ. शा., अभि., श्रवण				धनिष्ठा, शत., पू. भा.				उ.भा., रेवती, अश्वि., भरणी				कृतिका, रोहिणी मृगशिरा				जन्म नक्षत्र
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	-: विशेष :- 1. यदि लग्नेश से केन्द्र त्रिकोण में राहु और लग्न में शुक्र हो तो अष्टोंतरी दशा लेनी चाहिए। 2. यदि लग्न में कोई ग्रह नहीं हो तो दशा गणना कृतिका नक्षत्र से करनी चाहिए। 3. कृष्ण पक्ष में दिन का तथा शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो अष्टोंतरी दशा ग्रहण करनी चाहिए।
सू.	०	४	०	चं.	२	१	०	मं.	०	७	३	बु.	२	८	३	श.	०	११	३	गु.	३	४	३	रा.	१	४	०	शु.	४	१	०	
चं.	०	१०	०	मं.	१	१	१०	बु.	१	३	३	श.	१	६	२७	गु.	१	१	३	रा.	२	१	१०	शु.	२	४	०	सू.	१	२	०	
मं.	०	५	१०	बु.	२	४	१०	श.	०	८	२७	गु.	२	११	२७	रा.	१	१	१०	शु.	३	७	१०	सू.	०	८	०	चं.	२	११	०	
बु.	०	११	१०	श.	१	४	२०	गु.	१	४	२७	रा.	१	१०	२०	शु.	१	११	१०	सू.	१	०	२०	चं.	१	८	०	मं.	१	६	२०	
श.	०	६	२०	गु.	२	७	२०	रा.	०	१०	२०	शु.	३	३	२०	सू.	०	६	२०	चं.	२	७	२०	मं.	०	१०	२०	बु.	३	३	२०	
गु.	१	०	२०	रा.	१	८	०	शु.	१	६	२०	सू.	०	११	१०	चं.	१	४	२०	मं.	१	४	२७	बु.	१	१०	२०	श.	१	११	१०	
रा.	०	८	०	शु.	२	११	०	सू.	०	५	२०	चं.	२	४	१०	मं.	०	८	२७	बु.	२	११	२७	श.	१	१	१०	गु.	३	८	१०	
शु.	१	२	०	सू.	०	१०	०	चं.	१	१	१०	मं.	१	३	३	बु.	१	६	२७	श.	१	९	३	गु.	२	१	१०	रा.	२	४	०	

दशा का भुक्त भोग्य साधन - गत नक्षत्र की घट्यादि को 60 में से घटाकर इष्ट घटी पल जोडने से भयात होता है। 60 में से घटाये हुये अंको में जन्म नक्षत्र घट्यादि जोडने से भगोग (सर्वर्क्षम्) होता है। भयात और भभोग की घटीयों को 60 से गुणाकर पल बनायें। भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भभोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष होगा फिर शेषांक को 12 से गुणा करें और भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक मास होगा। फिर शेषांक को 30 से गुणा करके भभोग के पलों को भाग दने पर लब्धांक दिन होगें फिर शेषांक को 60 से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्धांक घटी व शेष पल प्राप्त होगें। यह दशा का वर्शादि भुक्त काल होगा। इसको महादशा के वर्शो में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होगी।

अथ् शिवोक्त योगिनी दशान्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रमिदम्

मंगला, १ वर्ष				पिंगला, २ वर्ष				धान्या, ३ वर्ष				भ्रामरी, ४ वर्ष				भद्रा, ५ वर्ष				उल्का, ६ वर्ष				सिद्ध, ७ वर्ष				संकटा, ८ वर्ष				दशा/वर्ष	
आर्द्रा, चित्रा, श्रवण				पुनर्वसु, स्वाति, धनिष्ठा				पुष्य, विशाखा, शतभिया				आश्ले., अनु., पू.भा., अश्वि.				मघा, ज्येष्ठा, उ.भा., भरणी				पू. फा., मूल, रेवती, कृतिका				उ. फा., पू. षा., रोहिणी				हस्त, उ. शा., मृगशिरा				जन्म नक्षत्र	
यो.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	सि.	व.	मा.	दि.	यो.	व.	मा.	दि.	यो.	स्वामि
मं.	०	०	१०	पि.	०	१	१०	धा.	०	३	०	भ्रा.	०	५	१०	भ.	०	८	१०	उ.	१	०	०	सं.	१	४	१०	सं.	१	९	१०	मं.	चन्द्र
पि.	०	०	२०	धा.	०	२	०	भ्रा.	०	४	०	भ.	०	६	२०	उ.	०	१०	०	सि.	१	२	०	यो.	१	६	२०	मं.	०	२	२०	पि.	सूर्य
धा.	०	१	०	भ्रा.	०	२	२०	भ.	०	५	०	उ.	०	८	०	सि.	०	११	२०	सं.	१	४	०	मं.	०	२	१०	पि.	०	५	१०	धा.	गुरू
भ्रा.	०	१	१०	भ.	०	३	१०	उ.	०	६	०	सि.	०	१	१०	सं.	१	१	१०	मं.	०	२	०	पि.	०	४	२०	धा.	०	८	०	भ्रा.	मंगल
भ.	०	१	२०	उ.	०	४	०	सि.	०	७	०	सं.	०	१०	२०	मं.	०	१	२०	पि.	०	४	०	धा.	०	७	०	भ्रा.	०	१०	२०	भ.	बुध
उ.	०	२	०	सि.	०	४	२०	सं.	०	८	०	मं.	०	१	१०	पि.	०	३	१०	धा.	०	६	०	भ्रा.	०	९	१०	भ.	१	१	१०	उ.	षनि
सि.	०	२	१०	सं.	०	५	१०	मं.	०	१	०	पि.	०	२	२०	धा.	०	८	०	भ्रा.	०	८	०	भ.	०	११	२०	उ.	१	४	०	सि.	षुक्र
सं.	०	२	२०	मं.	०	०	२०	पि.	०	२	०	धा.	०	४	०	भ्रा.	०	६	२०	भ.	०	१०	०	उ.	१	२	०	सि.	१	६	२०	सं.	रा.के.

दैनिक लग्न प्रवेश परिवर्तन सारिणी

श्री अर्बुद पंचांग में चैत्रादि पक्षों में सिरोही नगर की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा-मिनिट में दी गई है। सिरोही लग्न प्रवेश सारिणी में अन्य नगरों का लग्न प्रवेश काल जानने के लिये नीचे सारिणी में भारत के प्रमुख नगरों के सामने मेषादि द्वादश लग्नों का समय संस्कार मिनिटों में दिया गया है जिसे सिरोही लग्न प्रवेश काल में चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने पर इष्ट नगर का सूक्ष्म-लग्न प्रवेश काल ज्ञात होगा। ध्यान रहे – अर्बुद श्री पंचांग में दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी प्रत्येक वर्ष अयनांश के अनुसार सूक्ष्म संस्कारित की जाती है जबकि सिरोही अक्षांश/रेखांश पर सम्पादित अन्य कई पंचांगों में लग्न प्रवेश सारिणी स्थूल होती है तथा उनमें लीप वर्ष में २९ फरवरी का समावेश नहीं होगा। (सम्पादक)

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	-१	-७	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-६	-६	-७
अजीतगढ़ (सीकर)	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-११	-१०	-९	-८	-९	-१०	-११
अलवर	-१४	-१६	-१७	-१७	-१६	-१५	-१३	-१२	-११	-१२	-१३	-१४
अहमदाबाद	+५	+७	+८	+८	+६	+२	-१	-४	-५	-४	-२	+१
आगरा	-२१	-२१	-२१	-२२	-२१	-२०	-१९	-१८	-१८	-१८	-१९	-२०
इन्दौर	-८	-५	-३	-४	-७	-११	-१४	-१७	-१९	-१८	-१५	-१२
उज्जैन	-११	-१०	-१०	-१०	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११
उदयपुर	-१	-०	+१	+१	०	-२	-४	-५	-६	-६	-४	-३
करनाल	-११	-२२	-२३	-२३	-२०	-१७	-१३	-१०	-८	-९	-१२	-१५
किशनगढ़ (अजमेर)	-७	-८	-७	-८	-८	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७
कुचामन सिटी	-८	-९	-९	-९	-८	-७	-६	-६	-५	-५	-६	-७
कोटा	-१०	-९	-८	-९	-१०	-११	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-११
कोरबा (छत्तिसगढ़)	-३५	-३२	-३१	-३१	-३४	-३८	-४२	-४५	-४७	-४६	-४३	-३९
खैरथल	-१५	-१७	-१७	-१७	-१६	-१४	-१३	-१२	-११	-११	-१२	-१४
ग्वालियर	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०
गोविन्दगढ़ (अलवर)	-१७	-१८	-१८	-१८	-१७	-१६	-१५	-१४	-१३	-१३	-१४	-१५
गंगापुरसिटी (स.मा.)	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१४	-१४	-१४	-१५	-१५
चण्डीगढ़	-१९	-२३	-२५	-२४	-२१	-१६	-१२	-७	-५	-६	-१०	-१४
चित्तौड़गढ़	-५	-४	-३	-४	-५	-६	-८	-९	-९	-९	-८	-७
चूरू	-९	-११	-१२	-१२	-१०	-८	-६	-४	-३	-४	-५	-७
जयपुर (राज.)	-१२	-१२	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-१०	-१०	-१०	-१०	-११
जालौर	+३	+३	+३	+४	+३	+२	+१	०	०	०	+१	+२
जावरा (म.प्र.)	-६	-४	-२	-३	-५	-८	-१०	-१३	-१४	-१३	-११	-९
जीन्द (हरियाणा)	-१६	-१८	-२०	-११	-१७	-१४	-११	-८	-६	-७	-१०	-१३
जैसलमेर	+८	+८	+७	+५	+८	+९	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+९

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
झालावाड़	-११	-९	-८	-९	-१०	-१२	-१४	-१५	-१६	-१६	-१६	-१३
झुंझनु	-११	-१२	-१३	-१३	-१२	-१०	-८	-६	-५	-६	-७	-९
टोंक	-११	-११	-१०	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११
डीडवाना	-७	-८	-८	-८	-७	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-६
डूंगरपुर	-१	+२	+२	+२	०	-२	-५	-७	-८	-७	-५	-३
डेगाना (नागौर)	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-५
तारानगर	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-९	-६	-४	-३	-३	-५	-८
दिल्ली	-१९	-२१	-२२	-२२	-२०	-१७	-१५	-१३	-१२	-१२	-१४	-१६
देवली	-९	-८	-८	-८	-९	-९	-१०	-१०	-११	-१०	-१०	-९
दौसा	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१३	-१३	-१२	-१२	-१२	-१२	-१३
धौलपुर	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-१९	-१९	-१९	-१८	-१८	-१९	-१९
नागौर	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-२	-१	-१	-१	-२	-२
नाथद्वारा	-२	-१	०	०	-१	-३	-४	-५	-६	-६	-५	-३
नीमच (म.प्र.)	-६	-४	-३	-४	-५	-७	-९	-१०	-११	-११	-९	-७
नीम का थाना	-१२	-१३	-१४	-१४	-१३	-११	-१०	-९	-८	-८	-९	-११
नोहर	-९	-१२	-१३	-१३	-१०	-७	-४	-२	०	-१	-३	-६
प्रतापगढ़	-५	-३	-२	-२	-४	-६	-१०	-११	-१२	-११	-१०	-७
पाली	-१	०	०	०	०	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१
पिलानी	-१२	-१४	-१४	-१४	-१३	-१०	-८	-६	-५	-६	-८	-१०
ब्यावर	-५	-५	-४	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५
ब्यावरा (म.प्र.)	-१४	-१२	-१०	-११	-१३	-१५	-१७	-१९	-२०	-२०	-१८	-१६
बयाना	-१७	-१८	-१८	-१८	-१८	-१७	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१७
बाड़मेर	+७	+८	+७	+८	+७	+७	+६	+६	+५	+६	+६	+६
बानसूर (अलवर)	-१४	-१६	-१६	-१६	-१५	-१३	-१२	-११	-१०	-१०	-१२	-१३
बांदनवाड़ा	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७

स्पष्ट चन्द्रतः विंशोत्तरीय महादशा ज्ञानार्थे- सारिणी भाग १

चन्द्र राशि	मेष सिंह धनु			वृषभ कन्या मकर			मिथुन तुला कुम्भ			कर्क वृश्चिक मीन		
अंश कला	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
	केतु दशा			रवि दशा			मंगल दशा			गुरूदशा		
०।००	७	०	०	४	६	०	३	६	०	४	०	०
०।२०	६	९	२७	४	४	६	३	३	२७	३	७	६
०।४०	६	७	२४	४	२	१२	३	१	२४	३	२	१२
१।००	६	५	२१	४	०	१८	२	११	२१	२	९	१८
१।२०	६	३	२८	३	१०	२४	२	९	२९	२	४	२४
१।४०	६	१	१५	३	९	०	२	७	२५	२	०	०
२।००	५	११	१२	३	७	६	२	५	१२	१	७	६
२।२०	५	९	९	३	५	१२	२	३	९	१	२	१२
२।४०	५	७	६	३	३	१८	२	१	६	०	९	१८
३।००	५	५	३	३	१	२४	१	११	३	०	४	२४
३।२०	५	३	०	३	०	०	१	९	०	१९शनि द.		
३।४०	५	०	२७	२	१०	६	१	६	२७	१८	६	९
४।००	४	२०	२४	२	८	१२	१	४	२४	१८	१	१८
४।२०	४	८	२१	२	६	१८	१	२	२१	१७	६	२७
४।४०	४	६	२८	२	४	२४	१	०	१९	१७	१	६
५।००	४	४	१५	२	३	०	१	१०	१५	१६	७	१५
५।२०	४	२	१२	२	१	६	०	८	१२	१६	१	२४
५।४०	४	०	९	१	११	१२	०	६	९	१५	८	३
६।००	३	१०	६	१	९	१८	०	४	६	१५	२	१२
६।२०	३	८	३	१	७	२४	०	२	३	१४	८	२१
६।४०	३	६	०	१	६	०	१८राहु द.			१४	३	०
७।००	३	३	२७	१	४	६	१७	६	१९	१३	९	९
७।२०	३	१	२४	१	२	१२	१७	१	६	१३	३	१८
७।४०	२	११	२१	१	०	१८	१६	७	२४	१२	९	२७
८।००	२	९	१९	०	१०	२४	१६	२	१२	१२	४	६
८।२०	२	७	१५	०	९	०	१५	९	०	११	१०	१५
८।४०	२	५	१२	०	७	६	१५	३	१८	११	४	२४
९।००	२	३	९	०	५	१२	१४	१०	६	१०	११	३
९।२०	२	१	६	०	३	१७	१४	४	२४	१०	५	१२
९।४०	१	११	३	०	१	२४	१३	११	१२	९	११	२१

चन्द्र राशि	मेष सिंह धनु			वृषभ कन्या मकर			मिथुन तुला कुम्भ			कर्क वृश्चिक मीन		
अंश कला	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
	केतु दशा			चन्द्र दशा			राहु दशा			शनिदशा		
१०।००	१	९	०	१०चन्द्र द.			१३	६	०	९	६	०
१०।२०	१	६	२७	९	९	०	१३	०	१८	९	०	९
०१।४०	१	४	२४	९	६	०	१२	७	६	८	६	१८
११।००	१	२	२१	९	३	०	१२	१	२४	८	०	२७
११।२०	१	०	१८	९	०	०	११	८	१२	७	७	६
११।४०	०	१०	१५	८	९	१०	११	३	०	७	१	१५
१२।००	०	८	१२	८	६	०	१०	९	१८	६	७	२४
१२।२०	०	६	९	८	३	०	१०	४	६	६	२	३
१२।४०	०	४	६	८	०	०	९	१०	२४	५	८	१२
१३।००	०	२	३	७	९	०	९	५	१२	५	२	२१
१३।२०	२०शुक्र द.			७	६	०	९	०	०	४	९	०
१३।४०	१९	६	०	७	३	०	८	६	१८	४	३	९
१४।००	१९	०	०	७	०	०	८	१	६	३	९	१८
१४।२०	१८	६	०	६	९	०	७	७	२४	३	३	२७
१४।४०	१८	०	०	६	६	०	७	२	१२	२	१०	६
१५।००	१७	६	०	६	३	०	६	९	०	२	४	१५
१५।२०	१७	०	०	६	०	०	६	३	१८	१	१०	२४
१५।४०	१६	६	०	५	९	०	५	१०	६	१	५	३
१६।०१	१६	०	०	५	६	०	५	४	२४	०	११	१२
१६।२०	१५	६	०	५	३	०	४	११	१२	०	५	२१
१६।४०	१५	०	०	५	०	०	४	६	०	१७ बुध द.		
१७।००	१४	६	०	४	९	०	४	०	१८	१६	६	२७
१७।२०	१४	०	०	४	६	०	३	७	६	१६	१	२४
१७।४०	१३	६	०	४	३	०	३	१	२४	१५	८	२१
१८।००	१३	०	०	४	०	०	२	८	१२	१५	३	१८
१८।२०	१२	६	०	३	९	०	२	३	०	१४	१०	१५
१८।४०	१२	०	०	३	६	०	१	९	१८	१४	५	१२
१९।००	११	६	०	३	३	०	१	४	६	१४	०	९
१९।२०	११	०	०	३	०	०	०	१०	२४	१३	७	६
१९।४०	१०	६	०	२	९	०	०	५	१२	१३	२	३

चन्द्र राशि	मेष सिंह धनु			वृषभ कन्या मकर			मिथुन तुला कुम्भ			कर्क वृश्चिक मीन		
अंश कला	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
	शुक्र दशा			चन्द्र दशा			गुरू दशा			बुध दशा		
२०।००	१०	०	०	२	६	०	१६ गुरू द.			१२	९	०
२०।२०	९	६	०	२	३	०	१५	७	६	१२	३	२७
२०।४०	९	०	०	२	०	०	१५	२	१२	११	१०	२४
२१।००	८	६	०	१	९	०	१४	९	१८	११	५	२१
२१।२०	८	०	०	१	६	०	१४	४	२४	११	०	१८
२१।४०	७	६	०	१	३	०	१४	०	०	१०	७	१५
२२।००	७	०	०	१	०	०	१३	७	६	१०	२	१२
२२।२०	६	६	०	०	९	०	१३	२	१२	९	९	९
२२।४०	६	०	०	०	६	०	१२	९	१८	९	४	६
२३।००	५	६	०	०	३	०	१२	४	२४	८	११	३
२३।२०	५	०	०	७ मंगल द.			१२	०	०	८	६	०
२३।४०	४	६	०	६	९	२७	११	७	६	८	०	२७
२४।००	४	०	०	६	७	२४	११	२	१२	७	७	२४
२४।२०	३	६	०	६	५	२१	१०	९	१८	७	२	२१
२४।४०	३	०	०	६	३	२८	१०	४	२४	६	९	२८
२५।००	२	६	०	६	१	२५	१०	०	०	६	४	२५
२५।२०	२	०	०	५	११	१२	९	७	६	५	११	१२
२५।४०	१	६	०	५	९	९	९	२	१२	५	६	९
२६।००	१	०	०	५	७	६	८	९	१८	५	१	६
२६।२०	०	६	०	५	५	३	८	४	२४	४	८	३
२६।४०	६ रवि द.			५	३	०	८	०	०	४	३	०
२७।००	५	१०	६	५	०	२७	७	७	६	३	९	२७
२७।२०	५	८	१२	४	१०	२४	७	२	१२	३	४	२४
२७।४०	५	६	१८	४	९	२१	६	९	१८	२	११	२१
२८।००	५	४	२४	४	६	१८	६	४	२४	२	६	१८
२८।२०	५	३	०	४	४	१५	६	०	०	२	१	१५
२८।४०	५	१	६	४	२	१२	५	७	६	१	८	१२
२९।००	४	११	१२	४	०	९	५	२	१२	१	३	९
२९।२०	४	९	१८	३	१०	६	४	९	१८	०	१०	६
२९।४०	४	७	२४	३	९	३	४	४	२४	०	५	३
३०।००	४	६	०	३	६	०	४	०	०	०	०	०

सारिणी भाग - २

कला	केतु		शुक्र		रवि		चंद्र		मंगल		राहु		गुरू		शनि		बुध	
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	२५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१२	१	६	०	११	०	१७	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	११	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	१५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	२४	१	१	२	२९	२	१२	२	२६	२	१७
११	१	४	३	९	१	०	१	२०	१	४	२	२९	२	१९	३	४	२	२४
१२	१	७	३	१८	१	२	१	२४	१	७	३	७	२	२६	३	१३	३	२
१३	१	११	३	२७	१	५	१	२९	१	११	३	१५	३	४	३	२१	३	९
१४	१	१४	४	६	१	८	२	३	१	२४	३	२३	३	११	४	०	३	१७
१५	१	१७	४	१५	१	११	२	७	१	२७	४	२	३	२८	४	८	३	२५
१६	१	२०	४	२४	१	१३	२	१२	१	२०	४	१०	३	२५	४	१७	४	२
१७	१	२३	५	३	१	१६	२	१७	१	२३	४	१८	४	२	४	२५	४	१२
१८	१	२७	५	१२	१	१९	२	२१	१	२७	४	२६	४	१०	५	४	४	१८
१९	२	०	५	२१	१	२१	२	२६	२	०	५	४	४	२७	५	१२	४	२५
२०	२	३	६	०	१	२४	३	०	२	३	५	१२	४	२४	५	२१	५	३

स्पष्ट चन्द्रतः महादशा भोग्यकाल ज्ञान-

आनुपातिक नियामक सारणी भाग-१ में चन्द्र राशि के अनुसार ग्रहों की दषा का भोग्यकाल २०।२० कला के अन्तर से दिया गया है, सारणी भाग-२ में १ से २० कला तक का भोग्यकाल है, उदाहरण के लिये चन्द्र स्पष्ट ४।१२ १४५'।२०'' है अतः चन्द्र स्पष्ट से भोग्यदषा ज्ञात करने हेतु सारणी भाग-१ में सिंह राषि में १२ अंष ४० कला का फल केतु महादषा के ० वर्ष ४ मास ६ दिन भोग्यकाल है शेष ५ कला २० विकला का सारणी भाग-२ में केतु दषा भोग्यकाल ५ कला का १६ दिन है तथा २० विकला का मान ज्ञात करने के लिये १ कला का मान ३ दिन है अतः २० विकला का मान १ दिन हुआ। ५ कला २० विकला का मान १६ +२=१७ दिन इसे ० वर्श ४ मास ६ दिन में से घटाया तो ० वर्ष ३ मास १९ दिन केतु महादशा का भोग्यकाल स्पष्ट हुआ।

होरा चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	५ सूर्य होरापति देवता
१५°तक	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	४ सूर्य होरापति पितर
३०°तक	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	

द्रेष्काण चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	द्रेष्काणेश
१०°तक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	नारद
२०°तक	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अगस्त
३०°तक	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	दुर्वासा

नवमांश चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	नवांश पति
३°।२०'	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	देवता
६°।४०'	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	नर
१०°।००'	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	राक्षस
१३°।२०'	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	देवता
१६°।४०'	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	नर
२०°।००'	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	राक्षस
२३°।२०'	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	देवता
२६°।४०'	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	नर
३०°।००'	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	राक्षस

द्वादशांश चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	नवांश पति
२ °।३०'	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	गणेश
५ °।००'	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अश्वि.कु.
७ °।३०'	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	यम
१०°।००'	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	सर्प
१२°।३०'	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	गणेश
१५°।००'	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	अश्वि.कु.
१७°।३०'	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	यम
२०°।००'	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	सर्प
२२°।३०'	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	गणेश
२५°।००'	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	अश्वि.कु.
२७°।३०'	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	यम
३०°।००'	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सर्प

ग्रह दीप्तादि अवस्था चक्रम्

वृहत्पाराशर मतेन		सारावली मतेन		ग्रह योग्य वर्ग
उच्च राशि में	दीप्त	उच्च राशि में	दीप्त	जो ग्रह अपने उच्चाशं मूल त्रिकोण, स्वराशि अति मित्र, मित्र वर्गोत्तमी हो उस वर्ग की स्वर्क्षादि संज्ञा ग्रहण योग्य है ।
स्वराशि में	स्वस्थ	स्वराशि में	स्वस्थ	
अधिमित्र ग्रह की राशि में	मुदित	मित्र राशि में	मुदित	
मित्र ग्रह की राशि में	शान्त	शुभ राशि में	शान्त	
सम ग्रह की राशि में	दीन	प्रकाशमान किरणयुक्त	शक्त	
शत्रु ग्रह की राशि में	दुःखित	अस्त	विकल	
पापग्रह से युक्त	विकल	ग्रह युद्ध में पराजित	पीडित	
पापग्रह की राशि में	खल	पापवर्ग में	खल	
सूर्य से अस्त	क्रोधित	नीच राशि में	भीत	

ग्रह दीप्तादि अवस्था चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू
मित्रग्रह	चं.मं.गु.	सू.बु.	सू.चं.गु.	सू.शु.रा.	सू.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.
समग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	गु.	गु.	गु.
शत्रुग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	सू.चं.मं.

त्रिशांश चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	मि. २	सि. ४	तु. ६	ध. ८	कुं. १०	त्रिशांशेश	राशि अंशादि	वृ. १	क. ३	क. ५	वृ. ७	म. ९	मी. ११	त्रिशांशेश
४°।००'	१	१	१	१	१	१	वह्निः	५ ।००'	२	२	२	२	२	२	जलदः
१०°।००'	११	११	११	११	११	११	वायुः	१२°।००'	६	६	६	६	६	६	धनदः
१८°।००'	९	९	९	९	९	९	इन्द्रः	२०°।००'	१२	१२	१२	१२	१२	१२	इन्द्रः
२५°।००'	३	३	३	३	३	३	धनदः	२५°।००'	१०	१०	१०	१०	१०	१०	वायुः
३०°।००'	७	७	७	७	७	७	जलदः	३०°।००'	८	८	८	८	८	८	वह्निः

पंचधा मैत्री चक्रम्

निसर्ग मैत्री + तात्का. मैत्री = पंचधा मैत्री

मित्र	+	मित्र	=	अतिमित्र
मित्र	+	सम	=	मित्र
मित्र	+	शत्रु	=	सम
शत्रु	+	सम	=	शत्रु
शत्रु	+	शत्रु	=	अतिशत्रु

सप्तमांश चक्रम्

राशि अंशादि	मे. ०	वृ. १	मि. २	क. ३	सि. ४	क. ५	तु. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	विषम सप्तमांशपति	सम सप्तमांशपति
४°।१७।०८'	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	क्षार	शुद्धजल
८°।३४।२७'	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	क्षीर	मद्य
१२°।५१।४२५'	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	दधि	इक्षुरस
१७°।८।२४'	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	आज्य	आज्य
२१°।२५।४२'	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	इक्षुरस	दधि
२५°।४२।५१'	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	मद्य	क्षीर
३०°।००।००'	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	शुद्धजल	क्षार

अथ जाग्रदाद्यवस्थाः

राशि / अंशादि	मेष, मिथुन,सिंह, तुला,धनु, कुंभ	वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक,मकर,मीन
०°-६°	बाल	मृत
६°-१२°	कुमार	वृद्ध
१२°-१८°	युवा	युवा
१८°-२४°	वृद्ध	कुमार
२४°-३०°	मृत	बाल

संज्ञा बोधक चक्रम्

षडवर्ग में संज्ञा विशेष

वर्ग	संज्ञा
२ वर्ग	किंशुकः
३ वर्ग	व्यंजनम्
४ वर्ग	चामरः
५ वर्ग	छत्रम्
६ वर्ग	कुण्डलः

सप्तवर्ग में संज्ञा विशेष

वर्ग	संज्ञा
२ वर्ग	किंशुकः
३ वर्ग	व्यंजनम्
४ वर्ग	चामरः
५ वर्ग	छत्रम्
६ वर्ग	कुण्डलः
७ वर्ग	मुकुटः

तात्कालिक मैत्री–ग्रह जिस स्थान में हो उससे २,३,४,१०,११,१२वां स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र तथा शेष स्थानों में तात्कालिक शत्रु होता है।

वर्ग भेद

लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश त्रिशांश क योग को षडवर्ग तथा इसमें सप्तमांश मिला देने पर सप्तवर्ग होता है।

वर्ष प्रवेश पत्रिका निर्माण विधि

वेधसिद्धि नवीनवर्षमानानुसारेण वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	४	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	१८	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	२६	१२	३५	५७	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३३	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	१	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	२६	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	५	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	४९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्तमान ३६५ दिन १५ घटी २२ पल ५७ विपल है जो सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८ पल ३३ विपल कम है भारत मे वेधसिद्ध दृग्गणित से ही अधिकांश पंचांग बन रहे हैं अतः यहां वेधसिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी ही दी गई है। सिद्धान्तः जन्मकालिक सूर्य स्पष्ट तथा वर्षकालिक सूर्य स्पष्ट लगभग समान होने चाहिये। वर्ष प्रवेश लग्न साधन वर्ष प्रवेश स्थान के अक्षांश/रेखांश अनुसार ही किया जाना चाहिये तभी वर्ष फलादेश ठीक मिलेगा।

वर्ष प्रवेश इष्ट, लग्नादि साधन :- अभीष्ट संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर गत वर्ष प्राप्त होंगे। जन्म वार, इष्ट घटी-पलादि में वर्ष प्रवेश सारिणी से गताब्द वार, घटी, पलादि जोड़ने पर वर्ष प्रवेश के वार, इष्ट, घटी-पलादि प्राप्त होंगे। यहां रविवार के लिये १, सोमवार के लिये २ संख्या क्रमशः प्रयोग करें। जैसे- जन्म रविवार को इष्ट घटी ३० पल ५७ है गत वर्ष २७ है। सारिणी से गताब्द २७ वर्ष का मान ५ वार 55 घटी १९ पल ३९ विपल को जन्म वार १ इष्ट घटी ३० पल ५७ में जोड़ने पर ७ वार २६ घटी १६ पल ३९ विपल वर्ष प्रवेश काल स्पष्ट हुआ अर्थात् शनिवार को इष्ट २६ घटी १६ पल ३९ विपल पर २८ वां वर्ष प्रवेश काल है। जन्मकालिक सूर्य स्पष्ट राश्यादि वर्ष में जन्म दिनांक के निकट जिस दिन मिलें उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। लग्न स्पष्ट वर्ष प्रवेश स्थान के अक्षांश/रेखांश अनुसार तथा ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट जन्म पत्रिका की भांति स्पष्ट कर लेने के उपरान्त पंचवर्गी बल तथा हर्ष बल आदि साधन करने चाहिये।

मुंथा :- जन्म लग्न की राशि संख्या में गत वर्ष की संख्या जोड़कर १२ का भाग देने से शेष तुल्य मुंथा राशि होती है। इस वर्ष पत्रिका में एक ग्रह के रूप में स्थान देना चाहिये। मुंथा जन्म लग्न से प्रतिवर्ष एक राशि आगे तथा प्रतिदिन ५ कला चलती है।

त्रिराशिपति चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिवा त्रिराशिपति	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रि त्रिराशिपति	गु.	च.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

विंशोंत्तरी मुद्दा दशा चक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	९	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२८	२१	०

विंशोंत्तरी मुदा दशा गणना :-

अश्विनी से जन्म नक्षत्र गिनने से जो संख्या हो उसमें गत वर्षो को जोड़कर योगफल में से २ घटाकर अवशेष में ९ का भाग देने से १,२,३, आदि शेष में क्रमशः सूर्य, चन्द्र, भौमादि की वर्ष प्रवेश प्रारम्भ दशा प्राप्त होगी। शेष दशा क्रम से चलेगी।

योगिनी मुद्दा दशा चक्रम्

योगिनी	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मास	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	१०	०	१०	२०

योगिनी मुदा दशा गणना :-

अश्विनी से जन्म नक्षत्र गिनने तक तो संख्या हो उसमें गत वर्ष तथा ३ जोड़ने पर योगफल में ८ का भाग देने से १,२,३, आदि शेष में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्यादि योगिनी वर्ष प्रवेश प्रारम्भ दशा होगी। शेष दशा क्रम से चलेंगी।

पंचाधिकारी :- जन्मलग्नेश, वर्ष, लग्नेश, मुंथहाधिपति, त्रिराशिपति और दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशिपति अथवा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्र राशिपति ये पांच ग्रह वर्ष पत्रिका में विशेषाधिकारी माने जाते है।

वर्षेश का निर्णय :- पांचों अधिकारियों में सर्वाधिक पंचवर्गी बल प्राप्त ग्रह तथा वर्ष लग्न पर दृष्टि हो तो निःसंशय वही ग्रह वर्षपति होगा। बलीग्रह की वर्ष लग्न पर दृष्टि आवश्यक है अन्यथा वह वर्षेश्वर नहीं हो सकेगा। यदि सर्वाधिक बली ग्रह की लग्न पर दृष्टि न हो तो उससे न्यूनबली ग्रह वर्षपति होगा। पंचाधिकारियों की बल व दृष्टि की समानता होने पर कुछ अन्य प्राचीन आर्चाय दिन में वर्ष प्रवेश पर सूर्याधिष्ठित राशिपति तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश हाने पर चन्द्राधिष्ठित राशिपति को सर्वेश्वर मानते है। चन्द्रमा यदि वर्षपति को प्राप्त होता है तो वह जिस ग्रह से इत्थशाल योग करता हो। वही वर्षपति होता है। चन्द्रमा केवल रात्रि के वर्ष प्रवेश में कर्क राशि में स्थित हो तथा लग्न पर स्थित या लग्न पर दृष्टि होने पर ही वर्षेश्वर हो सकता है।

पंचवर्गी बल कोष्टकम् (ताजिक ज्योतिष)

ताजिक शास्त्रानुसारेण ग्रह मैत्री

वर्ष लग्न में प्रत्येक ग्रह से ३,५,८,११ वें स्थान में स्थित ग्रह 'मित्र' तथा २,६,८,१२ वें स्थान में स्थित ग्रह 'सम' एवं १, ४, ७, १० वें स्थान में स्थित ग्रह 'शत्रु' कहलाता है।

पंचवर्गी बल साधन – वर्ष पत्रिका में पंचवर्गी बल साधन में गृहबल, उच्चबल, हद्दाबल, द्रेक्काण बल, नवमांश बल ये पांच प्रकार के बलों का साधन किया जाता है।

१. गृह बल :– वर्षलग्न में स्वराशि में स्थित ग्रह को ३०।०० विश्वाबल, मित्र क्षेत्री ग्रह को २२।३० विश्वाबल, समक्षेत्री ग्रह को १५।०० विश्वाबल तथा शत्रुक्षेत्री ग्रह को ७।३० विश्वाबल प्राप्त होता है।

२. उच्चबल :– ग्रह की नीच राशि अंश में से वर्ष लग्न में उस ग्रह के स्पष्ट मान को घटाकर (यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो पुनः १२ में से घटाकर) शेष में ९ का भाग देने से ग्रह का उच्चबल प्राप्त होता है।

३. हद्दाबल :– स्वहद्दा में ग्रह को २४।०० विश्वाबल, मित्र हद्दा में ११।२५ विश्वाबल, समग्रह की हद्दा में ७।३० तथा शत्रु ग्रह की हद्दा में ३।४५ विश्वाबल प्राप्त होता है।

४. द्रेक्काण बल :– प्रत्येक ग्रह को स्वद्रेक्काण में १०।०० विश्वाबल, मित्र द्रेक्काण में ७।३० विश्वाबल, सम द्रेक्काण में ५।०० विश्वाबल तथा शत्रु द्रेक्काण में ३।३० विश्वाबल प्राप्त होता है।

५. नवमांश बल :– वर्ष लग्न में ग्रह को स्वनवांश में ५।०, मित्र नवांश में ३।४५, समनवांश में २।३० तथा शत्रु नवांश में १।१५ विश्वाबल प्राप्त होता है।

उपरोक्त पांचों अधिकारियों के बलों को जोड़कर चार का भाग देने से विशोपकबल प्राप्त होगा। ५ विंशोपक बल तक ग्रह निर्बल, ६ से १० तक मध्यबली, ११ से १५ तक बली तथा इससे अधिक बल प्राप्त होने पर 'ग्रह' उत्तम बली समझना चाहिये।

३. हद्दा चक्रम्

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
अंश	गु. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	गु. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	गु. १२	बु. ७	शु. ७	शु. १२
अंश	शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु. ६	शु. ५	शु. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	गु. ७	बु. ६	गु. ४
अंश	बु. ८	गु. ८	गु. ५	बु. ६	श. ७	गु. ४	गु. ७	बु. ८	बु. ५	शु. ८	गु. ७	बु. ३
अंश	मं. ५	श. ५	मं. ७	गु. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	गु. ५	मं. ५	श. ४	मं. ५	मं. ९
अंश	श. ५	मं. ३	श. ६	श. ४	मं. ६	श. २	मं. २	बु. ६	श. ४	मं. ४	श. ५	श. २

४. द्रेक्काण चक्रम्

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
०-१० तक	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१०-२०तक	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.
२०-३०तक	शु.	श.	सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	च.	मं.

५. नवमांश चक्रम्

अंश कला	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३।२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.
६।४०	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.
१०।००	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.
१३।२०	क.	मे.	मं.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.
१६।४०	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	क.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.
२०।००	क.	मी.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.
२३।२०	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.
२६।४०	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.
३०।००	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.

वर्ष कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि में भेद एवं दृष्टि बल

अपने स्थान से दृष्टि स्थानों में स्थित ग्रहों को देखने वाला ग्रह 'दृष्टाग्रह' तथा जिन्हें वह देखता है 'दृश्य ग्रह' कहलाते है। दृश्य और दृष्ट इन ग्रहों का परस्पर अन्तर जब १२ अंश के तुल्य होता है तभी उक्त दृष्टियां शुभाशुभ फल प्रदान के उपयुक्त होती है। ताजिक में ग्रहों की दृष्टि में भेद एवं दृष्टिबल निम्न प्रकार है –

१. प्रत्यक्ष स्नेहा दृष्टि :– वर्ष लग्न में ग्रह जहां स्थित है उससे ५ वें तथा ९ वें स्थान में स्थित ग्रह पर 'प्रत्यक्ष स्नेहा' दृष्टि जिसका दृष्टिबल ४५ कला है जो सम्पूर्ण कार्यो में सिद्धि देने वाली एवं मेलापक संज्ञा वाली है।

२. गुप्त स्नेहा दृष्टि :– वर्ष लग्न में जहां स्थित है उससे तीसरे स्थान में स्थित ग्रह पर गुप्त स्नेहा दृष्टि जिसका दृष्टिबल ४० कला है जो स्नेह वर्द्धिनी तथा कार्य सिद्धि करने वाली है।

३. मित्र दृष्टि :– वर्ष लग्न में ग्रहों से ग्यारहवें स्थान में स्थित ग्रह पर 'मित्र दृष्टि' जिसका दृष्टिबल १० कला है जो 'शुभ दृष्टि' कहलाती है।

४. गुप्तवैरा दृष्टि :– वर्ष कुण्डली में ग्रह जहां स्थित है उससे ४, १० वें स्थान में स्थित ग्रह पर गुप्तवैरा दृष्टि जिसका दृष्टिबल १५ कला है। इस दृष्टि में 'अप्रकटित शत्रुभाव' निहित होता है यह कार्य उसफल करने वाली दृष्टि है।

५. प्रत्यक्षवैरा दृष्टि :– वर्ष लग्न में ग्रह से पहले, सातवें स्थान में स्थित ग्रह पर 'प्रत्यक्षवैरा दृष्टि' जिसका दृष्टि बल ६० कला है जो कार्य विध्वंसक, कलह आदि अशुभता प्रदान करने वाली है।

बलवान दृष्टि :– वर्ष कुण्डली चक्र (उपलक्षण से जन्म एवं प्रश्नादि कुण्डली) में भी दक्षिण दृष्टि से वाम दृष्टि बलवान होती है। तात्पर्य कि चतुर्थ स्थान की दशम स्थान पर स्थित दक्षिण दृष्टि की अपेक्षा दशम स्थान की चतुर्थ स्थान पर वाम दृष्टि बलवान होती है अर्थात् लग्नादि सप्तम की, सप्तमादि द्वादश तक, की दक्षिण दृष्टि की अपेक्षा सप्तम भाव से द्वादश भाव के अन्त तक की जो दृष्टि लग्नादि छठे भाव पर्यन्त की होगी वह 'वाम दृष्टि' बलवती होगी।

दृष्टि पर विशेष विचार :– दृष्टा ग्रह अपने से अपने दीप्तांश तुल्य आगे तथा अपने दीप्तांश तुल्य अपने से पीछे (उपने दीप्तांश के भीतर) तक ही विशेष दृष्टि फल देता है। दीप्तांश से न्यूनाधिक होने पर दृष्टि फल 'मध्यम' होता है। सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांश निम्न प्रकार है :–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९	१	१

हर्षबल साधन :– वर्ष पत्रिका निर्माण में पंचवर्गी बल के अतिरिक्त 'हर्षबल साधन' भी किया जाता है। सूर्यादिक शनि पर्यन्त ग्रहों की स्थिति वश बारह भावों में से प्रत्येक ग्रह की निम्नलिखित एक भावस्थिति 'हर्षप्रद' कहीं गई है–

१. वर्ष कुण्डली में सूर्य नवम भावस्थ, चन्द्र तृतीयस्थ, मंगल षष्ठस्थ, बुध लग्नस्थ, गुरू एकादशस्थ, शुक्र पंचमस्थ एवं शनि द्वादशस्थ हो तो हर्षित होते है।

२. स्वग्रह तथा स्वोच्च में ग्रह हर्षित होते है।

३. वर्ष लग्न में १, २, ३, ७, ८, ९ वें भावों में स्त्री ग्रह (चं. बु. शु. श.) तथा ४, ५, ६, १०, ११, १२ वें भावों में पुरूष ग्रह (सू. मं. गु.) हर्षित होते है।

4. सभी पुरूष ग्रह दिन में तथा सभी स्त्री तथा नपुंसक ग्रह रात्रि में हर्षित होते है।

होने पर निर्बल माना जाता है। 'हर्षित ग्रह' अपनी दशा में अच्छा फल प्रदान करते हैं।

उक्त चारों प्रकार से प्रत्येक प्रकार में 'हर्षित' स्थिति में ग्रह को 5 विश्वाबल प्राप्त होता है। चारों प्रकार से ग्रह का योग बल ५ विश्वा तो अल्पबली, १० विश्वा हो तो मध्यबली, १५ विश्वा हो तो पूर्णबली तथा शून्य विश्वा

नीलकंठमतेन सहमानि साधन

वर्ष पत्रिका निर्माण में वर्ष प्रवेश काल के लग्न, ग्रह एवं भा स्पष्टादि साधन उपरान्त निम्नलिखित सहम स्पष्ट करने की विधि :- जिसमें से घटाया जाय उसे 'शुद्धाश्रय' और जो घटाया जाय उसे 'शोध्य' कहते हैं। इसके पश्चात् जो जोड़ा जाये उसे 'क्षेपक' कहते हैं। यदि शुद्धाश्रय और शोध्य दोनों के मध्य में क्षेपक नहीं हो तो एक राशि (सैकता संस्कार) जोड़ना चाहिये। यदि मध्य में 'क्षेपक' हो तो एक राशि नहीं जोड़ना चाहिये। इन स्पष्ट सहमों को सूर्यादिक ग्रहों की तरह वर्ष लग्न में स्तीपित कर देना चाहिए, सहम राशिपति की दशा में उस सहम का शुभाशुभ फल मिलता है।

सहमानि

नामानि	दिवा	रात्रौ
पुण्यम्	चं.-सू.+ल.	सू.-चं.+ल.
यशः,बल,देहः	गु.-पुण्यस+ल.	पुण्य स.-गु+ल.
शौर्य,माहात्म्यं	पुण्यस.-मं.+ल.	मं.-पुण्य स.+ल.
आशा	श.-शु.+ल.	शु.-श.+ल.
गौरव	गु.-चं.+सू.	गु.-सू.+ल.
पिता,राज्यम्	श.-सू.+ल.	श.-सू.+ल.
माता/अम्बु	चं.-शु.+ल.	शु-चं.+ल.
जीवित/उपायः	श.चं.+ल.	गु.-श.+ल.
गुरू विद्या ज्ञानम्	सू.-चं.+ल.	चं.-सू.+ल.
मित्रम्	गुरू स.-पुण्य स. +शु.	पुण्य स.-गुरू स. +शु.
सामर्थ्यम्	मं.-लग्नेश+ल.	लग्नेश-मं.+ल.
(मंगल ही लग्नेश हो तो गुरू लेवें)		
कार्य सिद्धि	श.-सू.+ सूर्यराशि पति	श.-चं.+ चन्द्रराशिपति

नामानि	दिवा	रात्रौ
कलिः/क्षमाः	गु.-मं.+ल.	मं.-गु.+ल.
शास्त्रम्	गु.-श.+बु.	श.-गु.+बु.
बन्दकः	चं.-बु+ल.	बु.-चं.+ल.
अन्यकर्म	चं.-श.+ल.	श.-चं.+ल.
प्रसुति	गु-बु.+ल.	बु.-गु.+ल.
जाडयम्	मं.-श.+बु.	श.-मं.+बु.
पानीय पतन	श.-चं.+ल.	चं.-श.+ल.
रिपु/शत्रुः	म.-श.+ल.	श.-मं.+ल.
गुरूताः	०।१०-सू.+ल.	१।३°-चं.+ल.
जलपथः	३।१५-श.+ल.	श.-३।१५°+ल.
बन्धनः	पुण्य स.-श.+ल.	श.-पुण्य स.+ल.
अश्वः	पुण्य स.-सू. +एकादश भाव	सू.-पुण्य स. +एकादश भाव
कर्म	मं.-बु.+ल.	बु.-मं.+ल.

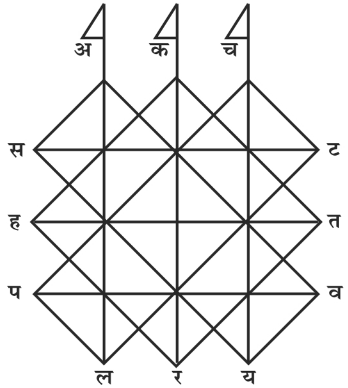
दिवा/रात्रि एक समान सहमानि

नामानि	सहमानि	नामानि	सहमानि	नामानि	सहमानि
भ्राताः	गु.-श.+ल.	अन्यदारा	शु.-सू.+ल.	श्रद्धा	शु.-मं.+ल.
सुतः	गु.-चं.+ल.	वाणिज्यम्	चं.-बु.+ल.	व्यापार	मं.-बु.+ल.
रोगः	ल.-चं.+ल.	विवाह	शु-श.+ल.	कन्या	गु-चं.+ल.
बन्धुः	बु-चं.+ल.	संताप	श.-चं.+पृष्ठ भा.	धन	धन भा.-धनेश+ल.
मृत्युः- अष्टम भा.-चं.+ श. (चन्द्रमा से अष्टमेश के मध्य लग्न होने पर एक राशि जोड़ें, क्षेपक नहीं)					

अथ सप्रयोजन त्रिपताका चक्र विचार

जन्म लग्न में सप्तशलाका चक्र से ग्रहों का वेध देखा जाता है। जबकि वर्षलग्न में त्रिपताका चक्र से ग्रहों का वेध ज्ञात किया जाता है। वर्षफल देखने में यह एक आवश्यक और महत्वपूर्ण उपकरण है। एतदर्थ दैवज्ञगणों की सुविधार्थ त्रिपताका चक्र निर्माण विधि एवं विचार :-

वेध बिन्दु



त्रिपताका चक्र में ग्रह संस्थापन क्रम :- 'क' बिन्दु पर वर्ष लग्न लिखनी चाहिये। फिर अ से च तक अन्य अग्रिम राशियां जन्मकुण्डली की ग्रह स्थिति और गत वर्ष संख्या के ज्ञान से त्रिपताका चक्र में ग्रह संस्थापक करने चाहिये। गत वर्ष संख्या में 1 जोड़कर 9 ये भाग देने पर शेष तुल्य राशि पर जन्म कुण्डली के चन्द्रमा को इस संख्या तुल्य की आगे की राशि में रखना चाहिये तथा गत वर्ष संख्या में एक जोड़ने से उसमें 4 का भाग देने से जो शेष हो जन्म कुण्डली के ग्रह राशियों को उस शेष संख्या तुल्य से अग्रिम राशि में सूर्य, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि ग्रहों को उक्त त्रिपताका चक्र में स्थान देना चाहिये। जन्म कुण्डली में वक्री ग्रह को त्रिपताका चक्र में शेषतुल्य से पृष्ठ राशि में रखना चाहिये। इस प्रकार विचार करना चाहिये। त्रिपताका चक्र में जन्मलग्नेश, वर्षेश, चन्द्रमा तथा जन्म लग्न के 'कारक' ग्रहों पर अन्य ग्रहों का वेध देखना चाहिए। वेधकर्ता ग्रह अपने बल तथा शुभाशुभ स्थिति वश फल प्रदान करता है। शुभ ग्रह निर्बल होने पर शुभ फल देने में सक्षम नहीं होता है।

संक्षिप्त में वेध फल :- वेधकर्ता सूर्य से शासक-सत्ता पक्ष से विरोध, मन संताप, प्रवास, ज्वर, पीड़ा, वाहन, भय, अर्थ हानि। मंगल वेध से - धन हानि, बुद्धि विभ्रम कार्य, निष्फलता, स्तीवर संपत्ति में विवाद, स्वजनों से विरोध तथा रक्त विकार। बुध वेध से - शिक्षा क्षेत्र, परीक्षादि में सफलता, गुरूवेध से-यश, धन लाभ तथा सभी कार्यों में सफलता। शुक्र वेध से-स्त्री-सन्तान सुख, भोग विलासिता में वृद्धि तथा अपूर्ण कार्य सम्पन्न। शनि वेध से-व्याधि, भय, शोक, मित्र तथा स्वजनों से विरोध, बंधन, स्थान हानि, राजकाज में विफलता। राहु वेध से-ह्दयरोग, कार्य व्यवसाय में विघ्न, विप्रवर्ग से वैर। केतु वेध से-पत्नी को कष्ट, सरकारी तंत्र से भय, देहपीड़ा तथा चन्द्र वेध से-पूर्ण चन्द्र से शुभ तथा क्षीण चन्द्र से अशुभ फल अनुभव योग्य है।

अथ नष्टवस्तु ज्ञान चक्रम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रोहिणी,पुण्य उफा.,विशा. पूषा.,धनि.,रेव.	मृग.,आश्ले., हस्त,अनु.,उषा., शत.,अश्विनी	आर्द्रा,मघा,चि., ज्ये.,अभि., पूभा.,भर.	पुन.,पूफा., स्वा.,मू.,श्र., उभा.,कृति.	नक्षरात्रि
पूर्वेगतम्	दक्षिणेगंत	पश्चिमे गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यात्नेन लाभः	दूरे श्रवण	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं

(सूर्यभात्)

१. भ्रमति वनेषु।

१५. ग्रामसमीपस्थः।

२२. गृहे आगतः।

२३।२४ नष्टप्राप्तिः।

२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

अथ विविध विषयोपयोगी बृहद नवग्रह विवेचन कोष्टकम्

ग्रहाः-	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्लेनेट	सन	मून	मार्स	मर्क्यूरी	जूपीटर	वीनस	सेटर्न	ड्रगोन्स	ड्रगोन्स
उपग्रह	काल	परिधि (परिवेश)	काल	अर्धयाम (अर्द्धप्रहर)	यमघंट	कोदण्ड (इन्द्र चाप)	गुलिक (मान्दि)	पाल (व्यतीपात)	उपकेतु (ध्वज)
स्वग्रहाणि	सिंह	कर्क	मेष, वृश्चि.	मिथुन,कन्या	धनु,मीन,	वृषभ, तुला	मकर,कुंभ	कन्या	मीन
उच्च राशि अंश	मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन 27	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५
नीच राशि अंश	तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मि. १५
मूल त्रिकोण अंश	सिंह २० तक	वृष ३ बाद	मेष १२ तक	कन्या १५ से २०	धनु १० तक	तुला १५ तक	कुंभ २० तक	वृष कुंभ	वृश्चिक मकर
कारक भाव	१,९, १०,११	४	३,६,१०	४,१०	२,५,९ १०,११	७	६,८, १०,१२	६	१२
भाग्योदय वर्ष	२२ से २४ वर्ष	२४ से २५ वर्ष	२८ से ३२ वर्ष	३२ से ३६ वर्ष	१६ से २२ वर्ष	२५ से २८ वर्ष	३६ से ४२ वर्ष	४२ से ४८ वर्ष	४८ से ५४ वर्ष
आयु पर अधिकार (पाश्चात्य मत)	२२ से २४ वर्ष	जन्म से ४ वर्ष तक	४१ से ५६ वर्ष	४ से १४ वर्ष	५६ से ६८ वर्ष	१४ से २२ वर्ष	६८ के बाद	- -	- -
गंतव्येराशे प्रा.फ.	५ दिन	३ घटी	८ घटी	-	२ मास	७ दिन	६ मास	८ मास	३ मास
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
अवस्था	प्रौढ	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	वृद्ध	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
काल	अयम	क्षण (मुहूर्त्त)	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	-	-
नक्षत्र दृष्टि	५,१५	१५	७,८, १०,१५	७,८, १०,१५	९,१,२,१५	९,१,२,१५	६,५, १५,१६	९,१५	९,१५
ग्रह दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	ऊर्ध्व	कटाक्ष	कटाक्ष	अधो.	अधो.	अधो.
एक पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	-	३-६	-
द्विपाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	२-१०	-
त्रिपाद दृष्टि	४-८	४-८	-	-	४-८	४-८	४-८	स्वस्थान	-
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	४-७-८	७	७	३-७-१०	५-७-९-१२	५-७-९

ग्रहाः-	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
स्थिर कारक	राज्य पिता	मन लक्ष्मी माता	बन्धु बल, भूमि	मामा बुद्धि दत्तक-पुत्र	वाणी, ज्ञान पुत्र	स्त्री वाहन	मृत्यु-भृत्य आयु, दुःख	दादा शत्रु	नाना
राशि फलांश	०-१०	१०-१०	०-१०	०-३०	२०-३०	२०-३०	१०-२०	२०-३०	२०-३०
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	रात्रि
पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्तमंत्री	प्रेष्यदूत	सेवक	परिचारक
लिंग	पुरूष	स्त्री	पुरूष	नपुंसक	पुरूष	स्त्री	नपुंसक	पुरूष	पुरूष
आकार	चतुरस्त्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत	वृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	पाखण्डी	पापकर्मी
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शुद्र, वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शुद्र	निषाद	निषाद
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	अति. तम.	न्यू. तम.
शरीरांग	अस्थि, मुख हृदय	रक्त गल स्थान	मज्जा उदर, नेत्र	त्वचा हाथ, नाक	चरबी कमर, स्वर	वीर्य जीभ, लिंग	स्नायु पैर	स्पर्श तत्व	स्पर्श तत्व
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	पक्षी, स्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर पति	श्वेतश्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
भूमि	पशु भूमि	जल भूमि	दग्ध भूमि	शमशान	सुरालय	जल भूमि	उत्कृट भूमि	ऊषर भूमि	ऊषर भूमि
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
पित्तादि	पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ	वात	वात	वात
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
धातु	स्वर्णताम्र	रौप्य	स्वर्णताम्र	कांस्य	स्वर्ण	रौप्य	लोह	सीसा	कांया
पंचतत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका, तेज	जल	वायु	पृथ्वी, वायु	तेज
ग्रहलोक	मृत्युलोक	पितृलोक	मृत्युलोक	पितृलोक	पाताल	स्वर्ग	नरक	-	-
म.राशिभोग	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
मध्यम गति	४९।८	०९०।३५	३९।२७	५९।८	५।०	५९।८	२।०	३।११	३।११

ग्रहाः	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शीघ्र गति स. अतिचार गति प्रा.	३९।१	१०४।४६	१२।२२	७३।४३	७।२७
परम अतिचार गति	४६।११	११३।३२	१४।४	७५।४२	७।४५

१. अस्ताभिमुख ग्रह के सूर्यास्त कालिक उन्नतांश (क्षितिज से अंशात्मक ऊचांई) प्राप्त होने पर अस्त तथा उदयाभिमुख ग्रह के सूर्योदयकालिक उन्नतांश प्राप्त होने पर उदय होता है। ग्रहों के उन्नतांश अक्षांश भेद से परिवर्तित होते है। मंगल लगभग ७८०, बुध वर्ष में ६ बार, गुरू ३९९, शुक्र ५८४, शनि ३७८ दिनों में सूर्य के निकट आकर अस्त होते है।

२. मंगल १६४, बुध १४४, गुरू १३०, शुक्र १६३, शनि ११५ शीघ्र केन्द्रांशों पर वक्री होता है तथा मंगल १९६, बुध २१६, गुरू २३०, शुक्र १९७, शनि २४५ शीघ्र केन्द्रांशों पर मार्गी होता है। शीघ्रोच्च और मध्यम ग्रह का अन्तर शीघ्र केन्द्र कहलाता है। मंगल लगभग ७८०, बुध ११६, गुरू ३९९, शुक्र ५८४, शनि ३७८ दिनों में एक बार वक्री अवश्य होता है।

राजस्थान के प्रमुख नगरों के अक्षांश रेखांश एवं स्टेण्डर्ड अन्तर आदि

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	-२३।३६	+१४।४८	कांवट	२७।३६	७५।४२	-२७।१२	+११।१२	गुलाबपुरा	२५।५४	७४।४२	-३१।१२	+०७।१२	टोड़ाभीम	२६।५४	७६।४८	-२२।४८	+१५।३६
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	+०७।१२	किशनगढ़ (अज.)	२६।३४	७४।५२	-३०।३२	+०७।५२	गुढ़ामलानी	२५।१२	७१।४८	-४२।४८	-०४।२४	टोडारायसिंह	२६।००	७५।२१	-२८।०४	+०९।४८
अचरोल	२७।०२	७५।५४	-२६।२४	+१२।००	किशनगढ़ (जैस.)	२७।५२	७०।३४	-४७।४४	-०९।२०	गूढ़ा (झुंझनू)	२७।५३	४५।३९	-२७।२४	+१०।२०	टोंक	२६।११	७५।५०	-२६।४०	+११।४४
अनूपगढ़	२९।०७	७३।०६	-३७।३६	+००।४८	कुचामन	२७।०९	७४।५२	-३०।३२	+०७।५२	गोविन्दगढ़	२७।३१	७७।००	-२२।००	+१६।२४	डिग्गी	२६।२२	७५।२७	-२८।१२	+१०।१२
अमेट	२५।२०	७३।५९	-३४।०४	+०४।२०	कुचेरा	२७।००	४७।५४	-३४।२४	+०८।००	घोटारू	२७।१८	७०।०४	-४९।४४	-११।२०	डीग	२७।२८	७७।२०	-२०।४०	+१७।४४
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	+१४।४६	कुशलगढ़	२३।१०	७४।२७	-३२।१२	+०६।१२	चाकसू	२६।३६	७५।५९	-२६।०४	+१२।२०	डीडवाना	२७।२४	७४।३४	-३१।४४	+०६।४०
अलसीसर	२८।१९	७५।१८	-२८।४८	+०९।३६	कुम्हेर	२७।१९	९९।२३	-२०।२८	+१०।५६	चारनवाला	२७।५३	७२।१०	-४१।२०	-०२।५६	डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	-३५।०८	+०३।१६
अलीगढ़	२५।५८	७६।०७	-२५।३२	+१२।४२	कूरी	२६।४२	७०।४०	-४७।२०	-०८।५६	चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४०	-३१।२०	+०७।०४	डेगाना	२६।५०	७४।१८	-३२।४८	+०५।३६
अजीतगढ़	२७।२५	७५।४८	-२६।४८	+११।३६	केकड़ी	२५।५६	७५।१०	-२९।२०	+०२।०४	चिड़ावा	२८।१५	७५।३८	-२७।२८	+१०।५६	तारानगर	२८।४२	७५।०६	-१९।३६	+०८।४८
आबू	२४।४०	७२।४५	-३९।००	-००।३६	केसरीसिंहपुर	२९।५८	७१।४५	-३५।००	+०४।००	चीलो	२७।२२	७३।३०	-३६।००	+०२।२४	तिजारा	२७।५५	७६।५०	-२२।४०	+१५।४४
आबू रोड़	२४।२९	७२।४७	-३८।५२	-००।२८	केशोरायपाटन	२५।१६	७५।५६	-२६।१६	+१२।०८	चूरू	२८।१९	७५।०१	-२९।५६	+०८।२८	थाना कस्बा	२५।१३	७७।२०	-२०।४०	+१७।४४
आमेर	२६।४९	७५।४२	-२६।३२	+११।१२	कोटरा	२४।२२	७३।१०	-३७।२०	+०१।०४	चौमूँ	२७।०८	७५।४७	-२६।५२	+११।३२	थानागाजी	२७।२५	७६।१९	-२४।४४	+१३।४०
आसपुर	२३।५८	७४।०३	-३३।४८	+०४।३६	कोटपूतली	२७।४२	७६।१२	-२५।१२	+१३।१२	छबड़ा	२४।४०	७६।५०	-२२।४०	+१५।४४	दांता	२७।१८	७५।१२	-२९।१२	+०९।१२
आसीन्द	२५।४२	७४।१८	-३२।४८	+०५।३६	कोटा	२५।११	७५।५०	-२६।४०	+११।४४	छापर	२७।५०	७४।२५	-३२।२०	+०६।०४	दूदू	२६।४१	७५।१६	-२८।५६	+०९।२८
आहोर	२५।२३	७२।५२	-३८।३२	-००।०८	कोलायत	२७।५०	७२।५७	-३८।१२	+००।१२	जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	+११।५२	देओरा	२६।३०	७०।४२	-४७।१२	-०८।४८
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	-२५।१२	+१३।१२	खण्ड़ार	२६।०१	७६।३७	-२३।२२	+१४।५२	जमवारामगढ़	२७।०१	७६।०१	-२५।५६	+१२।२८	देचू	२६।४७	७२।२०	-४०।४०	-०२।१६
उतारनी	२६।०६	७१।५८	-४२।०८	-०३।४४	खंडेला	२७।३६	७५।३२	-२७।५२	+१०।३२	जसरासर	२७।४५	७३।५०	-३४।४०	+०३।४४	देवगढ़	२५।३०	७३।५४	-३४।२४	+०४।००
उदयपुर	२४।३६	७६।४१	-३५।१६	+१५।०७	खाटूश्यामजी	२७।२२	७५।२५	-२८।२०	+१०।०४	जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	-४०।००	-०१।३६	देवलिया	२४।०३	७४।४३	-३१।०८	+०७।१६
उदयपुरवाटी	२७।४३	७५।३०	-२८।००	+१०।२४	खुईआला	२७।०६	७०।२५	-४८।२०	-०९।५६	जहाजपुर	२५।३८	७५।१२	-२९।१२	+०९।१२	देवली	२५।४६	७५।२५	-२८।२०	+१०।०४
उनियारा	२५।५४	७६।०६	-२५।३६	+१२।४८	खेड़ब्रह्म	२४।०५	७३।०३	-३७।४८	+००।३६	जायल	२७।१५	७४।१२	-३३।१२	+०५।१२	देवीकोट	२६।४२	७१।१२	-४५।१२	-०६।४८
एकलिंगजी	२४।४३	७३।४६	-३४।५६	+०३।२८	खेड़ली	२७।१२	७७।०६	-२१।३६	+१६।४८	जालोर	२५।२२	७२।३८	-३९।२८	-०१।०४	देशनोंक	२७।४८	७३।२१	-३६।३६	+०१।४८
एनिरपुरा	२५।०८	७३।०६	-३७।३६	+००।४८	खेतड़ी	२८।००	७५।४८	-२६।४८	+११।३६	जैतारण	२६।१२	७३।५४	-३४।२४	+०४।००	देसुरी	२५।२०	७३।३७	-३५।३२	+०२।५२
ओसिया	२६।४३	७२।५५	-३८।२०	+००।०४	खेरवाड़ा	२४।००	७३।३५	-३५।४०	+०२।४४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	-४६।२४	-०८।००	दौसा	२६।५३	७६।२०	-२४।४०	+१३।४४
कपासन	२४।५४	७४।१८	-३२।४८	+०५।३६	खैरथल	२७।४८	७६।३६	-२३।३६	+१४।४८	जोधपुर	२६।१८	७३।०४	-३७।४४	+००।४०	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२८	+१७।५६
करणपुर	२६।१२	७६।५४	-२२।२४	+१६।००	गजसिंहपुर	२९।४२	७३।२४	-३६।२४	+०२।००	जोधासर	२८।०७	७३।५०	-३४।४०	+०३।४४	नगर	२७।२६	७७।०६	-२१।३६	+१६।४८
करौली	२६।३०	७७।०१	-२१।५६	+१६।२८	गंगापुर (भील.)	२५।१३	७४।१६	-३२।५६	+०५।२८	जोबनेर	२६।५७	७५।२४	-२८।२४	+१०।००	नदबई	२७।१४	७७।१२	-२१।१२	+१७।१२
कापरेन	२५।२४	७६।०६	-२५।३६	+१२।४८	गंगापुर (स.मा.)	२६।२९	७६।४६	-२२।५६	+१५।२८	झालरापाटन	२४।३३	७६।१०	-२५।२०	+१३।०४	नरैना	२६।५०	७४।११	-३३।१६	+०५।०८
कामां	२७।४०	७७।१६	-२०।५६	+१७।२८	गागरिया	२५।४४	७०।४५	-४७।००	-०८।३६	झालावाड़	२४।३६	७६।०९	-२५।२४	+१३।००	नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	-२८।४८	+०९।३६
कांकरोली	२५।०४	७३।५४	-३४।२४	+०४।००	गिराब	२६।०२	७०।३५	-४७।४०	-०९।१६	झुंझनूं	२८।०६	७५।२५	-२८।२०	+१०।०४	नसीराबाद	२६।१८	७४।४४	-३१।०४	+०७।२०
कालाडेरा	२७।११	७४।३६	-२७।२८	+०६।४८	गीजगढ़	२६।५६	७६।३८	-२३।२८	+१४।५६	टाडगढ़	२५।४२	७४।००	-३४।००	+०४।२४	नादौती	२६।४३	७६।४४	-२३।०४	+१५।२०

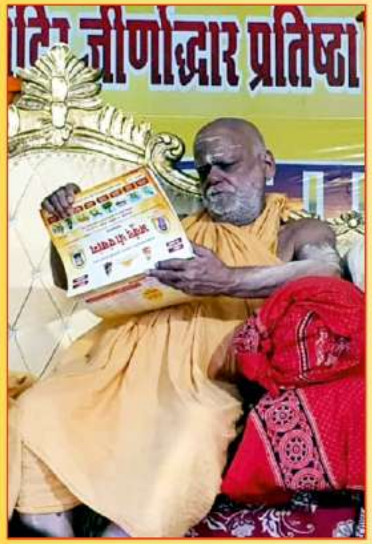
नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.
नागौर	२७।११	७३।४४	-३५।०४	+०३।२०	फुलेरा	२६।५२	७५।१६	-२८।५६		भंवरगढ़	२५।०६	७६।५०	-२२।४०	+१५।४४	राजसमन्द	२५।०४	७३।५२	-३४।३२	+०३।५२
नाचना	२७।२१	७१।४५	-४३।००	+०४।३६	ब्यावर	२६।०६	७४।२०	-३२।४०		भादरा	२९।१४	७५।२०	-२८।४०	+०९।४४	राजाखेड़ा	२६।५४	७८।१२	-१७।१२	+२१।१२
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५०	-३४।४०	+०३।४४	बगड़	२८।१२	७५।३०	-२८।००		भिंडर	२४।३०	७४।१२	-३३।१२	+०५।१२	रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१३	-४७।०८	-०२।४४
नांवा	२७।०२	४५।०१	-२९।५६		बगरू	२६।४७	७५।३३	-२७।४८		भीनमाल	२५।००	७२।१९	-४०।४४	-०२।२०	रामगढ़ (डूंगरपुर)	२३।५८	७३।५७	-३४।१२	+०४।१२
निम्बाहेड़ा	२४।३७	७४।४५	-३१।००	+०७।२४	बबाई	२७।५३	७५।४५	-२७।००		भीम	२५।३९	७४।०९	-३३।२४	+०५।००	रामगढ़ (जैस.)	२७।२२	७०।३०	-४८।००	-०९।३६
निवाई	२६।२४	७५।५४	-२६।२४	+१२।००	बयाना	२६।५४	७७।१७	-२०।५२		भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	-३१।२०	+०७।०४	रामगढ़ (सीकर)	२८।१०	७४।५९	-३०।०४	+०८।२०
नीमकाथाना	२७।४४	७५।४८	-२६।४८	+११।३६	बस्सी	२६।५६	७६।०३	-२५।४८		मकराना	२७।०३	७४।४३	-३१।०८	+०७।१६	रामगंजमंड़ी (को.)	२४।३६	७५।५४	-२६।२४	+१२।००
नैनवा	२५।४५	७५।५७	-२६।१२	+१२।१२	बसेड़ी	२६।४५	७७।३०	-२०।२८		मंडावा	२१।३०	७६।२४	-२४।२४	+१४।००	रामदेवरा	२७।००	७१।५२	-४२।३२	-०४।०८
नोखा	२७।३५	७३।२९	-२६।०४	+०२।२०	बस्वा	२७।०६	७६।३२	-२३।५२		मलसीसर	२८।२४	७५।१४	-२९।०४	+०७।२०	रायसिंहनगर	२९।३२	७३।२७	-३६।१२	+०२।१२
नोहर	२९।११	७४।४६	-३०।५६	+०७।२८	बहरोड़	२७।५४	७६।१८	-२४।४८		मसूदा	२६।०५	७४।३०	-३२।००	+०६।२४	रिखभदेव	२४।०४	७३।४०	-३५।२०	+०३।०४
पचपदरा	२५।५५	७२।२१	-४०।३६	-०२।१२	बारां	२५।०६	७६।३१	-२३।५६		महलां	२६।५०	७५।३०	-२८।००	+१०।२४	रींगस	२७।२१	७५।३४	-२७।४४	+१०।४०
पदमपुर	२९।११	७३।३१	-३५।५६	+०२।२८	बान्दनवाड़ा	२६।०९	७४।४२	-३१।१२		महाजन	२८।४८	७३।५६	-३४।१६	+०४।०८	रूपनगर	२६।४८	७४।५४	-३०।२४	+०८।००
प्रतापगढ़	२४।०२	७४।४७	-३०।५२	+०७।३२	बानसूर	२७।१२	७६।२२	-२४।३२		महुवा	२७।०३	७६।५६	-२२।१६	+१६।०८	रूपवास	२७।००	७७।३५	-१९।४०	+१८।४४
परबतसर	२६।५२	७४।४५	-३१।००	+०७।२४	बामनवास	२६।३३	७६।३३	-२३।४८		माण्डलगढ़	२५।१२	७५।०९	-२९।२४	+०९।००	रेनी (चुरू)	२८।४१	७५।०५	-२७।४०	+०८।४४
पल्लू	२८।५६	७४।१३	-३३।०८	+०५।१६	बांदीकुई	२७।०३	७६।३४	-२३।४४		मांगरोल	२५।२०	७६।३०	-२४।००	+१४।२४	लक्ष्मणगढ़ (सीकर)	२७।४५	७५।०४	-२९।४४	+०८।४०
पाली	२५।४६	७३।२०	-३६।४०	+०१।४४	बाड़मेर	२५।४५	७१।२५	-४४।२०		मारवाड़ जं.	२५।४३	७३।४५	-३५।००	+०३।२४	लक्ष्मणगढ़ (अल.)	२७।२३	७६।५२	-२२।३२	+१५।५२
पावटा	२७।३७	७६।०६	-२५।३६	+१२।४८	बाड़ी	२६।०९	७७।३६	-१९।३६		मालपुरा	२६।१८	७५।२५	-२८।२०	+१०।०४	लाखेरी	२५।३६	७६।१२	-२५।१२	+१३।१२
पिपलोदा	२३।३४	७४।५०	-३०।४०	+०७।४४	बाप	२७।२२	७२।२२	-४०।३२		मावली	२४।४७	७३।५८	-३४।०८	+०४।१६	लाठी	२७।०३	७१।३०	-४४।००	-०५।३६
पिड़ावा	२४।१३	७६।०३	-२५।४८	+१२।३६	बाली	२५।५०	७४।०५	-३३।४०		मियालजर	२६।१८	७०।२२	-४८।३२	-१०।०८	लाडनूं	२७।३९	७४।२३	-३२।२८	+०५।५६
पिलानी	२८।२३	७५।३५	-२७।४०	+१०।४४	बालोतरा	२५।४९	७२।१४	-४१।०४		मुकुन्दगढ़	२७।५७	७५।१५	-२९।००	+०९।२४	लालसोट	२६।३४	७६।२३	-२४।२८	+१३।५६
पीपाड़रोड़	२६।२७	७३।२७	-३६।१२	+०२।१२	बांसवाड़ा	२३।३०	०४।२४	-३२।२४		मूंडवा	२७।०६	७३।४८	-३४।४८	+०३।३६	लूनी	२६।००	७२।४२	-३८।३२	-००।४८
पीलीबंगा	२९।३६	७४।०६	-३३।३६	+०४।४८	बिलाड़ा	२६।१०	७३।४२	-३४।१२		मुकन्दवाड़ा	२४।४९	७५।५९	-२६।०४	+१२।२०	लूणकरनसर	२८।३०	७३।४५	-३५।००	+०३।२४
पुनासर	२७।०२	७३।०२	-२७।५२	+००।३२	बिसलपुर	२८।१०	७२।१५	-४१।००		मुनवाब	२५।४३	७०।१५	-४९।००	-१०।३६	लोसल	२७।२६	७४।५८	-३०।२४	+०८।१६
पुष्कर	२६।३०	७४।३३	-३१।४८	+०६।३६	बीकानेर	२८।०१	७३।२०	-३६।४०		मेड़ता सिटी	२६।३९	७४।०६	-३३।३६	+०४।४८	लोहारिया	२३।४८	७४।१५	-३३।००	+०५।२४
पूगल	२८।३१	७२।४७	-३८।५२	-००।२८	बीदासर	२७।५०	७४।२५	-३२।२०		मेड़ता रोड़	२६।४३	७३।५५	-३४।२०	+०४।०४	वनस्थली	२६।२३	७५।५०	-२६।४०	+११।४४
पोखरन	२६।५५	७१।५५	-४२।२०	-०३।५६	बून्दी	२५।२७	७५।४०	-२७।२०		मोदरी	२४।२५	७३।२५	-३६।२०	+०२।०४	विजयनगर (अज.)	२५।५५	७४।३८	-३१।२८	+०६।५६
प्रसाद	२४।११	७३।४२	-३५।१२	+०३।१२	बेगूं	२४।५७	७५।०६	-२९।३६		मोहनगढ़	२७।१७	७१।१२	-४५।१२	-०६।४८	विराटनगर	२७।२७	७६।११	-२५।१६	+१३।०८
फतेहपुर	२८।००	७५।००	-३०।००	+०८।२४	बैराठ	२७।२७	७६।११	-२५।१६		रतनगढ़	२८।०५	७४।३७	-३१।३२	+०६।५२	वैर	२७।००	७७।१२	-२१।१२	+१७।१२
फतेहनगर	२४।४८	७४।०६	-३३।३६	+०४।४८	बोली	२६।१९	७६।१४	-२५।०४		रतननगर	२८।१३	७४।५७	-३०।१२	+०८।१२	शाहगढ़	२७।०८	६९।५३	-५०।२८	-१२।०४
फलौदी	२७।०९	७२।२२	-४०।३२	+०२।०८	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	-२०।००		राजगढ़ (चूरू)	२८।३९	७५।२६	-२८।१६	+१०।०८	शाहपुरा (जयपुर)	२७।२३	७५।५८	-२६।०८	+१२।१६
फागी	२६।३४	७५।३४	-२७।४०	+१०।४०	भवानीमंडी	२४।२४	७५।४८	-२६।४८		राजगढ़ (अल.)	२७।१५	७६।३७	-२३।३२	+१४।५२	शाहपुरा (भील.)	२५।४०	७४।५०	-३०।४०	+०७।४४
फालना	२५।१२	७३।१२	-३७।१२	+०१।१२	भवारी	२५।४३	७२।५२	-३८।३२		राजलदेसर	२८।०६	७४।३०	-३२।००	+०६।२४	शेओ	२६।११	७१।१५	-४५।००	+०८।३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.
शेरगढ. (जो.)	२६।२५	७२।२१	-४०।३६	-०२।१२	सलुम्बर	२४।०६	७४।०६	-३३।३६	+०४।४८	सार्दुलपुर	२८।३८	७५।२४	-२८।२४	+१०।००	सुजानगढ.	२७।४२	७४।३०	-३२।००	+०६।२४
शेरगढ. (झा.)	२४।४०	७६।३२	-२३।५२	+१४।३२	सवाईमाधोपुर	२५।५८	७६।२५	-२४।२०	+१४।०४	सालासर	२७।४३	७४।४०	-३१।२०	+०७।०४	सोजत	२५।५६	७३।४२	-३५।१२	+०३।१२
श्रीडूंगरगढ.	२८।०६	७४।०१	-३३।५६	+०४।२८	सहाड़ा	२५।१२	७४।१६	-३२।५६	+०५।२८	सादुलशहर	२९।५४	७४।१२	-३३।१२	+०५।१२	सैंथल	२७।०२	७६।१८	-२४।४८	+१३।३६
श्रीगंगानगर	२९।४९	७३।५०	-३४।४०	+०३।४४	सपोटरा	२६।१७	७६।४५	-२३।००	+१५।२४	सिकराय	२६।५५	७६।२९	-२४।०४	+१४।२०	संगरिया	२९।४८	७४।३०	-३२।००	+०६।२४
श्रीमाधोपुर	२७।२५	७५।३२	-२७।५२	+१०।३२	सरमथुरा	२६।३१	७७।२२	-२०।३२	+१७।५२	सिन्दरी	२५।३३	७१।५५	-४२।२०	-०३।३६	सांगोद	२४।५५	७६।२१	-२४।३६	+१३।४८
श्रीमोहनगढ.	२७।१८	७१।१५	-४५।००	-०६।३६	सरूपसर	२९।२२	७३।३७	-३५।३२	+०२।५२	सिरोही	२४।५३	७२।५४	-३८।२४	+००।००	सांचोर	२४।४०	७१।५०	-४२।४०	-०४।१६
सम	२६।५०	७०।३१	-४७।५६	-०९।३२	सादड़ी बड़ी	२४।२५	७४।२८	-३२।०८	+०६।१६	सिवाना	२५।३६	७२।२७	-४०।१२	-०१।४८	सांभरलेक	२६।५४	७५।१२	-२९।१२	+०९।१२
समदड़ी	२५।४९	७२।३५	-३९।४०	-०१।१६	सादड़ी छोटी	२४।२५	७४।४२	-३१।१२	+०७।१२	सीकर	२७।३६	७५।०९	-२९।२४	+०९।००	सांगानेर	२६।४९	७५।४६	-३६।५६	+११।२८
सरदारशहर	२८।२७	७४।३०	-३२।००	+०६।२४	सामोद (जय.)	२७।१२	७५।४८	-२६।४८	+११।३६	सूरजगढ.	२८।१९	७५।४५	-२७।००	+११।२४	हनुमानगढ.	२९।३५	७४।२१	-३२।३६	+०५।४८
सरवाड़	२६।०२	७४।५५	-३०।२०	+०८।०४	सागवाड़ा	२३।४१	७४।०१	-३३।५६	+०४।२८	सूरतगढ.	२९।१९	७३।५७	-३४।१२	+०४।१२	हिण्डौन	२६।४३	७७।०२	-२१।५२	+१६।३२

भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश रेखांश एवं स्टेण्डर्ड अन्तर आदि

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.
अरोन (गुना)	२४।२३	७७।१९	-२०।४४	+१७।४०	आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	-१५।५६	+२२।२८	कलकत्ता	२२।३५	८८।२४	-२३।३६	+६२।००	कोल्हापुर	१६।४१	७४।१३	-३३।०८	+०५।१६
अम्बाह	२६।४३	७८।१४	-१७।०४	+२१।२०	आसनसोल (बि.)	२४।१४	८७।१५	-१९।००	+५७।२४	कटक	२०।२८	८५।५४	-१३।३६	+५२।००	कोहिमा	२५।४१	९४।००	-४६।००	+८४।२४
अमृतसर	३१।३७	७४।५३	-३०।२८	+०७।५६	इटानगर	२६।५४	९३।३६	-४४।२४	+८२।४८	कटनी	२३।५०	८०।२३	-०८।२८	+२९।५६	कोन्नूर	११।२०	७६।४८	-२२।४८	+१५।२६
अशोकनगर	२४।३३	७७।४३	-१९।०८	+१२।१६	इटारसी	२२।३७	७७।४५	-१९।००	+१९।२४	कांगड़ा	३२।०९	७६।१८	-२४।४८	+१३।३६	कोरबा (छ.)	२२।२२	८२।४२	-००।४८	+३९।१२
अकाला	२०।४३	७७।०२	-२१।५२	+१६।३२	इन्दौर	२२।४३	७५।५३	-२६।२८	+११।५६	कांचिपुरम्	१२।५९	७९।५३	-१०।२८	+२७।५६	खरगोन	२१।५२	७५।३६	-२७।३६	+१०।४८
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०	+२७।०४	इम्फाल	२४।५४	९३।५४	-४५।३६	+८४।००	कानपुर	२६।२७	८०।२१	-०८।३६	+२९।४८	खण्डवा	२१।५०	७६।२०	-२४।४०	+१३।४४
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	-१७।४०	+२०।४४	इलाहाबाद	२५।२८	७१।५२	-०२।३२	-०४।०८	कारगिल	३०।३०	७६।१३	-२५।०८	+१३।१६	खण्डाला	१८।४५	७३।२२	-३६।३२	+०१।५२
अयोध्या	२६।४८	७२।१४	-०१।०४	+०२।४०	उज्जैन	२३।११	७५।४४	-२७।०४	+११।२०	कालका	३०।४७	७६।५७	-२२।१२	+१६।१२	खंभांत	२२।१९	७२।३६	-३९।३६	+०१।१२
अमेठी	२६।०८	८१।४८	-०२।४८	+३५।३६	ऊँझा	२३।८७	७२।२४	-४०।२४	-०२।००	कालीकट	११।१५	७५।४७	-२७।००	+११।३२	खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	-१९।१६	+५७।४०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	-२२।३२	+१५।५२	ऊधमपुर	३२।५५	७५।०७	-२९।३२	+०८।५२	काशी	२५।२०	८३।००	-०२।००	+४०।४४	खाचरोद	२३।२५	७५।१७	-२८।५२	+०७।३२
अगरत्तला	२३।४९	९१।१८	-३५।१२	+७३।३६	ऐलोरा	२०।०५	७५।१०	-२९।२०	+०१।०४	कुरूक्षेत्र	३०।००	७६।४८	-२२।४८	+१५।३६	खिलचीपुर	२४।०३	७६।३३	-२३।४८	+१४।३६
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३७	-३९।३२	-०१।०८	औरंगाबाद (महा)	१९।५२	७४।१९	-२८।४४	+०५।४०	कुंभराज (गुना)	२४।१६	७७।०८	-२१।२८	+१६।५६	खुरई	२४।०३	७८।२०	-२६।४०	+२१।४४
आइजोल	२३।४५	९२।४५	-४१।००	+७९।२४	औरंगाबाद (बि.)	२४।४५	८४।२५	-०७।४०	+४६।०४	कुंभकोणम	१०।५८	७९।२३	-१२।२८	+२५।५६	खेड़ब्रह्मा	२४।०३	७३।०४	-३७।४४	+०४।४०
आगरा	२७।११	९८।०२	-१७।५२	+१००।३२	कन्नौज	२७।०२	७९।५८	-१०।०८	+२८।१६	कूचबिहार	२६।२०	७९।२५	-२७।४०	+२६।०४	गयाजी	२४।४८	८५।०१	-१०।०४	+४८।२८
आगर	२३।४४	७६।०४	-२५।४४	+१२।४०	कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	-१९।३६	+१८।४८	कोण्णूर	११।५१	७५।२१	-२८।३६	+०७।४८	गरोठ	२४।१७	७५।४२	-२७।१२	+११।१२
आरा (बि.)	२५३६	८४।४२	-०८।४८	+४७।१२	करनाल	२९।४२	७७।०२	-२१।५२	+१६।३२	कोचीन	१०।००	७६।२५	-२५।००	+१४।२७	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-२७।२०	+२१।०४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं.क.	रेखांश (पूर्व) अं.क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	सिरोही से देशान्तर मि.सै.
गंगटोक	२७।२०	८८।२५	+२३।४०	+६२।०४	टेहरी गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	-१६००	+२२।२४	प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	-०२।२८	+३५।५६	बागलकोट	१६।१२	७५।४२	-२७।१२	+११।१२
गुना	२४।४०	७७।२०	-२०।४०	+१७।४४	डिबरूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४८४४	+८८।०८	पाण्डिचेरी	११।४६	७९।४८	-१०।४८	+२७।३६	बिजयपुर	२६।०४	७७।२२	-२०।३२	+१७।५२
गुरूदासपुर	३२।०३	७५।२७	-२८।१२	+१०।१२	तिरूपति	१३।४०	७९।२०	-१२४०	+२५।४४	पानीपत	२८।२७	७६।५९	-२२।०४	+१६।२०	बिलासपुर (म.प्र.)	२२।०५	८२।१०	-०१।२०	+३७।०४
गुड़गांव	२८।२७	७७।०४	-२१।४४	+१६।४०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	-१४।५६	+२३।२८	पालनपुर	२४।११	७२।२७	-४०।१२	-०१।४८	बिलासपुर (हि.प्र.)	३१।१९	७६।५०	-२२।४०	+१५।४४
गोहद	२६।२५	७८।२९	-१६।०४	+२२।२०	त्रिवेन्द्रम्	०८।३०	७६।५७	-२२।१२	+१६।१२	पालमपुर	३२।०७	७६।३२	-२३।५२	+१४।३२	बीजापुर	१६।५०	७५।४२	-२७।१२	+११।१२
गौहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	+७५।२४	दरभंगा	२६।१०	९४।४४	+१३।४०	+८७।२०	पीलीभीत	२८।४२	७९।४८	-१०।४८	+२७।२६	बीना	२४।१०	७८।१२	-१७।१२	+२१।१२
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+०३।३६	+४२।००	दतिया	२५।३९	७८।२७	-१६।१२	+२२।१२	पिचोर	२५।११	७८।११	-१७।१६	+२१।०८	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५२	-१८।३२	+१९।५२
गोवा	१५।२५	७३।४७	-३४।५२	+०३।३२	दार्जिलिंग	२७।०३	८८।२७	+२३।०८	+६२।१२	पिछोर	२५।५८	७८।२४	-१६।२४	+२२।००	बेलगाँव	१५।५५	७४।३१	-३१।५६	+०६।२८
चन्देरी (गुना)	२४।४३	७८।०७	-१७।३२	+२०।५२	दिल्ली	२८।३८	७७।१७	-२०।५२	+१७।३२	पुर्णिया	२५।४९	८७।३१	+२०।०४	+५८।२८	बेल्लारी	१५।११	७६।५४	-२२।२४	+१६।००
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	-२२।३२	+१५।५२	दिसपुर	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+७७।०४	पुरूलिया	२३।२०	८६।२४	+१५।३६	+५४।००	भटिंडा	३०।११	७४।५७	-३०।१२	+०८।१२
चिकमंगलूर	१३।१९	७५।४७	-२६।५२	+११।३२	देवरी (सागर)	२३।२३	७९।०२	-१२।५२	+२४।३२	पूंछ	३३।४१	७४।०८	-३३।२८	+०४।५६	भंडारा	२१।१०	७९।४०	-११।२०	+२७।०४
चित्रकूट	२५।१२	८०।५४	-०६।२४	+३२।००	देवास	२२।५८	७६।०६	-२५।३६	+१२।४८	पूना	१८।३१	७३।५२	-३४।३२	+०३।५२	भद्रावती	१३।५२	७५।४०	-२७।२०	+११।०४
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+७५।२४	देवप्रयाग	३०।०९	७८।३७	-१५।३२	+२२।५२	पोर्टब्लेयर	११।५०	९२।४६	+४१।०४	+७९।२८	भागलपुर	२५।१३	८६।५९	+१७।५६	+५६।२०
छपरा (बि.)	२५।४७	८४।४७	+०९।०८	+४७।३२	देहरादून	३०।१९	७८।०४	-१७।४४	+२०।४०	पोरबन्दर	२१।३८	६९।३६	-५१।३६	-१३।१२	भावनगर	२१।४७	७२।१०	-४१।२०	-०२।५६
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	-११।३६	+२६।४८	दौलताबाद	१९।५७	७५।१२	-१९।१२	+०९।१२	फतेहपुर सीकरी	२७।०६	७७।४०	-१९।२०	+१९।०४	भानपुरा	२४।३२	७५।४३	-२७।०८	+११।१६
जगन्नाथपुरी	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+५१।४४	धनबाद	२३।४७	८६।३०	+२६।००	+५४।२४	फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	-३१।००	+०७।२४	भिण्ड	२६।३५	७८।४६	-२४।५६	+२३।२८
जबलपुर	२३।१०	७९।५८	-१०।०८	+२८।१६	धारवाड़	१५।२८	७५।०२	-१८।५२	+०८।३२	फरीदाबाद	२८।२६	७७।१९	-२०।४४	+१७।४०	भिवानी	२८।४८	७६।०८	-२४।२८	+१२।५६
जम्मू-कश्मीर	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	+०८।००	नडियाद	२२।४१	७२।५२	-२८।३२	-००।०८	फीरोजपुर	३०।५७	७४।३६	-३१।३६	+०६।४८	भुवनेश्वर	२०।५४	७५।५२	+१३।२८	+११।५२
जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+६३।२०	नरसिंहगढ़	२३।४४	७७।०८	-२१।२८	+१६।५६	फीरोजाबाद	२७।०९	७८।२४	-१६।२४	+२२।००	भोपाल	२३।१६	७७।२३	-२०।२८	+१७।५६
जलगांव	२१।०१	७५।३९	-२७।२४	+११।००	नलखेड़ा	२३।५१	७६।१५	-२५।००	+१३।२४	फेजाबाद	२६।४७	८२।०८	-०१।२८	+३६।५६	मणिपुर	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+८४।१६
जमशेदपुर	२२।५०	८६।१०	+१४।४०	+५३।०४	नागदा	२३।२७	७४।२५	-२८।२०	+०६।०४	बक्सर	२५।३४	८३।५९	+०५।५६	+४४।२०	मथुरा	२७।२८	७७।४१	-१९।१६	+१९।०८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	-४९।४०	-११।१६	नागपुर	२१।०९	७९।०६	-१३।३६	+२४।४८	बंगलौर	१२।५८	७७।३५	-१९।४०	+१८।४४	मद्रास	१३।०५	८०।२७	-०८।५२	+३०।१२
जालंधर	३२।१९	७५।३५	-२७।४०	+१०।४४	नारनोल	२८।०२	७६।०७	-२५।३२	+१२।५२	बड़ौदा	२२।१८	७३।१२	-३७।१२	+०१।१२	मल्हारगढ़	२४।२०	७४।५८	-३०।०८	+०८।१६
जावद	२४।३७	७४।५२	-३०।३२	+०७।५२	नासिक	२०।०२	७३।५०	-२४।४०	+०३।४४	बद्रीनाथ (कर्ना.)	२५।३४	७६।५२	-२२।३२	+१५।५२	मनासा	२४।३०	७५।१०	-२९।२०	+०९।०४
जावरा	२३।४०	७५।०७	-२९।३२	+०८।५२	नीमच	२४।२७	७४।५२	-३०।३२	+०७।५२	बद्रीनाथ (उतरा.)	३०।४४	७९।३२	-११।५२	+२६।३२	मन्दसौर	२४।०५	७५।०६	-२९।३६	+०८।४८
जीरापुर	२४।००	७६।१२	-२५।१२	+१३।१२	नैनीताल	२९।२५	७९।२७	-१२।१२	+२६।१२	बम्बई	१८।५५	७२।५०	-३८।४०	-००।१६	महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६।०९	-२५।२४	+१३।००
जींद	२९।१९	७६।२३	-२४।२८	+१३।५६	पंचमढ़ी	२२।३०	७८।२२	-१६।३२	+२१।५२	बरेली	२८।२२	७८।२४	-१२।२४	+२२।००	मदुरई	०९।५५	७८।०७	-२७।३२	+२०।५२
जूनागढ़	२१।३२	७०।२७	-४८।१२	-०९।४८	पंचकूला	३०।४२	७६।५२	-२२।३२	+१५।५२	बलिया	२४।४४	८४।०९	+०६।३६	+४५।००	मुगलसराय	२५।१७	८३।११	+०२।४४	+४१।०८
जोनपुर	२५।४३	८२।४३	+००।५२	+३९।१६	पटना	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+४९।१६	बहराइच	२७।३४	८१।३७	-०३।३२	+५४।५२	मुजफ्फरपुर	२६।०७	७५।२७	+११।४८	+१०।१२
झांसी	२५।२६	७८।३४	-१५।४४	+२२।४०	पटियाला	३०।२२	७६।२५	-२४।२०	+१४।०४	ब्यावरा (म.प्र.)	२३।३४	७६।५६	-२२।१६	+१६।०८	मुजफ्फरनगर	२९।३०	७७।४४	-१९।०४	+१९।२०
टाटानगर	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+५३।१६	पठानकोट	३२।१८	७५।४२	-२७।१२	+११।१२	बाराबंकी	२३।५९	८१।१०	-०५।२०	+२३।०४	मुजफ्फराबाद	२४।३३	७३।२७	-३६।१२	+०२।१२
टूंडला जं.	२७।१३	७८।१३	-१७।०८	+२१।१६	पणजी	२५।४१	७३।१०	-३७।२०	+१३।०४	बारामूला	३४।१०	७४।२०	-३२।४०	+०५।४४	मुरैना	२६।२३	७८।०४	-२७।४४	+२०।४०



पु. पुरी शंकराचार्यजी द्वारा पंचांग अवलोकन



पु. श्रृंगेरी शंकराचार्यजी द्वारा पंचांग अवलोकन



पु. अवधेश चैतन्यजी द्वारा पंचांग अवलोकन



पु. गोविन्ददेवगिरीजी महाराज के साथ राम मंदिर निर्माण (यंत्र प्रतिष्ठा) विषयक चर्चा



पु. पुरी पीठाश्वर शंकराचार्यजी द्वारा सम्मान (पंचांग की प्रशस्ति)



भारत के गणमान्य ज्योतिर्विदों के साथ



आहोर विधायक द्वारा सम्मान



महाराधिराज सिरोही द्वारा विशिष्ट सम्मान



अ.भा. श्रीमाली ब्रा. समाज, पुष्कर द्वारा श्री पुरस्कार
स्वामी हितेश्वरानंद सरस्वती जी के हाथों सम्मान



गुजरात पंचांग परिषद् की बैठक में



गुजरात समाचार पंचांग एवं संदेश पंचांग के सम्पादक महोदय के साथ



जन्मभूमि पंचांग की सम्पादक महोदया के साथ







विभिन्न संस्थाओं द्वारा ज्योतिष क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मान



शास्त्रसम्मत - प्रामाणिक - व्यावहारिक
प्रतिष्ठा आचार्य
पं. जनार्दन ओझा
प्रतिष्ठा की शास्त्रीय विधियों का प्रामाणिक एवं व्यावहारिक संकलन